तौरेत

असल इब्रानी मतन से
नया उर्दू तर्जुमा

नाशिरीन

जियोलिन्क्स रीसोर्स कन्सल्टेंट्स

The Pentateuch in Modern Urdu
Translated from the Original Hebrew
Urdu Geo Version (UGV)
© 2010 Geolink Resource Consultants, LLC

Published by
Geolink Resource Consultants, LLC
10307 W. Broadstreet, #169, Glen Allen, Virginia
23060, United States of America

www.urdugeoversion.comhttp://urdugeoversion.com

फ़हरिस्त-ए-कुतुब

तौरेत

पैदाइश	**7**	**गिनती**	**168**
ख़ुरूज	**73**	**इस्तिस्ना**	**216**
अहबार	**129**		

हर्फ़-ए-आग़ाज़

अज़ीज़ क़ारी! आप के हाथ में किताब-ए-मुक़द्दस का नया उर्दू तर्जुमा है। यह इलाही किताब इन्सान के लिए अल्लाह तआला का कलाम है। इस में इन्सान के साथ अल्लाह की मुहब्बत और उस के लिए उस की मर्ज़ी और मन्शा का इज़हार है।

किताब-ए-मुक़द्दस पुराने और नए अहदनामे का मज्मूआ है। पुराना अहदनामा तौरेत, तारीख़ी सहाइफ़, हिक्मत और ज़बूर के सहाइफ़, और अन्बिया के सहाइफ़ पर मुश्तमिल है। नया अहदनामा इंजील-ए-मुक़द्दस का पाक कलाम है।

पुराने अहदनामे की असल ज़बान इब्रानी और अरामी और नए अहदनामे की यूनानी है। ज़ेर-ए-नज़र मतन इन ज़बानों का बराह-ए-रास्त तर्जुमा है। मुतर्जिम ने हर मुमकिन कोशिश की है कि असल ज़बानों का सहीह सहीह मफ़्हूम अदा करे।

पाक कलाम के तमाम मुतर्जिमीन को दो सवालों का सामना है: पहला यह कि असल मतन का सहीह सहीह तर्जुमा किया जाए। दूसरा यह कि जिस ज़बान में तर्जुमा करना मक़्सूद हो उस की ख़ूबसूरती और चाश्नी भी बरक़रार रहे और पाक मतन के साथ वफ़ादारी भी मुतअस्सिर न हो। चुनाँचे हर मुतर्जिम को फ़ैसला करना होता है कि कहां तक वुह लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ तर्जुमा करे और कहां तक उर्दी ज़बान की सिह्हत, ख़ूबसूरती और चाश्नी को मद्द-ए-नज़र रखते हुए क़दरे आज़ादाना तर्जुमा करे। मुख़्तलिफ़ तर्जुमों में जो बाज़ औक़ात थोड़ा बहत फ़रक़ नज़र आता है उस का यही सबब है कि एक मुतर्जिम असल अल्फ़ाज़ का ज़ियादा पाबन्द रहा है जबकि दूसरे ने मफ़्हूम को अदा करने में उर्दू ज़बान की रिआयत करके क़दरे आज़ाद तरीक़े से मतलब को अदा करने की कोशिश की है। इस तर्जुमे में जहां तक हो सका असल ज़बान के क़रीब रहने की कोशिश की गई है। याद रहे कि सुर्ख़ियाँ और उन्वानात मतन का हिस्सा नहीं हैं। उन को महज़ क़ारी की सहूलत की ख़ातिर दिया गया है।

चूँकि असल ज़बानों में अन्बिया के लिए इज़्ज़त के वुह अल्क़ाब इस्तेमाल नहीं किए गए जिन का आज कल रिवाज है, इस लिए इल्हामी मतन के एह्तिराम को मल्हूज़-ए-ख़ातिर रखते हुए तर्जुमे में अल्क़ाब का इज़ाफ़ा करने से गुरेज़ किया गया है।

किताब-ए-मुक़द्दस में मज़्कूर जवाहिरात का तर्जुमा जदीद साएंसी तह्क़ीक़ात के मुताबिक़ किया गया है।

चूँकि वक़्त के साथ साथ नाप-तोल की मिक़्दारें क़दरे बदल गईं इस लिए तर्जुमे में उन की अदाएगी में ख़ास मुश्किल पेश आई।

जहां रूह का लफ़्ज़ सीग़ा-ए-मुज़क्कर में अदा किया गया है वहां उस से मुराद रूह-उल-क़ुद्स यानी ख़ुदा का रूह है। जब वुह और मानों में मुस्तामल है तब मामूल के मुताबिक़ सीग़ा-ए-मुअन्नस इस्तेमाल हुआ है।

इंजेल-ए-मुक़द्दस में बपतिस्मा देने का लुग़वी मतलब ग़ोता देना है। जिस शख़्स को बपतिस्मा दिया जाता है उसे पानी में ग़ोता दिया जाता है।

बारी तआला के फ़ज़ल से इंजेल-ए-मुक़द्दस के कई उर्दू तर्जुमे दस्तयाब हैं। इन सब का मक़्सद यही है कि असल ज़बान का मफ़्हूम अदा किया जाए। इन का आपस में मुक़ाबला नहीं है बल्कि मुख़्तलिफ़ तर्जुमों का एक दूसरे के साथ मुवाज़ना करने से असली ज़बान के मफ़्हूम की गहराई और वुसअत सामने आती है और युँ मुख़्तलिफ़ तर्जुमे मिल कर कलाम-ए-मुक़द्दस की पूरी तफ़्हीम में मुअविन साबित होते हैं।

अल्लाह करे कि यह तर्जुमा भी उस के ज़िन्दा कलाम का मतलब और मक़्सद और उस की वुसअत और गहराई को ज़ियादा सफ़ाई से समझने में मदद का बाइस बने।

नाशिरीन

पैदाइश

दुनिया की तख़्लीक़ का पहला दिन : रौशनी

1 इब्तिदा में अल्लाह ने आसमान और
ज़मीन को बनाया। 2अभी तक ज़मीन
वीरान और ख़ाली थी। वह गहरे पानी से ढकी
हुई थी जिस के ऊपर अंधेरा ही अंधेरा था।
अल्लाह का रूह पानी के ऊपर मंडला रहा
था।
3फिर अल्लाह ने कहा, "रौशनी हो जाए"
तो रौशनी पैदा हो गई। 4अल्लाह ने देखा
कि रौशनी अच्छी है, और उस ने रौशनी
को तारीकी से अलग कर दिया। 5अल्लाह ने
रौशनी को दिन का नाम दिया और तारीकी
को रात का। शाम हुई, फिर सुब्ह। यूँ पहला
दिन गुज़र गया।

दूसरा दिन : आसमान

6अल्लाह ने कहा, "पानी के दरमियान एक
ऐसा गुम्बद पैदा हो जाए जिस से निचला पानी
ऊपर के पानी से अलग हो जाए।" 7ऐसा ही
हुआ। अल्लाह ने एक ऐसा गुम्बद बनाया जिस
से निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो
गया। 8अल्लाह ने गुम्बद को आसमान का
नाम दिया। शाम हुई, फिर सुब्ह। यूँ दूसरा दिन
गुज़र गया।

तीसरा दिन : ख़ुश्क ज़मीन और पौदे

9अल्लाह ने कहा, "जो पानी आसमान के
नीचे है वह एक जगह जमा हो जाए ताकि
दूसरी तरफ़ ख़ुश्क जगह नज़र आए।" ऐसा
ही हुआ। 10अल्लाह ने ख़ुश्क जगह को ज़मीन
का नाम दिया और जमाशुदा पानी को समुन्दर
का। और अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है।
11फिर उस ने कहा, "ज़मीन हरियावल पैदा
करे, ऐसे पौदे जो बीज रखते हों और ऐसे
दरख़्त जिन के फल अपनी अपनी क़िस्म के
बीज रखते हों।" ऐसा ही हुआ। 12ज़मीन ने
हरियावल पैदा की, ऐसे पौदे जो अपनी अपनी
क़िस्म के बीज रखते और ऐसे दरख़्त जिन के
फल अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते थे।
अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। 13शाम हुई,
फिर सुब्ह। यूँ तीसरा दिन गुज़र गया।

चौथा दिन : सूरज, चाँद और सितारे

14अल्लाह ने कहा, "आसमान पर रौश-
नियाँ पैदा हो जाएँ ताकि दिन और रात
में इम्तियाज़ हो और इसी तरह मुख़्तलिफ़
मौसमों, दिनों और सालों में भी। 15आसमान
की यह रौशनियाँ दुनिया को रौशन करें।"
ऐसा ही हुआ। 16अल्लाह ने दो बड़ी रौशनियाँ
बनाईं, सूरज जो बड़ा था दिन पर हुकूमत
करने को और चाँद जो छोटा था रात पर।

इन के इलावा उस ने सितारों को भी बनाया।
17उस ने उन्हें आसमान पर रखा ताकि वह
दुनिया को रौशन करें, 18दिन और रात पर
हुकूमत करें और रौशनी और तारीकी में
इम्तियाज़ पैदा करें। अल्लाह ने देखा कि यह
अच्छा है। 19शाम हुई, फिर सुब्ह। यूँ चौथा
दिन गुज़र गया।

पाँचवाँ दिन : पानी और हवा के जानदार

20अल्लाह ने कहा, "पानी आबी जानदारों
से भर जाए और फ़िज़ा में परिन्दे उड़ते फिरें।"
21अल्लाह ने बड़े बड़े समुन्दरी जानवर बनाए,
पानी की तमाम दीगर मख़्लूक़ात और हर
क़िस्म के पर रखने वाले जानदार भी बनाए।
अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। 22उस ने
उन्हें बरकत दी और कहा, "फलो फूलो और
तादाद में बढ़ते जाओ। समुन्दर तुम से भर
जाए। इसी तरह परिन्दे ज़मीन पर तादाद में
बढ़ जाएँ।" 23शाम हुई, फिर सुब्ह। यूँ पाँचवाँ
दिन गुज़र गया।

छटा दिन : ज़मीन पर चलने वाले जानवर और इन्सान

24अल्लाह ने कहा, "ज़मीन हर क़िस्म के
जानदार पैदा करे : मवेशी, रेंगने वाले और
जंगली जानवर।" ऐसा ही हुआ। 25अल्लाह
ने हर क़िस्म के मवेशी, रेंगने वाले और जंगली
जानवर बनाए। उस ने देखा कि यह अच्छा है।

26अल्लाह ने कहा, "आओ अब हम
इन्सान को अपनी सूरत पर बनाएँ, वह हम
से मुशाबहत रखे। वह तमाम जानवरों पर
हुकूमत करे, समुन्दर की मछलियों पर, हवा
के परिन्दों पर, मवेशियों पर, जंगली जानवरों
पर और ज़मीन पर के तमाम रेंगने वाले
जानदारों पर।" 27यूँ अल्लाह ने इन्सान को
अपनी सूरत पर बनाया, अल्लाह की सूरत
पर। उस ने उन्हें मर्द और औरत बनाया।
28अल्लाह ने उन्हें बरकत दी और कहा,
"फलो फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ।
दुनिया तुम से भर जाए और तुम उस पर
इख़तियार रखो। समुन्दर की मछलियों, हवा
के परिन्दों और ज़मीन पर के तमाम रेंगने वाले
जानदारों पर हुकूमत करो।"

29अल्लाह ने उन से मज़ीद कहा, "तमाम
बीजदार पौदे और फलदार दरख़्त तुम्हारे ही
हैं। मैं उन्हें तुम को खाने के लिए देता हूँ।
30इस तरह मैं तमाम जानवरों को खाने के
लिए हरियाली देता हूँ। जिस में भी जान है
वह यह खा सकता है, ख़्वाह वह ज़मीन पर
चलने फिरने वाला जानवर, हवा का परिन्दा
या ज़मीन पर रेंगने वाला क्यूँ न हो।" ऐसा ही
हुआ। 31अल्लाह ने सब पर नज़र की तो देखा
कि वह बहुत अच्छा बन गया है। शाम हुई,
फिर सुब्ह। छटा दिन गुज़र गया।

सातवाँ दिन : आराम

2 यूँ आसमान-ओ-ज़मीन और उन की
तमाम चीज़ों की तख़्लीक़ मुकम्मल
हुई। 2सातवें दिन अल्लाह का सारा काम
तक्मील को पहुँचा। इस से फ़ारिग़ हो कर
उस ने आराम किया। 3अल्लाह ने सातवें दिन
को बरकत दी और उसे मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
किया। क्यूँकि उस दिन उस ने अपने तमाम
तख़्लीक़ी काम से फ़ारिग़ हो कर आराम
किया।

आदम और हव्वा

4यह आसमान-ओ-ज़मीन की तख़्लीक़ का
बयान है। जब रब ख़ुदा ने आसमान-ओ-
ज़मीन को बनाया 5तो शुरू में झाड़ियाँ और
पौदे नहीं उगते थे। वजह यह थी कि अल्लाह
ने बारिश का इन्तिज़ाम नहीं किया था। और
अभी इन्सान भी पैदा नहीं हुआ था कि ज़मीन
की खेतीबाड़ी करता। 6इस की बजाए ज़मीन
में से धुन्द उठ कर उस की पूरी सतह को तर
करती थी। 7फिर रब ख़ुदा ने ज़मीन से मिट्टी
ले कर इन्सान को तश्कील दिया और उस के

नथनों में ज़िन्दगी का दम फूँका तो वह जीती जान हुआ।

8रब ख़ुदा ने मशरिक़ में मुल्क-ए-अदन में एक बाग़ लगाया। उस में उस ने उस आदमी को रखा जिसे उस ने बनाया था। 9रब ख़ुदा के हुक्म पर ज़मीन में से तरह तरह के दरख़्त फूट निकले, ऐसे दरख़्त जो देखने में दिलकश और खाने के लिए अच्छे थे। बाग़ के बीच में दो दरख़्त थे। एक का फल ज़िन्दगी बख़्शता था जबकि दूसरे का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता था। 10अदन में से एक दरया निकल कर बाग़ की आबपाशी करता था। वहाँ से बह कर वह चार शाख़ों में तक़्सीम हुआ। 11-12पहली शाख़ का नाम फ़ीसून है। वह मुल्क-ए-हवीला को घेरे हुए बहती है जहाँ ख़ालिस सोना, गूगल का गूँद और अक़ीक़-ए-अह्मर[a] पाए जाते हैं। 13दूसरी का नाम जैहून है जो कूश को घेरे हुए बहती है। 14तीसरी का नाम दिजला है जो असूर के मशरिक़ को जाती है और चौथी का नाम फ़ुरात है।

15रब ख़ुदा ने पहले आदमी को बाग़-ए-अदन में रखा ताकि वह उस की बाग़बानी और हिफ़ाज़त करे। 16लेकिन रब ख़ुदा ने उसे आगाह किया, "तुझे हर दरख़्त का फल खाने की इजाज़त है। 17लेकिन जिस दरख़्त का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता है उस का फल खाना मना है। अगर उसे खाए तो यक़ीनन मरेगा।"

18रब ख़ुदा ने कहा, "अच्छा नहीं कि आदमी अकेला रहे। मैं उस के लिए एक मुनासिब मददगार बनाता हूँ।"

19रब ख़ुदा ने मिट्टी से ज़मीन पर चलने फिरने वाले जानवर और हवा के परिन्दे बनाए थे। अब वह उन्हें आदमी के पास ले आया ताकि मालूम हो जाए कि वह उन के क्या क्या नाम रखेगा। यूँ हर जानवर को आदम की तरफ़ से नाम मिल गया। 20आदमी ने तमाम मवेशियों, परिन्दों और ज़मीन पर फिरने वाले जानदारों के नाम रखे। लेकिन उसे अपने लिए कोई मुनासिब मददगार न मिला।

21तब रब ख़ुदा ने उसे सुला दिया। जब वह गहरी नींद सो रहा था तो उस ने उस की पसलियों में से एक निकाल कर उस की जगह गोश्त भर दिया। 22पसली से उस ने औरत बनाई और उसे आदमी के पास ले आया। 23उसे देख कर वह पुकार उठा, "वाह! यह तो मुझ जैसी ही है, मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे गोश्त में से गोश्त है। इस का नाम नारी रखा जाए क्यूँकि वह नर से निकाली गई है।" 24इस लिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़ कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है, और वह दोनों एक हो जाते हैं। 25दोनों, आदमी और औरत नंगे थे, लेकिन यह उन के लिए शर्म का बाइस नहीं था।

गुनाह का आग़ाज़

3 साँप ज़मीन पर चलने फिरने वाले उन तमाम जानवरों से ज़्यादा चालाक था जिन को रब ख़ुदा ने बनाया था। उस ने औरत से पूछा, "क्या अल्लाह ने वाक़ई कहा कि बाग़ के किसी भी दरख़्त का फल न खाना?" 2औरत ने जवाब दिया, "हरगिज़ नहीं। हम बाग़ का हर फल खा सकते हैं, 3सिर्फ़ उस दरख़्त के फल से गुरेज़ करना है जो बाग़ के बीच में है। अल्लाह ने कहा कि उस का फल न खाओ बल्कि उसे छूना भी नहीं, वर्ना तुम यक़ीनन मर जाओगे।" 4साँप ने औरत से कहा, "तुम हरगिज़ न मरोगे, 5बल्कि अल्लाह जानता है कि जब तुम उस का फल खाओगे तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और तुम अल्लाह की मानिन्द हो जाओगे, तुम जो भी अच्छा और बुरा है उसे जान लोगे।"

6औरत ने दरख़्त पर ग़ौर किया कि खाने के लिए अच्छा और देखने में भी दिलकश है। सब से दिलफ़रेब बात यह कि उस से समझ हासिल हो सकती है! यह सोच कर उस ने

[a] carnelian

उस का फल ले कर उसे खाया। फिर उस ने
अपने शौहर को भी दे दिया, क्यूँकि वह उस के
साथ था। उस ने भी खा लिया। 7लेकिन खाते
ही उन की आँखें खुल गईं और उन को मालूम
हुआ कि हम नंगे हैं। चुनाँचे उन्हों ने अन्जीर
के पत्ते सी कर लुंगियाँ बना लीं।

8शाम के वक़्त जब ठंडी हवा चलने लगी
तो उन्हों ने रब ख़ुदा को बाग़ में चलते फिरते
सुना। वह डर के मारे दरख़्तों के पीछे छुप गए।
9रब ख़ुदा ने पुकार कर कहा, "आदम, तू कहाँ
है?" 10आदम ने जवाब दिया, "मैं ने तुझे बाग़
में चलते हुए सुना तो डर गया, क्यूँकि मैं नंगा
हूँ। इस लिए मैं छुप गया।" 11उस ने पूछा,
"किस ने तुझे बताया कि तू नंगा है? क्या तू
ने उस दरख़्त का फल खाया है जिसे खाने से
मैं ने मना किया था?" 12आदम ने कहा, "जो
औरत तू ने मेरे साथ रहने के लिए दी है उस
ने मुझे फल दिया। इस लिए मैं ने खा लिया।"
13अब रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ, "तू
ने यह क्यूँ किया?" औरत ने जवाब दिया,
"साँप ने मुझे बहकाया तो मैं ने खाया।"

14रब ख़ुदा ने साँप से कहा, "चूँकि तू ने
यह किया, इस लिए तू तमाम मवेशियों और
जंगली जानवरों में लानती है। तू उम्र भर पेट
के बल रेंगेगा और ख़ाक चाटेगा। 15मैं तेरे और
औरत के दरमियान दुश्मनी पैदा करूँगा। उस
की औलाद तेरी औलाद की दुश्मन होगी। वह
तेरे सर को कुचल डालेगी जबकि तू उस की
एड़ी पर काटेगा।"

16फिर रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ
और कहा, "जब तू उम्मीद से होगी तो मैं तेरी
तक्लीफ़ को बहुत बढ़ाऊँगा। जब तेरे बच्चे
होंगे तो तू शदीद दर्द का शिकार होगी। तू
अपने शौहर की तमन्ना करेगी लेकिन वह तुझ
पर हुकूमत करेगा।" 17आदम से उस ने कहा,
"तू ने अपनी बीवी की बात मानी और उस
दरख़्त का फल खाया जिसे खाने से मैं ने मना
किया था। इस लिए तेरे सबब से ज़मीन पर
लानत है। उस से ख़ुराक हासिल करने के लिए
तुझे उम्र भर मेहनत-मशक़्क़त करनी पड़ेगी।
18तेरे लिए वह ख़ारदार पौदे और ऊँटकटारे
पैदा करेगी, हालाँकि तू उस से अपनी ख़ुराक
भी हासिल करेगा। 19पसीना बहा बहा कर
तुझे रोटी कमाने के लिए भाग-दौड़ करनी
पड़ेगी। और यह सिलसिला मौत तक जारी
रहेगा। तू मेहनत करते करते दुबारा ज़मीन में
लौट जाएगा, क्यूँकि तू उसी से लिया गया है।
तू ख़ाक है और दुबारा ख़ाक में मिल जाएगा।"

20आदम ने अपनी बीवी का नाम हव्वा यानी
ज़िन्दगी रखा, क्यूँकि बाद में वह तमाम ज़िन्दों
की माँ बन गई। 21रब ख़ुदा ने आदम और
उस की बीवी के लिए खालों से लिबास बना
कर उन्हें पहनाया। 22उस ने कहा, "इन्सान
हमारी मानिन्द हो गया है, वह अच्छे और बुरे
का इल्म रखता है। अब ऐसा न हो कि वह
हाथ बढ़ा कर ज़िन्दगी बख़्शने वाले दरख़्त
के फल से ले और उस से खा कर हमेशा
तक ज़िन्दा रहे।" 23इस लिए रब ख़ुदा ने उसे
बाग़-ए-अदन से निकाल कर उस ज़मीन की
खेतीबाड़ी करने की ज़िम्मादारी दी जिस में
से उसे लिया गया था। 24इन्सान को ख़ारिज
करने के बाद उस ने बाग़-ए-अदन के मशरिक़
में करूबी फ़रिश्ते खड़े किए और साथ साथ
एक आतिशी तलवार रखी जो इधर उधर
घूमती थी ताकि उस रास्ते की हिफ़ाज़त करे
जो ज़िन्दगी बख़्शने वाले दरख़्त तक पहुँचाता
था।

क़ाबील और हाबील

4 आदम हव्वा से हमबिसतर हुआ तो
उन का पहला बेटा क़ाबील पैदा हुआ।
हव्वा ने कहा, "रब की मदद से मैं ने एक मर्द
हासिल किया है।" 2बाद में क़ाबील का भाई
हाबील पैदा हुआ। हाबील भेड़-बकरियों का
चरवाहा बन गया जबकि क़ाबील खेतीबाड़ी
करने लगा।

पहला क़त्ल

3कुछ देर के बाद क़ाबील ने रब को अपनी
फ़सलों में से कुछ पेश किया। 4हाबील ने भी
नज़राना पेश किया, लेकिन उस ने अपनी
भेड़-बकरियों के कुछ पहलौठे उन की चर्बी
समेत चढ़ाए। हाबील का नज़राना रब को
पसन्द आया, 5मगर क़ाबील का नज़राना
मन्ज़ूर न हुआ। यह देख कर क़ाबील बड़े ग़ुस्से
में आ गया, और उस का मुँह बिगड़ गया।
6रब ने पूछा, "तू ग़ुस्से में क्यूँ आ गया है?
तेरा मुँह क्यूँ लटका हुआ है? 7क्या अगर तू
अच्छी नीयत रखता है तो अपनी नज़र उठा
कर मेरी तरफ़ नहीं देख सकेगा? लेकिन अगर
अच्छी नीयत नहीं रखता तो ख़बरदार! गुनाह
दरवाज़े पर दबका बैठा है और तुझे चाहता है।
लेकिन तेरा फ़र्ज़ है कि उस पर ग़ालिब आए।"
8एक दिन क़ाबील ने अपने भाई से कहा,
"आओ, हम बाहर खुले मैदान में चलें।" और
जब वह खुले मैदान में थे तो क़ाबील ने अपने
भाई हाबील पर हम्ला करके उसे मार डाला।
9तब रब ने क़ाबील से पूछा, "तेरा भाई
हाबील कहाँ है?" क़ाबील ने जवाब दिया,
"मुझे क्या पता! क्या अपने भाई की देख-
भाल करना मेरी ज़िम्मादारी है?" 10रब ने
कहा, "तू ने क्या किया है? तेरे भाई का ख़ून
ज़मीन में से पुकार कर मुझ से फ़र्याद कर रहा
है। 11इस लिए तुझ पर लानत है और ज़मीन
ने तुझे रद्द किया है, क्यूँकि ज़मीन को मुँह
खोल कर तेरे हाथ से क़त्ल किए हुए भाई का
ख़ून पीना पड़ा। 12अब से जब तू खेतीबाड़ी
करेगा तो ज़मीन अपनी पैदावार देने से इन्कार
करेगी। तू मफ़रूर हो कर मारा मारा फिरेगा।"
13क़ाबील ने कहा, "मेरी सज़ा निहायत सख़्त
है। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगा। 14आज तू
मुझे ज़मीन की सतह से भगा रहा है और मुझे
तेरे हुज़ूर से भी छुप जाना है। मैं मफ़रूर की
हैसियत से मारा मारा फिरता रहूँगा, इस लिए
जिस को भी पता चलेगा कि मैं कहाँ हूँ वह
मुझे क़त्ल कर डालेगा।" 15लेकिन रब ने उस
से कहा, "हरगिज़ नहीं। जो क़ाबील को क़त्ल
करे उस से सात गुना बदला लिया जाएगा।"
फिर रब ने उस पर एक निशान लगाया ताकि
जो भी क़ाबील को देखे वह उसे क़त्ल न कर
दे। 16इस के बाद क़ाबील रब के हुज़ूर से चला
गया और अदन के मशरिक़ की तरफ़ नोद के
इलाक़े में जा बसा।

क़ाबील का ख़ानदान

17क़ाबील की बीवी हामिला हुई। बेटा पैदा
हुआ जिस का नाम हनूक रखा गया। क़ाबील
ने एक शहर तामीर किया और अपने बेटे की
ख़ुशी में उस का नाम हनूक रखा। 18हनूक
का बेटा ईराद था, ईराद का बेटा महूयाएल,
महूयाएल का बेटा मतूसाएल और मतूसाएल
का बेटा लमक था। 19लमक की दो बीवियाँ
थीं, अदा और ज़िल्ला। 20अदा का बेटा याबल
था। उस की नस्ल के लोग ख़ैमों में रहते और
मवेशी पालते थे। 21याबल का भाई यूबल था।
उस की नस्ल के लोग सरोद[a] और बाँसरी
बजाते थे। 22ज़िल्ला के भी बेटा पैदा हुआ
जिस का नाम तूबल-क़ाबील था। वह लोहार
था। उस की नस्ल के लोग पीतल और लोहे
की चीज़ें बनाते थे। तूबल-क़ाबील की बहन
का नाम नामा था। 23एक दिन लमक ने अपनी
बीवियों से कहा, "अदा और ज़िल्ला, मेरी बात
सुनो! लमक की बीवियो, मेरे अल्फ़ाज़ पर
ग़ौर करो! 24एक आदमी ने मुझे ज़ख़्मी किया
तो मैं ने उसे मार डाला। एक लड़के ने मेरे
चोट लगाई तो मैं ने उसे क़त्ल कर दिया। जो
क़ाबील को क़त्ल करे उस से सात गुना बदला
लिया जाएगा, लेकिन जो लमक को क़त्ल करे
उस से सतत्तर गुना बदला लिया जाएगा।"

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : चंग। चूँकि यह साज़ बर्र-ए-सग़ीर
में कम ही इस्तेमाल होता है, इस लिए मुतर्जमीन ने इस
की जगह लफ़्ज़ 'सरोद' इस्तेमाल किया है।

सेत और अनूस

25आदम और हव्वा का एक और बेटा पैदा
हुआ। हव्वा ने उस का नाम सेत रख कर
कहा, "अल्लाह ने मुझे हाबील की जगह जिसे
क़ाबील ने क़त्ल किया एक और बेटा बख़्शा
है।" 26सेत के हाँ भी बेटा पैदा हुआ। उस ने
उस का नाम अनूस रखा।

उन दिनों में लोग रब का नाम ले कर इबादत
करने लगे।

आदम से नूह तक का नसबनामा

5 ज़ैल में आदम का नसबनामा दर्ज है।
जब अल्लाह ने इन्सान को ख़ल्क़
किया तो उस ने उसे अपनी सूरत पर बनाया।
2उस ने उन्हें मर्द और औरत पैदा किया। और
जिस दिन उस ने उन्हें ख़ल्क़ किया उस ने उन्हें
बरकत दे कर उन का नाम आदम यानी इन्सान
रखा।

3आदम की उम्र 130 साल थी जब उस
का बेटा सेत पैदा हुआ। सेत सूरत के लिहाज़
से अपने बाप की मानिन्द था, वह उस से
मुशाबहत रखता था। 4सेत की पैदाइश के बाद
आदम मज़ीद 800 साल ज़िन्दा रहा। उस के
और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 5वह 930 साल
की उम्र में फ़ौत हुआ।

6सेत 105 साल का था जब उस का बेटा
अनूस पैदा हुआ। 7इस के बाद वह मज़ीद
807 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-
बेटियाँ भी पैदा हुए। 8वह 912 साल की उम्र
में फ़ौत हुआ।

9अनूस 90 बरस का था जब उस का बेटा
क़ीनान पैदा हुआ। 10इस के बाद वह मज़ीद
815 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-
बेटियाँ भी पैदा हुए। 11वह 905 साल की उम्र
में फ़ौत हुआ।

12क़ीनान 70 साल का था जब उस का
बेटा महलल-एल पैदा हुआ। 13इस के बाद वह
मज़ीद 840 साल ज़िन्दा रहा। उस के और
बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 14वह 910 साल की
उम्र में फ़ौत हुआ।

15महलल-एल 65 साल का था जब उस
का बेटा यारिद पैदा हुआ। 16इस के बाद वह
मज़ीद 830 साल ज़िन्दा रहा। उस के और
बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 17वह 895 साल की
उम्र में फ़ौत हुआ।

18यारिद 162 साल का था जब उस का बेटा
हनूक पैदा हुआ। 19इस के बाद वह मज़ीद
800 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-
बेटियाँ भी पैदा हुए। 20वह 962 साल की उम्र
में फ़ौत हुआ।

21हनूक 65 साल का था जब उस का बेटा
मतूसिलह पैदा हुआ। 22इस के बाद वह मज़ीद
300 साल अल्लाह के साथ चलता रहा। उस
के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 23वह कुल
365 साल दुनिया में रहा। 24हनूक अल्लाह
के साथ साथ चलता था। 365 साल की उम्र
में वह ग़ाइब हुआ, क्यूँकि अल्लाह ने उसे उठा
लिया।

25मतूसिलह 187 साल का था जब उस का
बेटा लमक पैदा हुआ। 26वह मज़ीद 782 साल
ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे और बेटियाँ भी
पैदा हुए। 27वह 969 साल की उम्र में फ़ौत
हुआ।

28लमक 182 साल का था जब उस का
बेटा पैदा हुआ। 29उस ने उस का नाम नूह
यानी तसल्ली रखा, क्यूँकि उस ने उस के बारे
में कहा, "हमारा खेतीबाड़ी का काम निहायत
तक्लीफ़दिह है, इस लिए कि अल्लाह ने
ज़मीन पर लानत भेजी है। लेकिन अब हम
बेटे की मारिफ़त तसल्ली पाएँगे।" 30इस के
बाद वह मज़ीद 595 साल ज़िन्दा रहा। उस
के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 31वह 777
साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

32नूह 500 साल का था जब उस के बेटे
सिम, हाम और याफ़त पैदा हुए।

लोगों की ज़ियादतियाँ

6 दुनिया में लोगों की तादाद बढ़ने लगी।
उन के हाँ बेटियाँ पैदा हुईं। 2तब
आसमानी हस्तियों ने देखा कि बनी नौ इन्सान
की बेटियाँ ख़ूबसूरत हैं, और उन्हों ने उन में
से कुछ चुन कर उन से शादी की। 3फिर रब
ने कहा, "मेरी रूह हमेशा के लिए इन्सान
में न रहे क्यूँकि वह फ़ानी मख़्लूक़ है। अब
से वह 120 साल से ज़्यादा ज़िन्दा नहीं
रहेगा।" 4उन दिनों में और बाद में भी दुनिया
में देओक़ामत अफ़राद थे जो इन्सानी औरतों
और उन आसमानी हस्तियों की शादियों से
पैदा हुए थे। यह देओक़ामत अफ़राद क़दीम
ज़माने के मश्हूर सूरमा थे।

5रब ने देखा कि इन्सान निहायत बिगड़
गया है, कि उस के तमाम ख़यालात लगातार
बुराई की तरफ़ माइल रहते हैं। 6वह पछताया
कि मैं ने इन्सान को बना कर दुनिया में रख
दिया है, और उसे सख़्त दुख हुआ। 7उस ने
कहा, "गो मैं ही ने इन्सान को ख़ल्क़ किया
मैं उसे रू-ए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा। मैं न
सिर्फ़ लोगों को बल्कि ज़मीन पर चलने फिरने
और रेंगने वाले जानवरों और हवा के परिन्दों
को भी हलाक कर दूँगा, क्यूँकि मैं पछताता हूँ
कि मैं ने उन को बनाया।"

बड़े सैलाब के लिए नूह की तय्यारियाँ

8सिर्फ़ नूह पर रब की नज़र-ए-करम थी।
9यह उस की ज़िन्दगी का बयान है।

नूह रास्तबाज़ था। उस ज़माने के लोगों में
सिर्फ़ वही बेक़ुसूर था। वह अल्लाह के साथ
साथ चलता था। 10नूह के तीन बेटे थे, सिम,
हाम और याफ़त। 11लेकिन दुनिया अल्लाह
की नज़र में बिगड़ी हुई और ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद
से भरी हुई थी। 12जहाँ भी अल्लाह देखता
दुनिया ख़राब थी, क्यूँकि तमाम जानदारों ने
ज़मीन पर अपनी रविश को बिगाड़ दिया था।

13तब अल्लाह ने नूह से कहा, "मैं ने तमाम
जानदारों को ख़त्म करने का फ़ैसला किया है,
क्यूँकि उन के सबब से पूरी दुनिया ज़ुल्म-ओ-
तशद्दुद से भर गई है। चुनाँचे मैं उन को ज़मीन
समेत तबाह कर दूँगा। 14अब अपने लिए सर्व[a]
की लकड़ी की कश्ती बना ले। उस में कमरे
हों और उसे अन्दर और बाहर तारकोल लगा।
15उस की लम्बाई 450 फ़ुट, चौड़ाई 75 फ़ुट
और ऊँचाई 45 फ़ुट हो। 16कश्ती की छत
को यूँ बनाना कि उस के नीचे 18 इंच खुला
रहे। एक तरफ़ दरवाज़ा हो, और उस की तीन
मन्ज़िलें हों। 17मैं पानी का इतना बड़ा सैलाब
लाऊँगा कि वह ज़मीन के तमाम जानदारों को
हलाक कर डालेगा। ज़मीन पर सब कुछ फ़ना
हो जाएगा। 18लेकिन तेरे साथ मैं अह्द बांधूँगा
जिस के तहत तू अपने बेटों, अपनी बीवी और
बहूओं के साथ कश्ती में जाएगा। 19हर क़िस्म
के जानवर का एक नर और एक मादा भी
अपने साथ कश्ती में ले जाना ताकि वह तेरे
साथ जीते बचें। 20हर क़िस्म के पर रखने वाले
जानवर और हर क़िस्म के ज़मीन पर फिरने
या रेंगने वाले जानवर दो दो हो कर तेरे पास
आएँगे ताकि जीते बच जाएँ। 21जो भी ख़ुराक
दरकार है उसे अपने और उन के लिए जमा
करके कश्ती में मह्फ़ूज़ कर लेना।"

22नूह ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा
अल्लाह ने उसे बताया।

सैलाब का अग़ाज़

7 फिर रब ने नूह से कहा, "अपने घराने
समेत कश्ती में दाख़िल हो जा, क्यूँकि
इस दौर के लोगों में से मैं ने सिर्फ़ तुझे
रास्तबाज़ पाया है। 2हर क़िस्म के पाक
जानवरों में से सात सात नर-ओ-मादा के जोड़े
जबकि नापाक जानवरों में से नर-ओ-मादा
का सिर्फ़ एक एक जोड़ा साथ ले जाना।
3इसी तरह हर क़िस्म के पर रखने वालों में

[a]इब्रानी लफ़्ज़ मतरूक है। शायद इस का मतलब
सर्व या देवदार की लकड़ी हो।

से सात सात नर-ओ-मादा के जोड़े भी साथ
ले जाना ताकि उन की नस्लें बची रहें। 4एक
हफ़्ते के बाद मैं चालीस दिन और चालीस
रात मुतवातिर बारिश बरसाऊँगा। इस से मैं
तमाम जानदारों को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा
डालूँगा, अगरचे मैं ही ने उन्हें बनाया है।"
5नूह ने वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म
दिया था। 6वह 600 साल का था जब यह
तूफ़ानी सैलाब ज़मीन पर आया।
7तूफ़ानी सैलाब से बचने के लिए नूह अपने
बेटों, अपनी बीवी और बहूओं के साथ कश्ती
में सवार हुआ। 8ज़मीन पर फिरने वाले पाक
और नापाक जानवर, पर रखने वाले और
तमाम रेंगने वाले जानवर भी आए। 9नर-ओ-
मादा की सूरत में दो दो हो कर वह नूह के पास
आ कर कश्ती में सवार हुए। सब कुछ वैसा ही
हुआ जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया था।
10एक हफ़्ते के बाद तूफ़ानी सैलाब ज़मीन पर
आ गया।
11यह सब कुछ उस वक़्त हुआ जब नूह
600 साल का था। दूसरे महीने के 17वें दिन
ज़मीन की गहराइयों में से तमाम चश्मे फूट
निकले और आसमान पर पानी के दरीचे खुल
गए। 12चालीस दिन और चालीस रात तक
मूसलाधार बारिश होती रही। 13जब बारिश
शुरू हुई तो नूह, उस के बेटे सिम, हाम और
याफ़त, उस की बीवी और बहूएँ कश्ती में
सवार हो चुके थे। 14उन के साथ हर क़िस्म के
जंगली जानवर, मवेशी, रेंगने और पर रखने
वाले जानवर थे। 15हर क़िस्म के जानदार दो
दो हो कर नूह के पास आ कर कश्ती में सवार
हो चुके थे। 16नर-ओ-मादा आए थे। सब कुछ
वैसा ही हुआ था जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म
दिया था। फिर रब ने दरवाज़े को बन्द कर
दिया।
17चालीस दिन तक तूफ़ानी सैलाब जारी
रहा। पानी चढ़ा तो उस ने कश्ती को ज़मीन
पर से उठा लिया। 18पानी ज़ोर पकड़ कर
बहुत बढ़ गया, और कश्ती उस पर तैरने लगी।
19आख़िरकार पानी इतना ज़्यादा हो गया कि
तमाम ऊँचे पहाड़ भी उस में छुप गए, 20बल्कि
सब से ऊँची चोटी पर पानी की गहराई 20
फ़ुट थी। 21ज़मीन पर रहने वाली हर मख़्लूक़
हलाक हुई। परिन्दे, मवेशी, जंगली जानवर,
तमाम जानदार जिन से ज़मीन भरी हुई थी
और इन्सान, सब कुछ मर गया। 22ज़मीन
पर हर जानदार मख़्लूक़ हलाक हुई। 23यूँ हर
मख़्लूक़ को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा दिया
गया। इन्सान, ज़मीन पर फिरने और रेंगने
वाले जानवर और परिन्दे, सब कुछ ख़त्म कर
दिया गया। सिर्फ़ नूह और कश्ती में सवार उस
के साथी बच गए।
24सैलाब डेढ़ सौ दिन तक ज़मीन पर
ग़ालिब रहा।

सैलाब का इख़्तिताम

8 लेकिन अल्लाह को नूह और तमाम
जानवर याद रहे जो कश्ती में थे। उस
ने हवा चला दी जिस से पानी कम होने लगा।
2ज़मीन के चश्मे और आसमान पर के पानी
के दरीचे बन्द हो गए, और बारिश रुक गई।
3पानी घटता गया। 150 दिन के बाद वह
काफ़ी कम हो गया था। 4सातवें महीने के
17वें दिन कश्ती अरारात के एक पहाड़ पर
टिक गई। 5दसवें महीने के पहले दिन पानी
इतना कम हो गया था कि पहाड़ों की चोटियाँ
नज़र आने लगी थीं।
6-7चालीस दिन के बाद नूह ने कश्ती की
खिड़की खोल कर एक कव्वा छोड़ दिया,
और वह उड़ कर चला गया। लेकिन जब तक
ज़मीन पर पानी था वह आता जाता रहा।
8फिर नूह ने एक कबूतर छोड़ दिया ताकि पता
चले कि ज़मीन पानी से निकल आई है या
नहीं। 9लेकिन कबूतर को कहीं भी बैठने की
जगह न मिली, क्यूँकि अब तक पूरी ज़मीन
पर पानी ही पानी था। वह कश्ती और नूह के
पास वापस आ गया, और नूह ने अपना हाथ

बढ़ाया और कबूतर को पकड़ कर अपने पास
कश्ती में रख लिया।
10उस ने एक हफ़्ता और इन्तिज़ार करके
कबूतर को दुबारा छोड़ दिया। 11शाम के वक़्त
वह लौट आया। इस दफ़ा उस की चोंच में
ज़ैतून का ताज़ा पत्ता था। तब नूह को मालूम
हुआ कि ज़मीन पानी से निकल आई है।
12उस ने मज़ीद एक हफ़्ते के बाद कबूतर
को छोड़ दिया। इस दफ़ा वह वापस न आया।
13जब नूह 601 साल का था तो पहले
महीने के पहले दिन ज़मीन की सतह पर पानी
ख़त्म हो गया। तब नूह ने कश्ती की छत खोल
दी और देखा कि ज़मीन की सतह पर पानी
नहीं है। 14दूसरे महीने के 27वें दिन ज़मीन
बिलकुल ख़ुश्क हो गई।
15फिर अल्लाह ने नूह से कहा, 16"अपनी
बीवी, बेटों और बहूओं के साथ कश्ती से
निकल आ। 17जितने भी जानवर साथ हैं उन्हें
निकाल दे, ख़्वाह परिन्दे हों, ख़्वाह ज़मीन पर
फिरने या रेंगने वाले जानवर। वह दुनिया में
फैल जाएँ, नस्ल बढ़ाएँ और तादाद में बढ़ते
जाएँ।" 18चुनाँचे नूह अपने बेटों, अपनी बीवी
और बहूओं समेत निकल आया। 19तमाम
जानवर और परिन्दे भी अपनी अपनी क़िस्म
के गुरोहों में कश्ती से निकले।
20उस वक़्त नूह ने रब के लिए क़ुर्बानगाह
बनाई। उस ने तमाम फिरने और उड़ने वाले
पाक जानवरों में से कुछ चुन कर उन्हें ज़बह
किया और क़ुर्बानगाह पर पूरी तरह जला
दिया। 21यह क़ुर्बानियाँ देख कर रब ख़ुश हुआ
और अपने दिल में कहा, "अब से मैं कभी
ज़मीन पर इन्सान की वजह से लानत नहीं
भेजूँगा, क्यूँकि उस का दिल बचपन ही से
बुराई की तरफ़ माइल है। अब से मैं कभी इस
तरह तमाम जान रखने वाली मख़्लूक़ात को
रू-ए-ज़मीन पर से नहीं मिटाऊँगा। 22दुनिया
के मुक़र्ररा औक़ात जारी रहेंगे। बीज बोने
और फ़सल काटने का वक़्त, ठंड और तपिश,
गर्मियों और सर्दियों का मौसम, दिन और रात,
यह सब कुछ दुनिया के अख़ीर तक क़ाइम
रहेगा।"

अल्लाह का नूह के साथ अह्द

9 फिर अल्लाह ने नूह और उस के बेटों
को बरकत दे कर कहा, "फलो फूलो
और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुम से
भर जाए। 2ज़मीन पर फिरने और रेंगने वाले
जानवर, परिन्दे और मछलियाँ सब तुम से
डरेंगे। उन्हें तुम्हारे इख़तियार में कर दिया गया
है। 3जिस तरह मैं ने तुम्हारे खाने के लिए पौदों
की पैदावार मुक़र्रर की है उसी तरह अब से
तुम्हें हर क़िस्म के जानवर खाने की इजाज़त
भी है। 4लेकिन ख़बरदार! ऐसा गोश्त न खाना
जिस में ख़ून है, क्यूँकि ख़ून में उस की जान
है।
5किसी की जान लेना मना है। जो ऐसा
करेगा उसे अपनी जान देनी पड़ेगी, ख़्वाह वह
इन्सान हो या हैवान। मैं ख़ुद इस का मुतालबा
करूँगा। 6जो भी किसी का ख़ून बहाए उस
का ख़ून भी बहाया जाएगा। क्यूँकि अल्लाह
ने इन्सान को अपनी सूरत पर बनाया है।
7अब फलो फूलो और तादाद में बढ़ते
जाओ। दुनिया में फैल जाओ।"
8तब अल्लाह ने नूह और उस के बेटों से
कहा, 9"अब मैं तुम्हारे और तुम्हारी औलाद
के साथ अह्द क़ाइम करता हूँ। 10यह अह्द
उन तमाम जानवरों के साथ भी होगा जो
कश्ती में से निकले हैं यानी परिन्दों, मवेशियों
और ज़मीन पर के तमाम जानवरों के साथ।
11मैं तुम्हारे साथ अह्द बांध कर वादा करता
हूँ कि अब से ऐसा कभी नहीं होगा कि
ज़मीन की तमाम ज़िन्दगी सैलाब से ख़त्म कर
दी जाएगी। अब से ऐसा सैलाब कभी नहीं
आएगा जो पूरी ज़मीन को तबाह कर दे। 12इस
अबदी अह्द का निशान जो मैं तुम्हारे और
तमाम जानदारों के साथ क़ाइम कर रहा हूँ
यह है कि 13मैं अपनी कमान बादलों में रखता
हूँ। वह मेरे दुनिया के साथ अह्द का निशान

होगा। 14जब कभी मेरे कहने पर आसमान पर
बादल छा जाएंगे और क़ौस-ए-क़ुज़ह उन में
से नज़र आएगी 15तो मैं यह अह्द याद करूँगा
जो तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ
किया गया है। अब कभी भी ऐसा सैलाब नहीं
आएगा जो तमाम ज़िन्दगी को हलाक कर दे।
16क़ौस-ए-क़ुज़ह नज़र आएगी तो मैं उसे देख
कर उस दाइमी अह्द को याद करूँगा जो मेरे
और दुनिया की तमाम जानदार मख़्लूक़ात के
दरमियान है। 17यह उस अह्द का निशान है
जो मैं ने दुनिया के तमाम जानदारों के साथ
किया है।”

नूह के बेटे

18नूह के जो बेटे उस के साथ कश्ती
से निकले सिम, हाम और याफ़त थे। हाम
कनआन का बाप था। 19दुनिया भर के तमाम
लोग इन तीनों की औलाद हैं।

20नूह किसान था। शुरू में उस ने अंगूर का
बाग़ लगाया। 21अंगूर से मै बना कर उस ने
इतनी पी ली कि वह नशे में धुत अपने डेरे
में नंगा पड़ा रहा। 22कनआन के बाप हाम ने
उसे यूँ पड़ा हुआ देखा तो बाहर जा कर अपने
दोनों भाइयों को उस के बारे में बताया। 23यह
सुन कर सिम और याफ़त ने अपने कंधों पर
कपड़ा रखा। फिर वह उलटे चलते हुए डेरे में
दाख़िल हुए और कपड़ा अपने बाप पर डाल
दिया। उन के मुँह दूसरी तरफ़ मुड़े रहे ताकि
बाप की बरहनगी नज़र न आए।

24जब नूह होश में आया तो उस को पता
चला कि सब से छोटे बेटे ने क्या किया है।
25उस ने कहा, “कनआन पर लानत! वह
अपने भाइयों का ज़लीलतरीन ग़ुलाम होगा।

26मुबारक हो रब जो सिम का ख़ुदा है।
कनआन सिम का ग़ुलाम हो। 27अल्लाह करे
कि याफ़त की हुदूद बढ़ जाएँ। याफ़त सिम के
डेरों में रहे और कनआन उस का ग़ुलाम हो।”

28सैलाब के बाद नूह मज़ीद 350 साल
ज़िन्दा रहा। 29वह 950 साल की उम्र में फ़ौत
हुआ।

नूह की औलाद

10 यह नूह के बेटों सिम, हाम और
याफ़त का नसबनामा है। उन के
बेटे सैलाब के बाद पैदा हुए।

याफ़त की नस्ल

2याफ़त के बेटे जुमर, माजूज, मादी,
यावान, तूबल, मसक और तीरास थे। 3जुमर
के बेटे अश्कनाज़, रीफ़त और तुजर्मा थे।
4यावान के बेटे इलीसा और तरसीस थे। कित्ती
और दोदानी भी उस की औलाद हैं। 5वह उन
क़ौमों के आबा-ओ-अजदाद हैं जो साहिली
इलाक़ों और जज़ीरों में फैल गईं। यह याफ़त
की औलाद हैं जो अपने अपने क़बीले और
मुल्क में रहते हुए अपनी अपनी ज़बान बोलते
हैं।

हाम की नस्ल

6हाम के बेटे कूश, मिस्र, फ़ूत और कनआन
थे। 7कूश के बेटे सिबा, हवीला, सब्ता, रामा
और सब्तका थे। रामा के बेटे सबा और ददान
थे।

8कूश का एक और बेटा बनाम नमरूद था।
वह दुनिया में पहला ज़बरदस्त हाकिम था।
9रब के नज़दीक वह ज़बरदस्त शिकारी था।
इस लिए आज भी किसी अच्छे शिकारी के
बारे में कहा जाता है, “वह नमरूद की मानिन्द
है जो रब के नज़दीक ज़बरदस्त शिकारी था।”
10उस की सल्तनत के पहले मर्कज़ मुल्क-
ए-सिनआर में बाबल, अरक, अक्काद और
कल्ना के शहर थे। 11उस मुल्क से निकल
कर वह असूर चला गया जहाँ उस ने नीनवा,
रहोबोत-ईर, कलह 12और रसन के शहर
तामीर किए। बड़ा शहर रसन नीनवा और
कलह के दरमियान वाक़े है।

13मिस्र इन क़ौमों का बाप था : लूदी,
अनामी, लिहाबी, नफ़्तूही, 14फ़त्रूसी, कस्लूही
(जिन से फ़िलिस्ती निकले) और कफ़्तूरी।
15कनआन का पहलौठा सैदा था। कनआन
ज़ैल की क़ौमों का बाप भी था : हित्ती
16यबूसी, अमोरी, जिर्जासी, 17हिव्वी, अर्क़ी,
सीनी, 18अर्वादी, समारी और हमाती। बाद में
कनआनी क़बीले इतने फैल गए 19कि उन की
हुदूद शिमाल में सैदा से जुनूब की तरफ़ जिरार
से हो कर ग़ज़्ज़ा तक और वहाँ से मशरिक़ की
तरफ़ सदूम, अमूरा, अदमा और ज़बोईम से हो
कर लसा तक थीं।
20यह सब हाम की औलाद हैं, जो उन के
अपने अपने क़बीले, अपनी अपनी ज़बान,
अपने अपने मुल्क और अपनी अपनी क़ौम
के मुताबिक़ दर्ज हैं।

सिम की नस्ल

21सिम याफ़त का बड़ा भाई था। उस के भी
बेटे पैदा हुए। सिम तमाम बनी इबर का बाप
है।
22सिम के बेटे ऐलाम, असूर, अर्फ़क्सद,
लूद और अराम थे।
23अराम के बेटे ऊज़, हूल, जतर और मस
थे।
24अर्फ़क्सद का बेटा सिलह और सिलह का
बेटा इबर था।
25इबर के हाँ दो बेटे पैदा हुए। एक का नाम
फ़लज यानी तक़्सीम था, क्यूँकि उन अय्याम
में दुनिया तक़्सीम हुई। फ़लज के भाई का नाम
युक़्तान था।
26युक़्तान के बेटे अल्मूदाद, सलफ़, हसर-
मावत, इराख़, 27हदूराम, ऊज़ाल, दिक़्ला,
28ऊबाल, अबीमाएल, सबा, 29ओफ़ीर,
हवीला और यूबाब थे। यह सब युक़्तान के बेटे
थे। 30वह मेसा से ले कर सफ़ार और मशरिक़ी
पहाड़ी इलाक़े तक आबाद थे।
31यह सब सिम की औलाद हैं, जो अपने
अपने क़बीले, अपनी अपनी ज़बान, अपने
अपने मुल्क और अपनी अपनी क़ौम के
मुताबिक़ दर्ज हैं।
32यह सब नूह के बेटों के क़बीले हैं, जो
अपनी नस्लों और क़ौमों के मुताबिक़ दर्ज
किए गए हैं। सैलाब के बाद तमाम क़ौमें इन
ही से निकल कर रू-ए-ज़मीन पर फैल गईं।

बाबल का बुर्ज

11 उस वक़्त तक पूरी दुनिया के
लोग एक ही ज़बान बोलते थे।
2मशरिक़ की तरफ़ बढ़ते बढ़ते वह सिनआर
के एक मैदान में पहुँच कर वहाँ आबाद हुए।
3तब वह एक दूसरे से कहने लगे, “आओ,
हम मिट्टी से ईंटें बना कर उन्हें आग में
ख़ूब पकाएँ।” उन्हों ने तामीरी काम के लिए
पत्थर की जगह ईंटें और मसाले की जगह
तारकोल इस्तेमाल किया। 4फिर वह कहने
लगे, “आओ, हम अपने लिए शहर बना लें
जिस में ऐसा बुर्ज हो जो आसमान तक पहुँच
जाए फिर हमारा नाम क़ाइम रहेगा और हम
रू-ए-ज़मीन पर बिखर जाने से बच जाएंगे।”
5लेकिन रब उस शहर और बुर्ज को देखने
के लिए उतर आया जिसे लोग बना रहे थे।
6रब ने कहा, “यह लोग एक ही क़ौम हैं और
एक ही ज़बान बोलते हैं। और यह सिर्फ़ उस
का आग़ाज़ है जो वह करना चाहते हैं। अब
से जो भी वह मिल कर करना चाहेंगे उस से
उन्हें रोका नहीं जा सकेगा। 7इस लिए आओ,
हम दुनिया में उतर कर उन की ज़बान को
दर्हम-बर्हम कर दें ताकि वह एक दूसरे की बात
समझ न पाएँ।”
8इस तरीक़े से रब ने उन्हें तमाम रू-ए-
ज़मीन पर मुन्तशिर कर दिया, और शहर की
तामीर रुक गई। 9इस लिए शहर का नाम
बाबल यानी अब्तरी ठहरा, क्यूँकि रब ने वहाँ
तमाम लोगों की ज़बान को दर्हम-बर्हम करके
उन्हें तमाम रू-ए-ज़मीन पर मुन्तशिर कर
दिया।

सिम से अब्राम तक का नसबनामा

10यह सिम का नसबनामा है :

सिम 100 साल का था जब उस का बेटा
अर्फ़क्सद पैदा हुआ। यह सैलाब के दो साल
बाद हुआ। 11इस के बाद वह मज़ीद 500
साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी
पैदा हुए।

12अर्फ़क्सद 35 साल का था जब सिलह
पैदा हुआ। 13इस के बाद वह मज़ीद 403
साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी
पैदा हुए।

14सिलह 30 साल का था जब इबर पैदा
हुआ। 15इस के बाद वह मज़ीद 403 साल
ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा
हुए।

16इबर 34 साल का था जब फ़लज पैदा
हुआ। 17इस के बाद वह मज़ीद 430 साल
ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा
हुए।

18फ़लज 30 साल का था जब रऊ पैदा
हुआ। 19इस के बाद वह मज़ीद 209 साल
ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा
हुए।

20रऊ 32 साल का था जब सरूज पैदा
हुआ। 21इस के बाद वह मज़ीद 207 साल
ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा
हुए।

22सरूज 30 साल का था जब नहूर पैदा
हुआ। 23इस के बाद वह मज़ीद 200 साल
ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा
हुए।

24नहूर 29 साल का था जब तारह पैदा
हुआ। 25इस के बाद वह मज़ीद 119 साल
ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा
हुए।

26तारह 70 साल का था जब उस के बेटे
अब्राम, नहूर और हारान पैदा हुए।

27यह तारह का नसबनामा है : अब्राम,
नहूर और हारान तारह के बेटे थे। लूत हारान
का बेटा था। 28अपने बाप तारह की ज़िन्दगी
में ही हारान कस्दियों के ऊर में इन्तिक़ाल कर
गया जहाँ वह पैदा भी हुआ था।

29बाक़ी दोनों बेटों की शादी हुई। अब्राम की
बीवी का नाम सारय था और नहूर की बीवी
का नाम मिल्काह। मिल्काह हारान की बेटी
थी, और उस की एक बहन बनाम इस्का थी।
30सारय बाँझ थी, इस लिए उस के बच्चे नहीं
थे।

31तारह कस्दियों के ऊर से रवाना हो कर
मुल्क-ए-कनआन की तरफ़ सफ़र करने लगा।
उस के साथ उस का बेटा अब्राम, उस का पोता
लूत यानी हारान का बेटा और उस की बहू
सारय थे। जब वह हारान पहुँचे तो वहाँ आबाद
हो गए। 32तारह 205 साल का था जब उस ने
हारान में वफ़ात पाई।

अब्राम की बुलाहट

12 रब ने अब्राम से कहा, "अपने
वतन, अपने रिश्तेदारों और अपने
बाप के घर को छोड़ कर उस मुल्क में चला
जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। 2मैं तुझ से एक
बड़ी क़ौम बनाऊँगा, तुझे बरकत दूँगा और
तेरे नाम को बहुत बढ़ाऊँगा। तू दूसरों के लिए
बरकत का बाइस होगा। 3जो तुझे बरकत देंगे
उन्हें मैं भी बरकत दूँगा। जो तुझ पर लानत
करेगा उस पर मैं भी लानत करूँगा। दुनिया
की तमाम क़ौमें तुझ से बरकत पाएँगी।"

4अब्राम ने रब की सुनी और हारान से रवाना
हुआ। लूत उस के साथ था। उस वक़्त अब्राम
75 साल का था। 5उस के साथ उस की बीवी
सारय और उस का भतीजा लूत थे। वह अपने
नौकर-चाकरों समेत अपनी पूरी मिलकियत
भी साथ ले गया जो उस ने हारान में हासिल
की थी। चलते चलते वह कनआन पहुँचे।
6अब्राम उस मुल्क में से गुज़र कर सिकम के
मक़ाम पर ठहर गया जहाँ मोरिह के बलूत का
दरख़्त था। उस ज़माने में मुल्क में कनआनी
क़ौमें आबाद थीं।

7वहाँ रब अब्राम पर ज़ाहिर हुआ और
उस से कहा, “मैं तेरी औलाद को यह मुल्क
दूँगा।” इस लिए उस ने वहाँ रब की ताज़ीम
में क़ुर्बानगाह बनाई जहाँ वह उस पर ज़ाहिर
हुआ था। 8वहाँ से वह उस पहाड़ी इलाक़े की
तरफ़ गया जो बैत-एल के मशरिक़ में है। वहाँ
उस ने अपना ख़ैमा लगाया। मग़रिब में बैत-
एल था और मशरिक़ में अई। इस जगह पर
भी उस ने रब की ताज़ीम में क़ुर्बानगाह बनाई
और रब का नाम ले कर इबादत की।
9फिर अब्राम दुबारा रवाना हो कर जुनूब के
दश्त-ए-नजब की तरफ़ चल पड़ा।

अब्राम मिस्र में

10उन दिनों में मुल्क-ए-कनआन में काल
पड़ा। काल इतना सख़्त था कि अब्राम उस
से बचने की ख़ातिर कुछ देर के लिए मिस्र
में जा बसा, लेकिन परदेसी की हैसियत से।
11जब वह मिस्र की सरहद के क़रीब आए
तो उस ने अपनी बीवी सारय से कहा, “मैं
जानता हूँ कि तू कितनी ख़ूबसूरत है। 12मिस्री
तुझे देखेंगे, फिर कहेंगे, ‘यह इस का शौहर
है।’ नतीजे में वह मुझे मार डालेंगे और तुझे
ज़िन्दा छोड़ेंगे। 13इस लिए लोगों से यह कहते
रहना कि मैं अब्राम की बहन हूँ। फिर मेरे साथ
अच्छा सुलूक किया जाएगा और मेरी जान तेरे
सबब से बच जाएगी।”
14जब अब्राम मिस्र पहुँचा तो वाक़ई
मिस्रियों ने देखा कि सारय निहायत ही
ख़ूबसूरत है। 15और जब फ़िरऔन के
अफ़सरान ने उसे देखा तो उन्हों ने फ़िरऔन के
सामने सारय की तारीफ़ की। आख़िरकार उसे
महल में पहुँचाया गया। 16फ़िरऔन ने सारय
की ख़ातिर अब्राम पर एहसान करके उसे
भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गधे-गधियाँ, नौकर-
चाकर और ऊँट दिए।
17लेकिन रब ने सारय के सबब से फ़िरऔन
और उस के घराने में सख़्त क़िस्म के अमराज़
फैलाए। 18आख़िरकार फ़िरऔन ने अब्राम को
बुला कर कहा, “तू ने मेरे साथ क्या किया?
तू ने मुझे क्यूँ नहीं बताया कि सारय तेरी बीवी
है? 19तू ने क्यूँ कहा कि वह मेरी बहन है?
इस धोके की बिना पर मैं ने उसे घर में रख
लिया ताकि उस से शादी करूँ। देख, तेरी बीवी
हाज़िर है। इसे ले कर यहाँ से निकल जा!”
20फिर फ़िरऔन ने अपने सिपाहियों को हुक्म
दिया, और उन्हों ने अब्राम, उस की बीवी और
पूरी मिलकियत को रुख़्सत करके मुल्क से
रवाना कर दिया।

अब्राम और लूत अलग हो जाते हैं

13 अब्राम अपनी बीवी, लूत और
तमाम जायदाद को साथ ले कर
मिस्र से निकला और कनआन के जुनूबी
इलाक़े दश्त-ए-नजब में वापस आया।
2अब्राम निहायत दौलतमन्द हो गया था।
उस के पास बहुत से मवेशी और सोना-चाँदी
थी। 3वहाँ से जगह-ब-जगह चलते हुए वह
आख़िरकार बैत-एल से हो कर उस मक़ाम
तक पहुँच गया जहाँ उस ने शुरू में अपना
डेरा लगाया था और जो बैत-एल और अई के
दरमियान था। 4वहाँ जहाँ उस ने क़ुर्बानगाह
बनाई थी उस ने रब का नाम ले कर उस की
इबादत की।
5लूत के पास भी बहुत सी भेड़-बकरियाँ,
गाय-बैल और ख़ैमे थे। 6नतीजा यह निकला
कि आख़िरकार वह मिल कर न रह सके,
क्यूँकि इतनी जगह नहीं थी कि दोनों के रेवड़
एक ही जगह पर चर सकें। 7अब्राम और
लूत के चरवाहे आपस में झगड़ने लगे। (उस
ज़माने में कनआनी और फ़रिज़्ज़ी भी मुल्क
में आबाद थे।) 8तब अब्राम ने लूत से बात
की, “ऐसा नहीं होना चाहिए कि तेरे और मेरे
दरमियान झगड़ा हो या तेरे चरवाहों और मेरे
चरवाहों के दरमियान। हम तो भाई हैं। 9क्या
ज़रूरत है कि हम मिल कर रहें जबकि तू
आसानी से इस मुल्क की किसी और जगह
रह सकता है। बेहतर है कि तू मुझ से अलग

हो कर कहीं और रहे। अगर तू बाएँ हाथ जाए तो मैं दाएँ हाथ जाऊँगा, और अगर तू दाएँ हाथ जाए तो मैं बाएँ हाथ जाऊँगा।”

10लूत ने अपनी नज़र उठा कर देखा कि दरया-ए-यर्दन के पूरे इलाक़े में ज़ुग़र तक पानी की कस्रत है। वह रब के बाग़ या मुल्क-ए-मिस्र की मानिन्द था, क्यूँकि उस वक़्त रब ने सदूम और अमूरा को तबाह नहीं किया था। 11चुनाँचे लूत ने दरया-ए-यर्दन के पूरे इलाक़े को चुन लिया और मशरिक़ की तरफ़ जा बसा। यूँ दोनों रिश्तेदार एक दूसरे से जुदा हो गए। 12अब्राम मुल्क-ए-कनआन में रहा जबकि लूत यर्दन के इलाक़े के शहरों के दरमियान आबाद हो गया। वहाँ उस ने अपने ख़ैमे सदूम के क़रीब लगा दिए। 13लेकिन सदूम के बाशिन्दे निहायत शरीर थे, और उन के रब के ख़िलाफ़ गुनाह निहायत मकरूह थे।

रब का अब्राम के साथ दुबारा वादा

14लूत अब्राम से जुदा हुआ तो रब ने अब्राम से कहा, “अपनी नज़र उठा कर चारों तरफ़ यानी शिमाल, जुनूब, मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ देख। 15जो भी ज़मीन तुझे नज़र आए उसे मैं तुझे और तेरी औलाद को हमेशा के लिए देता हूँ। 16मैं तेरी औलाद को ख़ाक की तरह बेशुमार होने दूँगा। जिस तरह ख़ाक के ज़र्रे गिने नहीं जा सकते उसी तरह तेरी औलाद भी गिनी नहीं जा सकेगी। 17चुनाँचे उठ कर इस मुल्क की हर जगह चल फिर, क्यूँकि मैं इसे तुझे देता हूँ।”

18अब्राम रवाना हुआ। चलते चलते उस ने अपने डेरे हब्रून के क़रीब मम्रे के दरख़्तों के पास लगाए। वहाँ उस ने रब की ताज़ीम में क़ुर्बानगाह बनाई।

अब्राम लूत को छुड़ाता है

14 कनआन में जंग हुई। बैरून-ए-मुल्क के चार बादशाहों ने कनआन के पाँच बादशाहों से जंग की। बैरून-ए-मुल्क के बादशाह यह थे : सिनआर से अम्राफ़िल, इल्लासर से अर्यूक, ऐलाम से किदर्लाउमर और जोइम से तिदआल। 2कनआन के बादशाह यह थे : सदूम से बिरा, अमूरा से बिर्शा, अदमा से सिन्याब, ज़बोईम से शिमेबर और बाला यानी ज़ुग़र का बादशाह।

3कनआन के इन पाँच बादशाहों का इत्तिहाद हुआ था और वह वादी-ए-सिद्दीम में जमा हुए थे। (अब सिद्दीम नहीं है, क्यूँकि उस की जगह बहीरा-ए-मुर्दार आ गया है)। 4किदर्लाउमर ने बारह साल तक उन पर हुकूमत की थी, लेकिन तेरहवें साल वह बाग़ी हो गए थे।

5अब एक साल के बाद किदर्लाउमर और उस के इत्तिहादी अपनी फ़ौजों के साथ आए। पहले उन्हों ने अस्तारात-क़र्नैम में रफ़ाइयों को, हाम में ज़ूज़ियों को, सवी-क़िर्यताइम में ऐमियों को 6और होरियों को उन के पहाड़ी इलाक़े सईर में शिकस्त दी। यूँ वह एल-फ़ारान तक पहुँच गए जो रेगिस्तान के किनारे पर है। 7फिर वह वापस आए और ऐन-मिस्फ़ात यानी क़ादिस पहुँचे। उन्हों ने अमालीक़ियों के पूरे इलाक़े को तबाह कर दिया और हससून-तमर में आबाद अमोरियों को भी शिकस्त दी।

8उस वक़्त सदूम, अमूरा, अदमा, ज़बोईम और बाला यानी ज़ुग़र के बादशाह उन से लड़ने के लिए सिद्दीम की वादी में जमा हुए। 9इन पाँच बादशाहों ने ऐलाम के बादशाह किदर्लाउमर, जोइम के बादशाह तिदआल, सिनआर के बादशाह अम्राफ़िल और इल्लासर के बादशाह अर्यूक का मुक़ाबला किया। 10इस वादी में तारकोल के मुतअद्दिद गढ़े थे। जब बाग़ी बादशाह शिकस्त खा कर भागने लगे तो सदूम और अमूरा के बादशाह इन गढ़ों में गिर गए जबकि बाक़ी तीन बादशाह बच कर पहाड़ी इलाक़े में फ़रार हुए। 11फ़त्हमन्द बादशाह सदूम और अमूरा का तमाम माल तमाम खाने वाली चीज़ों समेत लूट कर वापस चल दिए। 12अब्राम का

भतीजा लूत सदूम में रहता था, इस लिए वह उसे भी उस की मिलकियत समेत छीन कर साथ ले गए।

13लेकिन एक आदमी ने जो बच निकला था इब्रानी मर्द अब्राम के पास आ कर उसे सब कुछ बता दिया। उस वक़्त वह ममरे के दरख़्तों के पास आबाद था। ममरे अमोरी था। वह और उस के भाई इस्काल और आनेर अब्राम के इत्तिहादी थे। 14जब अब्राम को पता चला कि भतीजे को गिरिफ़्तार कर लिया गया है तो उस ने अपने घर में पैदा हुए तमाम जंगआज़मूदा ग़ुलामों को जमा करके दान तक दुश्मन का ताक़्क़ुब किया। उस के साथ 318 अफ़राद थे। 15वहाँ उस ने अपने बन्दों को गुरोहों में तक़्सीम करके रात के वक़्त दुश्मन पर हम्ला किया। दुश्मन शिकस्त खा कर भाग गया और अब्राम ने दमिश्क़ के शिमाल में वाक़े ख़ूबा तक उस का ताक़्क़ुब किया। 16वह उन से लूटा हुआ तमाम माल वापस ले आया। लूत, उस की जायदाद, औरतें और बाक़ी क़ैदी भी दुश्मन के क़ब्ज़े से बच निकले।

मलिक-ए-सिद्क़, सालिम का बादशाह

17जब अब्राम किदर्लाउमर और उस के इत्तिहादियों पर फ़त्ह पाने के बाद वापस पहुँचा तो सदूम का बादशाह उस से मिलने के लिए वादी-ए-सवी में आया। (इसे आजकल बादशाह की वादी कहा जाता है।) 18सालिम का बादशाह मलिक-ए-सिद्क़ भी वहाँ पहुँचा। वह अपने साथ रोटी और मै ले आया। मलिक-ए-सिद्क़ अल्लाह तआला का इमाम था। 19उस ने अब्राम को बरकत दे कर कहा, “अब्राम पर अल्लाह तआला की बरकत हो, जो आसमान-ओ-ज़मीन का ख़ालिक़ है। 20अल्लाह तआला मुबारक हो जिस ने तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ में कर दिया है।” अब्राम ने उसे तमाम माल का दसवाँ हिस्सा दिया।

21सदूम के बादशाह ने अब्राम से कहा, “मुझे मेरे लोग वापस कर दें और बाक़ी चीज़ें अपने पास रख लें।” 22लेकिन अब्राम ने उस से कहा, “मैं ने रब से क़सम खाई है, अल्लाह तआला से जो आसमान-ओ-ज़मीन का ख़ालिक़ है 23कि मैं उस में से कुछ नहीं लूँगा जो आप का है, चाहे वह धागा या जूती का तस्मा ही क्यूँ न हो। ऐसा न हो कि आप कहें, ‘मैं ने अब्राम को दौलतमन्द बना दिया है।’ 24सिवाए उस खाने के जो मेरे आदमियों ने रास्ते में खाया है मैं कुछ क़बूल नहीं करूँगा। लेकिन मेरे इत्तिहादी आनेर, इस्काल और ममरे ज़रूर अपना अपना हिस्सा लें।”

अब्राम के साथ रब का अह्द

15 इस के बाद रब रोया में अब्राम से हमकलाम हुआ, “अब्राम, मत डर। मैं ही तेरी सिपर हूँ, मैं ही तेरा बहुत बड़ा अज्र हूँ।”

2लेकिन अब्राम ने एतिराज़ किया, “ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, तू मुझे क्या देगा जबकि अभी तक मेरे हाँ कोई बच्चा नहीं है और इलीअज़र दमिश्क़ी मेरी मीरास पाएगा। 3तू ने मुझे औलाद नहीं बख़्शी, इस लिए मेरे घराने का नौकर मेरा वारिस होगा।” 4तब अब्राम को अल्लाह से एक और कलाम मिला। “यह आदमी इलीअज़र तेरा वारिस नहीं होगा बल्कि तेरा अपना ही बेटा तेरा वारिस होगा।” 5रब ने उसे बाहर ले जा कर कहा, “आसमान की तरफ़ देख और सितारों को गिनने की कोशिश कर। तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।”

6अब्राम ने रब पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।

7फिर रब ने उस से कहा, “मैं रब हूँ जो तुझे कस्दियों के ऊर से यहाँ ले आया ताकि तुझे यह मुल्क मीरास में दे दूँ।” 8अब्राम ने पूछा, “ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, मैं किस तरह जानूँ कि इस मुल्क पर क़ब्ज़ा करूँगा?” 9जवाब

में रब ने कहा, “मेरे हुज़ूर एक तीनसाला गाय,
एक तीनसाला बकरी और एक तीनसाला मेंढा
ले आ। एक क़ुम्री और एक कबूतर का बच्चा
भी ले आना।” 10अब्राम ने ऐसा ही किया और
फिर हर एक जानवर को दो हिस्सों में काट कर
उन को एक दूसरे के आमने-सामने रख दिया।
लेकिन परिन्दों को उस ने सालिम रहने दिया।
11शिकारी परिन्दे उन पर उतरने लगे, लेकिन
अब्राम उन्हें भगाता रहा।

12जब सूरज डूबने लगा तो अब्राम पर गहरी
नींद तारी हुई। उस पर दह्शत और अंधेरा ही
अंधेरा छा गया। 13फिर रब ने उस से कहा,
“जान ले कि तेरी औलाद ऐसे मुल्क में रहेगी
जो उस का नहीं होगा। वहाँ वह अजनबी
और ग़ुलाम होगी, और उस पर 400 साल
तक बहुत ज़ुल्म किया जाएगा। 14लेकिन मैं
उस क़ौम की अदालत करूँगा जिस ने उसे
ग़ुलाम बनाया होगा। इस के बाद वह बड़ी
दौलत पा कर उस मुल्क से निकलेंगे। 15तू ख़ुद
उम्ररसीदा हो कर सलामती के साथ इन्तिक़ाल
करके अपने बापदादा से जा मिलेगा और
दफ़नाया जाएगा। 16तेरी औलाद की चौथी
पुश्त ग़ैरवतन से वापस आएगी, क्यूँकि उस
वक़्त तक मैं अमोरियों को बर्दाश्त करूँगा।
लेकिन आख़िरकार उन के गुनाह इतने संगीन
हो जाएंगे कि मैं उन्हें मुल्क-ए-कनआन से
निकाल दूँगा।”

17सूरज ग़ुरूब हुआ। अंधेरा छा गया।
अचानक एक धुआँदार तनूर और एक
भड़कती हुई मशअल नज़र आई और
जानवरों के दो दो टुकड़ों के बीच में से गुज़रे।

18उस वक़्त रब ने अब्राम के साथ अह्द
किया। उस ने कहा, “मैं यह मुल्क मिस्र की
सरहद से फ़ुरात तक तेरी औलाद को दूँगा,
19अगरचे अभी तक इस में क़ीनी, क़निज़्ज़ी,
कदमूनी, 20हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, रफ़ाई, 21अमोरी,
कनआनी, जिर्जासी और यबूसी आबाद हैं।”

हाजिरा और इस्माईल

16 अब तक अब्राम की बीवी सारय
के कोई बच्चा नहीं हुआ था।
लेकिन उन्हों ने एक मिस्री लौंडी रखी थी जिस
का नाम हाजिरा था, 2और एक दिन सारय ने
अब्राम से कहा, “रब ने मुझे बच्चे पैदा करने से
महरूम रखा है, इस लिए मेरी लौंडी के साथ
हमबिसतर हों। शायद मुझे उस की मारिफ़त
बच्चा मिल जाए।”

अब्राम ने सारय की बात मान ली। 3चुनाँचे
सारय ने अपनी मिस्री लौंडी हाजिरा को अपने
शौहर अब्राम को दे दिया ताकि वह उस की
बीवी बन जाए उस वक़्त अब्राम को कनआन
में बसते हुए दस साल हो गए थे। 4अब्राम
हाजिरा से हमबिसतर हुआ तो वह उम्मीद से
हो गई। जब हाजिरा को यह मालूम हुआ तो
वह अपनी मालिकन को हक़ीर जानने लगी।
5तब सारय ने अब्राम से कहा, “जो ज़ुल्म मुझ
पर किया जा रहा है वह आप ही पर आए। मैं ने
ख़ुद इसे आप के बाज़ूओं में दे दिया था। अब
जब इसे मालूम हुआ है कि उम्मीद से है तो
मुझे हक़ीर जानने लगी है। रब मेरे और आप
के दरमियान फ़ैसला करे।” 6अब्राम ने जवाब
दिया, “देखो, यह तुम्हारी लौंडी है और तुम्हारे
इख़तियार में है। जो तुम्हारा जी चाहे उस के
साथ करो।”

इस पर सारय उस से इतना बुरा सुलूक
करने लगी कि हाजिरा फ़रार हो गई। 7रब के
फ़रिश्ते को हाजिरा रेगिस्तान के उस चश्मे के
क़रीब मिली जो शूर के रास्ते पर है। 8उस ने
कहा, “सारय की लौंडी हाजिरा, तू कहाँ से
आ रही है और कहाँ जा रही है?” हाजिरा
ने जवाब दिया, “मैं अपनी मालिकन सारय
से फ़रार हो रही हूँ।” 9रब के फ़रिश्ते ने उस
से कहा, “अपनी मालिकन के पास वापस
चली जा और उस के ताबे रह। 10मैं तेरी
औलाद इतनी बढ़ाऊँगा कि उसे गिना नहीं जा
सकेगा।” 11रब के फ़रिश्ते ने मज़ीद कहा, “तू
उम्मीद से है। एक बेटा पैदा होगा। उस का

नाम इस्माईल यानी 'अल्लाह सुनता है' रख, क्यूँकि रब ने मुसीबत में तेरी आवाज़ सुनी। 12वह जंगली गधे की मानिन्द होगा। उस का हाथ हर एक के ख़िलाफ़ और हर एक का हाथ उस के ख़िलाफ़ होगा। तो भी वह अपने तमाम भाइयों के सामने आबाद रहेगा।"

13रब के उस के साथ बात करने के बाद हाजिरा ने उस का नाम अत्ता-एल-रोई यानी 'तू एक माबूद है जो मुझे देखता है' रखा। उस ने कहा, "क्या मैं ने वाक़ई उस के पीछे देखा है जिस ने मुझे देखा है?" 14इस लिए उस जगह के कुएँ का नाम 'बैर-लही-रोई' यानी 'उस ज़िन्दा हस्ती का कुआँ जो मुझे देखता है' पड़ गया। वह क़ादिस और बरद के दरमियान वाक़े है।

15हाजिरा वापस गई, और उस के बेटा पैदा हुआ। अब्राम ने उस का नाम इस्माईल रखा। 16उस वक़्त अब्राम 86 साल का था।

अह्द का निशान : ख़तना

17 जब अब्राम 99 साल का था तो रब उस पर ज़ाहिर हुआ। उस ने कहा, "मैं अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ हूँ। मेरे हुज़ूर चलता रह और बेइल्ज़ाम हो। 2मैं तेरे साथ अपना अह्द बांधूँगा और तेरी औलाद को बहुत ही ज़्यादा बढ़ा दूँगा।"

3अब्राम मुँह के बल गिर गया, और अल्लाह ने उस से कहा, 4"मेरा तेरे साथ अह्द है कि तू बहुत क़ौमों का बाप होगा। 5अब से तू अब्राम यानी 'अज़ीम बाप' नहीं कहलाएगा बल्कि तेरा नाम इब्राहीम यानी 'बहुत क़ौमों का बाप' होगा। क्यूँकि मैं ने तुझे बहुत क़ौमों का बाप बना दिया है। 6मैं तुझे बहुत ही ज़्यादा औलाद बख़्श दूँगा, इतनी कि क़ौमें बनेंगी। तुझ से बादशाह भी निकलेंगे। 7मैं अपना अह्द तेरे और तेरी औलाद के साथ नस्ल-दर-नस्ल क़ाइम करूँगा, एक अबदी अह्द जिस के मुताबिक़ मैं तेरा और तेरी औलाद का ख़ुदा हूँगा। 8तू इस वक़्त मुल्क-ए-कनआन में परदेसी है, लेकिन मैं इस पूरे मुल्क को तुझे और तेरी औलाद को देता हूँ। यह हमेशा तक उन का ही रहेगा, और मैं उन का ख़ुदा हूँगा।"

9अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, "तुझे और तेरी औलाद को नस्ल-दर-नस्ल मेरे अह्द की शराइत पूरी करनी हैं। 10इस की एक शर्त यह है कि हर एक मर्द का ख़तना किया जाए। 11अपना ख़तना कराओ। यह हमारे आपस के अह्द का ज़ाहिरी निशान होगा। 12लाज़िम है कि तू और तेरी औलाद नस्ल-दर-नस्ल अपने हर एक बेटे का आठवें दिन ख़तना करवाएँ। यह उसूल उस पर भी लागू है जो तेरे घर में रहता है लेकिन तुझ से रिश्ता नहीं रखता, चाहे वह घर में पैदा हुआ हो या किसी अजनबी से ख़रीदा गया हो। 13घर के हर एक मर्द का ख़तना करना लाज़िम है, ख़्वाह वह घर में पैदा हुआ हो या किसी अजनबी से ख़रीदा गया हो। यह इस बात का निशान होगा कि मेरा तेरे साथ अह्द हमेशा तक क़ाइम रहेगा। 14जिस मर्द का ख़तना न किया गया उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाएगा, क्यूँकि उस ने मेरे अह्द की शराइत पूरी न कीं।"

15अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, "अपनी बीवी सारय का नाम भी बदल देना। अब से उस का नाम सारय नहीं बल्कि सारा यानी शहज़ादी होगा। 16मैं उसे बरकत बख़्शूँगा और तुझे उस की मारिफ़त बेटा दूँगा। मैं उसे यहाँ तक बरकत दूँगा कि उस से क़ौमें बल्कि क़ौमों के बादशाह निकलेंगे।"

17इब्राहीम मुँह के बल गिर गया। लेकिन दिल ही दिल में वह हंस पड़ा और सोचा, "यह किस तरह हो सकता है? मैं तो 100 साल का हूँ। ऐसे आदमी के हाँ बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? और सारा जैसी उम्ररसीदा औरत के बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? उस की उम्र तो 90 साल है।" 18उस ने अल्लाह से कहा, "हाँ, इस्माईल ही तेरे सामने जीता रहे।"

19अल्लाह ने कहा, “नहीं, तेरी बीवी सारा
के हाँ बेटा पैदा होगा। तू उस का नाम
इस्हाक़ यानी ‘वह हँसता है’ रखना। मैं उस
के और उस की औलाद के साथ अबदी अह्द
बांधूँगा। 20मैं इस्माईल के सिलसिले में भी तेरी
दरख़्वास्त पूरी करूँगा। मैं उसे भी बरकत दे
कर फलने फूलने दूँगा और उस की औलाद
बहुत ही ज़्यादा बढ़ा दूँगा। वह बारह रईसों का
बाप होगा, और मैं उस की मारिफ़त एक बड़ी
क़ौम बनाऊँगा। 21लेकिन मेरा अह्द इस्हाक़
के साथ होगा, जो ऐन एक साल के बाद सारा
के हाँ पैदा होगा।”
22अल्लाह की इब्राहीम के साथ बात ख़त्म
हुई, और वह उस के पास से आसमान पर
चला गया।
23उसी दिन इब्राहीम ने अल्लाह का हुक्म
पूरा किया। उस ने घर के हर एक मर्द का
ख़तना करवाया, अपने बेटे इस्माईल का भी
और उन का भी जो उस के घर में रहते लेकिन
उस से रिश्ता नहीं रखते थे, चाहे वह उस के
घर में पैदा हुए थे या ख़रीदे गए थे। 24इब्राहीम
99 साल का था जब उस का ख़तना हुआ,
25जबकि उस का बेटा इस्माईल 13 साल का
था। 26दोनों का ख़तना उसी दिन हुआ। 27साथ
साथ घराने के तमाम बाक़ी मर्दों का ख़तना
भी हुआ, बशमूल उन के जिन का इब्राहीम के
साथ रिश्ता नहीं था, चाहे वह घर में पैदा हुए
या किसी अजनबी से ख़रीदे गए थे।

मम्रे में इब्राहीम के तीन मेहमान

18 एक दिन रब मम्रे के दरख़्तों के
पास इब्राहीम पर ज़ाहिर हुआ।
इब्राहीम अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर बैठा था।
दिन की गर्मी उरूज पर थी। 2अचानक उस
ने देखा कि तीन मर्द मेरे सामने खड़े हैं। उन्हें
देखते ही वह ख़ैमे से उन से मिलने के लिए
दौड़ा और मुँह के बल गिर कर सिज्दा किया।
3उस ने कहा, “मेरे आक़ा, अगर मुझ पर
आप के करम की नज़र है तो आगे न बढ़ें
बल्कि कुछ देर अपने बन्दे के घर ठहरें। 4अगर
इजाज़त हो तो मैं कुछ पानी ले आऊँ ताकि
आप अपने पाँओ धो कर दरख़्त के साय में
आराम कर सकें। 5साथ साथ मैं आप के लिए
थोड़ा बहुत खाना भी ले आऊँ ताकि आप
तक़वियत पा कर आगे बढ़ सकें। मुझे यह
करने दें, क्यूँकि आप अपने ख़ादिम के घर
आ गए हैं।” उन्हों ने कहा, “ठीक है। जो कुछ
तू ने कहा है वह कर।”
6इब्राहीम ख़ैमे की तरफ़ दौड़ कर सारा के
पास आया और कहा, “जल्दी करो! 16
किलोग्राम बेहतरीन मैदा ले और उसे गूँध कर
रोटियाँ बना।” 7फिर वह भाग कर बैलों के
पास पहुँचा। उन में से उस ने एक मोटा-ताज़ा
बछड़ा चुन लिया जिस का गोश्त नर्म था और
उसे अपने नौकर को दिया जिस ने जल्दी से
उसे तय्यार किया। 8जब खाना तय्यार था तो
इब्राहीम ने उसे ले कर लस्सी और दूध के साथ
अपने मेहमानों के आगे रख दिया। वह खाने
लगे और इब्राहीम उन के सामने दरख़्त के
साय में खड़ा रहा।
9उन्हों ने पूछा, “तेरी बीवी सारा कहाँ है?”
उस ने जवाब दिया, “ख़ैमे में।” 10रब ने कहा,
“ऐन एक साल के बाद मैं वापस आऊँगा तो
तेरी बीवी सारा के बेटा होगा।”
सारा यह बातें सुन रही थी, क्यूँकि वह उस
के पीछे ख़ैमे के दरवाज़े के पास थी। 11दोनों
मियाँ-बीवी बूढ़े हो चुके थे और सारा उस उम्र
से गुज़र चुकी थी जिस में औरतों के बच्चे
पैदा होते हैं। 12इस लिए सारा अन्दर ही अन्दर
हंस पड़ी और सोचा, “यह कैसे हो सकता है?
क्या जब मैं बुढ़ापे के बाइस घिसे फटे लिबास
की मानिन्द हूँ तो जवानी के जोबन का लुत्फ़
उठाऊँ? और मेरा शौहर भी बूढ़ा है।”
13रब ने इब्राहीम से पूछा, “सारा क्यूँ हंस
रही है? वह क्यूँ कह रही है, ‘क्या वाक़ई मेरे
हाँ बच्चा पैदा होगा जबकि मैं इतनी उम्ररसीदा
हूँ?’ 14क्या रब के लिए कोई काम नामुमकिन
है? एक साल के बाद मुक़र्ररा वक़्त पर

मैं वापस आऊँगा तो सारा के बेटा होगा।”
15सारा डर गई। उस ने झूट बोल कर इन्कार
किया, “मैं नहीं हंस रही थी।”

रब ने कहा, “नहीं, तू ज़रूर हंस रही थी।”

इब्राहीम सदूम के लिए मिन्नत करता है

16फिर मेहमान उठ कर रवाना हुए और
नीचे वादी में सदूम की तरफ़ देखने लगे।
इब्राहीम उन्हें रुख़्सत करने के लिए साथ
साथ चल रहा था। 17रब ने दिल में कहा, “मैं
इब्राहीम से वह काम क्यूँ छुपाए रखूँ जो मैं
करने के लिए जा रहा हूँ? 18इसी से तो एक
बड़ी और ताक़तवर क़ौम निकलेगी और इसी
से मैं दुनिया की तमाम क़ौमों को बरकत दूँगा।
19उसी को मैं ने चुन लिया है ताकि वह अपनी
औलाद और अपने बाद के घराने को हुक्म दे
कि वह रब की राह पर चल कर रास्त और
मुन्सिफ़ाना काम करें। क्यूँकि अगर वह ऐसा
करें तो रब इब्राहीम के साथ अपना वादा पूरा
करेगा।”

20फिर रब ने कहा, “सदूम और अमूरा की
बदी के बाइस लोगों की आहें बुलन्द हो रही
हैं, क्यूँकि उन से बहुत संगीन गुनाह सरज़द
हो रहे हैं। 21मैं उतर कर उन के पास जा रहा
हूँ ताकि देखूँ कि यह इल्ज़ाम वाक़ई सच हैं
जो मुझ तक पहुँचे हैं। अगर ऐसा नहीं है तो
मैं यह जानना चाहता हूँ।”

22दूसरे दो आदमी सदूम की तरफ़ आगे
निकले जबकि रब कुछ देर के लिए वहाँ ठहरा
रहा और इब्राहीम उस के सामने खड़ा रहा।
23फिर उस ने क़रीब आ कर उस से बात की,
“क्या तू रास्तबाज़ों को भी शरीरों के साथ
तबाह कर देगा? 24हो सकता है कि शहर में
50 रास्तबाज़ हों। क्या तू फिर भी शहर को
बर्बाद कर देगा और उसे उन 50 के सबब से
मुआफ़ नहीं करेगा? 25यह कैसे हो सकता
है कि तू बेक़ुसूरों को शरीरों के साथ हलाक
कर दे? यह तो नामुमकिन है कि तू नेक
और शरीर लोगों से एक जैसा सुलूक करे।
क्या लाज़िम नहीं कि पूरी दुनिया का मुन्सिफ़
इन्साफ़ करे?”

26रब ने जवाब दिया, “अगर मुझे शहर में
50 रास्तबाज़ मिल जाएँ तो उन के सबब से
तमाम को मुआफ़ कर दूँगा।”

27इब्राहीम ने कहा, “मैं मुआफ़ी चाहता हूँ
कि मैं ने रब से बात करने की जुरअत की है
अगरचे मैं ख़ाक और राख ही हूँ। 28लेकिन हो
सकता है कि सिर्फ़ 45 रास्तबाज़ उस में हों।
क्या तू फिर भी उन पाँच लोगों की कमी के
सबब से पूरे शहर को तबाह करेगा?” उस ने
कहा, “अगर मुझे 45 भी मिल जाएँ तो उसे
बर्बाद नहीं करूँगा।”

29इब्राहीम ने अपनी बात जारी रखी, “और
अगर सिर्फ़ 40 नेक लोग हों तो?” रब ने कहा,
“मैं उन 40 के सबब से उन्हें छोड़ दूँगा।”

30इब्राहीम ने कहा, “रब ग़ुस्सा न करे कि
मैं एक दफ़ा और बात करूँ। शायद वहाँ सिर्फ़
30 हों।” उस ने जवाब दिया, “फिर भी उन्हें
छोड़ दूँगा।”

31इब्राहीम ने कहा, “मैं मुआफ़ी चाहता हूँ
कि मैं ने रब से बात करने की जुरअत की है।
अगर सिर्फ़ 20 पाए जाएँ?” रब ने कहा, “मैं
20 के सबब से शहर को बर्बाद करने से बाज़
रहूँगा।”

32इब्राहीम ने एक आख़िरी दफ़ा बात की,
“रब ग़ुस्सा न करे अगर मैं एक और बार बात
करूँ। शायद उस में सिर्फ़ 10 पाए जाएँ।” रब
ने कहा, “मैं उसे उन 10 लोगों के सबब से भी
बर्बाद नहीं करूँगा।”

33इन बातों के बाद रब चला गया और
इब्राहीम अपने घर को लौट आया।

सदूम और अमूरा की तबाही

19 शाम के वक़्त यह दो फ़रिश्ते सदूम
पहुँचे। लूत शहर के दरवाज़े पर
बैठा था। जब उस ने उन्हें देखा तो खड़े हो कर
उन से मिलने गया और मुँह के बल गिर कर
सिज्दा किया। 2उस ने कहा, “साहिबो, अपने

बन्दे के घर तश्रीफ़ लाएँ ताकि अपने पाँओ धो कर रात को ठहरें और फिर कल सुब्ह-सवेरे उठ कर अपना सफ़र जारी रखें।" उन्हों ने कहा, "कोई बात नहीं, हम चौक में रात गुज़ारेंगे।" 3लेकिन लूत ने उन्हें बहुत मज्बूर किया, और आख़िरकार वह उस के साथ उस के घर आए। उस ने उन के लिए खाना पकाया और बेख़मीरी रोटी बनाई। फिर उन्हों ने खाना खाया।

4वह अभी सोने के लिए लेटे नहीं थे कि शहर के जवानों से ले कर बूढ़ों तक तमाम मर्दों ने लूत के घर को घेर लिया। 5उन्हों ने आवाज़ दे कर लूत से कहा, "वह आदमी कहाँ हैं जो रात के वक़्त तेरे पास आए? उन को बाहर ले आ ताकि हम उन के साथ हरामकारी करें।"

6लूत उन से मिलने बाहर गया। उस ने अपने पीछे दरवाज़ा बन्द कर लिया 7और कहा, "मेरे भाइयो, ऐसा मत करो, ऐसी बदकारी न करो। 8देखो, मेरी दो कुंवारी बेटियाँ हैं। उन्हें मैं तुम्हारे पास बाहर ले आता हूँ। फिर जो जी चाहे उन के साथ करो। लेकिन इन आदमियों को छोड़ दो, क्यूँकि वह मेरे मेहमान हैं।"

9उन्हों ने कहा, "रास्ते से हट जा! देखो, यह शख़्स जब हमारे पास आया था तो अजनबी था, और अब यह हम पर हाकिम बनना चाहता है। अब तेरे साथ उन से ज़्यादा बुरा सुलूक करेंगे।" वह उसे मज्बूर करते करते दरवाज़े को तोड़ने के लिए आगे बढ़े। 10लेकिन ऐन वक़्त पर अन्दर के आदमी लूत को पकड़ कर अन्दर ले आए, फिर दरवाज़ा दुबारा बन्द कर दिया। 11उन्हों ने छोटों से ले कर बड़ों तक बाहर के तमाम आदमियों को अंधा कर दिया, और वह दरवाज़े को ढूँडते ढूँडते थक गए।

12दोनों आदमियों ने लूत से कहा, "क्या तेरा कोई और रिश्तेदार इस शहर में रहता है, मसलन कोई दामाद या बेटा-बेटी? सब को साथ ले कर यहाँ से चला जा, 13क्यूँकि हम यह मक़ाम तबाह करने को हैं। इस के बाशिन्दों की बदी के बाइस लोगों की आहें बुलन्द हो कर रब के हुज़ूर पहुँच गई हैं, इस लिए उस ने हमें इस को तबाह करने के लिए भेजा है।"

14लूत घर से निकला और अपने दामादों से बात की जिन का उस की बेटियों के साथ रिश्ता हो चुका था। उस ने कहा, "जल्दी करो, इस जगह से निकलो, क्यूँकि रब इस शहर को तबाह करने को है।" लेकिन उस के दामादों ने इसे मज़ाक़ ही समझा।

15जब पौ फटने लगी तो दोनों आदमियों ने लूत को बहुत समझाया और कहा, "जल्दी कर! अपनी बीवी और दोनों बेटियों को साथ ले कर चला जा, वर्ना जब शहर को सज़ा दी जाएगी तो तू भी हलाक हो जाएगा।" 16तो भी वह झिजकता रहा। आख़िरकार दोनों ने लूत, उस की बीवी और बेटियों के हाथ पकड़ कर उन्हें शहर के बाहर तक पहुँचा दिया, क्यूँकि रब को लूत पर तरस आता था।

17जूँ ही वह उन्हें बाहर ले आए उन में से एक ने कहा, "अपनी जान बचा कर चला जा। पीछे मुड़ कर न देखना। मैदान में कहीं न ठहरना बल्कि पहाड़ों में पनाह लेना, वर्ना तू हलाक हो जाएगा।"

18लेकिन लूत ने उन से कहा, "नहीं मेरे आक़ा, ऐसा न हो। 19तेरे बन्दे को तेरी नज़र-ए-करम हासिल हुई है और तू ने मेरी जान बचाने में बहुत मेहरबानी कर दिखाई है। लेकिन मैं पहाड़ों में पनाह नहीं ले सकता। वहाँ पहुँचने से पहले यह मुसीबत मुझ पर आन पड़ेगी और मैं हलाक हो जाऊँगा। 20देख, क़रीब ही एक छोटा क़स्बा है। वह इतना नज़दीक है कि मैं उस तरफ़ हिज्रत कर सकता हूँ। मुझे वहाँ पनाह लेने दे। वह छोटा ही है, ना? फिर मेरी जान बचेगी।"

21उस ने कहा, "चलो, ठीक है। तेरी यह दरख़्वास्त भी मन्ज़ूर है। मैं यह क़स्बा तबाह नहीं करूँगा। 22लेकिन भाग कर वहाँ पनाह ले, क्यूँकि जब तक तू वहाँ पहुँच न जाए मैं कुछ नहीं कर सकता।" इस लिए क़स्बे का नाम ज़ुग़र यानी छोटा है।

23जब लूत ज़ुग़र पहुँचा तो सूरज निकला
हुआ था। 24तब रब ने आसमान से सदूम और
अमूरा पर गंधक और आग बरसाई। 25यूँ उस
ने उस पूरे मैदान को उस के शहरों, बाशिन्दों
और तमाम हरियाली समेत तबाह कर दिया।
26लेकिन फ़रार होते वक़्त लूत की बीवी ने
पीछे मुड़ कर देखा तो वह फ़ौरन नमक का
सतून बन गई।
27इब्राहीम सुब्ह-सवेरे उठ कर उस जगह
वापस आया जहाँ वह कल रब के सामने खड़ा
हुआ था। 28जब उस ने नीचे सदूम, अमूरा और
पूरी वादी की तरफ़ नज़र की तो वहाँ से भट्टे
का सा धुआँ उठ रहा था।
29यूँ अल्लाह ने इब्राहीम को याद किया जब
उस ने उस मैदान के शहर तबाह किए। क्यूँकि
वह उन्हें तबाह करने से पहले लूत को जो उन
में आबाद था वहाँ से निकाल लाया।

लूत और उस की बेटियाँ

30लूत और उस की बेटियाँ ज़्यादा देर तक
ज़ुग़र में न ठहरे। वह रवाना हो कर पहाड़ों में
आबाद हुए, क्यूँकि लूत ज़ुग़र में रहने से डरता
था। वहाँ उन्हों ने एक ग़ार को अपना घर बना
लिया।
31एक दिन बड़ी बेटी ने छोटी से कहा,
“अब्बू बूढ़ा है और यहाँ कोई मर्द है नहीं जिस
के ज़रीए हमारे बच्चे पैदा हो सकें। 32आओ,
हम अब्बू को मै पिलाएँ। जब वह नशे में
धुत हो तो हम उस के साथ हमबिसतर हो
कर अपने लिए औलाद पैदा करें ताकि हमारी
नस्ल क़ाइम रहे।”
33उस रात उन्हों ने अपने बाप को मै
पिलाई। जब वह नशे में था तो बड़ी बेटी अन्दर
जा कर उस के साथ हमबिसतर हुई। चूँकि लूत
होश में नहीं था इस लिए उसे कुछ भी मालूम
न हुआ। 34अगले दिन बड़ी बहन ने छोटी बहन
से कहा, “पिछली रात मैं अब्बू से हमबिसतर
हुई। आओ, आज रात को हम उसे दुबारा मै
पिलाएँ। जब वह नशे में धुत हो तो तुम उस के
साथ हमबिसतर हो कर अपने लिए औलाद
पैदा करना ताकि हमारी नस्ल क़ाइम रहे।”
35चुनाँचे उन्हों ने उस रात भी अपने बाप को
मै पिलाई। जब वह नशे में था तो छोटी बेटी
उठ कर उस के साथ हमबिसतर हुई। इस बार
भी वह होश में नहीं था, इस लिए उसे कुछ भी
मालूम न हुआ।
36यूँ लूत की बेटियाँ अपने बाप से उम्मीद
से हुईं। 37बड़ी बेटी के हाँ बेटा पैदा हुआ। उस
ने उस का नाम मोआब रखा। उस से मोआबी
निकले हैं। 38छोटी बेटी के हाँ भी बेटा पैदा
हुआ। उस ने उस का नाम बिन-अम्मी रखा।
उस से अम्मोनी निकले हैं।

इब्राहीम और अबीमलिक

20 इब्राहीम वहाँ से जुनूब की तरफ़
दश्त-ए-नजब में चला गया और
क़ादिस और शूर के दरमियान जा बसा। कुछ
देर के लिए वह जिरार में ठहरा, लेकिन
अजनबी की हैसियत से। 2वहाँ उस ने लोगों
को बताया, “सारा मेरी बहन है।” इस लिए
जिरार के बादशाह अबीमलिक ने किसी को
भिजवा दिया कि उसे महल में ले आए।
3लेकिन रात के वक़्त अल्लाह ख़्वाब में
अबीमलिक पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “मौत
तेरे सर पर खड़ी है, क्यूँकि जो औरत तू अपने
घर ले आया है वह शादीशुदा है।”
4असल में अबीमलिक अभी तक सारा के
क़रीब नहीं गया था। उस ने कहा, “मेरे आक़ा,
क्या तू एक बेक़ुसूर क़ौम को भी हलाक
करेगा? 5क्या इब्राहीम ने मुझ से नहीं कहा था
कि सारा मेरी बहन है? और सारा ने उस की
हाँ में हाँ मिलाई। मेरी नीयत अच्छी थी और मैं
ने ग़लत काम नहीं किया।” 6अल्लाह ने कहा,
“हाँ, मैं जानता हूँ कि इस में तेरी नीयत अच्छी
थी। इस लिए मैं ने तुझे मेरा गुनाह करने और
उसे छूने से रोक दिया। 7अब उस औरत को
उस के शौहर को वापस कर दे, क्यूँकि वह
नबी है और तेरे लिए दुआ करेगा। फिर तू नहीं

मरेगा। लेकिन अगर तू उसे वापस नहीं करेगा
तो जान ले कि तेरी और तेरे लोगों की मौत
यक़ीनी है।"
8अबीमलिक ने सुब्ह-सवेरे उठ कर अपने
तमाम कारिन्दों को यह सब कुछ बताया।
यह सुन कर उन पर दह्शत छा गई। 9फिर
अबीमलिक ने इब्राहीम को बुला कर कहा,
"आप ने हमारे साथ क्या किया है? मैं ने आप
के साथ क्या ग़लत काम किया कि आप ने
मुझे और मेरी सल्तनत को इतने संगीन जुर्म
में फंसा दिया है? जो सुलूक आप ने हमारे
साथ कर दिखाया है वह किसी भी शख़्स के
साथ नहीं करना चाहिए। 10आप ने यह क्यूँ
किया?"
11इब्राहीम ने जवाब दिया, "मैं ने अपने दिल
में कहा कि यहाँ के लोग अल्लाह का ख़ौफ़
नहीं रखते होंगे, इस लिए वह मेरी बीवी को
हासिल करने के लिए मुझे क़त्ल कर देंगे।
12हक़ीक़त में वह मेरी बहन भी है। वह मेरे
बाप की बेटी है अगरचे उस की और मेरी माँ
फ़र्क़ हैं। यूँ मैं उस से शादी कर सका। 13फिर
जब अल्लाह ने होने दिया कि मैं अपने बाप के
घराने से निकल कर इधर उधर फिरूँ तो मैं ने
अपनी बीवी से कहा, 'मुझ पर यह मेहरबानी
कर कि जहाँ भी हम जाएँ मेरे बारे में कह देना
कि वह मेरा भाई है'।"
14फिर अबीमलिक ने इब्राहीम को भेड़-
बकरियाँ, गाय-बैल, ग़ुलाम और लौंडियाँ दे
कर उस की बीवी सारा को उसे वापस कर
दिया। 15उस ने कहा, "मेरा मुल्क आप के
लिए खुला है। जहाँ जी चाहे उस में जा बसें।"
16सारा से उस ने कहा, "मैं आप के भाई को
चाँदी के हज़ार सिक्के देता हूँ। इस से आप
और आप के लोगों के सामने आप के साथ
किए गए नारवा सुलूक का इज़ाला हो और
आप को बेक़ुसूर क़रार दिया जाए।"
17-18तब इब्राहीम ने अल्लाह से दुआ की
और अल्लाह ने अबीमलिक, उस की बीवी
और उस की लौंडियों को शिफ़ा दी, क्यूँकि रब
ने अबीमलिक के घराने की तमाम औरतों को
सारा के सबब से बाँझ बना दिया था। लेकिन
अब उन के हाँ दुबारा बच्चे पैदा होने लगे।

इस्हाक़ की पैदाइश

21 तब रब ने सारा के साथ वैसा ही
किया जैसा उस ने फ़रमाया था।
जो वादा उस ने सारा के बारे में किया था उसे
उस ने पूरा किया। 2वह हामिला हुई और बेटा
पैदा हुआ। ऐन उस वक़्त बूढ़े इब्राहीम के हाँ
बेटा पैदा हुआ जो अल्लाह ने मुक़र्रर करके
उसे बताया था।
3इब्राहीम ने अपने इस बेटे का नाम इस्हाक़
यानी 'वह हँसता है' रखा। 4जब इस्हाक़ आठ
दिन का था तो इब्राहीम ने उस का ख़तना
कराया, जिस तरह अल्लाह ने उसे हुक्म
दिया था। 5जब इस्हाक़ पैदा हुआ उस वक़्त
इब्राहीम 100 साल का था। 6सारा ने कहा,
"अल्लाह ने मुझे हंसाया, और हर कोई जो मेरे
बारे में यह सुनेगा हंसेगा। 7इस से पहले कौन
इब्राहीम से यह कहने की जुरअत कर सकता
था कि सारा अपने बच्चों को दूध पिलाएगी?
और अब मेरे हाँ बेटा पैदा हुआ है, अगरचे
इब्राहीम बूढ़ा हो गया है।"
8इस्हाक़ बड़ा होता गया। जब उस का दूध
छुड़ाया गया तो इब्राहीम ने उस के लिए बड़ी
ज़ियाफ़त की।

इब्राहीम हाजिरा और इस्माईल को निकाल देता है

9एक दिन सारा ने देखा कि मिस्री लौंडी
हाजिरा का बेटा इस्माईल इस्हाक़ का मज़ाक़
उड़ा रहा है। 10उस ने इब्राहीम से कहा, "इस
लौंडी और उस के बेटे को घर से निकाल दें,
क्यूँकि वह मेरे बेटे इस्हाक़ के साथ मीरास नहीं
पाएगा।"
11इब्राहीम को यह बात बहुत बुरी लगी।
आख़िर इस्माईल भी उस का बेटा था।
12लेकिन अल्लाह ने उस से कहा, "जो बात

सारा ने अपनी लौंडी और उस के बेटे के बारे में कही है वह तुझे बुरी न लगे। सारा की बात मान ले, क्यूँकि तेरी नस्ल इस्हाक़ ही से क़ाइम रहेगी। 13लेकिन मैं इस्माईल से भी एक क़ौम बनाऊँगा, क्यूँकि वह तेरा बेटा है।"

14इब्राहीम सुब्ह-सवेरे उठा। उस ने रोटी और पानी की मश्क हाजिरा के कंधों पर रख कर उसे लड़के के साथ घर से निकाल दिया। हाजिरा चलते चलते बैर-सबा के रेगिस्तान में इधर उधर फिरने लगी। 15फिर पानी ख़त्म हो गया। हाजिरा लड़के को किसी झाड़ी के नीचे छोड़ कर 16कोई 300 फ़ुट दूर बैठ गई। क्यूँकि उस ने दिल में कहा, "मैं उसे मरते नहीं देख सकती।" वह वहाँ बैठ कर रोने लगी।

17लेकिन अल्लाह ने बेटे की रोती हुई आवाज़ सुन ली। अल्लाह के फ़रिश्ते ने आसमान पर से पुकार कर हाजिरा से बात की, "हाजिरा, क्या बात है? मत डर, क्यूँकि अल्लाह ने लड़के का जो वहाँ पड़ा है रोना सुन लिया है। 18उठ, लड़के को उठा कर उस का हाथ थाम ले, क्यूँकि मैं उस से एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा।"

19फिर अल्लाह ने हाजिरा की आँखें खोल दीं, और उस की नज़र एक कुएँ पर पड़ी। वह वहाँ गई और मश्क को पानी से भर कर लड़के को पिलाया।

20अल्लाह लड़के के साथ था। वह जवान हुआ और तीरअन्दाज़ बन कर बयाबान में रहने लगा। 21जब वह फ़ारान के रेगिस्तान में रहता था तो उस की माँ ने उसे एक मिस्री औरत से ब्याह दिया।

अबीमलिक के साथ अह्द

22उन दिनों में अबीमलिक और उस के सिपाहसालार फ़ीकुल ने इब्राहीम से कहा, "जो कुछ भी आप करते हैं अल्लाह आप के साथ है। 23अब मुझ से अल्लाह की क़सम खाएँ कि आप मुझे और मेरी आल-ओ-औलाद को धोका नहीं देंगे। मुझ पर और इस मुल्क पर जिस में आप परदेसी हैं वही मेहरबानी करें जो मैं ने आप पर की है।"

24इब्राहीम ने जवाब दिया, "मैं क़सम खाता हूँ।" 25फिर उस ने अबीमलिक से शिकायत करते हुए कहा, "आप के बन्दों ने हमारे एक कुएँ पर क़ब्ज़ा कर लिया है।" 26अबीमलिक ने कहा, "मुझे नहीं मालूम कि किस ने ऐसा किया है। आप ने भी मुझे नहीं बताया। आज मैं पहली दफ़ा यह बात सुन रहा हूँ।"

27तब इब्राहीम ने अबीमलिक को भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल दिए, और दोनों ने एक दूसरे के साथ अह्द बांधा। 28फिर इब्राहीम ने भेड़ के सात मादा बच्चों को अलग कर लिया। 29अबीमलिक ने पूछा, "आप ने यह क्यूँ किया?" 30इब्राहीम ने जवाब दिया, "भेड़ के इन सात बच्चों को मुझ से ले लें। यह इस के गवाह हों कि मैं ने इस कुएँ को खोदा है।" 31इस लिए उस जगह का नाम बैर-सबा यानी 'क़सम का कुआँ' रखा गया, क्यूँकि वहाँ उन दोनों मर्दों ने क़सम खाई।

32यूँ उन्हों ने बैर-सबा में एक दूसरे से अह्द बांधा। फिर अबीमलिक और फ़ीकुल फ़िलिस्तियों के मुल्क वापस चले गए। 33इस के बाद इब्राहीम ने बैर-सबा में झाओ का दरख़्त लगाया। वहाँ उस ने रब का नाम ले कर उस की इबादत की जो अबदी ख़ुदा है। 34इब्राहीम बहुत अर्से तक फ़िलिस्तियों के मुल्क में आबाद रहा, लेकिन अजनबी की हैसियत से।

इब्राहीम की आज़माइश

22 कुछ अर्से के बाद अल्लाह ने इब्राहीम को आज़माया। उस ने उस से कहा, "इब्राहीम!" उस ने जवाब दिया, "जी, मैं हाज़िर हूँ।" 2अल्लाह ने कहा, "अपने इक्लौते बेटे इस्हाक़ को जिसे तू प्यार करता है साथ ले कर मोरियाह के इलाक़े में चला जा। वहाँ मैं तुझे एक पहाड़ दिखाऊँगा। उस पर

अपने बेटे को क़ुर्बान कर दे। उसे ज़बह करके
क़ुर्बानगाह पर जला देना।"
3सुब्ह-सवेरे इब्राहीम उठा और अपने गधे
पर ज़ीन कसा। उस ने अपने साथ दो नौकरों
और अपने बेटे इस्हाक़ को लिया। फिर वह
क़ुर्बानी को जलाने के लिए लकड़ी काट कर
उस जगह की तरफ़ रवाना हुआ जो अल्लाह
ने उसे बताई थी। 4सफ़र करते करते तीसरे
दिन क़ुर्बानी की जगह इब्राहीम को दूर से नज़र
आई। 5उस ने नौकरों से कहा, "यहाँ गधे के
पास ठहरो। मैं लड़के के साथ वहाँ जा कर
परस्तिश करूँगा। फिर हम तुम्हारे पास वापस
आ जाएंगे।"
6इब्राहीम ने क़ुर्बानी को जलाने के लिए
लकड़ियाँ इस्हाक़ के कंधों पर रख दीं और
ख़ुद छुरी और आग जलाने के लिए अंगारों का
बर्तन उठाया। दोनों चल दिए। 7इस्हाक़ बोला,
"अब्बू!" इब्राहीम ने कहा, "जी बेटा।"
"अब्बू, आग और लकड़ियाँ तो हमारे पास
हैं, लेकिन क़ुर्बानी के लिए भेड़ या बकरी कहाँ
है?" 8इब्राहीम ने जवाब दिया, "अल्लाह ख़ुद
क़ुर्बानी के लिए जानवर मुहय्या करेगा, बेटा।"
वह आगे बढ़ गए।
9चलते चलते वह उस मक़ाम पर पहुँचे
जो अल्लाह ने उस पर ज़ाहिर किया था।
इब्राहीम ने वहाँ क़ुर्बानगाह बनाई और उस
पर लकड़ियाँ तरतीब से रख दीं। फिर उस ने
इस्हाक़ को बांध कर लकड़ियों पर रख दिया
10और छुरी पकड़ ली ताकि अपने बेटे को
ज़बह करे। 11ऐन उसी वक़्त रब के फ़रिश्ते ने
आसमान पर से उसे आवाज़ दी, "इब्राहीम,
इब्राहीम!" इब्राहीम ने कहा, "जी, मैं हाज़िर
हूँ।" 12फ़रिश्ते ने कहा, "अपने बेटे पर हाथ
न चला, न उस के साथ कुछ कर। अब मैं ने
जान लिया है कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ रखता
है, क्यूँकि तू अपने इक्लौते बेटे को भी मुझे
देने के लिए तय्यार है।"
13अचानक इब्राहीम को एक मेंढा नज़र
आया जिस के सींग गुंजान झाड़ियों में फंसे
हुए थे। इब्राहीम ने उसे ज़बह करके अपने
बेटे की जगह क़ुर्बानी के तौर पर जला दिया।
14उस ने उस मक़ाम का नाम "रब मुहय्या
करता है" रखा। इस लिए आज तक कहा
जाता है, "रब के पहाड़ पर मुहय्या किया
जाता है।"
15रब के फ़रिश्ते ने एक बार फिर आसमान
पर से पुकार कर उस से बात की। 16"रब का
फ़रमान है, मेरी ज़ात की क़सम, चूँकि तू ने
यह किया और अपने इक्लौते बेटे को मुझे पेश
करने के लिए तय्यार था 17इस लिए मैं तुझे
बरकत दूँगा और तेरी औलाद को आसमान के
सितारों और साहिल की रेत की तरह बेशुमार
होने दूँगा। तेरी औलाद अपने दुश्मनों के शहरों
के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करेगी। 18चूँकि तू ने
मेरी सुनी इस लिए तेरी औलाद से दुनिया की
तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी।"
19इस के बाद इब्राहीम अपने नौकरों के
पास वापस आया, और वह मिल कर बैर-सबा
लौटे। वहाँ इब्राहीम आबाद रहा।
20इन वाक़िआत के बाद इब्राहीम को
इत्तिला मिली, "आप के भाई नहूर की बीवी
मिल्काह के हाँ भी बेटे पैदा हुए हैं। 21उस के
पहलौठे ऊज़ के बाद बूज़, क़मूएल (अराम
का बाप), 22कसद, हज़ू, फ़िल्दास, इद्लाफ़
और बतूएल पैदा हुए हैं।" 23मिल्काह और
नहूर के हाँ यह आठ बेटे पैदा हुए। (बतूएल
रिब्क़ा का बाप था)। 24नहूर की हरम का नाम
रूमा था। उस के हाँ भी बेटे पैदा हुए जिन के
नाम तिबख़, जाहम, तख़स और माका हैं।

सारा की वफ़ात

23 सारा 127 साल की उम्र में हब्रून
में इन्तिक़ाल कर गई। 2उस ज़माने
में हब्रून का नाम क़िर्यत-अर्बा था, और वह
मुल्क-ए-कनआन में था। इब्राहीम ने उस के
पास आ कर मातम किया। 3फिर वह जनाज़े
के पास से उठा और हित्तियों से बात की। उस
ने कहा, 4"मैं आप के दरमियान परदेसी और

ग़ैरशहरी की हैसियत से रहता हूँ। मुझे क़ब्र के लिए ज़मीन बेचें ताकि अपनी बीवी को अपने घर से ले जा कर दफ़न कर सकूँ।” 5-6हित्तियों ने जवाब दिया, “हमारे आक़ा, हमारी बात सुनें! आप हमारे दरमियान अल्लाह के रईस हैं। अपनी बीवी को हमारी बेहतरीन क़ब्र में दफ़न करें। हम में से कोई नहीं जो आप से अपनी क़ब्र का इन्कार करेगा।”

7इब्राहीम उठा और मुल्क के बाशिन्दों यानी हित्तियों के सामने ताज़ीमन झुक गया। 8उस ने कहा, “अगर आप इस के लिए तय्यार हैं कि मैं अपनी बीवी को अपने घर से ले जा कर दफ़न करूँ तो सुहर के बेटे इफ़्रोन से मेरी सिफ़ारिश करें 9कि वह मुझे मक्फ़ीला का ग़ार बेच दे। वह उस का है और उस के खेत के किनारे पर है। मैं उस की पूरी क़ीमत देने के लिए तय्यार हूँ ताकि आप के दरमियान रहते हुए मेरे पास क़ब्र भी हो।”

10इफ़्रोन हित्तियों की जमाअत में मौजूद था। इब्राहीम की दरख़्वास्त पर उस ने उन तमाम हित्तियों के सामने जो शहर के दरवाज़े पर जमा थे जवाब दिया, 11“नहीं, मेरे आक़ा! मेरी बात सुनें। मैं आप को यह खेत और उस में मौजूद ग़ार दे देता हूँ। सब जो हाज़िर हैं मेरे गवाह हैं, मैं यह आप को देता हूँ। अपनी बीवी को वहाँ दफ़न कर दें।”

12इब्राहीम दुबारा मुल्क के बाशिन्दों के सामने अदबन झुक गया। 13उस ने सब के सामने इफ़्रोन से कहा, “मेहरबानी करके मेरी बात पर ग़ौर करें। मैं खेत की पूरी क़ीमत अदा करूँगा। उसे क़बूल करें ताकि वहाँ अपनी बीवी को दफ़न कर सकूँ।” 14-15इफ़्रोन ने जवाब दिया, “मेरे आक़ा, सुनें। इस ज़मीन की क़ीमत सिर्फ़ 400 चाँदी के सिक्के है।[a] आप के और मेरे दरमियान यह क्या है? अपनी बीवी को दफ़न कर दें।”

16इब्राहीम ने इफ़्रोन की मतलूबा क़ीमत मान ली और सब के सामने चाँदी के 400 सिक्के तोल कर इफ़्रोन को दे दिए। इस के लिए उस ने उस वक़्त के राइज बाट इस्तेमाल किए। 17चुनाँचे मक्फ़ीला में इफ़्रोन की ज़मीन इब्राहीम की मिलकियत हो गई। यह ज़मीन मम्रे के मशरिक़ में थी। उस में खेत, खेत का ग़ार और खेत की हुदूद में मौजूद तमाम दरख़्त शामिल थे। 18हित्तियों की पूरी जमाअत ने जो शहर के दरवाज़े पर जमा थी ज़मीन के इन्तिक़ाल की तस्दीक़ की। 19फिर इब्राहीम ने अपनी बीवी सारा को मुल्क-ए-कनआन के उस ग़ार में दफ़न किया जो मम्रे यानी हब्रून के मशरिक़ में वाक़े मक्फ़ीला के खेत में था। 20इस तरीक़े से यह खेत और उस का ग़ार हित्तियों से इब्राहीम के नाम पर मुन्तक़िल कर दिया गया ताकि उस के पास क़ब्र हो।

इस्हाक़ और रिब्क़ा

24 इब्राहीम अब बहुत बूढ़ा हो गया था। रब ने उसे हर लिहाज़ से बरकत दी थी। 2एक दिन उस ने अपने घर के सब से बुज़ुर्ग नौकर से जो उस की जायदाद का पूरा इन्तिज़ाम चलाता था बात की। “क़सम के लिए अपना हाथ मेरी रान के नीचे रखो। 3रब की क़सम खाओ जो आसमान-ओ-ज़मीन का ख़ुदा है कि तुम इन कनआनियों में से जिन के दरमियान मैं रहता हूँ मेरे बेटे के लिए बीवी नहीं लाओगे 4बल्कि मेरे वतन में मेरे रिश्तेदारों के पास जाओगे और उन ही में से मेरे बेटे के लिए बीवी लाओगे।” 5उस के नौकर ने कहा, “शायद वह औरत मेरे साथ यहाँ आना न चाहे। क्या मैं इस सूरत में आप के बेटे को उस वतन में वापस ले जाऊँ जिस से आप निकले हैं?” 6इब्राहीम ने कहा, “ख़बरदार! उसे हरगिज़ वापस न ले जाना। 7रब जो आसमान का ख़ुदा है अपना फ़रिश्ता तुम्हारे आगे भेजेगा, इस लिए तुम वहाँ मेरे बेटे के लिए बीवी चुनने में ज़रूर कामयाब होगे। क्यूँकि वही मुझे मेरे बाप के घर और मेरे वतन

[a]तक़रीबन साढ़े चार किलोग्राम चाँदी।

से यहाँ ले आया है, और उसी ने क़सम खा कर
मुझ से वादा किया है कि मैं कनआन का यह
मुल्क तेरी औलाद को दूँगा। 8अगर वहाँ की
औरत यहाँ आना न चाहे तो फिर तुम अपनी
क़सम से आज़ाद होगे। लेकिन किसी सूरत में
भी मेरे बेटे को वहाँ वापस न ले जाना।"
9इब्राहीम के नौकर ने अपना हाथ उस की
रान के नीचे रख कर क़सम खाई कि मैं सब
कुछ ऐसा ही करूँगा। 10फिर वह अपने आक़ा
के दस ऊँटों पर क़ीमती तोह्फ़े लाद कर
मसोपुतामिया की तरफ़ रवाना हुआ। चलते
चलते वह नहूर के शहर पहुँच गया।
11उस ने ऊँटों को शहर के बाहर कुएँ के
पास बिठाया। शाम का वक़्त था जब औरतें
कुएँ के पास आ कर पानी भर्ती थीं। 12फिर
उस ने दुआ की, "ऐ रब मेरे आक़ा इब्राहीम
के ख़ुदा, मुझे आज कामयाबी बख़्श और मेरे
आक़ा इब्राहीम पर मेहरबानी कर। 13अब मैं
इस चश्मे पर खड़ा हूँ, और शहर की बेटियाँ
पानी भरने के लिए आ रही हैं। 14मैं उन में
से किसी से कहूँगा, 'ज़रा अपना घड़ा नीचे
करके मुझे पानी पिलाएँ।' अगर वह जवाब
दे, 'पी लें, मैं आप के ऊँटों को भी पानी पिला
देती हूँ,' तो वह वही होगी जिसे तू ने अपने
ख़ादिम इस्हाक़ के लिए चुन रखा है। अगर
ऐसा हुआ तो मैं जान लूँगा कि तू ने मेरे आक़ा
पर मेहरबानी की है।"
15वह अभी दुआ कर ही रहा था कि रिब्क़ा
शहर से निकल आई। उस के कंधे पर घड़ा
था। वह बतूएल की बेटी थी (बतूएल इब्राहीम
के भाई नहूर की बीवी मिल्काह का बेटा था)।
16रिब्क़ा निहायत ख़ूबसूरत जवान लड़की थी,
और वह कुंवारी भी थी। वह चश्मे तक उतरी,
अपना घड़ा भरा और फिर वापस ऊपर आई।
17इब्राहीम का नौकर दौड़ कर उस से
मिला। उस ने कहा, "ज़रा मुझे अपने घड़े
से थोड़ा सा पानी पिलाएँ।" 18रिब्क़ा ने कहा,
"जनाब, पी लें।" जल्दी से उस ने अपने घड़े
को कंधे पर से उतार कर हाथ में पकड़ा
ताकि वह पी सके। 19जब वह पीने से फ़ारिग़
हुआ तो रिब्क़ा ने कहा, "मैं आप के ऊँटों के
लिए भी पानी ले आती हूँ। वह भी पूरे तौर
पर अपनी प्यास बुझाएँ।" 20जल्दी से उस ने
अपने घड़े का पानी हौज़ में उंडेल दिया और
फिर भाग कर कुएँ से इतना पानी लाती रही
कि तमाम ऊँटों की प्यास बुझ गई।
21इतने में इब्राहीम का आदमी ख़ामोशी से
उसे देखता रहा, क्यूँकि वह जानना चाहता था
कि क्या रब मुझे सफ़र की कामयाबी बख़्शेगा
या नहीं। 22ऊँट पानी पीने से फ़ारिग़ हुए तो
उस ने रिब्क़ा को सोने की एक नथ और दो
कंगन दिए। नथ का वज़न तक़रीबन 6 ग्राम
था और कंगनों का 120 ग्राम।
23उस ने पूछा, "आप किस की बेटी हैं?
क्या उस के हाँ इतनी जगह है कि हम वहाँ
रात गुज़ार सकें?"
24रिब्क़ा ने जवाब दिया, "मेरा बाप बतूएल
है। वह नहूर और मिल्काह का बेटा है। 25हमारे
पास भूसा और चारा है। रात गुज़ारने के लिए
भी काफ़ी जगह है।" 26यह सुन कर इब्राहीम
के नौकर ने रब को सिज्दा किया। 27उस
ने कहा, "मेरे आक़ा इब्राहीम के ख़ुदा की
तम्जीद हो जिस के करम और वफ़ादारी ने
मेरे आक़ा को नहीं छोड़ा। रब ने मुझे सीधा
मेरे मालिक के रिश्तेदारों तक पहुँचाया है।"
28लड़की भाग कर अपनी माँ के घर चली
गई। वहाँ उस ने सब कुछ बता दिया जो हुआ
था। 29-30जब रिब्क़ा के भाई लाबन ने नथ
और बहन की कलाइयों में कंगनों को देखा
और वह सब कुछ सुना जो इब्राहीम के नौकर
ने रिब्क़ा को बताया था तो वह फ़ौरन कुएँ की
तरफ़ दौड़ा।
इब्राहीम का नौकर अब तक ऊँटों समेत
वहाँ खड़ा था। 31लाबन ने कहा, "रब के
मुबारक बन्दे, मेरे साथ आएँ। आप यहाँ शहर
के बाहर क्यूँ खड़े हैं? मैं ने अपने घर में
आप के लिए सब कुछ तय्यार किया है। आप
के ऊँटों के लिए भी काफ़ी जगह है।" 32वह

नौकर को ले कर घर पहुँचा। ऊँटों से सामान उतारा गया, और उन को भूसा और चारा दिया गया। पानी भी लाया गया ताकि इब्राहीम का नौकर और उस के आदमी अपने पाँओ धोएँ।

33लेकिन जब खाना आ गया तो इब्राहीम के नौकर ने कहा, "इस से पहले कि मैं खाना खाऊँ लाज़िम है कि अपना मुआमला पेश करूँ।" लाबन ने कहा, "बताएँ अपनी बात।" 34उस ने कहा, "मैं इब्राहीम का नौकर हूँ। 35रब ने मेरे आक़ा को बहुत बरकत दी है। वह बहुत अमीर बन गया है। रब ने उसे कस्रत से भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, सोना-चाँदी, ग़ुलाम और लौंडियाँ, ऊँट और गधे दिए हैं। 36जब मेरे मालिक की बीवी बूढ़ी हो गई थी तो उस के बेटा पैदा हुआ था। इब्राहीम ने उसे अपनी पूरी मिलकियत दे दी है। 37लेकिन मेरे आक़ा ने मुझ से कहा, 'क़सम खाओ कि तुम इन कनआनियों में से जिन के दरमियान मैं रहता हूँ मेरे बेटे के लिए बीवी नहीं लाओगे 38बल्कि मेरे बाप के घराने और मेरे रिश्तेदारों के पास जा कर उस के लिए बीवी लाओगे।' 39मैं ने अपने मालिक से कहा, 'शायद वह औरत मेरे साथ आना न चाहे।' 40उस ने कहा, 'रब जिस के सामने मैं चलता रहा हूँ अपने फ़रिश्ते को तुम्हारे साथ भेजेगा और तुम्हें कामयाबी बख़्शेगा। तुम्हें ज़रूर मेरे रिश्तेदारों और मेरे बाप के घराने से मेरे बेटे के लिए बीवी मिलेगी। 41लेकिन अगर तुम मेरे रिश्तेदारों के पास जाओ और वह इन्कार करें तो फिर तुम अपनी क़सम से आज़ाद होगे।' 42आज जब मैं कुएँ के पास आया तो मैं ने दुआ की, 'ऐ रब, मेरे आक़ा के ख़ुदा, अगर तेरी मर्ज़ी हो तो मुझे इस मिशन में कामयाबी बख़्श जिस के लिए मैं यहाँ आया हूँ। 43अब मैं इस कुएँ के पास खड़ा हूँ। जब कोई जवान औरत शहर से निकल कर यहाँ आए तो मैं उस से कहूँगा, "ज़रा मुझे अपने घड़े से थोड़ा सा पानी पिलाएँ।" 44अगर वह कहे, "पी लें, मैं आप के ऊँटों के लिए भी पानी ले आऊँगी" तो इस का मतलब यह हो कि तू ने उसे मेरे आक़ा के बेटे के लिए चुन लिया है कि उस की बीवी बन जाए।'

45मैं अभी दिल में यह दुआ कर रहा था कि रिब्क़ा शहर से निकल आई। उस के कंधे पर घड़ा था। वह चश्मे तक उतरी और अपना घड़ा भर लिया। मैं ने उस से कहा, 'ज़रा मुझे पानी पिलाएँ।' 46जवाब में उस ने जल्दी से अपने घड़े को कंधे पर से उतार कर कहा, 'पी लें, मैं आप के ऊँटों को भी पानी पिलाती हूँ।' मैं ने पानी पिया, और उस ने ऊँटों को भी पानी पिलाया। 47फिर मैं ने उस से पूछा, 'आप किस की बेटी हैं?' उस ने जवाब दिया, 'मेरा बाप बतूएल है। वह नहूर और मिल्काह का बेटा है।' फिर मैं ने उस की नाक में नथ और उस की कलाइयों में कंगन पहना दिए। 48तब मैं ने रब को सिज्दा करके अपने आक़ा इब्राहीम के ख़ुदा की तम्जीद की जिस ने मुझे सीधा मेरे मालिक की भतीजी तक पहुँचाया ताकि वह इस्हाक़ की बीवी बन जाए।

49अब मुझे बताएँ, क्या आप मेरे आक़ा पर अपनी मेहरबानी और वफ़ादारी का इज़हार करना चाहते हैं? अगर ऐसा है तो रिब्क़ा की इस्हाक़ के साथ शादी क़बूल करें। अगर आप मुत्तफ़िक़ नहीं हैं तो मुझे बताएँ ताकि मैं कोई और क़दम उठा सकूँ।"

50लाबन और बतूएल ने जवाब दिया, "यह बात रब की तरफ़ से है, इस लिए हम किसी तरह भी इन्कार नहीं कर सकते। 51रिब्क़ा आप के सामने है। उसे ले जाएँ। वह आप के मालिक के बेटे की बीवी बन जाए जिस तरह रब ने फ़रमाया है।" 52यह सुन कर इब्राहीम के नौकर ने रब को सिज्दा किया। 53फिर उस ने सोने और चाँदी के ज़ेवरात और महंगे मल्बूसात अपने सामान में से निकाल कर रिब्क़ा को दिए। रिब्क़ा के भाई और माँ को भी क़ीमती तोह्फ़े मिले।

54इस के बाद उस ने अपने हमसफ़रों के साथ शाम का खाना खाया। वह रात को वहीं ठहरे। अगले दिन जब उठे तो नौकर ने कहा,

“अब हमें इजाज़त दें ताकि अपने आक़ा के
पास लौट जाएँ।” 55रिब्क़ा के भाई और माँ ने
कहा, “रिब्क़ा कुछ दिन और हमारे हाँ ठहरे।
फिर आप जाएँ।” 56लेकिन उस ने उन से
कहा, “अब देर न करें, क्यूँकि रब ने मुझे मेरे
मिशन में कामयाबी बख़्शी है। मुझे इजाज़त दें
ताकि अपने मालिक के पास वापस जाऊँ।”
57उन्हों ने कहा, “चलें, हम लड़की को बुला
कर उसी से पूछ लेते हैं।”

58उन्हों ने रिब्क़ा को बुला कर उस से पूछा,
“क्या तू अभी इस आदमी के साथ जाना
चाहती है?” उस ने कहा, “जी, मैं जाना
चाहती हूँ।” 59चुनाँचे उन्हों ने अपनी बहन
रिब्क़ा, उस की दाया, इब्राहीम के नौकर
और उस के हमसफ़रों को रुख़्सत कर दिया।
60पहले उन्हों ने रिब्क़ा को बरकत दे कर कहा,
“हमारी बहन, अल्लाह करे कि तू करोड़ों की
माँ बने। तेरी औलाद अपने दुश्मनों के शहरों
के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करे।” 61फिर रिब्क़ा
और उस की नौकरानियाँ उठ कर ऊँटों पर
सवार हुईं और इब्राहीम के नौकर के पीछे हो
लीं। चुनाँचे नौकर उन्हें साथ ले कर रवाना हो
गया।

62उस वक़्त इस्हाक़ मुल्क के जुनूबी हिस्से,
दश्त-ए-नजब में रहता था। वह बैर-लही-रोई
से आया था। 63एक शाम वह निकल कर खुले
मैदान में अपनी सोचों में मगन टहल रहा था
कि अचानक ऊँट उस की तरफ़ आते हुए नज़र
आए। 64जब रिब्क़ा ने अपनी नज़र उठा कर
इस्हाक़ को देखा तो उस ने ऊँट से उतर कर
65नौकर से पूछा, “वह आदमी कौन है जो
मैदान में हम से मिलने आ रहा है?” नौकर ने
कहा, “मेरा मालिक है।” यह सुन कर रिब्क़ा
ने चादर ले कर अपने चेहरे को ढाँप लिया।

66नौकर ने इस्हाक़ को सब कुछ बता दिया
जो उस ने किया था। 67फिर इस्हाक़ रिब्क़ा को
अपनी माँ सारा के डेरे में ले गया। उस ने उस
से शादी की, और वह उस की बीवी बन गई।
इस्हाक़ के दिल में उस के लिए बहुत मुहब्बत
पैदा हुई। यूँ उसे अपनी माँ की मौत के बाद
सुकून मिला।

इब्राहीम की मज़ीद औलाद

25 इब्राहीम ने एक और शादी की। नई
बीवी का नाम क़तूरा था। 2क़तूरा
के छः बेटे पैदा हुए, ज़िम्रान, युक़्सान, मिदान,
मिदियान, इस्बाक़ और सूख़। 3युक़्सान के दो
बेटे थे, सबा और ददान। असूरी, लतूसी और
लूमी ददान की औलाद हैं। 4मिदियान के बेटे
ऐफ़ा, इफ़र, हनूक, अबीदा और इल्दआ थे।
यह सब क़तूरा की औलाद थे।

5इब्राहीम ने अपनी सारी मिलकियत
इस्हाक़ को दे दी। 6अपनी मौत से पहले उस
ने अपनी दूसरी बीवियों के बेटों को तोह्फ़े दे
कर अपने बेटे से दूर मशरिक़ की तरफ़ भेज
दिया।

इब्राहीम की वफ़ात

7-8इब्राहीम 175 साल की उम्र में फ़ौत
हुआ। ग़रज़ वह बहुत उम्ररसीदा और ज़िन्दगी
से आसूदा हो कर इन्तिक़ाल करके अपने
बापदादा से जा मिला। 9-10उस के बेटों इस्हाक़
और इस्माईल ने उसे मक्फ़ीला के ग़ार में
दफ़न किया जो मम्रे के मशरिक़ में है। यह
वही ग़ार था जिसे खेत समेत हित्ती आदमी
इफ़्रोन बिन सुहर से ख़रीदा गया था। इब्राहीम
और उस की बीवी सारा दोनों को उस में दफ़न
किया गया।

11इब्राहीम की वफ़ात के बाद अल्लाह ने
इस्हाक़ को बरकत दी। उस वक़्त इस्हाक़ बैर-
लही-रोई के क़रीब आबाद था।

इस्माईल की औलाद

12इब्राहीम का बेटा इस्माईल जो सारा की
मिस्री लौंडी हाजिरा के हाँ पैदा हुआ उस का
नसबनामा यह है। 13इस्माईल के बेटे बड़े से
ले कर छोटे तक यह हैं : नबायोत, क़ीदार,

अदबिएल, मिब्साम, 14मिश्मा, दूमा, मस्सा,
15हदद, तैमा, यतूर, नफ़ीस और क़िदमा।

16यह बेटे बारह क़बीलों के बानी बन गए,
और जहाँ जहाँ वह आबाद हुए उन जगहों
का वही नाम पड़ गया। 17इस्माईल 137 साल
का था जब वह कूच करके अपने बापदादा से
जा मिला। 18उस की औलाद उस इलाक़े में
आबाद थी जो हवीला और शूर के दरमियान
है और जो मिस्र के मशरिक़ में असूर की तरफ़
है। यूँ इस्माईल अपने तमाम भाइयों के सामने
ही आबाद हुआ।

एसौ और याक़ूब की पैदाइश

19यह इब्राहीम के बेटे इस्हाक़ का बयान है।
20इस्हाक़ 40 साल का था जब उस की
रिब्क़ा से शादी हुई। रिब्क़ा लाबन की बहन
और अरामी मर्द बतूएल की बेटी थी (बतूएल
मसोपुतामिया का था)। 21रिब्क़ा के बच्चे पैदा
न हुए। लेकिन इस्हाक़ ने अपनी बीवी के लिए
दुआ की तो रब ने उस की सुनी, और रिब्क़ा
उम्मीद से हुई। 22उस के पेट में बच्चे एक दूसरे
से ज़ोरआज़माई करने लगे तो वह रब से पूछने
गई, "अगर यह मेरी हालत रहेगी तो फिर मैं
यहाँ तक क्यूँ पहुँच गई हूँ?" 23रब ने उस
से कहा, "तेरे अन्दर दो क़ौमें हैं। वह तुझ
से निकल कर एक दूसरी से अलग अलग हो
जाएँगी। उन में से एक ज़्यादा ताक़तवर होगी,
और बड़ा छोटे की ख़िदमत करेगा।"

24पैदाइश का वक़्त आ गया तो जुड़वाँ बेटे
पैदा हुए। 25पहला बच्चा निकला तो सुर्ख़ सा
था, और ऐसा लग रहा था कि वह घने बालों
का कोट ही पहने हुए है। इस लिए उस का
नाम एसौ यानी 'बालों वाला' रखा गया। 26इस
के बाद दूसरा बच्चा पैदा हुआ। वह एसौ की
एड़ी पकड़े हुए निकला, इस लिए उस का नाम
याक़ूब यानी 'एड़ी पकड़ने वाला' रखा गया।
उस वक़्त इस्हाक़ 60 साल का था।

27लड़के जवान हुए। एसौ माहिर शिकारी
बन गया और खुले मैदान में ख़ुश रहता था।
उस के मुक़ाबले में याक़ूब शाइस्ता था और डेरे
में रहना पसन्द करता था। 28इस्हाक़ एसौ को
प्यार करता था, क्यूँकि वह शिकार का गोश्त
पसन्द करता था। लेकिन रिब्क़ा याक़ूब को
प्यार करती थी।

29एक दिन याक़ूब सालन पका रहा था कि
एसौ थकाहारा जंगल से आया। 30उस ने कहा,
"मुझे जल्दी से लाल सालन, हाँ इसी लाल
सालन से कुछ खाने को दो। मैं तो बेदम हो
रहा हूँ।" (इसी लिए बाद में उस का नाम
अदोम यानी सुर्ख़ पड़ गया।) 31याक़ूब ने कहा,
"पहले मुझे पहलौठे का हक़ बेच दो।" 32एसौ
ने कहा, "मैं तो भूक से मर रहा हूँ, पहलौठे का
हक़ मेरे किस काम का?" 33याक़ूब ने कहा,
"पहले क़सम खा कर मुझे यह हक़ बेच दो।"
एसौ ने क़सम खा कर उसे पहलौठे का हक़
मुन्तक़िल कर दिया।

34तब याक़ूब ने उसे कुछ रोटी और दाल दे
दी, और एसौ ने खाया और पिया। फिर वह
उठ कर चला गया। यूँ उस ने पहलौठे के हक़
को हक़ीर जाना।

इस्हाक़ और रिब्क़ा जिरार में

26 उस मुल्क में दुबारा काल पड़ा,
जिस तरह इब्राहीम के दिनों में भी
पड़ गया था। इस्हाक़ जिरार शहर गया जिस
पर फ़िलिस्तियों के बादशाह अबीमलिक की
हुकूमत थी। 2रब ने इस्हाक़ पर ज़ाहिर हो कर
कहा, "मिस्र न जा बल्कि उस मुल्क में बस
जो मैं तुझे दिखाता हूँ। 3उस मुल्क में अजनबी
रह तो मैं तेरे साथ हूँगा और तुझे बरकत
दूँगा। क्यूँकि मैं तुझे और तेरी औलाद को यह
तमाम इलाक़ा दूँगा और वह वादा पूरा करूँगा
जो मैं ने क़सम खा कर तेरे बाप इब्राहीम से
किया था। 4मैं तुझे इतनी औलाद दूँगा जितने
आसमान पर सितारे हैं। और मैं यह तमाम
मुल्क उन्हें दे दूँगा। तेरी औलाद से दुनिया की
तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी। 5मैं तुझे इस लिए
बरकत दूँगा कि इब्राहीम मेरे ताबे रहा और

मेरी हिदायात और अह्काम पर चलता रहा।”
6चुनाँचे इस्हाक़ जिरार में आबाद हो गया।
7जब वहाँ के मर्दों ने रिब्क़ा के बारे में पूछा
तो इस्हाक़ ने कहा, “यह मेरी बहन है।” वह
उन्हें यह बताने से डरता था कि यह मेरी बीवी
है, क्यूँकि उस ने सोचा, “रिब्क़ा निहायत
ख़ूबसूरत है। अगर उन्हें मालूम हो जाए कि
रिब्क़ा मेरी बीवी है तो वह उसे हासिल करने
की ख़ातिर मुझे क़त्ल कर देंगे।”
8काफ़ी वक़्त गुज़र गया। एक दिन
फ़िलिस्तियों के बादशाह ने अपनी खिड़की में
से झाँक कर देखा कि इस्हाक़ अपनी बीवी
को प्यार कर रहा है। 9उस ने इस्हाक़ को बुला
कर कहा, “वह तो आप की बीवी है! आप ने
क्यूँ कहा कि मेरी बहन है?” इस्हाक़ ने जवाब
दिया, “मैं ने सोचा कि अगर मैं बताऊँ कि यह
मेरी बीवी है तो लोग मुझे क़त्ल कर देंगे।”
10अबीमलिक ने कहा, “आप ने हमारे साथ
कैसा सुलूक कर दिखाया! कितनी आसानी
से मेरे आदमियों में से कोई आप की बीवी से
हमबिसतर हो जाता। इस तरह हम आप के
सबब से एक बड़े जुर्म के क़ुसूरवार ठहरते।”
11फिर अबीमलिक ने तमाम लोगों को हुक्म
दिया, “जो भी इस मर्द या उस की बीवी को
छेड़े उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी।”

इस्हाक़ का फ़िलिस्तियों के साथ झगड़ा

12इस्हाक़ ने उस इलाक़े में काश्तकारी की,
और उसी साल उसे सौ गुना फल मिला। यूँ
रब ने उसे बरकत दी, 13और वह अमीर हो
गया। उस की दौलत बढ़ती गई, और वह
निहायत दौलतमन्द हो गया। 14उस के पास
इतनी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और ग़ुलाम थे
कि फ़िलिस्ती उस से हसद करने लगे। 15अब
ऐसा हुआ कि उन्हों ने उन तमाम कुओं को
मिट्टी से भर कर बन्द कर दिया जो उस के
बाप के नौकरों ने खोदे थे।
16आख़िरकार अबीमलिक ने इस्हाक़ से
कहा, “कहीं और जा कर रहें, क्यूँकि आप
हम से ज़्यादा ज़ोर-आवर हो गए हैं।”
17चुनाँचे इस्हाक़ ने वहाँ से जा कर
जिरार की वादी में अपने डेरे लगाए। 18वहाँ
फ़िलिस्तियों ने इब्राहीम की मौत के बाद
तमाम कुओं को मिट्टी से भर दिया था। इस्हाक़
ने उन को दुबारा खुदवाया। उस ने उन के वही
नाम रखे जो उस के बाप ने रखे थे।
19इस्हाक़ के नौकरों को वादी में खोदते
खोदते ताज़ा पानी मिल गया। 20लेकिन जिरार
के चरवाहे आ कर इस्हाक़ के चरवाहों से
झगड़ने लगे। उन्हों ने कहा, “यह हमारा कुआँ
है!” इस लिए उस ने उस कुएँ का नाम इसक
यानी झगड़ा रखा। 21इस्हाक़ के नौकरों ने एक
और कुआँ खोद लिया। लेकिन उस पर भी
झगड़ा हुआ, इस लिए उस ने उस का नाम
सितना यानी मुख़ालफ़त रखा। 22वहाँ से जा
कर उस ने एक तीसरा कुआँ खुदवाया। इस
दफ़ा कोई झगड़ा न हुआ, इस लिए उस ने उस
का नाम रहोबोत यानी ‘खुली जगह’ रखा।
क्यूँकि उस ने कहा, “रब ने हमें खुली जगह
दी है, और अब हम मुल्क में फलें फूलेंगे।”
23वहाँ से वह बैर-सबा चला गया। 24उसी
रात रब उस पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “मैं
तेरे बाप इब्राहीम का ख़ुदा हूँ। मत डर, क्यूँकि
मैं तेरे साथ हूँ। मैं तुझे बरकत दूँगा और
तुझे अपने ख़ादिम इब्राहीम की ख़ातिर बहुत
औलाद दूँगा।”
25वहाँ इस्हाक़ ने क़ुर्बानगाह बनाई और रब
का नाम ले कर इबादत की। वहाँ उस ने अपने
ख़ैमे लगाए और उस के नौकरों ने कुआँ खोद
लिया।

अबीमलिक के साथ अह्द

26एक दिन अबीमलिक, उस का साथी
अख़ूज़त और उस का सिपहसालार फ़ीकुल
जिरार से उस के पास आए। 27इस्हाक़ ने पूछा,
“आप क्यूँ मेरे पास आए हैं? आप तो मुझ

से नफ़रत रखते हैं। क्या आप ने मुझे अपने
दरमियान से ख़ारिज नहीं किया था?" 28उन्हों
ने जवाब दिया, "हम ने जान लिया है कि
रब आप के साथ है। इस लिए हम ने कहा
कि हमारा आप के साथ अह्द होना चाहिए।
आइए हम क़सम खा कर एक दूसरे से अह्द
बांधें 29कि आप हमें नुक़्सान नहीं पहुँचाएँगे,
क्यूँकि हम ने भी आप को नहीं छेड़ा बल्कि
आप से सिर्फ़ अच्छा सुलूक किया और आप
को सलामती के साथ रुख़्सत किया है। और
अब ज़ाहिर है कि रब ने आप को बरकत दी
है।"
30इस्हाक़ ने उन की ज़ियाफ़त की, और
उन्हों ने खाया और पिया। 31फिर सुब्ह-सवेरे
उठ कर उन्हों ने एक दूसरे के सामने क़सम
खाई। इस के बाद इस्हाक़ ने उन्हें रुख़्सत
किया और वह सलामती से रवाना हुए।
32उसी दिन इस्हाक़ के नौकर आए और उसे
उस कुएँ के बारे में इत्तिला दी जो उन्हों ने
खोदा था। उन्हों ने कहा, "हमें पानी मिल गया
है।" 33उस ने कुएँ का नाम सबा यानी 'क़सम'
रखा। आज तक साथ वाले शहर का नाम बैर-
सबा है।

एसौ की अजनबी बीवियाँ

34जब एसौ 40 साल का था तो उस ने
दो हित्ती औरतों से शादी की, बैरी की बेटी
यहूदित से और ऐलोन की बेटी बासमत से।
35यह औरतें इस्हाक़ और रिब्क़ा के लिए बड़े
दुख का बाइस बनीं।

इस्हाक़ याक़ूब को बरकत देता है

27 इस्हाक़ बूढ़ा हो गया तो उस की
नज़र धुन्दला गई। उस ने अपने
बड़े बेटे को बुला कर कहा, "बेटा।" एसौ ने
जवाब दिया, "जी, मैं हाज़िर हूँ।" 2इस्हाक़ ने
कहा, "मैं बूढ़ा हो गया हूँ और ख़ुदा जाने कब
मर जाऊँ। 3इस लिए अपना तीर कमान ले
कर जंगल में निकल जा और मेरे लिए किसी
जानवर का शिकार कर। 4उसे तय्यार करके
ऐसा लज़ीज़ खाना पका जो मुझे पसन्द है।
फिर उसे मेरे पास ले आ। मरने से पहले मैं
वह खाना खा कर तुझे बरकत देना चाहता
हूँ।"
5रिब्क़ा ने इस्हाक़ की एसौ के साथ
बातचीत सुन ली थी। जब एसौ शिकार करने
के लिए चला गया तो उस ने याक़ूब से कहा,
6"अभी अभी मैं ने तुम्हारे अब्बू को एसौ से
यह बात करते हुए सुना कि 7'मेरे लिए किसी
जानवर का शिकार करके ले आ। उसे तय्यार
करके मेरे लिए लज़ीज़ खाना पका। मरने से
पहले मैं यह खाना खा कर तुझे रब के सामने
बरकत देना चाहता हूँ।' 8अब सुनो, मेरे बेटे!
जो कुछ मैं बताती हूँ वह करो। 9जा कर रेवड़
में से बकरियों के दो अच्छे अच्छे बच्चे चुन
लो। फिर मैं वही लज़ीज़ खाना पकाऊँगी जो
तुम्हारे अब्बू को पसन्द है। 10तुम यह खाना
उस के पास ले जाओगे तो वह उसे खा कर
मरने से पहले तुम्हें बरकत देगा।"
11लेकिन याक़ूब ने एतिराज़ किया, "आप
जानती हैं कि एसौ के जिस्म पर घने बाल हैं
जबकि मेरे बाल कम हैं। 12कहीं मुझे छूने से
मेरे बाप को पता न चल जाए कि मैं उसे फ़रेब
दे रहा हूँ। फिर मुझ पर बरकत नहीं बल्कि
लानत आएगी।" 13उस की माँ ने कहा, "तुम
पर आने वाली लानत मुझ पर आए, बेटा। बस
मेरी बात मान लो। जाओ और बकरियों के वह
बच्चे ले आओ।"
14चुनाँचे वह गया और उन्हें अपनी माँ के
पास ले आया। रिब्क़ा ने ऐसा लज़ीज़ खाना
पकाया जो याक़ूब के बाप को पसन्द था।
15एसौ के ख़ास मौक़ों के लिए अच्छे लिबास
रिब्क़ा के पास घर में थे। उस ने उन में से
बेहतरीन लिबास चुन कर अपने छोटे बेटे को
पहना दिया। 16साथ साथ उस ने बकरियों की
खालें उस के हाथों और गर्दन पर जहाँ बाल न
थे लपेट दीं। 17फिर उस ने अपने बेटे याक़ूब

को रोटी और वह लज़ीज़ खाना दिया जो उस ने पकाया था।

18याक़ूब ने अपने बाप के पास जा कर कहा, “अब्बू जी।” इस्हाक़ ने कहा, “जी, बेटा। तू कौन है?” 19उस ने कहा, “मैं आप का पहलौठा एसौ हूँ। मैं ने वह किया है जो आप ने मुझे कहा था। अब ज़रा उठें और बैठ कर मेरे शिकार का खाना खाएँ ताकि आप बाद में मुझे बरकत दें।” 20इस्हाक़ ने पूछा, “बेटा, तुझे यह शिकार इतनी जल्दी किस तरह मिल गया?” उस ने जवाब दिया, “रब आप के ख़ुदा ने उसे मेरे सामने से गुज़रने दिया।”

21इस्हाक़ ने कहा, “बेटा, मेरे क़रीब आ ताकि मैं तुझे छू लूँ कि तू वाक़ई मेरा बेटा एसौ है कि नहीं।” 22याक़ूब अपने बाप के नज़दीक आया। इस्हाक़ ने उसे छू कर कहा, “तेरी आवाज़ तो याक़ूब की है लेकिन तेरे हाथ एसौ के हैं।” 23यूँ उस ने फ़रेब खाया। चूँकि याक़ूब के हाथ एसौ के हाथ की मानिन्द थे इस लिए उस ने उसे बरकत दी। 24तो भी उस ने दुबारा पूछा, “क्या तू वाक़ई मेरा बेटा एसौ है?” याक़ूब ने जवाब दिया, “जी, मैं वही हूँ।” 25आख़िरकार इस्हाक़ ने कहा, “शिकार का खाना मेरे पास ले आ, बेटा। उसे खाने के बाद मैं तुझे बरकत दूँगा।” याक़ूब खाना और मै ले आया। इस्हाक़ ने खाया और पिया, 26फिर कहा, “बेटा, मेरे पास आ और मुझे बोसा दे।” 27याक़ूब ने पास आ कर उसे बोसा दिया। इस्हाक़ ने उस के लिबास को सूँघ कर उसे बरकत दी। उस ने कहा,

“मेरे बेटे की ख़ुश्बू उस खुले मैदान की
ख़ुश्बू की मानिन्द है जिसे रब ने बरकत दी है।
28अल्लाह तुझे आसमान की ओस और
ज़मीन की ज़रख़ेज़ी दे। वह तुझे कस्रत का
अनाज और अंगूर का रस दे।
29क़ौमें तेरी
ख़िदमत करें, और उम्मतें तेरे सामने झुक
जाएँ। अपने भाइयों का हुक्मरान बन, और
तेरी माँ की औलाद तेरे सामने घुटने टेके। जो
तुझ पर लानत करे वह ख़ुद लानती हो और
जो तुझे बरकत दे वह ख़ुद बरकत पाए।”

एसौ भी बरकत माँगता है

30इस्हाक़ की बरकत के बाद याक़ूब अभी रुख़्सत ही हुआ था कि उस का भाई एसौ शिकार करके वापस आया। 31वह भी लज़ीज़ खाना पका कर उसे अपने बाप के पास ले आया। उस ने कहा, “अब्बू जी, उठें और मेरे शिकार का खाना खाएँ ताकि आप मुझे बरकत दें।” 32इस्हाक़ ने पूछा, “तू कौन है?” उस ने जवाब दिया, “मैं आप का बड़ा बेटा एसौ हूँ।”

33इस्हाक़ घबरा कर शिद्दत से काँपने लगा। उस ने पूछा, “फिर वह कौन था जो किसी जानवर का शिकार करके मेरे पास ले आया? तेरे आने से ज़रा पहले मैं ने उस शिकार का खाना खा कर उस शख़्स को बरकत दी। अब वह बरकत उसी पर रहेगी।”

34यह सुन कर एसौ ज़ोरदार और तल्ख़ चीख़ें मारने लगा। “अब्बू, मुझे भी बरकत दें,” उस ने कहा। 35लेकिन इस्हाक़ ने जवाब दिया, “तेरे भाई ने आ कर मुझे फ़रेब दिया। उस ने तेरी बरकत तुझ से छीन ली है।” 36एसौ ने कहा, “उस का नाम याक़ूब ठीक ही रखा गया है, क्यूँकि अब उस ने मुझे दूसरी बार धोका दिया है। पहले उस ने पहलौठे का हक़ मुझ से छीन लिया और अब मेरी बरकत भी ज़बरदस्ती ले ली। क्या आप ने मेरे लिए कोई बरकत मह्फ़ूज़ नहीं रखी?” 37लेकिन इस्हाक़ ने कहा, “मैं ने उसे तेरा हुक्मरान और उस के तमाम भाइयों को उस के ख़ादिम बना दिया है। मैं ने उसे अनाज और अंगूर का रस मुहय्या किया है। अब मुझे बता बेटा, क्या कुछ रह गया है जो मैं तुझे दूँ?” 38लेकिन एसौ ख़ामोश न हुआ बल्कि कहा, “अब्बू, क्या आप के पास वाक़ई सिर्फ़ यही बरकत थी? अब्बू, मुझे भी बरकत दें।” वह ज़ार-ओ-क़तार रोने लगा।

39फिर इस्हाक़ ने कहा, “तू ज़मीन की
ज़रख़ेज़ी और आसमान की ओस से महरूम
रहेगा। 40तू सिर्फ़ अपनी तलवार के सहारे
ज़िन्दा रहेगा और अपने भाई की ख़िदमत
करेगा। लेकिन एक दिन तू बेचैन हो कर उस
का जूआ अपनी गर्दन पर से उतार फैंकेगा।”

याक़ूब की हिज्रत

41बाप की बरकत के सबब से एसौ याक़ूब
का दुश्मन बन गया। उस ने दिल में कहा, “वह
दिन क़रीब आ गए हैं कि अब्बू इन्तिक़ाल कर
जाएंगे और हम उन का मातम करेंगे। फिर मैं
अपने भाई को मार डालूँगा।”

42रिब्क़ा को अपने बड़े बेटे एसौ का यह
इरादा मालूम हुआ। उस ने याक़ूब को बुला
कर कहा, “तुम्हारा भाई बदला लेना चाहता
है। वह तुम्हें क़त्ल करने का इरादा रखता है।
43बेटा, अब मेरी सुनो, यहाँ से हिज्रत कर
जाओ। हारान शहर में मेरे भाई लाबन के पास
चले जाओ। 44वहाँ कुछ दिन ठहरे रहना जब
तक तुम्हारे भाई का ग़ुस्सा ठंडा न हो जाए।
45जब उस का ग़ुस्सा ठंडा हो जाएगा और वह
तुम्हारे उस के साथ किए गए सुलूक को भूल
जाएगा, तब मैं इत्तिला दूँगी कि तुम वहाँ से
वापस आ सकते हो। मैं क्यूँ एक ही दिन में
तुम दोनों से महरूम हो जाऊँ?”

46फिर रिब्क़ा ने इस्हाक़ से बात की, “मैं
एसौ की बीवियों के सबब से अपनी ज़िन्दगी
से तंग हूँ। अगर याक़ूब भी इस मुल्क की
औरतों में से किसी से शादी करे तो बेहतर है
कि मैं पहले ही मर जाऊँ।”

28 इस्हाक़ ने याक़ूब को बुला कर उसे
बरकत दी और कहा, “लाज़िम
है कि तू किसी कनआनी औरत से शादी न
करे। 2अब सीधे मसोपुतामिया में अपने नाना
बतूएल के घर जा और वहाँ अपने मामूँ लाबन
की लड़कियों में से किसी एक से शादी कर।
3अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ तुझे बरकत दे
कर फलने फूलने दे और तुझे इतनी औलाद
दे कि तू बहुत सारी क़ौमों का बाप बने। 4वह
तुझे और तेरी औलाद को इब्राहीम की बरकत
दे जिसे उस ने यह मुल्क दिया जिस में तू
मेहमान के तौर पर रहता है। यह मुल्क तुम्हारे
क़ब्ज़े में आए।” 5यूँ इस्हाक़ ने याक़ूब को
मसोपुतामिया में लाबन के घर भेजा। लाबन
अरामी मर्द बतूएल का बेटा और रिब्क़ा का
भाई था।

एसौ एक और शादी करता है

6एसौ को पता चला कि इस्हाक़ ने याक़ूब
को बरकत दे कर मसोपुतामिया भेज दिया है
ताकि वहाँ शादी करे। उसे यह भी मालूम हुआ
कि इस्हाक़ ने उसे कनआनी औरत से शादी
करने से मना किया है 7और कि याक़ूब अपने
माँ-बाप की सुन कर मसोपुतामिया चला गया
है। 8एसौ समझ गया कि कनआनी औरतें मेरे
बाप को मन्ज़ूर नहीं हैं। 9इस लिए वह इब्राहीम
के बेटे इस्माईल के पास गया और उस की बेटी
महलत से शादी की। वह नबायोत की बहन
थी। यूँ उस की बीवियों में इज़ाफ़ा हुआ।

बैत-एल में याक़ूब का ख़्वाब

10याक़ूब बैर-सबा से हारान की तरफ़
रवाना हुआ। 11जब सूरज ग़ुरूब हुआ तो
वह रात गुज़ारने के लिए रुक गया और वहाँ
के पत्थरों में से एक को ले कर उसे अपने
सिरहाने रखा और सो गया।

12जब वह सो रहा था तो ख़्वाब में एक
सीढ़ी देखी जो ज़मीन से आसमान तक
पहुँचती थी। फ़रिश्ते उस पर चढ़ते और उतरते
नज़र आते थे। 13रब उस के ऊपर खड़ा था।
उस ने कहा, “मैं रब इब्राहीम और इस्हाक़
का ख़ुदा हूँ। मैं तुझे और तेरी औलाद को
यह ज़मीन दूँगा जिस पर तू लेटा है। 14तेरी
औलाद ज़मीन पर ख़ाक की तरह बेशुमार
होगी, और तू चारों तरफ़ फैल जाएगा। दुनिया
की तमाम क़ौमें तेरे और तेरी औलाद के
वसीले से बरकत पाएँगी। 15मैं तेरे साथ हूँगा,

तुझे मह्फ़ूज़ रखूँगा और आख़िरकार तुझे इस मुल्क में वापस लाऊँगा। मुमकिन ही नहीं कि मैं तेरे साथ अपना वादा पूरा करने से पहले तुझे छोड़ दूँ।"

16तब याक़ूब जाग उठा। उस ने कहा, "यक़ीनन रब यहाँ हाज़िर है, और मुझे मालूम नहीं था।" 17वह डर गया और कहा, "यह कितना ख़ौफ़नाक मक़ाम है। यह तो अल्लाह ही का घर और आसमान का दरवाज़ा है।"

18याक़ूब सुब्ह-सवेरे उठा। उस ने वह पत्थर लिया जो उस ने अपने सिरहाने रखा था और उसे सतून की तरह खड़ा किया। फिर उस ने उस पर ज़ैतून का तेल उंडेल दिया। 19उस ने मक़ाम का नाम बैत-एल यानी 'अल्लाह का घर' रखा (पहले साथ वाले शहर का नाम लूज़ था)। 20उस ने क़सम खा कर कहा, "अगर रब मेरे साथ हो, सफ़र पर मेरी हिफ़ाज़त करे, मुझे खाना और कपड़ा मुहय्या करे 21और मैं सलामती से अपने बाप के घर वापस पहुँचूँ तो फिर वह मेरा ख़ुदा होगा। 22जहाँ यह पत्थर सतून के तौर पर खड़ा है वहाँ अल्लाह का घर होगा, और जो भी तू मुझे देगा उस का दसवाँ हिस्सा तुझे दिया करूँगा।"

याक़ूब लाबन के घर पहुँचता है

29 याक़ूब ने अपना सफ़र जारी रखा और चलते चलते मशरिक़ी क़ौमों के मुल्क में पहुँच गया। 2वहाँ उस ने खेत में कुआँ देखा जिस के इर्दगिर्द भेड़-बकरियों के तीन रेवड़ जमा थे। रेवड़ों को कुएँ का पानी पिलाया जाना था, लेकिन उस के मुँह पर बड़ा पत्थर पड़ा था। 3वहाँ पानी पिलाने का यह तरीक़ा था कि पहले चरवाहे तमाम रेवड़ों का इन्तिज़ार करते और फिर पत्थर को लुढ़का कर मुँह से हटा देते थे। पानी पिलाने के बाद वह पत्थर को दुबारा मुँह पर रख देते थे।

4याक़ूब ने चरवाहों से पूछा, "मेरे भाइयो, आप कहाँ के हैं?" उन्हों ने जवाब दिया, "हारान के।" 5उस ने पूछा, "क्या आप नहूर के पोते लाबन को जानते हैं?" उन्हों ने कहा, "जी हाँ।" 6उस ने पूछा, "क्या वह ख़ैरियत से है?" उन्हों ने कहा, "जी, वह ख़ैरियत से है। देखो, उधर उस की बेटी राख़िल रेवड़ ले कर आ रही है।" 7याक़ूब ने कहा, "अभी तो शाम तक बहुत वक़्त बाक़ी है। रेवड़ों को जमा करने का वक़्त तो नहीं है। आप क्यूँ उन्हें पानी पिला कर दुबारा चरने नहीं देते?" 8उन्हों ने जवाब दिया, "पहले ज़रूरी है कि तमाम रेवड़ यहाँ पहुँचें। तब ही पत्थर को लुढ़का कर एक तरफ़ हटाया जाएगा और हम रेवड़ों को पानी पिलाएँगे।"

9याक़ूब अभी उन से बात कर ही रहा था कि राख़िल अपने बाप का रेवड़ ले कर आ पहुँची, क्यूँकि भेड़-बकरियों को चराना उस का काम था। 10जब याक़ूब ने राख़िल को मामूँ लाबन के रेवड़ के साथ आते देखा तो उस ने कुएँ के पास जा कर पत्थर को लुढ़का कर मुँह से हटा दिया और भेड़-बकरियों को पानी पिलाया। 11फिर उस ने उसे बोसा दिया और ख़ूब रोने लगा। 12उस ने कहा, "मैं आप के अब्बू की बहन रिब्क़ा का बेटा हूँ।" यह सुन कर राख़िल ने भाग कर अपने अब्बू को इत्तिला दी।

13जब लाबन ने सुना कि मेरा भान्जा याक़ूब आया है तो वह दौड़ कर उस से मिलने गया और उसे गले लगा कर अपने घर ले आया। याक़ूब ने उसे सब कुछ बता दिया जो हुआ था। 14लाबन ने कहा, "आप वाक़ई मेरे रिश्तेदार हैं।" याक़ूब ने वहाँ एक पूरा महीना गुज़ारा।

अपनी बीवियों के लिए याक़ूब की मेहनत-मशक़्क़त

15फिर लाबन याक़ूब से कहने लगा, "बेशक आप मेरे रिश्तेदार हैं, लेकिन आप को मेरे लिए काम करने के बदले में कुछ मिलना चाहिए। मैं आप को कितने पैसे दूँ?" 16लाबन की दो बेटियाँ थीं। बड़ी का नाम लियाह था और छोटी का राख़िल। 17लियाह

की आँखें चुनधी थीं जबकि राख़िल हर तरह से ख़ूबसूरत थी। 18याक़ूब को राख़िल से मुहब्बत थी, इस लिए उस ने कहा, "अगर मुझे आप की छोटी बेटी राख़िल मिल जाए तो आप के लिए सात साल काम करूँगा।" 19लाबन ने कहा, "किसी और आदमी की निस्बत मुझे यह ज़्यादा पसन्द है कि आप ही से उस की शादी कराऊँ।"

20पस याक़ूब ने राख़िल को पाने के लिए सात साल तक काम किया। लेकिन उसे ऐसा लगा जैसा दो एक दिन ही गुज़रे हों क्यूँकि वह राख़िल को शिद्दत से प्यार करता था। 21इस के बाद उस ने लाबन से कहा, "मुद्दत पूरी हो गई है। अब मुझे अपनी बेटी से शादी करने दें।" 22लाबन ने उस मक़ाम के तमाम लोगों को दावत दे कर शादी की ज़ियाफ़त की। 23लेकिन उस रात वह राख़िल की बजाए लियाह को याक़ूब के पास ले आया, और याक़ूब उसी से हमबिसतर हुआ। 24(लाबन ने लियाह को अपनी लौंडी ज़िल्फ़ा दे दी थी ताकि वह उस की ख़िदमत करे।)

25जब सुब्ह हुई तो याक़ूब ने देखा कि लियाह ही मेरे पास है। उस ने लाबन के पास जा कर कहा, "यह आप ने मेरे साथ क्या किया है? क्या मैं ने राख़िल के लिए काम नहीं किया? आप ने मुझे धोका क्यूँ दिया?" 26लाबन ने जवाब दिया, "यहाँ दस्तूर नहीं है कि छोटी बेटी की शादी बड़ी से पहले कर दी जाए। 27एक हफ़्ते के बाद शादी की रुसूमात पूरी हो जाएँगी। उस वक़्त तक सब्र करें। फिर मैं आप को राख़िल भी दे दूँगा। शर्त यह है कि आप मज़ीद सात साल मेरे लिए काम करें।"

28याक़ूब मान गया। चुनाँचे जब एक हफ़्ते के बाद शादी की रुसूमात पूरी हुईं तो लाबन ने अपनी बेटी राख़िल की शादी भी उस के साथ कर दी। 29(लाबन ने राख़िल को अपनी लौंडी बिल्हाह दे दी ताकि वह उस की ख़िदमत करे।) 30याक़ूब राख़िल से भी हमबिसतर हुआ। वह लियाह की निस्बत उसे ज़्यादा प्यार करता था। फिर उस ने राख़िल के इवज़ सात साल और लाबन की ख़िदमत की।

याक़ूब के बच्चे

31जब रब ने देखा कि लियाह से नफ़रत की जाती है तो उस ने उसे औलाद दी जबकि राख़िल के हाँ बच्चे पैदा न हुए।

32लियाह हामिला हुई और उस के बेटा पैदा हुआ। उस ने कहा, "रब ने मेरी मुसीबत देखी है और अब मेरा शौहर मुझे प्यार करेगा।" उस ने उस का नाम रूबिन यानी 'देखो एक बेटा' रखा।

33वह दुबारा हामिला हुई। एक और बेटा पैदा हुआ। उस ने कहा, "रब ने सुना कि मुझ से नफ़रत की जाती है, इस लिए उस ने मुझे यह भी दिया है।" उस ने उस का नाम शमाऊन यानी 'रब ने सुना है' रखा।

34वह एक और दफ़ा हामिला हुई। तीसरा बेटा पैदा हुआ। उस ने कहा, "अब आख़िरकार शौहर के साथ मेरा बंधन मज़बूत हो जाएगा, क्यूँकि मैं ने उस के लिए तीन बेटों को जन्म दिया है।" उस ने उस का नाम लावी यानी बंधन रखा।

35वह एक बार फिर हामिला हुई। चौथा बेटा पैदा हुआ। उस ने कहा, "इस दफ़ा मैं रब की तम्जीद करूँगी।" उस ने उस का नाम यहूदाह यानी तम्जीद रखा। इस के बाद उस से और बच्चे पैदा न हुए।

30 लेकिन राख़िल बेऔलाद ही रही, इस लिए वह अपनी बहन से हसद करने लगी। उस ने याक़ूब से कहा, "मुझे भी औलाद दें वर्ना मैं मर जाऊँगी।" 2याक़ूब को ग़ुस्सा आया। उस ने कहा, "क्या मैं अल्लाह हूँ जिस ने तुझे औलाद से महरूम रखा है?" 3राख़िल ने कहा, "यहाँ मेरी लौंडी बिल्हाह है। उस के साथ हमबिसतर हों ताकि वह मेरे लिए बच्चे को जन्म दे और मैं उस की मारिफ़त माँ बन जाऊँ।"

4यूँ उस ने अपने शौहर को बिल्हाह दी,
और वह उस से हमबिसतर हुआ। 5बिल्हाह
हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। 6राख़िल ने
कहा, "अल्लाह ने मेरे हक़ में फ़ैसला दिया
है। उस ने मेरी दुआ सुन कर मुझे बेटा दे दिया
है।" उस ने उस का नाम दान यानी 'किसी के
हक़ में फ़ैसला करने वाला' रखा।

7बिल्हाह दुबारा हामिला हुई और एक और
बेटा पैदा हुआ। 8राख़िल ने कहा, "मैं ने अपनी
बहन से सख़्त कुश्ती लड़ी है, लेकिन जीत
गई हूँ।" उस ने उस का नाम नफ़्ताली यानी
'कुश्ती में मुझ से जीता गया' रखा।

9जब लियाह ने देखा कि मेरे और बच्चे पैदा
नहीं हो रहे तो उस ने याक़ूब को अपनी लौंडी
ज़िल्फ़ा दे दी ताकि वह भी उस की बीवी
हो। 10ज़िल्फ़ा के भी एक बेटा पैदा हुआ।
11लियाह ने कहा, "मैं कितनी ख़ुशक़िसमत
हूँ!" चुनाँचे उस ने उस का नाम जद यानी
ख़ुशक़िसमती रखा।

12फिर ज़िल्फ़ा के दूसरा बेटा पैदा हुआ।
13लियाह ने कहा, "मैं कितनी मुबारक हूँ। अब
ख़वातीन मुझे मुबारक कहेंगी।" उस ने उस
का नाम आशर यानी मुबारक रखा।

14एक दिन अनाज की फ़सल की कटाई हो
रही थी कि रूबिन बाहर निकल कर खेतों में
चला गया। वहाँ उसे मर्दुमगयाह[a] मिल गए।
वह उन्हें अपनी माँ लियाह के पास ले आया।
यह देख कर राख़िल ने लियाह से कहा, "मुझे
ज़रा अपने बेटे के मर्दुमगयाह में से कुछ दे
दो।" 15लियाह ने जवाब दिया, "क्या यही
काफ़ी नहीं कि तुम ने मेरे शौहर को मुझ से
छीन लिया है? अब मेरे बेटे के मर्दुमगयाह
को भी छीनना चाहती हो।" राख़िल ने कहा,
"अगर तुम मुझे अपने बेटे के मर्दुमगयाह में
से दो तो आज रात याक़ूब के साथ सो सकती
हो।"

16शाम को याक़ूब खेतों से वापस आ रहा
था कि लियाह आगे से उस से मिलने को गई
और कहा, "आज रात आप को मेरे साथ
सोना है, क्यूँकि मैं ने अपने बेटे के मर्दुमगयाह
के इवज़ आप को उजरत पर लिया है।" चुनाँचे
याक़ूब ने लियाह के पास रात गुज़ारी।

17उस वक़्त अल्लाह ने लियाह की दुआ
सुनी और वह हामिला हुई। उस के पाँचवाँ बेटा
पैदा हुआ। 18लियाह ने कहा, "अल्लाह ने मुझे
इस का अज्र दिया है कि मैं ने अपने शौहर को
अपनी लौंडी दी।" उस ने उस का नाम इश्कार
यानी अज्र रखा।

19इस के बाद वह एक और दफ़ा हामिला
हुई। उस के छटा बेटा पैदा हुआ। 20उस ने
कहा, "अल्लाह ने मुझे एक अच्छा-ख़ासा
तोह्फ़ा दिया है। अब मेरा ख़ावन्द मेरे साथ
रहेगा, क्यूँकि मुझ से उस के छः बेटे पैदा हुए
हैं।" उस ने उस का नाम ज़बूलून यानी रिहाइश
रखा।

21इस के बाद बेटी पैदा हुई। उस ने उस का
नाम दीना रखा।

22फिर अल्लाह ने राख़िल को भी याद
किया। उस ने उस की दुआ सुन कर उसे
औलाद बख़्शी। 23वह हामिला हुई और एक
बेटा पैदा हुआ। उस ने कहा, "मुझे बेटा अता
करने से अल्लाह ने मेरी इज़्ज़त बहाल कर दी
है। 24रब मुझे एक और बेटा दे।" उस ने उस
का नाम यूसुफ़ यानी 'वह और दे' रखा।

याक़ूब का लाबन के साथ सौदा

25यूसुफ़ की पैदाइश के बाद याक़ूब ने
लाबन से कहा, "अब मुझे इजाज़त दें कि मैं
अपने वतन और घर को वापस जाऊँ। 26मुझे
मेरे बाल-बच्चे दें जिन के इवज़ मैं ने आप की
ख़िदमत की है। फिर मैं चला जाऊँगा। आप
तो ख़ुद जानते हैं कि मैं ने कितनी मेहनत के
साथ आप के लिए काम किया है।"

[a]एक पौदा जिस के बारे में ख़याल किया जाता था
कि उसे खा कर बाँझ औरत भी बच्चे को जन्म देगी।

27लेकिन लाबन ने कहा, “मुझ पर मेहर-
बानी करें और यहीं रहें। मुझे ग़ैबदानी से पता
चला है कि रब ने मुझे आप के सबब से बरकत
दी है। 28अपनी उजरत ख़ुद मुक़र्रर करें तो मैं
वही दिया करूँगा।”
29याक़ूब ने कहा, “आप जानते हैं कि मैं ने
किस तरह आप के लिए काम किया, कि मेरे
वसीले से आप के मवेशी कितने बढ़ गए हैं।
30जो थोड़ा बहुत मेरे आने से पहले आप के
पास था वह अब बहुत ज़्यादा बढ़ गया है। रब
ने मेरे काम से आप को बहुत बरकत दी है।
अब वह वक़्त आ गया है कि मैं अपने घर के
लिए कुछ करूँ।”
31लाबन ने कहा, “मैं आप को क्या दूँ?”
याक़ूब ने कहा, “मुझे कुछ न दें। मैं इस शर्त पर
आप की भेड़-बकरियों की देख-भाल जारी
रखूँगा कि 32आज मैं आप के रेवड़ में से गुज़र
कर उन तमाम भेड़ों को अलग कर लूँगा जिन
के जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे हों या जो
सफ़ेद न हों। इसी तरह मैं उन तमाम बकरियों
को भी अलग कर लूँगा जिन के जिस्म पर
छोटे या बड़े धब्बे हों। यही मेरी उजरत होगी।
33आइन्दा जिन बकरियों के जिस्म पर छोटे या
बड़े धब्बे होंगे या जिन भेड़ों का रंग सफ़ेद नहीं
होगा वह मेरा अज्र होंगी। जब कभी आप उन
का मुआइना करेंगे तो आप मालूम कर सकेंगे
कि मैं दियानतदार रहा हूँ। क्यूँकि मेरे जानवरों
के रंग से ही ज़ाहिर होगा कि मैं ने आप का
कुछ चुराया नहीं है।” 34लाबन ने कहा, “ठीक
है। ऐसा ही हो जैसा आप ने कहा है।”
35उसी दिन लाबन ने उन बकरों को अलग
कर लिया जिन के जिस्म पर धारियाँ या धब्बे
थे और उन तमाम बकरियों को जिन के जिस्म
पर छोटे या बड़े धब्बे थे। जिस के भी जिस्म
पर सफ़ेद निशान था उसे उस ने अलग कर
लिया। इसी तरह उस ने उन तमाम भेड़ों को
भी अलग कर लिया जो पूरे तौर पर सफ़ेद न
थे। फिर लाबन ने उन्हें अपने बेटों के सपुर्द
कर दिया 36जो उन के साथ याक़ूब से इतना
दूर चले गए कि उन के दरमियान तीन दिन
का फ़ासिला था। तब याक़ूब लाबन की बाक़ी
भेड़-बकरियों की देख-भाल करता गया।
37याक़ूब ने सफ़ेदा, बादाम और चनार की
हरी हरी शाख़ें ले कर उन से कुछ छिलका यूँ
उतार दिया कि उस पर सफ़ेद धारियाँ नज़र
आईं। 38उस ने उन्हें भेड़-बकरियों के सामने
उन हौज़ों में गाड़ दिया जहाँ वह पानी पीते थे,
क्यूँकि वहाँ यह जानवर मस्त हो कर मिलाप
करते थे। 39जब वह इन शाख़ों के सामने
मिलाप करते तो जो बच्चे पैदा होते उन के
जिस्म पर छोटे और बड़े धब्बे और धारियाँ
होती थीं। 40फिर याक़ूब ने भेड़ के बच्चों को
अलग करके अपने रेवड़ों को लाबन के उन
जानवरों के सामने चरने दिया जिन के जिस्म
पर धारियाँ थीं और जो सफ़ेद न थे। यूँ उस ने
अपने ज़ाती रेवड़ों को अलग कर लिया और
उन्हें लाबन के रेवड़ के साथ चरने न दिया।
41लेकिन उस ने यह शाख़ें सिर्फ़ उस वक़्त
हौज़ों में खड़ी कीं जब ताक़तवर जानवर मस्त
हो कर मिलाप करते थे। 42कमज़ोर जानवरों
के साथ उस ने ऐसा न किया। इसी तरह
लाबन को कमज़ोर जानवर और याक़ूब को
ताक़तवर जानवर मिल गए। 43यूँ याक़ूब बहुत
अमीर बन गया। उस के पास बहुत से रेवड़,
ग़ुलाम और लौंडियाँ, ऊँट और गधे थे।

याक़ूब की हिज्रत

31 एक दिन याक़ूब को पता चला कि
लाबन के बेटे मेरे बारे में कह रहे
हैं, “याक़ूब ने हमारे अब्बू से सब कुछ छीन
लिया है। उस ने यह तमाम दौलत हमारे बाप
की मिलकियत से हासिल की है।” 2याक़ूब ने
यह भी देखा कि लाबन का मेरे साथ रवय्या
पहले की निस्बत बिगड़ गया है। 3फिर रब ने
उस से कहा, “अपने बाप के मुल्क और अपने
रिश्तेदारों के पास वापस चला जा। मैं तेरे साथ
हूँगा।”

4उस वक़्त याक़ूब खुले मैदान में अपने
रेवड़ों के पास था। उस ने वहाँ से राख़िल और
लियाह को बुला कर 5उन से कहा, “मैं ने देख
लिया है कि आप के बाप का मेरे साथ रवय्या
पहले की निस्बत बिगड़ गया है। लेकिन मेरे
बाप का ख़ुदा मेरे साथ रहा है। 6आप दोनों
जानती हैं कि मैं ने आप के अब्बू के लिए
कितनी जाँफ़िशानी से काम किया है। 7लेकिन
वह मुझे फ़रेब देता रहा और मेरी उजरत
दस बार बदली। ताहम अल्लाह ने उसे मुझे
नुक़्सान पहुँचाने न दिया। 8जब मामूँ लाबन
कहते थे, ‘जिन जानवरों के जिस्म पर धब्बे
हों वही आप को उजरत के तौर पर मिलेंगे’
तो तमाम भेड़-बकरियों के ऐसे बच्चे पैदा हुए
जिन के जिस्मों पर धब्बे ही थे। जब उन्हों
ने कहा, ‘जिन जानवरों के जिस्म पर धारियाँ
होंगी वही आप को उजरत के तौर पर मिलेंगे’
तो तमाम भेड़-बकरियों के ऐसे बच्चे पैदा हुए
जिन के जिस्मों पर धारियाँ ही थीं। 9यूँ अल्लाह
ने आप के अब्बू के मवेशी छीन कर मुझे दे
दिए हैं। 10अब ऐसा हुआ कि हैवानों की मस्ती
के मौसम में मैं ने एक ख़्वाब देखा। उस में जो
मेंढे और बकरे भेड़-बकरियों से मिलाप कर
रहे थे उन के जिस्म पर बड़े और छोटे धब्बे
और धारियाँ थीं। 11उस ख़्वाब में अल्लाह के
फ़रिश्ते ने मुझ से बात की, ‘याक़ूब!’ मैं ने
कहा, ‘जी, मैं हाज़िर हूँ।’ 12फ़रिश्ते ने कहा,
‘अपनी नज़र उठा कर उस पर ग़ौर कर जो
हो रहा है। वह तमाम मेंढे और बकरे जो भेड़-
बकरियों से मिलाप कर रहे हैं उन के जिस्म
पर बड़े और छोटे धब्बे और धारियाँ हैं। मैं यह
ख़ुद करवा रहा हूँ, क्यूँकि मैं ने वह सब कुछ
देख लिया है जो लाबन ने तेरे साथ किया है।
13मैं वह ख़ुदा हूँ जो बैत-एल में तुझ पर ज़ाहिर
हुआ था, उस जगह जहाँ तू ने सतून पर तेल
उंडेल कर उसे मेरे लिए मख़्सूस किया और मेरे
हुज़ूर क़सम खाई थी। अब उठ और रवाना हो
कर अपने वतन वापस चला जा’।”

14राख़िल और लियाह ने जवाब में याक़ूब
से कहा, “अब हमें अपने बाप की मीरास से
कुछ मिलने की उम्मीद नहीं रही। 15उस का
हमारे साथ अजनबी का सा सुलूक है। पहले
उस ने हमें बेच दिया, और अब उस ने वह सारे
पैसे खा भी लिए हैं। 16चुनाँचे जो भी दौलत
अल्लाह ने हमारे बाप से छीन ली है वह हमारी
और हमारे बच्चों की ही है। अब जो कुछ भी
अल्लाह ने आप को बताया है वह करें।”

17तब याक़ूब ने उठ कर अपने बाल-बच्चों
को ऊँटों पर बिठाया 18और अपने तमाम
मवेशी और मसोपुतामिया से हासिल किया
हुआ तमाम सामान ले कर मुल्क-ए-कनआन
में अपने बाप के हाँ जाने के लिए रवाना हुआ।
19उस वक़्त लाबन अपनी भेड़-बकरियों की
पश्म कतरने को गया हुआ था। उस की
ग़ैरमौजूदगी में राख़िल ने अपने बाप के बुत
चुरा लिए।

20याक़ूब ने लाबन को फ़रेब दे कर उसे
इत्तिला न दी कि मैं जा रहा हूँ 21बल्कि अपनी
सारी मिलकियत समेट कर फ़रार हुआ।
दरया-ए-फ़ुरात को पार करके वह जिलिआद
के पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ सफ़र करने लगा।

लाबन याक़ूब का ताक़्क़ुब करता है

22तीन दिन गुज़र गए। फिर लाबन को
बताया गया कि याक़ूब भाग गया है। 23अपने
रिश्तेदारों को साथ ले कर उस ने उस का
ताक़्क़ुब किया। सात दिन चलते चलते उस
ने याक़ूब को आ लिया जब वह जिलिआद
के पहाड़ी इलाक़े में पहुँच गया था। 24लेकिन
उस रात अल्लाह ने ख़्वाब में लाबन के पास
आ कर उस से कहा, “ख़बरदार! याक़ूब को
बुरा-भला न कहना।”

25जब लाबन उस के पास पहुँचा तो याक़ूब
ने जिलिआद के पहाड़ी इलाक़े में अपने ख़ैमे
लगाए हुए थे। लाबन ने भी अपने रिश्तेदारों
के साथ वहीं अपने ख़ैमे लगाए। 26उस ने
याक़ूब से कहा, “यह आप ने क्या किया है?

आप मुझे धोका दे कर मेरी बेटियों को क्यूँ जंगी क़ैदियों की तरह हाँक लाए हैं? 27आप क्यूँ मुझे फ़रेब दे कर ख़ामोशी से भाग आए हैं? अगर आप मुझे इत्तिला देते तो मैं आप को ख़ुशी ख़ुशी दफ़ और सरोद के साथ गाते बजाते रुख़्सत करता। 28आप ने मुझे अपने नवासे-नवासियों और बेटियों को बोसा देने का मौक़ा भी न दिया। आप की यह हरकत बड़ी अहमक़ाना थी। 29मैं आप को बहुत नुक़्सान पहुँचा सकता हूँ। लेकिन पिछली रात आप के अब्बू के ख़ुदा ने मुझ से कहा, 'ख़बरदार! याक़ूब को बुरा-भला न कहना।' 30ठीक है, आप इस लिए चले गए कि अपने बाप के घर वापस जाने के बड़े आरज़ूमन्द थे। लेकिन यह आप ने क्या किया है कि मेरे बुत चुरा लाए हैं?"

31याक़ूब ने जवाब दिया, "मुझे डर था कि आप अपनी बेटियों को मुझ से छीन लेंगे। 32लेकिन अगर आप को यहाँ किसी के पास अपने बुत मिल जाएँ तो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए हमारे रिश्तेदारों की मौजूदगी में मालूम करें कि मेरे पास आप की कोई चीज़ है कि नहीं। अगर है तो उसे ले लें।" याक़ूब को मालूम नहीं था कि राख़िल ने बुतों को चुराया है।

33लाबन याक़ूब के ख़ैमे में दाख़िल हुआ और ढूँडने लगा। वहाँ से निकल कर वह लियाह के ख़ैमे में और दोनों लौंडियों के ख़ैमे में गया। लेकिन उस के बुत कहीं नज़र न आए। आख़िर में वह राख़िल के ख़ैमे में दाख़िल हुआ। 34राख़िल बुतों को ऊँटों की एक काठी के नीचे छुपा कर उस पर बैठ गई थी। लाबन टटोल टटोल कर पूरे ख़ैमे में से गुज़रा लेकिन बुत न मिले। 35राख़िल ने अपने बाप से कहा, "अब्बू, मुझ से नाराज़ न होना कि मैं आप के सामने खड़ी नहीं हो सकती। मैं अय्याम-ए-माहवारी के सबब से उठ नहीं सकती।" लाबन उसे छोड़ कर ढूँडता रहा, लेकिन कुछ न मिला।

36फिर याक़ूब को ग़ुस्सा आया और वह लाबन से झगड़ने लगा। उस ने पूछा, "मुझ से क्या जुर्म सरज़द हुआ है? मैं ने क्या गुनाह किया है कि आप इतनी तुन्दी से मेरे ताक़्क़ुब के लिए निकले हैं? 37आप ने टटोल टटोल कर मेरे सारे सामान की तलाशी ली है। तो आप का क्या निकला है? उसे यहाँ अपने और मेरे रिश्तेदारों के सामने रखें। फिर वह फ़ैसला करें कि हम में से कौन हक़ पर है। 38मैं बीस साल तक आप के साथ रहा हूँ। उस दौरान आप की भेड़-बकरियाँ बच्चों से महरूम नहीं रहीं बल्कि मैं ने आप का एक मेंढा भी नहीं खाया। 39जब भी कोई भेड़ या बकरी किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाली तो मैं उसे आप के पास न लाया बल्कि मुझे ख़ुद उस का नुक़्सान भरना पड़ा। आप का तक़ाज़ा था कि मैं ख़ुद चोरी हुए माल का इवज़ाना दूँ, ख़्वाह वह दिन के वक़्त चोरी हुआ या रात को। 40मैं दिन की शदीद गर्मी के बाइस पिघल गया और रात की शदीद सर्दी के बाइस जम गया। काम इतना सख़्त था कि मैं नींद से महरूम रहा। 41पूरे बीस साल इसी हालत में गुज़र गए। चौदह साल मैं ने आप की बेटियों के इवज़ काम किया और छः साल आप की भेड़-बकरियों के लिए। उस दौरान आप ने दस बार मेरी तनख़्वाह बदल दी। 42अगर मेरे बाप इस्हाक़ का ख़ुदा और मेरे दादा इब्राहीम का माबूद[a] मेरे साथ न होता तो आप मुझे ज़रूर ख़ाली हाथ रुख़्सत करते। लेकिन अल्लाह ने मेरी मुसीबत और मेरी सख़्त मेहनत-मशक़्क़त देखी है, इस लिए उस ने कल रात को मेरे हक़ में फ़ैसला दिया।"

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : दह्शत यानी इस्हाक़ का वह ख़ुदा जिस से इन्सान दह्शत खाता है।

याक़ूब और लाबन के दरमियान अह्द

43तब लाबन ने याक़ूब से कहा, “यह बेटियाँ
तो मेरी बेटियाँ हैं, और इन के बच्चे मेरे बच्चे
हैं। यह भेड़-बकरियाँ भी मेरी ही हैं। लेकिन
अब मैं अपनी बेटियों और उन के बच्चों के
लिए कुछ नहीं कर सकता। 44इस लिए आओ,
हम एक दूसरे के साथ अह्द बांधें। इस के लिए
हम यहाँ पत्थरों का ढेर लगाएँ जो अह्द की
गवाही देता रहे।”
45चुनाँचे याक़ूब ने एक पत्थर ले कर उसे
सतून के तौर पर खड़ा किया। 46उस ने अपने
रिश्तेदारों से कहा, “कुछ पत्थर जमा करें।”
उन्हों ने पत्थर जमा करके ढेर लगा दिया। फिर
उन्हों ने उस ढेर के पास बैठ कर खाना खाया।
47लाबन ने उस का नाम यज़्र-शाहदूथा रखा
जबकि याक़ूब ने जल-एद रखा। दोनों नामों
का मतलब ‘गवाही का ढेर’ है यानी वह ढेर जो
गवाही देता है। 48लाबन ने कहा, “आज हम
दोनों के दरमियान यह ढेर अह्द की गवाही
देता है।” इस लिए उस का नाम जल-एद रखा
गया। 49उस का एक और नाम मिस्फ़ाह यानी
‘पहरेदारों का मीनार’ भी रखा गया। क्यूँकि
लाबन ने कहा, “रब हम पर पहरा दे जब हम
एक दूसरे से अलग हो जाएंगे। 50मेरी बेटियों
से बुरा सुलूक न करना, न उन के इलावा किसी
और से शादी करना। अगर मुझे पता भी न
चले लेकिन ज़रूर याद रखें कि अल्लाह मेरे
और आप के सामने गवाह है। 51यहाँ यह ढेर
है जो मैं ने लगा दिया है और यहाँ यह सतून
भी है। 52यह ढेर और सतून दोनों इस के गवाह
हैं कि न मैं यहाँ से गुज़र कर आप को नुक़्सान
पहुँचाऊँगा और न आप यहाँ से गुज़र कर
मुझे नुक़्सान पहुँचाएँगे। 53इब्राहीम, नहूर और
उन के बाप का ख़ुदा हम दोनों के दरमियान
फ़ैसला करे अगर ऐसा कोई मुआमला हो।”
जवाब में याक़ूब ने इस्हाक़ के माबूद की क़सम
खाई कि मैं यह अह्द कभी नहीं तोड़ूँगा।
54उस ने पहाड़ पर एक जानवर क़ुर्बानी के
तौर पर चढ़ाया और अपने रिश्तेदारों को खाना
खाने की दावत दी। उन्हों ने खाना खा कर वहीं
पहाड़ पर रात गुज़ारी।
55अगले दिन सुब्ह-सवेरे लाबन ने अपने
नवासे-नवासियों और बेटियों को बोसा दे कर
उन्हें बरकत दी। फिर वह अपने घर वापस
चला गया।

याक़ूब एसौ से मिलने के लिए तय्यार हो जाता है

32 याक़ूब ने भी अपना सफ़र जारी
रखा। रास्ते में अल्लाह के फ़रिश्ते
उस से मिले। 2उन्हें देख कर उस ने कहा,
“यह अल्लाह की लश्करगाह है।” उस ने
उस मक़ाम का नाम महनाइम यानी ‘दो
लश्करगाहें’ रखा।
3याक़ूब ने अपने भाई एसौ के पास अपने
आगे आगे क़ासिद भेजे। एसौ सईर यानी
अदोम के मुल्क में आबाद था। 4उन्हें एसौ को
बताना था, “आप का ख़ादिम याक़ूब आप
को इत्तिला देता है कि मैं परदेस में जा कर
अब तक लाबन का मेहमान रहा हूँ। 5वहाँ मुझे
बैल, गधे, भेड़-बकरियाँ, ग़ुलाम और लौंडियाँ
हासिल हुए हैं। अब मैं अपने मालिक को
इत्तिला दे रहा हूँ कि वापस आ गया हूँ और
आप की नज़र-ए-करम का ख़्वाहिशमन्द हूँ।”
6जब क़ासिद वापस आए तो उन्हों ने कहा,
“हम आप के भाई एसौ के पास गए, और वह
400 आदमी साथ ले कर आप से मिलने आ
रहा है।”
7याक़ूब घबरा कर बहुत परेशान हुआ। उस
ने अपने साथ के तमाम लोगों, भेड़-बकरियों,
गाय-बैलों और ऊँटों को दो गुरोहों में तक़्सीम
किया। 8ख़याल यह था कि अगर एसौ आ कर
एक गुरोह पर हम्ला करे तो बाक़ी गुरोह शायद
बच जाए। 9फिर याक़ूब ने दुआ की, “ऐ मेरे
दादा इब्राहीम और मेरे बाप इस्हाक़ के ख़ुदा,
मेरी दुआ सुन! ऐ रब, तू ने ख़ुद मुझे बताया,
‘अपने मुल्क और रिश्तेदारों के पास वापस
जा, और मैं तुझे कामयाबी दूँगा।’ 10मैं उस

तमाम मेहरबानी और वफ़ादारी के लाइक़ नहीं
जो तू ने अपने ख़ादिम को दिखाई है। जब मैं
ने लाबन के पास जाते वक़्त दरया-ए-यर्दन
को पार किया तो मेरे पास सिर्फ़ यह लाठी
थी, और अब मेरे पास यह दो गुरोह हैं। 11मुझे
अपने भाई एसौ से बचा, क्यूँकि मुझे डर है
कि वह मुझ पर हम्ला करके बाल-बच्चों समेत
सब कुछ तबाह कर देगा। 12तू ने ख़ुद कहा
था, 'मैं तुझे कामयाबी दूँगा और तेरी औलाद
इतनी बढ़ाऊँगा कि वह समुन्दर की रेत की
मानिन्द बेशुमार होगी'।"

13याक़ूब ने वहाँ रात गुज़ारी। फिर उस ने
अपने माल में से एसौ के लिए तोह्फ़े चुन
लिए : 14200 बकरियाँ, 20 बकरे, 200 भेड़ें,
20 मेंढे, 1530 दूध देने वाली ऊँटनियाँ बच्चों
समेत, 40 गाएँ, 10 बैल, 20 गधियाँ और
10 गधे। 16उस ने उन्हें मुख़्तलिफ़ रेवड़ों में
तक़्सीम करके अपने मुख़्तलिफ़ नौकरों के
सपुर्द किया और उन से कहा, "मेरे आगे आगे
चलो लेकिन हर रेवड़ के दरमियान फ़ासिला
रखो।"

17जो नौकर पहले रेवड़ ले कर आगे
निकला उस से याक़ूब ने कहा, "मेरा भाई एसौ
तुम से मिलेगा और पूछेगा, 'तुम्हारा मालिक
कौन है? तुम कहाँ जा रहे हो? तुम्हारे सामने
के जानवर किस के हैं?' 18जवाब में तुम्हें
कहना है, 'यह आप के ख़ादिम याक़ूब के हैं।
यह तोह्फ़ा हैं जो वह अपने मालिक एसौ को
भेज रहे हैं। याक़ूब हमारे पीछे पीछे आ रहे
हैं'।"

19याक़ूब ने यही हुक्म हर एक नौकर को
दिया जिसे रेवड़ ले कर उस के आगे आगे
जाना था। उस ने कहा, "जब तुम एसौ से
मिलोगे तो उस से यही कहना है। 20तुम्हें यह
भी ज़रूर कहना है, आप के ख़ादिम याक़ूब
हमारे पीछे आ रहे हैं।" क्यूँकि याक़ूब ने सोचा,
'मैं इन तोह्फ़ों से उस के साथ सुलह करूँगा।
फिर जब उस से मुलाक़ात होगी तो शायद वह
मुझे क़बूल कर ले।' 21यूँ उस ने यह तोह्फ़े
अपने आगे आगे भेज दिए। लेकिन उस ने ख़ुद
ख़ैमागाह में रात गुज़ारी।

याक़ूब की कुश्ती

22उस रात वह उठा और अपनी दो बीवियों,
दो लौंडियों और ग्यारह बेटों को ले कर दरया-
ए-यब्बोक़ को वहाँ से पार किया जहाँ कम
गहराई थी। 23फिर उस ने अपना सारा सामान
भी वहाँ भेज दिया। 24लेकिन वह ख़ुद अकेला
ही पीछे रह गया।

उस वक़्त एक आदमी आया और पौ फटने
तक उस से कुश्ती लड़ता रहा। 25जब उस ने
देखा कि मैं याक़ूब पर ग़ालिब नहीं आ रहा तो
उस ने उस के कूल्हे को छुआ, और उस का
जोड़ निकल गया। 26आदमी ने कहा, "मुझे
जाने दे, क्यूँकि पौ फटने वाली है।"

याक़ूब ने कहा, "पहले मुझे बरकत दें, फिर
ही आप को जाने दूँगा।" 27आदमी ने पूछा,
"तेरा क्या नाम है?" उस ने जवाब दिया,
"याक़ूब।" 28आदमी ने कहा, "अब से तेरा
नाम याक़ूब नहीं बल्कि इस्राईल यानी 'वह
अल्लाह से लड़ता है' होगा। क्यूँकि तू अल्लाह
और आदमियों के साथ लड़ कर ग़ालिब आया
है।"

29याक़ूब ने कहा, "मुझे अपना नाम
बताएँ।" उस ने कहा, "तू क्यूँ मेरा नाम जानना
चाहता है?" फिर उस ने याक़ूब को बरकत
दी।

30याक़ूब ने कहा, "मैं ने अल्लाह को रू-ब-
रू देखा तो भी बच गया हूँ।" इस लिए उस ने
उस मक़ाम का नाम फ़नीएल रखा। 31याक़ूब
वहाँ से चला तो सूरज तुलू हो रहा था। वह
कूल्हे के सबब से लंगड़ाता रहा।

32यही वजह है कि आज भी इस्राईल की
औलाद कूल्हे के जोड़ पर की नस को नहीं
खाते, क्यूँकि याक़ूब की इसी नस को छुआ
गया था।

याक़ूब एसौ से मिलता है

33 फिर एसौ उन की तरफ़ आता
हुआ नज़र आया। उस के साथ
400 आदमी थे। उन्हें देख कर याक़ूब ने
बच्चों को बाँट कर लियाह, राख़िल और
दोनों लौंडियों के हवाले कर दिया। 2उस ने
दोनों लौंडियों को उन के बच्चों समेत आगे
चलने दिया। फिर लियाह उस के बच्चों समेत
और आख़िर में राख़िल और यूसुफ़ आए।
3याक़ूब ख़ुद सब से आगे एसौ से मिलने गया।
चलते चलते वह सात दफ़ा ज़मीन तक झुका।
4लेकिन एसौ दौड़ कर उस से मिलने आया
और उसे गले लगा कर बोसा दिया। दोनों रो
पड़े।

5फिर एसौ ने औरतों और बच्चों को देखा।
उस ने पूछा, “तुम्हारे साथ यह लोग कौन हैं?”
याक़ूब ने कहा, “यह आप के ख़ादिम के बच्चे
हैं जो अल्लाह ने अपने करम से नवाज़े हैं।”
6दोनों लौंडियाँ अपने बच्चों समेत आ कर
उस के सामने झुक गईं। 7फिर लियाह अपने
बच्चों के साथ आई और आख़िर में यूसुफ़
और राख़िल आ कर झुक गए।

8एसौ ने पूछा, “जिस जानवरों के बड़े ग़ोल
से मेरी मुलाक़ात हुई उस से क्या मुराद है?”
याक़ूब ने जवाब दिया, “यह तोह्फ़ा है ताकि
आप का ख़ादिम आप की नज़र में मक़्बूल
हो।” 9लेकिन एसौ ने कहा, “मेरे भाई, मेरे
पास बहुत कुछ है। यह अपने पास ही रखो।”
10याक़ूब ने कहा, “नहीं जी, अगर मुझ पर
आप के करम की नज़र है तो मेरे इस तोह्फ़े
को ज़रूर क़बूल फ़रमाएँ। क्यूँकि जब मैं ने
आप का चेहरा देखा तो वह मेरे लिए अल्लाह
के चेहरे की मानिन्द था, आप ने मेरे साथ
इस क़दर अच्छा सुलूक किया है। 11मेहरबानी
करके यह तोह्फ़ा क़बूल करें जो मैं आप के
लिए लाया हूँ। क्यूँकि अल्लाह ने मुझ पर
अपने करम का इज़हार किया है, और मेरे
पास बहुत कुछ है।”

याक़ूब इसरार करता रहा तो आख़िरकार
एसौ ने उसे क़बूल कर लिया। फिर एसौ
कहने लगा, 12“आओ, हम रवाना हो जाएँ। मैं
तुम्हारे आगे आगे चलूँगा।” 13याक़ूब ने जवाब
दिया, “मेरे मालिक, आप जानते हैं कि मेरे
बच्चे नाज़ुक हैं। मेरे पास भेड़-बकरियाँ, गाय-
बैल और उन के दूध पीने वाले बच्चे भी हैं।
अगर मैं उन्हें एक दिन के लिए भी हद से
ज़्यादा हाँकूँ तो वह मर जाएंगे। 14मेरे मालिक,
मेहरबानी करके मेरे आगे आगे जाएँ। मैं
आराम से उसी रफ़्तार से आप के पीछे पीछे
चलता रहूँगा जिस रफ़्तार से मेरे मवेशी और
मेरे बच्चे चल सकेंगे। यूँ हम आहिस्ता चलते
हुए आप के पास सईर पहुँचेंगे।” 15एसौ ने
कहा, “क्या मैं अपने आदमियों में से कुछ
आप के पास छोड़ दूँ?” लेकिन याक़ूब ने
कहा, “क्या ज़रूरत है? सब से अहम बात
यह है कि आप ने मुझे क़बूल कर लिया है।”

16उस दिन एसौ सईर के लिए और 17याक़ूब
सुक्कात के लिए रवाना हुआ। वहाँ उस ने
अपने लिए मकान बना लिया और अपने
मवेशियों के लिए झोंपड़ियाँ। इस लिए उस
मक़ाम का नाम सुक्कात यानी झोंपड़ियाँ पड़
गया।

18फिर याक़ूब चलते चलते सलामती
से सिकम शहर पहुँचा। यूँ उस का
मसोपुतामिया से मुल्क-ए-कनआन तक का
सफ़र इख़तिताम तक पहुँच गया। उस ने
अपने ख़ैमे शहर के सामने लगाए। 19उस के
ख़ैमे हमोर की औलाद की ज़मीन पर लगे
थे। उस ने यह ज़मीन चाँदी के 100 सिक्कों
के बदले ख़रीद ली। 20वहाँ उस ने क़ुर्बानगाह
बनाई जिस का नाम उस ने ‘एल ख़ुदा-ए-
इस्राईल’ रखा।

दीना की इस्मतदरी

34 एक दिन याक़ूब और लियाह की
बेटी दीना कनआनी औरतों से
मिलने के लिए घर से निकली। 2शहर में

एक आदमी बनाम सिकम रहता था। उस का
वालिद हमोर उस इलाक़े का हुक्मरान था
और हिव्वी क़ौम से ताल्लुक़ रखता था। जब
सिकम ने दीना को देखा तो उस ने उसे पकड़
कर उस की इस्मतदरी की। 3लेकिन उस का
दिल दीना से लग गया। वह उस से मुहब्बत
करने लगा और प्यार से उस से बातें करता
रहा। 4उस ने अपने बाप से कहा, “इस लड़की
के साथ मेरी शादी करा दें।”

5जब याक़ूब ने अपनी बेटी की इस्मतदरी
की ख़बर सुनी तो उस के बेटे मवेशियों के साथ
खुले मैदान में थे। इस लिए वह उन के वापस
आने तक ख़ामोश रहा।

6सिकम का बाप हमोर शहर से निकल कर
याक़ूब से बात करने के लिए आया। 7जब
याक़ूब के बेटों को दीना की इस्मतदरी की
ख़बर मिली तो उन के दिल रंजिश और ग़ुस्से
से भर गए कि सिकम ने याक़ूब की बेटी
की इस्मतदरी से इस्राईल की इतनी बेइज़्ज़ती
की है। वह सीधे खुले मैदान से वापस आए।
8हमोर ने याक़ूब से कहा, “मेरे बेटे का दिल
आप की बेटी से लग गया है। मेहरबानी करके
उस की शादी मेरे बेटे के साथ कर दें। 9हमारे
साथ रिश्ता बांधें, हमारे बेटे-बेटियों के साथ
शादियाँ कराएँ। 10फिर आप हमारे साथ इस
मुल्क में रह सकेंगे और पूरा मुल्क आप के
लिए खुला होगा। आप जहाँ भी चाहें आबाद
हो सकेंगे, तिजारत कर सकेंगे और ज़मीन
ख़रीद सकेंगे।” 11सिकम ने ख़ुद भी दीना के
बाप और भाइयों से मिन्नत की, “अगर मेरी
यह दरख़्वास्त मन्ज़ूर हो तो मैं जो कुछ आप
कहेंगे अदा कर दूँगा। 12जितना भी महर और
तोह्फ़े आप मुक़र्रर करें मैं दे दूँगा। सिर्फ़ मेरी
यह ख़्वाहिश पूरी करें कि यह लड़की मेरे
अक़द में आ जाए।”

13लेकिन दीना की इस्मतदरी के सबब से
याक़ूब के बेटों ने सिकम और उस के बाप
हमोर से चालाकी करके 14कहा, “हम ऐसा
नहीं कर सकते। हम अपनी बहन की शादी
किसी ऐसे आदमी से नहीं करा सकते जिस
का ख़तना नहीं हुआ। इस से हमारी बेइज़्ज़ती
होती है। 15हम सिर्फ़ इस शर्त पर राज़ी होंगे
कि आप अपने तमाम लड़कों और मर्दों का
ख़तना करवाने से हमारी मानिन्द हो जाएँ।
16फिर आप के बेटे-बेटियों के साथ हमारी
शादियाँ हो सकेंगी और हम आप के साथ एक
क़ौम बन जाएंगे। 17लेकिन अगर आप ख़तना
कराने के लिए तय्यार नहीं हैं तो हम अपनी
बहन को ले कर चले जाएंगे।”

18यह बातें हमोर और उस के बेटे सिकम
को अच्छी लगीं। 19नौजवान सिकम ने फ़ौरन
उन पर अमल किया, क्यूँकि वह दीना
को बहुत पसन्द करता था। सिकम अपने
ख़ानदान में सब से मुअज़्ज़ज़ था। 20हमोर
अपने बेटे सिकम के साथ शहर के दरवाज़े पर
गया जहाँ शहर के फ़ैसले किए जाते थे। वहाँ
उन्हों ने बाक़ी शहरियों से बात की। 21“यह
आदमी हम से झगड़ने वाले नहीं हैं, इस लिए
क्यूँ न वह इस मुल्क में हमारे साथ रहें और
हमारे दरमियान तिजारत करें? हमारे मुल्क
में उन के लिए भी काफ़ी जगह है। आओ,
हम उन की बेटियों और बेटों से शादियाँ करें।
22लेकिन यह आदमी सिर्फ़ इस शर्त पर हमारे
दरमियान रहने और एक ही क़ौम बनने के
लिए तय्यार हैं कि हम उन की तरह अपने
तमाम लड़कों और मर्दों का ख़तना कराएँ।
23अगर हम ऐसा करें तो उन के तमाम मवेशी
और सारा माल हमारा ही होगा। चुनाँचे आओ,
हम मुत्तफ़िक़ हो कर फ़ैसला कर लें ताकि वह
हमारे दरमियान रहें।”

24सिकम के शहरी हमोर और सिकम के
मश्वरे पर राज़ी हुए। तमाम लड़कों और मर्दों
का ख़तना कराया गया। 25तीन दिन के बाद
जब ख़तने के सबब से लोगों की हालत बुरी थी
तो दीना के दो भाई शमाऊन और लावी अपनी
तलवारें ले कर शहर में दाख़िल हुए। किसी
को शक तक नहीं था कि क्या कुछ होगा।
अन्दर जा कर उन्हों ने बच्चों से ले कर बूढ़ों

तक तमाम मर्दों को क़त्ल कर दिया 26जिन
में हमोर और उस का बेटा सिकम भी शामिल
थे। फिर वह दीना को सिकम के घर से ले कर
चले गए।
27इस क़त्ल-ए-आम के बाद याक़ूब के
बाक़ी बेटे शहर पर टूट पड़े और उसे लूट
लिया। यूँ उन्हों ने अपनी बहन की इस्मतदरी
का बदला लिया। 28वह भेड़-बकरियाँ, गाय-
बैल, गधे और शहर के अन्दर और बाहर का
सब कुछ ले कर चलते बने। 29उन्हों ने सारे
माल पर क़ब्ज़ा किया, औरतों और बच्चों को
क़ैदी बना लिया और तमाम घरों का सामान
भी ले गए।
30फिर याक़ूब ने शमाऊन और लावी से
कहा, "तुम ने मुझे मुसीबत में डाल दिया है।
अब कनआनी, फ़रिज़्ज़ी और मुल्क के बाक़ी
बाशिन्दों में मेरी बदनामी हुई है। मेरे साथ कम
आदमी हैं। अगर दूसरे मिल कर हम पर हम्ला
करें तो हमारे पूरे ख़ानदान का सत्यानास हो
जाएगा।" 31लेकिन उन्हों ने कहा, "क्या यह
ठीक था कि उस ने हमारी बहन के साथ कस्बी
का सा सुलूक किया?"

बैत-एल में याक़ूब पर अल्लाह की बरकत

35 अल्लाह ने याक़ूब से कहा, "उठ,
बैत-एल जा कर वहाँ आबाद हो।
वहीं अल्लाह के लिए जो तुझ पर ज़ाहिर
हुआ जब तू अपने भाई एसौ से भाग रहा था
क़ुर्बानगाह बना।" 2चुनाँचे याक़ूब ने अपने घर
वालों और बाक़ी सारे साथियों से कहा, "जो
भी अजनबी बुत आप के पास हैं उन्हें फैंक
दें। अपने आप को पाक-साफ़ करके अपने
कपड़े बदलें, 3क्यूँकि हमें यह जगह छोड़ कर
बैत-एल जाना है। वहाँ मैं उस ख़ुदा के लिए
क़ुर्बानगाह बनाऊँगा जिस ने मुसीबत के वक़्त
मेरी दुआ सुनी। जहाँ भी मैं गया वहाँ वह मेरे
साथ रहा है।" 4यह सुन कर उन्हों ने याक़ूब
को तमाम बुत दे दिए जो उन के पास थे
और तमाम बालियाँ जो उन्हों ने तावीज़ के
तौर पर कानों में पहन रखी थीं। उस ने सब
कुछ सिकम के क़रीब बलूत के दरख़्त के नीचे
ज़मीन में दबा दिया। 5फिर वह रवाना हुए।
इर्दगिर्द के शहरों पर अल्लाह की तरफ़ से
इतना शदीद ख़ौफ़ छा गया कि उन्हों ने याक़ूब
और उस के बेटों का ताक़्क़ुब न किया।
6चलते चलते याक़ूब अपने लोगों समेत
लूज़ पहुँच गया जो मुल्क-ए-कनआन में था।
आज लूज़ का नाम बैत-एल है। 7याक़ूब ने
वहाँ क़ुर्बानगाह बना कर मक़ाम का नाम बैत-
एल यानी 'अल्लाह का घर' रखा। क्यूँकि वहाँ
अल्लाह ने अपने आप को उस पर ज़ाहिर
किया था जब वह अपने भाई से फ़रार हो रहा
था।
8वहाँ रिब्क़ा की दाया दबोरा मर गई। वह
बैत-एल के जुनूब में बलूत के दरख़्त के नीचे
दफ़न हुई, इस लिए उस का नाम अल्लोन-
बकूत यानी 'रोने का बलूत का दरख़्त' रखा
गया।
9अल्लाह याक़ूब पर एक दफ़ा और ज़ाहिर
हुआ और उसे बरकत दी। यह मसोपुतामिया
से वापस आने पर दूसरी बार हुआ। 10अल्लाह
ने उस से कहा, "अब से तेरा नाम याक़ूब नहीं
बल्कि इस्राईल होगा।" यूँ उस ने उस का नया
नाम इस्राईल रखा। 11अल्लाह ने यह भी उस
से कहा, "मैं अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ हूँ।
फल फूल और तादाद में बढ़ता जा। एक क़ौम
नहीं बल्कि बहुत सी क़ौमें तुझ से निकलेंगी।
तेरी औलाद में बादशाह भी शामिल होंगे। 12मैं
तुझे वही मुल्क दूँगा जो इब्राहीम और इस्हाक़
को दिया है। और तेरे बाद उसे तेरी औलाद
को दूँगा।"
13फिर अल्लाह वहाँ से आसमान पर चला
गया। 14जहाँ अल्लाह याक़ूब से हमकलाम
हुआ था वहाँ उस ने पत्थर का सतून खड़ा
किया और उस पर मै और तेल उंडेल कर उसे
मख़्सूस किया। 15उस ने जगह का नाम बैत-
एल रखा।

राख़िल की मौत

16फिर याक़ूब अपने घर वालों के साथ
बैत-एल को छोड़ कर इफ़्राता की तरफ़ चल
पड़ा। राख़िल उम्मीद से थी, और रास्ते में
बच्चे की पैदाइश का वक़्त आ गया। बच्चा
बड़ी मुश्किल से पैदा हुआ। 17जब दर्द-ए-
ज़ह उरूज को पहुँच गया तो दाई ने उस से
कहा, "मत डरो, क्यूँकि एक और बेटा है।"
18लेकिन वह दम तोड़ने वाली थी, और मरते
मरते उस ने उस का नाम बिन-ऊनी यानी 'मेरी
मुसीबत का बेटा' रखा। लेकिन उस के बाप ने
उस का नाम बिनयमीन यानी 'दहने हाथ या
ख़ुशक़िसमती का बेटा' रखा। 19राख़िल फ़ौत
हुई, और वह इफ़्राता के रास्ते में दफ़न हुई।
आजकल इफ़्राता को बैत-लहम कहा जाता
है। 20याक़ूब ने उस की क़ब्र पर पत्थर का
सतून खड़ा किया। वह आज तक राख़िल की
क़ब्र की निशानदिही करता है।
21वहाँ से याक़ूब ने अपना सफ़र जारी रखा
और मिज्दल-इदर की परली तरफ़ अपने ख़ैमे
लगाए। 22जब वह वहाँ ठहरे थे तो रूबिन
याक़ूब की हरम बिल्हाह से हमबिसतर हुआ।
याक़ूब को मालूम हो गया।

याक़ूब के बेटे

याक़ूब के बारह बेटे थे। 23लियाह के बेटे
यह थे : उस का सब से बड़ा बेटा रूबिन,
फिर शमाऊन, लावी, यहूदाह, इश्कार और
ज़बूलून। 24राख़िल के दो बेटे थे, यूसुफ़ और
बिनयमीन। 25राख़िल की लौंडी बिल्हाह के
दो बेटे थे, दान और नफ़्ताली। 26लियाह की
लौंडी ज़िल्फ़ा के दो बेटे थे, जद और आशर।
याक़ूब के यह बेटे मसोपुतामिया में पैदा हुए।

इस्हाक़ की मौत

27फिर याक़ूब अपने बाप इस्हाक़ के पास
पहुँच गया जो हब्रून के क़रीब मम्रे में अजनबी
की हैसियत से रहता था (उस वक़्त हब्रून का
नाम क़िर्यत-अर्बा था)। वहाँ इस्हाक़ और उस
से पहले इब्राहीम रहा करते थे। 28-29इस्हाक़
180 साल का था जब वह उम्ररसीदा और
ज़िन्दगी से आसूदा हो कर अपने बापदादा से
जा मिला। उस के बेटे एसौ और याक़ूब ने उसे
दफ़न किया।

एसौ की औलाद

36 यह एसौ की औलाद का नसब-
नामा है (एसौ को अदोम भी कहा
जाता है) :
2एसौ ने तीन कनआनी औरतों से शादी
की : हित्ती आदमी ऐलोन की बेटी अदा से,
अना की बेटी उहलीबामा से जो हिव्वी आदमी
सिबओन की नवासी थी 3और इस्माईल की
बेटी बासमत से जो नबायोत की बहन थी।
4अदा का एक बेटा इलीफ़ज़ और बासमत का
एक बेटा रऊएल पैदा हुआ। 5उहलीबामा के
तीन बेटे पैदा हुए, यऊस, यालाम और क़ोरह।
एसौ के यह तमाम बेटे मुल्क-ए-कनआन में
पैदा हुए।
6बाद में एसौ दूसरे मुल्क में चला गया। उस
ने अपनी बीवियों, बेटे-बेटियों और घर के रहने
वालों को अपने तमाम मवेशियों और मुल्क-
ए-कनआन में हासिल किए हुए माल समेत
अपने साथ लिया। 7वह इस वजह से चला
गया कि दोनों भाइयों के पास इतने रेवड़ थे
कि चराने की जगह कम पड़ गई। 8चुनाँचे एसौ
पहाड़ी इलाक़े सईर में आबाद हुआ। एसौ का
दूसरा नाम अदोम है।
9यह एसौ यानी सईर के पहाड़ी इलाक़े में
आबाद अदोमियों का नसबनामा है : 10एसौ
की बीवी अदा का एक बेटा इलीफ़ज़ था
जबकि उस की बीवी बासमत का एक बेटा
रऊएल था। 11इलीफ़ज़ के बेटे तेमान, ओमर,
सफ़ो, जाताम, क़नज़ 12और अमालीक़ थे।
अमालीक़ इलीफ़ज़ की हरम तिमना का बेटा
था। यह सब एसौ की बीवी अदा की औलाद
में शामिल थे। 13रऊएल के बेटे नहत, ज़ारह,
सम्मा और मिज़्ज़ा थे। यह सब एसौ की बीवी

बासमत की औलाद में शामिल थे। 14एसौ
की बीवी उहलीबामा जो अना की बेटी और
सिबओन की नवासी थी के तीन बेटे यऊस,
यालाम और क़ोरह थे।
15एसौ से मुख़्तलिफ़ क़बीलों के सरदार
निकले। उस के पहलौठे इलीफ़ज़ से
यह क़बाइली सरदार निकले : तेमान,
ओमर, सफ़ो, क़नज़, 16क़ोरह, जाताम और
अमालीक़। यह सब एसौ की बीवी अदा की
औलाद थे। 17एसौ के बेटे रऊएल से यह
क़बाइली सरदार निकले : नहत, ज़ारह, सम्मा
और मिज़्ज़ा। यह सब एसौ की बीवी बासमत
की औलाद थे। 18एसौ की बीवी उहलीबामा
यानी अना की बेटी से यह क़बाइली सरदार
निकले : यऊस, यालाम और क़ोरह। 19यह
तमाम सरदार एसौ की औलाद हैं।

सईर की औलाद

20मुल्क-ए-अदोम के कुछ बाशिन्दे होरी
आदमी सईर की औलाद थे। उन के नाम
लोतान, सोबल, सिबओन, अना, 21दीसोन,
एसर और दीसान थे। सईर के यह बेटे मुल्क-
ए-अदोम में होरी क़बीलों के सरदार थे।
22लोतान होरी और हेमाम का बाप था।
(तिमना लोतान की बहन थी।) 23सोबल के
बेटे अल्वान, मानहत, ऐबाल, सफ़ो और
ओनाम थे। 24सिबओन के बेटे अय्याह और
अना थे। इसी अना को गर्म चश्मे मिले जब
वह बयाबान में अपने बाप के गधे चरा रहा
था। 25अना का एक बेटा दीसोन और एक बेटी
उहलीबामा थी। 26दीसोन के चार बेटे हम्दान,
इश्बान, यित्रान और किरान थे। 27एसर के
तीन बेटे बिल्हान, ज़ावान और अक़ान थे।
28दीसान के दो बेटे ऊज़ और अरान थे।
29-30यही यानी लोतान, सोबल, सिबओन,
अना, दीसोन, एसर और दीसान सईर के मुल्क
में होरी क़बाइल के सरदार थे।

अदोम के बादशाह

31इस से पहले कि इस्राईलियों का कोई
बादशाह था ज़ैल के बादशाह यके बाद दीगरे
मुल्क-ए-अदोम में हुकूमत करते थे :
32बाला बिन बओर जो दिन्हाबा शहर का
था मुल्क-ए-अदोम का पहला बादशाह था।
33उस की मौत पर यूबाब बिन ज़ारह जो
बुस्रा शहर का था।
34उस की मौत पर हुशाम जो तेमानियों के
मुल्क का था।
35उस की मौत पर हदद बिन बिदद जिस ने
मुल्क-ए-मोआब में मिदियानियों को शिकस्त
दी। वह अवीत का था।
36उस की मौत पर सम्ला जो मस्रिक़ा का
था।
37उस की मौत पर साऊल जो दरया-ए-
फ़ुरात पर रहोबोत शहर का था।
38उस की मौत पर बाल-हनान बिन
अक्बोर।
39उस की मौत पर हदद जो फ़ाऊ शहर का
था (बीवी का नाम महेतब-एल बिन्त मत्रिद
बिन्त मेज़ाहाब था)।
40-43एसौ से अदोमी क़बीलों के यह सरदार
निकले : तिमना, अल्वह, यतेत, उहलीबामा,
ऐला, फ़ीनोन, क़नज़, तेमान, मिब्सार,
मजदीएल और इराम। अदोम के सरदारों की
यह फ़हरिस्त उन की मौरूसी ज़मीन की
आबादियों और क़बीलों के मुताबिक़ ही बयान
की गई है। एसौ उन का बाप है।

यूसुफ़ के ख़्वाब

37 याक़ूब मुल्क-ए-कनआन में रहता
था जहाँ पहले उस का बाप भी
परदेसी था। 2यह याक़ूब के ख़ानदान का
बयान है।
उस वक़्त याक़ूब का बेटा यूसुफ़ 17 साल
का था। वह अपने भाइयों यानी बिल्हाह और
ज़िल्फ़ा के बेटों के साथ भेड़-बकरियों की
देख-भाल करता था। यूसुफ़ अपने बाप को

अपने भाइयों की बुरी हरकतों की इत्तिला दिया करता था।

3याक़ूब यूसुफ़ को अपने तमाम बेटों की निस्बत ज़्यादा प्यार करता था। वजह यह थी कि वह तब पैदा हुआ जब बाप बूढ़ा था। इस लिए याक़ूब ने उस के लिए एक ख़ास रंगदार लिबास बनवाया। 4जब उस के भाइयों ने देखा कि हमारा बाप यूसुफ़ को हम से ज़्यादा प्यार करता है तो वह उस से नफ़रत करने लगे और अदब से उस से बात नहीं करते थे।

5एक रात यूसुफ़ ने ख़्वाब देखा। जब उस ने अपने भाइयों को ख़्वाब सुनाया तो वह उस से और भी नफ़रत करने लगे। 6उस ने कहा, “सुनो, मैं ने ख़्वाब देखा। 7हम सब खेत में पूले बांध रहे थे कि मेरा पूला खड़ा हो गया। आप के पूले मेरे पूले के इर्दगिर्द जमा हो कर उस के सामने झुक गए।” 8उस के भाइयों ने कहा, “अच्छा, तू बादशाह बन कर हम पर हुकूमत करेगा?” उस के ख़्वाबों और उस की बातों के सबब से उन की उस से नफ़रत मज़ीद बढ़ गई।

9कुछ देर के बाद यूसुफ़ ने एक और ख़्वाब देखा। उस ने अपने भाइयों से कहा, “मैं ने एक और ख़्वाब देखा है। उस में सूरज, चाँद और ग्यारह सितारे मेरे सामने झुक गए।” 10उस ने यह ख़्वाब अपने बाप को भी सुनाया तो उस ने उसे डाँटा। उस ने कहा, “यह कैसा ख़्वाब है जो तू ने देखा! यह कैसी बात है कि मैं, तेरी माँ और तेरे भाई आ कर तेरे सामने ज़मीन तक झुक जाएँ?” 11नतीजे में उस के भाई उस से बहुत हसद करने लगे। लेकिन उस के बाप ने दिल में यह बात महफ़ूज़ रखी।

यूसुफ़ को बेचा जाता है

12एक दिन जब यूसुफ़ के भाई अपने बाप के रेवड़ चराने के लिए सिकम तक पहुँच गए थे 13तो याक़ूब ने यूसुफ़ से कहा, “तेरे भाई सिकम में रेवड़ों को चरा रहे हैं। आ, मैं तुझे उन के पास भेज देता हूँ।” यूसुफ़ ने जवाब दिया, “ठीक है।” 14याक़ूब ने कहा, “जा कर मालूम कर कि तेरे भाई और उन के साथ के रेवड़ ख़ैरियत से हैं कि नहीं। फिर वापस आ कर मुझे बता देना।” चुनाँचे उस के बाप ने उसे वादी-ए-हब्रून से भेज दिया, और यूसुफ़ सिकम पहुँच गया।

15वहाँ वह इधर उधर फिरता रहा। आख़िरकार एक आदमी उस से मिला और पूछा, “आप क्या ढूँड रहे हैं?” 16यूसुफ़ ने जवाब दिया, “मैं अपने भाइयों को तलाश कर रहा हूँ। मुझे बताएँ कि वह अपने जानवरों को कहाँ चरा रहे हैं।” 17आदमी ने कहा, “वह यहाँ से चले गए हैं। मैं ने उन्हें यह कहते सुना कि आओ, हम दूतैन जाएँ।” यह सुन कर यूसुफ़ अपने भाइयों के पीछे दूतैन चला गया। वहाँ उसे वह मिल गए।

18जब यूसुफ़ अभी दूर से नज़र आया तो उस के भाइयों ने उस के पहुँचने से पहले उसे क़त्ल करने का मन्सूबा बनाया। 19उन्हों ने कहा, “देखो, ख़्वाब देखने वाला आ रहा है। 20आओ, हम उसे मार डालें और उस की लाश किसी गढ़े में फैंक दें। हम कहेंगे कि किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया है। फिर पता चलेगा कि उस के ख़्वाबों की क्या हक़ीक़त है।”

21जब रूबिन ने उन की बातें सुनीं तो उस ने यूसुफ़ को बचाने की कोशिश की। उस ने कहा, “नहीं, हम उसे क़त्ल न करें। 22उस का ख़ून न करना। बेशक उसे इस गढ़े में फैंक दें जो रेगिस्तान में है, लेकिन उसे हाथ न लगाएँ।” उस ने यह इस लिए कहा कि वह उसे बचा कर बाप के पास वापस पहुँचाना चाहता था।

23जूँ ही यूसुफ़ अपने भाइयों के पास पहुँचा उन्हों ने उस का रंगदार लिबास उतार कर 24यूसुफ़ को गढ़े में फैंक दिया। गढ़ा ख़ाली था, उस में पानी नहीं था। 25फिर वह रोटी खाने के लिए बैठ गए। अचानक इस्माईलियों का एक क़ाफ़िला नज़र आया। वह जिलिआद

से मिस्र जा रहे थे, और उन के ऊँट क़ीमती मसालों यानी लादन, बल्सान और मुर से लदे हुए थे। 26तब यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा, “हमें क्या फ़ाइदा है अगर अपने भाई को क़त्ल करके उस के ख़ून को छुपा दें? 27आओ, हम उसे इन इस्माईलियों के हाथ फ़रोख़्त कर दें। फिर कोई ज़रूरत नहीं होगी कि हम उसे हाथ लगाएँ। आख़िर वह हमारा भाई है।”

उस के भाई राज़ी हुए। 28चुनाँचे जब मिदियानी ताजिर वहाँ से गुज़रे तो भाइयों ने यूसुफ़ को खैंच कर गढ़े से निकाला और चाँदी के 20 सिक्कों के इवज़ बेच डाला। इस्माईली उसे ले कर मिस्र चले गए।

29उस वक़्त रूबिन मौजूद नहीं था। जब वह गढ़े के पास वापस आया तो यूसुफ़ उस में नहीं था। यह देख कर उस ने परेशानी में अपने कपड़े फाड़ डाले। 30वह अपने भाइयों के पास वापस गया और कहा, “लड़का नहीं है। अब मैं किस तरह अब्बू के पास जाऊँ?” 31तब उन्हों ने बकरा ज़बह करके यूसुफ़ का लिबास उस के ख़ून में डुबोया, 32फिर रंगदार लिबास इस ख़बर के साथ अपने बाप को भिजवा दिया कि “हमें यह मिला है। इसे ग़ौर से देखें। यह आप के बेटे का लिबास तो नहीं?”

33याक़ूब ने उसे पहचान लिया और कहा, “बेशक उसी का है। किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया है। यक़ीनन यूसुफ़ को फाड़ दिया गया है।” 34याक़ूब ने ग़म के मारे अपने कपड़े फाड़े और अपनी कमर से टाट ओढ़ कर बड़ी देर तक अपने बेटे के लिए मातम करता रहा। 35उस के तमाम बेटे-बेटियाँ उसे तसल्ली देने आए, लेकिन उस ने तसल्ली पाने से इन्कार किया और कहा, “मैं पाताल में उतरते हुए भी अपने बेटे के लिए मातम करूँगा।” इस हालत में वह अपने बेटे के लिए रोता रहा।

36इतने में मिदियानी मिस्र पहुँच कर यूसुफ़ को बेच चुके थे। मिस्र के बादशाह फ़िरऔन के एक आला अफ़्सर फ़ूतीफ़ार ने उसे ख़रीद लिया। फ़ूतीफ़ार बादशाह के मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर था।

यहूदाह और तमर

38 उन दिनों में यहूदाह अपने भाइयों को छोड़ कर एक आदमी के पास रहने लगा जिस का नाम हीरा था और जो अदुल्लाम शहर से था। 2वहाँ यहूदाह की मुलाक़ात एक कनआनी औरत से हुई जिस के बाप का नाम सूअ था। उस ने उस से शादी की। 3बेटा पैदा हुआ जिस का नाम यहूदाह ने एर रखा। 4एक और बेटा पैदा हुआ जिस का नाम बीवी ने ओनान रखा। 5उस के तीसरा बेटा भी पैदा हुआ। उस ने उस का नाम सेला रखा। यहूदाह क़ज़ीब में था जब वह पैदा हुआ।

6यहूदाह ने अपने बड़े बेटे एर की शादी एक लड़की से कराई जिस का नाम तमर था। 7रब के नज़दीक एर शरीर था, इस लिए उस ने उसे हलाक कर दिया। 8इस पर यहूदाह ने एर के छोटे भाई ओनान से कहा, “अपने बड़े भाई की बेवा के पास जाओ और उस से शादी करो ताकि तुम्हारे भाई की नस्ल क़ाइम रहे।” 9ओनान ने ऐसा किया, लेकिन वह जानता था कि जो भी बच्चे पैदा होंगे वह क़ानून के मुताबिक़ मेरे बड़े भाई के होंगे। इस लिए जब भी वह तमर से हमबिसतर होता तो नुत्फ़ा को ज़मीन पर गिरा देता, क्यूँकि वह नहीं चाहता था कि मेरी मारिफ़त मेरे भाई के बच्चे पैदा हों। 10यह बात रब को बुरी लगी, और उस ने उसे भी सज़ा-ए-मौत दी। 11तब यहूदाह ने अपनी बहू तमर से कहा, “अपने बाप के घर वापस चली जाओ और उस वक़्त तक बेवा रहो जब तक मेरा बेटा सेला बड़ा न हो जाए।” उस ने यह इस लिए कहा कि उसे डर था कि कहीं सेला भी अपने भाइयों की तरह मर न जाए चुनाँचे तमर अपने मैके चली गई।

12काफ़ी दिनों के बाद यहूदाह की बीवी जो सूअ की बेटी थी मर गई। मातम का वक़्त

गुज़र गया तो यहूदाह अपने अदुल्लामी दोस्त
हीरा के साथ तिम्नत गया जहाँ यहूदाह की
भेड़ों की पश्म कतरी जा रही थी। 13तमर को
बताया गया, “आप का सुसर अपनी भेड़ों
की पश्म कतरने के लिए तिम्नत जा रहा है।”
14यह सुन कर तमर ने बेवा के कपड़े उतार
कर आम कपड़े पहन लिए। फिर वह अपना
मुँह चादर से लपेट कर ऐनीम शहर के दरवाज़े
पर बैठ गई जो तिम्नत के रास्ते में था। तमर ने
यह हरकत इस लिए की कि यहूदाह का बेटा
सेला अब बालिग़ हो चुका था तो भी उस की
उस के साथ शादी नहीं की गई थी।
15जब यहूदाह वहाँ से गुज़रा तो उस ने उसे
देख कर सोचा कि यह कस्बी है, क्यूँकि उस
ने अपना मुँह छुपाया हुआ था। 16वह रास्ते से
हट कर उस के पास गया और कहा, “ज़रा
मुझे अपने हाँ आने दें।” (उस ने नहीं पहचाना
कि यह मेरी बहू है)। तमर ने कहा, “आप
मुझे क्या देंगे?” 17उस ने जवाब दिया, “मैं
आप को बकरी का बच्चा भेज दूँगा।” तमर ने
कहा, “ठीक है, लेकिन उसे भेजने तक मुझे
ज़मानत दें।” 18उस ने पूछा, “मैं आप को क्या
दूँ?” तमर ने कहा, “अपनी मुहर और उसे
गले में लटकाने की डोरी। वह लाठी भी दें जो
आप पकड़े हुए हैं।” चुनाँचे यहूदाह उसे यह
चीज़ें दे कर उस के साथ हमबिसतर हुआ।
नतीजे में तमर उम्मीद से हुई। 19फिर तमर उठ
कर अपने घर वापस चली गई। उस ने अपनी
चादर उतार कर दुबारा बेवा के कपड़े पहन
लिए।
20यहूदाह ने अपने दोस्त हीरा अदुल्लामी
के हाथ बकरी का बच्चा भेज दिया ताकि वह
चीज़ें वापस मिल जाएँ जो उस ने ज़मानत के
तौर पर दी थीं। लेकिन हीरा को पता न चला
कि औरत कहाँ है। 21उस ने ऐनीम के बाशिन्दों
से पूछा, “वह कस्बी कहाँ है जो यहाँ सड़क
पर बैठी थी?” उन्हों ने जवाब दिया, “यहाँ
ऐसी कोई कस्बी नहीं थी।”
22उस ने यहूदाह के पास वापस जा कर
कहा, “वह मुझे नहीं मिली बल्कि वहाँ के रहने
वालों ने कहा कि यहाँ कोई ऐसी कस्बी थी
नहीं।” 23यहूदाह ने कहा, “फिर वह ज़मानत
की चीज़ें अपने पास ही रखे। उसे छोड़ दो वर्ना
लोग हमारा मज़ाक़ उड़ाएँगे। हम ने तो पूरी
कोशिश की कि उसे बकरी का बच्चा मिल
जाए, लेकिन खोज लगाने के बावुजूद आप
को पता न चला कि वह कहाँ है।”
24तीन माह के बाद यहूदाह को इत्तिला दी
गई, “आप की बहू तमर ने ज़िना किया है,
और अब वह हामिला है।” यहूदाह ने हुक्म
दिया, “उसे बाहर ला कर जला दो।” 25तमर
को जलाने के लिए बाहर लाया गया तो उस
ने अपने सुसर को ख़बर भेज दी, “यह चीज़ें
देखें। यह उस आदमी की हैं जिस की मारिफ़त
मैं उम्मीद से हूँ। पता करें कि यह मुहर, उस की
डोरी और यह लाठी किस की हैं।” 26यहूदाह
ने उन्हें पहचान लिया। उस ने कहा, “मैं नहीं
बल्कि यह औरत हक़ पर है, क्यूँकि मैं ने उस
की अपने बेटे सेला से शादी नहीं कराई।”
लेकिन बाद में यहूदाह कभी भी तमर से
हमबिसतर न हुआ।
27जब जन्म देने का वक़्त आया तो मालूम
हुआ कि जुड़वाँ बच्चे हैं। 28एक बच्चे का हाथ
निकला तो दाई ने उसे पकड़ कर उस में सुर्ख़
धागा बांध दिया और कहा, “यह पहले पैदा
हुआ।” 29लेकिन उस ने अपना हाथ वापस
खैंच लिया, और उस का भाई पहले पैदा हुआ।
यह देख कर दाई बोल उठी, “तू किस तरह
फूट निकला है!” उस ने उस का नाम फ़ारस
यानी फूट रखा। 30फिर उस का भाई पैदा हुआ
जिस के हाथ में सुर्ख़ धागा बंधा हुआ था। उस
का नाम ज़ारह यानी चमक रखा गया।

यूसुफ़ और फ़ूतीफ़ार की बीवी

39 इस्माईलियों ने यूसुफ़ को मिस्र
ले जा कर बेच दिया था। मिस्र
के बादशाह के एक आला अफ़्सर बनाम

फ़ूतीफ़ार ने उसे ख़रीद लिया। वह शाही
मुहाफ़िज़ों का कप्तान था। 2रब यूसुफ़ के
साथ था। जो भी काम वह करता उस में
कामयाब रहता। वह अपने मिस्री मालिक के
घर में रहता था 3जिस ने देखा कि रब यूसुफ़
के साथ है और उसे हर काम में कामयाबी
देता है। 4चुनाँचे यूसुफ़ को मालिक की ख़ास
मेहरबानी हासिल हुई, और फ़ूतीफ़ार ने उसे
अपना ज़ाती नौकर बना लिया। उस ने उसे
अपने घराने के इन्तिज़ाम पर मुक़र्रर किया
और अपनी पूरी मिलकियत उस के सपुर्द कर
दी। 5जिस वक़्त से फ़ूतीफ़ार ने अपने घराने
का इन्तिज़ाम और पूरी मिलकियत यूसुफ़ के
सपुर्द की उस वक़्त से रब ने फ़ूतीफ़ार को
यूसुफ़ के सबब से बरकत दी। उस की बरकत
फ़ूतीफ़ार की हर चीज़ पर थी, ख़्वाह घर में
थी या खेत में। 6फ़ूतीफ़ार ने अपनी हर चीज़
यूसुफ़ के हाथ में छोड़ दी। और चूँकि यूसुफ़
सब कुछ अच्छी तरह चलाता था इस लिए
फ़ूतीफ़ार को खाना खाने के सिवा किसी भी
मुआमले की फ़िक्र नहीं थी।

यूसुफ़ निहायत ख़ूबसूरत आदमी था।
7कुछ देर के बाद उस के मालिक की बीवी की
आँख उस पर लगी। उस ने उस से कहा, "मेरे
साथ हमबिसतर हो!" 8यूसुफ़ इन्कार करके
कहने लगा, "मेरे मालिक को मेरे सबब से
किसी मुआमले की फ़िक्र नहीं है। उन्हों ने सब
कुछ मेरे सपुर्द कर दिया है। 9घर के इन्तिज़ाम
पर उन का इख़तियार मेरे इख़तियार से ज़्यादा
नहीं है। आप के सिवा उन्हों ने कोई भी चीज़
मुझ से बाज़ नहीं रखी। तो फिर मैं किस
तरह इतना ग़लत काम करूँ? मैं किस तरह
अल्लाह का गुनाह करूँ?"

10मालिक की बीवी रोज़-ब-रोज़ यूसुफ़ के
पीछे पड़ी रही कि मेरे साथ हमबिसतर हो।
लेकिन वह हमेशा इन्कार करता रहा।

11एक दिन वह काम करने के लिए घर
में गया। घर में और कोई नौकर नहीं था।
12फ़ूतीफ़ार की बीवी ने यूसुफ़ का लिबास
पकड़ कर कहा, "मेरे साथ हमबिसतर हो!"
यूसुफ़ भाग कर बाहर चला गया लेकिन उस
का लिबास पीछे औरत के हाथ में ही रह गया।
13जब मालिक की बीवी ने देखा कि वह अपना
लिबास छोड़ कर भाग गया है 14तो उस ने घर
के नौकरों को बुला कर कहा, "यह देखो! मेरे
मालिक इस इब्रानी को हमारे पास ले आए हैं
ताकि वह हमें ज़लील करे। वह मेरी इस्मतदरी
करने के लिए मेरे कमरे में आ गया, लेकिन मैं
ऊँची आवाज़ से चीख़ने लगी। 15जब मैं मदद
के लिए ऊँची आवाज़ से चीख़ने लगी तो वह
अपना लिबास छोड़ कर भाग गया।" 16उस ने
मालिक के आने तक यूसुफ़ का लिबास अपने
पास रखा। 17जब वह घर वापस आया तो उस
ने उसे यही कहानी सुनाई, "यह इब्रानी ग़ुलाम
जो आप ले आए हैं मेरी तज़लील के लिए मेरे
पास आया। 18लेकिन जब मैं मदद के लिए
चीख़ने लगी तो वह अपना लिबास छोड़ कर
भाग गया।"

यूसुफ़ क़ैदख़ाने में

19यह सुन कर फ़ूतीफ़ार बड़े ग़ुस्से में आ
गया। 20उस ने यूसुफ़ को गिरिफ़्तार करके उस
जेल में डाल दिया जहाँ बादशाह के क़ैदी रखे
जाते थे। वहीं वह रहा। 21लेकिन रब यूसुफ़ के
साथ था। उस ने उस पर मेहरबानी की और
उसे क़ैदख़ाने के दारोग़ा की नज़र में मक़्बूल
किया। 22यूसुफ़ यहाँ तक मक़्बूल हुआ कि
दारोग़ा ने तमाम क़ैदियों को उस के सपुर्द करके
उसे पूरा इन्तिज़ाम चलाने की ज़िम्मादारी दी।
23दारोग़ा को किसी भी मुआमले की जिसे उस
ने यूसुफ़ के सपुर्द किया था फ़िक्र न रही,
क्यूँकि रब यूसुफ़ के साथ था और उसे हर
काम में कामयाबी बख़्शी।

क़ैदियों के ख़्वाब

40 कुछ देर के बाद यूँ हुआ कि मिस्र
के बादशाह के सरदार साक़ी और
बेकरी के इंचार्ज ने अपने मालिक का गुनाह

किया। 2फ़िरऔन को दोनों अफ़सरों पर ग़ुस्सा
आ गया। 3उस ने उन्हें उस क़ैदख़ाने में डाल
दिया जो शाही मुहाफ़िज़ों के कप्तान के सपुर्द
था और जिस में यूसुफ़ था। 4मुहाफ़िज़ों के
कप्तान ने उन्हें यूसुफ़ के हवाले किया ताकि
वह उन की ख़िदमत करे। वहाँ वह काफ़ी देर
तक रहे।

5एक रात बादशाह के सरदार साक़ी और
बेकरी के इंचार्ज ने ख़्वाब देखा। दोनों का
ख़्वाब फ़र्क़ फ़र्क़ था, और उन का मतलब भी
फ़र्क़ फ़र्क़ था। 6जब यूसुफ़ सुब्ह के वक़्त उन
के पास आया तो वह दबे हुए नज़र आए। 7उस
ने उन से पूछा, "आज आप क्यूँ इतने परेशान
हैं?" 8उन्हों ने जवाब दिया, "हम दोनों ने
ख़्वाब देखा है, और कोई नहीं जो हमें उन
का मतलब बताए।" यूसुफ़ ने कहा, "ख़्वाबों
की ताबीर तो अल्लाह का काम है। ज़रा मुझे
अपने ख़्वाब तो सुनाएँ।"

9सरदार साक़ी ने शुरू किया, "मैं ने ख़्वाब
में अपने सामने अंगूर की बेल देखी। 10उस
की तीन शाख़ें थीं। उस के पत्ते लगे, कोंपलें
फूट निकलीं और अंगूर पक गए। 11मेरे हाथ
में बादशाह का प्याला था, और मैं ने अंगूरों को
तोड़ कर यूँ भींच दिया कि उन का रस बादशाह
के प्याले में आ गया। फिर मैं ने प्याला बादशाह
को पेश किया।"

12यूसुफ़ ने कहा, "तीन शाख़ों से मुराद तीन
दिन हैं। 13तीन दिन के बाद फ़िरऔन आप को
बहाल कर लेगा। आप को पहली ज़िम्मादारी
वापस मिल जाएगी। आप पहले की तरह
सरदार साक़ी की हैसियत से बादशाह का
प्याला सँभालेंगे। 14लेकिन जब आप बहाल
हो जाएँ तो मेरा ख़याल करें। मेहरबानी करके
बादशाह के सामने मेरा ज़िक्र करें ताकि मैं
यहाँ से रिहा हो जाऊँ। 15क्यूँकि मुझे इब्रानियों
के मुल्क से अग़वा करके यहाँ लाया गया है,
और यहाँ भी मुझ से कोई ऐसी ग़लती नहीं हुई
कि मुझे इस गढ़े में फैंका जाता।"

16जब शाही बेकरी के इंचार्ज ने देखा कि
सरदार साक़ी के ख़्वाब का अच्छा मतलब
निकला तो उस ने यूसुफ़ से कहा, "मेरा ख़्वाब
भी सुनें। मैं ने सर पर तीन टोकरियाँ उठा रखी
थीं जो बेकरी की चीज़ों से भरी हुई थीं। 17सब
से ऊपर वाली टोकरी में वह तमाम चीज़ें थीं
जो बादशाह की मेज़ के लिए बनाई जाती हैं।
लेकिन परिन्दे आ कर उन्हें खा रहे थे।"

18यूसुफ़ ने कहा, "तीन टोकरियों से मुराद
तीन दिन हैं। 19तीन दिन के बाद ही फ़िरऔन
आप को क़ैदख़ाने से निकाल कर दरख़्त से
लटका देगा। परिन्दे आप की लाश को खा
जाएंगे।"

20तीन दिन के बाद बादशाह की सालगिरह
थी। उस ने अपने तमाम अफ़सरों की
ज़ियाफ़त की। इस मौक़े पर उस ने सरदार
साक़ी और बेकरी के इंचार्ज को जेल से
निकाल कर अपने हुज़ूर लाने का हुक्म दिया।
21सरदार साक़ी को पहले वाली ज़िम्मादारी
सौंप दी गई, 22लेकिन बेकरी के इंचार्ज को
सज़ा-ए-मौत दे कर दरख़्त से लटका दिया
गया। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा यूसुफ़ ने
कहा था।

23लेकिन सरदार साक़ी ने यूसुफ़ का ख़याल
न किया बल्कि उसे भूल ही गया।

बादशाह के ख़्वाब

41 दो साल गुज़र गए कि एक रात
बादशाह ने ख़्वाब देखा। वह
दरया-ए-नील के किनारे खड़ा था। 2अचानक
दरया में से सात ख़ूबसूरत और मोटी गाएँ
निकल कर सरकंडों में चरने लगीं। 3उन के
बाद सात और गाएँ निकल आईं। लेकिन वह
बदसूरत और दुबली-पतली थीं। वह दरया
के किनारे दूसरी गायों के पास खड़ी हो कर
4पहली सात ख़ूबसूरत और मोटी मोटी गायों
को खा गईं। इस के बाद मिस्र का बादशाह
जाग उठा। 5फिर वह दुबारा सो गया। इस दफ़ा
उस ने एक और ख़्वाब देखा। अनाज के एक

पौदे पर सात मोटी मोटी और अच्छी अच्छी
बालें लगी थीं। 6फिर सात और बालें फूट
निकलीं जो दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा
से झुलसी हुई थीं। 7अनाज की सात दुबली-
पतली बालों ने सात मोटी और ख़ूबसूरत बालों
को निगल लिया। फिर फ़िरऔन जाग उठा तो
मालूम हुआ कि मैं ने ख़्वाब ही देखा है।

8सुब्ह हुई तो वह परेशान था, इस लिए
उस ने मिस्र के तमाम जादूगरों और आलिमों
को बुलाया। उस ने उन्हें अपने ख़्वाब सुनाए,
लेकिन कोई भी उन की ताबीर न कर सका।

9फिर सरदार साक़ी ने फ़िरऔन से कहा,
"आज मुझे अपनी ख़ताएँ याद आती हैं।
10एक दिन फ़िरऔन अपने ख़ादिमों से नाराज़
हुए। हुज़ूर ने मुझे और बेकरी के इंचार्ज
को क़ैदख़ाने में डलवा दिया जिस पर शाही
मुहाफ़िज़ों का कप्तान मुक़र्रर था। 11एक ही
रात में हम दोनों ने मुख़्तलिफ़ ख़्वाब देखे
जिन का मतलब फ़र्क़ फ़र्क़ था। 12वहाँ जेल
में एक इब्रानी नौजवान था। वह मुहाफ़िज़ों
के कप्तान का ग़ुलाम था। हम ने उसे अपने
ख़्वाब सुनाए तो उस ने हमें उन का मतलब
बता दिया। 13और जो कुछ भी उस ने
बताया सब कुछ वैसा ही हुआ। मुझे अपनी
ज़िम्मादारी वापस मिल गई जबकि बेकरी
के इंचार्ज को सज़ा-ए-मौत दे कर दरख़्त से
लटका दिया गया।"

14यह सुन कर फ़िरऔन ने यूसुफ़ को
बुलाया, और उसे जल्दी से क़ैदख़ाने से लाया
गया। उस ने शेव करवा कर अपने कपड़े बदले
और सीधे बादशाह के हुज़ूर पहुँचा।

15बादशाह ने कहा, "मैं ने ख़्वाब देखा है,
और यहाँ कोई नहीं जो उस की ताबीर कर
सके। लेकिन सुना है कि तू ख़्वाब को सुन कर
उस का मतलब बता सकता है।" 16यूसुफ़ ने
जवाब दिया, "यह मेरे इख़तियार में नहीं है।
लेकिन अल्लाह ही बादशाह को सलामती का
पैग़ाम देगा।"

17फ़िरऔन ने यूसुफ़ को अपने ख़्वाब
सुनाए, "मैं ख़्वाब में दरया-ए-नील के किनारे
खड़ा था। 18अचानक दरया में से सात मोटी
मोटी और ख़ूबसूरत गाएँ निकल कर सरकंडों
में चरने लगीं। 19इस के बाद सात और गाएँ
निकलीं। वह निहायत बदसूरत और दुबली-
पतली थीं। मैं ने इतनी बदसूरत गाएँ मिस्र में
कहीं भी नहीं देखीं। 20दुबली और बदसूरत
गाएँ पहली मोटी गायों को खा गईं। 21और
निगलने के बाद भी मालूम नहीं होता था कि
उन्हों ने मोटी गायों को खाया है। वह पहले
की तरह बदसूरत ही थीं। इस के बाद मैं जाग
उठा। 22फिर मैं ने एक और ख़्वाब देखा। सात
मोटी और अच्छी बालें एक ही पौदे पर लगी
थीं। 23इस के बाद सात और बालें निकलीं
जो ख़राब, दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा
से झुलसी हुई थीं। 24सात दुबली-पतली बालें
सात अच्छी बालों को निगल गईं। मैं ने यह
सब कुछ अपने जादूगरों को बताया, लेकिन
वह इस की ताबीर न कर सके।"

25यूसुफ़ ने बादशाह से कहा, "दोनों ख़्वाबों
का एक ही मतलब है। इन से अल्लाह ने
हुज़ूर पर ज़ाहिर किया है कि वह क्या कुछ
करने को है। 26सात अच्छी गायों से मुराद
सात साल हैं। इसी तरह सात अच्छी बालों
से मुराद भी सात साल हैं। दोनों ख़्वाब एक
ही बात बयान करते हैं। 27जो सात दुबली
और बदसूरत गाएँ बाद में निकलें उन से मुराद
सात और साल हैं। यही सात दुबली-पतली
और मशरिक़ी हवा से झुलसी हुई बालों का
मतलब भी है। वह एक ही बात बयान करती
हैं कि सात साल तक काल पड़ेगा। 28यह वही
बात है जो मैं ने हुज़ूर से कही कि अल्लाह ने
हुज़ूर पर ज़ाहिर किया है कि वह क्या करेगा।
29सात साल आएँगे जिन के दौरान मिस्र के
पूरे मुल्क में कस्रत से पैदावार होगी। 30उस
के बाद सात साल काल पड़ेगा। काल इतना
शदीद होगा कि लोग भूल जाएंगे कि पहले
इतनी कस्रत थी। क्यूँकि काल मुल्क को तबाह

कर देगा। 31काल की शिद्दत के बाइस अच्छे
सालों की कस्रत याद ही नहीं रहेगी। 32हुज़ूर
को इस लिए एक ही पैग़ाम दो मुख़्तलिफ़
ख़्वाबों की सूरत में मिला कि अल्लाह इस
का पक्का इरादा रखता है, और वह जल्द ही
इस पर अमल करेगा। 33अब बादशाह किसी
समझदार और दानिशमन्द आदमी को मुल्क-
ए-मिस्र का इन्तिज़ाम सौंपें। 34इस के इलावा
वह ऐसे आदमी मुक़र्रर करें जो सात अच्छे
सालों के दौरान हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा
लें। 35वह उन अच्छे सालों के दौरान ख़ुराक
जमा करें। बादशाह उन्हें इख़तियार दें कि वह
शहरों में गोदाम बना कर अनाज को महफ़ूज़
कर लें। 36यह ख़ुराक काल के उन सात सालों
के लिए मख़्सूस की जाए जो मिस्र में आने
वाले हैं। यूँ मुल्क तबाह नहीं होगा।"

यूसुफ़ को मिस्र पर हाकिम मुक़र्रर किया जाता है

37यह मन्सूबा बादशाह और उस के
अफ़्सरान को अच्छा लगा। 38उस ने उन से
कहा, "हमें इस काम के लिए यूसुफ़ से ज़्यादा
लाइक़ आदमी नहीं मिलेगा। उस में अल्लाह
की रूह है।" 39बादशाह ने यूसुफ़ से कहा,
"अल्लाह ने यह सब कुछ तुझ पर ज़ाहिर
किया है, इस लिए कोई भी तुझ से ज़्यादा
समझदार और दानिशमन्द नहीं है। 40मैं तुझे
अपने महल पर मुक़र्रर करता हूँ। मेरी तमाम
रिआया तेरे ताबे रहेगी। तेरा इख़तियार सिर्फ़
मेरे इख़तियार से कम होगा। 41अब मैं तुझे पूरे
मुल्क-ए-मिस्र पर हाकिम मुक़र्रर करता हूँ।"

42बादशाह ने अपनी उंगली से वह अंगूठी
उतारी जिस से मुहर लगाता था और उसे
यूसुफ़ की उंगली में पहना दिया। उस ने उसे
कतान का बारीक लिबास पहनाया और उस
के गले में सोने का गलूबन्द पहना दिया।
43फिर उस ने उसे अपने दूसरे रथ में सवार
किया और लोग उस के आगे आगे पुकारते
रहे, "घुटने टेको! घुटने टेको!"

यूँ यूसुफ़ पूरे मिस्र का हाकिम बना।
44फ़िरऔन ने उस से कहा, "मैं तो बादशाह हूँ,
लेकिन तेरी इजाज़त के बग़ैर पूरे मुल्क में कोई
भी अपना हाथ या पाँओ नहीं हिलाएगा।"
45-46उस ने यूसुफ़ का मिस्री नाम साफ़नत-
फ़ानेह रखा और ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा
की बेटी आसनत के साथ उस की शादी
कराई।

यूसुफ़ 30 साल का था जब वह मिस्र के
बादशाह फ़िरऔन की ख़िदमत करने लगा।
उस ने फ़िरऔन के हुज़ूर से निकल कर मिस्र
का दौरा किया।

47सात अच्छे सालों के दौरान मुल्क में
निहायत अच्छी फ़सलें उगीं। 48यूसुफ़ ने
तमाम ख़ुराक जमा करके शहरों में महफ़ूज़
कर ली। हर शहर में उस ने इर्दगिर्द के खेतों
की पैदावार महफ़ूज़ रखी। 49जमाशुदा अनाज
समुन्दर की रेत की मानिन्द बकस्रत था। इतना
अनाज था कि यूसुफ़ ने आख़िरकार उस की
पैमाइश करना छोड़ दिया।

50काल से पहले यूसुफ़ और आसनत के दो
बेटे पैदा हुए। 51उस ने पहले का नाम मनस्सी
यानी 'जो भुला देता है' रखा। क्यूँकि उस ने
कहा, "अल्लाह ने मेरी मुसीबत और मेरे बाप
का घराना मेरी याददाश्त से निकाल दिया है।"
52दूसरे का नाम उस ने इफ़्राईम यानी 'दुगना
फलदार' रखा। क्यूँकि उस ने कहा, "अल्लाह
ने मुझे मेरी मुसीबत के मुल्क में फलने फूलने
दिया है।"

53सात अच्छे साल जिन में कस्रत की
फ़सलें उगीं गुज़र गए। 54फिर काल के सात
साल शुरू हुए जिस तरह यूसुफ़ ने कहा था।
तमाम दीगर ममालिक में भी काल पड़ गया,
लेकिन मिस्र में वाफ़िर ख़ुराक पाई जाती थी।
55जब काल ने तमाम मिस्र में ज़ोर पकड़ा
तो लोग चीख़ कर खाने के लिए बादशाह
से मिन्नत करने लगे। तब फ़िरऔन ने उन से
कहा, "यूसुफ़ के पास जाओ। जो कुछ वह
तुम्हें बताएगा वही करो।" 56जब काल पूरी

दुनिया में फैल गया तो यूसुफ़ ने अनाज के गोदाम खोल कर मिस्रियों को अनाज बेच दिया। क्यूँकि काल के बाइस मुल्क के हालात बहुत ख़राब हो गए थे। 57तमाम ममालिक से भी लोग अनाज ख़रीदने के लिए यूसुफ़ के पास आए, क्यूँकि पूरी दुनिया सख़्त काल की गिरिफ़्त में थी।

यूसुफ़ के भाई मिस्र में

42 जब याक़ूब को मालूम हुआ कि मिस्र में अनाज है तो उस ने अपने बेटों से कहा, "तुम क्यूँ एक दूसरे का मुँह तकते हो? 2सुना है कि मिस्र में अनाज है। वहाँ जा कर हमारे लिए कुछ ख़रीद लाओ ताकि हम भूके न मरें।"

3तब यूसुफ़ के दस भाई अनाज ख़रीदने के लिए मिस्र गए। 4लेकिन याक़ूब ने यूसुफ़ के सगे भाई बिनयमीन को साथ न भेजा, क्यूँकि उस ने कहा, "ऐसा न हो कि उसे जानी नुक़्सान पहुँचे।" 5यूँ याक़ूब के बेटे बहुत सारे और लोगों के साथ मिस्र गए, क्यूँकि मुल्क-ए-कनआन भी काल की गिरिफ़्त में था।

6यूसुफ़ मिस्र के हाकिम की हैसियत से लोगों को अनाज बेचता था, इस लिए उस के भाई आ कर उस के सामने मुँह के बल झुक गए। 7जब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को देखा तो उस ने उन्हें पहचान लिया लेकिन ऐसा किया जैसा उन से नावाक़िफ़ हो और सख़्ती से उन से बात की, "तुम कहाँ से आए हो?" उन्हों ने जवाब दिया, "हम मुल्क-ए-कनआन से अनाज ख़रीदने के लिए आए हैं।" 8गो यूसुफ़ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, लेकिन उन्हों ने उसे न पहचाना। 9उसे वह ख़्वाब याद आए जो उस ने उन के बारे में देखे थे। उस ने कहा, "तुम जासूस हो। तुम यह देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर ग़ैरमहफ़ूज़ है।"

10उन्हों ने कहा, "जनाब, हरगिज़ नहीं। आप के ग़ुलाम ग़ल्ला ख़रीदने आए हैं। 11हम सब एक ही मर्द के बेटे हैं। आप के ख़ादिम शरीफ़ लोग हैं, जासूस नहीं हैं।" 12लेकिन यूसुफ़ ने इसरार किया, "नहीं, तुम देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर ग़ैरमहफ़ूज़ है।"

13उन्हों ने अर्ज़ की, "आप के ख़ादिम कुल बारह भाई हैं। हम एक ही आदमी के बेटे हैं जो कनआन में रहता है। सब से छोटा भाई इस वक़्त हमारे बाप के पास है जबकि एक मर गया है।" 14लेकिन यूसुफ़ ने अपना इल्ज़ाम दोहराया, "ऐसा ही है जैसा मैं ने कहा है कि तुम जासूस हो। 15मैं तुम्हारी बातें जाँच लूँगा। फ़िरऔन की हयात की क़सम, पहले तुम्हारा सब से छोटा भाई आए, वर्ना तुम इस जगह से कभी नहीं जा सकोगे। 16एक भाई को उसे लाने के लिए भेज दो। बाक़ी सब यहाँ गिरिफ़्तार रहेंगे। फिर पता चलेगा कि तुम्हारी बातें सच हैं कि नहीं। अगर नहीं तो फ़िरऔन की हयात की क़सम, इस का मतलब यह होगा कि तुम जासूस हो।"

17यह कह कर यूसुफ़ ने उन्हें तीन दिन के लिए क़ैदख़ाने में डाल दिया। 18तीसरे दिन उस ने उन से कहा, "मैं अल्लाह का ख़ौफ़ मानता हूँ, इस लिए तुम को एक शर्त पर जीता छोड़ूँगा। 19अगर तुम वाक़ई शरीफ़ लोग हो तो ऐसा करो कि तुम में से एक यहाँ क़ैदख़ाने में रहे जबकि बाक़ी सब अनाज ले कर अपने भूके घर वालों के पास वापस जाएँ। 20लेकिन लाज़िम है कि तुम अपने सब से छोटे भाई को मेरे पास ले आओ। सिर्फ़ इस से तुम्हारी बातें सच साबित होंगी और तुम मौत से बच जाओगे।"

यूसुफ़ के भाई राज़ी हो गए। 21वह आपस में कहने लगे, "बेशक यह हमारे अपने भाई पर ज़ुल्म की सज़ा है। जब वह इल्तिजा कर रहा था कि मुझ पर रहम करें तो हम ने उस की बड़ी मुसीबत देख कर भी उस की न सुनी। इस लिए यह मुसीबत हम पर आ गई है।" 22और रूबिन ने कहा, "क्या मैं ने नहीं कहा था कि

लड़के पर ज़ुल्म मत करो, लेकिन तुम ने मेरी
एक न मानी। अब उस की मौत का हिसाब-
किताब किया जा रहा है।"
23उन्हें मालूम नहीं था कि यूसुफ़ हमारी
बातें समझ सकता है, क्यूँकि वह मुतर्जिम की
मारिफ़त उन से बात करता था। 24यह बातें
सुन कर वह उन्हें छोड़ कर रोने लगा। फिर
वह सँभल कर वापस आया। उस ने शमाऊन
को चुन कर उसे उन के सामने ही बांध लिया।

यूसुफ़ के भाई कनआन वापस जाते हैं

25यूसुफ़ ने हुक्म दिया कि मुलाज़िम उन की
बोरियाँ अनाज से भर कर हर एक भाई के पैसे
उस की बोरी में वापस रख दें और उन्हें सफ़र
के लिए खाना भी दें। उन्हों ने ऐसा ही किया।
26फिर यूसुफ़ के भाई अपने गधों पर अनाज
लाद कर रवाना हो गए।
27जब वह रात के लिए किसी जगह पर
ठहरे तो एक भाई ने अपने गधे के लिए चारा
निकालने की ग़रज़ से अपनी बोरी खोली तो
देखा कि बोरी के मुँह में उस के पैसे पड़े
हैं। 28उस ने अपने भाइयों से कहा, "मेरे पैसे
वापस कर दिए गए हैं! वह मेरी बोरी में हैं।"
यह देख कर उन के होश उड़ गए। काँपते हुए
वह एक दूसरे को देखने और कहने लगे, "यह
क्या है जो अल्लाह ने हमारे साथ किया है?"
29मुल्क-ए-कनआन में अपने बाप के पास
पहुँच कर उन्हों ने उसे सब कुछ सुनाया जो उन
के साथ हुआ था। उन्हों ने कहा, 30"उस मुल्क
के मालिक ने बड़ी सख़्ती से हमारे साथ बात
की। उस ने हमें जासूस क़रार दिया। 31लेकिन
हम ने उस से कहा, 'हम जासूस नहीं बल्कि
शरीफ़ लोग हैं। 32हम बारह भाई हैं, एक ही
बाप के बेटे। एक तो मर गया जबकि सब से
छोटा भाई इस वक़्त कनआन में बाप के पास
है।' 33फिर उस मुल्क के मालिक ने हम से
कहा, 'इस से मुझे पता चलेगा कि तुम शरीफ़
लोग हो कि एक भाई को मेरे पास छोड़ दो
और अपने भूके घर वालों के लिए ख़ुराक ले
कर चले जाओ। 34लेकिन अपने सब से छोटे
भाई को मेरे पास ले आओ ताकि मुझे मालूम
हो जाए कि तुम जासूस नहीं बल्कि शरीफ़
लोग हो। फिर मैं तुम को तुम्हारा भाई वापस
कर दूँगा और तुम इस मुल्क में आज़ादी से
तिजारत कर सकोगे'।"
35उन्हों ने अपनी बोरियों से अनाज निकाल
दिया तो देखा कि हर एक की बोरी में उस
के पैसों की थैली रखी हुई है। यह पैसे देख
कर वह ख़ुद और उन का बाप डर गए। 36उन
के बाप ने उन से कहा, "तुम ने मुझे मेरे
बच्चों से महरूम कर दिया है। यूसुफ़ नहीं रहा,
शमाऊन भी नहीं रहा और अब तुम बिनयमीन
को भी मुझ से छीनना चाहते हो। सब कुछ मेरे
ख़िलाफ़ है।" 37फिर रूबिन बोल उठा, "अगर
मैं उसे सलामती से आप के पास वापस न
पहुँचाऊँ तो आप मेरे दो बेटों को सज़ा-ए-मौत
दे सकते हैं। उसे मेरे सपुर्द करें तो मैं उसे वापस
ले आऊँगा।" 38लेकिन याक़ूब ने कहा, "मेरा
बेटा तुम्हारे साथ जाने का नहीं। क्यूँकि उस
का भाई मर गया है और वह अकेला ही रह
गया है। अगर उस को रास्ते में जानी नुक़्सान
पहुँचे तो तुम मुझ बूढ़े को ग़म के मारे पाताल
में पहुँचाओगे।"

बिनयमीन के हमराह दूसरा सफ़र

43 काल ने ज़ोर पकड़ा। 2जब मिस्र
से लाया गया अनाज ख़त्म हो गया
तो याक़ूब ने कहा, "अब वापस जा कर हमारे
लिए कुछ और ग़ल्ला ख़रीद लाओ।" 3लेकिन
यहूदाह ने कहा, "उस मर्द ने सख़्ती से कहा
था, 'तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकते
हो कि तुम्हारा भाई साथ हो।' 4अगर आप
हमारे भाई को साथ भेजें तो फिर हम जा
कर आप के लिए ग़ल्ला ख़रीदेंगे 5वर्ना नहीं।
क्यूँकि उस आदमी ने कहा था कि हम सिर्फ़
इस सूरत में उस के पास आ सकते हैं कि
हमारा भाई साथ हो।" 6याक़ूब ने कहा, "तुम
ने उसे क्यूँ बताया कि हमारा एक और भाई

भी है? इस से तुम ने मुझे बड़ी मुसीबत में
डाल दिया है।" 7उन्हों ने जवाब दिया, "वह
आदमी हमारे और हमारे ख़ानदान के बारे में
पूछता रहा, 'क्या तुम्हारा बाप अब तक ज़िन्दा
है? क्या तुम्हारा कोई और भाई है?' फिर हमें
जवाब देना पड़ा। हमें क्या पता था कि वह हमें
अपने भाई को साथ लाने को कहेगा।" 8फिर
यहूदाह ने बाप से कहा, "लड़के को मेरे साथ
भेज दें तो हम अभी रवाना हो जाएंगे। वर्ना
आप, हमारे बच्चे बल्कि हम सब भूकों मर
जाएंगे। 9मैं ख़ुद उस का ज़ामिन हूँगा। आप
मुझे उस की जान का ज़िम्मादार ठहरा सकते
हैं। अगर मैं उसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ
तो फिर मैं ज़िन्दगी के आख़िर तक क़ुसूरवार
ठहरूँगा। 10जितनी देर तक हम झिजकते रहे
हैं उतनी देर में तो हम दो दफ़ा मिस्र जा कर
वापस आ सकते थे।"

11तब उन के बाप इस्राईल ने कहा, "अगर
और कोई सूरत नहीं तो इस मुल्क की
बेहतरीन पैदावार में से कुछ तोह्फ़े के तौर
पर ले कर उस आदमी को दे दो यानी
कुछ बल्सान, शहद, लादन, मुर, पिस्ता और
बादाम। 12अपने साथ दुगनी रक़म ले कर
जाओ, क्यूँकि तुम्हें वह पैसे वापस करने हैं जो
तुम्हारी बोरियों में रखे गए थे। शायद किसी
से ग़लती हुई हो। 13अपने भाई को ले कर
सीधे वापस पहुँचना। 14अल्लाह क़ादिर-ए-
मुतलक़ करे कि यह आदमी तुम पर रहम
करके बिनयमीन और तुम्हारे दूसरे भाई को
वापस भेजे। जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, अगर
मुझे अपने बच्चों से महरूम होना है तो ऐसा
ही हो।"

15चुनाँचे वह तोह्फ़े, दुगनी रक़म और
बिनयमीन को साथ ले कर चल पड़े। मिस्र
पहुँच कर वह यूसुफ़ के सामने हाज़िर हुए।
16जब यूसुफ़ ने बिनयमीन को उन के साथ
देखा तो उस ने अपने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम
से कहा, "इन आदमियों को मेरे घर ले जाओ
ताकि वह दोपहर का खाना मेरे साथ खाएँ।
जानवर को ज़बह करके खाना तय्यार करो।"

17मुलाज़िम ने ऐसा ही किया और भाइयों
को यूसुफ़ के घर ले गया। 18जब उन्हें उस
के घर पहुँचाया जा रहा था तो वह डर कर
सोचने लगे, "हमें उन पैसों के सबब से यहाँ
लाया जा रहा है जो पहली दफ़ा हमारी बोरियों
में वापस किए गए थे। वह हम पर अचानक
हम्ला करके हमारे गधे छीन लेंगे और हमें
ग़ुलाम बना लेंगे।"

19इस लिए घर के दरवाज़े पर पहुँच कर
उन्हों ने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा,
20"जनाब-ए-आली, हमारी बात सुन लीजिए।
इस से पहले हम अनाज ख़रीदने के लिए यहाँ
आए थे। 21लेकिन जब हम यहाँ से रवाना हो
कर रास्ते में रात के लिए ठहरे तो हम ने अपनी
बोरियाँ खोल कर देखा कि हर बोरी के मुँह में
हमारे पैसों की पूरी रक़म पड़ी है। हम यह पैसे
वापस ले आए हैं। 22नीज़, हम मज़ीद ख़ुराक
ख़रीदने के लिए और पैसे ले आए हैं। ख़ुदा
जाने किस ने हमारे यह पैसे हमारी बोरियों में
रख दिए।"

23मुलाज़िम ने कहा, "फ़िक्र न करें। मत
डरें। आप के और आप के बाप के ख़ुदा ने
आप के लिए आप की बोरियों में यह ख़ज़ाना
रखा होगा। बहरहाल मुझे आप के पैसे मिल
गए हैं।"

मुलाज़िम शमाऊन को उन के पास बाहर ले
आया। 24फिर उस ने भाइयों को यूसुफ़ के घर
में ले जा कर उन्हें पाँओ धोने के लिए पानी
और गधों को चारा दिया। 25उन्हों ने अपने
तोह्फ़े तय्यार रखे, क्यूँकि उन्हें बताया गया,
"यूसुफ़ दोपहर का खाना आप के साथ ही
खाएगा।"

26जब यूसुफ़ घर पहुँचा तो वह अपने तोह्फ़े
ले कर उस के सामने आए और मुँह के बल
झुक गए। 27उस ने उन से ख़ैरियत दरयाफ़्त
की और फिर कहा, "तुम ने अपने बूढ़े बाप
का ज़िक्र किया। क्या वह ठीक हैं? क्या वह

अब तक ज़िन्दा हैं?" 28उन्हों ने जवाब दिया, "जी, आप के ख़ादिम हमारे बाप अब तक ज़िन्दा हैं।" वह दुबारा मुँह के बल झुक गए।

29जब यूसुफ़ ने अपने सगे भाई बिनयमीन को देखा तो उस ने कहा, "क्या यह तुम्हारा सब से छोटा भाई है जिस का तुम ने ज़िक्र किया था? बेटा, अल्लाह की नज़र-ए-करम तुम पर हो।" 30यूसुफ़ अपने भाई को देख कर इतना मुतअस्सिर हुआ कि वह रोने को था, इस लिए वह जल्दी से वहाँ से निकल कर अपने सोने के कमरे में गया और रो पड़ा। 31फिर वह अपना मुँह धो कर वापस आया। अपने आप पर क़ाबू पा कर उस ने हुक्म दिया कि नौकर खाना ले आएँ।

32नौकरों ने यूसुफ़ के लिए खाने का अलग इन्तिज़ाम किया और भाइयों के लिए अलग। मिस्रियों के लिए भी खाने का अलग इन्तिज़ाम था, क्यूँकि इब्रानियों के साथ खाना खाना उन की नज़र में क़ाबिल-ए-नफ़रत था। 33भाइयों को उन की उम्र की तरतीब के मुताबिक़ यूसुफ़ के सामने बिठाया गया। यह देख कर भाई निहायत हैरान हुए। 34नौकरों ने उन्हें यूसुफ़ की मेज़ पर से खाना ले कर खिलाया। लेकिन बिनयमीन को दूसरों की निस्बत पाँच गुना ज़्यादा मिला। यूँ उन्हों ने यूसुफ़ के साथ जी भर कर खाया और पिया।

गुमशुदा प्याला

44 यूसुफ़ ने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम को हुक्म दिया, "उन मर्दों की बोरियाँ ख़ुराक से इतनी भर देना जितनी वह उठा कर ले जा सकें। हर एक के पैसे उस की अपनी बोरी के मुँह में रख देना। 2सब से छोटे भाई की बोरी में न सिर्फ़ पैसे बल्कि मेरे चाँदी के प्याले को भी रख देना।" मुलाज़िम ने ऐसा ही किया।

3अगली सुब्ह जब पौ फटने लगी तो भाइयों को उन के गधों समेत रुख़्सत कर दिया गया। 4वह अभी शहर से निकल कर दूर नहीं गए थे कि यूसुफ़ ने अपने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा, "जल्दी करो। उन आदमियों का ताक़्क़ुब करो। उन के पास पहुँच कर यह पूछना, 'आप ने हमारी भलाई के जवाब में ग़लत काम क्यूँ किया है? 5आप ने मेरे मालिक का चाँदी का प्याला क्यूँ चुराया है? उस से वह न सिर्फ़ पीते हैं बल्कि उसे ग़ैबदानी के लिए भी इस्तेमाल करते हैं। आप एक निहायत संगीन जुर्म के मुर्तकिब हुए हैं'।"

6जब मुलाज़िम भाइयों के पास पहुँचा तो उस ने उन से यही बातें कीं। 7जवाब में उन्हों ने कहा, "हमारे मालिक ऐसी बातें क्यूँ करते हैं? कभी नहीं हो सकता कि आप के ख़ादिम ऐसा करें। 8आप तो जानते हैं कि हम मुल्क-ए-कनआन से वह पैसे वापस ले आए जो हमारी बोरियों में थे। तो फिर हम क्यूँ आप के मालिक के घर से चाँदी या सोना चुराएँगे? 9अगर वह आप के ख़ादिमों में से किसी के पास मिल जाए तो उसे मार डाला जाए और बाक़ी सब आप के ग़ुलाम बनें।"

10मुलाज़िम ने कहा, "ठीक है ऐसा ही होगा। लेकिन सिर्फ़ वही मेरा ग़ुलाम बनेगा जिस ने प्याला चुराया है। बाक़ी सब आज़ाद हैं।" 11उन्हों ने जल्दी से अपनी बोरियाँ उतार कर ज़मीन पर रख दीं। हर एक ने अपनी बोरी खोल दी। 12मुलाज़िम बोरियों की तलाशी लेने लगा। वह बड़े भाई से शुरू करके आख़िरकार सब से छोटे भाई तक पहुँच गया। और वहाँ बिनयमीन की बोरी में से प्याला निकला। 13भाइयों ने यह देख कर परेशानी में अपने लिबास फाड़ लिए। वह अपने गधों को दुबारा लाद कर शहर वापस आ गए।

14जब यहूदाह और उस के भाई यूसुफ़ के घर पहुँचे तो वह अभी वहीं था। वह उस के सामने मुँह के बल गिर गए। 15यूसुफ़ ने कहा, "यह तुम ने क्या किया है? क्या तुम नहीं जानते कि मुझ जैसा आदमी ग़ैब का इल्म रखता है?" 16यहूदाह ने कहा, "जनाब-ए-आली, हम क्या कहें? अब हम अपने दिफ़ा

में क्या कहें? अल्लाह ही ने हमें क़ुसूरवार ठहराया है। अब हम सब आप के ग़ुलाम हैं, न सिर्फ़ वह जिस के पास से प्याला मिल गया।" 17यूसुफ़ ने कहा, "अल्लाह न करे कि मैं ऐसा करूँ, बल्कि सिर्फ़ वही मेरा ग़ुलाम होगा जिस के पास प्याला था। बाक़ी सब सलामती से अपने बाप के पास वापस चले जाएँ।"

यहूदाह बिनयमीन की सिफ़ारिश करता है

18लेकिन यहूदाह ने यूसुफ़ के क़रीब आ कर कहा, "मेरे मालिक, मेहरबानी करके अपने बन्दे को एक बात करने की इजाज़त दें। मुझ पर ग़ुस्सा न करें अगरचे आप मिस्र के बादशाह जैसे हैं। 19जनाब-ए-आली, आप ने हम से पूछा, 'क्या तुम्हारा बाप या कोई और भाई है?' 20हम ने जवाब दिया, 'हमारा बाप है। वह बूढ़ा है। हमारा एक छोटा भाई भी है जो उस वक़्त पैदा हुआ जब हमारा बाप उम्ररसीदा था। उस लड़के का भाई मर चुका है। उस की माँ के सिर्फ़ यह दो बेटे पैदा हुए। अब वह अकेला ही रह गया है। उस का बाप उसे शिद्दत से प्यार करता है।' 21जनाब-ए-आली, आप ने हमें बताया, 'उसे यहाँ ले आओ ताकि मैं ख़ुद उसे देख सकूँ।' 22हम ने जवाब दिया, 'यह लड़का अपने बाप को छोड़ नहीं सकता, वर्ना उस का बाप मर जाएगा।' 23फिर आप ने कहा, 'तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकोगे कि तुम्हारा सब से छोटा भाई तुम्हारे साथ हो।' 24जब हम अपने बाप के पास वापस पहुँचे तो हम ने उन्हें सब कुछ बताया जो आप ने कहा था। 25फिर उन्हों ने हम से कहा, 'मिस्र लौट कर कुछ ग़ल्ला ख़रीद लाओ।' 26हम ने जवाब दिया, 'हम जा नहीं सकते। हम सिर्फ़ इस सूरत में उस मर्द के पास जा सकते हैं कि हमारा सब से छोटा भाई साथ हो। हम तब ही जा सकते हैं जब वह भी हमारे साथ चले।' 27हमारे बाप ने हम से कहा, 'तुम जानते हो कि मेरी बीवी राख़िल से मेरे दो बेटे पैदा हुए। 28पहला मुझे छोड़ चुका है। किसी जंगली जानवर ने उसे फाड़ खाया होगा, क्यूँकि उसी वक़्त से मैं ने उसे नहीं देखा। 29अगर इस को भी मुझ से ले जाने की वजह से जानी नुक़्सान पहुँचे तो तुम मुझ बूढ़े को ग़म के मारे पाताल में पहुँचाओगे'।"

30-31यहूदाह ने अपनी बात जारी रखी, "जनाब-ए-आली, अब अगर मैं अपने बाप के पास जाऊँ और वह देखें कि लड़का मेरे साथ नहीं है तो वह दम तोड़ देंगे। उन की ज़िन्दगी इस क़दर लड़के की ज़िन्दगी पर मुन्हसिर है और वह इतने बूढ़े हैं कि हम ऐसी हरकत से उन्हें क़ब्र तक पहुँचा देंगे। 32न सिर्फ़ यह बल्कि मैं ने बाप से कहा, 'मैं ख़ुद इस का ज़ामिन हूँगा। अगर मैं इसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िन्दगी के आख़िर तक क़ुसूरवार ठहरूँगा।' 33अब अपने ख़ादिम की गुज़ारिश सुनें। मैं यहाँ रह कर इस लड़के की जगह ग़ुलाम बन जाता हूँ, और वह दूसरे भाइयों के साथ वापस चला जाए। 34अगर लड़का मेरे साथ न हुआ तो मैं किस तरह अपने बाप को मुँह दिखा सकता हूँ? मैं बर्दाश्त नहीं कर सकूँगा कि वह इस मुसीबत में मुब्तला हो जाएँ।"

यूसुफ़ अपने आप को ज़ाहिर करता है

45 यह सुन कर यूसुफ़ अपने आप पर क़ाबू न रख सका। उस ने ऊँची आवाज़ से हुक्म दिया कि तमाम मुलाज़िम कमरे से निकल जाएँ। कोई और शख़्स कमरे में नहीं था जब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को बताया कि वह कौन है। 2वह इतने ज़ोर से रो पड़ा कि मिस्रियों ने उस की आवाज़ सुनी और फ़िरऔन के घराने को पता चल गया। 3यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, "मैं यूसुफ़ हूँ। क्या मेरा बाप अब तक ज़िन्दा है?"

लेकिन उस के भाई यह सुन कर इतने घबरा गए कि वह जवाब न दे सके।

4फिर यूसुफ़ ने कहा, “मेरे क़रीब आओ।”
वह क़रीब आए तो उस ने कहा, “मैं तुम्हारा
भाई यूसुफ़ हूँ जिसे तुम ने बेच कर मिस्र
भिजवाया। 5अब मेरी बात सुनो। न घबराओ
और न अपने आप को इल्ज़ाम दो कि हम
ने यूसुफ़ को बेच दिया। असल में अल्लाह ने
ख़ुद मुझे तुम्हारे आगे यहाँ भेज दिया ताकि
हम सब बचे रहें। 6यह काल का दूसरा साल
है। पाँच और साल के दौरान न हल चलेगा, न
फ़सल कटेगी। 7अल्लाह ने मुझे तुम्हारे आगे
भेजा ताकि दुनिया में तुम्हारा एक बचा-खुचा
हिस्सा महफ़ूज़ रहे और तुम्हारी जान एक बड़ी
मख़्लसी की मारिफ़त छूट जाए। 8चुनाँचे तुम
ने मुझे यहाँ नहीं भेजा बल्कि अल्लाह ने। उस
ने मुझे फ़िरऔन का बाप, उस के पूरे घराने
का मालिक और मिस्र का हाकिम बना दिया
है। 9अब जल्दी से मेरे बाप के पास वापस
जा कर उन से कहो, ‘आप का बेटा यूसुफ़
आप को इत्तिला देता है कि अल्लाह ने मुझे
मिस्र का मालिक बना दिया है। मेरे पास आ
जाएँ, देर न करें। 10आप जुशन के इलाक़े में
रह सकते हैं। वहाँ आप मेरे क़रीब होंगे, आप,
आप की आल-ओ-औलाद, गाय-बैल, भेड़-
बकरियाँ और जो कुछ भी आप का है। 11वहाँ
मैं आप की ज़रूरियात पूरी करूँगा, क्यूँकि
काल को अभी पाँच साल और लगेंगे। वर्ना
आप, आप के घर वाले और जो भी आप के
हैं बदहाल हो जाएंगे।’ 12तुम ख़ुद और मेरा
भाई बिनयमीन देख सकते हो कि मैं यूसुफ़
ही हूँ जो तुम्हारे साथ बात कर रहा हूँ। 13मेरे
बाप को मिस्र में मेरे असर-ओ-रसूख़ के बारे
में इत्तिला दो। उन्हें सब कुछ बताओ जो तुम
ने देखा है। फिर जल्द ही मेरे बाप को यहाँ ले
आओ।”

14यह कह कर वह अपने भाई बिनयमीन
को गले लगा कर रो पड़ा। बिनयमीन भी उस
के गले लग कर रोने लगा। 15फिर यूसुफ़ ने रोते
हुए अपने हर एक भाई को बोसा दिया। इस
के बाद उस के भाई उस के साथ बातें करने
लगे।

16जब यह ख़बर बादशाह के महल तक
पहुँची कि यूसुफ़ के भाई आए हैं तो फ़िरऔन
और उस के तमाम अफ़्सरान ख़ुश हुए। 17उस
ने यूसुफ़ से कहा, “अपने भाइयों को बता कि
अपने जानवरों पर ग़ल्ला लाद कर मुल्क-ए-
कनआन वापस चले जाओ। 18वहाँ अपने बाप
और ख़ानदानों को ले कर मेरे पास आ जाओ।
मैं तुम को मिस्र की सब से अच्छी ज़मीन दे
दूँगा, और तुम इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार
खा सकोगे। 19उन्हें यह हिदायत भी दे कि
अपने बाल-बच्चों के लिए मिस्र से गाड़ियाँ ले
जाओ और अपने बाप को भी बिठा कर यहाँ
ले आओ। 20अपने माल की ज़्यादा फ़िक्र न
करो, क्यूँकि तुम्हें मुल्क-ए-मिस्र का बेहतरीन
माल मिलेगा।”

21यूसुफ़ के भाइयों ने ऐसा ही किया। यूसुफ़
ने उन्हें बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ गाड़ियाँ
और सफ़र के लिए ख़ुराक दी। 22उस ने हर
एक भाई को कपड़ों का एक जोड़ा भी दिया।
लेकिन बिनयमीन को उस ने चाँदी के 300
सिक्के और पाँच जोड़े दिए। 23उस ने अपने
बाप को दस गधे भिजवा दिए जो मिस्र के
बेहतरीन माल से लदे हुए थे और दस गधियाँ
जो अनाज, रोटी और बाप के सफ़र के लिए
खाने से लदी हुई थीं। 24यूँ उस ने अपने भाइयों
को रुख़्सत करके कहा, “रास्ते में झगड़ा न
करना।”

25वह मिस्र से रवाना हो कर मुल्क-ए-
कनआन में अपने बाप के पास पहुँचे। 26उन्हों
ने उस से कहा, “यूसुफ़ ज़िन्दा है! वह पूरे
मिस्र का हाकिम है।” लेकिन याक़ूब हक्का-
बक्का रह गया, क्यूँकि उसे यक़ीन न आया।
27ताहम उन्हों ने उसे सब कुछ बताया जो
यूसुफ़ ने उन से कहा था, और उस ने ख़ुद वह
गाड़ियाँ देखीं जो यूसुफ़ ने उसे मिस्र ले जाने
के लिए भिजवा दी थीं। फिर याक़ूब की जान
में जान आ गई, 28और उस ने कहा, “मेरा बेटा

यूसुफ़ ज़िन्दा है! यही काफ़ी है। मरने से पहले
मैं जा कर उस से मिलूँगा।"

याक़ूब मिस्र जाता है

46 याक़ूब सब कुछ ले कर रवाना
हुआ और बैर-सबा पहुँचा। वहाँ
उस ने अपने बाप इस्हाक़ के ख़ुदा के हुज़ूर
क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। 2रात को अल्लाह रोया में
उस से हमकलाम हुआ। उस ने कहा, "याक़ूब,
याक़ूब!" याक़ूब ने जवाब दिया, "जी, मैं
हाज़िर हूँ।" 3अल्लाह ने कहा, "मैं अल्लाह
हूँ, तेरे बाप इस्हाक़ का ख़ुदा। मिस्र जाने से
मत डर, क्यूँकि वहाँ मैं तुझ से एक बड़ी क़ौम
बनाऊँगा। 4मैं तेरे साथ मिस्र जाऊँगा और तुझे
इस मुल्क में वापस भी ले आऊँगा। जब तू
मरेगा तो यूसुफ़ ख़ुद तेरी आँखें बन्द करेगा।"

5इस के बाद याक़ूब बैर-सबा से रवाना
हुआ। उस के बेटों ने उसे और अपने बाल-
बच्चों को उन गाड़ियों में बिठा दिया जो मिस्र
के बादशाह ने भिजवाई थीं। 6यूँ याक़ूब और
उस की तमाम औलाद अपने मवेशी और
कनआन में हासिल किया हुआ माल ले कर
मिस्र चले गए। 7याक़ूब के बेटे-बेटियाँ, पोते-
पोतियाँ और बाक़ी औलाद सब साथ गए।

8इस्राईल की औलाद के नाम जो मिस्र चली
गई यह हैं :

याक़ूब के पहलौठे रूबिन 9के बेटे हनूक,
फ़ल्लू, हस्रोन और कर्मी थे। 10शमाऊन के
बेटे यमूएल, यमीन, उहद, यकीन, सुहर और
साऊल थे (साऊल कनआनी औरत का बच्चा
था)। 11लावी के बेटे जैर्सोन, क़िहात और
मिरारी थे। 12यहूदाह के बेटे एर, ओनान,
सेला, फ़ारस और ज़ारह थे (एर और ओनान
कनआन में मर चुके थे)। फ़ारस के दो बेटे
हस्रोन और हमूल थे। 13इश्कार के बेटे तोला,
फ़ुव्वा, योब और सिम्रोन थे। 14ज़बूलून के बेटे
सरद, ऐलोन और यहलीएल थे। 15इन बेटों की
माँ लियाह थी, और वह मसोपुतामिया में पैदा
हुए। इन के इलावा दीना उस की बेटी थी। कुल
33 मर्द लियाह की औलाद थे।

16जद के बेटे सिफ़्यान, हज्जी, सूनी,
इस्बून, एरी, अरूदी और अरेली थे। 17आशर
के बेटे यिम्ना, इस्वाह, इस्वी और बरीआ थे।
आशर की बेटी सिरह थी, और बरीआ के
दो बेटे थे, हिबर और मल्कीएल। 18कुल 16
अफ़राद ज़िल्फ़ा की औलाद थे जिसे लाबन
ने अपनी बेटी लियाह को दिया था।

19राख़िल के बेटे यूसुफ़ और बिनयमीन
थे। 20यूसुफ़ के दो बेटे मनस्सी और इफ़्राईम
मिस्र में पैदा हुए। उन की माँ ओन के पुजारी
फ़ोतीफ़िरा की बेटी आसनत थी। 21बिनयमीन
के बेटे बाला, बकर, अश्बेल, जीरा, नामान,
इख़ी, रोस, मुफ़्फ़ीम, हुफ़्फ़ीम और अर्द थे।
22कुल 14 मर्द राख़िल की औलाद थे।

23दान का बेटा हुशीम था। 24नफ़्ताली के
बेटे यहसीएल, जूनी, यिसर और सिल्लीम थे।
25कुल 7 मर्द बिल्हाह की औलाद थे जिसे
लाबन ने अपनी बेटी राख़िल को दिया था।

26याक़ूब की औलाद के 66 अफ़राद उस
के साथ मिस्र चले गए। इस तादाद में बेटों की
बीवियाँ शामिल नहीं थीं। 27जब हम याक़ूब,
यूसुफ़ और उस के दो बेटे इन में शामिल करते
हैं तो याक़ूब के घराने के 70 अफ़राद मिस्र
गए।

याक़ूब और उस का ख़ानदान मिस्र में

28याक़ूब ने यहूदाह को अपने आगे यूसुफ़
के पास भेजा ताकि वह जुशन में उन से मिले।
जब वह वहाँ पहुँचे 29तो यूसुफ़ अपने रथ पर
सवार हो कर अपने बाप से मिलने के लिए
जुशन गया। उसे देख कर वह उस के गले लग
कर काफ़ी देर रोता रहा। 30याक़ूब ने यूसुफ़ से
कहा, "अब मैं मरने के लिए तय्यार हूँ, क्यूँकि
मैं ने ख़ुद देखा है कि तू ज़िन्दा है।"

31फिर यूसुफ़ ने अपने भाइयों और अपने
बाप के ख़ानदान के बाक़ी अफ़राद से कहा,
"ज़रूरी है कि मैं जा कर बादशाह को इत्तिला

दूँ कि मेरे भाई और मेरे बाप का पूरा ख़ानदान जो कनआन के रहने वाले हैं मेरे पास आ गए हैं। 32मैं उस से कहूँगा, 'यह आदमी भेड़-बकरियों के चरवाहे हैं। वह मवेशी पालते हैं, इस लिए अपनी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और बाक़ी सारा माल अपने साथ ले आए हैं।' 33बादशाह तुम्हें बुला कर पूछेगा कि तुम क्या काम करते हो? 34फिर तुम को जवाब देना है, 'आप के ख़ादिम बचपन से मवेशी पालते आए हैं। यह हमारे बापदादा का पेशा था और हमारा भी है।' अगर तुम यह कहो तो तुम्हें जुशन में रहने की इजाज़त मिलेगी। क्यूँकि भेड़-बकरियों के चरवाहे मिस्रियों की नज़र में क़ाबिल-ए-नफ़रत हैं।"

47 यूसुफ़ फ़िरऔन के पास गया और उसे इत्तिला दे कर कहा, "मेरा बाप और भाई अपनी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और सारे माल समेत मुल्क-ए-कनआन से आ कर जुशन में ठहरे हुए हैं।" 2उस ने अपने भाइयों में से पाँच को चुन कर फ़िरऔन के सामने पेश किया। 3फ़िरऔन ने भाइयों से पूछा, "तुम क्या काम करते हो?" उन्हों ने जवाब दिया, "आप के ख़ादिम भेड़-बकरियों के चरवाहे हैं। यह हमारे बापदादा का पेशा था और हमारा भी है। 4हम यहाँ आए हैं ताकि कुछ देर अजनबी की हैसियत से आप के पास ठहरें, क्यूँकि काल ने कनआन में बहुत ज़ोर पकड़ा है। वहाँ आप के ख़ादिमों के जानवरों के लिए चरागाहें ख़त्म हो गई हैं। इस लिए हमें जुशन में रहने की इजाज़त दें।"

5बादशाह ने यूसुफ़ से कहा, "तेरा बाप और भाई तेरे पास आ गए हैं। 6मुल्क-ए-मिस्र तेरे सामने खुला है। उन्हें बेहतरीन जगह पर आबाद कर। वह जुशन में रहें। और अगर उन में से कुछ हैं जो ख़ास क़ाबिलियत रखते हैं तो उन्हें मेरे मवेशियों की निगहदाशत पर रख।"

7फिर यूसुफ़ अपने बाप याक़ूब को ले आया और फ़िरऔन के सामने पेश किया। याक़ूब ने बादशाह को बरकत दी। 8बादशाह ने उस से पूछा, "तुम्हारी उम्र क्या है?" 9याक़ूब ने जवाब दिया, "मैं 130 साल से इस दुनिया का मेहमान हूँ। मेरी ज़िन्दगी मुख़्तसर और तक्लीफ़दिह थी, और मेरे बापदादा मुझ से ज़्यादा उम्ररसीदा हुए थे जब वह इस दुनिया के मेहमान थे।" 10यह कह कर याक़ूब फ़िरऔन को दुबारा बरकत दे कर चला गया।

11फिर यूसुफ़ ने अपने बाप और भाइयों को मिस्र में आबाद किया। उस ने उन्हें रामसीस के इलाक़े में बेहतरीन ज़मीन दी जिस तरह बादशाह ने हुक्म दिया था। 12यूसुफ़ अपने बाप के पूरे घराने को ख़ुराक मुहय्या करता रहा। हर ख़ानदान को उस के बच्चों की तादाद के मुताबिक़ ख़ुराक मिलती रही।

काल का सख़्त असर

13काल इतना सख़्त था कि कहीं भी रोटी नहीं मिलती थी। मिस्र और कनआन में लोग निढाल हो गए।

14मिस्र और कनआन के तमाम पैसे अनाज ख़रीदने के लिए सर्फ़ हो गए। यूसुफ़ उन्हें जमा करके फ़िरऔन के महल में ले आया। 15जब मिस्र और कनआन के पैसे ख़त्म हो गए तो मिस्रियों ने यूसुफ़ के पास आ कर कहा, "हमें रोटी दें! हम आप के सामने क्यूँ मरें? हमारे पैसे ख़त्म हो गए हैं।" 16यूसुफ़ ने जवाब दिया, "अगर आप के पैसे ख़त्म हैं तो मुझे अपने मवेशी दें। मैं उन के इवज़ रोटी देता हूँ।" 17चुनाँचे वह अपने घोड़े, भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और गधे यूसुफ़ के पास ले आए। इन के इवज़ उस ने उन्हें ख़ुराक दी। उस साल उस ने उन्हें उन के तमाम मवेशियों के इवज़ ख़ुराक मुहय्या की।

18अगले साल वह दुबारा उस के पास आए। उन्हों ने कहा, "जनाब-ए-आली, हम यह बात आप से नहीं छुपा सकते कि अब हम सिर्फ़ अपने आप और अपनी ज़मीन को आप को दे सकते हैं। हमारे पैसे तो ख़त्म हैं और आप हमारे मवेशी भी ले चुके हैं। 19हम क्यूँ आप की

आँखों के सामने मर जाएँ? हमारी ज़मीन क्यूँ तबाह हो जाए? हमें रोटी दें तो हम और हमारी ज़मीन बादशाह की होगी। हम फ़िरऔन के ग़ुलाम होंगे। हमें बीज दें ताकि हम जीते बचें और ज़मीन तबाह न हो जाए।"

20चुनाँचे यूसुफ़ ने फ़िरऔन के लिए मिस्र की पूरी ज़मीन ख़रीद ली। काल की सख़्ती के सबब से तमाम मिस्रियों ने अपने खेत बेच दिए। इस तरीक़े से पूरा मुल्क फ़िरऔन की मिलकियत में आ गया। 21यूसुफ़ ने मिस्र के एक सिरे से दूसरे सिरे तक के लोगों को शहरों में मुन्तक़िल कर दिया। 22सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन आज़ाद रही। उन्हें अपनी ज़मीन बेचने की ज़रूरत ही नहीं थी, क्यूँकि उन्हें फ़िरऔन से इतना वज़ीफ़ा मिलता था कि गुज़ारा हो जाता था।

23यूसुफ़ ने लोगों से कहा, "ग़ौर से सुनें। आज मैं ने आप को और आप की ज़मीन को बादशाह के लिए ख़रीद लिया है। अब यह बीज ले कर अपने खेतों में बोना। 24आप को फ़िरऔन को फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा देना है। बाक़ी पैदावार आप की होगी। आप इस से बीज बो सकते हैं, और यह आप के और आप के घरानों और बच्चों के खाने के लिए होगा।" 25उन्हों ने जवाब दिया, "आप ने हमें बचाया है। हमारे मालिक हम पर मेहरबानी करें तो हम फ़िरऔन के ग़ुलाम बनेंगे।"

26इस तरह यूसुफ़ ने मिस्र में यह क़ानून नाफ़िज़ किया कि हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा बादशाह का है। यह क़ानून आज तक जारी है। सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन बादशाह की मिलकियत में न आई।

याक़ूब की आख़िरी गुज़ारिश

27इस्राईली मिस्र में जुशन के इलाक़े में आबाद हुए। वहाँ उन्हें ज़मीन मिली, और वह फले फूले और तादाद में बहुत बढ़ गए।

28याक़ूब 17 साल मिस्र में रहा। वह 147 साल का था जब फ़ौत हुआ। 29जब मरने का वक़्त क़रीब आया तो उस ने यूसुफ़ को बुला कर कहा, "मेहरबानी करके अपना हाथ मेरी रान के नीचे रख कर क़सम खा कि तू मुझ पर शफ़क़त और वफ़ादारी का इस तरह इज़हार करेगा कि मुझे मिस्र में दफ़न नहीं करेगा। 30जब मैं मर कर अपने बापदादा से जा मिलूँगा तो मुझे मिस्र से ले जा कर मेरे बापदादा की क़ब्र में दफ़नाना।" यूसुफ़ ने जवाब दिया, "ठीक है।" 31याक़ूब ने कहा, "क़सम खा कि तू ऐसा ही करेगा।" यूसुफ़ ने क़सम खाई। तब इस्राईल ने अपने बिस्तर के सिरहाने पर अल्लाह को सिज्दा किया।

याक़ूब इफ़्राईम और मनस्सी को बरकत देता है

48 कुछ देर के बाद यूसुफ़ को इत्तिला दी गई कि आप का बाप बीमार है। वह अपने दो बेटों मनस्सी और इफ़्राईम को साथ ले कर याक़ूब से मिलने गया।

2याक़ूब को बताया गया, "आप का बेटा आ गया है" तो वह अपने आप को सँभाल कर अपने बिस्तर पर बैठ गया। 3उस ने यूसुफ़ से कहा, "जब मैं कनआनी शहर लूज़ में था तो अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ मुझ पर ज़ाहिर हुआ। उस ने मुझे बरकत दे कर 4कहा, 'मैं तुझे फलने फूलने दूँगा और तेरी औलाद बढ़ा दूँगा बल्कि तुझ से बहुत सी क़ौमें निकलने दूँगा। और मैं तेरी औलाद को यह मुल्क हमेशा के लिए दे दूँगा।' 5अब मेरी बात सुन। मैं चाहता हूँ कि तेरे बेटे जो मेरे आने से पहले मिस्र में पैदा हुए मेरे बेटे हों। इफ़्राईम और मनस्सी रूबिन और शमाऊन के बराबर ही मेरे बेटे हों। 6अगर इन के बाद तेरे हाँ और बेटे पैदा हो जाएँ तो वह मेरे बेटे नहीं बल्कि तेरे ठहरेंगे। जो मीरास वह पाएँगे वह उन्हें इफ़्राईम और मनस्सी की मीरास में से मिलेगी। 7मैं यह तेरी माँ राख़िल के सबब से कर रहा हूँ जो मसोपुतामिया से वापसी के वक़्त कनआन में इफ़्राता के क़रीब

मर गई। मैं ने उसे वहीं रास्ते में दफ़न किया”
(आज इफ़्राता को बैत-लहम कहा जाता है)।
8फिर याक़ूब ने यूसुफ़ के बेटों पर नज़र
डाल कर पूछा, “यह कौन हैं?” 9यूसुफ़ ने
जवाब दिया, “यह मेरे बेटे हैं जो अल्लाह
ने मुझे यहाँ मिस्र में दिए।” याक़ूब ने कहा,
“उन्हें मेरे क़रीब ले आ ताकि मैं उन्हें बरकत
दूँ।” 10बूढ़ा होने के सबब से याक़ूब की आँखें
कमज़ोर थीं। वह अच्छी तरह देख नहीं सकता
था। यूसुफ़ अपने बेटों को याक़ूब के पास ले
आया तो उस ने उन्हें बोसा दे कर गले लगाया
11और यूसुफ़ से कहा, “मुझे तवक़्क़ो ही नहीं
थी कि मैं कभी तेरा चेहरा देखूँगा, और अब
अल्लाह ने मुझे तेरे बेटों को देखने का मौक़ा
भी दिया है।”
12फिर यूसुफ़ उन्हें याक़ूब की गोद में से
ले कर ख़ुद उस के सामने मुँह के बल झुक
गया। 13यूसुफ़ ने इफ़्राईम को याक़ूब के बाएँ
हाथ रखा और मनस्सी को उस के दाएँ हाथ।
14लेकिन याक़ूब ने अपना दहना हाथ बाईं
तरफ़ बढ़ा कर इफ़्राईम के सर पर रखा अगरचे
वह छोटा था। इस तरह उस ने अपना बायाँ
हाथ दाईं तरफ़ बढ़ा कर मनस्सी के सर पर
रखा जो बड़ा था। 15फिर उस ने यूसुफ़ को
उस के बेटों की मारिफ़त बरकत दी, “अल्लाह
जिस के हुज़ूर मेरे बापदादा इब्राहीम और
इस्हाक़ चलते रहे और जो शुरू से आज तक
मेरा चरवाहा रहा है इन्हें बरकत दे। 16जिस
फ़रिश्ते ने इवज़ाना दे कर मुझे हर नुक़्सान
से बचाया है वह इन्हें बरकत दे। अल्लाह करे
कि इन में मेरा नाम और मेरे बापदादा इब्राहीम
और इस्हाक़ के नाम जीते रहें। दुनिया में इन
की औलाद की तादाद बहुत बढ़ जाए।”
17जब यूसुफ़ ने देखा कि बाप ने अपना
दहना हाथ छोटे बेटे इफ़्राईम के सर पर रखा
है तो यह उसे बुरा लगा, इस लिए उस ने बाप
का हाथ पकड़ा ताकि उसे इफ़्राईम के सर पर
से उठा कर मनस्सी के सर पर रखे। 18उस ने
कहा, “अब्बू, ऐसे नहीं। दूसरा लड़का बड़ा है।
उसी पर अपना दहना हाथ रखें।” 19लेकिन
बाप ने इन्कार करके कहा, “मुझे पता है बेटा,
मुझे पता है। वह भी एक बड़ी क़ौम बनेगा।
फिर भी उस का छोटा भाई उस से बड़ा होगा
और उस से क़ौमों की बड़ी तादाद निकलेगी।”
20उस दिन उस ने दोनों बेटों को बरकत
दे कर कहा, “इस्राईली तुम्हारा नाम ले कर
बरकत दिया करेंगे। जब वह बरकत देंगे तो
कहेंगे, ‘अल्लाह आप के साथ वैसा करे जैसा
उस ने इफ़्राईम और मनस्सी के साथ किया
है’।” इस तरह याक़ूब ने इफ़्राईम को मनस्सी
से बड़ा बना दिया। 21यूसुफ़ से उस ने कहा,
“मैं तो मरने वाला हूँ, लेकिन अल्लाह तुम्हारे
साथ होगा और तुम्हें तुम्हारे बापदादा के मुल्क
में वापस ले जाएगा। 22एक बात में मैं तुझे तेरे
भाइयों पर तर्जीह देता हूँ, मैं तुझे कनआन में
वह क़ितआ देता हूँ जो मैं ने अपनी तलवार
और कमान से अमोरियों से छीना था।”

याक़ूब अपने बेटों को बरकत देता है

49 याक़ूब ने अपने बेटों को बुला कर
कहा, “मेरे पास जमा हो जाओ
ताकि मैं तुम्हें बताऊँ कि मुस्तक़बिल में तुम्हारे
साथ क्या क्या होगा। 2ऐ याक़ूब के बेटो, इकट्ठे
हो कर सुनो, अपने बाप इस्राईल की बातों पर
ग़ौर करो।
3रूबिन, तुम मेरे पहलौठे हो, मेरे ज़ोर और
मेरी ताक़त का पहला फल। तुम इज़्ज़त और
क़ुव्वत के लिहाज़ से बरतर हो। 4लेकिन चूँकि
तुम बेकाबू सैलाब की मानिन्द हो इस लिए
तुम्हारी अव्वल हैसियत जाती रहे। क्यूँकि तुम
ने मेरी हरम से हमबिसतर हो कर अपने बाप
की बेहुरमती की है।
5शमाऊन और लावी दोनों भाइयों की
तलवारें ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद के हथियार रहे हैं।
6मेरी जान न उन की मजलिस में शामिल और
न उन की जमाअत में दाख़िल हो, क्यूँकि उन्हों
ने ग़ुस्से में आ कर दूसरों को क़त्ल किया है,
उन्हों ने अपनी मर्ज़ी से बैलों की कोंचें काटी

हैं। 7उन के ग़ुस्से पर लानत हो जो इतना
ज़बरदस्त है और उन के तैश पर जो इतना
सख़्त है। मैं उन्हें याक़ूब के मुल्क में तित्तर-
बित्तर करूँगा, उन्हें इस्राईल में मुन्तशिर कर
दूँगा।

8यहूदाह, तुम्हारे भाई तुम्हारी तारीफ़ करेंगे।
तुम अपने दुश्मनों की गर्दन पकड़े रहोगे, और
तुम्हारे बाप के बेटे तुम्हारे सामने झुक जाएंगे।
9यहूदाह शेरबबर का बच्चा है। मेरे बेटे, तुम
अभी अभी शिकार मार कर वापस आए हो।
यहूदाह शेरबबर बल्कि शेरनी की तरह दबक
कर बैठ जाता है। कौन उसे छेड़ने की जुरअत
करेगा? 10शाही असा यहूदाह से दूर नहीं होगा
बल्कि शाही इख़तियार उस वक़्त तक उस की
औलाद के पास रहेगा जब तक वह हाकिम न
आए जिस के ताबे क़ौमें रहेंगी। 11वह अपना
जवान गधा अंगूर की बेल से और अपनी गधी
का बच्चा बेहतरीन अंगूर की बेल से बांधेगा।
वह अपना लिबास मै में और अपना कपड़ा
अंगूर के ख़ून में धोएगा। 12उस की आँखें मै से
ज़्यादा गदली और उस के दाँत दूध से ज़्यादा
सफ़ेद होंगे।

13ज़बूलून साहिल पर आबाद होगा जहाँ
बहरी जहाज़ होंगे। उस की हद सैदा तक
होगी।

14इश्कार ताक़तवर गधा है जो अपने ज़ीन
के दो बोरों के दरमियान बैठा है। 15जब वह
देखेगा कि उस की आरामगाह अच्छी और उस
का मुल्क ख़ुशनुमा है तो वह बोझ उठाने के
लिए तय्यार हो जाएगा और उजरत के बग़ैर
काम करने के लिए मज्बूर किया जाएगा।

16दान अपनी क़ौम का इन्साफ़ करेगा
अगरचे वह इस्राईल के क़बीलों में से एक ही
है। 17दान सड़क के साँप और रास्ते के अफ़ई
की मानिन्द होगा। वह घोड़े की एड़ियों को
काटेगा तो उस का सवार पीछे गिर जाएगा।

18ऐ रब, मैं तेरी ही नजात के इन्तिज़ार में
हूँ!

19जद पर डाकुओं का जथ्था हम्ला करेगा,
लेकिन वह पलट कर उसी पर हम्ला कर देगा।

20आशर को ग़िज़ाइयत वाली ख़ुराक
हासिल होगी। वह लज़ीज़ शाही खाना मुहय्या
करेगा।

21नफ़्ताली आज़ाद छोड़ी हुई हिरनी है। वह
ख़ूबसूरत बातें करता है।[a]

22यूसुफ़ फलदार बेल है। वह चश्मे पर लगी
हुई फलदार बेल है जिस की शाख़ें दीवार पर
चढ़ गई हैं। 23तीरअन्दाज़ों ने उस पर तीर
चला कर उसे तंग किया और उस के पीछे
पड़ गए, 24लेकिन उस की कमान मज़बूत
रही, और उस के बाज़ू याक़ूब के ज़ोर-आवर
ख़ुदा के सबब से ताक़तवर रहे, उस चरवाहे के
सबब से जो इस्राईल का ज़बरदस्त सूरमा है।
25क्यूँकि तेरे बाप का ख़ुदा तेरी मदद करता
है, अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ तुझे आसमान
की बरकत, ज़मीन की गहराइयों की बरकत
और औलाद की बरकत देता है। 26तेरे बाप की
बरकत क़दीम पहाड़ों और अबदी पहाड़ियों
की मर्ग़ूब चीज़ों से ज़्यादा अज़ीम है। यह
तमाम बरकत यूसुफ़ के सर पर हो, उस शख़्स
के चाँद पर जो अपने भाइयों पर शहज़ादा है।

27बिनयमीन फाड़ने वाला भेड़िया है। सुब्ह
वह अपना शिकार खा जाता और रात को
अपना लूटा हुआ माल तक़्सीम कर देता है।"

28यह इस्राईल के कुल बारह क़बीले हैं।
और यह वह कुछ है जो उन के बाप ने उन
से बरकत देते वक़्त कहा। उस ने हर एक को
उस की अपनी बरकत दी।

याक़ूब का इन्तिक़ाल

29फिर याक़ूब ने अपने बेटों को हुक्म दिया,
"अब मैं कूच करके अपने बापदादा से जा
मिलूँगा। मुझे मेरे बापदादा के साथ उस ग़ार में
दफ़नाना जो हित्ती आदमी इफ़्रोन के खेत में
है। 30यानी उस ग़ार में जो मुल्क-ए-कनआन
में मम्रे के मशरिक़ में मक्फ़ीला के खेत में है।

[a]या ख़ूबसूरत बच्चे पैदा करती है।

इब्राहीम ने उसे खेत समेत अपने लोगों को दफ़नाने के लिए इफ़्रोन हित्ती से ख़रीद लिया था। 31वहाँ इब्राहीम और उस की बीवी सारा दफ़नाए गए, वहाँ इस्हाक़ और उस की बीवी रिब्क़ा दफ़नाए गए और वहाँ मैं ने लियाह को दफ़न किया। 32वह खेत और उस का ग़ार हित्तियों से ख़रीदा गया था।"

33इन हिदायात के बाद याक़ूब ने अपने पाँओ बिस्तर पर समेट लिए और दम छोड़ कर अपने बापदादा से जा मिला।

याक़ूब को दफ़न किया जाता है

50 यूसुफ़ अपने बाप के चेहरे से लिपट गया। उस ने रोते हुए उसे बोसा दिया। 2उस के मुलाज़िमों में से कुछ डाक्टर थे। उस ने उन्हें हिदायत दी कि मेरे बाप इस्राईल की लाश को हनूत करें ताकि वह गल न जाए। उन्हों ने ऐसा ही किया। 3इस में 40 दिन लग गए। आम तौर पर हनूत करने के लिए इतने ही दिन लगते हैं। मिस्रियों ने 70 दिन तक याक़ूब का मातम किया।

4जब मातम का वक़्त ख़त्म हुआ तो यूसुफ़ ने बादशाह के दरबारियों से कहा, "मेहरबानी करके यह ख़बर बादशाह तक पहुँचा दें 5कि मेरे बाप ने मुझे क़सम दिला कर कहा था, 'मैं मरने वाला हूँ। मुझे उस क़ब्र में दफ़न करना जो मैं ने मुल्क-ए-कनआन में अपने लिए बनवाई।' अब मुझे इजाज़त दें कि मैं वहाँ जाऊँ और अपने बाप को दफ़न करके वापस आऊँ।" 6फ़िरऔन ने जवाब दिया, "जा, अपने बाप को दफ़न कर जिस तरह उस ने तुझे क़सम दिलाई थी।"

7चुनाँचे यूसुफ़ अपने बाप को दफ़नाने के लिए कनआन रवाना हुआ। बादशाह के तमाम मुलाज़िम, महल के बुज़ुर्ग और पूरे मिस्र के बुज़ुर्ग उस के साथ थे। 8यूसुफ़ के घराने के अफ़राद, उस के भाई और उस के बाप के घराने के लोग भी साथ गए। सिर्फ़ उन के बच्चे, उन की भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल जुशन में रहे। 9रथ और घुड़सवार भी साथ गए। सब मिल कर बड़ा लश्कर बन गए।

10जब वह यर्दन के क़रीब अतद के खलियान पर पहुँचे तो उन्हों ने निहायत दिलसोज़ नोहा किया। वहाँ यूसुफ़ ने सात दिन तक अपने बाप का मातम किया। 11जब मक़ामी कनआनियों ने अतद के खलियान पर मातम का यह नज़ारा देखा तो उन्हों ने कहा, "यह तो मातम का बहुत बड़ा इन्तिज़ाम है जो मिस्री करवा रहे हैं।" इस लिए उस जगह का नाम अबील-मिस्रीम यानी 'मिस्रियों का मातम' पड़ गया। 12यूँ याक़ूब के बेटों ने अपने बाप का हुक्म पूरा किया। 13उन्हों ने उसे मुल्क-ए-कनआन में ले जा कर मक्फ़ीला के खेत के ग़ार में दफ़न किया जो मम्रे के मशरिक़ में है। यह वही खेत है जो इब्राहीम ने इफ़्रोन हित्ती से अपने लोगों को दफ़नाने के लिए ख़रीदा था।

14इस के बाद यूसुफ़, उस के भाई और बाक़ी तमाम लोग जो जनाज़े के लिए साथ गए थे मिस्र को लौट आए।

यूसुफ़ अपने भाइयों को तसल्ली देता है

15जब याक़ूब इन्तिक़ाल कर गया तो यूसुफ़ के भाई डर गए। उन्हों ने कहा, "ख़तरा है कि अब यूसुफ़ हमारा ताक़्क़ुब करके उस ग़लत काम का बदला ले जो हम ने उस के साथ किया था। फिर क्या होगा?" 16यह सोच कर उन्हों ने यूसुफ़ को ख़बर भेजी, "आप के बाप ने मरने से पेशतर हिदायत दी 17कि यूसुफ़ को बताना, 'अपने भाइयों के उस ग़लत काम को मुआफ़ कर देना जो उन्हों ने तुम्हारे साथ किया।' अब हमें जो आप के बाप के ख़ुदा के पैरोकार हैं मुआफ़ कर दें।"

यह ख़बर सुन कर यूसुफ़ रो पड़ा। 18फिर उस के भाई ख़ुद आए और उस के सामने गिर गए। उन्हों ने कहा, "हम आप के ख़ादिम हैं।" 19लेकिन यूसुफ़ ने कहा, "मत डरो। क्या मैं अल्लाह की जगह हूँ? हरगिज़ नहीं! 20तुम

ने मुझे नुक़्सान पहुँचाने का इरादा किया था, लेकिन अल्लाह ने उस से भलाई पैदा की। और अब इस का मक़्सद पूरा हो रहा है। बहुत से लोग मौत से बच रहे हैं। 21चुनाँचे अब डरने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को ख़ुराक मुहय्या करता रहूँगा।”

यूँ यूसुफ़ ने उन्हें तसल्ली दी और उन से नर्मी से बात की।

यूसुफ़ का इन्तिक़ाल

22यूसुफ़ अपने बाप के ख़ानदान समेत मिस्र में रहा। वह 110 साल ज़िन्दा रहा। 23मौत से पहले उस ने न सिर्फ़ इफ़्राईम के बच्चों को बल्कि उस के पोतों को भी देखा। मनस्सी के बेटे मकीर के बच्चे भी उस की मौजूदगी में पैदा हो कर उस की गोद में रखे गए।[a]

24फिर एक वक़्त आया कि यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं मरने वाला हूँ। लेकिन अल्लाह ज़रूर आप की देख-भाल करके आप को इस मुल्क से उस मुल्क में ले जाएगा जिस का उस ने इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से क़सम खा कर वादा किया है।” 25फिर यूसुफ़ ने इस्राईलियों को क़सम दिला कर कहा, “अल्लाह यक़ीनन तुम्हारी देख-भाल करके वहाँ ले जाएगा। उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी उठा कर साथ ले जाना।”

26फिर यूसुफ़ फ़ौत हो गया। वह 110 साल का था। उसे हनूत करके मिस्र में एक ताबूत में रखा गया।

[a]ग़ालिबन इस का मतलब यह है कि उस ने उन्हें लेपालक बनाया।

ख़ुरूज

याक़ूब का ख़ानदान मिस्र में

1 ज़ैल में उन बेटों के नाम हैं जो अपने
बाप याक़ूब और अपने ख़ानदानों
समेत मिस्र में आए थे : 2रूबिन, शमाऊन,
लावी, यहूदाह, 3इश्कार, ज़बूलून, बिनयमीन,
4दान, नफ़्ताली, जद और आशर। 5उस वक़्त
याक़ूब की औलाद की तादाद 70 थी। यूसुफ़
तो पहले ही मिस्र आ चुका था।

6मिस्र में रहते हुए बहुत दिन गुज़र गए।
इतने में यूसुफ़, उस के तमाम भाई और उस
नस्ल के तमाम लोग मर गए। 7इस्राईली फले
फूले और तादाद में बहुत बढ़ गए। नतीजे में
वह निहायत ही ताक़तवर हो गए। पूरा मुल्क
उन से भर गया।

इस्राईलियों को दबाया जाता है

8होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन
हुआ जो यूसुफ़ से नावाक़िफ़ था। 9उस ने
अपने लोगों से कहा, "इस्राईलियों को देखो।
वह तादाद और ताक़त में हम से बढ़ गए हैं।
10आओ, हम हिक्मत से काम लें, वर्ना वह
मज़ीद बढ़ जाएंगे। ऐसा न हो कि वह किसी
जंग के मौक़े पर दुश्मन का साथ दे कर हम से
लड़ें और मुल्क को छोड़ जाएँ।"

11चुनाँचे मिस्रियों ने इस्राईलियों पर निगरान
मुक़र्रर किए ताकि बेगार में उन से काम
करवा कर उन्हें दबाते रहें। उस वक़्त उन्हों ने
पितोम और रामसीस के शहर तामीर किए।
इन शहरों में फ़िरऔन बादशाह के बड़े बड़े
गोदाम थे। 12लेकिन जितना इस्राईलियों को
दबाया गया उतना ही वह तादाद में बढ़ते और
फैलते गए। आख़िरकार मिस्री उन से दह्शत
खाने लगे, 13और वह बड़ी बेरहमी से उन से
काम करवाते रहे। 14इस्राईलियों का गुज़ारा
निहायत मुश्किल हो गया। उन्हें गारा तय्यार
करके ईंटें बनाना और खेतों में मुख़्तलिफ़
क़िस्म के काम करना पड़े। इस में मिस्री उन
से बड़ी बेरहमी से पेश आते रहे।

दाइयाँ अल्लाह की राह पर चलती हैं

15इस्राईलियों की दो दाइयाँ थीं जिन के नाम
सिप्फ़ा और फ़ूआ थे। मिस्र के बादशाह ने उन
से कहा, 16"जब इब्रानी औरतें तुम्हें मदद के
लिए बुलाएँ तो ख़बरदार रहो। अगर लड़का
पैदा हो तो उसे जान से मार दो, अगर लड़की
हो तो उसे जीता छोड़ दो।" 17लेकिन दाइयाँ
अल्लाह का ख़ौफ़ मानती थीं। उन्हों ने मिस्र
के बादशाह का हुक्म न माना बल्कि लड़कों
को भी जीने दिया।

18तब मिस्र के बादशाह ने उन्हें दुबारा बुला
कर पूछा, "तुम ने यह क्यूँ किया? तुम लड़कों
को क्यूँ जीता छोड़ देती हो?" 19उन्हों ने
जवाब दिया, "इब्रानी औरतें मिस्री औरतों से

ज़्यादा मज़बूत हैं। बच्चे हमारे पहुँचने से पहले ही पैदा हो जाते हैं।"

20चुनाँचे अल्लाह ने दाइयों को बरकत दी, और इस्राईली क़ौम तादाद में बढ़ कर बहुत ताक़तवर हो गई। 21और चूँकि दाइयाँ अल्लाह का ख़ौफ़ मानती थीं इस लिए उस ने उन्हें औलाद दे कर उन के ख़ानदानों को क़ाइम रखा।

22आख़िरकार बादशाह ने अपने तमाम हमवतनों से बात की, "जब भी इब्रानियों के लड़के पैदा हों तो उन्हें दरया-ए-नील में फैंक देना। सिर्फ़ लड़कियों को ज़िन्दा रहने दो।"

मूसा की पैदाइश और बचाओ

2 उन दिनों में लावी के एक आदमी ने अपने ही क़बीले की एक औरत से शादी की। 2औरत हामिला हुई और बच्चा पैदा हुआ। माँ ने देखा कि लड़का ख़ूबसूरत है, इस लिए उस ने उसे तीन माह तक छुपाए रखा। 3जब वह उसे और ज़्यादा न छुपा सकी तो उस ने आबी नर्सल से टोकरी बना कर उस पर तारकोल चढ़ाया। फिर उस ने बच्चे को टोकरी में रख कर टोकरी को दरया-ए-नील के किनारे पर उगे हुए सरकंडों में रख दिया। 4बच्चे की बहन कुछ फ़ासिले पर खड़ी देखती रही कि उस का क्या बनेगा।

5उस वक़्त फ़िरऔन की बेटी नहाने के लिए दरया पर आई। उस की नौकरानियाँ दरया के किनारे टहलने लगीं। तब उस ने सरकंडों में टोकरी देखी और अपनी लौंडी को उसे लाने भेजा। 6उसे खोला तो छोटा लड़का दिखाई दिया जो रो रहा था। फ़िरऔन की बेटी को उस पर तरस आया। उस ने कहा, "यह कोई इब्रानी बच्चा है।"

7अब बच्चे की बहन फ़िरऔन की बेटी के पास गई और पूछा, "क्या मैं बच्चे को दूध पिलाने के लिए कोई इब्रानी औरत ढूँड लाऊँ?" 8फ़िरऔन की बेटी ने कहा, "हाँ, जाओ।" लड़की चली गई और बच्चे की सगी माँ को ले कर वापस आई। 9फ़िरऔन की बेटी ने माँ से कहा, "बच्चे को ले जाओ और उसे मेरे लिए दूध पिलाया करो। मैं तुम्हें इस का मुआवज़ा दूँगी।" चुनाँचे बच्चे की माँ ने उसे दूध पिलाने के लिए ले लिया।

10जब बच्चा बड़ा हुआ तो उस की माँ उसे फ़िरऔन की बेटी के पास ले गई, और वह उस का बेटा बन गया। फ़िरऔन की बेटी ने उस का नाम मूसा यानी 'निकाला गया' रख कर कहा, "मैं उसे पानी से निकाल लाई हूँ।"

मूसा फ़रार होता है

11जब मूसा जवान हुआ तो एक दिन वह घर से निकल कर अपने लोगों के पास गया जो जबरी काम में मसरूफ़ थे। मूसा ने देखा कि एक मिस्री मेरे एक इब्रानी भाई को मार रहा है। 12मूसा ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। जब मालूम हुआ कि कोई नहीं देख रहा तो उस ने मिस्री को जान से मार दिया और उसे रेत में छुपा दिया।

13अगले दिन भी मूसा घर से निकला। इस दफ़ा दो इब्रानी मर्द आपस में लड़ रहे थे। जो ग़लती पर था उस से मूसा ने पूछा, "तुम अपने भाई को क्यूँ मार रहे हो?" 14आदमी ने जवाब दिया, "किस ने आप को हम पर हुक्मरान और क़ाज़ी मुक़र्रर किया है? क्या आप मुझे भी क़त्ल करना चाहते हैं जिस तरह मिस्री को मार डाला था?" तब मूसा डर गया। उस ने सोचा, "हाय, मेरा भेद खुल गया है!"

15बादशाह को भी पता लगा तो उस ने मूसा को मरवाने की कोशिश की। लेकिन मूसा मिदियान के मुल्क को भाग गया। वहाँ वह एक कुएँ के पास बैठ गया। 16मिदियान में एक इमाम था जिस की सात बेटियाँ थीं। यह लड़कियाँ अपनी भेड़-बकरियों को पानी पिलाने के लिए कुएँ पर आईं और पानी निकाल कर हौज़ भरने लगीं। 17लेकिन कुछ चरवाहों ने आ कर उन्हें भगा दिया। यह देख

कर मूसा उठा और लड़कियों को चरवाहों से बचा कर उन के रेवड़ को पानी पिलाया।

18जब लड़कियाँ अपने बाप रऊएल के पास वापस आईं तो बाप ने पूछा, “आज तुम इतनी जल्दी से क्यूँ वापस आ गई हो?” 19लड़कियों ने जवाब दिया, “एक मिस्री आदमी ने हमें चरवाहों से बचाया। न सिर्फ़ यह बल्कि उस ने हमारे लिए पानी भी निकाल कर रेवड़ को पिला दिया।” 20रऊएल ने कहा, “वह आदमी कहाँ है? तुम उसे क्यूँ छोड़ कर आई हो? उसे बुलाओ ताकि वह हमारे साथ खाना खाए।”

21मूसा रऊएल के घर में ठहरने के लिए राज़ी हो गया। बाद में उस की शादी रऊएल की बेटी सफ़्फ़ूरा से हुई। 22सफ़्फ़ूरा के बेटा पैदा हुआ तो मूसा ने कहा, “इस का नाम जैर्सोम यानी ‘अजनबी मुल्क में परदेसी’ हो, क्यूँकि मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।”

23काफ़ी अर्सा गुज़र गया। इतने में मिस्र का बादशाह इन्तिक़ाल कर गया। इस्राईली अपनी ग़ुलामी तले कराहते और मदद के लिए पुकारते रहे, और उन की चीख़ें अल्लाह तक पहुँच गईं। 24अल्लाह ने उन की आहें सुनीं और उस अह्द को याद किया जो उस ने इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से बांधा था। 25अल्लाह इस्राईलियों की हालत देख कर उन का ख़याल करने लगा।

जलती हुई झाड़ी

3 मूसा अपने सुसर यित्रो की भेड़-बकरियों की निगहबानी करता था (मिदियान का इमाम रऊएल यित्रो भी कहलाता था)। एक दिन मूसा रेवड़ को रेगिस्तान की परली जानिब ले गया और चलते चलते अल्लाह के पहाड़ होरिब यानी सीना तक पहुँच गया। 2वहाँ रब का फ़रिश्ता आग के शोले में उस पर ज़ाहिर हुआ। यह शोला एक झाड़ी में भड़क रहा था। मूसा ने देखा कि झाड़ी जल रही है लेकिन भस्म नहीं हो रही। 3मूसा ने सोचा, “यह तो अजीब बात है। क्या वजह है कि जलती हुई झाड़ी भस्म नहीं हो रही? मैं ज़रा वहाँ जा कर यह हैरतअंगेज़ मन्ज़र देखूँ।”

4जब रब ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने आ रहा है तो उस ने उसे झाड़ी में से पुकारा, “मूसा, मूसा!” मूसा ने कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 5रब ने कहा, “इस से ज़्यादा क़रीब न आना। अपनी जूतियाँ उतार, क्यूँकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है। 6मैं तेरे बाप का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा हूँ।” यह सुन कर मूसा ने अपना मुँह ढाँक लिया, क्यूँकि वह अल्लाह को देखने से डरा।

7रब ने कहा, “मैं ने मिस्र में अपनी क़ौम की बुरी हालत देखी और ग़ुलामी में उन की चीख़ें सुनी हैं, और मैं उन के दुखों को ख़ूब जानता हूँ। 8अब मैं उन्हें मिस्रियों के क़ाबू से बचाने के लिए उतर आया हूँ। मैं उन्हें मिस्र से निकाल कर एक अच्छे वसी मुल्क में ले जाऊँगा, एक ऐसे मुल्क में जहाँ दूध और शहद की कस्रत है, गो इस वक़्त कनआनी, हित्ती, अमोरी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी उस में रहते हैं। 9इस्राईलियों की चीख़ें मुझ तक पहुँची हैं। मैं ने देखा है कि मिस्री उन पर किस तरह का ज़ुल्म ढा रहे हैं। 10चुनाँचे अब जा। मैं तुझे फ़िरऔन के पास भेजता हूँ, क्यूँकि तुझे मेरी क़ौम इस्राईल को मिस्र से निकाल कर लाना है।”

11लेकिन मूसा ने अल्लाह से कहा, “मैं कौन हूँ कि फ़िरऔन के पास जा कर इस्राईलियों को मिस्र से निकाल लाऊँ?” 12अल्लाह ने कहा, “मैं तो तेरे साथ हूँगा। और इस का सबूत कि मैं तुझे भेज रहा हूँ यह होगा कि लोगों के मिस्र से निकलने के बाद तुम यहाँ आ कर इस पहाड़ पर मेरी इबादत करोगे।”

13लेकिन मूसा ने एतिराज़ किया, “अगर मैं इस्राईलियों के पास जा कर उन्हें बताऊँ कि तुम्हारे बापदादा के ख़ुदा ने मुझे तुम्हारे पास

भेजा है तो वह पूछेंगे, 'उस का नाम क्या है?' फिर मैं उन को क्या जवाब दूँ?"

14अल्लाह ने कहा, "मैं जो हूँ सो मैं हूँ। उन से कहना, 'मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। 15रब जो तुम्हारे बापदादा का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।' यह अबद तक मेरा नाम रहेगा। लोग यही नाम ले कर मुझे नस्ल-दर-नस्ल याद करेंगे।

16अब जा और इस्राईल के बुज़ुर्गों को जमा करके उन को बता दे कि रब तुम्हारे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब का ख़ुदा मुझ पर ज़ाहिर हुआ है। वह फ़रमाता है, 'मैं ने ख़ूब देख लिया है कि मिस्र में तुम्हारे साथ क्या सुलूक हो रहा है। 17इस लिए मैं ने फ़ैसला किया है कि तुम्हें मिस्र की मुसीबत से निकाल कर कनआनियों, हित्तियों, अमोरियों, फ़रिज़्ज़ियों, हिव्वियों और यबूसियों के मुल्क में ले जाऊँ, ऐसे मुल्क में जहाँ दूध और शहद की कस्रत है।' 18बुज़ुर्ग तेरी सुनेंगे। फिर उन के साथ मिस्र के बादशाह के पास जा कर उस से कहना, 'रब इब्रानियों का ख़ुदा हम पर ज़ाहिर हुआ है। इस लिए हमें इजाज़त दें कि हम तीन दिन का सफ़र करके रेगिस्तान में रब अपने ख़ुदा के लिए क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँ।'

19लेकिन मुझे मालूम है कि मिस्र का बादशाह सिर्फ़ इस सूरत में तुम्हें जाने देगा कि कोई ज़बरदस्ती तुम्हें ले जाए। 20इस लिए मैं अपनी क़ुदरत ज़ाहिर करके अपने मोजिज़ों की मारिफ़त मिस्रियों को मारूँगा। फिर वह तुम्हें जाने देगा। 21उस वक़्त मैं मिस्रियों के दिलों को तुम्हारे लिए नर्म कर दूँगा। तुम्हें ख़ाली हाथ नहीं जाना पड़ेगा। 22तमाम इब्रानी औरतें अपनी मिस्री पड़ोसनों और अपने घर में रहने वाली मिस्री औरतों से चाँदी और सोने के ज़ेवरात और नफ़ीस कपड़े माँग कर अपने बच्चों को पहनाएँगी। यूँ मिस्रियों को लूट लिया जाएगा।"

4 मूसा ने एतिराज़ किया, "लेकिन इस्राईली न मेरी बात का यक़ीन करेंगे, न मेरी सुनेंगे। वह तो कहेंगे, 'रब तुम पर ज़ाहिर नहीं हुआ'।" 2जवाब में रब ने मूसा से कहा, "तू ने हाथ में क्या पकड़ा हुआ है?" मूसा ने कहा, "लाठी।" 3रब ने कहा, "उसे ज़मीन पर डाल दे।" मूसा ने ऐसा किया तो लाठी साँप बन गई, और मूसा डर कर भागा। 4रब ने कहा, "अब साँप की दुम को पकड़ ले।" मूसा ने ऐसा किया तो साँप फिर लाठी बन गया।

5रब ने कहा, "यह देख कर लोगों को यक़ीन आएगा कि रब जो उन के बापदादा का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा है तुझ पर ज़ाहिर हुआ है। 6अब अपना हाथ अपने लिबास में डाल दे।" मूसा ने ऐसा किया। जब उस ने अपना हाथ निकाला तो वह बर्फ़ की मानिन्द सफ़ेद हो गया था। कोढ़ जैसी बीमारी लग गई थी। 7तब रब ने कहा, "अब अपना हाथ दुबारा अपने लिबास में डाल।" मूसा ने ऐसा किया। जब उस ने अपना हाथ दुबारा निकाला तो वह फिर सेहतमन्द था।

8रब ने कहा, "अगर लोगों को पहला मोजिज़ा देख कर यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो शायद उन्हें दूसरा मोजिज़ा देख कर यक़ीन आए। 9अगर उन्हें फिर भी यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो दरया-ए-नील से कुछ पानी निकाल कर उसे ख़ुश्क ज़मीन पर उंडेल दे। यह पानी ज़मीन पर गिरते ही ख़ून बन जाएगा।"

10लेकिन मूसा ने कहा, "मेरे आक़ा, मैं माज़रत चाहता हूँ, मैं अच्छी तरह बात नहीं कर सकता बल्कि मैं कभी भी यह लियाक़त नहीं रखता था। इस वक़्त भी जब मैं तुझ से बात कर रहा हूँ मेरी यही हालत है। मैं रुक रुक कर बोलता हूँ।" 11रब ने कहा, "किस ने

इन्सान का मुँह बनाया? कौन एक को गूँगा और दूसरे को बहरा बना देता है? कौन एक को देखने की क़ाबिलियत देता है और दूसरे को इस से महरूम रखता है? क्या मैं जो रब हूँ यह सब कुछ नहीं करता? 12अब जा! तेरे बोलते वक़्त मैं ख़ुद तेरे साथ हूँगा और तुझे वह कुछ सिखाऊँगा जो तुझे कहना है।"

13लेकिन मूसा ने इल्तिजा की, "मेरे आक़ा, मेहरबानी करके किसी और को भेज दे।"

14तब रब मूसा से सख़्त ख़फ़ा हुआ। उस ने कहा, "क्या तेरा लावी भाई हारून ऐसे काम के लिए हाज़िर नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह अच्छी तरह बोल सकता है। देख, वह तुझ से मिलने के लिए निकल चुका है। तुझे देख कर वह निहायत ख़ुश होगा। 15उसे वह कुछ बता जो उसे कहना है। तुम्हारे बोलते वक़्त मैं तेरे और उस के साथ हूँगा और तुम्हें वह कुछ सिखाऊँगा जो तुम्हें करना होगा। 16हारून तेरी जगह क़ौम से बात करेगा जबकि तू मेरी तरह उसे वह कुछ बताएगा जो उसे कहना है। 17लेकिन यह लाठी भी साथ ले जाना, क्यूँकि इसी के ज़रीए तू यह मोजिज़े करेगा।"

मूसा मिस्र को लौट जाता है

18फिर मूसा अपने सुसर यित्रो के घर वापस चला गया। उस ने कहा, "मुझे ज़रा अपने अज़ीज़ों के पास वापस जाने दें जो मिस्र में हैं। मैं मालूम करना चाहता हूँ कि वह अभी तक ज़िन्दा हैं कि नहीं।" यित्रो ने जवाब दिया, "ठीक है, सलामती से जाएँ।" 19मूसा अभी मिदियान में था कि रब ने उस से कहा, "मिस्र को वापस चला जा, क्यूँकि जो आदमी तुझे क़त्ल करना चाहते थे वह मर गए हैं।" 20चुनाँचे मूसा अपनी बीवी और बेटों को गधे पर सवार करके मिस्र को लौटने लगा। अल्लाह की लाठी उस के हाथ में थी।

21रब ने उस से यह भी कहा, "मिस्र जा कर फ़िरऔन के सामने वह तमाम मोजिज़े दिखा जिन का मैं ने तुझे इख़तियार दिया है। लेकिन मेरे कहने पर वह अड़ा रहेगा। वह इस्राईलियों को जाने की इजाज़त नहीं देगा। 22उस वक़्त फ़िरऔन को बता देना, 'रब फ़रमाता है कि इस्राईल मेरा पहलौठा है। 23मैं तुझे बता चुका हूँ कि मेरे बेटे को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करे। अगर तू मेरे बेटे को जाने से मना करे तो मैं तेरे पहलौठे को जान से मार दूँगा'।"

24एक दिन जब मूसा अपने ख़ानदान के साथ रास्ते में किसी सराय में ठहरा हुआ था तो रब ने उस पर हम्ला करके उसे मार देने की कोशिश की। 25यह देख कर सफ़्फ़ूरा ने एक तेज़ पत्थर से अपने बेटे का ख़तना किया और काटे हुए हिस्से से मूसा के पैर छुए। उस ने कहा, "यक़ीनन तुम मेरे ख़ूनी दूल्हा हो।" 26तब अल्लाह ने मूसा को छोड़ दिया। सफ़्फ़ूरा ने उसे ख़तने के बाइस ही 'ख़ूनी दूल्हा' कहा था।

27रब ने हारून से भी बात की, "रेगिस्तान में मूसा से मिलने जा।" हारून चल पड़ा और अल्लाह के पहाड़ के पास मूसा से मिला। उस ने उसे बोसा दिया। 28मूसा ने हारून को सब कुछ सुना दिया जो रब ने उसे कहने के लिए भेजा था। उस ने उसे उन मोजिज़ों के बारे में भी बताया जो उसे दिखाने थे।

29फिर दोनों मिल कर मिस्र गए। वहाँ पहुँच कर उन्हों ने इस्राईल के तमाम बुज़ुर्गों को जमा किया। 30हारून ने उन्हें वह तमाम बातें सुनाईं जो रब ने मूसा को बताई थीं। उस ने मज़कूरा मोजिज़े भी लोगों के सामने दिखाए। 31फिर उन्हें यक़ीन आया। और जब उन्हों ने सुना कि रब को तुम्हारा ख़याल है और वह तुम्हारी मुसीबत से आगाह है तो उन्हों ने रब को सिज्दा किया।

मूसा और हारून फ़िरऔन के दरबार में

5 फिर मूसा और हारून फ़िरऔन के पास गए। उन्हों ने कहा, "रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मेरी क़ौम को रेगिस्तान में जाने दे ताकि वह मेरे लिए ईद मनाएँ'।"

2फ़िरऔन ने जवाब दिया, “यह रब कौन है?
मैं क्यूँ उस का हुक्म मान कर इस्राईलियों को
जाने दूँ? न मैं रब को जानता हूँ, न इस्राईलियों
को जाने दूँगा।”
3हारून और मूसा ने कहा, “इब्रानियों
का ख़ुदा हम पर ज़ाहिर हुआ है। इस लिए
मेहरबानी करके हमें इजाज़त दें कि रेगिस्तान
में तीन दिन का सफ़र करके रब अपने ख़ुदा के
हुज़ूर क़ुर्बानियाँ पेश करें। कहीं वह हमें किसी
बीमारी या तलवार से न मारे।”
4लेकिन मिस्र के बादशाह ने इन्कार किया,
“मूसा और हारून, तुम लोगों को काम से क्यूँ
रोक रहे हो? जाओ, जो काम हम ने तुम को
दिया है उस पर लग जाओ! 5इस्राईली वैसे
भी तादाद में बहुत बढ़ गए हैं, और तुम उन्हें
काम करने से रोक रहे हो।”

जवाब में फ़िरऔन का सख़्त दबाओ

6उसी दिन फ़िरऔन ने मिस्री निगरानों और
उन के तहत के इस्राईली निगरानों को हुक्म
दिया, 7“अब से इस्राईलियों को ईंटें बनाने के
लिए भूसा मत देना, बल्कि वह ख़ुद जा कर
भूसा जमा करें। 8तो भी वह उतनी ही ईंटें
बनाएँ जितनी पहले बनाते थे। वह सुस्त हो
गए हैं और इसी लिए चीख़ रहे हैं कि हमें जाने
दें ताकि अपने ख़ुदा को क़ुर्बानियाँ पेश करें।
9उन से और ज़्यादा सख़्त काम कराओ, उन्हें
काम में लगाए रखो। उन के पास इतना वक़्त
ही न हो कि वह झूटी बातों पर ध्यान दें।”
10मिस्री निगरान और उन के तहत के
इस्राईली निगरानों ने लोगों के पास जा कर उन
से कहा, “फ़िरऔन का हुक्म है कि तुम्हें भूसा
न दिया जाए। 11इस लिए ख़ुद जाओ और
भूसा ढूँड कर जमा करो। लेकिन ख़बरदार!
उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।”
12यह सुन कर इस्राईली भूसा जमा करने के
लिए पूरे मुल्क में फैल गए। 13मिस्री निगरान
यह कह कर उन पर दबाओ डालते रहे कि
उतनी ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।
14जो इस्राईली निगरान उन्हों ने मुक़र्रर किए
थे उन्हें वह पीटते और कहते रहे, “तुम ने कल
और आज उतनी ईंटें क्यूँ नहीं बनवाईं जितनी
पहले बनवाते थे?”
15फिर इस्राईली निगरान फ़िरऔन के पास
गए। उन्हों ने शिकायत करके कहा, “आप
अपने ख़ादिमों के साथ ऐसा सुलूक क्यूँ कर
रहे हैं? 16हमें भूसा नहीं दिया जा रहा और
साथ साथ यह कहा गया है कि उतनी ईंटें
बनाओ जितनी पहले बनाते थे। नतीजे में हमें
मारा पीटा भी जा रहा है हालाँकि ऐसा करने
में आप के अपने लोग ग़लती पर हैं।”
17फ़िरऔन ने जवाब दिया, “तुम लोग सुस्त
हो, तुम काम करना नहीं चाहते। इस लिए
तुम यह जगह छोड़ना और रब को क़ुर्बानियाँ
पेश करना चाहते हो। 18अब जाओ, काम
करो। तुम्हें भूसा नहीं दिया जाएगा, लेकिन
ख़बरदार! उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले
बनाते थे।”
19जब इस्राईली निगरानों को बताया गया
कि ईंटों की मतलूबा तादाद कम न करो तो वह
समझ गए कि हम फंस गए हैं। 20फ़िरऔन के
महल से निकल कर उन की मुलाक़ात मूसा
और हारून से हुई जो उन के इन्तिज़ार में थे।
21उन्हों ने मूसा और हारून से कहा, “रब ख़ुद
आप की अदालत करे। क्यूँकि आप के सबब
से फ़िरऔन और उस के मुलाज़िमों को हम से
घिन आती है। आप ने उन्हें हमें मार देने का
मौक़ा दे दिया है।”

मूसा की शिकायत और रब का जवाब

22यह सुन कर मूसा रब के पास वापस
आया और कहा, “ऐ आक़ा, तू ने इस क़ौम
से ऐसा बुरा सुलूक क्यूँ किया? क्या तू ने इसी
मक़्सद से मुझे यहाँ भेजा है? 23जब से मैं ने
फ़िरऔन के पास जा कर उसे तेरी मर्ज़ी बताई
है वह इस्राईली क़ौम से बुरा सुलूक कर रहा

है। और तू ने अब तक उन्हें बचाने का कोई क़दम नहीं उठाया।"

6 रब ने जवाब दिया, "अब तू देखेगा कि मैं फ़िरऔन के साथ क्या कुछ करता हूँ। मेरी अज़ीम क़ुदरत का तजरिबा करके वह मेरे लोगों को जाने देगा बल्कि उन्हें जाने पर मज्बूर करेगा।"

2अल्लाह ने मूसा से यह भी कहा, "मैं रब हूँ। 3मैं इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब पर ज़ाहिर हुआ। वह मेरे नाम अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़[a] से वाक़िफ़ हुए, लेकिन मैं ने उन पर अपने नाम रब[b] का इन्किशाफ़ नहीं किया। 4मैं ने उन से अह्द करके वादा किया कि उन्हें मुल्क-ए-कनआन दूँगा जिस में वह अजनबी के तौर पर रहते थे। 5अब मैं ने सुना है कि इस्राईली किस तरह मिस्रियों की ग़ुलामी में कराह रहे हैं, और मैं ने अपना अह्द याद किया है। 6चुनाँचे इस्राईलियों को बताना, 'मैं रब हूँ। मैं तुम्हें मिस्रियों के जूए से आज़ाद करूँगा और उन की ग़ुलामी से बचाऊँगा। मैं बड़ी क़ुदरत के साथ तुम्हें छुड़ाऊँगा और उन की अदालत करूँगा। 7मैं तुम्हें अपनी क़ौम बनाऊँगा और तुम्हारा ख़ुदा हूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जिस ने तुम्हें मिस्रियों के जूए से आज़ाद कर दिया है। 8मैं तुम्हें उस मुल्क में ले जाऊँगा जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया है। वह मुल्क तुम्हारी अपनी मिलकियत होगा। मैं रब हूँ'।"

9मूसा ने यह सब कुछ इस्राईलियों को बता दिया, लेकिन उन्हों ने उस की बात न मानी, क्यूँकि वह सख़्त काम के बाइस हिम्मत हार गए थे। 10तब रब ने मूसा से कहा, 11"जा, मिस्र के बादशाह फ़िरऔन को बता देना कि इस्राईलियों को अपने मुल्क से जाने दे।" 12लेकिन मूसा ने एतिराज़ किया, "इस्राईली मेरी बात सुनना नहीं चाहते तो फ़िरऔन क्यूँ मेरी बात माने जबकि मैं रुक रुक कर बोलता हूँ?"

13लेकिन रब ने मूसा और हारून को हुक्म दिया, "इस्राईलियों और मिस्र के बादशाह फ़िरऔन से बात करके इस्राईलियों को मिस्र से निकालो।"

मूसा और हारून के आबा-ओ-अजदाद

14इस्राईल के आबाई घरानों के सरबराह यह थे : इस्राईल के पहलौठे रूबिन के चार बेटे हनूक, फ़ल्लू, हस्रोन और कर्मी थे। इन से रूबिन की चार शाख़ें निकलीं।

15शमाऊन के पाँच बेटे यमूएल, यमीन, उहद, यकीन, सुहर और साऊल थे। (साऊल कनआनी औरत का बच्चा था)। इन से शमाऊन की पाँच शाख़ें निकलीं।

16लावी के तीन बेटे जैर्सोन, क़िहात और मिरारी थे। (लावी 137 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)।

17जैर्सोन के दो बेटे लिब्नी और सिमई थे। इन से जैर्सोन की दो शाख़ें निकलीं। 18क़िहात के चार बेटे अम्राम, इज़हार, हब्रून और उज़्ज़ीएल थे। (क़िहात 133 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)। 19मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे। इन सब से लावी की मुख़्तलिफ़ शाख़ें निकलीं।

20अम्राम ने अपनी फूफी यूकबिद से शादी की। उन के दो बेटे हारून और मूसा पैदा हुए। (अम्राम 137 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)। 21इज़हार के तीन बेटे क़ोरह, नफ़ज और ज़िक्री थे। 22उज़्ज़ीएल के तीन बेटे मीसाएल, इल्सफ़न और सित्री थे।

23हारून ने इलीसिबा से शादी की। (इलीसिबा अम्मीनदाब की बेटी और नह्सोन की बहन थी)। उन के चार बेटे नदब, अबीहू, इलीअज़र और इतमर थे। 24क़ोरह के तीन बेटे अस्सीर, इल्क़ाना और अबियासफ़ थे। उन से क़ोरहियों की तीन शाख़ें निकलीं। 25हारून

[a] इब्रानी में एल-शदई।

[b] इब्रानी में यहवे।

के बेटे इलीअज़र ने फ़ूतीएल की एक बेटी से शादी की। उन का एक बेटा फ़ीन्हास था।

यह सब लावी के आबाई घरानों के सरबराह थे।

26रब ने अम्राम के दो बेटों हारून और मूसा को हुक्म दिया कि मेरी क़ौम को उस के ख़ानदानों की तरतीब के मुताबिक़ मिस्र से निकालो। 27इन ही दो आदमियों ने मिस्र के बादशाह फ़िरऔन से बात की कि इस्राईलियों को मिस्र से जाने दे।

रब दुबारा मूसा से हमकलाम होता है

28मिस्र में रब ने मूसा से कहा, 29"मैं रब हूँ। मिस्र के बादशाह को वह सब कुछ बता देना जो मैं तुझे बताता हूँ।" 30मूसा ने एतिराज़ किया, "मैं तो रुक रुक कर बोलता हूँ। फ़िरऔन किस तरह मेरी बात मानेगा?"

7 लेकिन रब ने कहा, "देख, मेरे कहने पर तू फ़िरऔन के लिए अल्लाह की हैसियत रखेगा और तेरा भाई हारून तेरा पैग़म्बर होगा। 2जो भी हुक्म मैं तुझे दूँगा उसे तू हारून को बता दे। फिर वह सब कुछ फ़िरऔन को बताए ताकि वह इस्राईलियों को अपने मुल्क से जाने दे। 3लेकिन मैं फ़िरऔन को अड़ जाने दूँगा। अगरचे मैं मिस्र में बहुत से निशानों और मोजिज़ों से अपनी क़ुदरत का मुज़ाहरा करूँगा 4तो भी फ़िरऔन तुम्हारी नहीं सुनेगा। तब मिस्रियों पर मेरा हाथ भारी हो जाएगा, और मैं उन को सख़्त सज़ा दे कर अपनी क़ौम इस्राईल को ख़ानदानों की तरतीब के मुताबिक़ मिस्र से निकाल लाऊँगा। 5जब मैं मिस्र के ख़िलाफ़ अपनी क़ुदरत का इज़हार करके इस्राईलियों को वहाँ से निकालूँगा तो मिस्री जान लेंगे कि मैं रब हूँ।"

6मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने उन्हें हुक्म दिया। 7फ़िरऔन से बात करते वक़्त मूसा 80 साल का और हारून 83 साल का था।

मूसा की लाठी साँप बन जाती है

8रब ने मूसा और हारून से कहा, 9"जब फ़िरऔन तुम्हें मोजिज़ा दिखाने को कहेगा तो मूसा हारून से कहे कि अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दे। इस पर वह साँप बन जाएगी।"

10मूसा और हारून ने फ़िरऔन के पास जा कर ऐसा ही किया। हारून ने अपनी लाठी फ़िरऔन और उस के उह्देदारों के सामने डाल दी तो वह साँप बन गई। 11यह देख कर फ़िरऔन ने अपने आलिमों और जादूगरों को बुलाया। जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया। 12हर एक ने अपनी लाठी ज़मीन पर फैंकी तो वह साँप बन गई। लेकिन हारून की लाठी ने उन की लाठियों को निगल लिया।

13ताहम फ़िरऔन इस से मुतअस्सिर न हुआ। उस ने मूसा और हारून की बात सुनने से इन्कार किया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने कहा था।

पानी ख़ून में बदल जाता है

14फिर रब ने मूसा से कहा, "फ़िरऔन अड़ गया है। वह मेरी क़ौम को मिस्र छोड़ने से रोकता है। 15कल सुब्ह-सवेरे जब वह दरया-ए-नील पर आएगा तो उस से मिलने के लिए दरया के किनारे पर खड़े हो जाना। उस लाठी को थामे रखना जो साँप बन गई थी। 16जब वह वहाँ पहुँचे तो उस से कहना, 'रब इब्रानियों के ख़ुदा ने मुझे आप को यह बताने के लिए भेजा है कि मेरी क़ौम को मेरी इबादत करने के लिए रेगिस्तान में जाने दे। लेकिन आप ने अभी तक उस की नहीं सुनी। 17चुनाँचे अब आप जान लेंगे कि वह रब है। मैं इस लाठी को जो मेरे हाथ में है ले कर दरया-ए-नील के पानी को मारूँगा। फिर वह ख़ून में बदल जाएगा। 18दरया-ए-नील की मछलियाँ मर जाएँगी, दरया से बदबू उठेगी और मिस्री दरया का पानी नहीं पी सकेंगे'।"

19रब ने मूसा से कहा, "हारून को बता देना कि वह अपनी लाठी ले कर अपना हाथ उन

तमाम जगहों की तरफ़ बढ़ाए जहाँ पानी जमा होता है। तब मिस्र की तमाम नदियों, नहरों, जोहड़ों और तालाबों का पानी ख़ून में बदल जाएगा। पूरे मुल्क में ख़ून ही ख़ून होगा, यहाँ तक कि लकड़ी और पत्थर के बर्तनों का पानी भी ख़ून में बदल जाएगा।"

20चुनाँचे मूसा और हारून ने फ़िरऔन और उस के उह्देदारों के सामने अपनी लाठी उठा कर दरया-ए-नील के पानी पर मारी। इस पर दरया का सारा पानी ख़ून में बदल गया। 21दरया की मछलियाँ मर गईं, और उस से इतनी बदबू उठने लगी कि मिस्री उस का पानी न पी सके। मिस्र में चारों तरफ़ ख़ून ही ख़ून था।

22लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू के ज़रीए ऐसा ही किया। इस लिए फ़िरऔन अड़ गया और मूसा और हारून की बात न मानी। वैसा ही हुआ जैसा रब ने कहा था। 23फ़िरऔन पलट कर अपने घर वापस चला गया। उसे उस की परवा नहीं थी जो मूसा और हारून ने किया था। 24लेकिन मिस्री दरया से पानी न पी सके, और उन्हों ने पीने का पानी हासिल करने के लिए दरया के किनारे किनारे गढ़े खोदे। 25पानी के बदल जाने के बाद सात दिन गुज़र गए।

मेंढक

8 फिर रब ने मूसा से कहा, "फ़िरऔन के पास जा कर उसे बता देना कि रब फ़रमाता है, 'मेरी क़ौम को मेरी इबादत करने के लिए जाने दे, 2वर्ना मैं पूरे मिस्र को मेंढकों से सज़ा दूँगा। 3दरया-ए-नील मेंढकों से इतना भर जाएगा कि वह दरया से निकल कर तेरे महल, तेरे सोने के कमरे और तेरे बिस्तर में जा घुसेंगे। वह तेरे उह्देदारों और तेरी रिआया के घरों में आएँगे बल्कि तेरे तनूरों और आटा गूँधने के बर्तनों में भी फुदकते फिरेंगे। 4मेंढक तुझ पर, तेरी क़ौम पर और तेरे उह्देदारों पर चढ़ जाएंगे'।"

5रब ने मूसा से कहा, "हारून को बता देना कि वह अपनी लाठी को हाथ में ले कर उसे दरयाओं, नहरों और जोहड़ों के ऊपर उठाए ताकि मेंढक बाहर निकल कर मिस्र के मुल्क में फैल जाएँ।" 6हारून ने मुल्क-ए-मिस्र के पानी के ऊपर अपनी लाठी उठाई तो मेंढकों के ग़ोल पानी से निकल कर पूरे मुल्क पर छा गए। 7लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया। वह भी दरया से मेंढक निकाल लाए।

8फ़िरऔन ने मूसा और हारून को बुला कर कहा, "रब से दुआ करो कि वह मुझ से और मेरी क़ौम से मेंढकों को दूर करे। फिर मैं तुम्हारी क़ौम को जाने दूँगा ताकि वह रब को क़ुर्बानियाँ पेश करें।"

9मूसा ने जवाब दिया, "वह वक़्त मुक़र्रर करें जब मैं आप के उह्देदारों और आप की क़ौम के लिए दुआ करूँ। फिर जो मेंढक आप के पास और आप के घरों में हैं उसी वक़्त ख़त्म हो जाएंगे। मेंढक सिर्फ़ दरया में पाए जाएंगे।"

10फ़िरऔन ने कहा, "ठीक है, कल उन्हें ख़त्म करो।" मूसा ने कहा, "जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगा। इस तरह आप को मालूम होगा कि हमारे ख़ुदा की मानिन्द कोई नहीं है। 11मेंढक आप, आप के घरों, आप के उह्देदारों और आप की क़ौम को छोड़ कर सिर्फ़ दरया में रह जाएंगे।"

12मूसा और हारून फ़िरऔन के पास से चले गए, और मूसा ने रब से मिन्नत की कि वह मेंढकों के वह ग़ोल दूर करे जो उस ने फ़िरऔन के ख़िलाफ़ भेजे थे। 13रब ने उस की दुआ सुनी। घरों, सहनों और खेतों में मेंढक मर गए। 14लोगों ने उन्हें जमा करके उन के ढेर लगा दिए। उन की बदबू पूरे मुल्क में फैल गई।

15लेकिन जब फ़िरऔन ने देखा कि मसला हल हो गया है तो वह फिर अकड़ गया और उन की न सुनी। यूँ रब की बात दुरुस्त निकली।

जूएँ

16फिर रब ने मूसा से कहा, “हारून से
कहना कि वह अपनी लाठी से ज़मीन की गर्द
को मारे। जब वह ऐसा करेगा तो पूरे मिस्र की
गर्द जूओं में बदल जाएगी।”
17उन्हों ने ऐसा ही किया। हारून ने अपनी
लाठी से ज़मीन की गर्द को मारा तो पूरे
मुल्क की गर्द जूओं में बदल गई। उन के
ग़ोल जानवरों और आदमियों पर छा गए।
18जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा करने
की कोशिश की, लेकिन वह गर्द से जूएँ
न बना सके। जूएँ आदमियों और जानवरों
पर छा गईं। 19जादूगरों ने फ़िरऔन से कहा,
“अल्लाह की क़ुदरत ने यह किया है।” लेकिन
फ़िरऔन ने उन की न सुनी। यूँ रब की बात
दुरुस्त निकली।

काटने वाली मक्खियाँ

20फिर रब ने मूसा से कहा, “जब फ़िरऔन
सुब्ह-सवेरे दरया पर जाए तो तू उस के रास्ते में
खड़ा हो जाना। उसे कहना कि रब फ़रमाता है,
‘मेरी क़ौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत
कर सकें। 21वर्ना मैं तेरे और तेरे उह्देदारों के
पास, तेरी क़ौम के पास और तेरे घरों में काटने
वाली मक्खियाँ भेज दूँगा। मिस्रियों के घर
मक्खियों से भर जाएंगे बल्कि जिस ज़मीन पर
वह खड़े हैं वह भी मक्खियों से ढाँकी जाएगी।
22लेकिन उस वक़्त मैं अपनी क़ौम के साथ
जो जुशन में रहती है फ़र्क़ सुलूक करूँगा।
वहाँ एक भी काटने वाली मक्खी नहीं होगी।
इस तरह तुझे पता लगेगा कि इस मुल्क में मैं
ही रब हूँ। 23मैं अपनी क़ौम और तेरी क़ौम
में इम्तियाज़ करूँगा। कल ही मेरी क़ुदरत का
इज़हार होगा’।”
24रब ने ऐसा ही किया। काटने वाली
मक्खियों के ग़ोल फ़िरऔन के महल, उस के
उह्देदारों के घरों और पूरे मिस्र में फैल गए।
मुल्क का सत्यानास हो गया।
25फिर फ़िरऔन ने मूसा और हारून को
बुला कर कहा, “चलो, इसी मुल्क में अपने
ख़ुदा को क़ुर्बानियाँ पेश करो।” 26लेकिन मूसा
ने कहा, “यह मुनासिब नहीं है। जो क़ुर्बानियाँ
हम रब अपने ख़ुदा को पेश करेंगे वह मिस्रियों
की नज़र में घिनौनी हैं। अगर हम यहाँ ऐसा
करें तो क्या वह हमें संगसार नहीं करेंगे?
27इस लिए लाज़िम है कि हम तीन दिन का
सफ़र करके रेगिस्तान में ही रब अपने ख़ुदा
को क़ुर्बानियाँ पेश करें जिस तरह उस ने हमें
हुक्म भी दिया है।”
28फ़िरऔन ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं
तुम्हें जाने दूँगा ताकि तुम रेगिस्तान में रब
अपने ख़ुदा को क़ुर्बानियाँ पेश करो। लेकिन
तुम्हें ज़्यादा दूर नहीं जाना है। और मेरे लिए
भी दुआ करना।”
29मूसा ने कहा, “ठीक, मैं जाते ही रब से
दुआ करूँगा। कल ही मक्खियाँ फ़िरऔन,
उस के उह्देदारों और उस की क़ौम से दूर हो
जाएँगी। लेकिन हमें दुबारा फ़रेब न देना बल्कि
हमें जाने देना ताकि हम रब को क़ुर्बानियाँ पेश
कर सकें।”
30फिर मूसा फ़िरऔन के पास से चला गया
और रब से दुआ की। 31रब ने मूसा की दुआ
सुनी। काटने वाली मक्खियाँ फ़िरऔन, उस
के उह्देदारों और उस की क़ौम से दूर हो गईं।
एक भी मक्खी न रही। 32लेकिन फ़िरऔन
फिर अकड़ गया। उस ने इस्राईलियों को जाने
न दिया।

मवेशियों में वबा

9 फिर रब ने मूसा से कहा, “फ़िरऔन के
पास जा कर उसे बता कि रब इब्रानियों
का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मेरी क़ौम को जाने दे
ताकि वह मेरी इबादत कर सकें।’ 2अगर आप
इन्कार करें और उन्हें रोकते रहें 3तो रब अपनी
क़ुदरत का इज़हार करके आप के मवेशियों में
भयानक वबा फैला देगा जो आप के घोड़ों,
गधों, ऊँटों, गाय-बैलों, भेड़-बकरियों और

मेंढों में फैल जाएगी। 4लेकिन रब इस्राईल और मिस्र के मवेशियों में इम्तियाज़ करेगा। इस्राईलियों का एक भी जानवर नहीं मरेगा। 5रब ने फ़ैसला कर लिया है कि वह कल ही ऐसा करेगा।"

6अगले दिन रब ने ऐसा ही किया। मिस्र के तमाम मवेशी मर गए, लेकिन इस्राईलियों का एक भी जानवर न मरा। 7फ़िरऔन ने कुछ लोगों को उन के पास भेज दिया तो पता चला कि एक भी जानवर नहीं मरा। ताहम फ़िरऔन अड़ा रहा। उस ने इस्राईलियों को जाने न दिया।

फोड़े-फुंसियाँ

8फिर रब ने मूसा और हारून से कहा, "अपनी मुट्ठियाँ किसी भट्टी की राख से भर कर फ़िरऔन के पास जाओ। फिर मूसा फ़िरऔन के सामने यह राख हवा में उड़ा दे। 9यह राख बारीक धूल का बादल बन जाएगी जो पूरे मुल्क पर छा जाएगा। उस के असर से लोगों और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ फूट निकलेंगे।"

10मूसा और हारून ने ऐसा ही किया। वह किसी भट्टी से राख ले कर फ़िरऔन के सामने खड़े हो गए। मूसा ने राख को हवा में उड़ा दिया तो इन्सानों और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ निकल आए। 11इस मर्तबा जादूगर मूसा के सामने खड़े भी न हो सके क्यूँकि उन के जिस्मों पर भी फोड़े निकल आए थे। तमाम मिस्रियों का यही हाल था। 12लेकिन रब ने फ़िरऔन को ज़िद्दी बनाए रखा, इस लिए उस ने मूसा और हारून की न सुनी। यूँ वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा को बताया था।

ओले

13इस के बाद रब ने मूसा से कहा, "सुब्ह-सवेरे उठ और फ़िरऔन के सामने खड़े हो कर उसे बता कि रब इब्रानियों का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मेरी क़ौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें। 14वर्ना मैं अपनी तमाम आफ़तें तुझ पर, तेरे उह्देदारों पर और तेरी क़ौम पर आने दूँगा। फिर तू जान लेगा कि तमाम दुनिया में मुझ जैसा कोई नहीं है। 15अगर मैं चाहता तो अपनी क़ुदरत से ऐसी वबा फैला सकता कि तुझे और तेरी क़ौम को दुनिया से मिटा दिया जाता। 16लेकिन मैं ने तुझे इस लिए बरपा किया है कि तुझ पर अपनी क़ुदरत का इज़हार करूँ और यूँ तमाम दुनिया में मेरे नाम का प्रचार किया जाए। 17तू अभी तक अपने आप को सरफ़राज़ करके मेरी क़ौम के ख़िलाफ़ है और उन्हें जाने नहीं देता। 18इस लिए कल मैं इसी वक़्त भयानक क़िस्म के ओलों का तूफ़ान भेज दूँगा। मिस्री क़ौम की इब्तिदा से ले कर आज तक मिस्र में ओलों का ऐसा तूफ़ान कभी नहीं आया होगा। 19अपने बन्दों को अभी भेजना ताकि वह तेरे मवेशियों को और खेतों में पड़े तेरे माल को ला कर महफ़ूज़ कर लें। क्यूँकि जो भी खुले मैदान में रहेगा वह ओलों से मर जाएगा, ख़्वाह इन्सान हो या हैवान'।"

20फ़िरऔन के कुछ उह्देदार रब का पैग़ाम सुन कर डर गए और भाग कर अपने जानवरों और ग़ुलामों को घरों में ले आए। 21लेकिन दूसरों ने रब के पैग़ाम की परवा न की। उन के जानवर और ग़ुलाम बाहर खुले मैदान में रहे।

22रब ने मूसा से कहा, "अपना हाथ आसमान की तरफ़ बढ़ा दे। फिर मिस्र के तमाम इन्सानों, जानवरों और खेतों के पौदों पर ओले पड़ेंगे।" 23मूसा ने अपनी लाठी आसमान की तरफ़ उठाई तो रब ने एक ज़बरदस्त तूफ़ान भेज दिया। ओले पड़े, बिजली गिरी और बादल गरजते रहे। 24ओले पड़ते रहे और बिजली चमकती रही। मिस्री क़ौम की इब्तिदा से ले कर अब तक ऐसे ख़तरनाक ओले कभी नहीं पड़े थे। 25इन्सानों से ले कर हैवानों तक खेतों में सब कुछ बर्बाद हो गया। ओलों ने खेतों में तमाम पौदे और

दरख़्त भी तोड़ दिए। 26वह सिर्फ़ जुशन के
इलाक़े में न पड़े जहाँ इस्राईली आबाद थे।
27तब फ़िरऔन ने मूसा और हारून को
बुलाया। उस ने कहा, "इस मर्तबा मैं ने गुनाह
किया है। रब हक़ पर है। मुझ से और मेरी क़ौम
से ग़लती हुई है। 28ओले और अल्लाह की
गरजती आवाज़ें हद से ज़्यादा हैं। रब से दुआ
करो ताकि ओले रुक जाएँ। अब मैं तुम्हें जाने
दूँगा। अब से तुम्हें यहाँ रहना नहीं पड़ेगा।"
29मूसा ने फ़िरऔन से कहा, "मैं शहर से
निकल कर दोनों हाथ रब की तरफ़ उठा
कर दुआ करूँगा। फिर गरज और ओले रुक
जाएंगे और आप जान लेंगे कि पूरी दुनिया
रब की है। 30लेकिन मैं जानता हूँ कि आप
और आप के उह्देदार अभी तक रब ख़ुदा का
ख़ौफ़ नहीं मानते।"
31उस वक़्त सन के फूल निकल चुके थे और
जौ की बालें लग गई थीं। इस लिए यह फ़सलें
तबाह हो गईं। 32लेकिन गेहूँ और एक और
क़िस्म की गन्दुम जो बाद में पकती है बर्बाद
न हुई।
33मूसा फ़िरऔन को छोड़ कर शहर से
निकला। उस ने रब की तरफ़ अपने हाथ
उठाए तो गरज, ओले और बारिश का तूफ़ान
रुक गया। 34जब फ़िरऔन ने देखा कि तूफ़ान
ख़त्म हो गया है तो वह और उस के उह्देदार
दुबारा गुनाह करके अकड़ गए। 35फ़िरऔन
अड़ा रहा और इस्राईलियों को जाने न दिया।
वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा से कहा था।

टिड्डियाँ

10 फिर रब ने मूसा से कहा,
"फ़िरऔन के पास जा, क्यूँकि
मैं ने उस का और उस के दरबारियों का दिल
सख़्त कर दिया है ताकि उन के दरमियान
अपने मोजिज़ों और अपनी क़ुदरत का
इज़हार कर सकूँ 2और तुम अपने बेटे-बेटियों
और पोते-पोतियों को सुना सको कि मैं ने
मिस्रियों के साथ क्या सुलूक किया है और
उन के दरमियान किस तरह के मोजिज़े करके
अपनी क़ुदरत का इज़हार किया है। यूँ तुम
जान लोगे कि मैं रब हूँ।"
3मूसा और हारून फ़िरऔन के पास गए।
उन्हों ने उस से कहा, "रब इब्रानियों के
ख़ुदा का फ़रमान है, 'तू कब तक मेरे सामने
हथियार डालने से इन्कार करेगा? मेरी क़ौम
को मेरी इबादत करने के लिए जाने दे, 4वर्ना
मैं कल तेरे मुल्क में टिड्डियाँ लाऊँगा। 5उन
के ग़ोल ज़मीन पर यूँ छा जाएंगे कि ज़मीन
नज़र ही नहीं आएगी। जो कुछ ओलों ने तबाह
नहीं किया उसे वह चट कर जाएँगी। बचे हुए
दरख़्तों के पत्ते भी ख़त्म हो जाएंगे। 6तेरे
महल, तेरे उह्देदारों और बाक़ी लोगों के घर
उन से भर जाएंगे। जब से मिस्री इस मुल्क में
आबाद हुए हैं तुम ने कभी टिड्डियों का ऐसा
सख़्त हम्ला नहीं देखा होगा'।" यह कह कर
मूसा पलट कर वहाँ से चला गया।
7इस पर दरबारियों ने फ़िरऔन से बात की,
"हम कब तक इस मर्द के जाल में फंसे रहें?
इस्राईलियों को रब अपने ख़ुदा की इबादत
करने के लिए जाने दें। क्या आप को अभी
तक मालूम नहीं कि मिस्र बर्बाद हो गया है?"
8तब मूसा और हारून को फ़िरऔन के पास
बुलाया गया। उस ने उन से कहा, "जाओ,
अपने ख़ुदा की इबादत करो। लेकिन यह
बताओ कि कौन कौन साथ जाएगा?" 9मूसा
ने जवाब दिया, "हमारे जवान और बूढ़े साथ
जाएंगे। हम अपने बेटे-बेटियों, भेड़-बकरियों
और गाय-बैलों को भी साथ ले कर जाएंगे।
हम सब के सब जाएंगे, क्यूँकि हमें रब की ईद
मनानी है।"
10फ़िरऔन ने तन्ज़न कहा, "ठीक है,
जाओ और रब तुम्हारे साथ हो। नहीं, मैं किस
तरह तुम सब को बाल-बच्चों समेत जाने दे
सकता हूँ? तुम ने कोई बुरा मन्सूबा बनाया
है। 11नहीं, सिर्फ़ मर्द जा कर रब की इबादत
कर सकते हैं। तुम ने तो यही दरख़्वास्त की

थी।” तब मूसा और हारून को फ़िरऔन के सामने से निकाल दिया गया।

12फिर रब ने मूसा से कहा, “मिस्र पर अपना हाथ उठा ताकि टिड्डियाँ आ कर मिस्र की सरज़मीन पर फैल जाएँ। जो कुछ भी खेतों में ओलों से बच गया है उसे वह खा जाएँगी।”

13मूसा ने अपनी लाठी मिस्र पर उठाई तो रब ने मशरिक़ से आँधी चलाई जो सारा दिन और सारी रात चलती रही और अगली सुब्ह तक मिस्र में टिड्डियाँ पहुँचाईं। 14बेशुमार टिड्डियाँ पूरे मुल्क पर हम्ला करके हर जगह बैठ गईं। इस से पहले या बाद में कभी भी टिड्डियों का इतना सख़्त हम्ला न हुआ था। 15उन्हों ने ज़मीन को यूँ ढाँक लिया कि वह काली नज़र आने लगी। जो कुछ भी ओलों से बच गया था चाहे खेतों के पौदे या दरख़्तों के फल थे उन्हों ने खा लिया। मिस्र में एक भी दरख़्त या पौदा न रहा जिस के पत्ते बच गए हों।

16तब फ़िरऔन ने मूसा और हारून को जल्दी से बुलवाया। उस ने कहा, “मैं ने तुम्हारे ख़ुदा का और तुम्हारा गुनाह किया है। 17अब एक और मर्तबा मेरा गुनाह मुआफ़ करो और रब अपने ख़ुदा से दुआ करो ताकि मौत की यह हालत मुझ से दूर हो जाए।”

18मूसा ने महल से निकल कर रब से दुआ की। 19जवाब में रब ने हवा का रुख़ बदल दिया। उस ने मग़रिब से तेज़ आँधी चलाई जिस ने टिड्डियों को उड़ा कर बहर-ए-क़ुल्ज़ुम में डाल दिया। मिस्र में एक भी टिड्डी न रही। 20लेकिन रब ने होने दिया कि फ़िरऔन फिर अड़ गया। उस ने इस्राईलियों को जाने न दिया।

अंधेरा

21इस के बाद रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठा तो मिस्र पर अंधेरा छा जाएगा। इतना अंधेरा होगा कि बन्दा उसे छू सकेगा।” 22मूसा ने अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठाया तो तीन दिन तक मिस्र पर गहरा अंधेरा छाया रहा। 23तीन दिन तक लोग न एक दूसरे को देख सके, न कहीं जा सके। लेकिन जहाँ इस्राईली रहते थे वहाँ रौशनी थी।

24तब फ़िरऔन ने मूसा को फिर बुलवाया और कहा, “जाओ, रब की इबादत करो! तुम अपने साथ बाल-बच्चों को भी ले जा सकते हो। सिर्फ़ अपनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पीछे छोड़ देना।” 25मूसा ने जवाब दिया, “क्या आप ही हमें क़ुर्बानियों के लिए जानवर देंगे ताकि उन्हें रब अपने ख़ुदा को पेश करें? 26यक़ीनन नहीं। इस लिए लाज़िम है कि हम अपने जानवरों को साथ ले कर जाएँ। एक खुर भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा, क्यूँकि अभी तक हमें मालूम नहीं कि रब की इबादत के लिए किन किन जानवरों की ज़रूरत होगी। यह उस वक़्त ही पता चलेगा जब हम मन्ज़िल-ए-मक़सूद पर पहुँचेंगे। इस लिए ज़रूरी है कि हम सब को अपने साथ ले कर जाएँ।”

27लेकिन रब की मर्ज़ी के मुताबिक़ फ़िरऔन अड़ गया। उस ने उन्हें जाने न दिया। 28उस ने मूसा से कहा, “दफ़ा हो जा। ख़बरदार! फिर कभी अपनी शक्ल न दिखाना, वर्ना तुझे मौत के हवाले कर दिया जाएगा।” 29मूसा ने कहा, “ठीक है, आप की मर्ज़ी। मैं फिर कभी आप के सामने नहीं आऊँगा।”

आख़िरी सज़ा का एलान

11 तब रब ने मूसा से कहा, “अब मैं फ़िरऔन और मिस्र पर आख़िरी आफ़त लाने को हूँ। इस के बाद वह तुम्हें जाने देगा बल्कि तुम्हें ज़बरदस्ती निकाल देगा। 2इस्राईलियों को बता देना कि हर मर्द अपने पड़ोसी और हर औरत अपनी पड़ोसन से सोने-चाँदी की चीज़ें माँग ले।” 3(रब ने मिस्रियों के दिल इस्राईलियों की तरफ़ माइल

कर दिए थे। वह फ़िरऔन के उह्देदारों समेत
ख़ासकर मूसा की बड़ी इज़्ज़त करते थे)।
4मूसा ने कहा, "रब फ़रमाता है, 'आज
आधी रात के वक़्त मैं मिस्र में से गुज़रूँगा।
5तब बादशाह के पहलौठे से ले कर चक्की
पीसने वाली नौकरानी के पहलौठे तक
मिस्रियों का हर पहलौठा मर जाएगा।
चौपाइयों के पहलौठे भी मर जाएंगे। 6मिस्र
की सरज़मीन पर ऐसा रोना पीटना होगा कि
न माज़ी में कभी हुआ, न मुस्तक़बिल में कभी
होगा। 7लेकिन इस्राईली और उन के जानवर
बचे रहेंगे। कुत्ता भी उन पर नहीं भौंकेगा। इस
तरह तुम जान लोगे कि रब इस्राईलियों की
निस्बत मिस्रियों से फ़र्क़ सुलूक करता है'।"
8मूसा ने यह कुछ फ़िरऔन को बताया फिर
कहा, "उस वक़्त आप के तमाम उह्देदार
आ कर मेरे सामने झुक जाएंगे और मिन्नत
करेंगे, 'अपने पैरोकारों के साथ चले जाएँ।'
तब मैं चला ही जाऊँगा।" यह कह कर मूसा
फ़िरऔन के पास से चला गया। वह बड़े ग़ुस्से
में था।
9रब ने मूसा से कहा था, "फ़िरऔन तुम्हारी
नहीं सुनेगा। क्यूँकि लाज़िम है कि मैं मिस्र
में अपनी क़ुदरत का मज़ीद इज़हार करूँ।"
10गो मूसा और हारून ने फ़िरऔन के सामने
यह तमाम मोजिज़े दिखाए, लेकिन रब ने
फ़िरऔन को ज़िद्दी बनाए रखा, इस लिए उस
ने इस्राईलियों को मुल्क छोड़ने न दिया।

फ़सह की ईद

12 फिर रब ने मिस्र में मूसा और
हारून से कहा, 2"अब से यह
महीना तुम्हारे लिए साल का पहला महीना
हो।" 3इस्राईल की पूरी जमाअत को बताना
कि इस महीने के दसवें दिन हर ख़ानदान का
सरपरस्त अपने घराने के लिए लेला यानी भेड़
या बकरी का बच्चा हासिल करे। 4अगर घराने
के अफ़राद पूरा जानवर खाने के लिए कम हों
तो वह अपने सब से क़रीबी पड़ोसी के साथ
मिल कर लेला हासिल करें। इतने लोग उस में
से खाएँ कि सब के लिए काफ़ी हो और पूरा
जानवर खाया जाए। 5इस के लिए एक साल
का नर बच्चा चुन लेना जिस में नुक़्स न हो।
वह भेड़ या बकरी का बच्चा हो सकता है।
6महीने के 14वें दिन तक उस की देख-
भाल करो। उस दिन तमाम इस्राईली सूरज
के ग़ुरूब होते वक़्त अपने लेले ज़बह करें।
7हर ख़ानदान अपने जानवर का कुछ ख़ून
जमा करके उसे उस घर के दरवाज़े की चौखट
पर लगाए जहाँ लेला खाया जाएगा। यह ख़ून
चौखट के ऊपर वाले हिस्से और दाएँ बाएँ के
बाज़ूओं पर लगाया जाए। 8लाज़िम है कि लोग
जानवर को भून कर उसी रात खाएँ। साथ ही
वह कड़वा साग-पात और बेख़मीरी रोटियाँ
भी खाएँ। 9लेले का गोश्त कच्चा न खाना, न
उसे पानी में उबालना बल्कि पूरे जानवर को
सर, पैरों और अन्दरूनी हिस्सों समेत आग
पर भूनना। 10लाज़िम है कि पूरा गोश्त उसी
रात खाया जाए। अगर कुछ सुब्ह तक बच
जाए तो उसे जलाना है। 11खाना खाते वक़्त
ऐसा लिबास पहनना जैसे तुम सफ़र पर जा
रहे हो। अपने जूते पहने रखना और हाथ में
सफ़र के लिए लाठी लिए हुए तुम उसे जल्दी
जल्दी खाना। रब के फ़सह की ईद यूँ मनाना।
12मैं आज रात मिस्र में से गुज़रूँगा और
हर पहलौठे को जान से मार दूँगा, ख़्वाह
इन्सान का हो या हैवान का। यूँ मैं जो रब हूँ
मिस्र के तमाम देवताओं की अदालत करूँगा।
13लेकिन तुम्हारे घरों पर लगा हुआ ख़ून
तुम्हारा ख़ास निशान होगा। जिस जिस घर
के दरवाज़े पर मैं वह ख़ून देखूँगा उसे छोड़ता
जाऊँगा। जब मैं मिस्र पर हम्ला करूँगा तो
मोहलक वबा तुम तक नहीं पहुँचेगी। 14आज
की रात को हमेशा याद रखना। इसे नस्ल-दर-
नस्ल और हर साल रब की ख़ास ईद के तौर
पर मनाना।

बेख़मीरी रोटी की ईद

15सात दिन तक बेख़मीरी रोटी खाना है।
पहले दिन अपने घरों से तमाम ख़मीर निकाल
देना। अगर कोई इन सात दिनों के दौरान
ख़मीर खाए तो उसे क़ौम में से मिटाया
जाए। 16इस ईद के पहले और आख़िरी
दिन मुक़द्दस इजतिमा मुनअक़िद करना। इन
तमाम दिनों के दौरान काम न करना। सिर्फ़
एक काम की इजाज़त है और वह है अपना
खाना तय्यार करना। 17बेख़मीरी रोटी की ईद
मनाना लाज़िम है, क्यूँकि उस दिन मैं तुम्हारे
मुतअद्दिद ख़ानदानों को मिस्र से निकाल
लाया। इस लिए यह दिन नस्ल-दर-नस्ल हर
साल याद रखना। 18पहले महीने के 14वें दिन
की शाम से ले कर 21वें दिन की शाम तक
सिर्फ़ बेख़मीरी रोटी खाना। 19सात दिन तक
तुम्हारे घरों में ख़मीर न पाया जाए। जो भी इस
दौरान ख़मीर खाए उसे इस्राईल की जमाअत
में से मिटाया जाए, ख़्वाह वह इस्राईली शहरी
हो या अजनबी। 20ग़रज़, इस ईद के दौरान
ख़मीर न खाना। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ
बेख़मीरी रोटी ही खाना है।

पहलौठों की हलाकत

21फिर मूसा ने तमाम इस्राईली बुज़ुर्गों
को बुला कर उन से कहा, “जाओ, अपने
ख़ानदानों के लिए भेड़ या बकरी के बच्चे चुन
कर उन्हें फ़सह की ईद के लिए ज़बह करो।
22ज़ूफ़े का गुच्छा ले कर उसे ख़ून से भरे हुए
बासन में डुबो देना। फिर उसे ले कर ख़ून को
चौखट के ऊपर वाले हिस्से और दाएँ बाएँ के
बाज़ूओं पर लगा देना। सुब्ह तक कोई अपने
घर से न निकले। 23जब रब मिस्रियों को मार
डालने के लिए मुल्क में से गुज़रेगा तो वह
चौखट के ऊपर वाले हिस्से और दाएँ बाएँ के
बाज़ूओं पर लगा हुआ ख़ून देख कर उन घरों
को छोड़ देगा। वह हलाक करने वाले फ़रिश्ते
को इजाज़त नहीं देगा कि वह तुम्हारे घरों में
जा कर तुम्हें हलाक करे।

24तुम अपनी औलाद समेत हमेशा इन
हिदायात पर अमल करना। 25यह रस्म उस
वक़्त भी अदा करना जब तुम उस मुल्क में
पहुँचोगे जो रब तुम्हें देगा। 26और जब तुम्हारे
बच्चे तुम से पूछें कि हम यह ईद क्यूँ मनाते
हैं 27तो उन से कहो, ‘यह फ़सह की क़ुर्बानी
है जो हम रब को पेश करते हैं। क्यूँकि जब
रब मिस्रियों को हलाक कर रहा था तो उस ने
हमारे घरों को छोड़ दिया था’।”

यह सुन कर इस्राईलियों ने अल्लाह को
सिज्दा किया। 28फिर उन्हों ने सब कुछ वैसा
ही किया जैसा रब ने मूसा और हारून को
बताया था।

29आधी रात को रब ने बादशाह के पहलौठे
से ले कर जेल के क़ैदी के पहलौठे तक
मिस्रियों के तमाम पहलौठों को जान से मार
दिया। चौपाइयों के पहलौठे भी मर गए। 30उस
रात मिस्र के हर घर में कोई न कोई मर गया।
फ़िरऔन, उस के उह्देदार और मिस्र के तमाम
लोग जाग उठे और ज़ोर ज़ोर से रोने और
चीख़ने लगे।

इस्राईलियों की हिज्रत

31अभी रात थी कि फ़िरऔन ने मूसा और
हारून को बुला कर कहा, “अब तुम और
बाक़ी इस्राईली मेरी क़ौम में से निकल जाओ।
अपनी दरख़्वास्त के मुताबिक़ रब की इबादत
करो। 32जिस तरह तुम चाहते हो अपनी भेड़-
बकरियों को भी अपने साथ ले जाओ। और
मुझे भी बरकत देना।” 33बाक़ी मिस्रियों ने
भी इस्राईलियों पर ज़ोर दे कर कहा, “जल्दी
जल्दी मुल्क से निकल जाओ, वर्ना हम सब
मर जाएंगे।”

34इस्राईलियों के गूँधे हुए आटे में ख़मीर
नहीं था। उन्हों ने उसे गूँधने के बर्तनों में
रख कर अपने कपड़ों में लपेट लिया और
सफ़र करते वक़्त अपने कंधों पर रख लिया।
35इस्राईली मूसा की हिदायत पर अमल करके
अपने मिस्री पड़ोसियों के पास गए और उन से

कपड़े और सोने-चाँदी की चीज़ें माँगीं। 36रब ने मिस्रियों के दिलों को इस्राईलियों की तरफ़ माइल कर दिया था, इस लिए उन्हों ने उन की हर दरख़्वास्त पूरी की। यूँ इस्राईलियों ने मिस्रियों को लूट लिया।

37इस्राईली रामसीस से रवाना हो कर सुक्कात पहुँच गए। औरतों और बच्चों को छोड़ कर उन के 6 लाख मर्द थे। 38वह अपने भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के बड़े बड़े रेवड़ भी साथ ले गए। बहुत से ऐसे लोग भी उन के साथ निकले जो इस्राईली नहीं थे। 39रास्ते में उन्हों ने उस बेख़मीरी आटे से रोटियाँ बनाईं जो वह साथ ले कर निकले थे। आटे में इस लिए ख़मीर नहीं था कि उन्हें इतनी जल्दी से मिस्र से निकाल दिया गया था कि खाना तय्यार करने का वक़्त ही न मिला था।

40इस्राईली 430 साल तक मिस्र में रहे थे। 41430 साल के ऐन बाद, उसी दिन रब के यह तमाम ख़ानदान मिस्र से निकले। 42उस ख़ास रात रब ने ख़ुद पहरा दिया ताकि इस्राईली मिस्र से निकल सकें। इस लिए तमाम इस्राईलियों के लिए लाज़िम है कि वह नस्ल-दर-नस्ल इस रात रब की ताज़ीम में जागते रहें, वह भी और उन के बाद की औलाद भी।

फ़सह की ईद की हिदायात

43रब ने मूसा और हारून से कहा, "फ़सह की ईद के यह उसूल हैं :

किसी भी परदेसी को फ़सह की ईद का खाना खाने की इजाज़त नहीं है। 44अगर तुम ने किसी ग़ुलाम को ख़रीद कर उस का ख़तना किया है तो वह फ़सह का खाना खा सकता है। 45लेकिन ग़ैरशहरी या मज़दूर को फ़सह का खाना खाने की इजाज़त नहीं है। 46यह खाना एक ही घर के अन्दर खाना है। न गोश्त घर से बाहर ले जाना, न लेले की किसी हड्डी को तोड़ना। 47लाज़िम है कि इस्राईल की पूरी जमाअत यह ईद मनाए। 48अगर कोई परदेसी तुम्हारे साथ रहता है जो फ़सह की ईद में शिर्कत करना चाहे तो लाज़िम है कि पहले उस के घराने के हर मर्द का ख़तना किया जाए। तब वह इस्राईली की तरह खाने में शरीक हो सकता है। लेकिन जिस का ख़तना न हुआ उसे फ़सह का खाना खाने की इजाज़त नहीं है। 49यही उसूल हर एक पर लागू होगा, ख़्वाह वह इस्राईली हो या परदेसी।"

50तमाम इस्राईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा और हारून से कहा था। 51उसी दिन रब तमाम इस्राईलियों को ख़ानदानों की तरतीब के मुताबिक़ मिस्र से निकाल लाया।

यह ईद नजात की याद दिलाती

13 रब ने मूसा से कहा, 2"इस्राईलियों के हर पहलौठे को मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करना है। हर पहला नर बच्चा मेरा ही है, ख़्वाह इन्सान का हो या हैवान का।" 3फिर मूसा ने लोगों से कहा, "इस दिन को याद रखो जब तुम रब की अज़ीम क़ुदरत के बाइस मिस्र की ग़ुलामी से निकले। इस दिन कोई चीज़ न खाना जिस में ख़मीर हो। 4आज ही अबीब के महीने[a] में तुम मिस्र से रवाना हो रहे हो। 5रब ने तुम्हारे बापदादा से क़सम खा कर वादा किया है कि वह तुम को कनआनी, हित्ती, अमोरी, हिव्वी और यबूसी क़ौमों का मुल्क देगा, एक ऐसा मुल्क जिस में दूध और शहद की कस्रत है। जब रब तुम्हें उस मुल्क में पहुँचा देगा तो लाज़िम है कि तुम इसी महीने में यह रस्म मनाओ। 6सात दिन बेख़मीरी रोटी खाओ। सातवें दिन रब की ताज़ीम में ईद मनाओ। 7सात दिन ख़मीरी रोटी न खाना। कहीं भी ख़मीर न पाया जाए। पूरे मुल्क में ख़मीर का नाम-ओ-निशान तक न हो।

8उस दिन अपने बेटे से यह कहो, 'मैं यह ईद उस काम की ख़ुशी में मनाता हूँ जो रब ने मेरे लिए किया जब मैं मिस्र से निकला।'

[a]मार्च ता अप्रैल।

9यह ईद तुम्हारे हाथ या पेशानी पर निशान
की मानिन्द हो जो तुम्हें याद दिलाए कि रब की
शरीअत को तुम्हारे होंटों पर रहना है। क्यूँकि
रब तुम्हें अपनी अज़ीम क़ुदरत से मिस्र से
निकाल लाया। 10इस दिन की याद हर साल
ठीक वक़्त पर मनाना।

पहलौठों की मख़्सूसियत

11रब तुम्हें कनआनियों के उस मुल्क में
ले जाएगा जिस का वादा उस ने क़सम खा
कर तुम और तुम्हारे बापदादा से किया है।
12लाज़िम है कि वहाँ पहुँच कर तुम अपने
तमाम पहलौठों को रब के लिए मख़्सूस करो।
तुम्हारे मवेशियों के तमाम पहलौठे भी रब की
मिलकियत हैं। 13अगर तुम अपना पहलौठा
गधा ख़ुद रखना चाहो तो रब को उस के बदले
भेड़ या बकरी का बच्चा पेश करो। लेकिन
अगर तुम उसे रखना नहीं चाहते तो उस की
गर्दन तोड़ डालो। लेकिन इन्सान के पहलौठों
के लिए हर सूरत में इवज़ी देना है।

14आने वाले दिनों में जब तुम्हारा बेटा पूछे
कि इस का क्या मतलब है तो उसे जवाब देना,
'रब अपनी अज़ीम क़ुदरत से हमें मिस्र की
ग़ुलामी से निकाल लाया। 15जब फ़िरऔन ने
अकड़ कर हमें जाने न दिया तो रब ने मिस्र के
तमाम इन्सानों और हैवानों के पहलौठों को
मार डाला। इस वजह से मैं अपने जानवरों
का हर पहला बच्चा रब को क़ुर्बान करता
और अपने हर पहलौठे के लिए इवज़ी देता
हूँ'। 16यह दस्तूर तुम्हारे हाथ और पेशानी पर
निशान की मानिन्द हो जो तुम्हें याद दिलाए
कि रब हमें अपनी क़ुदरत से मिस्र से निकाल
लाया।"

मिस्र से निकलने का रास्ता

17जब फ़िरऔन ने इस्राईली क़ौम को जाने
दिया तो अल्लाह उन्हें फ़िलिस्तियों के इलाक़े
में से गुज़रने वाले रास्ते से ले कर न गया,
अगरचे उस पर चलते हुए वह जल्द ही मुल्क-
ए-कनआन पहुँच जाते। बल्कि रब ने कहा,
"अगर उस रास्ते पर चलेंगे तो उन्हें दूसरों से
लड़ना पड़ेगा। ऐसा न हो कि वह इस वजह
से अपना इरादा बदल कर मिस्र लौट जाएँ।"
18इस लिए अल्लाह उन्हें दूसरे रास्ते से ले कर
गया, और वह रेगिस्तान के रास्ते से बहर-
ए-क़ुल्ज़ुम की तरफ़ बढ़े। मिस्र से निकलते
वक़्त मर्द मुसल्लह थे। 19मूसा यूसुफ़ का
ताबूत भी अपने साथ ले गया, क्यूँकि यूसुफ़
ने इस्राईलियों को क़सम दिला कर कहा था,
"अल्लाह यक़ीनन तुम्हारी देख-भाल करके
वहाँ ले जाएगा। उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी
उठा कर साथ ले जाना।"

20इस्राईलियों ने सुक्कात को छोड़ कर
एताम में अपने ख़ैमे लगाए। एताम रेगिस्तान
के किनारे पर था। 21रब उन के आगे आगे
चलता गया, दिन के वक़्त बादल के सतून
में ताकि उन्हें रास्ते का पता लगे और रात
के वक़्त आग के सतून में ताकि उन्हें रौशनी
मिले। यूँ वह दिन और रात सफ़र कर सकते
थे। 22दिन के वक़्त बादल का सतून और रात
के वक़्त आग का सतून उन के सामने रहा।
वह कभी भी अपनी जगह से न हटा।

इस्राईल समुन्दर में से गुज़रता है

14 तब रब ने मूसा से कहा,
2"इस्राईलियों को कह देना कि वह
पीछे मुड़ कर मिज्दाल और समुन्दर के बीच
यानी फ़ी-हख़ीरोत के नज़दीक रुक जाएँ। वह
बाल-सफ़ोन के मुक़ाबिल साहिल पर अपने
ख़ैमे लगाएँ। 3यह देख कर फ़िरऔन समझेगा
कि इस्राईली रास्ता भूल कर आवारा फिर रहे
हैं और कि रेगिस्तान ने चारों तरफ़ उन्हें घेर
रखा है। 4फिर मैं फ़िरऔन को दुबारा अड़
जाने दूँगा, और वह इस्राईलियों का पीछा
करेगा। लेकिन मैं फ़िरऔन और उस की
पूरी फ़ौज पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा।
मिस्री जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।" इस्राईलियों
ने ऐसा ही किया।

5जब मिस्र के बादशाह को इत्तिला दी गई
कि इस्राईली हिज्रत कर गए हैं तो उस ने और
उस के दरबारियों ने अपना ख़याल बदल कर
कहा, “हम ने क्या किया है? हम ने उन्हें जाने
दिया है, और अब हम उन की ख़िदमत से
महरूम हो गए हैं।” 6चुनाँचे बादशाह ने अपना
जंगी रथ तय्यार करवाया और अपनी फ़ौज
को ले कर निकला। 7वह 600 बेहतरीन क़िस्म
के रथ और मिस्र के बाक़ी तमाम रथों को साथ
ले गया। तमाम रथों पर अफ़्सरान मुक़र्रर थे।
8रब ने मिस्र के बादशाह फ़िरऔन को दुबारा
अड़ जाने दिया था, इस लिए जब इस्राईली
बड़े इख़तियार के साथ निकल रहे थे तो वह
उन का ताक़्क़ुब करने लगा। 9इस्राईलियों का
पीछा करते करते फ़िरऔन के तमाम घोड़े,
रथ, सवार और फ़ौजी उन के क़रीब पहुँचे।
इस्राईली बहर-ए-क़ुल्ज़ुम के साहिल पर बाल-
सफ़ोन के मुक़ाबिल फ़ी-हख़ीरोत के नज़दीक
ख़ैमे लगा चुके थे।

10जब इस्राईलियों ने फ़िरऔन और उस की
फ़ौज को अपनी तरफ़ बढ़ते देखा तो वह
सख़्त घबरा गए और मदद के लिए रब के
सामने चीख़ने-चिल्लाने लगे। 11उन्हों ने मूसा
से कहा, “क्या मिस्र में क़ब्रों की कमी थी कि
आप हमें रेगिस्तान में ले आए हैं? हमें मिस्र
से निकाल कर आप ने हमारे साथ क्या किया
है? 12क्या हम ने मिस्र में आप से दरख़्वास्त
नहीं की थी कि मेहरबानी करके हमें छोड़ दें,
हमें मिस्रियों की ख़िदमत करने दें? यहाँ आ
कर रेगिस्तान में मर जाने की निस्बत बेहतर
होता कि हम मिस्रियों के ग़ुलाम रहते।”

13लेकिन मूसा ने जवाब दिया, “मत
घबराओ। आराम से खड़े रहो और देखो कि
रब तुम्हें आज किस तरह बचाएगा। आज
के बाद तुम इन मिस्रियों को फिर कभी नहीं
देखोगे। 14रब तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम्हें बस,
चुप रहना है।”

15फिर रब ने मूसा से कहा, “तू मेरे सामने
क्यूँ चीख़ रहा है? इस्राईलियों को आगे बढ़ने
का हुक्म दे। 16अपनी लाठी को पकड़ कर
उसे समुन्दर के ऊपर उठा तो वह दो हिस्सों
में बट जाएगा। इस्राईली ख़ुश्क ज़मीन पर
समुन्दर में से गुज़रेंगे। 17मैं मिस्रियों को अड़े
रहने दूँगा ताकि वह इस्राईलियों का पीछा करें।
फिर मैं फ़िरऔन, उस की सारी फ़ौज, उस के
रथों और उस के सवारों पर अपना जलाल
ज़ाहिर करूँगा। 18जब मैं फ़िरऔन, उस के
रथों और उस के सवारों पर अपना जलाल
ज़ाहिर करूँगा तो मिस्री जान लेंगे कि मैं ही
रब हूँ।”

19अल्लाह का फ़रिश्ता इस्राईली लश्कर के
आगे आगे चल रहा था। अब वह वहाँ से हट
कर उन के पीछे खड़ा हो गया। बादल का
सतून भी लोगों के आगे से हट कर उन के पीछे
जा खड़ा हुआ। 20इस तरह बादल मिस्रियों
और इस्राईलियों के लश्करों के दरमियान
आ गया। पूरी रात मिस्रियों की तरफ़ अंधेरा
ही अंधेरा था जबकि इस्राईलियों की तरफ़
रौशनी थी। इस लिए मिस्री पूरी रात के दौरान
इस्राईलियों के क़रीब न आ सके।

21मूसा ने अपना हाथ समुन्दर के ऊपर
उठाया तो रब ने मशरिक़ से तेज़ आँधी चलाई।
आँधी तमाम रात चलती रही। उस ने समुन्दर
को पीछे हटा कर उस की तह ख़ुश्क कर दी।
समुन्दर दो हिस्सों में बट गया 22तो इस्राईली
समुन्दर में से ख़ुश्क ज़मीन पर चलते हुए गुज़र
गए। उन के दाईं और बाईं तरफ़ पानी दीवार
की तरह खड़ा रहा।

23जब मिस्रियों को पता चला तो फ़िरऔन
के तमाम घोड़े, रथ और घुड़सवार भी उन के
पीछे पीछे समुन्दर में चले गए। 24सुब्ह-सवेरे
ही रब ने बादल और आग के सतून से मिस्र
की फ़ौज पर निगाह की और उस में अब्तरी
पैदा कर दी। 25उन के रथों के पहिए निकल
गए तो उन पर क़ाबू पाना मुश्किल हो गया।
मिस्रियों ने कहा, “आओ, हम इस्राईलियों से
भाग जाएँ, क्यूँकि रब उन के साथ है। वही
मिस्र का मुक़ाबला कर रहा है।”

26तब रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ
समुन्दर के ऊपर उठा। फिर पानी वापस आ
कर मिस्रियों, उन के रथों और घुड़सवारों को
डुबो देगा।” 27मूसा ने अपना हाथ समुन्दर
के ऊपर उठाया तो दिन निकलते वक़्त पानी
मामूल के मुताबिक़ बहने लगा, और जिस
तरफ़ मिस्री भाग रहे थे वहाँ पानी ही पानी
था। यूँ रब ने उन्हें समुन्दर में बहा कर ग़र्क़
कर दिया। 28पानी वापस आ गया। उस ने
रथों और घुड़सवारों को ढाँक लिया। फ़िरऔन
की पूरी फ़ौज जो इस्राईलियों का ताक़्क़ुब कर
रही थी डूब कर तबाह हो गई। उन में से एक
भी न बचा। 29लेकिन इस्राईली ख़ुश्क ज़मीन
पर समुन्दर में से गुज़रे। उन के दाईं और बाईं
तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।
30उस दिन रब ने इस्राईलियों को मिस्रियों
से बचाया। मिस्रियों की लाशें उन्हें साहिल पर
नज़र आईं। 31जब इस्राईलियों ने रब की यह
अज़ीम क़ुदरत देखी जो उस ने मिस्रियों पर
ज़ाहिर की थी तो रब का ख़ौफ़ उन पर छा
गया। वह उस पर और उस के ख़ादिम मूसा
पर एतिमाद करने लगे।

मूसा का गीत

15 तब मूसा और इस्राईलियों ने रब के
लिए यह गीत गाया,
“मैं रब की तम्जीद में गीत गाऊँगा, क्यूँकि
वह निहायत अज़ीम है। घोड़े और उस के
सवार को उस ने समुन्दर में पटख़ दिया है।

2रब मेरी क़ुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी
नजात बन गया है। वही मेरा ख़ुदा है, और
मैं उस की तारीफ़ करूँगा। वही मेरे बाप का
ख़ुदा है, और मैं उस की ताज़ीम करूँगा।
3रब सूरमा है, रब उस का नाम है।
4फ़िरऔन के रथों और फ़ौज को उस
ने समुन्दर में पटख़ दिया तो बादशाह के
बेहतरीन अफ़्सरान बहर-ए-क़ुल्ज़ुम में डूब
गए।
5गहरे पानी ने उन्हें ढाँक लिया, और वह
पत्थर की तरह समुन्दर की तह तक उतर गए।

6ऐ रब, तेरे दहने हाथ का जलाल बड़ी
क़ुदरत से ज़ाहिर होता है। ऐ रब, तेरा दहना
हाथ दुश्मन को चकनाचूर कर देता है।
7जो तेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े होते हैं उन्हें तू
अपनी अज़मत का इज़हार करके ज़मीन पर
पटख़ देता है। तेरा ग़ज़ब उन पर आन पड़ता
है तो वह आग में भूसे की तरह जल जाते हैं।
8तू ने ग़ुस्से में आ कर फूँक मारी तो पानी
ढेर की सूरत में जमा हो गया। बहता पानी
ठोस दीवार बन गया, समुन्दर गहराई तक जम
गया।
9दुश्मन ने डींग मार कर कहा, ‘मैं उन का
पीछा करके उन्हें पकड़ लूँगा, मैं उन का लूटा
हुआ माल तक़्सीम करूँगा। मेरी लालची जान
उन से सेर हो जाएगी, मैं अपनी तलवार खैंच
कर उन्हें हलाक करूँगा।’
10लेकिन तू ने उन पर फूँक मारी तो समुन्दर
ने उन्हें ढाँक लिया, और वह सीसे की तरह
ज़ोरदार मौजों में डूब गए।

11ऐ रब, कौन सा माबूद तेरी मानिन्द है?
कौन तेरी तरह जलाली और क़ुद्दूस है? कौन
तेरी तरह हैरतअंगेज़ काम करता और अज़ीम
मोजिज़े दिखाता है? कोई भी नहीं।
12तू ने अपना दहना हाथ उठाया तो ज़मीन
हमारे दुश्मनों को निगल गई।
13अपनी शफ़्क़त से तू ने इवज़ाना दे कर
अपनी क़ौम को छुटकारा दिया और उस की
राहनुमाई की है, अपनी क़ुदरत से तू ने उसे
अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह तक पहुँचाया है।
14यह सुन कर दीगर क़ौमें काँप उठीं,
फ़िलिस्ती डर के मारे पेच-ओ-ताब खाने लगे।
15अदोम के रईस सहम गए, मोआब के
राहनुमाओं पर कपकपी तारी हो गई, और
कनआन के तमाम बाशिन्दे हिम्मत हार गए।

16दह्शत और ख़ौफ़ उन पर छा गया। तेरी
अज़ीम क़ुदरत के बाइस वह पत्थर की तरह
जम गए। ऐ रब, वह न हिले जब तक तेरी क़ौम
गुज़र न गई। वह बेहिस्स-ओ-हरकत रहे जब
तक तेरी ख़रीदी हुई क़ौम गुज़र न गई।
17ऐ रब, तू अपने लोगों को ले कर पौदों की
तरह अपने मौरूसी पहाड़ पर लगाएगा, उस
जगह पर जो तू ने अपनी सुकूनत के लिए चुन
ली है, जहाँ तू ने अपने हाथों से अपना मक़्दिस
तय्यार किया है।
18रब अबद तक बादशाह है!"

19जब फ़िरऔन के घोड़े, रथ और घुड़सवार
समुन्दर में चले गए तो रब ने उन्हें समुन्दर के
पानी से ढाँक लिया। लेकिन इस्राईली ख़ुश्क
ज़मीन पर समुन्दर में से गुज़र गए। 20तब
हारून की बहन मरियम जो नबिया थी ने दफ़
लिया, और बाक़ी तमाम औरतें भी दफ़ ले
कर उस के पीछे हो लीं। सब गाने और नाचने
लगीं। मरियम ने यह गा कर उन की राहनुमाई
की,
21"रब की तम्जीद में गीत गाओ, क्यूँकि वह
निहायत अज़ीम है। घोड़े और उस के सवार
को उस ने समुन्दर में पटख़ दिया है।"

मारा और एलीम के चश्मे

22मूसा के कहने पर इस्राईली बहर-ए-
क़ुल्ज़ुम से रवाना हो कर दश्त-ए-शूर में चले
गए। वहाँ वह तीन दिन तक सफ़र करते रहे।
इस दौरान उन्हें पानी न मिला। 23आख़िरकार
वह मारा पहुँचे जहाँ पानी दस्तयाब था।
लेकिन वह कड़वा था, इस लिए मक़ाम का
नाम मारा यानी कड़वाहट पड़ गया। 24यह
देख कर लोग मूसा के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ा कर
कहने लगे, "हम क्या पिएँ?" 25मूसा ने मदद
के लिए रब से इल्तिजा की तो उस ने उसे
लकड़ी का एक टुकड़ा दिखाया। जब मूसा
ने यह लकड़ी पानी में डाली तो पानी की
कड़वाहट ख़त्म हो गई।

मारा में रब ने अपनी क़ौम को क़वानीन
दिए। वहाँ उस ने उन्हें आज़माया भी। 26उस
ने कहा, "ग़ौर से रब अपने ख़ुदा की आवाज़
सुनो! जो कुछ उस की नज़र में दुरुस्त है
वही करो। उस के अह्काम पर ध्यान दो और
उस की तमाम हिदायात पर अमल करो। फिर
मैं तुम पर वह बीमारियाँ नहीं लाऊँगा जो
मिस्रियों पर लाया था, क्यूँकि मैं रब हूँ जो तुझे
शिफ़ा देता हूँ।" 27फिर इस्राईली रवाना हो कर
एलीम पहुँचे जहाँ 12 चश्मे और खजूर के 70
दरख़्त थे। वहाँ उन्हों ने पानी के क़रीब अपने
ख़ैमे लगाए।

मन और बटेरें

16 इस के बाद इस्राईल की पूरी
जमाअत एलीम से सफ़र करके
सीन के रेगिस्तान में पहुँची जो एलीम और
सीना के दरमियान है। वह मिस्र से निकलने
के बाद दूसरे महीने के 15वें दिन पहुँचे।
2रेगिस्तान में तमाम लोग फिर मूसा और
हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे। 3उन्हों ने
कहा, "काश रब हमें मिस्र में ही मार डालता!
वहाँ हम कम अज़ कम जी भर कर गोश्त और
रोटी तो खा सकते थे। आप हमें सिर्फ़ इस लिए
रेगिस्तान में ले आए हैं कि हम सब भूके मर
जाएँ।"
4तब रब ने मूसा से कहा, "मैं आसमान
से तुम्हारे लिए रोटी बरसाऊँगा। हर रोज़
लोग बाहर जा कर उसी दिन की ज़रूरत के
मुताबिक़ खाना जमा करें। इस से मैं उन्हें
आज़मा कर देखूँगा कि आया वह मेरी सुनते
हैं कि नहीं। 5हर रोज़ वह सिर्फ़ उतना खाना
जमा करें जितना कि एक दिन के लिए काफ़ी
हो। लेकिन छटे दिन जब वह खाना तय्यार
करेंगे तो वह अगले दिन के लिए भी काफ़ी
होगा।"
6मूसा और हारून ने इस्राईलियों से कहा,
"आज शाम को तुम जान लोगे कि रब ही तुम्हें
मिस्र से निकाल लाया है। 7और कल सुब्ह

तुम रब का जलाल देखोगे। उस ने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं, क्यूँकि असल में तुम हमारे ख़िलाफ़ नहीं बल्कि रब के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ा रहे हो। 8फिर भी रब तुम को शाम के वक़्त गोश्त और सुब्ह के वक़्त वाफ़िर रोटी देगा, क्यूँकि उस ने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं। तुम्हारी शिकायतें हमारे ख़िलाफ़ नहीं बल्कि रब के ख़िलाफ़ हैं।"

9मूसा ने हारून से कहा, "इस्राईलियों को बताना, 'रब के सामने हाज़िर हो जाओ, क्यूँकि उस ने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं'।" 10जब हारून पूरी जमाअत के सामने बात करने लगा तो लोगों ने पलट कर रेगिस्तान की तरफ़ देखा। वहाँ रब का जलाल बादल में ज़ाहिर हुआ। 11रब ने मूसा से कहा, 12"मैं ने इस्राईलियों की शिकायत सुन ली है। उन्हें बता, 'आज जब सूरज ग़ुरूब होने लगेगा तो तुम गोश्त खाओगे और कल सुब्ह पेट भर कर रोटी। फिर तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ'।"

13उसी शाम बटेरों के ग़ोल आए जो पूरी ख़ैमागाह पर छा गए। और अगली सुब्ह ख़ैमे के चारों तरफ़ ओस पड़ी थी। 14जब ओस सूख गई तो बर्फ़ के गालों जैसे पतले दाने पाले की तरह ज़मीन पर पड़े थे। 15जब इस्राईलियों ने उसे देखा तो एक दूसरे से पूछने लगे, "मन हू?" यानी "यह क्या है?" क्यूँकि वह नहीं जानते थे कि यह क्या चीज़ है। मूसा ने उन को समझाया, "यह वह रोटी है जो रब ने तुम्हें खाने के लिए दी है। 16रब का हुक्म है कि हर एक उतना जमा करे जितना उस के ख़ानदान को ज़रूरत हो। अपने ख़ानदान के हर फ़र्द के लिए दो लिटर जमा करो।"

17इस्राईलियों ने ऐसा ही किया। बाज़ ने ज़्यादा और बाज़ ने कम जमा किया। 18लेकिन जब उसे नापा गया तो हर एक आदमी के लिए काफ़ी था। जिस ने ज़्यादा जमा किया था उस के पास कुछ न बचा। लेकिन जिस ने कम जमा किया था उस के पास भी काफ़ी था। 19मूसा ने हुक्म दिया, "अगले दिन के लिए खाना न बचाना।"

20लेकिन लोगों ने मूसा की बात न मानी बल्कि बाज़ ने खाना बचा लिया। लेकिन अगली सुब्ह मालूम हुआ कि बचे हुए खाने में कीड़े पड़ गए हैं और उस से बहुत बदबू आ रही है। यह सुन कर मूसा उन से नाराज़ हुआ।

21हर सुब्ह हर कोई उतना जमा कर लेता जितनी उसे ज़रूरत होती थी। जब धूप तेज़ होती तो जो कुछ ज़मीन पर रह जाता वह पिघल कर ख़त्म हो जाता था।

22छटे दिन जब लोग यह ख़ुराक जमा करते तो वह मिक़्दार में दुगनी होती थी यानी हर फ़र्द के लिए चार लिटर। जब जमाअत के बुज़ुर्गों ने मूसा के पास आ कर उसे इत्तिला दी 23तो उस ने उन से कहा, "रब का फ़रमान है कि कल आराम का दिन है, मुक़द्दस सबत का दिन जो अल्लाह की ताज़ीम में मनाना है। आज तुम जो तनूर में पकाना चाहते हो पका लो और जो उबालना चाहते हो उबाल लो। जो बच जाए उसे कल के लिए मह्फ़ूज़ रखो।"

24लोगों ने मूसा के हुक्म के मुताबिक़ अगले दिन के लिए खाना मह्फ़ूज़ कर लिया तो न खाने से बदबू आई, न उस में कीड़े पड़े। 25मूसा ने कहा, "आज यही बचा हुआ खाना खाओ, क्यूँकि आज सबत का दिन है, रब की ताज़ीम में आराम का दिन। आज तुम्हें रेगिस्तान में कुछ नहीं मिलेगा। 26छः दिन के दौरान यह ख़ुराक जमा करना है, लेकिन सातवाँ दिन आराम का दिन है। उस दिन ज़मीन पर खाने के लिए कुछ नहीं होगा।"

27तो भी कुछ लोग हफ़्ते को खाना जमा करने के लिए निकले, लेकिन उन्हें कुछ न मिला। 28तब रब ने मूसा से कहा, "तुम लोग कब तक मेरे अह्काम और हिदायात पर अमल करने से इन्कार करोगे? 29देखो, रब ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किया है कि सबत का दिन आराम का दिन है। इस लिए वह तुम्हें जुमए को दो दिन के लिए ख़ुराक देता है। हफ़्ते को

सब को अपने ख़ैमों में रहना है। कोई भी अपने घर से बाहर न निकले।"

30चुनाँचे लोग सबत के दिन आराम करते थे।

31इस्राईलियों ने इस ख़ुराक का नाम 'मन' रखा। उस के दाने धनिए की मानिन्द सफ़ेद थे, और उस का ज़ाइक़ा शहद से बने केक की मानिन्द था।

32मूसा ने कहा, "रब फ़रमाता है, 'दो लिटर मन एक मर्तबान में रख कर उसे आने वाली नस्लों के लिए महफ़ूज़ रखना। फिर वह देख सकेंगे कि मैं तुम्हें क्या खाना खिलाता रहा जब तुम्हें मिस्र से निकाल लाया'।" 33मूसा ने हारून से कहा, "एक मर्तबान लो और उसे दो लिटर मन से भर कर रब के सामने रखो ताकि वह आने वाली नस्लों के लिए महफ़ूज़ रहे।" 34हारून ने ऐसा ही किया। उस ने मन के इस मर्तबान को अह्द के सन्दूक़ के सामने रखा ताकि वह महफ़ूज़ रहे।

35इस्राईलियों को 40 साल तक मन मिलता रहा। वह उस वक़्त तक मन खाते रहे जब तक रेगिस्तान से निकल कर कनआन की सरहद पर न पहुँचे। 36(जो पैमाना इस्राईली मन के लिए इस्तेमाल करते थे वह दो लिटर का एक बर्तन था जिस का नाम ओमर था।)

चटान से पानी

17 फिर इस्राईल की पूरी जमाअत सीन के रेगिस्तान से निकली। रब जिस तरह हुक्म देता रहा वह एक जगह से दूसरी जगह सफ़र करते रहे। रफ़ीदीम में उन्हों ने ख़ैमे लगाए। वहाँ पीने के लिए पानी न मिला। 2इस लिए वह मूसा के साथ यह कह कर झगड़ने लगे, "हमें पीने के लिए पानी दो।" मूसा ने जवाब दिया, "तुम मुझ से क्यूँ झगड़ रहे हो? रब को क्यूँ आज़मा रहे हो?" 3लेकिन लोग बहुत प्यासे थे। वह मूसा के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने से बाज़ न आए बल्कि कहा, "आप हमें मिस्र से क्यूँ लाए हैं? क्या इस लिए कि हम अपने बच्चों और रेवड़ों समेत प्यासे मर जाएँ?"

4तब मूसा ने रब के हुज़ूर फ़र्याद की, "मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? हालात ज़रा भी और बिगड़ जाएँ तो वह मुझे संगसार कर देंगे।" 5रब ने मूसा से कहा, "कुछ बुज़ुर्ग साथ ले कर लोगों के आगे आगे चल। वह लाठी भी साथ ले जा जिस से तू ने दरया-ए-नील को मारा था। 6मैं होरिब यानी सीना पहाड़ की एक चटान पर तेरे सामने खड़ा हूँगा। लाठी से चटान को मारना तो उस से पानी निकलेगा और लोग पी सकेंगे।"

मूसा ने इस्राईल के बुज़ुर्गों के सामने ऐसा ही किया। 7उस ने उस जगह का नाम मस्सा और मरीबा यानी 'आज़माना और झगड़ना' रखा, क्यूँकि वहाँ इस्राईली बुड़बुड़ाए और यह पूछ कर रब को आज़माया कि क्या रब हमारे दरमियान है कि नहीं?

अमालीक़ियों की शिकस्त

8रफ़ीदीम वह जगह भी थी जहाँ अमालीक़ी इस्राईलियों से लड़ने आए। 9मूसा ने यशूअ से कहा, "लड़ने के क़ाबिल आदमियों को चुन लो और निकल कर अमालीक़ियों का मुक़ाबला करो। कल मैं अल्लाह की लाठी पकड़े हुए पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो जाऊँगा।"

10यशूअ मूसा की हिदायत के मुताबिक़ अमालीक़ियों से लड़ने गया जबकि मूसा, हारून और हूर पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। 11और यूँ हुआ कि जब मूसा के हाथ उठाए हुए थे तो इस्राईली जीतते रहे, और जब वह नीचे थे तो अमालीक़ी जीतते रहे। 12कुछ देर के बाद मूसा के बाज़ू थक गए। इस लिए हारून और हूर एक चटान ले आए ताकि वह उस पर बैठ जाए। फिर उन्हों ने उस के दाईं और बाईं तरफ़ खड़े हो कर उस के बाज़ूओं को ऊपर उठाए रखा। सूरज के ग़ुरूब होने तक उन्हों ने यूँ मूसा की मदद की। 13इस तरह यशूअ

ने अमालीक़ियों से लड़ते लड़ते उन्हें शिकस्त दी।

14तब रब ने मूसा से कहा, "यह वाक़िआ यादगारी के लिए किताब में लिख ले। लाज़िम है कि यह सब कुछ यशूअ की याद में रहे, क्यूँकि मैं दुनिया से अमालीक़ियों का नाम-ओ-निशान मिटा दूँगा।" 15उस वक़्त मूसा ने क़ुर्बानगाह बना कर उस का नाम 'रब मेरा झंडा है' रखा। 16उस ने कहा, "रब के तख़्त के ख़िलाफ़ हाथ उठाया गया है, इस लिए रब की अमालीक़ियों से हमेशा तक जंग रहेगी।"

यित्रो से मुलाक़ात

18 मूसा का सुसर यित्रो अब तक मिदियान में इमाम था। जब उस ने सब कुछ सुना जो अल्लाह ने मूसा और अपनी क़ौम के लिए किया है, कि वह उन्हें मिस्र से निकाल लाया है 2तो वह मूसा के पास आया। वह उस की बीवी सफ़्फ़ूरा को अपने साथ लाया, क्यूँकि मूसा ने उसे अपने बेटों समेत मैके भेज दिया था। 3यित्रो मूसा के दोनों बेटों को भी साथ लाया। पहले बेटे का नाम जैर्सोम यानी 'अजनबी मुल्क में परदेसी' था, क्यूँकि जब वह पैदा हुआ तो मूसा ने कहा था, "मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।" 4दूसरे बेटे का नाम इलीअज़र यानी 'मेरा ख़ुदा मददगार है' था, क्यूँकि जब वह पैदा हुआ तो मूसा ने कहा था, "मेरे बाप के ख़ुदा ने मेरी मदद करके मुझे फ़िरऔन की तलवार से बचाया है।"

5यित्रो मूसा की बीवी और बेटे साथ ले कर उस वक़्त मूसा के पास पहुँचा जब उस ने रेगिस्तान में अल्लाह के पहाड़ यानी सीना के क़रीब ख़ैमा लगाया हुआ था। 6उस ने मूसा को पैग़ाम भेजा था, "मैं, आप का सुसर यित्रो आप की बीवी और दो बेटों को साथ ले कर आप के पास आ रहा हूँ।"

7मूसा अपने सुसर के इस्तिक़्बाल के लिए बाहर निकला, उस के सामने झुका और उसे बोसा दिया। दोनों ने एक दूसरे का हाल पूछा, फिर ख़ैमे में चले गए। 8मूसा ने यित्रो को तफ़्सील से बताया कि रब ने इस्राईलियों की ख़ातिर फ़िरऔन और मिस्रियों के साथ क्या कुछ किया है। उस ने रास्ते में पेश आई तमाम मुश्किलात का ज़िक्र भी किया कि रब ने हमें किस तरह उन से बचाया है।

9यित्रो उन सारे अच्छे कामों के बारे में सुन कर ख़ुश हुआ जो रब ने इस्राईलियों के लिए किए थे जब उस ने उन्हें मिस्रियों के हाथ से बचाया था। 10उस ने कहा, "रब की तम्जीद हो जिस ने आप को मिस्रियों और फ़िरऔन के क़ब्ज़े से नजात दिलाई है। उसी ने क़ौम को ग़ुलामी से छुड़ाया है! 11अब मैं ने जान लिया है कि रब तमाम माबूदों से अज़ीम है, क्यूँकि उस ने यह सब कुछ उन लोगों के साथ किया जिन्हों ने अपने ग़ुरूर में इस्राईलियों के साथ बुरा सुलूक किया था।" 12फिर यित्रो ने अल्लाह को भस्म होने वाली क़ुर्बानी और दीगर कई क़ुर्बानियाँ पेश कीं। तब हारून और तमाम बुज़ुर्ग मूसा के सुसर यित्रो के साथ अल्लाह के हुज़ूर खाना खाने बैठे।

70 बुज़ुर्गों को मुक़र्रर किया जाता है

13अगले दिन मूसा लोगों का इन्साफ़ करने के लिए बैठ गया। उन की तादाद इतनी ज़्यादा थी कि वह सुब्ह से ले कर शाम तक मूसा के सामने खड़े रहे। 14जब यित्रो ने यह सब कुछ देखा तो उस ने पूछा, "यह क्या है जो आप लोगों के साथ कर रहे हैं? सारा दिन वह आप को घेरे रहते और आप उन की अदालत करते रहते हैं। आप यह सब कुछ अकेले ही क्यूँ कर रहे हैं?"

15मूसा ने जवाब दिया, "लोग मेरे पास आ कर अल्लाह की मर्ज़ी मालूम करते हैं। 16जब कभी कोई तनाज़ा या झगड़ा होता है तो दोनों पार्टियाँ मेरे पास आती हैं। मैं फ़ैसला करके उन्हें अल्लाह के अह्काम और हिदायात बताता हूँ।"

17मूसा के सुसर ने उस से कहा, “आप का
तरीक़ा अच्छा नहीं है। 18काम इतना वसी है
कि आप उसे अकेले नहीं सँभाल सकते। इस
से आप और वह लोग जो आप के पास आते
हैं बुरी तरह थक जाते हैं। 19मेरी बात सुनें!
मैं आप को एक मश्वरा देता हूँ। अल्लाह उस
में आप की मदद करे। लाज़िम है कि आप
अल्लाह के सामने क़ौम के नुमाइन्दा रहें और
उन के मुआमलात उस के सामने पेश करें।
20यह भी ज़रूरी है कि आप उन्हें अल्लाह
के अह्काम और हिदायात सिखाएँ, कि वह
किस तरह ज़िन्दगी गुज़ारें और क्या क्या करें।
21लेकिन साथ साथ क़ौम में से क़ाबिल-ए-
एतिमाद आदमी चुनें। वह ऐसे लोग हों जो
अल्लाह का ख़ौफ़ मानते हों, रास्तदिल हों
और रिश्वत से नफ़रत करते हों। उन्हें हज़ार
हज़ार, सौ सौ, पचास पचास और दस दस
आदमियों पर मुक़र्रर करें। 22उन आदमियों की
ज़िम्मादारी यह होगी कि वह हर वक़्त लोगों
का इन्साफ़ करें। अगर कोई बहुत ही पेचीदा
मुआमला हो तो वह फ़ैसले के लिए आप के
पास आएँ, लेकिन दीगर मुआमलों का फ़ैसला
वह ख़ुद करें। यूँ वह काम में आप का हाथ
बटाएँगे और आप का बोझ हल्का हो जाएगा।
23अगर मेरा यह मश्वरा अल्लाह की मर्ज़ी
के मुताबिक़ हो और आप ऐसा करें तो
आप अपनी ज़िम्मादारी निभा सकेंगे और यह
तमाम लोग इन्साफ़ के मिलने पर सलामती के
साथ अपने अपने घर जा सकेंगे।”
24मूसा ने अपने सुसर का मश्वरा मान लिया
और ऐसा ही किया। 25उस ने इस्राईलियों में
से क़ाबिल-ए-एतिमाद आदमी चुने और उन्हें
हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास और दस
दस आदमियों पर मुक़र्रर किया। 26यह मर्द
क़ाज़ी बन कर मुस्तक़िल तौर पर लोगों का
इन्साफ़ करने लगे। आसान मसलों का फ़ैसला
वह ख़ुद करते और मुश्किल मुआमलों को
मूसा के पास ले आते थे।

27कुछ अर्से बाद मूसा ने अपने सुसर को
रुख़्सत किया तो यित्रो अपने वतन वापस
चला गया।

कोह-ए-सीना

19 इस्राईलियों को मिस्र से सफ़र
करते हुए दो महीने हो गए थे।
तीसरे महीने के पहले ही दिन वह सीना के
रेगिस्तान में पहुँचे। 2उस दिन वह रफ़ीदीम
को छोड़ कर दश्त-ए-सीना में आ पहुँचे। वहाँ
उन्हों ने रेगिस्तान में पहाड़ के क़रीब डेरे डाले।
3तब मूसा पहाड़ पर चढ़ कर अल्लाह के
पास गया। अल्लाह ने पहाड़ पर से मूसा
को पुकार कर कहा, “याक़ूब के घराने बनी
इस्राईल को बता, 4‘तुम ने देखा है कि मैं ने
मिस्रियों के साथ क्या कुछ किया, और कि
मैं तुम को उक़ाब के परों पर उठा कर यहाँ
अपने पास लाया हूँ। 5चुनाँचे अगर तुम मेरी
सुनो और मेरे अह्द के मुताबिक़ चलो तो
फिर तमाम क़ौमों में से मेरी ख़ास मिलकियत
होगे। गो पूरी दुनिया मेरी ही है, 6लेकिन तुम
मेरे लिए मख़्सूस इमामों की बादशाही और
मुक़द्दस क़ौम होगे।’ अब जा कर यह सारी
बातें इस्राईलियों को बता।”
7मूसा ने पहाड़ से उतर कर और क़ौम के
बुज़ुर्गों को बुला कर उन्हें वह तमाम बातें बताईं
जो कहने के लिए रब ने उसे हुक्म दिया था।
8जवाब में पूरी क़ौम ने मिल कर कहा, “हम
रब की हर बात पूरी करेंगे जो उस ने फ़रमाई
है।” मूसा ने पहाड़ पर लौट कर रब को क़ौम
का जवाब बताया। 9जब वह पहुँचा तो रब
ने मूसा से कहा, “मैं घने बादल में तेरे पास
आऊँगा ताकि लोग मुझे तुझ से हमकलाम
होते हुए सुनें। फिर वह हमेशा तुझ पर भरोसा
रखेंगे।” तब मूसा ने रब को वह तमाम बातें
बताईं जो लोगों ने की थीं।
10रब ने मूसा से कहा, “अब लोगों के
पास लौट कर आज और कल उन्हें मेरे लिए
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर। वह अपने लिबास

धो कर 11तीसरे दिन के लिए तय्यार हो
जाएँ, क्यूँकि उस दिन रब लोगों के देखते
देखते कोह-ए-सीना पर उतरेगा। 12लोगों की
हिफ़ाज़त के लिए चारों तरफ़ पहाड़ की हद्दें
मुक़र्रर कर। उन्हें ख़बरदार कर कि हुदूद को
पार न करो। न पहाड़ पर चढ़ो, न उस के दामन
को छुओ। जो भी उसे छुए वह ज़रूर मारा
जाए। 13और उसे हाथ से छू कर नहीं मारना
है बल्कि पत्थरों या तीरों से। ख़्वाह इन्सान
हो या हैवान, वह ज़िन्दा नहीं रह सकता। जब
तक नरसिंगा देर तक फूँका न जाए उस वक़्त
तक लोगों को पहाड़ पर चढ़ने की इजाज़त
नहीं है।"

14मूसा ने पहाड़ से उतर कर लोगों को
अल्लाह के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया।
उन्हों ने अपने लिबास भी धोए। 15उस ने
उन से कहा, "तीसरे दिन के लिए तय्यार हो
जाओ। मर्द औरतों से हमबिसतर न हों।"

16तीसरे दिन सुब्ह पहाड़ पर घना बादल
छा गया। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने
लगा और नरसिंगे की निहायत ज़ोरदार
आवाज़ सुनाई दी। ख़ैमागाह में लोग लरज़
उठे। 17तब मूसा लोगों को अल्लाह से मिलने
के लिए ख़ैमागाह से बाहर पहाड़ की तरफ़ ले
गया, और वह पहाड़ के दामन में खड़े हुए।
18सीना पहाड़ धुएँ से ढका हुआ था, क्यूँकि
रब आग में उस पर उतर आया। पहाड़ से
धुआँ इस तरह उठ रहा था जैसे किसी भट्टे से
उठता है। पूरा पहाड़ शिद्दत से लरज़ने लगा।
19नरसिंगे की आवाज़ तेज़ से तेज़तर होती
गई। मूसा बोलने लगा और अल्लाह उसे ऊँची
आवाज़ में जवाब देता रहा।

20रब सीना पहाड़ की चोटी पर उतरा और
मूसा को ऊपर आने के लिए कहा। मूसा ऊपर
चढ़ा। 21रब ने मूसा से कहा, "फ़ौरन नीचे उतर
कर लोगों को ख़बरदार कर कि वह मुझे देखने
के लिए पहाड़ की हुदूद में ज़बरदस्ती दाख़िल
न हों। अगर वह ऐसा करें तो बहुत से हलाक
हो जाएंगे। 22इमाम भी जो रब के हुज़ूर आते
हैं अपने आप को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करें,
वर्ना मेरा ग़ज़ब उन पर टूट पड़ेगा।"

23लेकिन मूसा ने रब से कहा, "लोग पहाड़
पर नहीं आ सकते, क्यूँकि तू ने ख़ुद ही हमें
ख़बरदार किया कि हम पहाड़ की हद्दें मुक़र्रर
करके उसे मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करें।"

24रब ने जवाब दिया, "तो भी उतर जा और
हारून को साथ ले कर वापस आ। लेकिन
इमामों और लोगों को मत आने दे। अगर वह
ज़बरदस्ती मेरे पास आएँ तो मेरा ग़ज़ब उन
पर टूट पड़ेगा।"

25मूसा ने लोगों के पास उतर कर उन्हें यह
बातें बता दीं।

दस अह्काम

20 तब अल्लाह ने यह तमाम बातें
फ़रमाईं, 2"मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ जो
तुझे मुल्क-ए-मिस्र की ग़ुलामी से निकाल
लाया। 3मेरे सिवा किसी और माबूद की
परस्तिश न करना। 4अपने लिए बुत न बनाना।
किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह
आसमान में, ज़मीन पर या समुन्दर में हो। 5न
बुतों की परस्तिश, न उन की ख़िदमत करना,
क्यूँकि मैं तेरा रब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझ से
नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त
तक सज़ा दूँगा। 6लेकिन जो मुझ से मुहब्बत
रखते और मेरे अह्काम पूरे करते हैं उन पर मैं
हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।

7रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़्सद या ग़लत
मक़्सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी
ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं
छोड़ेगा।

8सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस
तरह मनाना कि वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो।
9हफ़्ते के पहले छः दिन अपना काम-काज
कर, 10लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे ख़ुदा का
आराम का दिन है। उस दिन किसी तरह का
काम न करना। न तू, न तेरा बेटा, न तेरी
बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी और न

तेरे मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे। 11क्यूँकि रब ने पहले छः दिन में आसमान-ओ-ज़मीन, समुन्दर और जो कुछ उन में है बनाया लेकिन सातवें दिन आराम किया। इस लिए रब ने सबत के दिन को बरकत दे कर मुक़र्रर किया कि वह मख़्सूस और मुक़द्दस हो।

12अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देने वाला है देर तक जीता रहेगा।

13क़त्ल न करना।

14ज़िना न करना।

15चोरी न करना।

16अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।

17अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। न उस की बीवी का, न उस के नौकर का, न उस की नौकरानी का, न उस के बैल और न उस के गधे का बल्कि उस की किसी भी चीज़ का लालच न करना।"

लोग घबरा जाते हैं

18जब बाक़ी तमाम लोगों ने बादल की गरज और नरसिंगे की आवाज़ सुनी और बिजली की चमक और पहाड़ से उठते हुए धुएँ को देखा तो वह ख़ौफ़ के मारे काँपने लगे और पहाड़ से दूर खड़े हो गए। 19उन्हों ने मूसा से कहा, "आप ही हम से बात करें तो हम सुनेंगे। लेकिन अल्लाह को हम से बात न करने दें वर्ना हम मर जाएंगे।"

20लेकिन मूसा ने उन से कहा, "मत डरो, क्यूँकि रब तुम्हें जाँचने के लिए आया है, ताकि उस का ख़ौफ़ तुम्हारी आँखों के सामने रहे और तुम गुनाह न करो।" 21लोग दूर ही रहे जबकि मूसा उस गहरी तारीकी के क़रीब गया जहाँ अल्लाह था।

22तब रब ने मूसा से कहा, "इस्राईलियों को बता, 'तुम ने ख़ुद देखा कि मैं ने आसमान पर से तुम्हारे साथ बातें की हैं। 23चुनाँचे मेरी परस्तिश के साथ साथ अपने लिए सोने या चाँदी के बुत न बनाओ। 24मेरे लिए मिट्टी की क़ुर्बानगाह बना कर उस पर अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों की भस्म होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाना। मैं तुझे वह जगहें दिखाऊँगा जहाँ मेरे नाम की ताज़ीम में क़ुर्बानियाँ पेश करनी हैं। ऐसी तमाम जगहों पर मैं तेरे पास आ कर तुझे बरकत दूँगा।

25अगर तू मेरे लिए क़ुर्बानगाह बनाने की ख़ातिर पत्थर इस्तेमाल करना चाहे तो तराशे हुए पत्थर इस्तेमाल न करना। क्यूँकि तू तराशने के लिए इस्तेमाल होने वाले औज़ार से उस की बेहुरमती करेगा। 26क़ुर्बानगाह को सीढ़ियों के बग़ैर बनाना है ताकि उस पर चढ़ने से तेरे लिबास के नीचे से तेरा नंगापन नज़र न आए।'

21 इस्राईलियों को यह अह्काम बता,

इब्रानी ग़ुलाम के हुक़ूक़

2'अगर तू इब्रानी ग़ुलाम ख़रीदे तो वह छः साल तेरा ग़ुलाम रहे। इस के बाद लाज़िम है कि उसे आज़ाद कर दिया जाए। आज़ाद होने के लिए उसे पैसे देने की ज़रूरत नहीं होगी।

3अगर ग़ुलाम ग़ैरशादीशुदा हालत में मालिक के घर आया हो तो वह आज़ाद हो कर अकेला ही चला जाए। अगर वह शादीशुदा हालत में आया हो तो लाज़िम है कि वह अपनी बीवी समेत आज़ाद हो कर जाए। 4अगर मालिक ने ग़ुलाम की शादी कराई और बच्चे पैदा हुए हैं तो उस की बीवी और बच्चे मालिक की मिलकियत होंगे। छः साल के बाद जब ग़ुलाम आज़ाद हो कर जाए तो उस की बीवी और बच्चे मालिक ही के पास रहें।

5अगर ग़ुलाम कहे, "मैं अपने मालिक और अपने बीवी बच्चों से मुहब्बत रखता हूँ, मैं आज़ाद नहीं होना चाहता" 6तो ग़ुलाम का मालिक उसे अल्लाह के सामने लाए। वह उसे दरवाज़े या उस की चौखट के पास ले जाए और सुताली यानी तेज़ औज़ार से उस के कान

की लौ छेद दे। तब वह ज़िन्दगी भर उस का ग़ुलाम बना रहेगा।

7अगर कोई अपनी बेटी को ग़ुलामी में बेच डाले तो उस के लिए आज़ादी मिलने की शराइत मर्द से फ़र्क़ हैं। 8अगर उस के मालिक ने उसे मुन्तख़ब किया कि वह उस की बीवी बन जाए, लेकिन बाद में वह उसे पसन्द न आए तो लाज़िम है कि वह मुनासिब मुआवज़ा ले कर उसे उस के रिश्तेदारों को वापस कर दे। उसे औरत को ग़ैरमुल्कियों के हाथ बेचने का इख़तियार नहीं है, क्यूँकि उस ने उस के साथ बेवफ़ा सुलूक किया है।

9अगर लौंडी का मालिक उस की अपने बेटे के साथ शादी कराए तो औरत को बेटी के हुक़ूक़ हासिल होंगे।

10अगर मालिक ने उस से शादी करके बाद में दूसरी औरत से भी शादी की तो लाज़िम है कि वह पहली को भी खाना और कपड़े देता रहे। इस के इलावा उस के साथ हमबिसतर होने का फ़र्ज़ भी अदा करना है। 11अगर वह यह तीन फ़राइज़ अदा न करे तो उसे औरत को आज़ाद करना पड़ेगा। इस सूरत में उसे मुफ़्त आज़ाद करना होगा।

ज़ख़्मी करने की सज़ा

12जो किसी को जान-बूझ कर इतना सख़्त मारता हो कि वह मर जाए तो उसे ज़रूर सज़ा-ए-मौत देना है। 13लेकिन अगर उस ने उसे जान-बूझ कर न मारा बल्कि यह इत्तिफ़ाक़ से हुआ और अल्लाह ने यह होने दिया, तो मारने वाला एक ऐसी जगह पनाह ले सकता है जो मैं मुक़र्रर करूँगा। वहाँ उसे क़त्ल किए जाने की इजाज़त नहीं होगी। 14लेकिन जो दीदा-दानिस्ता और चालाकी से किसी को मार डालता है उसे मेरी क़ुर्बानगाह से भी छीन कर सज़ा-ए-मौत देना है।

15जो अपने बाप या अपनी माँ को मारता पीटता है उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।

16जिस ने किसी को अग़वा कर लिया है उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए, चाहे वह उसे ग़ुलाम बना कर बेच चुका हो या उसे अब तक अपने पास रखा हुआ हो।

17जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।

18हो सकता है कि आदमी झगड़ें और एक शख़्स दूसरे को पत्थर या मुक्के से इतना ज़ख़्मी कर दे कि गो वह बच जाए वह बिस्तर से उठ न सकता हो। 19अगर बाद में मरीज़ यहाँ तक शिफ़ा पाए कि दुबारा उठ कर लाठी के सहारे चल फिर सके तो चोट पहुँचाने वाले को सज़ा नहीं मिलेगी। उसे सिर्फ़ उस वक़्त के लिए मुआवज़ा देना पड़ेगा जब तक मरीज़ पैसे न कमा सके। साथ ही उसे उस का पूरा इलाज करवाना है।

20जो अपने ग़ुलाम या लौंडी को लाठी से यूँ मारे कि वह मर जाए उसे सज़ा दी जाए। 21लेकिन अगर ग़ुलाम या लौंडी पिटाई के बाद एक या दो दिन ज़िन्दा रहे तो मालिक को सज़ा न दी जाए। क्यूँकि जो रक़म उस ने उस के लिए दी थी उस का नुक़्सान उसे ख़ुद उठाना पड़ेगा।

22हो सकता है कि लोग आपस में लड़ रहे हों और लड़ते लड़ते किसी हामिला औरत से यूँ टकरा जाएँ कि उस का बच्चा ज़ाए हो जाए। अगर कोई और नुक़्सान न हुआ हो तो ज़र्ब पहुँचाने वाले को जुर्माना देना पड़ेगा। औरत का शौहर यह जुर्माना मुक़र्रर करे, और अदालत में इस की तस्दीक़ हो।

23लेकिन अगर उस औरत को और नुक़्सान भी पहुँचा हो तो फिर ज़र्ब पहुँचाने वाले को इस उसूल के मुताबिक़ सज़ा दी जाए कि जान के बदले जान, 24आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँओ के बदले पाँओ, 25जलने के ज़ख़्म के बदले जलने का ज़ख़्म, मार के बदले मार, काट के बदले काट।

26अगर कोई मालिक अपने ग़ुलाम की आँख पर यूँ मारे कि वह ज़ाए हो जाए तो

उसे ग़ुलाम को आँख के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे ग़ुलाम मर्द हो या औरत। 27अगर मालिक के पीटने से ग़ुलाम का दाँत टूट जाए तो उसे ग़ुलाम को दाँत के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे ग़ुलाम मर्द हो या औरत।

नुक़्सान का मुआवज़ा

28अगर कोई बैल किसी मर्द या औरत को ऐसा मारे कि वह मर जाए तो उस बैल को संगसार किया जाए। उस का गोश्त खाने की इजाज़त नहीं है। इस सूरत में बैल के मालिक को सज़ा न दी जाए। 29लेकिन हो सकता है कि मालिक को पहले आगाह किया गया था कि बैल लोगों को मारता है, तो भी उस ने बैल को खुला छोड़ा था जिस के नतीजे में उस ने किसी को मार डाला। ऐसी सूरत में न सिर्फ़ बैल को बल्कि उस के मालिक को भी संगसार करना है। 30लेकिन अगर फ़ैसला किया जाए कि वह अपनी जान का फ़िद्या दे तो जितना मुआवज़ा भी मुक़र्रर किया जाए उसे देना पड़ेगा।

31सज़ा में कोई फ़र्क़ नहीं है, चाहे बेटे को मारा जाए या बेटी को। 32लेकिन अगर बैल किसी ग़ुलाम या लौंडी को मार दे तो उस का मालिक ग़ुलाम के मालिक को चाँदी के 30 सिक्के दे और बैल को संगसार किया जाए।

33हो सकता है कि किसी ने अपने हौज़ को खुला रहने दिया या हौज़ बनाने के लिए गढ़ा खोद कर उसे खुला रहने दिया और कोई बैल या गधा उस में गिर कर मर गया। 34ऐसी सूरत में हौज़ का मालिक मुर्दा जानवर के लिए पैसे दे। वह जानवर के मालिक को उस की पूरी क़ीमत अदा करे और मुर्दा जानवर ख़ुद ले ले।

35अगर किसी का बैल किसी दूसरे के बैल को ऐसे मारे कि वह मर जाए तो दोनों मालिक ज़िन्दा बैल को बेच कर उस के पैसे आपस में बराबर बाँट लें। इसी तरह वह मुर्दा बैल को भी बराबर तक़्सीम करें। 36लेकिन हो सकता है कि मालिक को मालूम था कि मेरा बैल दूसरे जानवरों पर हम्ला करता है, इस के बावुजूद उस ने उसे आज़ाद छोड़ दिया था। ऐसी सूरत में उसे मुर्दा बैल के इवज़ उस के मालिक को नया बैल देना पड़ेगा, और वह मुर्दा बैल ख़ुद ले ले।

मिलकियत की हिफ़ाज़त

22 जिस ने कोई बैल या भेड़ चोरी करके उसे ज़बह किया या बेच डाला है उसे हर चोरी के बैल के इवज़ पाँच बैल और हर चोरी की भेड़ के इवज़ चार भेड़ें वापस करना है।

2हो सकता है कि कोई चोर नक़ब लगा रहा हो और लोग उसे पकड़ कर यहाँ तक मारते पीटते रहें कि वह मर जाए। अगर रात के वक़्त ऐसा हुआ हो तो वह उस के ख़ून के ज़िम्मादार नहीं ठहर सकते। 3लेकिन अगर सूरज के तुलू होने के बाद ऐसा हुआ हो तो जिस ने उसे मारा वह क़ातिल ठहरेगा।

चोर को हर चुराई हुई चीज़ का इवज़ाना देना है। अगर उस के पास देने के लिए कुछ न हो तो उसे ग़ुलाम बना कर बेचना है। जो पैसे उसे बेचने के इवज़ मिलें वह चुराई हुई चीज़ों के बदले में दिए जाएँ।

4अगर चोरी का जानवर चोर के पास ज़िन्दा पाया जाए तो उसे हर जानवर के इवज़ दो देने पड़ेंगे, चाहे वह बैल, भेड़, बकरी या गधा हो।

5हो सकता है कि कोई अपने मवेशी को अपने खेत या अंगूर के बाग़ में छोड़ कर चरने दे और होते होते वह किसी दूसरे के खेत या अंगूर के बाग़ में जा कर चरने लगे। ऐसी सूरत में लाज़िम है कि मवेशी का मालिक नुक़्सान के इवज़ अपने अंगूर के बाग़ और खेत की बेहतरीन पैदावार में से दे।

6हो सकता है कि किसी ने आग जलाई हो और वह काँटेदार झाड़ियों के ज़रीए पड़ोसी के खेत तक फैल कर उस के अनाज के पूलों को, उस की पकी हुई फ़सल को या खेत की किसी और पैदावार को बर्बाद कर दे। ऐसी

सूरत में जिस ने आग जलाई हो उसे उस की पूरी क़ीमत अदा करनी है।

7हो सकता है कि किसी ने कुछ पैसे या कोई और माल अपने किसी वाक़िफ़कार के सपुर्द कर दिया हो ताकि वह उसे महफ़ूज़ रखे। अगर यह चीज़ें उस के घर से चोरी हो जाएँ और बाद में चोर को पकड़ा जाए तो चोर को उस की दुगनी क़ीमत अदा करनी पड़ेगी। 8लेकिन अगर चोर पकड़ा न जाए तो लाज़िम है कि उस घर का मालिक जिस के सपुर्द यह चीज़ें की गई थीं अल्लाह के हुज़ूर खड़ा हो ताकि मालूम किया जाए कि उस ने ख़ुद यह माल चोरी किया है या नहीं।

9हो सकता है कि दो लोगों का आपस में झगड़ा हो, और दोनों किसी चीज़ के बारे में दावा करते हों कि यह मेरी है। अगर कोई क़ीमती चीज़ हो मसलन बैल, गधा, भेड़, बकरी, कपड़े या कोई खोई हुई चीज़ तो मुआमला अल्लाह के हुज़ूर लाया जाए। जिसे अल्लाह क़ुसूरवार क़रार दे उसे दूसरे को ज़ेर-ए-बह्स चीज़ की दुगनी क़ीमत अदा करनी है।

10हो सकता है कि किसी ने अपना कोई गधा, बैल, भेड़, बकरी या कोई और जानवर किसी वाक़िफ़कार के सपुर्द कर दिया ताकि वह उसे महफ़ूज़ रखे। वहाँ जानवर मर जाए या ज़ख़्मी हो जाए, या कोई उस पर क़ब्ज़ा करके उसे उस वक़्त ले जाए जब कोई न देख रहा हो। 11यह मुआमला यूँ हल किया जाए कि जिस के सपुर्द जानवर किया गया था वह रब के हुज़ूर क़सम खा कर कहे कि मैं ने अपने वाक़िफ़कार के जानवर के लालच में यह काम नहीं किया। जानवर के मालिक को यह क़बूल करना पड़ेगा, और दूसरे को इस के बदले कुछ नहीं देना होगा। 12लेकिन अगर वाक़ई जानवर को चोरी किया गया है तो जिस के सपुर्द जानवर किया गया था उसे उस की क़ीमत अदा करनी पड़ेगी। 13अगर किसी जंगली जानवर ने उसे फाड़ डाला हो तो वह सबूत के तौर पर फाड़ी हुई लाश को ले आए। फिर उसे उस की क़ीमत अदा नहीं करनी पड़ेगी।

14हो सकता है कि कोई अपने वाक़िफ़कार से इजाज़त ले कर उस का जानवर इस्तेमाल करे। अगर जानवर को मालिक की ग़ैरमौजूदगी में चोट लगे या वह मर जाए तो उस शख़्स को जिस के पास जानवर उस वक़्त था उस का मुआवज़ा देना पड़ेगा। 15लेकिन अगर जानवर का मालिक उस वक़्त साथ था तो दूसरे को मुआवज़ा देने की ज़रूरत नहीं होगी। अगर उस ने जानवर को किराए पर लिया हो तो उस का नुक़्सान किराए से पूरा हो जाएगा।

लड़की को वरग़लाने का जुर्म

16अगर किसी कुंवारी की मंगनी नहीं हुई और कोई मर्द उसे वरग़ला कर उस से हमबिसतर हो जाए तो वह महर दे कर उस से शादी करे। 17लेकिन अगर लड़की का बाप उस की उस मर्द के साथ शादी करने से इन्कार करे, इस सूरत में भी मर्द को कुंवारी के लिए मुक़र्ररा रक़म देनी पड़ेगी।

सज़ा-ए-मौत के लाइक़ जराइम

18जादूगरनी को जीने न देना।

19जो शख़्स किसी जानवर के साथ जिन्सी ताल्लुक़ात रखता हो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।

20जो न सिर्फ़ रब को क़ुर्बानियाँ पेश करे बल्कि दीगर माबूदों को भी उसे क़ौम से निकाल कर हलाक किया जाए।

कमज़ोरों की हिफ़ाज़त के लिए अह्काम

21जो परदेसी तेरे मुल्क में मेहमान है उसे न दबाना और न उस से बुरा सुलूक करना, क्यूँकि तुम भी मिस्र में परदेसी थे।

22किसी बेवा या यतीम से बुरा सुलूक न करना। 23अगर तू ऐसा करे और वह चिल्ला

कर मुझ से फ़र्याद करें तो मैं ज़रूर उन की सुनूँगा। 24मैं बड़े ग़ुस्से में आ कर तुम्हें तलवार से मार डालूँगा। फिर तुम्हारी बीवियाँ ख़ुद बेवाएँ और तुम्हारे बच्चे ख़ुद यतीम बन जाएंगे।

25अगर तू ने मेरी क़ौम के किसी ग़रीब को क़र्ज़ दिया है तो उस से सूद न लेना।

26अगर तुझे किसी से उस की चादर गिरवी के तौर पर मिली हो तो उसे सूरज डूबने से पहले ही वापस कर देना है, 27क्यूँकि इसी को वह सोने के लिए इस्तेमाल करता है। वर्ना वह क्या चीज़ ओढ़ कर सोएगा? अगर तू चादर वापस न करे और वह शख़्स चिल्ला कर मुझ से फ़र्याद करे तो मैं उस की सुनूँगा, क्यूँकि मैं मेहरबान हूँ।

अल्लाह से मुताल्लिक़ फ़राइज़

28अल्लाह को न कोसना, न अपनी क़ौम के किसी सरदार पर लानत करना।

29मुझे वक़्त पर अपने खेत और कोल्हूओं की पैदावार में से नज़राने पेश करना। अपने पहलौठे मुझे देना। 30अपने बैलों, भेड़ों और बकरियों के पहलौठों को भी मुझे देना। जानवर का पहलौठा पहले सात दिन अपनी माँ के साथ रहे। आठवें दिन वह मुझे दिया जाए।

31अपने आप को मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रखना। इस लिए ऐसे जानवर का गोश्त मत खाना जिसे किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाला है। ऐसे गोश्त को कुत्तों को खाने देना।

अदालत में इन्साफ़ और दूसरों से मुहब्बत

23 ग़लत अफ़्वाहें न फैलाना। किसी शरीर आदमी का साथ दे कर झूटी गवाही देना मना है। 2अगर अक्सरियत ग़लत काम कर रही हो तो उस के पीछे न हो लेना। अदालत में गवाही देते वक़्त अक्सरियत के साथ मिल कर ऐसी बात न करना जिस से ग़लत फ़ैसला किया जाए। 3लेकिन अदालत में किसी ग़रीब की तरफ़दारी भी न करना।

4अगर तुझे तेरे दुश्मन का बैल या गधा आवारा फिरता हुआ नज़र आए तो उसे हर सूरत में वापस कर देना। 5अगर तुझ से नफ़रत करने वाले का गधा बोझ तले गिर गया हो और तुझे पता लगे तो उसे न छोड़ना बल्कि ज़रूर उस की मदद करना।

6अदालत में ग़रीब के हुक़ूक़ न मारना। 7ऐसे मुआमले से दूर रहना जिस में लोग झूट बोलते हैं। जो बेगुनाह और हक़ पर है उसे सज़ा-ए-मौत न देना, क्यूँकि मैं क़ुसूरवार को हक़-ब-जानिब नहीं ठहराऊँगा। 8रिश्वत न लेना, क्यूँकि रिश्वत देखने वाले को अंधा कर देती है और उस की बात बनने नहीं देती जो हक़ पर है।

9जो परदेसी तेरे मुल्क में मेहमान है उस पर दबाओ न डालना। तुम ऐसे लोगों की हालत से ख़ूब वाक़िफ़ हो, क्यूँकि तुम ख़ुद मिस्र में परदेसी रहे हो।

सबत का साल और सबत

10छः साल तक अपनी ज़मीन में बीज बो कर उस की पैदावार जमा करना। 11लेकिन सातवें साल ज़मीन को इस्तेमाल न करना बल्कि उसे पड़े रहने देना। जो कुछ भी उगे वह क़ौम के ग़रीब लोग खाएँ। जो उन से बच जाए उसे जंगली जानवर खाएँ। अपने अंगूर और ज़ैतून के बाग़ों के साथ भी ऐसा ही करना है।

12छः दिन अपना काम-काज करना, लेकिन सातवें दिन आराम करना। फिर तेरा बैल और तेरा गधा भी आराम कर सकेंगे, तेरी लौंडी का बेटा और तेरे साथ रहने वाला परदेसी भी ताज़ादम हो जाएंगे।

13जो भी हिदायत मैं ने दी है उस पर अमल कर। दीगर माबूदों की परस्तिश न करना। मैं तेरे मुँह से उन के नामों तक का ज़िक्र न सुनूँ।

तीन ख़ास ईदें

14साल में तीन दफ़ा मेरी ताज़ीम में ईद
मनाना। 15पहले, बेख़मीरी रोटी की ईद
मनाना। अबीब के महीने[a] में सात दिन तक
तेरी रोटी में ख़मीर न हो जिस तरह मैं ने
हुक्म दिया है, क्यूँकि इस महीने में तू मिस्र
से निकला। इन दिनों में कोई मेरे हुज़ूर ख़ाली
हाथ न आए। 16दूसरे, फ़सलकटाई की ईद
उस वक़्त मनाना जब तू अपने खेत में बोई
हुई पहली फ़सल काटेगा। तीसरे, जमा करने
की ईद फ़सल की कटाई के इख़तिताम[b] पर
मनाना है जब तू ने अंगूर और बाक़ी बाग़ों के
फल जमा किए होंगे। 17यूँ तेरे तमाम मर्द तीन
मर्तबा रब क़ादिर-ए-मुतलक़ के हुज़ूर हाज़िर
हुआ करें।

18जब तू किसी जानवर को ज़बह करके
क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे तो उस के ख़ून के
साथ ऐसी रोटी पेश न करना जिस में ख़मीर
हो। और जो जानवर तू मेरी ईदों पर चढ़ाए
उन की चर्बी अगली सुब्ह तक बाक़ी न रहे।

19अपनी ज़मीन की पहली पैदावार का
बेहतरीन हिस्सा रब अपने ख़ुदा के घर में
लाना।

भेड़ या बकरी के बच्चे को उस की माँ के
दूध में न पकाना।

रब का फ़रिश्ता राहनुमाई करेगा

20मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेजता हूँ
जो रास्ते में तेरी हिफ़ाज़त करेगा और तुझे
उस जगह तक ले जाएगा जो मैं ने तेरे
लिए तय्यार की है। 21उस की मौजूदगी में
एहतियात बरतना। उस की सुनना, और उस
की ख़िलाफ़वरज़ी न करना। अगर तू सरकश
हो जाए तो वह तुझे मुआफ़ नहीं करेगा,
क्यूँकि मेरा नाम उस में हाज़िर होगा। 22लेकिन
अगर तू उस की सुने और सब कुछ करे जो मैं
तुझे बताता हूँ तो मैं तेरे दुश्मनों का दुश्मन और
तेरे मुख़ालिफ़ों का मुख़ालिफ़ हूँगा।

23क्यूँकि मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा
और तुझे मुल्क-ए-कनआन तक पहुँचा देगा
जहाँ अमोरी, हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, कनआनी,
हिव्वी और यबूसी आबाद हैं। तब मैं उन्हें
रू-ए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। 24उन के
माबूदों को सिज्दा न करना, न उन की
ख़िदमत करना। उन के रस्म-ओ-रिवाज भी
न अपनाना बल्कि उन के बुतों को तबाह कर
देना। जिन सतूनों के सामने वह इबादत करते
हैं उन को भी टुकड़े टुकड़े कर डालना। 25रब
अपने ख़ुदा की ख़िदमत करना। फिर मैं तेरी
ख़ुराक और पानी को बरकत दे कर तमाम
बीमारियाँ तुझ से दूर करूँगा। 26फिर तेरे मुल्क
में न किसी का बच्चा ज़ाए होगा, न कोई बाँझ
होगी। साथ ही मैं तुझे तवील ज़िन्दगी अता
करूँगा।

27मैं तेरे आगे आगे दह्शत फैलाऊँगा। जहाँ
भी तू जाएगा वहाँ मैं तमाम क़ौमों में अब्तरी
पैदा करूँगा। मेरे सबब से तेरे सारे दुश्मन
पलट कर भाग जाएंगे। 28मैं तेरे आगे ज़म्बूर
भेज दूँगा जो हिव्वी, कनआनी और हित्ती
को मुल्क छोड़ने पर मज्बूर करेंगे। 29लेकिन
जब तू वहाँ पहुँचेगा तो मैं उन्हें एक ही साल
में मुल्क से नहीं निकालूँगा। वर्ना पूरा मुल्क
वीरान हो जाएगा और जंगली जानवर फैल
कर तेरे लिए नुक़्सान का बाइस बन जाएंगे।
30इस लिए मैं तेरे पहुँचने पर मुल्क के बाशिन्दों
को थोड़ा थोड़ा करके निकालता जाऊँगा।
इतने में तेरी तादाद बढ़ेगी और तू रफ़्ता रफ़्ता
मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सकेगा।

31मैं तेरी सरहद्दें मुक़र्रर करूँगा। बहर-
ए-क़ुल्ज़ुम एक हद होगी और फ़िलिस्तियों
का समुन्दर दूसरी, जुनूब का रेगिस्तान एक
होगी और दरया-ए-फ़ुरात दूसरी। मैं मुल्क के
बाशिन्दों को तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा, और तू
उन्हें अपने आगे आगे मुल्क से दूर करता
जाएगा। 32लाज़िम है कि तू उन के साथ या
उन के माबूदों के साथ अह्द न बांधे। 33उन का

[a]मार्च ता अप्रैल।

[b]सितम्बर ता अक्तूबर।

तेरे मुल्क में रहना मना है, वर्ना तू उन के सबब से मेरा गुनाह करेगा। अगर तू उन के माबूदों की इबादत करेगा तो यह तेरे लिए फंदा बन जाएगा'।"

रब इस्राईल से अह्द बांधता है

24 रब ने मूसा से कहा, "तू, हारून, नदब, अबीहू और इस्राईल के 70 बुज़ुर्ग मेरे पास ऊपर आएँ। कुछ फ़ासिले पर खड़े हो कर मुझे सिज्दा करो। 2सिर्फ़ तू अकेला ही मेरे क़रीब आ, दूसरे दूर रहें। और क़ौम के बाक़ी लोग तेरे साथ पहाड़ पर न चढ़ें।"

3तब मूसा ने क़ौम के पास जा कर रब की तमाम बातें और अह्काम पेश किए। जवाब में सब ने मिल कर कहा, "हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे।"

4तब मूसा ने रब की तमाम बातें लिख लीं। अगले दिन वह सुब्ह-सवेरे उठा और पहाड़ के पास गया। उस के दामन में उस ने क़ुर्बानगाह बनाई। साथ ही उस ने इस्राईल के हर एक क़बीले के लिए एक एक पत्थर का सतून खड़ा किया। 5फिर उस ने कुछ इस्राईली नौजवानों को क़ुर्बानी पेश करने के लिए बुलाया ताकि वह रब की ताज़ीम में भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँ और जवान बैलों को सलामती की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करें। 6मूसा ने क़ुर्बानियों का ख़ून जमा किया। उस का आधा हिस्सा उस ने बासनों में डाल दिया और आधा हिस्सा क़ुर्बानगाह पर छिड़क दिया।

7फिर उस ने वह किताब ली जिस में रब के साथ अह्द की तमाम शराइत दर्ज थीं और उसे क़ौम को पढ़ कर सुनाया। जवाब में उन्हों ने कहा, "हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे। हम उस की सुनेंगे।" 8इस पर मूसा ने बासनों में से ख़ून ले कर उसे लोगों पर छिड़का और कहा, "यह ख़ून उस अह्द की तस्दीक़ करता है जो रब ने तुम्हारे साथ किया है और जो उस की तमाम बातों पर मब्नी है।"

9इस के बाद मूसा, हारून, नदब, अबीहू और इस्राईल के 70 बुज़ुर्ग सीना पहाड़ पर चढ़े। 10वहाँ उन्हों ने इस्राईल के ख़ुदा को देखा। लगता था कि उस के पाँओ के नीचे संग-ए-लाजवर्द का सा तख़्ता था। वह आसमान की मानिन्द साफ़-ओ-शफ़्फ़ाफ़ था। 11अगरचे इस्राईल के राहनुमाओं ने यह सब कुछ देखा तो भी रब ने उन्हें हलाक न किया, बल्कि वह अल्लाह को देखते रहे और उस के हुज़ूर अह्द का खाना खाते और पीते रहे।

पत्थर की तख़्तियाँ

12पहाड़ से उतरने के बाद रब ने मूसा से कहा, "मेरे पास पहाड़ पर आ कर कुछ देर के लिए ठहरे रहना। मैं तुझे पत्थर की तख़्तियाँ दूँगा जिन पर मैं ने अपनी शरीअत और अह्काम लिखे हैं और जो इस्राईल की तालीम-ओ-तर्बियत के लिए ज़रूरी हैं।"

13मूसा अपने मददगार यशूअ के साथ चल पड़ा और अल्लाह के पहाड़ पर चढ़ गया। 14पहले उस ने बुज़ुर्गों से कहा, "हमारी वापसी के इन्तिज़ार में यहाँ ठहरे रहो। हारून और हूर तुम्हारे पास रहेंगे। कोई भी मुआमला हो तो लोग उन ही के पास जाएँ।"

मूसा रब से मिलता है

15जब मूसा चढ़ने लगा तो पहाड़ पर बादल छा गया। 16रब का जलाल कोह-ए-सीना पर उतर आया। छः दिन तक बादल उस पर छाया रहा। सातवें दिन रब ने बादल में से मूसा को बुलाया। 17रब का जलाल इस्राईलियों को भी नज़र आता था। उन्हें यूँ लगा जैसा कि पहाड़ की चोटी पर तेज़ आग भड़क रही हो। 18चढ़ते चढ़ते मूसा बादल में दाख़िल हुआ। वहाँ वह चालीस दिन और चालीस रात रहा।

मुलाक़ात का ख़ैमा बनाने के लिए हदिए

25 रब ने मूसा से कहा, 2"इस्राईलियों
को बता कि वह हदिए ला कर मुझे
उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करें।
लेकिन सिर्फ़ उन से हदिए क़बूल करो जो
दिली ख़ुशी से दें। 3उन से यह चीज़ें हदिए के
तौर पर क़बूल करो : सोना, चाँदी, पीतल;
4नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा,
बारीक कतान, बकरी के बाल, 5मेंढों की सुर्ख़
रंगी हुई खालें, तख़स[a] की खालें, कीकर की
लकड़ी, 6शमादान के लिए ज़ैतून का तेल,
मसह करने के लिए तेल और ख़ुश्बूदार बख़ूर
के लिए मसाले, 7अक़ीक़-ए-अह्मर और दीगर
जवाहिर जो इमाम-ए-आज़म के बालापोश
और सीने के कीसे में जड़े जाएंगे। 8इन चीज़ों
से लोग मेरे लिए मक़्दिस बनाएँ ताकि मैं उन
के दरमियान रहूँ। 9मैं तुझे मक़्दिस और उस
के तमाम सामान का नमूना दिखाऊँगा, क्यूँकि
तुम्हें सब कुछ ऐन उसी के मुताबिक़ बनाना है।

अह्द का सन्दूक़

10-12लोग कीकर की लकड़ी का सन्दूक़
बनाएँ। उस की लम्बाई पौने चार फ़ुट हो
जबकि उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो
दो फ़ुट हो। पूरे सन्दूक़ पर अन्दर और बाहर
से ख़ालिस सोना चढ़ाना। ऊपर की सतह के
इर्दगिर्द सोने की झालर लगाना। सन्दूक़ को
उठाने के लिए सोने के चार कड़े ढाल कर
उन्हें सन्दूक़ के चारपाइयों पर लगाना। दोनों
तरफ़ दो दो कड़े हों। 13फिर कीकर की दो
लकड़ियाँ सन्दूक़ को उठाने के लिए तय्यार
करना। उन पर सोना चढ़ा कर 14उन को दोनों
तरफ़ के कड़ों में डालना ताकि उन से सन्दूक़
को उठाया जाए। 15यह लकड़ियाँ सन्दूक़ के
इन कड़ों में पड़ी रहें। उन्हें कभी भी दूर न
किया जाए। 16सन्दूक़ में शरीअत की वह दो
तख़्तियाँ रखना जो मैं तुझे दूँगा।

17सन्दूक़ का ढकना ख़ालिस सोने का
बनाना। उस की लम्बाई पौने चार फ़ुट और
चौड़ाई सवा दो फ़ुट हो। उस का नाम कफ़्फ़ारे
का ढकना है। 18-19सोने से घड़ कर दो करूबी
फ़रिश्ते बनाए जाएँ जो ढकने के दोनों सिरों
पर खड़े हों। यह दो फ़रिश्ते और ढकना एक
ही टुकड़े से बनाने हैं। 20फ़रिश्तों के पर यूँ
ऊपर की तरफ़ फैले हुए हों कि वह ढकने को
पनाह दें। उन के मुँह एक दूसरे की तरफ़ किए
हुए हों, और वह ढकने की तरफ़ देखें।

21ढकने को सन्दूक़ पर लगा, और सन्दूक़
में शरीअत की वह दो तख़्तियाँ रख जो मैं
तुझे दूँगा। 22वहाँ ढकने के ऊपर दोनों फ़रिश्तों
के दरमियान से मैं अपने आप को तुझ पर
ज़ाहिर करके तुझ से हमकलाम हूँगा और तुझे
इस्राईलियों के लिए तमाम अह्काम दूँगा।

मख़्सूस रोटियों की मेज़

23कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाना। उस
की लम्बाई तीन फ़ुट, चौड़ाई डेढ़ फ़ुट और
ऊँचाई सवा दो फ़ुट हो। 24उस पर ख़ालिस
सोना चढ़ाना, और उस के इर्दगिर्द सोने की
झालर लगाना। 25मेज़ की ऊपर की सतह पर
चौखटा लगाना जिस की ऊँचाई तीन इंच हो
और जिस पर सोने की झालर लगी हो। 26सोने
के चार कड़े ढाल कर उन्हें चारों कोनों पर
लगाना जहाँ मेज़ के पाए लगे हैं। 27यह कड़े
मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए
जाएँ। उन में वह लकड़ियाँ डालनी हैं जिन से
मेज़ को उठाया जाएगा। 28यह लकड़ियाँ भी
कीकर की हों और उन पर सोना चढ़ाया जाए।
उन से मेज़ को उठाना है।

29उस के थाल, प्याले, मर्तबान और मै की
नज़रें पेश करने के बर्तन ख़ालिस सोने से
बनाना है। 30मेज़ पर वह रोटियाँ हर वक़्त मेरे
हुज़ूर पड़ी रहें जो मेरे लिए मख़्सूस हैं।

[a]ग़ालिबन इस मतरूक इब्रानी लफ़्ज़ से मुराद कोई समुन्दरी जानवर है।

शमादान

31ख़ालिस सोने का शमादान भी बनाना।
उस का पाया और डंडी घड़ कर बनाना है।
उस की प्यालियाँ जो फूलों और कलियों की
शक्ल की होंगी पाए और डंडी के साथ एक
ही टुकड़ा हों। 32डंडी से दाईं और बाईं तरफ़
तीन तीन शाख़ें निकलें। 33हर शाख़ पर तीन
प्यालियाँ लगी हों जो बादाम की कलियों
और फूलों की शक्ल की हों। 34शमादान की
डंडी पर भी इस क़िस्म की प्यालियाँ लगी
हों, लेकिन तादाद में चार। 35इन में से तीन
प्यालियाँ दाएँ बाएँ की छः शाख़ों के नीचे
लगी हों। वह यूँ लगी हों कि हर प्याली से दो
शाख़ें निकलें। 36शाख़ें और प्यालियाँ बल्कि
पूरा शमादान ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े
से घड़ कर बनाना है।

37शमादान के लिए सात चराग़ बना कर
उन्हें यूँ शाख़ों पर रखना कि वह सामने की
जगह रौशन करें। 38बत्ती कतरने की क़ैंचियाँ
और जलते कोएले के लिए छोटे बर्तन भी
ख़ालिस सोने से बनाए जाएँ। 39शमादान और
उस सारे सामान के लिए पूरे 34 किलोग्राम
ख़ालिस सोना इस्तेमाल किया जाए। 40ग़ौर
कर कि सब कुछ ऐन उस नमूने के मुताबिक़
बनाया जाए जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर
दिखाता हूँ।

मुलाक़ात का ख़ैमा

26 मुक़द्दस ख़ैमे के लिए दस पर्दे
बनाना। उन के लिए बारीक कतान
और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का
धागा इस्तेमाल करना। पर्दों में किसी माहिर
कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी फ़रिश्तों
का डिज़ाइन बनवाना। 2हर पर्दे की लम्बाई
42 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट हो। 3पाँच पर्दों
के लम्बे हाशिए एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ
और इसी तरह बाक़ी पाँच भी। यूँ दो बड़े
टुकड़े बन जाएंगे। 4दोनों टुकड़ों को एक दूसरे
के साथ मिलाने के लिए नीले धागे के हल्क़े
बनाना। यह हल्क़े हर टुकड़े के 42 फ़ुट वाले
एक किनारे पर लगाए जाएँ, 5एक टुकड़े के
हाशिए पर 50 हल्क़े और दूसरे पर भी उतने
ही हल्क़े। इन दो हाशियों के हल्क़े एक दूसरे
के आमने-सामने हों। 6फिर सोने की 50 हुकें
बना कर उन से आमने-सामने के हल्क़े एक
दूसरे के साथ मिलाना। यूँ दोनों टुकड़े जुड़ कर
ख़ैमे का काम देंगे।

7बकरी के बालों से भी 11 पर्दे बनाना जिन्हें
कपड़े वाले ख़ैमे के ऊपर रखा जाए। 8हर पर्दे
की लम्बाई 45 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट हो।
9पाँच पर्दों के लम्बे हाशिए एक दूसरे के साथ
जोड़े जाएँ और इसी तरह बाक़ी छः भी। इन
छः पर्दों के छटे पर्दे को एक दफ़ा तह करना।
यह सामने वाले हिस्से से लटके।

10बकरी के बाल के इन दोनों टुकड़ों को
भी मिलाना है। इस के लिए हर टुकड़े के 45
फ़ुट वाले एक किनारे पर पचास पचास हल्क़े
लगाना। 11फिर पीतल की 50 हुकें बना कर
उन से दोनों हिस्से मिलाना। 12जब बकरियों
के बालों का यह ख़ैमा कपड़े के ख़ैमे के ऊपर
लगाया जाएगा तो आधा पर्दा बाक़ी रहेगा।
वह ख़ैमे की पिछली तरफ़ लटका रहे। 13ख़ैमे
के दाईं और बाईं तरफ़ बकरी के बालों का
ख़ैमा कपड़े के ख़ैमे की निस्बत डेढ़ डेढ़ फ़ुट
लम्बा होगा। यूँ वह दोनों तरफ़ लटके हुए
कपड़े के ख़ैमे को मह्फ़ूज़ रखेगा।

14एक दूसरे के ऊपर के इन दोनों ख़ैमों की
हिफ़ाज़त के लिए दो ग़िलाफ़ बनाने हैं। बकरी
के बालों के ख़ैमे पर मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई
खालें जोड़ कर रखी जाएँ और उन पर तख़स
की खालें मिला कर रखी जाएँ।

15कीकर की लकड़ी के तख़्ते बनाना जो
खड़े किए जाएँ ताकि ख़ैमे की दीवारों का
काम दें। 16हर तख़्ते की ऊँचाई 15 फ़ुट हो
और चौड़ाई सवा दो फ़ुट। 17हर तख़्ते के नीचे
दो दो चूलें हों। यह चूलें हर तख़्ते को उस
के पाइयों के साथ जोड़ेंगी ताकि तख़्ता खड़ा
रहे। 18ख़ैमे की जुनूबी दीवार के लिए 20

तख़्तों की ज़रूरत है 19और साथ ही चाँदी
के 40 पाइयों की। उन पर तख़्ते खड़े किए
जाएंगे। हर तख़्ते के नीचे दो पाए होंगे, और
हर पाए में एक चूल लगेगी। 20इसी तरह ख़ैमे
की शिमाली दीवार के लिए भी 20 तख़्तों की
ज़रूरत है 21और साथ ही चाँदी के 40 पाइयों
की। वह भी तख़्तों को खड़ा करने के लिए
हैं। हर तख़्ते के नीचे दो पाए होंगे। 22ख़ैमे की
पिछली यानी मग़रिबी दीवार के लिए छः तख़्ते
बनाना। 23इस दीवार को शिमाली और जुनूबी
दीवारों के साथ जोड़ने के लिए कोने वाले दो
तख़्ते बनाना। 24इन दो तख़्तों में नीचे से ले
कर ऊपर तक कोना हो ताकि एक से शिमाली
दीवार मग़रिबी दीवार के साथ जुड़ जाए और
दूसरे से जुनूबी दीवार मग़रिबी दीवार के साथ।
इन के ऊपर के सिरे कड़ों से मज़बूत किए
जाएँ। 25यूँ पिछले यानी मग़रिबी तख़्तों की
पूरी तादाद 8 होगी और इन के लिए चाँदी के
पाइयों की तादाद 16, हर तख़्ते के नीचे दो दो
पाए होंगे।

26-27इस के इलावा कीकर की लकड़ी के
शहतीर बनाना, तीनों दीवारों के लिए पाँच
पाँच शहतीर। वह हर दीवार के तख़्तों पर
यूँ लगाए जाएँ कि वह उन्हें एक दूसरे के
साथ मिलाएँ। 28दरमियानी शहतीर दीवार की
आधी ऊँचाई पर दीवार के एक सिरे से दूसरे
सिरे तक लगाया जाए। 29शहतीरों को तख़्तों
के साथ लगाने के लिए सोने के कड़े बना कर
तख़्तों में लगाना। तमाम तख़्तों और शहतीरों
पर सोना चढ़ाना।

30पूरे मुक़द्दस ख़ैमे को उसी नमूने के
मुताबिक़ बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता
हूँ।

मुक़द्दस ख़ैमे के पर्दे

31अब एक और पर्दा बनाना। इस के
लिए भी बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी
और क़िर्मिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल करना।
उस पर भी किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई
के काम से करूबी फ़रिश्तों का डिज़ाइन
बनवाना। 32इसे सोने की हुकों से कीकर की
लकड़ी के चार सतूनों से लटकाना। इन सतूनों
पर सोना चढ़ाया जाए और वह चाँदी के पाइयों
पर खड़े हों। 33यह पर्दा मुक़द्दस कमरे को
मुक़द्दसतरीन कमरे से अलग करेगा जिस में
अह्द का सन्दूक़ पड़ा रहेगा। पर्दे को लटकाने
के बाद उस के पीछे मुक़द्दसतरीन कमरे में
अह्द का सन्दूक़ रखना। 34फिर अह्द के
सन्दूक़ पर कफ़्फ़ारे का ढकना रखना।

35जिस मेज़ पर मेरे लिए मख़्सूस की गई
रोटियाँ पड़ी रहती हैं वह पर्दे के बाहर मुक़द्दस
कमरे में शिमाल की तरफ़ रखी जाए। उस
के मुक़ाबिल जुनूब की तरफ़ शमादान रखा
जाए।

36फिर ख़ैमे के दरवाज़े के लिए भी पर्दा
बनाया जाए। इस के लिए भी बारीक कतान
और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का
धागा इस्तेमाल किया जाए। इस पर कढ़ाई
का काम किया जाए। 37इस पर्दे को सोने की
हुकों से कीकर की लकड़ी के पाँच सतूनों
से लटकाना। इन सतूनों पर भी सोना चढ़ाया
जाए, और वह पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह

27 कीकर की लकड़ी की क़ुर्बानगाह
बनाना। उस की ऊँचाई साढ़े चार
फ़ुट हो जबकि उस की लम्बाई और चौड़ाई
साढ़े सात सात फ़ुट हो। 2उस के ऊपर चारों
कोनों में से एक एक सींग निकले। सींग और
क़ुर्बानगाह एक ही टुकड़े के हों। सब पर
पीतल चढ़ाना। 3उस का तमाम साज़-ओ-
सामान और बर्तन भी पीतल के हों यानी राख
को उठा कर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे,
काँटे, जलते हुए कोएले के लिए बर्तन और
छिड़काओ के कटोरे।

4क़ुर्बानगाह को उठाने के लिए पीतल का
जंगला बनाना जो ऊपर से खुला हो। जंगले के
चारों कोनों पर कड़े लगाए जाएँ। 5क़ुर्बानगाह

की आधी ऊँचाई पर किनारा लगाना, और क़ुर्बानगाह को जंगले में इस किनारे तक रखा जाए। 6उसे उठाने के लिए कीकर की दो लकड़ियाँ बनाना जिन पर पीतल चढ़ाना है। 7उन को क़ुर्बानगाह के दोनों तरफ़ के कड़ों में डाल देना।

8पूरी क़ुर्बानगाह लकड़ी की हो, लेकिन अन्दर से खोखली हो। उसे ऐन उस नमूने के मुताबिक़ बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ।

ख़ैमे का सहन

9मुक़द्दस ख़ैमे के लिए सहन बनाना। उस की चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई जाए। चारदीवारी की लम्बाई जुनूब की तरफ़ 150 फ़ुट हो। 10कपड़े को चाँदी की हुकों और पट्टियों से लकड़ी के 20 खम्बों के साथ लगाया जाए। हर खम्बा पीतल के पाए पर खड़ा हो। 11चारदीवारी शिमाल की तरफ़ भी इसी की मानिन्द हो। 12ख़ैमे के पीछे मग़रिब की तरफ़ चारदीवारी की चौड़ाई 75 फ़ुट हो और कपड़ा लकड़ी के 10 खम्बों के साथ लगाया जाए। यह खम्बे भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

13सामने, मशरिक़ की तरफ़ जहाँ से सूरज तुलू होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फ़ुट हो। 14-15यहाँ चारदीवारी का दरवाज़ा हो। कपड़ा दरवाज़े के दाईं तरफ़ साढ़े 22 फ़ुट चौड़ा हो और उस के बाईं तरफ़ भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ़ तीन तीन लकड़ी के खम्बों के साथ लगाया जाए जो पीतल के पाइयों पर खड़े हों। 16दरवाज़े का पर्दा 30 फ़ुट चौड़ा बनाना। वह नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया जाए, और उस पर कढ़ाई का काम हो। यह कपड़ा लकड़ी के चार खम्बों के साथ लगाया जाए। वह भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

17तमाम खम्बे पीतल के पाइयों पर खड़े हों और कपड़ा चाँदी की हुकों और पट्टियों से हर खम्बे के साथ लगाया जाए। 18चारदीवारी की लम्बाई 150 फ़ुट, चौड़ाई 75 फ़ुट और ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट हो। खम्बों के तमाम पाए पीतल के हों। 19जो भी साज़-ओ-सामान मुक़द्दस ख़ैमे में इस्तेमाल किया जाता है वह सब पीतल का हो। ख़ैमे और चारदीवारी की मेख़ें भी पीतल की हों।

शमादान का तेल

20इस्राईलियों को हुक्म देना कि वह तेरे पास कूटे हुए ज़ैतूनों का ख़ालिस तेल लाएँ ताकि मुक़द्दस कमरे के शमादान के चराग़ मुतवातिर जलते रहें। 21हारून और उस के बेटे शमादान को मुलाक़ात के ख़ैमे के मुक़द्दस कमरे में रखें, उस पर्दे के सामने जिस के पीछे अह्द का सन्दूक़ है। उस में वह तेल डालते रहें ताकि वह रब के सामने शाम से ले कर सुब्ह तक जलता रहे। इस्राईलियों का यह उसूल अबद तक क़ाइम रहे।

इमामों के लिबास

28 अपने भाई हारून और उस के बेटों नदब, अबीहू, इलीअज़र और इतमर को बुला। मैं ने उन्हें इस्राईलियों में से चुन लिया है ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी ख़िदमत करें। 2अपने भाई हारून के लिए मुक़द्दस लिबास बनवाना जो पुरवक़ार और शानदार हों। 3लिबास बनाने की ज़िम्मादारी उन तमाम लोगों को देना जो ऐसे कामों में माहिर हैं और जिन को मैं ने हिक्मत की रूह से भर दिया है। क्यूँकि जब हारून को मख़्सूस किया जाएगा और वह मुक़द्दस ख़ैमे की ख़िदमत सरअन्जाम देगा तो उसे इन कपड़ों की ज़रूरत होगी।

4उस के लिए यह लिबास बनाने हैं : सीने का कीसा, बालापोश, चोग़ा, बुना हुआ ज़ेरजामा, पगड़ी और कमरबन्द। यह कपड़े

अपने भाई हारून और उस के बेटों के लिए
बनवाने हैं ताकि वह इमाम के तौर पर ख़िदमत
कर सकें। 5इन कपड़ों के लिए सोना और
नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा
और बारीक कतान इस्तेमाल किया जाए।

हारून का बालापोश

6बालापोश को भी सोने और नीले,
अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और
बारीक कतान से बनाना है। उस पर किसी
माहिर कारीगर से कढ़ाई का काम करवाया
जाए। 7उस की दो पट्टियाँ हों जो कंधों पर रख
कर सामने और पीछे से बालापोश के साथ
लगी हों। 8इस के इलावा एक पटका बुनना है
जिस से बालापोश को बांधा जाए और जो
बालापोश के साथ एक टुकड़ा हो। उस के
लिए भी सोना, नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी
रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल
किया जाए।

9फिर अक़ीक़-ए-अह्मर के दो पत्थर चुन
कर उन पर इस्राईल के बारह बेटों के नाम
कन्दा करना। 10हर जौहर पर छः छः नाम उन
की पैदाइश की तरतीब के मुताबिक़ कन्दा
किए जाएँ। 11यह नाम उस तरह जौहरों पर
कन्दा किए जाएँ जिस तरह मुहर कन्दा की
जाती है। फिर दोनों जौहर सोने के ख़ानों में
जड़ कर 12बालापोश की दो पट्टियों पर ऐसे
लगाना कि कंधों पर आ जाएँ। जब हारून मेरे
हुज़ूर आएगा तो जौहरों पर के यह नाम उस के
कंधों पर होंगे और मुझे इस्राईलियों की याद
दिलाएँगे।

13सोने के ख़ाने बनाना 14और ख़ालिस सोने
की दो ज़न्जीरें जो डोरी की तरह गुंधी हुई हों।
फिर इन दो ज़न्जीरों को सोने के ख़ानों के
साथ लगाना।

सीने का कीसा

15सीने के लिए कीसा बनाना। उस में वह
क़ुरए पड़े रहें जिन की मारिफ़त मेरी मर्ज़ी
मालूम की जाएगी। माहिर कारीगर उसे उन ही
चीज़ों से बनाए जिन से हारून का बालापोश
बनाया गया है यानी सोने और नीले, अर्ग़वानी
और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान
से। 16जब कपड़े को एक दफ़ा तह किया गया
हो तो कीसे की लम्बाई और चौड़ाई नौ नौ इंच
हो।

17उस पर चार क़तारों में जवाहिर जड़ना।
हर क़तार में तीन तीन जौहर हों। पहली क़तार
में लाल,[a] ज़बर्जद[b] और ज़ुमुर्रद। 18दूसरी
में फ़ीरोज़ा, संग-ए-लाजवर्द[c] और हज्र-उल-
क़मर।[d] 19तीसरी में ज़रक़ोन,[e] अक़ीक़[f] और
याक़ूत-ए-अर्ग़वानी।[g] 20चौथी में पुखराज,[h]
अक़ीक़-ए-अह्मर[i] और यशब।[j] हर जौहर
सोने के ख़ाने में जड़ा हुआ हो। 21यह
बारह जवाहिर इस्राईल के बारह क़बीलों की
नुमाइन्दगी करते हैं। एक एक जौहर पर एक
क़बीले का नाम कन्दा किया जाए। यह नाम
उस तरह कन्दा किए जाएँ जिस तरह मुहर
कन्दा की जाती है।

22सीने के कीसे पर ख़ालिस सोने की दो
ज़न्जीरें लगाना जो डोरी की तरह गुंधी हुई
हों। 23उन्हें लगाने के लिए दो कड़े बना कर
कीसे के ऊपर के दो कोनों पर लगाना। 24अब

[a] या एक क़िस्म का सुर्ख़ अक़ीक़। याद रहे कि चूँकि क़दीम ज़माने के अक्सर जवाहिरात के नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख़्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।
[b] peridot
[c] lapis lazuli
[d] moonstone
[e] hyacinth
[f] agate
[g] amethyst
[h] topas
[i] carnelian
[j] jasper

दोनों ज़न्जीरें उन दो कड़ों से लगाना। 25उन
के दूसरे सिरे बालापोश की कंधों वाली पट्टियों
के दो ख़ानों के साथ जोड़ देना, फिर सामने
की तरफ़ लगाना। 26कीसे के निचले दो कोनों
पर भी सोने के दो कड़े लगाना। वह अन्दर,
बालापोश की तरफ़ लगे हों। 27अब दो और
कड़े बना कर बालापोश की कंधों वाली पट्टियों
पर लगाना। यह भी सामने की तरफ़ लगे हों
लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के ऊपर ही।
28सीने के कीसे के निचले कड़े नीली डोरी से
बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ बांधे
जाएँ। यूँ कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह
सीने के साथ लगा रहेगा।

29जब भी हारून मक़्दिस में दाख़िल हो कर
रब के हुज़ूर आएगा वह इस्राईली क़बीलों के
नाम अपने दिल पर सीने के कीसे की सूरत में
साथ ले जाएगा। यूँ वह क़ौम की याद दिलाता
रहेगा।

30सीने के कीसे में दोनों क़ुरए बनाम ऊरीम
और तुम्मीम रखे जाएँ। वह भी मक़्दिस में रब
के सामने आते वक़्त हारून के दिल पर हों।
यूँ जब हारून रब के हुज़ूर होगा तो रब की
मर्ज़ी पूछने का वसीला हमेशा उस के दिल
पर होगा।

हारून का चोग़ा

31चोग़ा भी बुनना। वह पूरी तरह नीले धागे
से बनाया जाए। चोग़े को बालापोश से पहले
पहना जाए। 32उस के गरेबान को बुने हुए
कालर से मज़बूत किया जाए ताकि वह न
फटे। 33नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के
धागे से अनार बना कर उन्हें चोग़े के दामन में
लगा देना। उन के दरमियान सोने की घंटियाँ
लगाना। 34दामन में अनार और घंटियाँ बारी
बारी लगाना।

35हारून ख़िदमत करते वक़्त हमेशा चोग़ा
पहने। जब वह मक़्दिस में रब के हुज़ूर आएगा
और वहाँ से निकलेगा तो घंटियाँ सुनाई देंगी।
फिर वह नहीं मरेगा।

माथे पर छोटी तख़्ती, ज़ेरजामा और पगड़ी

36ख़ालिस सोने की तख़्ती बना कर उस
पर यह अल्फ़ाज़ कन्दा करना, 'रब के लिए
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस।' यह अल्फ़ाज़ यूँ कन्दा
किए जाएँ जिस तरह मुहर कन्दा की जाती
है। 37उसे नीली डोरी से पगड़ी के सामने वाले
हिस्से से लगाया जाए 38ताकि वह हारून के
माथे पर पड़ी रहे। जब भी वह मक़्दिस में
जाए तो यह तख़्ती साथ हो। जब इस्राईली
अपने नज़राने ला कर रब के लिए मख़्सूस
करें लेकिन किसी ग़लती के बाइस क़ुसूरवार
हों तो उन का यह क़ुसूर हारून पर मुन्तक़िल
होगा। इस लिए यह तख़्ती हर वक़्त उस के
माथे पर हो ताकि रब इस्राईलियों को क़बूल
कर ले।

39ज़ेरजामे को बारीक कतान से बुनना और
इस तरह पगड़ी भी। फिर कमरबन्द बनाना।
उस पर कढ़ाई का काम किया जाए।

बाक़ी लिबास

40हारून के बेटों के लिए भी ज़ेरजामे,
कमरबन्द और पगड़ियाँ बनाना ताकि वह
पुरवक़ार और शानदार नज़र आएँ। 41यह
सब अपने भाई हारून और उस के बेटों को
पहनाना। उन के सरों पर तेल उंडेल कर उन्हें
मसह करना। यूँ उन्हें उन के उह्दे पर मुक़र्रर
करके मेरी ख़िदमत के लिए मख़्सूस करना।

42उन के लिए कतान के पाजामे भी बनाना
ताकि वह ज़ेरजामे के नीचे नंगे न हों। उन की
लम्बाई कमर से रान तक हो। 43जब भी हारून
और उस के बेटे मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल
हों तो उन्हें यह पाजामे पहनने हैं। इसी तरह
जब उन्हें मुक़द्दस कमरे में ख़िदमत करने के
लिए क़ुर्बानगाह के पास आना होता है तो वह
यह पहनें, वर्ना वह क़ुसूरवार ठहर कर मर
जाएंगे। यह हारून और उस की औलाद के
लिए एक अबदी उसूल है।

इमामों की मख़्सूसियत

29 इमामों को मक़्दिस में मेरी ख़िदमत के लिए मख़्सूस करने का यह तरीक़ा है :

एक जवान बैल और दो बेऐब मेंढे चुन लेना। 2बेहतरीन मैदे से तीन क़िस्म की चीज़ें पकाना जिन में ख़मीर न हो। पहले, सादा रोटी। दूसरे, रोटी जिस में तेल डाला गया हो। तीसरे, रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो। 3यह चीज़ें टोकरी में रख कर जवान बैल और दो मेंढों के साथ रब को पेश करना। 4फिर हारून और उस के बेटों को मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर ला कर ग़ुसल कराना। 5इस के बाद ज़ेरजामा, चोग़ा, बालापोश और सीने का कीसा ले कर हारून को पहनाना। बालापोश को उस के महारत से बुने हुए पटके के ज़रीए बांधना। 6उस के सर पर पगड़ी बांध कर उस पर सोने की मुक़द्दस तख़्ती लगाना। 7हारून के सर पर मसह का तेल उंडेल कर उसे मसह करना।

8फिर उस के बेटों को आगे ला कर ज़ेरजामा पहनाना। 9उन के पगड़ियाँ और कमरबन्द बांधना। यूँ तू हारून और उस के बेटों को उन के मन्सब पर मुक़र्रर करना। सिर्फ़ वह और उन की औलाद हमेशा तक मक़्दिस में मेरी ख़िदमत करते रहें।

10बैल को मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने लाना। हारून और उस के बेटे उस के सर पर अपने हाथ रखें। 11उसे ख़ैमे के दरवाज़े के सामने रब के हुज़ूर ज़बह करना। 12बैल के ख़ून में से कुछ ले कर अपनी उंगली से क़ुर्बानगाह के सींगों पर लगाना और बाक़ी ख़ून क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेल देना। 13अंतड़ियों पर की तमाम चर्बी, जोड़कलेजी और दोनों गुर्दे उन की चर्बी समेत ले कर क़ुर्बानगाह पर जला देना। 14लेकिन बैल के गोश्त, खाल और अंतड़ियों के गोबर को ख़ैमागाह के बाहर जला देना। यह गुनाह की क़ुर्बानी है।

15इस के बाद पहले मेंढे को ले आना। हारून और उस के बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें। 16उसे ज़बह करके उस का ख़ून क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कना। 17मेंढे को टुकड़े टुकड़े करके उस की अंतड़ियों और पिंडलियों को धोना। फिर उन्हें सर और बाक़ी टुकड़ों के साथ मिला कर 18पूरे मेंढे को क़ुर्बानगाह पर जला देना। जलने वाली यह क़ुर्बानी रब के लिए भस्म होने वाली क़ुर्बानी है, और उस की ख़ुश्बू रब को पसन्द है।

19अब दूसरे मेंढे को ले आना। हारून और उस के बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें। 20उस को ज़बह करना। उस के ख़ून में से कुछ ले कर हारून और उस के बेटों के दहने कान की लौ पर लगाना। इसी तरह ख़ून को उन के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर भी लगाना। बाक़ी ख़ून क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कना। 21जो ख़ून क़ुर्बानगाह पर पड़ा है उस में से कुछ ले कर और मसह के तेल के साथ मिला कर हारून और उस के कपड़ों पर छिड़कना। इसी तरह उस के बेटों और उन के कपड़ों पर भी छिड़कना। यूँ वह और उस के बेटे ख़िदमत के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएंगे।

22इस मेंढे का ख़ास मक़्सद यह है कि हारून और उस के बेटों को मक़्दिस में ख़िदमत करने का इख़तियार और उह्दा दिया जाए। मेंढे की चर्बी, दुम, अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, जोड़कलेजी, दोनों गुर्दे उन की चर्बी समेत और दहनी रान अलग करनी है। 23उस टोकरी में से जो रब के हुज़ूर यानी ख़ैमे के दरवाज़े पर पड़ी है एक सादा रोटी, एक रोटी जिस में तेल डाला गया हो और एक रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो निकालना। 24मेंढे से अलग की गई चीज़ें और बेख़मीरी रोटी की टोकरी की यह चीज़ें ले कर हारून और उस के बेटों के हाथों में देना, और वह उन्हें हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब के सामने

हिलाएँ। 25फिर यह चीज़ें उन से वापस ले कर भस्म होने वाली क़ुर्बानी के साथ क़ुर्बानगाह पर जला देना। यह रब के लिए जलने वाली क़ुर्बानी है, और उस की ख़ुश्बू रब को पसन्द है।

26अब उस मेंढे का सीना लेना जिस की मारिफ़त हारून को इमाम-ए-आज़म का इख़तियार दिया जाता है। सीने को भी हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाना। यह सीना क़ुर्बानी का तेरा हिस्सा होगा। 27यूँ तुझे हारून और उस के बेटों की मख़्सूसियत के लिए मुस्तामल मेंढे के टुकड़े मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करने हैं। उस के सीने को रब के सामने हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर हिलाया जाए और उस की रान को उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर उठाया जाए। 28हारून और उस की औलाद को इस्राईलियों की तरफ़ से हमेशा तक यह मिलने का हक़ है। जब भी इस्राईली रब को अपनी सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश करें तो इमामों को यह दो टुकड़े मिलेंगे।

29जब हारून फ़ौत हो जाएगा तो उस के मुक़द्दस लिबास उस की औलाद में से उस मर्द को देने हैं जिसे मसह करके हारून की जगह मुक़र्रर किया जाएगा। 30जो बेटा उस की जगह मुक़र्रर किया जाएगा और मक़्दिस में ख़िदमत करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में आएगा वह यह लिबास सात दिन तक पहने रहे।

31जो मेंढा हारून और उस के बेटों की मख़्सूसियत के लिए ज़बह किया गया है उसे मुक़द्दस जगह पर उबालना है। 32फिर हारून और उस के बेटे मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर मेंढे का गोश्त और टोकरी की बेख़मीरी रोटियाँ खाएँ। 33वह यह चीज़ें खाएँ जिन से उन्हें गुनाहों का कफ़्फ़ारा और इमाम का उह्दा मिला है। लेकिन कोई और यह न खाए, क्यूँकि यह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं। 34और अगर अगली सुब्ह तक इस गोश्त या रोटी में से कुछ बच जाए तो उसे जलाया जाए। उसे खाना मना है, क्यूँकि वह मुक़द्दस है।

35जब तू हारून और उस के बेटों को इमाम मुक़र्रर करेगा तो ऐन मेरी हिदायत पर अमल करना। यह तक़्रीब सात दिन तक मनाई जाए। 36इस के दौरान गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर रोज़ाना एक जवान बैल ज़बह करना। इस से तू क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा दे कर उसे हर तरह की नापाकी से पाक करेगा। इस के इलावा उस पर मसह का तेल उंडेलना। इस से वह मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएगा। 37सात दिन तक क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा दे कर उसे पाक-साफ़ करना और उसे तेल से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करना। फिर क़ुर्बानगाह निहायत मुक़द्दस होगी। जो भी उसे छुएगा वह भी मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएगा।

रोज़मर्रा की क़ुर्बानियाँ

38रोज़ाना एक एक साल के दो भेड़ के नर बच्चे क़ुर्बानगाह पर जला देना, 39एक को सुब्ह के वक़्त, दूसरे को सूरज के ग़ुरूब होने के ऐन बाद। 40पहले जानवर के साथ डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश किया जाए जो कूटे हुए ज़ैतूनों के एक लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। मै की नज़र के तौर पर एक लिटर मै भी क़ुर्बानगाह पर उंडेलना। 41दूसरे जानवर के साथ भी ग़ल्ला और मै की यह दो नज़रें पेश की जाएँ। ऐसी क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब को पसन्द है।

42लाज़िम है कि आने वाली तमाम नस्लें भस्म होने वाली यह क़ुर्बानी बाक़ाइदगी से मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के हुज़ूर चढ़ाएँ। वहाँ मैं तुम से मिला करूँगा और तुम से हमकलाम हूँगा। 43वहाँ मैं इस्राईलियों से भी मिला करूँगा, और वह जगह मेरे जलाल से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएगी। 44यूँ मैं मुलाक़ात के ख़ैमे और क़ुर्बानगाह को मख़्सूस करूँगा और हारून और उस के बेटों को

मख़्सूस करूँगा ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी ख़िदमत करें।

45तब मैं इस्राईलियों के दरमियान रहूँगा और उन का ख़ुदा हूँगा। 46वह जान लेंगे कि मैं रब उन का ख़ुदा हूँ, कि मैं उन्हें मिस्र से निकाल लाया ताकि उन के दरमियान सुकूनत करूँ। मैं रब उन का ख़ुदा हूँ।

बख़ूर जलाने की क़ुर्बानगाह

30 कीकर की लकड़ी की क़ुर्बानगाह बनाना जिस पर बख़ूर जलाया जाए। 2वह डेढ़ फ़ुट लम्बी, इतनी ही चौड़ी और तीन फ़ुट ऊँची हो। उस के चारों कोनों में से सींग निकलें जो क़ुर्बानगाह के साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए हों। 3उस की ऊपर की सतह, उस के चार पहलूओं और उस के सींगों पर ख़ालिस सोना चढ़ाना। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द सोने की झालर हो। 4सोने के दो कड़े बना कर इन्हें उस झालर के नीचे एक दूसरे के मुक़ाबिल पहलूओं पर लगाना। इन कड़ों में क़ुर्बानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली जाएँगी। 5यह लकड़ियाँ कीकर की हों, और उन पर भी सोना चढ़ाना।

6इस क़ुर्बानगाह को ख़ैमे के मुक़द्दस कमरे में उस पर्दे के सामने रखना जिस के पीछे अह्द का सन्दूक़ और उस का ढकना होंगे, वह ढकना जहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा। 7जब हारून हर सुब्ह शमादान के चराग़ तय्यार करे उस वक़्त वह उस पर ख़ुश्बूदार बख़ूर जलाए। 8सूरज के ग़ुरूब होने के बाद भी जब वह दुबारा चराग़ों की देख-भाल करेगा तो वह साथ साथ बख़ूर जलाए। यूँ रब के सामने बख़ूर मुतवातिर जलता रहे। लाज़िम है कि बाद की नस्लें भी इस उसूल पर क़ाइम रहें।

9इस क़ुर्बानगाह पर सिर्फ़ जाइज़ बख़ूर इस्तेमाल किया जाए। इस पर न तो जानवरों की क़ुर्बानियाँ चढ़ाई जाएँ, न ग़ल्ला या मै की नज़रें पेश की जाएँ। 10हारून साल में एक दफ़ा उस का कफ़्फ़ारा दे कर उसे पाक करे। इस के लिए वह कफ़्फ़ारे के दिन उस क़ुर्बानी का कुछ ख़ून सींगों पर लगाए। यह उसूल भी अबद तक क़ाइम रहे। यह क़ुर्बानगाह रब के लिए निहायत मुक़द्दस है।"

मर्दुमशुमारी के पैसे

11रब ने मूसा से कहा, 12"जब भी तू इस्राईलियों की मर्दुमशुमारी करे तो लाज़िम है कि जिन का शुमार किया गया हो वह रब को अपनी जान का फ़िद्या दें ताकि उन में वबा न फैले। 13जिस जिस का शुमार किया गया हो वह चाँदी के आधे सिक्के के बराबर रक़म उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर दे। सिक्के का वज़न मक़्दिस के सिक्कों के बराबर हो। यानी चाँदी के सिक्के का वज़न 11 ग्राम हो, इस लिए छः ग्राम चाँदी देनी है। 14जिस की भी उम्र 20 साल या इस से ज़ाइद हो वह रब को यह रक़म उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर दे। 15अमीर और ग़रीब दोनों इतना ही दें, क्यूँकि यही नज़राना रब को पेश करने से तुम्हारी जान का कफ़्फ़ारा दिया जाता है। 16कफ़्फ़ारे की यह रक़म मुलाक़ात के ख़ैमे की ख़िदमत के लिए इस्तेमाल करना। फिर यह नज़राना रब को याद दिलाता रहेगा कि तुम्हारी जानों का कफ़्फ़ारा दिया गया है।"

धोने का हौज़

17रब ने मूसा से कहा, 18"पीतल का ढाँचा बनाना जिस पर पीतल का हौज़ बना कर रखना है। यह हौज़ धोने के लिए है। उसे सहन में मुलाक़ात के ख़ैमे और जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह के दरमियान रख कर पानी से भर देना। 19हारून और उस के बेटे अपने हाथ-पाँओ धोने के लिए उस का पानी इस्तेमाल करें। 20मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल होने से पहले ही वह अपने आप को धोएँ वर्ना वह मर जाएंगे। इसी तरह जब भी वह ख़ैमे के बाहर की क़ुर्बानगाह पर जानवरों की क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँ 21तो लाज़िम है कि पहले

हाथ-पाँओ धो लें, वर्ना वह मर जाएंगे। यह उसूल हारून और उस की औलाद के लिए हमेशा तक क़ाइम रहे।"

मसह का तेल

22रब ने मूसा से कहा, 23"मसह के तेल के लिए उम्दा क़िस्म के मसाले इस्तेमाल करना। 6 किलोग्राम आब-ए-मुर, 3 किलोग्राम ख़ुश्बूदार दारचीनी, 3 किलोग्राम ख़ुश्बूदार बेद 24और 6 किलोग्राम तेजपात। यह चीज़ें मक़्दिस के बाटों के हिसाब से तोल कर चार लिटर ज़ैतून के तेल में डालना। 25सब कुछ मिला कर ख़ुश्बूदार तेल तय्यार करना। वह मुक़द्दस है और सिर्फ़ उस वक़्त इस्तेमाल किया जाए जब कोई चीज़ या शख़्स मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया जाए।

26यही तेल ले कर मुलाक़ात का ख़ैमा और उस का सारा सामान मसह करना यानी ख़ैमा, अह्द का सन्दूक़, 27मेज़ और उस का सामान, शमादान और उस का सामान, बख़ूर जलाने की क़ुर्बानगाह, 28जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह और उस का सामान, धोने का हौज़ और उस का ढाँचा। 29यूँ तू यह तमाम चीज़ें मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करेगा। इस से वह निहायत मुक़द्दस हो जाएँगी। जो भी उन्हें छुएगा वह मुक़द्दस हो जाएगा।

30हारून और उस के बेटों को भी इस तेल से मसह करना ताकि वह मुक़द्दस हो कर मेरे लिए इमाम का काम सरअन्जाम दे सकें। 31इस्राईलियों को कह दे कि यह तेल हमेशा तक मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है। 32इस लिए इसे अपने लिए इस्तेमाल न करना और न इस तरकीब से अपने लिए तेल बनाना। यह तेल मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है और तुम्हें भी इसे यूँ ठहराना है। 33जो इस तरकीब से आम इस्तेमाल के लिए तेल बनाता है या किसी आम शख़्स पर लगाता है उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है।"

बख़ूर की क़ुर्बानी

34रब ने मूसा से कहा, "बख़ूर इस तरकीब से बनाना है : मस्तकी, ओनिका,[a] बिरीजा और ख़ालिस लुबान बराबर के हिस्सों में 35मिला कर ख़ुश्बूदार बख़ूर बनाना। इत्रसाज़ का यह काम नमकीन, ख़ालिस और मुक़द्दस हो। 36इस में से कुछ पीस कर पाउडर बनाना और मुलाक़ात के ख़ैमे में अह्द के सन्दूक़ के सामने डालना जहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा।

इस बख़ूर को मुक़द्दसतरीन ठहराना। 37इसी तरकीब के मुताबिक़ अपने लिए बख़ूर न बनाना। इसे रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस ठहराना है। 38जो भी अपने ज़ाती इस्तेमाल के लिए इस क़िस्म का बख़ूर बनाए उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है।"

बज़लीएल और उहलियाब

31 फिर रब ने मूसा से कहा, 2"मैं ने यहूदाह के क़बीले के बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर को चुन लिया है ताकि वह मुक़द्दस ख़ैमे की तामीर में राहनुमाई करे। 3मैं ने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिक्मत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। 4वह नक़्शे बना कर उन के मुताबिक़ सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना सकता है। 5वह जवाहिर को काट कर जड़ने की क़ाबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराश कर उस से मुख़्तलिफ़ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत रखता है।

6साथ ही मैं ने दान के क़बीले के उहलियाब बिन अख़ीसमक को मुक़र्रर किया है ताकि वह हर काम में उस की मदद करे। इस के इलावा मैं ने तमाम समझदार कारीगरों को महारत दी है ताकि वह सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बना सकें जो मैं ने तुझे दी हैं। 7यानी मुलाक़ात का ख़ैमा, कफ़्फ़ारे के ढकने समेत अह्द का सन्दूक़ और ख़ैमे का सारा दूसरा

[a] onycha (unguis odoratus)

सामान, 8मेज़ और उस का सामान, ख़ालिस
सोने का शमादान और उस का सामान, बख़ूर
जलाने की क़ुर्बानगाह, 9जानवरों को चढ़ाने
की क़ुर्बानगाह और उस का सामान, धोने
का हौज़ उस ढाँचे समेत जिस पर वह रखा
जाता है, 10वह लिबास जो हारून और उस
के बेटे मक़्दिस में ख़िदमत करने के लिए
पहनते हैं, 11मसह का तेल और मक़्दिस के
लिए ख़ुश्बूदार बख़ूर। यह सब कुछ वह वैसे
ही बनाएँ जैसे मैं ने तुझे हुक्म दिया है।"

सबत यानी हफ़्ते का दिन

12रब ने मूसा से कहा, 13"इस्राईलियों को
बता कि हर सबत का दिन ज़रूर मनाओ।
क्यूँकि सबत का दिन एक नुमायाँ निशान है
जिस से जान लिया जाएगा कि मैं रब हूँ जो
तुम्हें मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ। और यह
निशान मेरे और तुम्हारे दरमियान नस्ल-दर-
नस्ल क़ाइम रहेगा। 14सबत का दिन ज़रूर
मनाना, क्यूँकि वह तुम्हारे लिए मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस है। जो भी उस की बेहुरमती करे वह
ज़रूर जान से मारा जाए। जो भी इस दिन
काम करे उसे उस की क़ौम में से मिटाया
जाए। 15छः दिन काम करना, लेकिन सातवाँ
दिन आराम का दिन है। वह रब के लिए
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है।
16इस्राईलियों को हाल में और मुस्तक़बिल
में सबत का दिन अबदी अह्द समझ कर
मनाना है। 17वह मेरे और इस्राईलियों के
दरमियान अबदी निशान होगा। क्यूँकि रब ने
छः दिन के दौरान आसमान-ओ-ज़मीन को
बनाया जबकि सातवें दिन उस ने आराम
किया और ताज़ादम हो गया।"

रब शरीअत की तख़्तियाँ देता है

18यह सब कुछ मूसा को बताने के बाद
रब ने उसे सीना पहाड़ पर शरीअत की दो
तख़्तियाँ दीं। अल्लाह ने ख़ुद पत्थर की इन
तख़्तियों पर तमाम बातें लिखी थीं।

सोने का बछड़ा

32 पहाड़ के दामन में लोग मूसा के
इन्तिज़ार में रहे, लेकिन बहुत देर
हो गई। एक दिन वह हारून के गिर्द जमा
हो कर कहने लगे, "आएँ, हमारे लिए देवता
बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी
राहनुमाई करें। क्यूँकि क्या मालूम कि उस
बन्दे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिस्र से
निकाल लाया।"
2जवाब में हारून ने कहा, "आप की
बीवियाँ, बेटे और बेटियाँ अपनी सोने की
बालियाँ उतार कर मेरे पास ले आएँ।" 3सब
लोग अपनी बालियाँ उतार उतार कर हारून
के पास ले आए 4तो उस ने यह ज़ेवरात ले कर
बछड़ा ढाल दिया। बछड़े को देख कर लोग
बोल उठे, "ऐ इस्राईल, यह तेरे देवता हैं जो
तुझे मिस्र से निकाल लाए।"
5जब हारून ने यह देखा तो उस ने बछड़े
के सामने क़ुर्बानगाह बना कर एलान किया,
"कल हम रब की ताज़ीम में ईद मनाएँगे।"
6अगले दिन लोग सुब्ह-सवेरे उठे और भस्म
होने वाली क़ुर्बानियाँ और सलामती की
क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। वह खाने-पीने के लिए बैठ
गए और फिर उठ कर रंगरलियों में अपने दिल
बहलाने लगे।

मूसा अपनी क़ौम की शफ़ाअत करता है

7उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, "पहाड़ से
उतर जा। तेरे लोग जिन्हें तू मिस्र से निकाल
लाया बड़ी शरारतें कर रहे हैं। 8वह कितनी
जल्दी से उस रास्ते से हट गए हैं जिस पर
चलने के लिए मैं ने उन्हें हुक्म दिया था। उन्हों
ने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बना कर उसे
सिज्दा किया है। उन्हों ने उसे क़ुर्बानियाँ पेश
करके कहा है, 'ऐ इस्राईल, यह तेरे देवता हैं।
यही तुझे मिस्र से निकाल लाए हैं'।" 9अल्लाह
ने मूसा से कहा, "मैं ने देखा है कि यह क़ौम
बड़ी हटधर्म है। 10अब मुझे रोकने की कोशिश
न कर। मैं उन पर अपना ग़ज़ब उंडेल कर उन

को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उन की जगह मैं तुझ से एक बड़ी क़ौम बना दूँगा।"

11लेकिन मूसा ने कहा, "ऐ रब, तू अपनी क़ौम पर अपना ग़ुस्सा क्यूँ उतारना चाहता है? तू ख़ुद अपनी अज़ीम क़ुदरत से उसे मिस्र से निकाल लाया है। 12मिस्री क्यूँ कहें, 'रब इस्राईलियों को सिर्फ़ इस बुरे मक़्सद से हमारे मुल्क से निकाल ले गया है कि उन्हें पहाड़ी इलाक़े में मार डाले और यूँ उन्हें रू-ए-ज़मीन पर से मिटाए'? अपना ग़ुस्सा ठंडा होने दे और अपनी क़ौम के साथ बुरा सुलूक करने से बाज़ रह। 13याद रख कि तू ने अपने ख़ादिमों इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से अपनी ही क़सम खा कर कहा था, 'मैं तुम्हारी औलाद की तादाद यूँ बढ़ाऊँगा कि वह आसमान के सितारों के बराबर हो जाएगी। मैं उन्हें वह मुल्क दूँगा जिस का वादा मैं ने किया है, और वह उसे हमेशा के लिए मीरास में पाएँगे'।"

14मूसा के कहने पर रब ने वह नहीं किया जिस का एलान उस ने कर दिया था बल्कि वह अपनी क़ौम से बुरा सुलूक करने से बाज़ रहा।

बुतपरस्ती के नताइज

15मूसा मुड़ कर पहाड़ से उतरा। उस के हाथों में शरीअत की दोनों तख़्तियाँ थीं। उन पर आगे पीछे लिखा गया था। 16अल्लाह ने ख़ुद तख़्तियों को बना कर उन पर अपने अह्काम कन्दा किए थे।

17उतरते उतरते यशूअ ने लोगों का शोर सुना और मूसा से कहा, "ख़ैमागाह में जंग का शोर मच रहा है!" 18मूसा ने जवाब दिया, "न तो यह फ़त्हमन्दों के नारे हैं, न शिकस्त खाए हुओं की चीख़-पुकार। मुझे गाने वालों की आवाज़ सुनाई दे रही है।"

19जब वह ख़ैमागाह के नज़्दीक पहुँचा तो उस ने लोगों को सोने के बछड़े के सामने नाचते हुए देखा। बड़े ग़ुस्से में आ कर उस ने तख़्तियों को ज़मीन पर पटख़ दिया, और वह टुकड़े टुकड़े हो कर पहाड़ के दामन में गिर गईं। 20मूसा ने इस्राईलियों के बनाए हुए बछड़े को जला दिया। जो कुछ बच गया उसे उस ने पीस पीस कर पाउडर बना डाला और पाउडर पानी पर छिड़क कर इस्राईलियों को पिला दिया।

21उस ने हारून से पूछा, "इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया कि तुम ने उन्हें ऐसे बड़े गुनाह में फंसा दिया?" 22हारून ने कहा, "मेरे आक़ा। ग़ुस्से न हों। आप ख़ुद जानते हैं कि यह लोग बदी पर तुले रहते हैं। 23उन्हों ने मुझ से कहा, 'हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्यूँकि क्या मालूम कि उस बन्दे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिस्र से निकाल लाया।' 24इस लिए मैं ने उन को बताया, 'जिस के पास सोने के ज़ेवरात हैं वह उन्हें उतार लाए।' जो कुछ उन्हों ने मुझे दिया उसे मैं ने आग में फैंक दिया तो होते होते सोने का यह बछड़ा निकल आया।"

25मूसा ने देखा कि लोग बेकाबू हो गए हैं। क्यूँकि हारून ने उन्हें बेलगाम छोड़ दिया था, और यूँ वह इस्राईल के दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गए थे। 26मूसा ख़ैमागाह के दरवाज़े पर खड़े हो कर बोला, "जो भी रब का बन्दा है वह मेरे पास आए।" जवाब में लावी के क़बीले के तमाम लोग उस के पास जमा हो गए। 27फिर मूसा ने उन से कहा, "रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, 'हर एक अपनी तलवार ले कर ख़ैमागाह में से गुज़रे। एक सिरे के दरवाज़े से शुरू करके दूसरे सिरे के दरवाज़े तक चलते चलते हर मिलने वाले को जान से मार दो, चाहे वह तुम्हारा भाई, दोस्त या रिश्तेदार ही क्यूँ न हो। फिर मुड़ कर मारते मारते पहले दरवाज़े पर वापस आ जाओ'।"

28लावियों ने मूसा की हिदायत पर अमल किया तो उस दिन तक़रीबन 3,000 मर्द हलाक हुए। 29यह देख कर मूसा ने लावियों से कहा, "आज अपने आप को मक़्दिस में

रब की ख़िदमत करने के लिए मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस करो, क्यूँकि तुम अपने बेटों और
भाइयों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए तय्यार थे।
इस लिए रब तुम को आज बरकत देगा।"
30अगले दिन मूसा ने इस्राईलियों से बात
की, "तुम ने निहायत संगीन गुनाह किया है।
तो भी मैं अब रब के पास पहाड़ पर जा रहा हूँ।
शायद मैं तुम्हारे गुनाह का कफ़्फ़ारा दे सकूँ।"
31चुनाँचे मूसा ने रब के पास वापस जा
कर कहा, "हाय, इस क़ौम ने निहायत संगीन
गुनाह किया है। उन्हों ने अपने लिए सोने
का देवता बना लिया। 32मेहरबानी करके उन्हें
मुआफ़ कर। लेकिन अगर तू उन्हें मुआफ़ न
करे तो फिर मुझे भी अपनी उस किताब में
से मिटा दे जिस में तू ने अपने लोगों के नाम
दर्ज किए हैं।" 33रब ने जवाब दिया, "मैं सिर्फ़
उस को अपनी किताब में से मिटाता हूँ जो
मेरा गुनाह करता है। 34अब जा, लोगों को उस
जगह ले चल जिस का ज़िक्र मैं ने किया है।
मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा। लेकिन
जब सज़ा का मुक़र्ररा दिन आएगा तब मैं उन्हें
सज़ा दूँगा।"
35फिर रब ने इस्राईलियों के दरमियान वबा
फैलने दी, इस लिए कि उन्हों ने उस बछड़े की
पूजा की थी जो हारून ने बनाया था।

33 रब ने मूसा से कहा, "इस जगह
से रवाना हो जा। उन लोगों को ले
कर जिन को तू मिस्र से निकाल लाया है उस
मुल्क को जा जिस का वादा मैं ने इब्राहीम,
इस्हाक़ और याक़ूब से किया है। उन ही से
मैं ने क़सम खा कर कहा था, 'मैं यह मुल्क
तुम्हारी औलाद को दूँगा।' 2मैं तेरे आगे आगे
फ़रिश्ता भेज कर कनआनी, अमोरी, हित्ती,
फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी अक़्वाम को उस
मुल्क से निकाल दूँगा। 3उठ, उस मुल्क को
जा जहाँ दूध और शहद की कस्रत है। लेकिन
मैं साथ नहीं जाऊँगा। तुम इतने हटधर्म हो कि
अगर मैं साथ जाऊँ तो ख़तरा है कि तुम्हें वहाँ
पहुँचने से पहले ही बर्बाद कर दूँ।"
4जब इस्राईलियों ने यह सख़्त अल्फ़ाज़
सुने तो वह मातम करने लगे। किसी ने भी
अपने ज़ेवर न पहने, 5क्यूँकि रब ने मूसा से
कहा था, "इस्राईलियों को बता कि तुम हटधर्म
हो। अगर मैं एक लम्हा भी तुम्हारे साथ चलूँ तो
ख़तरा है कि मैं तुम्हें तबाह कर दूँ। अब अपने
ज़ेवरात उतार डालो। फिर मैं फ़ैसला करूँगा
कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए।"
6इन अल्फ़ाज़ पर इस्राईलियों ने होरिब
यानी सीना पहाड़ पर अपने ज़ेवर उतार दिए।

मुलाक़ात का ख़ैमा

7उस वक़्त मूसा ने ख़ैमा ले कर उसे कुछ
फ़ासिले पर ख़ैमागाह के बाहर लगा दिया।
उस ने उस का नाम 'मुलाक़ात का ख़ैमा'
रखा। जो भी रब की मर्ज़ी दरयाफ़्त करना
चाहता वह ख़ैमागाह से निकल कर वहाँ
जाता। 8जब भी मूसा ख़ैमागाह से निकल
कर वहाँ जाता तो तमाम लोग अपने ख़ैमों के
दरवाज़ों पर खड़े हो कर मूसा के पीछे देखने
लगते। उस के मुलाक़ात के ख़ैमे में ओझल
होने तक वह उसे देखते रहते।
9मूसा के ख़ैमे में दाख़िल होने पर बादल
का सतून उतर कर ख़ैमे के दरवाज़े पर ठहर
जाता। जितनी देर तक रब मूसा से बातें करता
उतनी देर तक वह वहाँ ठहरा रहता। 10जब
इस्राईली मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर
बादल का सतून देखते तो वह अपने अपने
ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े हो कर सिज्दा करते।
11रब मूसा से रू-ब-रू बातें करता था, ऐसे
शख़्स की तरह जो अपने दोस्त से बातें करता
है। इस के बाद मूसा निकल कर ख़ैमागाह
को वापस चला जाता। लेकिन उस का जवान
मददगार यशूअ बिन नून ख़ैमे को नहीं छोड़ता
था।

मूसा रब का जलाल देखता है

12मूसा ने रब से कहा, "देख, तू मुझ से
कहता आया है कि इस क़ौम को कनआन ले

चल। लेकिन तू मेरे साथ किस को भेजेगा? तू
ने अब तक यह बात मुझे नहीं बताई हालाँकि
तू ने कहा है, 'मैं तुझे बनाम जानता हूँ, तुझे
मेरा करम हासिल हुआ है।' 13अगर मुझे
वाक़ई तेरा करम हासिल है तो मुझे अपने
रास्ते दिखा ताकि मैं तुझे जान लूँ और तेरा
करम मुझे हासिल होता रहे। इस बात का
ख़याल रख कि यह क़ौम तेरी ही उम्मत है।"
14रब ने जवाब दिया, "मैं ख़ुद तेरे साथ
चलूँगा और तुझे आराम दूँगा।" 15मूसा ने
कहा, "अगर तू ख़ुद साथ नहीं चलेगा तो फिर
हमें यहाँ से रवाना न करना। 16अगर तू हमारे
साथ न जाए तो किस तरह पता चलेगा कि
मुझे और तेरी क़ौम को तेरा करम हासिल हुआ
है? हम सिर्फ़ इसी वजह से दुनिया की दीगर
क़ौमों से अलग और मुम्ताज़ हैं।"
17रब ने मूसा से कहा, "मैं तेरी यह
दरख़्वास्त भी पूरी करूँगा, क्यूँकि तुझे मेरा
करम हासिल हुआ है और मैं तुझे बनाम
जानता हूँ।"
18फिर मूसा बोला, "बराह-ए-करम मुझे
अपना जलाल दिखा।" 19रब ने जवाब दिया,
"मैं अपनी पूरी भलाई तेरे सामने से गुज़रने
दूँगा और तेरे सामने ही अपने नाम रब का
एलान करूँगा। मैं जिस पर मेहरबान होना
चाहूँ उस पर मेहरबान होता हूँ, और जिस
पर रहम करना चाहूँ उस पर रहम करता
हूँ। 20लेकिन तू मेरा चेहरा नहीं देख सकता,
क्यूँकि जो भी मेरा चेहरा देखे वह ज़िन्दा
नहीं रह सकता।" 21फिर रब ने फ़रमाया,
"देख, मेरे पास एक जगह है। वहाँ की चटान
पर खड़ा हो जा। 22जब मेरा जलाल वहाँ से
गुज़रेगा तो मैं तुझे चटान के एक शिगाफ़ में
रखूँगा और अपना हाथ तेरे ऊपर फैलाऊँगा
ताकि तू मेरे गुज़रने के दौरान महफ़ूज़ रहे।
23इस के बाद मैं अपना हाथ हटाऊँगा और तू
मेरे पीछे देख सकेगा। लेकिन मेरा चेहरा देखा
नहीं जा सकता।"

पत्थर की नई तख़्तियाँ

34 रब ने मूसा से कहा, "अपने लिए
पत्थर की दो तख़्तियाँ तराश ले
जो पहली दो की मानिन्द हों। फिर मैं उन पर
वह अल्फ़ाज़ लिखूँगा जो पहली तख़्तियों पर
लिखे थे जिन्हें तू ने पटख़ दिया था। 2सुब्ह
तक तय्यार हो कर सीना पहाड़ पर चढ़ना।
चोटी पर मेरे सामने खड़ा हो जा। 3तेरे साथ
कोई भी न आए बल्कि पूरे पहाड़ पर कोई
और शख़्स नज़र न आए, यहाँ तक कि भेड़-
बकरियाँ और गाय-बैल भी पहाड़ के दामन में
न चरें।"
4चुनाँचे मूसा ने दो तख़्तियाँ तराश लीं जो
पहली की मानिन्द थीं। फिर वह सुब्ह-सवेरे
उठ कर सीना पहाड़ पर चढ़ गया जिस तरह
रब ने उसे हुक्म दिया था। उस के हाथों में
पत्थर की दोनों तख़्तियाँ थीं। 5जब वह चोटी
पर पहुँचा तो रब बादल में उतर आया और
उस के पास खड़े हो कर अपने नाम रब का
एलान किया। 6मूसा के सामने से गुज़रते हुए
उस ने पुकारा, "रब, रब, रहीम और मेहरबान
ख़ुदा। तहम्मुल, शफ़्क़त और वफ़ा से भरपूर।
7वह हज़ारों पर अपनी शफ़्क़त क़ाइम रखता
और लोगों का क़ुसूर, नाफ़रमानी और गुनाह
मुआफ़ करता है। लेकिन वह हर एक को उस
की मुनासिब सज़ा भी देता है। जब वालिदैन
गुनाह करें तो उन की औलाद को भी तीसरी
और चौथी पुश्त तक सज़ा के नताइज भुगतने
पड़ेंगे।"
8मूसा ने जल्दी से झुक कर सिज्दा किया।
9उस ने कहा, "ऐ रब, अगर मुझ पर तेरा
करम हो तो हमारे साथ चल। बेशक यह क़ौम
हटधर्म है, तो भी हमारा क़ुसूर और गुनाह
मुआफ़ कर और बख़्श दे कि हम दुबारा तेरे
ही बन जाएँ।"
10तब रब ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ अह्द
बांधूँगा। तेरी क़ौम के सामने ही मैं ऐसे मोजिज़े
करूँगा जो अब तक दुनिया भर की किसी
भी क़ौम में नहीं किए गए। पूरी क़ौम जिस

के दरमियान तू रहता है रब का काम देखेगी और उस से डर जाएगी जो मैं तेरे साथ करूँगा। 11जो अह्काम मैं आज देता हूँ उन पर अमल करता रह। मैं अमोरी, कनआनी, हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी अक़्वाम को तेरे आगे आगे मुल्क से निकाल दूँगा। 12ख़बरदार, जो उस मुल्क में रहते हैं जहाँ तू जा रहा है उन से अह्द न बांधना। वर्ना वह तेरे दरमियान रहते हुए तुझे गुनाहों में फंसाते रहेंगे। 13उन की क़ुर्बानगाहें ढा देना, उन के बुतों के सतून टुकड़े टुकड़े कर देना और उन की देवी यसीरत के खम्बे काट डालना।

14किसी और माबूद की परस्तिश न करना, क्यूँकि रब का नाम ग़यूर है, अल्लाह ग़ैरतमन्द है। 15ख़बरदार, उस मुल्क के बाशिन्दों से अह्द न करना, क्यूँकि तेरे दरमियान रहते हुए भी वह अपने माबूदों की पैरवी करके ज़िना करेंगे और उन्हें क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँगे। आख़िरकार वह तुझे भी अपनी क़ुर्बानियों में शिर्कत की दावत देंगे। 16ख़तरा है कि तू उन की बेटियों का अपने बेटों के साथ रिश्ता बांधे। फिर जब यह अपने माबूदों की पैरवी करके ज़िना करेंगी तो उन के सबब से तेरे बेटे भी उन की पैरवी करने लगेंगे।

17अपने लिए देवता न ढालना।

सालाना ईदें

18बेख़मीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के महीने[a] में सात दिन तक तेरी रोटी में ख़मीर न हो जिस तरह मैं ने हुक्म दिया है। क्यूँकि इस महीने में तू मिस्र से निकला।

19हर पहलौठा मेरा है। तेरे माल मवेशियों का हर पहलौठा मेरा है, चाहे बछड़ा हो या लेला। 20लेकिन पहलौठे गधे के इवज़ भेड़ देना। अगर यह मुमकिन न हो तो उस की गर्दन तोड़ डालना। अपने पहलौठे बेटों के लिए भी इवज़ी देना। कोई मेरे पास ख़ाली हाथ न आए।

21छः दिन काम-काज करना, लेकिन सातवें दिन आराम करना। ख़्वाह हल चलाना हो या फ़सल काटनी हो तो भी सातवें दिन आराम करना।

22गन्दुम की फ़सल की कटाई की ईद[b] उस वक़्त मनाना जब तू गेहूँ की पहली फ़सल काटेगा। अंगूर और फल जमा करने की ईद इस्राईली साल के इख़तिताम पर मनानी है। 23लाज़िम है कि तेरे तमाम मर्द साल में तीन मर्तबा रब क़ादिर-ए-मुतलक़ के सामने जो इस्राईल का ख़ुदा है हाज़िर हों। 24मैं तेरे आगे आगे क़ौमों को मुल्क से निकाल दूँगा और तेरी सरहदें बढ़ाता जाऊँगा। फिर जब तू साल में तीन मर्तबा रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर आएगा तो कोई भी तेरे मुल्क का लालच नहीं करेगा।

25जब तू किसी जानवर को ज़बह करके क़ुर्बानी के तौर पर पेश करता है तो उस के ख़ून के साथ ऐसी रोटी पेश न करना जिस में ख़मीर हो। ईद-ए-फ़सह की क़ुर्बानी से अगली सुब्ह तक कुछ बाक़ी न रहे।

26अपनी ज़मीन की पहली पैदावार में से बेहतरीन हिस्सा रब अपने ख़ुदा के घर में ले आना।

बकरी या भेड़ के बच्चे को उस की माँ के दूध में न पकाना।"

मूसा के चेहरे पर चमक

27रब ने मूसा से कहा, "यह तमाम बातें लिख ले, क्यूँकि यह उस अह्द की बुन्याद हैं जो मैं ने तेरे और इस्राईल के साथ बांधा है।"

28मूसा चालीस दिन और चालीस रात वहीं रब के हुज़ूर रहा। इस दौरान न उस ने कुछ खाया न पिया। उस ने पत्थर की तख़्तियों पर अह्द के दस अह्काम लिखे।

29इस के बाद मूसा शरीअत की दोनों तख़्तियों को हाथ में लिए हुए सीना पहाड़ से उतरा। उस के चेहरे की जिल्द चमक रही थी, क्यूँकि उस ने रब से बात की थी। लेकिन उसे

[a]मार्च ता अप्रैल।

[b]सितम्बर ता अक्तूबर।

ख़ुद इस का इल्म नहीं था। 30जब हारून और तमाम इस्राईलियों ने देखा कि मूसा का चेहरा चमक रहा है तो वह उस के पास आने से डर गए। 31लेकिन उस ने उन्हें बुलाया तो हारून और जमाअत के तमाम सरदार उस के पास आए, और उस ने उन से बात की। 32बाद में बाक़ी इस्राईली भी आए, और मूसा ने उन्हें तमाम अह्काम सुनाए जो रब ने उसे कोह-ए-सीना पर दिए थे।

33यह सब कुछ कहने के बाद मूसा ने अपने चेहरे पर निक़ाब डाल लिया। 34जब भी वह रब से बात करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में जाता तो निक़ाब को ख़ैमे से निकलते वक़्त तक उतार लेता। और जब वह निकल कर इस्राईलियों को रब से मिले हुए अह्काम सुनाता 35तो वह देखते कि उस के चेहरे की जिल्द चमक रही है। इस के बाद मूसा दुबारा निक़ाब को अपने चेहरे पर डाल लेता, और वह उस वक़्त तक चेहरे पर रहता जब तक मूसा रब से बात करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में न जाता था।

सबत का दिन

35 मूसा ने इस्राईल की पूरी जमाअत को इकट्ठा करके कहा, "रब ने तुम को यह हुक्म दिए हैं : 2छः दिन काम-काज किया जाए, लेकिन सातवाँ दिन मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो। वह रब के लिए आराम का सबत है। जो भी इस दिन काम करे उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। 3हफ़्ते के दिन अपने तमाम घरों में आग तक न जलाना।"

मुलाक़ात के ख़ैमे के लिए सामान

4मूसा ने इस्राईल की पूरी जमाअत से कहा, "रब ने हिदायत दी है 5कि जो कुछ तुम्हारे पास है उस में से हदिए ला कर रब को उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करो। जो भी दिली ख़ुशी से देना चाहे वह इन चीज़ों में से कुछ दे : सोना, चाँदी, पीतल; 6नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल, 7मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालें, तख़स की खालें, कीकर की लकड़ी, 8शमादान के लिए ज़ैतून का तेल, मसह करने के लिए तेल और ख़ुश्बूदार बख़ूर के लिए मसाले, 9अक़ीक़-ए-अह्मर और दीगर जवाहिर जो इमाम-ए-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे में जड़े जाएंगे।

10तुम में से जितने माहिर कारीगर हैं वह आ कर वह कुछ बनाएँ जो रब ने फ़रमाया 11यानी ख़ैमा और वह ग़िलाफ़ जो उस के ऊपर लगाए जाएंगे, हुकें, दीवारों के तख़्ते, शहतीर, सतून और पाए, 12अह्द का सन्दूक़, उसे उठाने की लकड़ियाँ, उस के कफ़्फ़ारे का ढकना, मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े का पर्दा, 13मख़्सूस रोटियों की मेज़, उसे उठाने की लकड़ियाँ, उस का सारा सामान और रोटियाँ, 14शमादान और उस पर रखने के चराग़ उस के सामान समेत, शमादान के लिए तेल, 15बख़ूर जलाने की क़ुर्बानगाह, उसे उठाने की लकड़ियाँ, मसह का तेल, ख़ुश्बूदार बख़ूर, मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े का पर्दा, 16जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह, उस का पीतल का जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाक़ी सारा सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस पर हौज़ रखा जाता है, 17चारदीवारी के पर्दे उन के खम्बों और पाइयों समेत, सहन के दरवाज़े का पर्दा, 18ख़ैमे और चारदीवारी की मेख़ें और रस्से, 19और वह मुक़द्दस लिबास जो हारून और उस के बेटे मक़्दिस में ख़िदमत करने के लिए पहनते हैं।"

20यह सुन कर इस्राईल की पूरी जमाअत मूसा के पास से चली गई। 21और जो जो दिली ख़ुशी से देना चाहता था वह मुलाक़ात के ख़ैमे, उस के सामान या इमामों के कपड़ों के लिए कोई हदिया ले कर वापस आया। 22रब के हदिए के लिए मर्द और ख़वातीन दिली ख़ुशी से अपने सोने के ज़ेवरात मसलन जड़ाओ

पिनें, बालियाँ और छल्ले ले आए। 23जिस जिस के पास दरकार चीज़ों में से कुछ था वह उसे मूसा के पास ले आया यानी नीले, क़िर्मिज़ी और अर्ग़वानी रंग का धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल, मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालें और तख़स की खालें। 24चाँदी, पीतल और कीकर की लकड़ी भी हदिए के तौर पर लाई गई। 25और जितनी औरतें कातने में माहिर थीं वह अपनी काती हुई चीज़ें ले आईं यानी नीले, क़िर्मिज़ी और अर्ग़वानी रंग का धागा और बारीक कतान। 26इसी तरह जो जो औरत बकरी के बाल कातने में माहिर थी और दिली ख़ुशी से मक़्दिस के लिए काम करना चाहती थी वह यह कात कर ले आई। 27सरदार अक़ीक़-ए-अह्मर और दीगर जवाहिर ले आए जो इमाम-ए-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे के लिए दरकार थे। 28वह शमादान, मसह के तेल और ख़ुश्बूदार बख़ूर के लिए मसाले और ज़ैतून का तेल भी ले आए।

29यूँ इस्राईल के तमाम मर्द और ख़वातीन जो दिली ख़ुशी से रब को कुछ देना चाहते थे उस सारे काम के लिए हदिए ले आए जो रब ने मूसा की मारिफ़त करने को कहा था।

बज़लीएल और उहलियाब

30फिर मूसा ने इस्राईलियों से कहा, "रब ने यहूदाह के क़बीले के बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर को चुन लिया है। 31उस ने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिक्मत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। 32वह नक़्शे बना कर उन के मुताबिक़ सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना सकता है। 33वह जवाहिर को काट कर जड़ने की क़ाबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराश कर उस से मुख़्तलिफ़ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत रखता है। 34साथ ही रब ने उसे और दान के क़बीले के उहलियाब बिन अख़ीसमक को दूसरों को सिखाने की क़ाबिलियत भी दी है। 35उस ने उन्हें वह महारत और हिक्मत दी है जो हर काम के लिए दरकार है यानी कारीगरी के हर काम के लिए, कढ़ाई के काम के लिए, नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाने के लिए और बुनाई के काम के लिए। वह माहिर कारीगर हैं और नक़्शे भी बना सकते हैं।

36 लाज़िम है कि बज़लीएल, उहलियाब और बाक़ी कारीगर जिन को रब ने मक़्दिस की तामीर के लिए हिक्मत और समझ दी है सब कुछ ऐन उन हिदायात के मुताबिक़ बनाएँ जो रब ने दी हैं।"

इस्राईली दिली ख़ुशी से देते हैं

2मूसा ने बज़लीएल और उहलियाब को बुलाया। साथ ही उस ने हर उस कारीगर को भी बुलाया जिसे रब ने मक़्दिस की तामीर के लिए हिक्मत और महारत दी थी और जो ख़ुशी से आना और यह काम करना चाहता था। 3उन्हें मूसा से तमाम हदिए मिले जो इस्राईली मक़्दिस की तामीर के लिए लाए थे।

इस के बाद भी लोग रोज़-ब-रोज़ सुब्ह के वक़्त हदिए लाते रहे। 4आख़िरकार तमाम कारीगर जो मक़्दिस बनाने के काम में लगे थे अपना काम छोड़ कर मूसा के पास आए। 5उन्हों ने कहा, "लोग हद से ज़्यादा ला रहे हैं। जिस काम का हुक्म रब ने दिया है उस के लिए इतने सामान की ज़रूरत नहीं है।" 6तब मूसा ने पूरी ख़ैमागाह में एलान करवा दिया कि कोई मर्द या औरत मक़्दिस की तामीर के लिए अब कुछ न लाए।

यूँ उन्हें मज़ीद चीज़ें लाने से रोका गया, 7क्यूँकि काम के लिए सामान ज़रूरत से ज़्यादा हो गया था।

मुलाक़ात का ख़ैमा

8जो कारीगर महारत रखते थे उन्हों ने ख़ैमे को बनाया। उन्हों ने बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी धागे से दस

पर्दे बनाए। पर्दों पर किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी फ़रिश्तों का डिज़ाइन बनाया गया। 9हर पर्दे की लम्बाई 42 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट थी। 10पाँच पर्दों के लम्बे हाशिए एक दूसरे के साथ जोड़े गए और इसी तरह बाक़ी पाँच भी। यूँ दो बड़े टुकड़े बन गए। 11दोनों टुकड़ों को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए उन्हों ने नीले धागे के हल्क़े बनाए। यह हल्क़े हर टुकड़े के 42 फ़ुट वाले एक किनारे पर लगाए गए, 12एक टुकड़े के हाशिए पर 50 हल्क़े और दूसरे पर भी उतने ही हल्क़े। इन दो हाशियों के हल्क़े एक दूसरे के आमने-सामने थे। 13फिर बज़लीएल ने सोने की 50 हुकें बना कर उन से आमने-सामने के हल्क़ों को एक दूसरे के साथ मिलाया। यूँ दोनों टुकड़ों के जोड़ने से ख़ैमा बन गया।

14उस ने बकरी के बालों से भी 11 पर्दे बनाए जिन्हें कपड़े वाले ख़ैमे के ऊपर रखना था। 15हर पर्दे की लम्बाई 45 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट थी। 16पाँच पर्दों के लम्बे हाशिए एक दूसरे के साथ जोड़े गए और इस तरह बाक़ी छः भी। 17इन दोनों टुकड़ों को मिलाने के लिए उस ने हर टुकड़े के 45 फ़ुट वाले एक किनारे पर पचास पचास हल्क़े लगाए। 18फिर पीतल की 50 हुकें बना कर उस ने दोनों हिस्से मिलाए।

19एक दूसरे के ऊपर के दोनों ख़ैमों की हिफ़ाज़त के लिए बज़लीएल ने दो और ग़िलाफ़ बनाए। बकरी के बालों के ख़ैमे पर रखने के लिए उस ने मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालें जोड़ दीं और उस के ऊपर रखने के लिए तख़स की खालें मिलाईं।

20इस के बाद उस ने कीकर की लकड़ी के तख़्ते बनाए जो ख़ैमे की दीवारों का काम देते थे। 21हर तख़्ते की ऊँचाई 15 फ़ुट थी और चौड़ाई सवा दो फ़ुट। 22हर तख़्ते के नीचे दो दो चूलें थीं। इन चूलों से हर तख़्ते को उस के पाइयों के साथ जोड़ा जाता था ताकि तख़्ता खड़ा रहे। 23ख़ैमे की जुनूबी दीवार के लिए 20 तख़्ते बनाए गए 24और साथ ही चाँदी के 40 पाए भी जिन पर तख़्ते खड़े किए जाते थे। हर तख़्ते के नीचे दो पाए थे, और हर पाए में एक चूल लगती थी। 25इसी तरह ख़ैमे की शिमाली दीवार के लिए भी 20 तख़्ते बनाए गए 26और साथ ही चाँदी के 40 पाए जो तख़्तों को खड़ा करने के लिए थे। हर तख़्ते के नीचे दो पाए थे। 27ख़ैमे की पिछली यानी मग़रिबी दीवार के लिए छः तख़्ते बनाए गए। 28इस दीवार को शिमाली और जुनूबी दीवारों के साथ जोड़ने के लिए कोने वाले दो तख़्ते बनाए गए। 29इन दो तख़्तों में नीचे से ले कर ऊपर तक कोना था ताकि एक से शिमाली दीवार मग़रिबी दीवार के साथ जुड़ जाए और दूसरे से जुनूबी दीवार मग़रिबी दीवार के साथ। इन के ऊपर के सिरे कड़ों से मज़बूत किए गए। 30यूँ पिछले यानी मग़रिबी तख़्तों की पूरी तादाद 8 थी और इन के लिए चाँदी के पाइयों की तादाद 16, हर तख़्ते के नीचे दो पाए।

31-32फिर बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी के शहतीर बनाए, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच शहतीर। वह हर दीवार के तख़्तों पर यूँ लगाने के लिए थे कि उन से तख़्ते एक दूसरे के साथ मिलाए जाएँ। 33दरमियानी शहतीर यूँ बनाया गया कि वह दीवार की आधी ऊँचाई पर दीवार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लग सकता था। 34उस ने तमाम तख़्तों और शहतीरों पर सोना चढ़ाया। शहतीरों को तख़्तों के साथ लगाने के लिए उस ने सोने के कड़े बनाए जो तख़्तों में लगाने थे।

मुक़द्दस ख़ैमे के पर्दे

35अब बज़लीएल ने एक और पर्दा बनाया। उस के लिए भी बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल हुआ। उस पर भी किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी फ़रिश्तों का डिज़ाइन बनाया गया। 36फिर उस ने पर्दे को

लटकाने के लिए कीकर की लकड़ी के चार सतून, सोने की हुकें और चाँदी के चार पाए बनाए। सतूनों पर सोना चढ़ाया गया।

37 बज़लीएल ने ख़ैमे के दरवाज़े के लिए भी पर्दा बनाया। वह भी बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे से बनाया गया, और उस पर कढ़ाई का काम किया गया। 38 इस पर्दे को लटकाने के लिए उस ने सोने की हुकें और कीकर की लकड़ी के पाँच सतून बनाए। सतूनों के ऊपर के सिरों और पट्टियों पर सोना चढ़ाया गया जबकि उन के पाए पीतल के थे।

अह्द का सन्दूक़

37 बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी का सन्दूक़ बनाया। उस की लम्बाई पौने चार फ़ुट थी जबकि उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो दो फ़ुट थी। 2 उस ने पूरे सन्दूक़ पर अन्दर और बाहर से ख़ालिस सोना चढ़ाया। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द उस ने सोने की झालर लगाई। 3 सन्दूक़ को उठाने के लिए उस ने सोने के चार कड़े ढाल कर उन्हें सन्दूक़ के चारपाइयों पर लगाया। दोनों तरफ़ दो दो कड़े थे। 4 फिर उस ने कीकर की दो लकड़ियाँ सन्दूक़ को उठाने के लिए तय्यार कीं और उन पर सोना चढ़ाया। 5 उस ने इन लकड़ियों को दोनों तरफ़ के कड़ों में डाल दिया ताकि उन से सन्दूक़ को उठाया जा सके।

6 बज़लीएल ने सन्दूक़ का ढकना ख़ालिस सोने का बनाया। उस की लम्बाई पौने चार फ़ुट और चौड़ाई सवा दो फ़ुट थी। 7-8 फिर उस ने दो करूबी फ़रिश्ते सोने से घड़ कर बनाए जो ढकने के दोनों सिरों पर खड़े थे। यह दो फ़रिश्ते और ढकना एक ही टुकड़े से बनाए गए। 9 फ़रिश्तों के पर यूँ ऊपर की तरफ़ फैले हुए थे कि वह ढकने को पनाह देते थे। उन के मुँह एक दूसरे की तरफ़ किए हुए थे, और वह ढकने की तरफ़ देखते थे।

मख़्सूस रोटियों की मेज़

10 इस के बाद बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाई। उस की लम्बाई तीन फ़ुट, चौड़ाई डेढ़ फ़ुट और ऊँचाई सवा दो फ़ुट थी। 11 उस ने उस पर ख़ालिस सोना चढ़ा कर उस के इर्दगिर्द सोने की झालर लगाई। 12 मेज़ की ऊपर की सतह पर उस ने चौखटा भी लगाया जिस की ऊँचाई तीन इंच थी और जिस पर सोने की झालर लगी थी। 13 अब उस ने सोने के चार कड़े ढाल कर उन्हें चारों कोनों पर लगाया जहाँ मेज़ के पाए लगे थे। 14 यह कड़े मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए गए। उन में वह लकड़ियाँ डालनी थीं जिन से मेज़ को उठाना था। 15 बज़लीएल ने यह लकड़ियाँ भी कीकर से बनाईं और उन पर सोना चढ़ाया।

16 आख़िरकार उस ने ख़ालिस सोने के वह थाल, प्याले, मै की नज़रें पेश करने के बर्तन और मर्तबान बनाए जो उस पर रखे जाते थे।

शमादान

17 फिर बज़लीएल ने ख़ालिस सोने का शमादान बनाया। उस का पाया और डंडी घड़ कर बनाए गए। उस की प्यालियाँ जो फूलों और कलियों की शक्ल की थीं पाए और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा थीं। 18 डंडी से दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन शाख़ें निकलती थीं। 19 हर शाख़ पर तीन प्यालियाँ लगी थीं जो बादाम की कलियों और फूलों की शक्ल की थीं। 20 शमादान की डंडी पर भी इस क़िस्म की प्यालियाँ लगी थीं, लेकिन तादाद में चार। 21 इन में से तीन प्यालियाँ दाएँ बाएँ की छः शाख़ों के नीचे लगी थीं। वह यूँ लगी थीं कि हर प्याली से दो शाख़ें निकलती थीं। 22 शाख़ें और प्यालियाँ बल्कि पूरा शमादान ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़ कर बनाया गया।

23 बज़लीएल ने शमादान के लिए ख़ालिस सोने के सात चराग़ बनाए। उस ने बत्ती कतरने की क़ैंचियाँ और जलते कोएले के लिए छोटे

बर्तन भी ख़ालिस सोने से बनाए। 24शमादान
और उस के तमाम सामान के लिए पूरे 34
किलोग्राम ख़ालिस सोना इस्तेमाल हुआ।

बख़ूर जलाने की क़ुर्बानगाह

25बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी की
क़ुर्बानगाह बनाई जो बख़ूर जलाने के लिए
थी। वह डेढ़ फ़ुट लम्बी, इतनी ही चौड़ी और
तीन फ़ुट ऊँची थी। उस के चार कोनों में से
सींग निकलते थे जो क़ुर्बानगाह के साथ एक
ही टुकड़े से बनाए गए थे। 26उस की ऊपर
की सतह, उस के चार पहलूओं और उस के
सींगों पर ख़ालिस सोना चढ़ाया गया। ऊपर
की सतह के इर्दगिर्द बज़लीएल ने सोने की
झालर बनाई। 27सोने के दो कड़े बना कर
उस ने उन्हें इस झालर के नीचे एक दूसरे के
मुक़ाबिल पहलूओं पर लगाया। इन कड़ों में
क़ुर्बानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली गईं।
28यह लकड़ियाँ कीकर की थीं, और उन पर
भी सोना चढ़ाया गया।

29बज़लीएल ने मसह करने का मुक़द्दस तेल
और ख़ुश्बूदार ख़ालिस बख़ूर भी बनाया। यह
इत्रसाज़ का काम था।

जानवरों को पेश करने की क़ुर्बानगाह

38 बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी
की एक और क़ुर्बानगाह बनाई जो
भस्म होने वाली क़ुर्बानियों के लिए थी। उस
की ऊँचाई साढ़े चार फ़ुट, उस की लम्बाई
और चौड़ाई साढ़े सात सात फ़ुट थी। 2उस
के ऊपर चारों कोनों में से सींग निकलते थे।
सींग और क़ुर्बानगाह एक ही टुकड़े के थे, और
उस पर पीतल चढ़ाया गया। 3उस का तमाम
साज़-ओ-सामान और बर्तन भी पीतल के थे
यानी राख को उठा कर ले जाने की बालटियाँ,
बेलचे, काँटे, जलते हुए कोएले के लिए बर्तन
और छिड़काओ के कटोरे।

4क़ुर्बानगाह को उठाने के लिए उस ने पीतल
का जंगला बनाया। वह ऊपर से खुला था
और यूँ बनाया गया कि जब क़ुर्बानगाह उस
में रखी जाए तो वह उस किनारे तक पहुँचे
जो क़ुर्बानगाह की आधी ऊँचाई पर लगी थी।
5उस ने क़ुर्बानगाह को उठाने के लिए चार कड़े
बना कर उन्हें जंगले के चार कोनों पर लगाया।
6फिर उस ने कीकर की दो लकड़ियाँ बना
कर उन पर पीतल चढ़ाया 7और क़ुर्बानगाह के
दोनों तरफ़ लगे इन कड़ों में डाल दीं। यूँ उसे
उठाया जा सकता था। क़ुर्बानगाह लकड़ी की
थी लेकिन खोखली थी।

8बज़लीएल ने धोने का हौज़ और उस का
ढाँचा भी पीतल से बनाया। उस का पीतल उन
औरतों के आईनों से मिला था जो मुलाक़ात
के ख़ैमे के दरवाज़े पर ख़िदमत करती थीं।

ख़ैमे का सहन

9फिर बज़लीएल ने सहन बनाया। उस की
चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई
गई। चारदीवारी की लम्बाई जुनूब की तरफ़
150 फ़ुट थी। 10कपड़े को लगाने के लिए
चाँदी की हुकें, पट्टियाँ, लकड़ी के खम्बे और
उन के पाए बनाए गए। 11चारदीवारी शिमाल
की तरफ़ भी इसी तरह बनाई गई। 12ख़ैमे के
पीछे मग़रिब की तरफ़ चारदीवारी की चौड़ाई
75 फ़ुट थी। कपड़े के इलावा उस के लिए
10 खम्बे, 10 पाए और कपड़ा लगाने के
लिए चाँदी की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं।
13सामने, मशरिक़ की तरफ़ जहाँ से सूरज तुलू
होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फ़ुट थी।
14-15कपड़ा दरवाज़े के दाईं तरफ़ साढ़े 22
फ़ुट चौड़ा था और उस के बाईं तरफ़ भी उतना
ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ़ तीन तीन खम्बों के
साथ लगाया गया जो पीतल के पाइयों पर
खड़े थे। 16चारदीवारी के तमाम पर्दों के लिए
बारीक कतान इस्तेमाल हुआ। 17खम्बे पीतल
के पाइयों पर खड़े थे, और पर्दे चाँदी की हुकों
और पट्टियों से खम्बों के साथ लगे थे। खम्बों
के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी।

सहन के तमाम खम्बों पर चाँदी की पट्टियाँ लगी थीं।

18चारदीवारी के दरवाज़े का पर्दा नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया गया, और उस पर कढ़ाई का काम किया गया। वह 30 फ़ुट चौड़ा और चारदीवारी के दूसरे पर्दों की तरह साढ़े सात फ़ुट ऊँचा था। 19उस के चार खम्बे और पीतल के चार पाए थे। उस की हुकें और पट्टियाँ चाँदी की थीं, और खम्बों के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी। 20ख़ैमे और चारदीवारी की तमाम मेख़ें पीतल की थीं।

ख़ैमे का तामीरी सामान

21ज़ैल में उस सामान की फ़हरिस्त है जो मक़्दिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ। मूसा के हुक्म पर इमाम-ए-आज़म हारून के बेटे इतमर ने लावियों की मारिफ़त यह फ़हरिस्त तय्यार की। 22(यहूदाह के क़बीले के बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर ने वह सब कुछ बनाया जो रब ने मूसा को बताया था। 23उस के साथ दान के क़बीले का उहलियाब बिन अख़ीसमक था जो कारीगरी के हर काम और कढ़ाई के काम में माहिर था। वह नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाने में भी माहिर था।)

24उस सोने का वज़न जो लोगों के हदियों से जमा हुआ और मक़्दिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ तक़रीबन 1,000 किलोग्राम था (उसे मक़्दिस के बाटों के हिसाब से तोला गया)।

25तामीर के लिए चाँदी जो मर्दुमशुमारी के हिसाब से वसूल हुई, उस का वज़न तक़रीबन 3,430 किलोग्राम था (उसे भी मक़्दिस के बाटों के हिसाब से तोला गया)। 26जिन मर्दों की उम्र 20 साल या इस से ज़ाइद थी उन्हें चाँदी का आधा आधा सिक्का देना पड़ा। मर्दों की कुल तादाद 6,03,550 थी। 27चूँकि दीवारों के तख़्तों के पाए और मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के सतूनों के पाए चाँदी के थे इस लिए तक़रीबन पूरी चाँदी इन 100 पाइयों के लिए सर्फ़ हुई। 28तक़रीबन 30 किलोग्राम चाँदी बच गई। इस से चारदीवारी के खम्बों की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं, और यह खम्बों के ऊपर के सिरों पर भी चढ़ाई गई।

29जो पीतल हदियों से जमा हुआ उस का वज़न तक़रीबन 2,425 किलोग्राम था। 30ख़ैमे के दरवाज़े के पाए, जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह, उस का जंगला, बर्तन और साज़-ओ-सामान, 31चारदीवारी के पाए, सहन के दरवाज़े के पाए और ख़ैमे और चारदीवारी की तमाम मेख़ें इसी से बनाई गईं।

हारून का बालापोश

39 बज़लीएल की हिदायत पर कारीगरों ने नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा ले कर मक़्दिस में ख़िदमत के लिए लिबास बनाए। उन्हों ने हारून के मुक़द्दस कपड़े उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ बनाए जो रब ने मूसा को दी थीं। 2उन्हों ने इमाम-ए-आज़म का बालापोश बनाने के लिए सोना, नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया। 3उन्हों ने सोने को कूट कूट कर वर्क़ बनाया और फिर उसे काट कर धागे बनाए। जब नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाया गया तो सोने का यह धागा महारत से कढ़ाई के काम में इस्तेमाल हुआ। 4उन्हों ने बालापोश के लिए दो पट्टियाँ बनाईं और उन्हें बालापोश के कंधों पर रख कर सामने और पीछे से बालापोश के साथ लगाइं। 5पटका भी बनाया गया जिस से बालापोश को बांधा जाता था। इस के लिए भी सोना, नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल हुआ। यह उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दी थीं।

6फिर उन्हों ने अक़ीक़-ए-अह्मर के दो पत्थर
चुन लिए और उन्हें सोने के ख़ानों में जड़ कर
उन पर इस्राईल के बारह बेटों के नाम कन्दा
किए। यह नाम जौहरों पर उस तरह कन्दा
किए गए जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है।
7उन्हों ने पत्थरों को बालापोश की दो पट्टियों
पर यूँ लगाया कि वह हारून के कंधों पर रब
को इस्राईलियों की याद दिलाते रहें। यह सब
कुछ रब की दी गई हिदायात के ऐन मुताबिक़
हुआ।

सीने का कीसा

8इस के बाद उन्हों ने सीने का कीसा
बनाया। यह माहिर कारीगर का काम था
और उन ही चीज़ों से बना जिन से हारून
का बालापोश भी बना था यानी सोने और
नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे
और बारीक कतान से। 9जब कपड़े को एक
दफ़ा तह किया गया तो कीसे की लम्बाई और
चौड़ाई नौ नौ इंच थी। 10उन्हों ने उस पर चार
क़तारों में जवाहिर जड़े। हर क़तार में तीन
तीन जौहर थे। पहली क़तार में लाल, ज़बर्जद
और ज़ुमुर्रद। 11दूसरी में फ़ीरोज़ा, संग-ए-
लाजवर्द और हज्र-उल-क़मर। 12तीसरी में
ज़रक़ोन, अक़ीक़ और याक़ूत-ए-अर्ग़वानी।
13चौथी में पुखराज, अक़ीक़-ए-अह्मर और
यशब। हर जौहर सोने के ख़ाने में जड़ा हुआ
था। 14यह बारह जवाहिर इस्राईल के बारह
क़बीलों की नुमाइन्दगी करते थे। एक एक
जौहर पर एक क़बीले का नाम कन्दा किया
गया, और यह नाम उस तरह कन्दा किए गए
जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है।

15अब उन्हों ने सीने के कीसे के लिए
ख़ालिस सोने की दो ज़न्जीरें बनाईं जो डोरी
की तरह गुंधी हुई थीं। 16साथ साथ उन्हों ने
सोने के दो ख़ाने और दो कड़े भी बनाए। उन्हों
ने यह कड़े कीसे के ऊपर के दो कोनों पर
लगाए। 17फिर दोनों ज़न्जीरें उन दो कड़ों के
साथ लगाई गईं। 18उन के दूसरे सिरे बालापोश
की कंधों वाली पट्टियों के दो ख़ानों के साथ
जोड़ दिए गए, फिर सामने की तरफ़ लगाए
गए। 19उन्हों ने कीसे के निचले दो कोनों
पर भी सोने के दो कड़े लगाए। वह अन्दर,
बालापोश की तरफ़ लगे थे। 20अब उन्हों ने दो
और कड़े बना कर बालापोश की कंधों वाली
पट्टियों पर लगाए। यह भी सामने की तरफ़
लगे थे लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के
ऊपर ही। 21उन्हों ने सीने के कीसे के निचले
कड़े नीली डोरी से बालापोश के इन निचले
कड़ों के साथ बांधे। यूँ कीसा पटके के ऊपर
अच्छी तरह सीने के साथ लगा रहा। यह उन
हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा
को दी थीं।

हारून का चोग़ा

22फिर कारीगरों ने चोग़ा बुना। वह पूरी तरह
नीले धागे से बनाया गया। चोग़े को बालापोश
से पहले पहनना था। 23उस के गरेबान को बुने
हुए कालर से मज़बूत किया गया ताकि वह न
फटे। 24उन्हों ने नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी
रंग के धागे से अनार बना कर उन्हें चोग़े
के दामन में लगा दिया। 25उन के दरमियान
ख़ालिस सोने की घंटियाँ लगाई गईं। 26दामन
में अनार और घंटियाँ बारी बारी लगाई गईं।
लाज़िम था कि हारून ख़िदमत करने के लिए
हमेशा यह चोग़ा पहने। रब ने मूसा को यही
हुक्म दिया था।

ख़िदमत के लिए दीगर लिबास

27कारीगरों ने हारून और उस के बेटों
के लिए बारीक कतान के ज़ेरजामे बनाए।
यह बुनने वाले का काम था। 28साथ साथ
उन्हों ने बारीक कतान की पगड़ियाँ और
बारीक कतान के पाजामे बनाए। 29कमरबन्द
को बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी और
क़िर्मिज़ी रंग के धागे से बनाया गया। कढ़ाई
करने वालों ने इस पर काम किया। सब कुछ

उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया गया जो रब ने मूसा को दी थीं।

30उन्हों ने मुक़द्दस ताज यानी ख़ालिस सोने की तख़्ती बनाई और उस पर यह अल्फ़ाज़ कन्दा किए, 'रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस।' 31फिर उन्हों ने इसे नीली डोरी से पगड़ी के सामने वाले हिस्से से लगा दिया। यह भी उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया गया जो रब ने मूसा को दी थीं।

सारा सामान मूसा को दिखाया जाता है

32आख़िरकार मक़्दिस का काम मुकम्मल हुआ। इस्राईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया था जो रब ने मूसा को दी थीं। 33वह मक़्दिस की तमाम चीज़ें मूसा के पास ले आए यानी मुक़द्दस ख़ैमा और उस का सारा सामान, उस की हुकें, दीवारों के तख़्ते, शहतीर, सतून और पाए, 34ख़ैमे पर मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालों का ग़िलाफ़ और तख़स की खालों का ग़िलाफ़, मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े का पर्दा, 35अह्द का सन्दूक़ जिस में शरीअत की तख़्तियाँ रखनी थीं, उसे उठाने की लकड़ियाँ और उस का ढकना, 36मख़्सूस रोटियों की मेज़, उस का सारा सामान और रोटियाँ, 37ख़ालिस सोने का शमादान और उस पर रखने के चराग़ उस के सारे सामान समेत, शमादान के लिए तेल, 38बख़ूर जलाने की सोने की क़ुर्बानगाह, मसह का तेल, ख़ुश्बूदार बख़ूर, मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े का पर्दा, 39जानवरों को चढ़ाने की पीतल की क़ुर्बानगाह, उस का पीतल का जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाक़ी सारा सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस पर हौज़ रखना था, 40चारदीवारी के पर्दे उन के खम्बों और पाइयों समेत, सहन के दरवाज़े का पर्दा, चारदीवारी के रस्से और मेख़ें, मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करने का बाक़ी सारा सामान 41और मक़्दिस में ख़िदमत करने के वह मुक़द्दस लिबास जो हारून और उस के बेटों को पहनने थे।

42सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया गया था जो रब ने मूसा को दी थीं। 43मूसा ने तमाम चीज़ों का मुआइना किया और मालूम किया कि उन्हों ने सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक़ बनाया था। तब उस ने उन्हें बरकत दी।

मक़्दिस को खड़ा करने की हिदायात

40 फिर रब ने मूसा से कहा, 2"पहले महीने की पहली तारीख़ को मुलाक़ात का ख़ैमा खड़ा करना। 3अह्द का सन्दूक़ जिस में शरीअत की तख़्तियाँ हैं मुक़द्दसतरीन कमरे में रख कर उस के दरवाज़े का पर्दा लगाना। 4इस के बाद मख़्सूस रोटियों की मेज़ मुक़द्दस कमरे में ला कर उस पर तमाम ज़रूरी सामान रखना। उस कमरे में शमादान भी ले आना और उस पर उस के चराग़ रखना। 5बख़ूर की सोने की क़ुर्बानगाह उस पर्दे के सामने रखना जिस के पीछे अह्द का सन्दूक़ है। फिर ख़ैमे में दाख़िल होने के दरवाज़े पर पर्दा लगाना। 6जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह सहन में ख़ैमे के दरवाज़े के सामने रखी जाए। 7ख़ैमे और इस क़ुर्बानगाह के दरमियान धोने का हौज़ रख कर उस में पानी डालना। 8सहन की चारदीवारी खड़ी करके उस के दरवाज़े का पर्दा लगाना।

9फिर मसह का तेल ले कर उसे ख़ैमे और उस के सारे सामान पर छिड़क देना। यूँ तू उसे मेरे लिए मख़्सूस करेगा और वह मुक़द्दस होगा। 10फिर जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह और उस के सामान पर मसह का तेल छिड़कना। यूँ तू उसे मेरे लिए मख़्सूस करेगा और वह निहायत मुक़द्दस होगा। 11इसी तरह हौज़ और उस ढाँचे को भी मख़्सूस करना जिस पर हौज़ रखा गया है।

12हारून और उस के बेटों को मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर ला कर ग़ुसल कराना।

13फिर हारून को मुक़द्दस लिबास पहनाना
और उसे मसह करके मेरे लिए मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस करना ताकि इमाम के तौर पर मेरी
ख़िदमत करे। 14उस के बेटों को ला कर उन्हें
ज़ेरजामे पहना देना। 15उन्हें उन के वालिद की
तरह मसह करना ताकि वह भी इमामों के तौर
पर मेरी ख़िदमत करें। जब उन्हें मसह किया
जाएगा तो वह और बाद में उन की औलाद
हमेशा तक मक़्दिस में इस ख़िदमत के लिए
मख़्सूस होंगे।”

मक़्दिस को खड़ा किया जाता है

16मूसा ने सब कुछ रब की हिदायात के
मुताबिक़ किया। 17पहले महीने की पहली
तारीख़ को मुक़द्दस ख़ैमा खड़ा किया गया।
उन्हें मिस्र से निकले पूरा एक साल हो गया
था। 18मूसा ने दीवार के तख़्तों को उन के
पाइयों पर खड़ा करके उन के साथ शहतीर
लगाए। इसी तरह उस ने सतूनों को भी खड़ा
किया। 19उस ने रब की हिदायात के ऐन
मुताबिक़ दीवारों पर कपड़े का ख़ैमा लगाया
और उस पर दूसरे ग़िलाफ़ रखे।

20उस ने शरीअत की दोनों तख़्तियाँ ले कर
अह्द के सन्दूक़ में रख दीं, उठाने के लिए
लकड़ियाँ सन्दूक़ के कड़ों में डाल दीं और
कफ़्फ़ारे का ढकना उस पर लगा दिया। 21फिर
उस ने रब की हिदायात के ऐन मुताबिक़
सन्दूक़ को मुक़द्दसतरीन कमरे में रख कर उस
के दरवाज़े का पर्दा लगा दिया। यूँ अह्द के
सन्दूक़ पर पर्दा पड़ा रहा। 22मूसा ने मख़्सूस
रोटियों की मेज़ मुक़द्दस कमरे के शिमाली
हिस्से में उस पर्दे के सामने रख दी जिस के
पीछे अह्द का सन्दूक़ था। 23उस ने रब की
हिदायत के ऐन मुताबिक़ रब के लिए मख़्सूस
की हुई रोटियाँ मेज़ पर रखीं। 24उसी कमरे
के जुनूबी हिस्से में उस ने शमादान को मेज़
के मुक़ाबिल रख दिया। 25उस पर उस ने रब
की हिदायत के ऐन मुताबिक़ रब के सामने
चराग़ रख दिए। 26उस ने बख़ूर की सोने की
क़ुर्बानगाह भी उसी कमरे में रखी, उस पर्दे
के बिलकुल सामने जिस के पीछे अह्द का
सन्दूक़ था। 27उस ने उस पर रब की हिदायत
के ऐन मुताबिक़ ख़ुश्बूदार बख़ूर जलाया।

28फिर उस ने ख़ैमे का दरवाज़ा लगा दिया।
29बाहर जा कर उस ने जानवरों को चढ़ाने
की क़ुर्बानगाह ख़ैमे के दरवाज़े के सामने
रख दी। उस पर उस ने रब की हिदायत के
ऐन मुताबिक़ भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और
ग़ल्ला की नज़्रें चढ़ाईं।

30उस ने धोने के हौज़ को ख़ैमे और उस
क़ुर्बानगाह के दरमियान रख कर उस में पानी
डाल दिया। 31मूसा, हारून और उस के बेटे
उसे अपने हाथ-पाँओ धोने के लिए इस्तेमाल
करते थे। 32जब भी वह मुलाक़ात के ख़ैमे
में दाख़िल होते या जानवरों को चढ़ाने की
क़ुर्बानगाह के पास आते तो रब की हिदायत
के ऐन मुताबिक़ पहले ग़ुसल करते।

33आख़िर में मूसा ने ख़ैमा, क़ुर्बानगाह और
चारदीवारी खड़ी करके सहन के दरवाज़े का
पर्दा लगा दिया। यूँ मूसा ने मक़्दिस की तामीर
मुकम्मल की।

ख़ैमे में रब का जलाल

34फिर मुलाक़ात के ख़ैमे पर बादल छा
गया और मक़्दिस रब के जलाल से भर गया।
35मूसा ख़ैमे में दाख़िल न हो सका, क्यूँकि
बादल उस पर ठहरा हुआ था और मक़्दिस
रब के जलाल से भर गया था।

36तमाम सफ़र के दौरान जब भी मक़्दिस
के ऊपर से बादल उठता तो इस्राईली सफ़र के
लिए तय्यार हो जाते। 37अगर वह न उठता तो
वह उस वक़्त तक ठहरे रहते जब तक बादल
उठ न जाता। 38दिन के वक़्त बादल मक़्दिस
के ऊपर ठहरा रहता और रात के वक़्त वह
तमाम इस्राईलियों को आग की सूरत में नज़र
आता था। यह सिलसिला पूरे सफ़र के दौरान
जारी रहा।

अहबार

भस्म होने वाली क़ुर्बानी

1 रब ने मुलाक़ात के ख़ैमे में से मूसा
को बुला कर कहा 2कि इस्राईलियों को
इत्तिला दे,

"अगर तुम में से कोई रब को क़ुर्बानी पेश
करना चाहे तो वह अपने गाय-बैलों या भेड़-
बकरियों में से जानवर चुन ले।

3अगर वह अपने गाय-बैलों में से भस्म होने
वाली क़ुर्बानी चढ़ाना चाहे तो वह बेऐब बैल
चुन कर उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर
पेश करे ताकि रब उसे क़बूल करे। 4क़ुर्बानी
पेश करने वाला अपना हाथ जानवर के सर
पर रखे तो यह क़ुर्बानी मक़्बूल हो कर उस का
कफ़्फ़ारा देगी। 5क़ुर्बानी पेश करने वाला बैल
को वहाँ रब के सामने ज़बह करे। फिर हारून
के बेटे जो इमाम हैं उस का ख़ून रब को पेश
करके उसे दरवाज़े पर की क़ुर्बानगाह के चार
पहलूओं पर छिड़कें। 6इस के बाद क़ुर्बानी पेश
करने वाला खाल उतार कर जानवर के टुकड़े
टुकड़े करे। 7इमाम क़ुर्बानगाह पर आग लगा
कर उस पर तरतीब से लकड़ियाँ चुनें। 8उस
पर वह जानवर के टुकड़े सर और चर्बी समेत
रखें। 9लाज़िम है कि क़ुर्बानी पेश करने वाला
पहले जानवर की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ
धोए, फिर इमाम पूरे जानवर को क़ुर्बानगाह
पर जला दे। इस जलने वाली क़ुर्बानी की ख़ुश्बू
रब को पसन्द है।

10अगर भस्म होने वाली क़ुर्बानी भेड़-
बकरियों में से चुनी जाए तो वह बेऐब नर
हो। 11पेश करने वाला उसे रब के सामने
क़ुर्बानगाह की शिमाली सिम्त में ज़बह करे।
फिर हारून के बेटे जो इमाम हैं उस का ख़ून
क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कें। 12इस
के बाद पेश करने वाला जानवर के टुकड़े
टुकड़े करे और इमाम यह टुकड़े सर और चर्बी
समेत क़ुर्बानगाह की जलती हुई लकड़ियों पर
तरतीब से रखे। 13लाज़िम है कि क़ुर्बानी पेश
करने वाला पहले जानवर की अंतड़ियाँ और
पिंडलियाँ धोए, फिर इमाम पूरे जानवर को
रब को पेश करके क़ुर्बानगाह पर जला दे। इस
जलने वाली क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब को पसन्द
है।

14अगर भस्म होने वाली क़ुर्बानी परिन्दा हो
तो वह क़ुम्री या जवान कबूतर हो। 15इमाम
उसे क़ुर्बानगाह के पास ले आए और उस का
सर मरोड़ कर क़ुर्बानगाह पर जला दे। वह
उस का ख़ून यूँ निकलने दे कि वह क़ुर्बानगाह
की एक तरफ़ से नीचे टपके। 16वह उस का
पोटा और जो उस में है दूर करके क़ुर्बानगाह
की मशरिक़ी सिम्त में फैंक दे, वहाँ जहाँ राख
फैंकी जाती है। 17उसे पेश करते वक़्त इमाम
उस के पर पकड़ कर परिन्दे को फाड़ डाले,
लेकिन यूँ कि वह बिलकुल टुकड़े टुकड़े न हो
जाए। फिर इमाम उसे क़ुर्बानगाह पर जलती

हुई लकड़ियों पर जला दे। इस जलने वाली क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब को पसन्द है।

ग़ल्ला की नज़र

2 अगर कोई रब को ग़ल्ला की नज़र
पेश करना चाहे तो वह इस के लिए
बेहतरीन मैदा इस्तेमाल करे। उस पर वह
ज़ैतून का तेल उंडेले और लुबान रख कर 2उसे
हारून के बेटों के पास ले आए जो इमाम
हैं। इमाम तेल से मिलाया गया मुट्ठी भर मैदा
और तमाम लुबान ले कर क़ुर्बानगाह पर जला
दे। यह यादगार का हिस्सा है, और उस की
ख़ुश्बू रब को पसन्द है। 3बाक़ी मैदा और तेल
हारून और उस के बेटों का हिस्सा है। वह रब
की जलने वाली क़ुर्बानियों में से एक निहायत
मुक़द्दस हिस्सा है।

4अगर यह क़ुर्बानी तनूर में पकाई हुई रोटी
हो तो उस में ख़मीर न हो। इस की दो क़िस्में
हो सकती हैं, रोटियाँ जो बेहतरीन मैदे और
तेल से बनी हुई हों और रोटियाँ जिन पर तेल
लगाया गया हो।

5अगर यह क़ुर्बानी तवे पर पकाई हुई रोटी
हो तो वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो। उस
में ख़मीर न हो। 6चूँकि वह ग़ल्ला की नज़र
है इस लिए रोटी को टुकड़े टुकड़े करना और
उस पर तेल डालना।

7अगर यह क़ुर्बानी कड़ाही में पकाई हुई
रोटी हो तो वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो।

8अगर तू इन चीज़ों की बनी हुई ग़ल्ला
की नज़र रब के हुज़ूर लाना चाहे तो उसे
इमाम को पेश करना। वही उसे क़ुर्बानगाह के
पास ले आए। 9फिर इमाम यादगार का हिस्सा
अलग करके उसे क़ुर्बानगाह पर जला दे। ऐसी
क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब को पसन्द है। 10क़ुर्बानी
का बाक़ी हिस्सा हारून और उस के बेटों के
लिए है। वह रब की जलने वाली क़ुर्बानियों में
से एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा है।

11ग़ल्ला की जितनी नज़रें तुम रब को पेश
करते हो उन में ख़मीर न हो, क्यूँकि लाज़िम
है कि तुम रब को जलने वाली क़ुर्बानी पेश
करते वक़्त न ख़मीर, न शहद जलाओ। 12यह
चीज़ें फ़सल के पहले फलों के साथ रब को
पेश की जा सकती हैं, लेकिन उन्हें क़ुर्बानगाह
पर न जलाया जाए, क्यूँकि वहाँ रब को उन
की ख़ुश्बू पसन्द नहीं है। 13ग़ल्ला की हर
नज़र में नमक हो, क्यूँकि नमक उस अह्द की
नुमाइन्दगी करता है जो तेरे ख़ुदा ने तेरे साथ
बांधा है। तुझे हर क़ुर्बानी में नमक डालना है।

14अगर तू ग़ल्ला की नज़र के लिए फ़सल
के पहले फल पेश करना चाहे तो कुचली हुई
कच्ची बालियाँ भून कर पेश करना। 15चूँकि
वह ग़ल्ला की नज़र है इस लिए उस पर
तेल उंडेलना और लुबान रखना। 16कुचले हुए
दानों और तेल का जो हिस्सा रब का है यानी
यादगार का हिस्सा उसे इमाम तमाम लुबान
के साथ जला दे। यह नज़र रब के लिए जलने
वाली क़ुर्बानी है।

सलामती की क़ुर्बानी

3 अगर कोई रब को सलामती की क़ुर्बानी
पेश करने के लिए गाय या बैल चढ़ाना
चाहे तो वह जानवर बेऐब हो। 2वह अपना
हाथ जानवर के सर पर रख कर उसे मुलाक़ात
के ख़ैमे के दरवाज़े पर ज़बह करे। हारून के
बेटे जो इमाम हैं उस का ख़ून क़ुर्बानगाह के
चार पहलूओं पर छिड़कें। 3-4पेश करने वाला
अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, गुर्दे उस चर्बी
समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती
है और जोड़कलेजी जलने वाली क़ुर्बानी के
तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुर्दों
के साथ ही अलग करना है। 5फिर हारून के
बेटे यह सब कुछ भस्म होने वाली क़ुर्बानी के
साथ क़ुर्बानगाह की लकड़ियों पर जला दें।
यह जलने वाली क़ुर्बानी है, और इस की ख़ुश्बू
रब को पसन्द है।

6अगर सलामती की क़ुर्बानी के लिए भेड़-
बकरियों में से जानवर चुना जाए तो वह बेऐब
नर या मादा हो।

7अगर वह भेड़ का बच्चा चढ़ाना चाहे तो
वह उसे रब के सामने ले आए। 8वह अपना
हाथ उस के सर पर रख कर उसे मुलाक़ात
के ख़ैमे के सामने ज़बह करे। हारून के बेटे
उस का ख़ून क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर
छिड़कें। 9-10पेश करने वाला चर्बी, पूरी दुम,
अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, गुर्दे उस चर्बी
समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती
है और जोड़कलेजी जलने वाली क़ुर्बानी के
तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुर्दों
के साथ ही अलग करना है। 11इमाम यह सब
कुछ रब को पेश करके क़ुर्बानगाह पर जला
दे। यह ख़ुराक जलने वाली क़ुर्बानी है।

12अगर सलामती की क़ुर्बानी बकरी की हो
13तो पेश करने वाला उस पर हाथ रख कर
उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने ज़बह करे।
हारून के बेटे जानवर का ख़ून क़ुर्बानगाह
के चार पहलूओं पर छिड़कें। 14-15पेश करने
वाला अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, गुर्दे उस
चर्बी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब
होती है और जोड़कलेजी जलने वाली क़ुर्बानी
के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुर्दों
के साथ ही अलग करना है। 16इमाम यह सब
कुछ रब को पेश करके क़ुर्बानगाह पर जला
दे। यह ख़ुराक जलने वाली क़ुर्बानी है, और
इस की ख़ुश्बू रब को पसन्द है।

सारी चर्बी रब की है। 17तुम्हारे लिए ख़ून
या चर्बी खाना मना है। यह न सिर्फ़ तुम्हारे
लिए मना है बल्कि तुम्हारी औलाद के लिए
भी, न सिर्फ़ यहाँ बल्कि हर जगह जहाँ तुम
रहते हो।"

गुनाह की क़ुर्बानी

4 रब ने मूसा से कहा, 2"इस्राईलियों को
बताना कि जो भी ग़ैरइरादी तौर पर
गुनाह करके रब के किसी हुक्म को तोड़े वह
यह करे :

इमाम के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

3अगर इमाम-ए-आज़म गुनाह करे और
नतीजे में पूरी क़ौम क़ुसूरवार ठहरे तो फिर
वह रब को एक बेऐब जवान बैल ले कर
गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। 4वह
जवान बैल को मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े
के पास ले आए और अपना हाथ उस के सर
पर रख कर उसे रब के सामने ज़बह करे।
5फिर वह जानवर के ख़ून में से कुछ ले कर
ख़ैमे में जाए। 6वहाँ वह अपनी उंगली उस में
डाल कर उसे सात बार रब के सामने यानी
मुक़द्दसतरीन कमरे के पर्दे पर छिड़के। 7फिर
वह ख़ैमे के अन्दर की उस क़ुर्बानगाह के
चारों सींगों पर ख़ून लगाए जिस पर बख़ूर
जलाया जाता है। बाक़ी ख़ून वह बाहर ख़ैमे
के दरवाज़े पर की उस क़ुर्बानगाह के पाए
पर उंडेले जिस पर जानवर जलाए जाते हैं।
8जवान बैल की सारी चर्बी, अंतड़ियों पर की
सारी चर्बी, 9गुर्दे उस चर्बी समेत जो उन पर
और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी
को गुर्दों के साथ ही अलग करना है। 10यह
बिलकुल उसी तरह किया जाए जिस तरह
उस बैल के साथ किया गया जो सलामती की
क़ुर्बानी के लिए पेश किया जाता है। इमाम
यह सब कुछ उस क़ुर्बानगाह पर जला दे
जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 11लेकिन
वह उस की खाल, उस का सारा गोश्त, सर
और पिंडलियाँ, अंतड़ियाँ और उन का गोबर
12ख़ैमागाह के बाहर ले जाए। यह चीज़ें उस
पाक जगह पर जहाँ क़ुर्बानियों की राख फैंकी
जाती है लकड़ियों पर रख कर जला देनी हैं।

क़ौम के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

13अगर इस्राईल की पूरी जमाअत ने
ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी
हुक्म से तजावुज़ किया है और जमाअत को
मालूम नहीं था तो भी वह क़ुसूरवार है। 14जब
लोगों को पता लगे कि हम ने गुनाह किया है
तो जमाअत मुलाक़ात के ख़ैमे के पास एक

जवान बैल ले आए और उसे गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। 15जमाअत के बुज़ुर्ग रब के सामने अपने हाथ उस के सर पर रखें, और वह वहीं ज़बह किया जाए। 16फिर इमाम-ए-आज़म जानवर के ख़ून में से कुछ ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे में जाए। 17वहाँ वह अपनी उंगली उस में डाल कर उसे सात बार रब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कमरे के पर्दे पर छिड़के। 18फिर वह ख़ैमे के अन्दर की उस क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर ख़ून लगाए जिस पर बख़ूर जलाया जाता है। बाक़ी ख़ून वह बाहर ख़ैमे के दरवाज़े की उस क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 19इस के बाद वह उस की तमाम चर्बी निकाल कर क़ुर्बानगाह पर जला दे। 20उस बैल के साथ वह सब कुछ करे जो उसे अपने ज़ाती ग़ैरइरादी गुनाह के लिए करना होता है। यूँ वह लोगों का कफ़्फ़ारा देगा और उन्हें मुआफ़ी मिल जाएगी। 21आख़िर में वह बैल को ख़ैमागाह के बाहर ले जा कर उस तरह जला दे जिस तरह उसे अपने लिए बैल को जला देना होता है। यह जमाअत का गुनाह दूर करने की क़ुर्बानी है।

क़ौम के राहनुमा के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

22अगर कोई सरदार ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे और यूँ क़ुसूरवार ठहरे तो 23जब भी उसे पता लगे कि मुझ से गुनाह हुआ है तो वह क़ुर्बानी के लिए एक बेऐब बकरा ले आए। 24वह अपना हाथ बकरे के सर पर रख कर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ ज़बह की जाती हैं। यह गुनाह की क़ुर्बानी है। 25इमाम अपनी उंगली ख़ून में डाल कर उसे उस क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी ख़ून वह क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले। 26फिर वह उस की सारी चर्बी क़ुर्बानगाह पर उस तरह जला दे जिस तरह वह सलामती की क़ुर्बानियों की चर्बी जला देता है। यूँ इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।

आम लोगों के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

27अगर कोई आम शख़्स ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे और यूँ क़ुसूरवार ठहरे तो 28जब भी उसे पता लगे कि मुझ से गुनाह हुआ है तो वह क़ुर्बानी के लिए एक बेऐब बकरी ले आए। 29वह अपना हाथ बकरी के सर पर रख कर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ ज़बह की जाती हैं। 30इमाम अपनी उंगली ख़ून में डाल कर उसे उस क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी ख़ून वह क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले। 31फिर वह उस की सारी चर्बी उस तरह निकाले जिस तरह वह सलामती की क़ुर्बानियों की चर्बी निकालता है। इस के बाद वह उसे क़ुर्बानगाह पर जला दे। ऐसी क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब को पसन्द है। यूँ इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।

32अगर वह गुनाह की क़ुर्बानी के लिए भेड़ का बच्चा लाना चाहे तो वह बेऐब मादा हो। 33वह अपना हाथ उस के सर पर रख कर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ ज़बह की जाती हैं। 34इमाम अपनी उंगली ख़ून में डाल कर उसे उस क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी ख़ून वह क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले। 35फिर वह उस की तमाम चर्बी उस तरह निकाले जिस तरह सलामती की क़ुर्बानी के लिए ज़बह किए गए जवान मेंढे की चर्बी निकाली जाती है। इस के बाद इमाम चर्बी को क़ुर्बानगाह पर उन क़ुर्बानियों समेत जला दे जो रब के लिए जलाई जाती हैं। यूँ इमाम उस

आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

गुनाह की क़ुर्बानियों के बारे में ख़ास हिदायात

5 हो सकता है कि किसी ने यूँ गुनाह किया कि उस ने कोई जुर्म देखा या वह उस के बारे में कुछ जानता है। तो भी जब गवाहों को क़सम के लिए बुलाया जाता है तो वह गवाही देने के लिए सामने नहीं आता। इस सूरत में वह क़ुसूरवार ठहरता है।

2 हो सकता है कि किसी ने ग़ैरइरादी तौर पर किसी नापाक चीज़ को छू लिया है, ख़्वाह वह किसी जंगली जानवर, मवेशी या रेंगने वाले जानवर की लाश क्यूँ न हो। इस सूरत में वह नापाक है और क़ुसूरवार ठहरता है।

3 हो सकता है कि किसी ने ग़ैरइरादी तौर पर किसी शख़्स की नापाकी को छू लिया है यानी उस की कोई ऐसी चीज़ जिस से वह नापाक हो गया है। जब उसे मालूम हो जाता है तो वह क़ुसूरवार ठहरता है।

4 हो सकता है कि किसी ने बेपरवाई से कुछ करने की क़सम खाई है, चाहे वह अच्छा काम था या ग़लत। जब वह जान लेता है कि उस ने क्या किया है तो वह क़ुसूरवार ठहरता है।

5 जो इस तरह के किसी गुनाह की बिना पर क़ुसूरवार हो, लाज़िम है कि वह अपना गुनाह तस्लीम करे। 6 फिर वह गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर एक भेड़ या बकरी पेश करे। यूँ इमाम उस का कफ़्फ़ारा देगा।

7 अगर क़ुसूरवार शख़्स ग़ुर्बत के बाइस भेड़ या बकरी न दे सके तो वह रब को दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर पेश करे, एक गुनाह की क़ुर्बानी के लिए और एक भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए। 8 वह उन्हें इमाम के पास ले आए। इमाम पहले गुनाह की क़ुर्बानी के लिए परिन्दा पेश करे। वह उस की गर्दन मरोड़ डाले लेकिन ऐसे कि सर जुदा न हो जाए। 9 फिर वह उस के ख़ून में से कुछ क़ुर्बानगाह के एक पहलू पर छिड़के। बाक़ी ख़ून वह यूँ निकलने दे कि वह क़ुर्बानगाह के पाए पर टपके। यह गुनाह की क़ुर्बानी है। 10 फिर इमाम दूसरे परिन्दे को क़वाइद के मुताबिक़ भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। यूँ इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

11 अगर वह शख़्स ग़ुर्बत के बाइस दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर भी न दे सके तो फिर वह गुनाह की क़ुर्बानी के लिए डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश करे। वह उस पर न तेल उंडेले, न लुबान रखे, क्यूँकि यह ग़ल्ला की नज़र नहीं बल्कि गुनाह की क़ुर्बानी है। 12 वह उसे इमाम के पास ले आए जो यादगार का हिस्सा यानी मुट्ठी भर उन क़ुर्बानियों के साथ जला दे जो रब के लिए जलाई जाती हैं। यह गुनाह की क़ुर्बानी है। 13 यूँ इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी। ग़ल्ला की नज़र की तरह बाक़ी मैदा इमाम का हिस्सा है।”

क़ुसूर की क़ुर्बानी

14 रब ने मूसा से कहा, 15 “अगर किसी ने बेईमानी करके ग़ैरइरादी तौर पर रब की मख़्सूस और मुक़द्दस चीज़ों के सिलसिले में गुनाह किया हो, ऐसा शख़्स क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर रब को बेऐब और क़ीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा या बकरा पेश करे। उस की क़ीमत मक़्दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। 16 जितना नुक़्सान मक़्दिस को हुआ है उतना ही वह दे। इस के इलावा वह मज़ीद 20 फ़ीसद अदा करे। वह उसे इमाम को दे दे और इमाम जानवर को क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करके उस का कफ़्फ़ारा दे। यूँ उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

17 अगर कोई ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे तो वह क़ुसूरवार है, और वह उस का ज़िम्मादार ठहरेगा। 18 वह क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर इमाम के पास एक बेऐब और क़ीमत

के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा ले आए। उस की क़ीमत मक़्दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। फिर इमाम यह क़ुर्बानी उस गुनाह के लिए चढ़ाए जो क़ुसूरवार शख़्स ने ग़ैरइरादी तौर पर किया है। यूँ उसे मुआफ़ी मिल जाएगी। 19यह क़ुसूर की क़ुर्बानी है, क्यूँकि वह रब का गुनाह करके क़ुसूरवार ठहरा है।”

6 रब ने मूसा से कहा, 2“हो सकता है किसी ने गुनाह करके बेईमानी की है, मसलन उस ने अपने पड़ोसी की कोई चीज़ वापस नहीं की जो उस के सपुर्द की गई थी या जो उसे गिरवी के तौर पर मिली थी, या उस ने उस की कोई चीज़ चोरी की, या उस ने किसी से कोई चीज़ छीन ली, 3या उस ने किसी की गुमशुदा चीज़ के बारे में झूट बोला जब उसे मिल गई, या उस ने क़सम खा कर झूट बोला है, या इस तरह का कोई और गुनाह किया है। 4अगर वह इस तरह का गुनाह करके क़ुसूरवार ठहरे तो लाज़िम है कि वह वही चीज़ वापस करे जो उस ने चोरी की या छीन ली या जो उस के सपुर्द की गई या जो गुमशुदा हो कर उस के पास आ गई है 5या जिस के बारे में उस ने क़सम खा कर झूट बोला है। वह उस का उतना ही वापस करके 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। और वह यह सब कुछ उस दिन वापस करे जब वह अपनी क़ुसूर की क़ुर्बानी पेश करता है। 6क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर वह एक बेऐब और क़ीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा इमाम के पास ले आए और रब को पेश करे। उस की क़ीमत मक़्दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। 7फिर इमाम रब के सामने उस का कफ़्फ़ारा देगा तो उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।”

भस्म होने वाली क़ुर्बानी

8रब ने मूसा से कहा, 9“हारून और उस के बेटों को भस्म होने वाली क़ुर्बानियों के बारे में ज़ैल की हिदायात देना : भस्म होने वाली क़ुर्बानी पूरी रात सुब्ह तक क़ुर्बानगाह की उस जगह पर रहे जहाँ आग जलती है। आग को बुझने न देना। 10सुब्ह को इमाम कतान का लिबास और कतान का पाजामा पहन कर क़ुर्बानी से बची हुई राख क़ुर्बानगाह के पास ज़मीन पर डाले। 11फिर वह अपने कपड़े बदल कर राख को ख़ैमागाह के बाहर किसी पाक जगह पर छोड़ आए। 12क़ुर्बानगाह पर आग जलती रहे। वह कभी भी न बुझे। हर सुब्ह इमाम लकड़ियाँ चुन कर उस पर भस्म होने वाली क़ुर्बानी तरतीब से रखे और उस पर सलामती की क़ुर्बानी की चर्बी जला दे। 13आग हमेशा जलती रहे। वह कभी न बुझने पाए।

ग़ल्ला की नज़र

14ग़ल्ला की नज़र के बारे में हिदायात यह हैं : हारून के बेटे उसे क़ुर्बानगाह के सामने रब को पेश करें। 15फिर इमाम यादगार का हिस्सा यानी तेल से मिलाया गया मुट्ठी भर बेहतरीन मैदा और क़ुर्बानी का तमाम लुबान ले कर क़ुर्बानगाह पर जला दे। इस की ख़ुश्बू रब को पसन्द है। 16हारून और उस के बेटे क़ुर्बानी का बाक़ी हिस्सा खा लें। लेकिन वह उसे मुक़द्दस जगह पर यानी मुलाक़ात के ख़ैमे की चारदीवारी के अन्दर खाएँ, और उस में ख़मीर न हो। 17उसे पकाने के लिए उस में ख़मीर न डाला जाए। मैं ने जलने वाली क़ुर्बानियों में से यह हिस्सा उन के लिए मुक़र्रर किया है। यह गुनाह की क़ुर्बानी और क़ुसूर की क़ुर्बानी की तरह निहायत मुक़द्दस है। 18हारून की औलाद के तमाम मर्द उसे खाएँ। यह उसूल अबद तक क़ाइम रहे। जो भी उसे छुएगा वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएगा।”

19रब ने मूसा से कहा, 20“जब हारून और उस के बेटों को इमाम की ज़िम्मादारी उठाने के लिए मख़्सूस करके तेल से मसह किया जाएगा तो वह डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश करें। उस का आधा हिस्सा सुब्ह को और आधा हिस्सा शाम के वक़्त पेश किया जाए।

वह ग़ल्ला की यह नज़र रोज़ाना पेश करें।
21उसे तेल के साथ मिला कर तवे पर पकाना
है। फिर उसे टुकड़े टुकड़े करके ग़ल्ला की
नज़र के तौर पर पेश करना। उस की ख़ुश्बू
रब को पसन्द है। 22यह क़ुर्बानी हमेशा हारून
की नस्ल का वह आदमी पेश करे जिसे मसह
करके इमाम-ए-आज़म का उह्दा दिया गया
है, और वह उसे पूरे तौर पर रब के लिए जला
दे। 23इमाम की ग़ल्ला की नज़र हमेशा पूरे तौर
पर जलाना। उसे न खाना।”

गुनाह की क़ुर्बानी

24रब ने मूसा से कहा, 25“हारून और उस
के बेटों को गुनाह की क़ुर्बानी के बारे में ज़ैल
की हिदायात देना : गुनाह की क़ुर्बानी को रब
के सामने वहीं ज़बह करना है जहाँ भस्म होने
वाली क़ुर्बानी ज़बह की जाती है। वह निहायत
मुक़द्दस है। 26उसे पेश करने वाला इमाम उसे
मुक़द्दस जगह पर यानी मुलाक़ात के ख़ैमे
की चारदीवारी के अन्दर खाए। 27जो भी इस
क़ुर्बानी के गोश्त को छू लेता है वह मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस हो जाता है। अगर क़ुर्बानी के ख़ून
के छींटे किसी लिबास पर पड़ जाएँ तो उसे
मुक़द्दस जगह पर धोना है। 28अगर गोश्त को
हंडिया में पकाया गया हो तो उस बर्तन को
बाद में तोड़ देना है। अगर उस के लिए पीतल
का बर्तन इस्तेमाल किया गया हो तो उसे ख़ूब
माँझ कर पानी से साफ़ करना। 29इमामों के
ख़ानदानों में से तमाम मर्द उसे खा सकते
हैं। यह खाना निहायत मुक़द्दस है। 30लेकिन
गुनाह की हर वह क़ुर्बानी खाई न जाए जिस
का ख़ून मुलाक़ात के ख़ैमे में इस लिए लाया
गया है कि मक़्दिस में किसी का कफ़्फ़ारा
दिया जाए। उसे जलाना है।

क़ुसूर की क़ुर्बानी

7 क़ुसूर की क़ुर्बानी जो निहायत मुक़द्दस
है उस के बारे में हिदायात यह हैं :
2क़ुसूर की क़ुर्बानी वहीं ज़बह करनी है जहाँ
भस्म होने वाली क़ुर्बानी ज़बह की जाती है।
उस का ख़ून क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर
छिड़का जाए। 3उस की तमाम चर्बी निकाल
कर क़ुर्बानगाह पर चढ़ानी है यानी उस की
दुम, अंतड़ियों पर की चर्बी, 4गुर्दे उस चर्बी
समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है
और जोड़कलेजी। इन चीज़ों को गुर्दों के साथ
ही अलग करना है। 5इमाम यह सब कुछ रब
को क़ुर्बानगाह पर जलने वाली क़ुर्बानी के तौर
पर पेश करे। यह क़ुसूर की क़ुर्बानी है। 6इमामों
के ख़ानदानों में से तमाम मर्द उसे खा सकते
हैं। लेकिन उसे मुक़द्दस जगह पर खाया जाए।
यह निहायत मुक़द्दस है।

7गुनाह और क़ुसूर की क़ुर्बानी के लिए एक
ही उसूल है, जो इमाम क़ुर्बानी को पेश करके
कफ़्फ़ारा देता है उस को उस का गोश्त मिलता
है। 8इस तरह जो इमाम किसी जानवर को
भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाता है
उसी को जानवर की खाल मिलती है। 9और
इसी तरह तनूर में, कड़ाही में या तवे पर
पकाई गई ग़ल्ला की हर नज़र उस इमाम को
मिलती है जिस ने उसे पेश किया है। 10लेकिन
हारून के तमाम बेटों को ग़ल्ला की बाक़ी
नज़रें बराबर बराबर मिलती रहें, ख़्वाह उन
में तेल मिलाया गया हो या वह ख़ुश्क हों।

सलामती की क़ुर्बानी

11सलामती की क़ुर्बानी जो रब को पेश की
जाती है उस के बारे में ज़ैल की हिदायात हैं :
12अगर कोई इस क़ुर्बानी से अपनी
शुक्रगुज़ारी का इज़हार करना चाहे तो वह
जानवर के साथ बेख़मीरी रोटी जिस में तेल
डाला गया हो, बेख़मीरी रोटी जिस पर तेल
लगाया गया हो और रोटी जिस में बेहतरीन
मैदा और तेल मिलाया गया हो पेश करे। 13इस
के इलावा वह ख़मीरी रोटी भी पेश करे। 14पेश
करने वाला क़ुर्बानी की हर चीज़ का एक
हिस्सा उठा कर रब के लिए मख़्सूस करे। यह

उस इमाम का हिस्सा है जो जानवर का ख़ून क़ुर्बानगाह पर छिड़कता है। 15गोश्त उसी दिन खाया जाए जब जानवर को ज़बह किया गया हो। अगली सुब्ह तक कुछ नहीं बचना चाहिए।

16इस क़ुर्बानी का गोश्त सिर्फ़ इस सूरत में अगले दिन खाया जा सकता है जब किसी ने मन्नत मान कर या अपनी ख़ुशी से उसे पेश किया है। 17अगर कुछ गोश्त तीसरे दिन तक बच जाए तो उसे जलाना है। 18अगर उसे तीसरे दिन भी खाया जाए तो रब यह क़ुर्बानी क़बूल नहीं करेगा। उस का कोई फ़ाइदा नहीं होगा बल्कि उसे नापाक क़रार दिया जाएगा। जो भी उस से खाएगा वह क़ुसूरवार ठहरेगा। 19अगर यह गोश्त किसी नापाक चीज़ से लग जाए तो उसे नहीं खाना है बल्कि उसे जलाया जाए। अगर गोश्त पाक है तो हर शख़्स जो ख़ुद पाक है उसे खा सकता है। 20लेकिन अगर नापाक शख़्स रब को पेश की गई सलामती की क़ुर्बानी का यह गोश्त खाए तो उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है। 21हो सकता है कि किसी ने किसी नापाक चीज़ को छू लिया है चाहे वह नापाक शख़्स, जानवर या कोई और घिनौनी और नापाक चीज़ हो। अगर ऐसा शख़्स रब को पेश की गई सलामती की क़ुर्बानी का गोश्त खाए तो उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है।"

चर्बी और ख़ून खाना मना है

22रब ने मूसा से कहा, 23"इस्राईलियों को बता देना कि गाय-बैल और भेड़-बकरियों की चर्बी खाना तुम्हारे लिए मना है। 24तुम फ़ित्री तौर पर मरे हुए जानवरों और फाड़े हुए जानवरों की चर्बी दीगर कामों के लिए इस्तेमाल कर सकते हो, लेकिन उसे खाना मना है। 25जो भी उस चर्बी में से खाए जो जला कर रब को पेश की जाती है उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है। 26जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ परिन्दों या दीगर जानवरों का ख़ून खाना मना है। 27जो भी ख़ून खाए उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए।"

क़ुर्बानियों में से इमाम का हिस्सा

28रब ने मूसा से कहा, 29"इस्राईलियों को बताना कि जो रब को सलामती की क़ुर्बानी पेश करे वह रब के लिए एक हिस्सा मख़्सूस करे। 30वह जलने वाली यह क़ुर्बानी अपने हाथों से रब को पेश करे। इस के लिए वह जानवर की चर्बी और सीना रब के सामने पेश करे। सीना हिलाने वाली क़ुर्बानी हो। 31इमाम चर्बी को क़ुर्बानगाह पर जला दे जबकि सीना हारून और उस के बेटों का हिस्सा है। 32क़ुर्बानी की दहनी रान इमाम को उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर दी जाए। 33वह उस इमाम का हिस्सा है जो सलामती की क़ुर्बानी का ख़ून और चर्बी चढ़ाता है।

34इस्राईलियों की सलामती की क़ुर्बानियों में से मैं ने हिलाने वाला सीना और उठाने वाली रान इमामों को दी है। यह चीज़ें हमेशा के लिए इस्राईलियों की तरफ़ से इमामों का हक़ हैं।"

35यह उस दिन जलने वाली क़ुर्बानियों में से हारून और उस के बेटों का हिस्सा बन गईं जब उन्हें मक़्दिस में रब की ख़िदमत में पेश किया गया। 36रब ने उस दिन जब उन्हें तेल से मसह किया गया हुक्म दिया था कि इस्राईली यह हिस्सा हमेशा इमामों को दिया करें।

37ग़रज़ यह हिदायात तमाम क़ुर्बानियों के बारे में हैं यानी भस्म होने वाली क़ुर्बानी, ग़ल्ला की नज़र, गुनाह की क़ुर्बानी, क़ुसूर की क़ुर्बानी, इमाम को मक़्दिस में ख़िदमत के लिए मख़्सूस करने की क़ुर्बानी और सलामती की क़ुर्बानी के बारे में। 38रब ने मूसा को यह हिदायात सीना पहाड़ पर दीं, उस दिन जब उस ने इस्राईलियों को हुक्म दिया कि वह दश्त-ए-सीना में रब को अपनी क़ुर्बानियाँ पेश करें।

हारून और उस के बेटों की मख़्सूसियत

8 रब ने मूसा से कहा, 2"हारून और
उस के बेटों को मेरे हुज़ूर ले आना।
नीज़ इमामों के लिबास, मसह का तेल, गुनाह
की क़ुर्बानी के लिए जवान बैल, दो मेंढे और
बेख़मीरी रोटियों की टोकरी ले आना। 3फिर
पूरी जमाअत को ख़ैमे के दरवाज़े पर जमा
करना।"

4मूसा ने ऐसा ही किया। जब पूरी जमाअत
इकट्ठी हो गई तो 5उस ने उन से कहा, "अब
मैं वह कुछ करता हूँ जिस का हुक्म रब ने
दिया है।" 6मूसा ने हारून और उस के बेटों को
सामने ला कर ग़ुसल कराया। 7उस ने हारून
को कतान का ज़ेरजामा पहना कर कमरबन्द
लपेटा। फिर उस ने चोग़ा पहनाया जिस पर
उस ने बालापोश को महारत से बुने हुए पटके
से बांधा। 8इस के बाद उस ने सीने का कीसा
लगा कर उस में दोनों क़ुरए बनाम ऊरीम और
तुम्मीम रखे। 9फिर उस ने हारून के सर पर
पगड़ी रखी जिस के सामने वाले हिस्से पर उस
ने मुक़द्दस ताज यानी सोने की तख़्ती लगा दी।
सब कुछ उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ हुआ जो
रब ने मूसा को दिया था।

10इस के बाद मूसा ने मसह के तेल से
मक़्दिस को और जो कुछ उस में था मसह
करके उसे मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया। 11उस
ने यह तेल सात बार जानवर चढ़ाने की
क़ुर्बानगाह और उस के सामान पर छिड़क
दिया। इसी तरह उस ने सात बार धोने के हौज़
और उस ढाँचे पर तेल छिड़क दिया जिस पर
हौज़ रखा हुआ था। यूँ यह चीज़ें मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस हुईं। 12उस ने हारून के सर पर मसह
का तेल उंडेल कर उसे मसह किया। यूँ वह
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हुआ।

13फिर मूसा ने हारून के बेटों को सामने
ला कर उन्हें ज़ेरजामे पहनाए, कमरबन्द लपेटे
और उन के सरों पर पगड़ियाँ बांधीं। सब कुछ
उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा
को दिया था।

14अब मूसा ने गुनाह की क़ुर्बानी के लिए
जवान बैल को पेश किया। हारून और उस के
बेटों ने अपने हाथ उस के सर पर रखे। 15मूसा
ने उसे ज़बह करके उस के ख़ून में से कुछ ले
कर अपनी उंगली से क़ुर्बानगाह के सींगों पर
लगा दिया ताकि वह गुनाहों से पाक हो जाए।
बाक़ी ख़ून उस ने क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेल
दिया। यूँ उस ने उसे मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
करके उस का कफ़्फ़ारा दिया। 16मूसा ने
अंतड़ियों पर की तमाम चर्बी, जोड़कलेजी
और दोनों गुर्दे उन की चर्बी समेत ले कर
क़ुर्बानगाह पर जला दिए। 17लेकिन बैल की
खाल, गोश्त और अंतड़ियों के गोबर को उस
ने ख़ैमागाह के बाहर ले जा कर जला दिया।
सब कुछ उस हुक्म के मुताबिक़ हुआ जो रब
ने मूसा को दिया था।

18इस के बाद उस ने भस्म होने वाली
क़ुर्बानी के लिए पहला मेंढा पेश किया। हारून
और उस के बेटों ने अपने हाथ उस के सर
पर रख दिए। 19मूसा ने उसे ज़बह करके
उस का ख़ून क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर
छिड़क दिया। 20उस ने मेंढे को टुकड़े टुकड़े
करके सर, टुकड़े और चर्बी जला दी। 21उस ने
अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ पानी से साफ़ करके
पूरे मेंढे को क़ुर्बानगाह पर जला दिया। सब
कुछ उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब
ने मूसा को दिया था। रब के लिए जलने वाली
यह क़ुर्बानी भस्म होने वाली क़ुर्बानी थी, और
उस की ख़ुश्बू रब को पसन्द थी।

22इस के बाद मूसा ने दूसरे मेंढे को पेश
किया। इस क़ुर्बानी का मक़्सद इमामों को
मक़्दिस में ख़िदमत के लिए मख़्सूस करना
था। हारून और उस के बेटों ने अपने हाथ
मेंढे के सर पर रख दिए। 23मूसा ने उसे ज़बह
करके उस के ख़ून में से कुछ ले कर हारून के
दहने कान की लौ पर और उस के दहने हाथ
और दहने पाँओ के अंगूठों पर लगाया। 24यही
उस ने हारून के बेटों के साथ भी किया। उस
ने उन्हें सामने ला कर उन के दहने कान की

लौ पर और उन के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर ख़ून लगाया। बाक़ी ख़ून उस ने क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़क दिया। 25उस ने मेंढे की चर्बी, दुम, अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, जोड़कलेजी, दोनों गुर्दे उन की चर्बी समेत और दहनी रान अलग की। 26फिर वह रब के सामने पड़ी बेख़मीरी रोटियों की टोकरी में से एक सादा रोटी, एक रोटी जिस में तेल डाला गया था और एक रोटी जिस पर तेल लगाया गया था ले कर चर्बी और रान पर रख दी। 27उस ने यह सब कुछ हारून और उस के बेटों के हाथों पर रख कर उसे हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब को पेश किया। 28फिर उस ने यह चीज़ें उन से वापस ले कर क़ुर्बानगाह पर जला दीं जिस पर पहले भस्म होने वाली क़ुर्बानी रखी गई थी। रब के लिए जलने वाली यह क़ुर्बानी इमामों को मख़्सूस करने के लिए चढ़ाई गई, और उस की ख़ुश्बू रब को पसन्द थी।

29मूसा ने सीना भी लिया और उसे हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाया। यह मख़्सूसियत के मेंढे में से मूसा का हिस्सा था। मूसा ने इस में भी सब कुछ रब के हुक्म के ऐन मुताबिक़ किया।

30फिर उस ने मसह के तेल और क़ुर्बानगाह पर के ख़ून में से कुछ ले कर हारून, उस के बेटों और उन के कपड़ों पर छिड़क दिया। यूँ उस ने उन्हें और उन के कपड़ों को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया।

31मूसा ने उन से कहा, “गोश्त को मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर उबाल कर उसे उन रोटियों के साथ खाना जो मख़्सूसियत की क़ुर्बानियों की टोकरी में पड़ी हैं। क्यूँकि रब ने मुझे यही हुक्म दिया है। 32गोश्त और रोटियों का बक़ाया जला देना। 33सात दिन तक मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े में से न निकलना, क्यूँकि मक़्दिस में ख़िदमत के लिए तुम्हारी मख़्सूसियत के इतने ही दिन हैं। 34जो कुछ आज हुआ है वह रब के हुक्म के मुताबिक़ हुआ ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाए। 35तुम्हें सात रात और दिन तक ख़ैमे के दरवाज़े के अन्दर रहना है। रब की इस हिदायत को मानो वर्ना तुम मर जाओगे, क्यूँकि यह हुक्म मुझे रब की तरफ़ से दिया गया है।”

36हारून और उस के बेटों ने उन तमाम हिदायात पर अमल किया जो रब ने मूसा की मारिफ़त उन्हें दी थीं।

हारून क़ुर्बानियाँ चढ़ाता है

9 मख़्सूसियत के सात दिन के बाद मूसा ने आठवें दिन हारून, उस के बेटों और इस्राईल के बुज़ुर्गों को बुलाया। 2उस ने हारून से कहा, “एक बेऐब बछड़ा और एक बेऐब मेंढा चुन कर रब को पेश कर। बछड़ा गुनाह की क़ुर्बानी के लिए और मेंढा भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए हो। 3फिर इस्राईलियों को कह देना कि गुनाह की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा जबकि भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए एक बेऐब यकसाला बछड़ा और एक बेऐब यकसाला भेड़ का बच्चा पेश करो। 4साथ ही सलामती की क़ुर्बानी के लिए एक बैल और एक मेंढा चुनो। तेल के साथ मिलाई हुई ग़ल्ला की नज़र भी ले कर सब कुछ रब को पेश करो। क्यूँकि आज ही रब तुम पर ज़ाहिर होगा।”

5इस्राईली मूसा की मतलूबा तमाम चीज़ें मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने ले आए। पूरी जमाअत क़रीब आ कर रब के सामने खड़ी हो गई। 6मूसा ने उन से कहा, “तुम्हें वही करना है जिस का हुक्म रब ने तुम्हें दिया है। क्यूँकि आज ही रब का जलाल तुम पर ज़ाहिर होगा।”

7फिर उस ने हारून से कहा, “क़ुर्बानगाह के पास जा कर गुनाह की क़ुर्बानी और भस्म होने वाली क़ुर्बानी चढ़ा कर अपना और अपनी क़ौम का कफ़्फ़ारा देना। रब के हुक्म के मुताबिक़ क़ौम के लिए भी क़ुर्बानी पेश करना ताकि उस का कफ़्फ़ारा दिया जाए।”

8हारून क़ुर्बानगाह के पास आया। उस ने
बछड़े को ज़बह किया। यह उस के लिए गुनाह
की क़ुर्बानी था। 9उस के बेटे बछड़े का ख़ून
उस के पास ले आए। उस ने अपनी उंगली
ख़ून में डुबो कर उसे क़ुर्बानगाह के सींगों पर
लगाया। बाक़ी ख़ून को उस ने क़ुर्बानगाह के
पाए पर उंडेल दिया। 10फिर उस ने उस की
चर्बी, गुर्दों और जोड़कलेजी को क़ुर्बानगाह
पर जला दिया। जैसे रब ने मूसा को हुक्म दिया
था वैसे ही हारून ने किया। 11बछड़े का गोश्त
और खाल उस ने ख़ैमागाह के बाहर ले जा
कर जला दी।

12इस के बाद हारून ने भस्म होने वाली
क़ुर्बानी को ज़बह किया। उस के बेटों ने उसे
उस का ख़ून दिया, और उस ने उसे क़ुर्बानगाह
के चार पहलूओं पर छिड़क दिया। 13उन्हों ने
उसे क़ुर्बानी के मुख़्तलिफ़ टुकड़े सर समेत
दिए, और उस ने उन्हें क़ुर्बानगाह पर जला
दिया। 14फिर उस ने उस की अंतड़ियाँ और
पिंडलियाँ धो कर भस्म होने वाली क़ुर्बानी की
बाक़ी चीज़ों पर रख कर जला दीं।

15अब हारून ने क़ौम के लिए क़ुर्बानी
चढ़ाई। उस ने गुनाह की क़ुर्बानी के लिए
बकरा ज़बह करके उसे पहली क़ुर्बानी की
तरह चढ़ाया। 16उस ने भस्म होने वाली
क़ुर्बानी भी क़वाइद के मुताबिक़ चढ़ाई। 17उस
ने ग़ल्ला की नज़र पेश की और उस में से मुट्ठी
भर क़ुर्बानगाह पर जला दिया। यह ग़ल्ला की
उस नज़र के इलावा थी जो सुब्ह को भस्म
होने वाली क़ुर्बानी के साथ चढ़ाई गई थी।
18फिर उस ने सलामती की क़ुर्बानी के लिए
बैल और मेंढे को ज़बह किया। यह भी क़ौम
के लिए थी। उस के बेटों ने उसे जानवरों का
ख़ून दिया, और उस ने उसे क़ुर्बानगाह के चार
पहलूओं पर छिड़क दिया। 19लेकिन उन्हों ने
बैल और मेंढे को चर्बी, दुम, अंतड़ियों पर की
चर्बी और जोड़कलेजी निकाल कर 20सीने के
टुकड़ों पर रख दिया। हारून ने चर्बी का हिस्सा
क़ुर्बानगाह पर जला दिया। 21सीने के टुकड़े
और दहनी रानें उस ने हिलाने वाली क़ुर्बानी
के तौर पर रब के सामने हिलाईं। उस ने सब
कुछ मूसा के हुक्म के मुताबिक़ ही किया।

22तमाम क़ुर्बानियाँ पेश करने के बाद
हारून ने अपने हाथ उठा कर क़ौम को बरकत
दी। फिर वह क़ुर्बानगाह से उतर कर 23मूसा
के साथ मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल हुआ।
जब दोनों बाहर आए तो उन्हों ने क़ौम को
बरकत दी। तब रब का जलाल पूरी क़ौम पर
ज़ाहिर हुआ। 24रब के हुज़ूर से आग निकल
कर क़ुर्बानगाह पर उतरी और भस्म होने वाली
क़ुर्बानी और चर्बी के टुकड़े भस्म कर दिए। यह
देख कर लोग ख़ुशी के नारे मारने लगे और मुँह
के बल गिर गए।

नदब और अबीहू का गुनाह

10 हारून के बेटे नदब और अबीहू ने
अपने अपने बख़ूरदान ले कर उन
में जलते हुए कोएले डाले। उन पर बख़ूर डाल
कर वह रब के सामने आए ताकि उसे पेश
करें। लेकिन यह आग नाजाइज़ थी। रब ने यह
पेश करने का हुक्म नहीं दिया था। 2अचानक
रब के हुज़ूर से आग निकली जिस ने उन्हें भस्म
कर दिया। वहीं रब के सामने वह मर गए।

3मूसा ने हारून से कहा, "अब वही हुआ
है जो रब ने फ़रमाया था कि जो मेरे क़रीब
हैं उन से मैं अपनी क़ुद्दूसियत ज़ाहिर करूँगा,
मैं तमाम क़ौम के सामने ही अपने जलाल का
इज़हार करूँगा।"

हारून ख़ामोश रहा। 4मूसा ने हारून
के चचा उज़्ज़ीएल के बेटों मीसाएल और
इल्सफ़न को बुला कर कहा, "इधर आओ
और अपने रिश्तेदारों को मक़्दिस के सामने से
उठा कर ख़ैमागाह के बाहर ले जाओ।" 5वह
आए और मूसा के हुक्म के ऐन मुताबिक़ उन्हें
उन के ज़ेरजामों समेत उठा कर ख़ैमागाह के
बाहर ले गए।

6मूसा ने हारून और उस के दीगर बेटों
इलीअज़र और इतमर से कहा, "मातम का

इज़हार न करो। न अपने बाल बिखरने दो, न अपने कपड़े फाड़ो। वर्ना तुम मर जाओगे और रब पूरी जमाअत से नाराज़ हो जाएगा। लेकिन तुम्हारे रिश्तेदार और बाक़ी तमाम इस्राईली ज़रूर इन का मातम करें जिन को रब ने आग से हलाक कर दिया है। 7मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े के बाहर न निकलो वर्ना तुम मर जाओगे, क्यूँकि तुम्हें रब के तेल से मसह किया गया है।" चुनाँचे उन्हों ने ऐसा ही किया।

इमामों के लिए हिदायात

8रब ने हारून से कहा, 9"जब भी तुझे या तेरे बेटों को मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल होना है तो मै या कोई और नशाआवर चीज़ पीना मना है, वर्ना तुम मर जाओगे। यह उसूल आने वाली नस्लों के लिए भी अबद तक अनमिट है। 10यह भी लाज़िम है कि तुम मुक़द्दस और ग़ैरमुक़द्दस चीज़ों में, पाक और नापाक चीज़ों में इम्तियाज़ करो। 11तुम्हें इस्राईलियों को तमाम पाबन्दियाँ सिखानी हैं जो मैं ने तुम्हें मूसा की मारिफ़त बताई हैं।"

12मूसा ने हारून और उस के बचे हुए बेटों इलीअज़र और इतमर से कहा, "ग़ल्ला की नज़र का जो हिस्सा रब के सामने जलाया नहीं जाता उसे अपने लिए ले कर बेख़मीरी रोटी पकाना और क़ुर्बानगाह के पास ही खाना। क्यूँकि वह निहायत मुक़द्दस है। 13उसे मुक़द्दस जगह पर खाना, क्यूँकि वह रब की जलने वाली क़ुर्बानियों में से तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हिस्सा है। क्यूँकि मुझे इस का हुक्म दिया गया है। 14जो सीना हिलाने वाली क़ुर्बानी और दहनी रान उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश की गई है, वह तुम और तुम्हारे बेटे-बेटियाँ खा सकते हैं। उन्हें मुक़द्दस जगह पर खाना है। इस्राईलियों की सलामती की क़ुर्बानियों में से यह टुकड़े तुम्हारा हिस्सा हैं। 15लेकिन पहले इमाम रान और सीने को जलने वाली क़ुर्बानियों की चर्बी के साथ पेश करें। वह उन्हें हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाएँ। रब फ़रमाता है कि यह टुकड़े अबद तक तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हिस्सा हैं।"

16मूसा ने दरयाफ़्त किया कि उस बकरे के गोश्त का क्या हुआ जो गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाया गया था। उसे पता चला कि वह भी जल गया था। यह सुन कर उसे हारून के बेटों इलीअज़र और इतमर पर ग़ुस्सा आया। उस ने पूछा, 17"तुम ने गुनाह की क़ुर्बानी का गोश्त क्यूँ नहीं खाया? तुम्हें उसे मुक़द्दस जगह पर खाना था। यह एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा है जो रब ने तुम्हें दिया ताकि तुम जमाअत का क़ुसूर दूर करके रब के सामने लोगों का कफ़्फ़ारा दो। 18चूँकि इस बकरे का ख़ून मक़्दिस में न लाया गया इस लिए तुम्हें उस का गोश्त मक़्दिस में खाना था जिस तरह मैं ने तुम्हें हुक्म दिया था।"

19हारून ने मूसा को जवाब दे कर कहा, "देखें, आज लोगों ने अपने लिए गुनाह की क़ुर्बानी और भस्म होने वाली क़ुर्बानी रब को पेश की है जबकि मुझ पर यह आफ़त गुज़री है। अगर मैं आज गुनाह की क़ुर्बानी से खाता तो क्या यह रब को अच्छा लगता?" 20यह बात मूसा को अच्छी लगी।

पाक और नापाक जानवर

11 रब ने मूसा और हारून से कहा, 2"इस्राईलियों को बताना कि तुम्हें ज़मीन पर रहने वाले जानवरों में से ज़ैल के जानवरों को खाने की इजाज़त है : 3जिन के खुर या पाँओ बिलकुल चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं उन्हें खाने की इजाज़त है। 4-6ऊँट, बिज्जू या ख़रगोश खाना मना है। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं, क्यूँकि वह जुगाली तो करते हैं लेकिन उन के खुर या पाँओ चिरे हुए नहीं हैं। 7सूअर न खाना। वह तुम्हारे लिए नापाक है, क्यूँकि उस के खुर तो चिरे हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता। 8न उन का

गोश्त खाना, न उन की लाशों को छूना। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।

9समुन्दरी और दरयाई जानवर खाने के लिए जाइज़ हैं अगर उन के पर और छिलके हों। 10लेकिन जिन के पर या छिलके नहीं हैं वह सब तुम्हारे लिए मकरूह हैं, ख़्वाह वह बड़ी तादाद में मिल कर रहते हैं या नहीं। 11इस लिए उन का गोश्त खाना मना है, और उन की लाशों से भी घिन खाना है। 12पानी में रहने वाले तमाम जानवर जिन के पर या छिलके न हों तुम्हारे लिए मकरूह हैं।

13ज़ैल के परिन्दे तुम्हारे लिए क़ाबिल-ए-घिन हों। इन्हें खाना मना है, क्यूँकि वह मकरूह हैं : उक़ाब, दढ़ियल गिद्ध, काला गिद्ध, 14लाल चील, हर क़िस्म की काली चील, 15हर क़िस्म का कव्वा, 16उक़ाबी उल्लू, छोटे कान वाला उल्लू, बड़े कान वाला उल्लू, हर क़िस्म का बाज़, 17छोटा उल्लू, क़ूक़, चिंघाड़ने वाला उल्लू, 18सफ़ेद उल्लू, दश्ती उल्लू, मिस्री गिद्ध, 19लक़्लक़, हर क़िस्म का बूतीमार, हुदहुद और चमगादड़।[a]

20तमाम पर रखने वाले कीड़े जो चार पाँओ पर चलते हैं तुम्हारे लिए मकरूह हैं, 21सिवाए उन के जिन की टाँगों के दो हिस्से हैं और जो फुदकते हैं। उन को तुम खा सकते हो। 22इस नाते से तुम मुख़्तलिफ़ क़िस्म के टिड्डे खा सकते हो। 23बाक़ी सब पर रखने वाले कीड़े जो चार पाँओ पर चलते हैं तुम्हारे लिए मकरूह हैं।

24-28जो भी ज़ैल के जानवरों की लाशें छुए वह शाम तक नापाक रहेगा : (अलिफ़) खुर रखने वाले तमाम जानवर सिवाए उन के जिन के खुर या पाँओ पूरे तौर पर चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं, (बे) तमाम जानवर जो अपने चार पंजों पर चलते हैं। यह जानवर तुम्हारे लिए नापाक हैं, और जो भी उन की लाशें उठाए या छुए लाज़िम है कि वह अपने कपड़े धो ले। इस के बावुजूद भी वह शाम तक नापाक रहेगा।

29-30ज़मीन पर रेंगने वाले जानवरों में से छछूँदर, मुख़्तलिफ़ क़िस्म के चूहे और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की छिपकलियाँ तुम्हारे लिए नापाक हैं। 31जो भी उन्हें और उन की लाशें छू लेता है वह शाम तक नापाक रहेगा। 32अगर उन में से किसी की लाश किसी चीज़ पर गिर पड़े तो वह भी नापाक हो जाएगी। इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि वह लकड़ी, कपड़े, चमड़े या टाट की बनी हो, न इस से कोई फ़र्क़ पड़ता है कि वह किस काम के लिए इस्तेमाल की जाती है। उसे हर सूरत में पानी में डुबोना है। तो भी वह शाम तक नापाक रहेगी। 33अगर ऐसी लाश मिट्टी के बर्तन में गिर जाए तो जो कुछ भी उस में है नापाक हो जाएगा और तुम्हें उस बर्तन को तोड़ना है। 34हर खाने वाली चीज़ जिस पर ऐसे बर्तन का पानी डाला गया है नापाक है। इसी तरह उस बर्तन से निकली हुई हर पीने वाली चीज़ नापाक है। 35जिस पर भी ऐसी लाश गिर पड़े वह नापाक हो जाता है। अगर वह तनूर या चूल्हे पर गिर पड़े तो उन को तोड़ देना है। वह नापाक हैं और तुम्हारे लिए नापाक रहेंगे। 36लेकिन जिस चश्मे या हौज़ में ऐसी लाश गिरे वह पाक रहता है। सिर्फ़ वह जो लाश को छू लेता है नापाक हो जाता है। 37अगर ऐसी लाश बीजों पर गिर पड़े जिन को अभी बोना है तो वह पाक रहते हैं। 38लेकिन अगर बीजों पर पानी डाला गया हो और फिर लाश उन पर गिर पड़े तो वह नापाक हैं।

39अगर ऐसा जानवर जिसे खाने की इजाज़त है मर जाए तो जो भी उस की लाश छुए शाम तक नापाक रहेगा। 40जो उस में से कुछ खाए या उसे उठा कर ले जाए उसे

[a]याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन परिन्दों के अक्सर नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख़्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

अपने कपड़ों को धोना है। तो भी वह शाम तक नापाक रहेगा।

41हर जानवर जो ज़मीन पर रेंगता है क़ाबिल-ए-घिन है। उसे खाना मना है, 42चाहे वह अपने पेट पर चाहे चार या इस से ज़ाइद पाँओ पर चलता हो। 43इन तमाम रेंगने वालों से अपने आप को घिन का बाइस और नापाक न बनाना, 44क्यूँकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। लाज़िम है कि तुम अपने आप को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रखो, क्यूँकि मैं क़ुद्दूस हूँ। अपने आप को ज़मीन पर रेंगने वाले तमाम जानवरों से नापाक न बनाना। 45मैं रब हूँ। मैं तुम्हें मिस्र से निकाल लाया हूँ ताकि तुम्हारा ख़ुदा बनूँ। लिहाज़ा मुक़द्दस रहो, क्यूँकि मैं क़ुद्दूस हूँ।

46ज़मीन पर चलने वाले जानवरों, परिन्दों, आबी जानवरों और ज़मीन पर रेंगने वाले जानवरों के बारे में शरअ यही है। 47लाज़िम है कि तुम नापाक और पाक में इम्तियाज़ करो, ऐसे जानवरों में जो खाने के लिए जाइज़ हैं और ऐसों में जो नाजाइज़ हैं।"

बच्चे की पैदाइश के बाद माँ पर पाबन्दियाँ

12 रब ने मूसा से कहा, 2"इस्राईलियों को बता कि जब किसी औरत के लड़का पैदा हो तो वह माहवारी के अय्याम की तरह सात दिन तक नापाक रहेगी। 3आठवें दिन लड़के का ख़तना करवाना है। 4फिर माँ मज़ीद 33 दिन इन्तिज़ार करे। इस के बाद उस की वह नापाकी दूर हो जाएगी जो ख़ून बहने से पैदा हुई है। इस दौरान वह कोई मख़्सूस और मुक़द्दस चीज़ न छुए, न मक़्दिस के पास जाए।

5अगर उस के लड़की पैदा हो जाए तो वह माहवारी के अय्याम की तरह नापाक है। यह नापाकी 14 दिन तक रहेगी। फिर वह मज़ीद 66 दिन इन्तिज़ार करे। इस के बाद उस की वह नापाकी दूर हो जाएगी जो ख़ून बहने से पैदा हुई है।

6जब लड़के या लड़की के सिलसिले में यह दिन गुज़र जाएँ तो वह मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम को ज़ैल की चीज़ें दे : भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए एक यकसाला भेड़ का बच्चा और गुनाह की क़ुर्बानी के लिए एक जवान कबूतर या क़ुम्री। 7इमाम यह जानवर रब को पेश करके उस का कफ़्फ़ारा दे। फिर ख़ून बहने के बाइस पैदा होने वाली नापाकी दूर हो जाएगी। उसूल एक ही है, चाहे लड़का हो या लड़की।

8अगर वह ग़ुर्बत के बाइस भेड़ का बच्चा न दे सके तो फिर वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर ले आए, एक भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए और दूसरा गुनाह की क़ुर्बानी के लिए। यूँ इमाम उस का कफ़्फ़ारा दे और वह पाक हो जाएगी।"

जिल्दी बीमारियाँ

13 रब ने मूसा और हारून से कहा, 2"अगर किसी की जिल्द में सूजन या पपड़ी या सफ़ेद दाग़ हो और ख़तरा है कि वबाई जिल्दी बीमारी हो तो उसे इमामों यानी हारून या उस के बेटों के पास ले आना है। 3इमाम उस जगह का मुआइना करे। अगर उस के बाल सफ़ेद हो गए हों और वह जिल्द में धंसी हुई हो तो वबाई बीमारी है। जब इमाम को यह मालूम हो तो वह उसे नापाक क़रार दे। 4लेकिन हो सकता है कि जिल्द की जगह सफ़ेद तो है लेकिन जिल्द में धंसी हुई नहीं है, न उस के बाल सफ़ेद हुए हैं। इस सूरत में इमाम उस शख़्स को सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे। 5सातवें दिन इमाम दुबारा उस का मुआइना करे। अगर वह देखे कि मुतअस्सिरा जगह वैसी ही है और फैली नहीं तो वह उसे मज़ीद सात दिन अलाहिदगी में रखे। 6सातवें दिन वह एक और मर्तबा उस का मुआइना करे। अगर उस जगह का रंग दुबारा सेहतमन्द जिल्द के रंग की मानिन्द हो रहा हो और फैली न हो तो वह उसे पाक

क़रार दे। इस का मतलब है कि यह मर्ज़ आम पपड़ी से ज़्यादा नहीं है। मरीज़ अपने कपड़े धो ले तो वह पाक हो जाएगा। 7लेकिन अगर इस के बाद मुतअस्सिरा जगह फैलने लगे तो वह दुबारा अपने आप को इमाम को दिखाए। 8इमाम उस का मुआइना करे। अगर जगह वाक़ई फैल गई हो तो इमाम उसे नापाक क़रार दे, क्यूँकि यह वबाई जिल्दी मर्ज़ है।

9अगर किसी के जिस्म पर वबाई जिल्दी मर्ज़ नज़र आए तो उसे इमाम के पास लाया जाए। 10इमाम उस का मुआइना करे। अगर मुतअस्सिरा जिल्द में सफ़ेद सूजन हो, उस के बाल भी सफ़ेद हो गए हों, और उस में कच्चा गोश्त मौजूद हो 11तो इस का मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी पुरानी है। इमाम उस शख़्स को सात दिन के लिए अलाहिदगी में रख कर इन्तिज़ार न करे बल्कि उसे फ़ौरन नापाक क़रार दे, क्यूँकि यह उस की नापाकी का सबूत है। 12लेकिन अगर बीमारी जल्दी से फैल गई हो, यहाँ तक कि सर से ले कर पाँओ तक पूरी जिल्द मुतअस्सिर हुई हो 13तो इमाम यह देख कर मरीज़ को पाक क़रार दे। चूँकि पूरी जिल्द सफ़ेद हो गई है इस लिए वह पाक है। 14लेकिन जब भी कहीं कच्चा गोश्त नज़र आए उस वक़्त वह नापाक हो जाता है। 15इमाम यह देख कर मरीज़ को नापाक क़रार दे। कच्चा गोश्त हर सूरत में नापाक है, क्यूँकि इस का मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 16अगर कच्चे गोश्त का यह ज़ख़्म भर जाए और मुतअस्सिरा जगह की जिल्द सफ़ेद हो जाए तो मरीज़ इमाम के पास जाए। 17अगर इमाम देखे कि वाक़ई ऐसा ही हुआ है और मुतअस्सिरा जिल्द सफ़ेद हो गई है तो वह उसे पाक क़रार दे।

18अगर किसी की जिल्द पर फोड़ा हो लेकिन वह ठीक हो जाए 19और उस की जगह सफ़ेद सूजन या सुर्ख़ी-माइल सफ़ेद दाग़ नज़र आए तो मरीज़ अपने आप को इमाम को दिखाए। 20अगर वह उस का मुआइना करके देखे कि मुतअस्सिरा जगह जिल्द के अन्दर धंसी हुई है और उस के बाल सफ़ेद हो गए हैं तो वह मरीज़ को नापाक क़रार दे। क्यूँकि इस का मतलब है कि जहाँ पहले फोड़ा था वहाँ वबाई जिल्दी बीमारी पैदा हो गई है। 21लेकिन अगर इमाम देखे कि मुतअस्सिरा जगह के बाल सफ़ेद नहीं हैं, वह जिल्द में धंसी हुई नज़र नहीं आती और उस का रंग दुबारा सेहतमन्द जिल्द की मानिन्द हो रहा है तो वह उसे सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे। 22अगर इस दौरान बीमारी मज़ीद फैल जाए तो इमाम मरीज़ को नापाक क़रार दे, क्यूँकि इस का मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 23लेकिन अगर दाग़ न फैले तो इस का मतलब है कि यह सिर्फ़ उस भरे हुए ज़ख़्म का निशान है जो फोड़े से पैदा हुआ था। इमाम मरीज़ को पाक क़रार दे।

24अगर किसी की जिल्द पर जलने का ज़ख़्म लग जाए और मुतअस्सिरा जगह पर सुर्ख़ी-माइल सफ़ेद दाग़ या सफ़ेद दाग़ पैदा हो जाए 25तो इमाम मुतअस्सिरा जगह का मुआइना करे। अगर मालूम हो जाए कि मुतअस्सिरा जगह के बाल सफ़ेद हो गए हैं और वह जिल्द में धंसी हुई है तो इस का मतलब है कि चोट की जगह पर वबाई जिल्दी मर्ज़ लग गया है। इमाम उसे नापाक क़रार दे, क्यूँकि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 26लेकिन अगर इमाम ने मालूम किया है कि दाग़ में बाल सफ़ेद नहीं हैं, वह जिल्द में धंसा हुआ नज़र नहीं आता और उस का रंग सेहतमन्द जिल्द की मानिन्द हो रहा है तो वह मरीज़ को सात दिन तक अलाहिदगी में रखे। 27अगर वह सातवें दिन मालूम करे कि मुतअस्सिरा जगह फैल गई है तो वह उसे नापाक क़रार दे। क्यूँकि इस का मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 28लेकिन अगर दाग़ फैला हुआ नज़र नहीं आता और मुतअस्सिरा जिल्द का रंग सेहतमन्द जिल्द के रंग की मानिन्द हो गया है तो इस का मतलब

है कि यह सिर्फ़ उस भरे हुए ज़ख़्म का निशान है जो जलने से पैदा हुआ था। इमाम मरीज़ को पाक क़रार दे।

29अगर किसी के सर या दाढ़ी की जिल्द में निशान नज़र आए 30तो इमाम मुतअस्सिरा जगह का मुआइना करे। अगर वह धंसी हुई नज़र आए और उस के बाल रंग के लिहाज़ से चमकते हुए सोने की मानिन्द और बारीक हों तो इमाम मरीज़ को नापाक क़रार दे। इस का मतलब है कि ऐसी वबाई जिल्दी बीमारी सर या दाढ़ी की जिल्द पर लग गई है जो ख़ारिश पैदा करती है। 31लेकिन अगर इमाम ने मालूम किया कि मुतअस्सिरा जगह जिल्द में धंसी हुई नज़र नहीं आती अगरचे उस के बालों का रंग बदल गया है तो वह उसे सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे। 32सातवें दिन इमाम जिल्द की मुतअस्सिरा जगह का मुआइना करे। अगर वह फैली हुई नज़र नहीं आती और उस के बालों का रंग चमकदार सोने की मानिन्द नहीं है, साथ ही वह जगह जिल्द में धंसी हुई भी दिखाई नहीं देती, 33तो मरीज़ अपने बाल मुंडवाए। सिर्फ़ वह बाल रह जाएँ जो मुतअस्सिरा जगह से निकलते हैं। इमाम मरीज़ को मज़ीद सात दिन अलाहिदगी में रखे। 34सातवें दिन वह उस का मुआइना करे। अगर मुतअस्सिरा जगह नहीं फैली और वह जिल्द में धंसी हुई नज़र नहीं आती तो इमाम उसे पाक क़रार दे। वह अपने कपड़े धो ले तो वह पाक हो जाएगा। 35लेकिन अगर इस के बाद जिल्द की मुतअस्सिरा जगह फैलना शुरू हो जाए 36तो इमाम दुबारा उस का मुआइना करे। अगर वह जगह वाक़ई फैली हुई नज़र आए तो मरीज़ नापाक है, चाहे मुतअस्सिरा जगह के बालों का रंग चमकते सोने की मानिन्द हो या न हो। 37लेकिन अगर उस के ख़याल में मुतअस्सिरा जगह फैली हुई नज़र नहीं आती बल्कि उस में से काले रंग के बाल निकल रहे हैं तो इस का मतलब है कि मरीज़ की सेहत बहाल हो गई है। इमाम उसे पाक क़रार दे।

38अगर किसी मर्द या औरत की जिल्द पर सफ़ेद दाग़ पैदा हो जाएँ 39तो इमाम उन का मुआइना करे। अगर उन का सफ़ेद रंग हल्का सा हो तो यह सिर्फ़ बेज़रर पपड़ी है। मरीज़ पाक है।

40-41अगर किसी मर्द का सर माथे की तरफ़ या पीछे की तरफ़ गंजा है तो वह पाक है। 42लेकिन अगर उस जगह जहाँ वह गंजा है सुर्ख़ी-माइल सफ़ेद दाग़ हो तो इस का मतलब है कि वहाँ वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 43इमाम उस का मुआइना करे। अगर गंजी जगह पर सुर्ख़ी-माइल सफ़ेद सूजन हो जो वबाई जिल्दी बीमारी की मानिन्द नज़र आए 44तो मरीज़ को वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। इमाम उसे नापाक क़रार दे।

नापाक मरीज़ का सुलूक

45वबाई जिल्दी बीमारी का मरीज़ फटे कपड़े पहने। उस के बाल बिखरे रहें। वह अपनी मूँछों को किसी कपड़े से छुपाए और पुकारता रहे, 'नापाक, नापाक।' 46जिस वक़्त तक वबाई जिल्दी बीमारी लगी रहे वह नापाक है। वह इस दौरान ख़ैमागाह के बाहर जा कर तन्हाई में रहे।

फफूँदी से निपटने का तरीक़ा

47हो सकता है कि ऊन या कतान के किसी लिबास पर फफूँदी लग गई है, 48या कि फफूँदी ऊन या कतान के किसी कपड़े के टुकड़े या किसी चमड़े या चमड़े की किसी चीज़ पर लग गई है। 49अगर फफूँदी का रंग हरा या लाल सा हो तो वह फैलने वाली फफूँदी है, और लाज़िम है कि उसे इमाम को दिखाया जाए। 50इमाम उस का मुआइना करके उसे सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे। 51सातवें दिन वह दुबारा उस का मुआइना करे। अगर फफूँदी फैल गई हो तो

इस का मतलब है कि वह नुक़्सानदेह है। मुतअस्सिरा चीज़ नापाक है। 52इमाम उसे जला दे, क्यूँकि यह फफूँदी नुक़्सानदेह है। लाज़िम है कि उसे जला दिया जाए। 53लेकिन अगर इन सात दिनों के बाद फफूँदी फैली हुई नज़र नहीं आती 54तो इमाम हुक्म दे कि मुतअस्सिरा चीज़ को धुलवाया जाए। फिर वह उसे मज़ीद सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे। 55इस के बाद वह दुबारा उस का मुआइना करे। अगर वह मालूम करे कि फफूँदी तो फैली हुई नज़र नहीं आती लेकिन उस का रंग वैसे का वैसा है तो वह नापाक है। उसे जला देना, चाहे फफूँदी मुतअस्सिरा चीज़ के सामने वाले हिस्से या पिछले हिस्से में लगी हो। 56लेकिन अगर मालूम हो जाए कि फफूँदी का रंग माँद पड़ गया है तो इमाम कपड़े या चमड़े में से मुतअस्सिरा जगह फाड़ कर निकाल दे। 57तो भी हो सकता है कि फफूँदी दुबारा उसी कपड़े या चमड़े पर नज़र आए। इस का मतलब है कि वह फैल रही है और उसे जला देना लाज़िम है। 58लेकिन अगर फफूँदी धोने के बाद ग़ाइब हो जाए तो उसे एक और दफ़ा धोना है। फिर मुतअस्सिरा चीज़ पाक होगी।

59इसी तरह फफूँदी से निपटना है, चाहे वह ऊन या कतान के किसी लिबास को लग गई हो, चाहे ऊन या कतान के किसी टुकड़े या चमड़े की किसी चीज़ को लग गई हो। इन ही उसूलों के तहत फ़ैसला करना है कि मुतअस्सिरा चीज़ पाक है या नापाक।”

वबाई जिल्दी बीमारी के मरीज़ की शिफ़ा पर क़ुर्बानी

14 रब ने मूसा से कहा, 2“अगर कोई शख़्स जिल्दी बीमारी से शिफ़ा पाए और उसे पाक-साफ़ कराना है तो उसे इमाम के पास लाया जाए 3जो ख़ैमागाह के बाहर जा कर उस का मुआइना करे। अगर वह देखे कि मरीज़ की सेहत वाक़ई बहाल हो गई है 4तो इमाम उस के लिए दो ज़िन्दा और पाक परिन्दे, देवदार की लकड़ी, क़िर्मिज़ी रंग का धागा और ज़ूफ़ा मंगवाए। 5इमाम के हुक्म पर परिन्दों में से एक को ताज़ा पानी से भरे हुए मिट्टी के बर्तन के ऊपर ज़बह किया जाए। 6इमाम ज़िन्दा परिन्दे को देवदार की लकड़ी, क़िर्मिज़ी रंग के धागे और ज़ूफ़ा के साथ ज़बह किए गए परिन्दे के उस ख़ून में डुबो दे जो मिट्टी के बर्तन के पानी में आ गया है। 7वह पानी से मिलाया हुआ ख़ून सात बार पाक होने वाले शख़्स पर छिड़क कर उसे पाक क़रार दे, फिर ज़िन्दा परिन्दे को खुले मैदान में छोड़ दे। 8जो अपने आप को पाक-साफ़ करा रहा है वह अपने कपड़े धोए, अपने तमाम बाल मुंडवाए और नहा ले। इस के बाद वह पाक है। अब वह ख़ैमागाह में दाख़िल हो सकता है अगरचे वह मज़ीद सात दिन अपने डेरे में नहीं जा सकता। 9सातवें दिन वह दुबारा अपने सर के बाल, अपनी दाढ़ी, अपने अब्रू और बाक़ी तमाम बाल मुंडवाए। वह अपने कपड़े धोए और नहा ले। तब वह पाक है।

10आठवें दिन वह दो भेड़ के नर बच्चे और एक यकसाला भेड़ चुन ले जो बेऐब हों। साथ ही वह ग़ल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाया गया साढ़े 4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 300 मिलीलिटर तेल ले। 11फिर जिस इमाम ने उसे पाक क़रार दिया वह उसे इन क़ुर्बानियों समेत मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब को पेश करे। 12भेड़ का एक नर बच्चा और 300 मिलीलिटर तेल क़ुसूर की क़ुर्बानी के लिए है। इमाम उन्हें हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। 13फिर वह भेड़ के इस बच्चे को ख़ैमे के दरवाज़े पर ज़बह करे जहाँ गुनाह की क़ुर्बानियाँ और भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ ज़बह की जाती हैं। गुनाह की क़ुर्बानियों की तरह क़ुसूर की यह क़ुर्बानी इमाम का हिस्सा है और निहायत मुक़द्दस है। 14इमाम ख़ून में से कुछ ले कर पाक होने वाले के दहने कान की लौ पर और उस के दहने

हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर लगाए।
15अब वह 300 मिलीलिटर तेल में से कुछ
ले कर अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डाले।
16अपने दहने हाथ के अंगूठे के साथ वाली
उंगली इस तेल में डुबो कर वह उसे सात बार
रब के सामने छिड़के। 17वह अपनी हथेली
पर के तेल में से कुछ और ले कर पाक होने
वाले के दहने कान की लौ पर और उस के
दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर लगा
दे यानी उन जगहों पर जहाँ वह क़ुसूर की
क़ुर्बानी का ख़ून लगा चुका है। 18इमाम अपनी
हथेली पर का बाक़ी तेल पाक होने वाले के सर
पर डाल कर रब के सामने उस का कफ़्फ़ारा
दे।

19इस के बाद इमाम गुनाह की क़ुर्बानी चढ़ा
कर पाक होने वाले का कफ़्फ़ारा दे। आख़िर
में वह भस्म होने वाली क़ुर्बानी का जानवर
ज़बह करे। 20वह उसे ग़ल्ला की नज़र के साथ
क़ुर्बानगाह पर चढ़ा कर उस का कफ़्फ़ारा दे।
तब वह पाक है।

21अगर शिफ़ायाब शख़्स ग़ुर्बत के बाइस
यह क़ुर्बानियाँ नहीं चढ़ा सकता तो फिर वह
क़ुसूर की क़ुर्बानी के लिए भेड़ का सिर्फ़ एक
नर बच्चा ले आए। काफ़ी है कि कफ़्फ़ारा देने
के लिए यही रब के सामने हिलाया जाए। साथ
साथ ग़ल्ला की नज़र के लिए डेढ़ किलोग्राम
बेहतरीन मैदा तेल के साथ मिला कर पेश
किया जाए और 300 मिलीलिटर तेल। 22इस
के इलावा वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर
पेश करे, एक को गुनाह की क़ुर्बानी के लिए
और दूसरे को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के
लिए। 23आठवें दिन वह उन्हें मुलाक़ात के
ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम के पास और रब के
सामने ले आए ताकि वह पाक-साफ़ हो जाए।
24इमाम भेड़ के बच्चे को 300 मिलीलिटर
तेल समेत ले कर हिलाने वाली क़ुर्बानी के
तौर पर रब के सामने हिलाए। 25वह क़ुसूर
की क़ुर्बानी के लिए भेड़ के बच्चे को ज़बह
करे और उस के ख़ून में से कुछ ले कर पाक
होने वाले के दहने कान की लौ पर और उस
के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर
लगाए। 26अब वह 300 मिलीलिटर तेल में
से कुछ अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डाले
27और अपने दहने हाथ के अंगूठे के साथ
वाली उंगली इस तेल में डुबो कर उसे सात
बार रब के सामने छिड़क दे। 28वह अपनी
हथेली पर के तेल में से कुछ और ले कर पाक
होने वाले के दहने कान की लौ पर और उस
के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर
लगा दे यानी उन जगहों पर जहाँ वह क़ुसूर
की क़ुर्बानी का ख़ून लगा चुका है। 29अपनी
हथेली पर का बाक़ी तेल वह पाक होने वाले
के सर पर डाल दे ताकि रब के सामने उस
का कफ़्फ़ारा दे। 30इस के बाद वह शिफ़ायाब
शख़्स की गुन्जाइश के मुताबिक़ दो क़ुम्रियाँ
या दो जवान कबूतर चढ़ाए, 31एक को गुनाह
की क़ुर्बानी के लिए और दूसरे को भस्म होने
वाली क़ुर्बानी के लिए। साथ ही वह ग़ल्ला की
नज़र पेश करे। यूँ इमाम रब के सामने उस
का कफ़्फ़ारा देता है। 32यह उसूल ऐसे शख़्स
के लिए है जो वबाई जिल्दी बीमारी से शिफ़ा
पा गया है लेकिन अपनी ग़ुर्बत के बाइस पाक
हो जाने के लिए पूरी क़ुर्बानी पेश नहीं कर
सकता।"

घरों में फफूँदी

33रब ने मूसा और हारून से कहा, 34"जब
तुम मुल्क-ए-कनआन में दाख़िल होगे जो मैं
तुम्हें दूँगा तो वहाँ ऐसे मकान होंगे जिन में मैं
ने फफूँदी फैलने दी है। 35ऐसे घर का मालिक
जा कर इमाम को बताए कि मैं ने अपने घर में
फफूँदी जैसी कोई चीज़ देखी है। 36तब इमाम
हुक्म दे कि घर का मुआइना करने से पहले घर
का पूरा सामान निकाला जाए। वर्ना अगर घर
को नापाक क़रार दिया जाए तो सामान को
भी नापाक क़रार दिया जाएगा। इस के बाद
इमाम अन्दर जा कर मकान का मुआइना करे।
37वह दीवारों के साथ लगी हुई फफूँदी का

मुआइना करे। अगर मुतअस्सिरा जगहें हरी
या लाल सी हों और दीवार के अन्दर धंसी हुई
नज़र आएँ 38तो फिर इमाम घर से निकल कर
सात दिन के लिए ताला लगाए। 39सातवें दिन
वह वापस आ कर मकान का मुआइना करे।
अगर फफूँदी फैली हुई नज़र आए 40तो वह
हुक्म दे कि मुतअस्सिरा पत्थरों को निकाल
कर आबादी के बाहर किसी नापाक जगह पर
फैंका जाए। 41नीज़ वह हुक्म दे कि अन्दर
की दीवारों को कुरेदा जाए और कुरेदी हुई
मिट्टी को आबादी के बाहर किसी नापाक
जगह पर फैंका जाए। 42फिर लोग नए पत्थर
लगा कर घर को नए गारे से पलस्तर करें।
43लेकिन अगर इस के बावुजूद फफूँदी दुबारा
पैदा हो जाए 44तो इमाम आ कर दुबारा उस
का मुआइना करे। अगर वह देखे कि फफूँदी
घर में फैल गई है तो इस का मतलब है कि
फफूँदी नुक़्सानदेह है, इस लिए घर नापाक है।
45लाज़िम है कि उसे पूरे तौर पर ढा दिया जाए
और सब कुछ यानी उस के पत्थर, लकड़ी
और पलस्तर को आबादी के बाहर किसी
नापाक जगह पर फैंका जाए।

46अगर इमाम ने किसी घर का मुआइना
करके ताला लगा दिया है और फिर भी कोई
उस घर में दाख़िल हो जाए तो वह शाम तक
नापाक रहेगा। 47जो ऐसे घर में सोए या खाना
खाए लाज़िम है कि वह अपने कपड़े धो ले।
48लेकिन अगर घर को नए सिरे से पलस्तर
करने के बाद इमाम आ कर उस का दुबारा
मुआइना करे और देखे कि फफूँदी दुबारा नहीं
निकली तो इस का मतलब है कि फफूँदी ख़त्म
हो गई है। वह उसे पाक क़रार दे। 49उसे गुनाह
से पाक-साफ़ कराने के लिए वह दो परिन्दे,
देवदार की लकड़ी, क़िर्मिज़ी रंग का धागा
और ज़ूफ़ा ले ले। 50वह परिन्दों में से एक
को ताज़ा पानी से भरे हुए मिट्टी के बर्तन के
ऊपर ज़बह करे। 51इस के बाद वह देवदार
की लकड़ी, ज़ूफ़ा, क़िर्मिज़ी रंग का धागा और
ज़िन्दा परिन्दा ले कर उस ताज़ा पानी में डुबो
दे जिस के साथ ज़बह किए हुए परिन्दे का
ख़ून मिलाया गया है और इस पानी को सात
बार घर पर छिड़क दे। 52इन चीज़ों से वह घर
को गुनाह से पाक-साफ़ करता है। 53आख़िर
में वह ज़िन्दा परिन्दे को आबादी के बाहर खुले
मैदान में छोड़ दे। यूँ वह घर का कफ़्फ़ारा देगा,
और वह पाक-साफ़ हो जाएगा।

54-56लाज़िम है कि हर क़िस्म की वबाई
बीमारी से ऐसे निपटो जैसे बयान किया
गया है, चाहे वह वबाई जिल्दी बीमारियाँ हों
(मसलन ख़ारिश, सूजन, पपड़ी या सफ़ेद
दाग़), चाहे कपड़ों या घरों में फफूँदी हो। 57इन
उसूलों के तहत फ़ैसला करना है कि कोई
शख़्स या चीज़ पाक है या नापाक।"

मर्दों की नापाकी

15 रब ने मूसा और हारून से
कहा, 2"इस्राईलियों को बताना
कि अगर किसी मर्द को जरयान का मर्ज़ हो तो
वह ख़ारिज होने वाले माए के सबब से नापाक
है, 3चाहे माए बहता रहता हो या रुक गया हो।
4जिस चीज़ पर भी मरीज़ लेटता या बैठता है
वह नापाक है। 5-6जो भी उस के लेटने की
जगह को छुए या उस के बैठने की जगह पर
बैठ जाए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह
शाम तक नापाक रहेगा। 7इसी तरह जो भी
ऐसे मरीज़ को छुए वह अपने कपड़े धो कर
नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 8अगर
मरीज़ किसी पाक शख़्स पर थूके तो यही कुछ
करना है और वह शख़्स शाम तक नापाक
रहेगा। 9जब ऐसा मरीज़ किसी जानवर पर
सवार होता है तो हर चीज़ जिस पर वह बैठ
जाता है नापाक है। 10जो भी ऐसी चीज़ छुए
या उसे उठा कर ले जाए वह अपने कपड़े
धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा।
11जिस किसी को भी मरीज़ अपने हाथ धोए
बग़ैर छुए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह
शाम तक नापाक रहेगा। 12मिट्टी का जो बर्तन

ऐसा मरीज़ छुए उसे तोड़ दिया जाए। लकड़ी का जो बर्तन वह छुए उसे ख़ूब धोया जाए।

13जिसे इस मर्ज़ से शिफ़ा मिली है वह सात दिन इन्तिज़ार करे। इस के बाद वह ताज़ा पानी से अपने कपड़े धो कर नहा ले। फिर वह पाक हो जाएगा। 14आठवें दिन वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के सामने इमाम को दे। 15इमाम उन में से एक को गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर और दूसरे को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाए। यूँ वह रब के सामने उस का कफ़्फ़ारा देगा।

16अगर किसी मर्द का नुत्फ़ा ख़ारिज हो जाए तो वह अपने पूरे जिस्म को धो ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 17हर कपड़ा या चमड़ा जिस से नुत्फ़ा लग गया हो उसे धोना है। वह भी शाम तक नापाक रहेगा। 18अगर मर्द और औरत के हमबिसतर होने पर नुत्फ़ा ख़ारिज हो जाए तो लाज़िम है कि दोनों नहा लें। वह शाम तक नापाक रहेंगे।

औरतों की नापाकी

19माहवारी के वक़्त औरत सात दिन तक नापाक है। जो भी उसे छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। 20इस दौरान जिस चीज़ पर भी वह लेटती या बैठती है वह नापाक है। 21-23जो भी उस के लेटने की जगह को छुए या उस के बैठने की जगह पर बैठ जाए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 24अगर मर्द औरत से हमबिसतर हो और उसी वक़्त माहवारी के दिन शुरू हो जाएँ तो मर्द ख़ून लगने के बाइस सात दिन तक नापाक रहेगा। जिस चीज़ पर भी वह लेटता है वह नापाक हो जाएगी।

25अगर किसी औरत को माहवारी के दिन छोड़ कर किसी और वक़्त कई दिनों तक ख़ून आए या ख़ून माहवारी के दिनों के बाद भी जारी रहे तो वह माहवारी के दिनों की तरह उस वक़्त तक नापाक रहेगी जब तक ख़ून रुक न जाए। 26जिस चीज़ पर भी वह लेटती या बैठती है वह नापाक है। 27जो भी ऐसी चीज़ को छुए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 28ख़ून के रुक जाने पर औरत मज़ीद सात दिन इन्तिज़ार करे। फिर वह पाक होगी। 29आठवें दिन वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम के पास आए। 30इमाम उन में से एक को गुनाह की क़ुर्बानी के लिए और दूसरे को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए चढ़ाए। यूँ वह रब के सामने उस की नापाकी का कफ़्फ़ारा देगा।

31लाज़िम है कि इस्राईलियों को ऐसी चीज़ों से दूर रखा जाए जिन से वह नापाक हो जाएँ। वर्ना मेरा वह मक़्दिस जो उन के दरमियान है उन से नापाक हो जाएगा और वह हलाक हो जाएंगे।

32लाज़िम है कि इस क़िस्म के मुआमलों से ऐसे निपटो जैसे बयान किया गया है। इस में वह मर्द शामिल है जो जरयान का मरीज़ है और वह जो नुत्फ़ा ख़ारिज होने के बाइस नापाक है। 33इस में वह औरत भी शामिल है जिस के माहवारी के अय्याम हैं और वह मर्द जो नापाक औरत से हमबिसतर हो जाता है।"

यौम-ए-कफ़्फ़ारा

16 जब हारून के दो बेटे रब के क़रीब आ कर हलाक हुए तो इस के बाद रब मूसा से हमकलाम हुआ। 2उस ने कहा,

"अपने भाई हारून को बताना कि वह सिर्फ़ मुक़र्ररा वक़्त पर पर्दे के पीछे मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल हो कर अह्द के सन्दूक़ के ढकने के सामने खड़ा हो जाए, वर्ना वह मर जाएगा। क्यूँकि मैं ख़ुद उस ढकने के ऊपर बादल की सूरत में ज़ाहिर होता हूँ। 3और जब भी वह दाख़िल हो तो गुनाह की क़ुर्बानी के लिए एक जवान बैल और भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए एक मेंढा पेश करे। 4पहले वह नहा कर इमाम के कतान के

मुक़द्दस कपड़े पहन ले यानी ज़ेरजामा, उस
के नीचे पाजामा, फिर कमरबन्द और पगड़ी।
5इस्राईल की जमाअत हारून को गुनाह की
क़ुर्बानी के लिए दो बकरे और भस्म होने वाली
क़ुर्बानी के लिए एक मेंढा दे।

6पहले हारून अपने और अपने घराने के
लिए जवान बैल को गुनाह की क़ुर्बानी के
तौर पर चढ़ाए। 7फिर वह दोनों बकरों को
मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के सामने
ले आए। 8वहाँ वह क़ुरआ डाल कर एक
को रब के लिए चुने और दूसरे को अज़ाज़ेल
के लिए। 9जो बकरा रब के लिए है उसे
वह गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे।
10दूसरा बकरा जो क़ुरए के ज़रीए अज़ाज़ेल
के लिए चुना गया उसे ज़िन्दा हालत में रब के
सामने खड़ा किया जाए ताकि वह जमाअत
का कफ़्फ़ारा दे। वहाँ से उसे रेगिस्तान में
अज़ाज़ेल के पास भेजा जाए।

11लेकिन पहले हारून जवान बैल को
गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ा कर अपना
और अपने घराने का कफ़्फ़ारा दे। उसे ज़बह
करने के बाद 12वह बख़ूर की क़ुर्बानगाह से
जलते हुए कोएलों से भरा हुआ बर्तन ले कर
अपनी दोनों मुट्ठियाँ बारीक ख़ुश्बूदार बख़ूर से
भर ले और मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल हो
जाए। 13वहाँ वह रब के हुज़ूर बख़ूर को जलते
हुए कोएलों पर डाल दे। इस से पैदा होने वाला
धुआँ अह्द के सन्दूक़ का ढकना छुपा देगा
ताकि हारून मर न जाए। 14अब वह जवान
बैल के ख़ून में से कुछ ले कर अपनी उंगली से
ढकने के सामने वाले हिस्से पर छिड़के, फिर
कुछ अपनी उंगली से सात बार उस के सामने
ज़मीन पर छिड़के। 15इस के बाद वह उस
बकरे को ज़बह करे जो क़ौम के लिए गुनाह
की क़ुर्बानी है। वह उस का ख़ून मुक़द्दसतरीन
कमरे में ले आए और उसे बैल के ख़ून की
तरह अह्द के सन्दूक़ के ढकने पर और सात
बार उस के सामने ज़मीन पर छिड़के। 16यूँ
वह मुक़द्दसतरीन कमरे का कफ़्फ़ारा देगा
जो इस्राईलियों की नापाकियों और तमाम
गुनाहों से मुतअस्सिर होता रहता है। इस से
वह मुलाक़ात के पूरे ख़ैमे का भी कफ़्फ़ारा
देगा जो ख़ैमागाह के दरमियान होने के बाइस
इस्राईलियों की नापाकियों से मुतअस्सिर होता
रहता है।

17जितना वक़्त हारून अपना, अपने घराने
का और इस्राईल की पूरी जमाअत का
कफ़्फ़ारा देने के लिए मुक़द्दसतरीन कमरे में
रहेगा इस दौरान किसी दूसरे को मुलाक़ात के
ख़ैमे में ठहरने की इजाज़त नहीं है। 18फिर
वह मुक़द्दसतरीन कमरे से निकल कर ख़ैमे
में रब के सामने पड़ी क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा
दे। वह बैल और बकरे के ख़ून में से कुछ ले
कर उसे क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर लगाए।
19कुछ ख़ून वह अपनी उंगली से सात बार
उस पर छिड़क दे। यूँ वह उसे इस्राईलियों
की नापाकियों से पाक करके मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस करेगा।

20मुक़द्दसतरीन कमरे, मुलाक़ात के ख़ैमे
और क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा देने के बाद
हारून ज़िन्दा बकरे को सामने लाए। 21वह
अपने दोनों हाथ उस के सर पर रखे और
इस्राईलियों के तमाम क़ुसूर यानी उन के
तमाम जराइम और गुनाहों का इक़्रार करके
उन्हें बकरे के सर पर डाल दे। फिर वह उसे
रेगिस्तान में भेज दे। इस के लिए वह बकरे को
एक आदमी के सपुर्द करे जिसे यह ज़िम्मादारी
दी गई है। 22बकरा अपने आप पर उन का
तमाम क़ुसूर उठा कर किसी वीरान जगह में
ले जाएगा। वहाँ साथ वाला आदमी उसे छोड़
आए।

23इस के बाद हारून मुलाक़ात के ख़ैमे में
जाए और कतान के वह कपड़े जो उस ने
मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल होने से पेशतर
पहन लिए थे उतार कर वहीं छोड़ दे। 24वह
मुक़द्दस जगह पर नहा कर अपनी ख़िदमत
के आम कपड़े पहन ले। फिर वह बाहर आ
कर अपने और अपनी क़ौम के लिए भस्म

होने वाली क़ुर्बानी पेश करे ताकि अपना और अपनी क़ौम का कफ़्फ़ारा दे। 25इस के इलावा वह गुनाह की क़ुर्बानी की चर्बी क़ुर्बानगाह पर जला दे।

26जो आदमी अज़ाज़ेल के लिए बकरे को रेगिस्तान में छोड़ आया है वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। इस के बाद वह ख़ैमागाह में आ सकता है।

27जिस बैल और बकरे को गुनाह की क़ुर्बानी के लिए पेश किया गया और जिन का ख़ून कफ़्फ़ारा देने के लिए मुक़द्दसतरीन कमरे में लाया गया, लाज़िम है कि उन की खालें, गोश्त और गोबर ख़ैमागाह के बाहर जला दिया जाए। 28यह चीज़ें जलाने वाला बाद में अपने कपड़े धो कर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह में आ सकता है।

29लाज़िम है कि सातवें महीने के दसवें दिन इस्राईली और उन के दरमियान रहने वाले परदेसी अपनी जान को दुख दें और काम न करें। यह उसूल तुम्हारे लिए अबद तक क़ाइम रहे। 30इस दिन तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाएगा ताकि तुम्हें पाक किया जाए। तब तुम रब के सामने अपने तमाम गुनाहों से पाक ठहरोगे। 31पूरा दिन आराम करो और अपनी जान को दुख दो। यह उसूल अबद तक क़ाइम रहे।

32इस दिन इमाम-ए-आज़म तुम्हारा कफ़्फ़ारा दे, वह इमाम जिसे उस के बाप की जगह मसह किया गया और इख़तियार दिया गया है। वह कतान के मुक़द्दस कपड़े पहन कर 33मुक़द्दसतरीन कमरे, मुलाक़ात के ख़ैमे, क़ुर्बानगाह, इमामों और जमाअत के तमाम लोगों का कफ़्फ़ारा दे। 34लाज़िम है कि साल में एक दफ़ा इस्राईलियों के तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा दिया जाए। यह उसूल तुम्हारे लिए अबद तक क़ाइम रहे।"

सब कुछ वैसे ही किया गया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

क़ुर्बानी चढ़ाने का मक़ाम

17 रब ने मूसा से कहा, 2"हारून, उस के बेटों और तमाम इस्राईलियों को हिदायत देना 3-4कि जो भी इस्राईली अपनी गाय या भेड़-बकरी मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब को क़ुर्बानी के तौर पर पेश न करे बल्कि ख़ैमागाह के अन्दर या बाहर किसी और जगह पर ज़बह करे वह ख़ून बहाने का क़ुसूरवार ठहरेगा। उस ने ख़ून बहाया है, और लाज़िम है कि उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए। 5इस हिदायत का मक़्सद यह है कि इस्राईली अब से अपनी क़ुर्बानियाँ खुले मैदान में ज़बह न करें बल्कि रब को पेश करें। वह अपने जानवरों को मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम के पास ला कर उन्हें रब को सलामती की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करें। 6इमाम उन का ख़ून मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर की क़ुर्बानगाह पर छिड़के और उन की चर्बी उस पर जला दे। ऐसी क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब को पसन्द है। 7अब से इस्राईली अपनी क़ुर्बानियाँ उन बकरों के देवताओं को पेश न करें जिन की पैरवी करके उन्हों ने ज़िना किया है। यह उन के लिए और उन के बाद आने वाली नस्लों के लिए एक दाइमी उसूल है।

8लाज़िम है कि हर इस्राईली और तुम्हारे दरमियान रहने वाला परदेसी अपनी भस्म होने वाली क़ुर्बानी या कोई और क़ुर्बानी 9मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर ला कर रब को पेश करे। वर्ना उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाएगा।

ख़ून खाना मना है

10ख़ून खाना बिलकुल मना है। जो भी इस्राईली या तुम्हारे दरमियान रहने वाला परदेसी ख़ून खाए मैं उस के ख़िलाफ़ हो जाऊँगा और उसे उस की क़ौम में से मिटा डालूँगा। 11क्यूँकि हर मख़्लूक़ के ख़ून में उस की जान है। मैं ने उसे तुम्हें दे दिया है ताकि

वह क़ुर्बानगाह पर तुम्हारा कफ़्फ़ारा दे। क्यूँकि ख़ून ही उस जान के ज़रीए जो उस में है तुम्हारा कफ़्फ़ारा देता है। 12इस लिए मैं कहता हूँ कि न कोई इस्राईली न कोई परदेसी ख़ून खाए।

13अगर कोई भी इस्राईली या परदेसी किसी जानवर या परिन्दे का शिकार करके पकड़े जिसे खाने की इजाज़त है तो वह उसे ज़बह करने के बाद उस का पूरा ख़ून ज़मीन पर बहने दे और ख़ून पर मिट्टी डाले। 14क्यूँकि हर मख़्लूक़ का ख़ून उस की जान है। इस लिए मैं ने इस्राईलियों को कहा है कि किसी भी मख़्लूक़ का ख़ून न खाओ। हर मख़्लूक़ का ख़ून उस की जान है, और जो भी उसे खाए उसे क़ौम में से मिटा देना है।

15अगर कोई भी इस्राईली या परदेसी ऐसे जानवर का गोश्त खाए जो फ़ित्री तौर पर मर गया या जिसे जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो तो वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 16जो ऐसा नहीं करता उसे अपने क़ुसूर की सज़ा भुगतनी पड़ेगी।”

नाजाइज़ जिन्सी ताल्लुक़ात

18 रब ने मूसा से कहा, 2“इस्राईलियों को बताना कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 3मिस्रियों की तरह ज़िन्दगी न गुज़ारना जिन में तुम रहते थे। मुल्क-ए-कनआन के लोगों की तरह भी ज़िन्दगी न गुज़ारना जिन के पास मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ। उन के रस्म-ओ-रिवाज न अपनाना। 4मेरे ही अह्काम पर अमल करो और मेरी हिदायात के मुताबिक़ चलो। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 5मेरी हिदायात और अह्काम के मुताबिक़ चलना, क्यूँकि जो यूँ करेगा वह जीता रहेगा। मैं रब हूँ।

6तुम में से कोई भी अपनी क़रीबी रिश्तेदार से हमबिसतर न हो। मैं रब हूँ।

7अपनी माँ से हमबिसतर न होना, वर्ना तेरे बाप की बेहुरमती हो जाएगी। वह तेरी माँ है, इस लिए उस से हमबिसतर न होना।

8अपने बाप की किसी भी बीवी से हमबिसतर न होना, वर्ना तेरे बाप की बेहुरमती हो जाएगी।

9अपनी बहन से हमबिसतर न होना, चाहे वह तेरे बाप या तेरी माँ की बेटी हो, चाहे वह तेरे ही घर में या कहीं और पैदा हुई हो।

10अपनी पोती या नवासी से हमबिसतर न होना, वर्ना तेरी अपनी बेहुरमती हो जाएगी।

11अपने बाप की बीवी की बेटी से हमबिसतर न होना। वह तेरी बहन है।

12अपनी फूफी से हमबिसतर न होना। वह तेरे बाप की क़रीबी रिश्तेदार है।

13अपनी ख़ाला से हमबिसतर न होना। वह तेरी माँ की क़रीबी रिश्तेदार है।

14अपने बाप के भाई की बीवी से हमबिसतर न होना, वर्ना तेरे बाप के भाई की बेहुरमती हो जाएगी। उस की बीवी तेरी चची है।

15अपनी बहू से हमबिसतर न होना। वह तेरे बेटे की बीवी है।

16अपनी भाबी से हमबिसतर न होना, वर्ना तेरे भाई की बेहुरमती हो जाएगी।

17अगर तेरा जिन्सी ताल्लुक़ किसी औरत से हो तो उस की बेटी, पोती या नवासी से हमबिसतर होना मना है, क्यूँकि वह उस की क़रीबी रिश्तेदार हैं। ऐसा करना बड़ी शर्मनाक हरकत है।

18अपनी बीवी के जीते जी उस की बहन से शादी न करना।

19किसी औरत से उस की माहवारी के दिनों में हमबिसतर न होना। इस दौरान वह नापाक है।

20किसी दूसरे मर्द की बीवी से हमबिसतर न होना, वर्ना तू अपने आप को नापाक करेगा।

21अपने किसी भी बच्चे को मलिक देवता को क़ुर्बानी के तौर पर पेश करके जला देना

मना है। ऐसी हरकत से तू अपने ख़ुदा के नाम को दाग़ लगाएगा। मैं रब हूँ।

22मर्द दूसरे मर्द के साथ जिन्सी ताल्लुक़ात न रखे। ऐसी हरकत क़ाबिल-ए-घिन है।

23किसी जानवर से जिन्सी ताल्लुक़ात न रखना, वर्ना तू नापाक हो जाएगा। औरतों के लिए भी ऐसा करना मना है। यह बड़ी शर्मनाक हरकत है।

24ऐसी हरकतों से अपने आप को नापाक न करना। क्यूँकि जो क़ौमें मैं तुम्हारे आगे मुल्क से निकालूँगा वह इसी तरह नापाक होती रहीं। 25मुल्क ख़ुद भी नापाक हुआ। इस लिए मैं ने उसे उस के क़ुसूर के सबब से सज़ा दी, और नतीजे में उस ने अपने बाशिन्दों को उगल दिया। 26लेकिन तुम मेरी हिदायात और अह्काम के मुताबिक़ चलो। न देसी और न परदेसी ऐसी कोई घिनौनी हरकत करें। 27क्यूँकि यह तमाम क़ाबिल-ए-घिन बातें उन से हुईं जो तुम से पहले इस मुल्क में रहते थे। यूँ मुल्क नापाक हुआ। 28लिहाज़ा अगर तुम भी मुल्क को नापाक करोगे तो वह तुम्हें इसी तरह उगल देगा जिस तरह उस ने तुम से पहले मौजूद क़ौमों को उगल दिया। 29जो भी मज़कूरा घिनौनी हरकतों में से एक करे उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए। 30मेरे अह्काम के मुताबिक़ चलते रहो और ऐसे क़ाबिल-ए-घिन रस्म-ओ-रिवाज न अपनाना जो तुम्हारे आने से पहले राइज थे। इन से अपने आप को नापाक न करना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।"

मुक़द्दस क़ौम के लिए हिदायात

19 रब ने मूसा से कहा, 2"इस्राईलियों की पूरी जमाअत को बताना कि मुक़द्दस रहो, क्यूँकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा क़ुद्दूस हूँ।

3तुम में से हर एक अपने माँ-बाप की इज़्ज़त करे। हफ़्ते के दिन काम न करना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 4न बुतों की तरफ़ रुजू करना, न अपने लिए देवता ढालना। मैं ही रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

5जब तुम रब को सलामती की क़ुर्बानी पेश करते हो तो उसे यूँ चढ़ाओ कि तुम मन्ज़ूर हो जाओ। 6उस का गोश्त उसी दिन या अगले दिन खाया जाए। जो भी तीसरे दिन तक बच जाता है उसे जलाना है। 7अगर कोई उसे तीसरे दिन खाए तो उसे इल्म होना चाहिए कि यह क़ुर्बानी नापाक है और रब को पसन्द नहीं है। 8ऐसे शख़्स को अपने क़ुसूर की सज़ा उठानी पड़ेगी, क्यूँकि उस ने उस चीज़ की मुक़द्दस हालत ख़त्म की है जो रब के लिए मख़्सूस की गई थी। उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए।

9कटाई के वक़्त अपनी फ़सल पूरे तौर पर न काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ छोड़ देना। इस तरह जो कुछ कटाई करते वक़्त खेत में बच जाए उसे छोड़ना। 10अंगूर के बाग़ों में भी जो कुछ अंगूर तोड़ते वक़्त बच जाए उसे छोड़ देना। जो अंगूर ज़मीन पर गिर जाएँ उन्हें उठा कर न ले जाना। उन्हें ग़रीबों और परदेसियों के लिए छोड़ देना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

11चोरी न करना, झूट न बोलना, एक दूसरे को धोका न देना।

12मेरे नाम की क़सम खा कर धोका न देना, वर्ना तुम मेरे नाम को दाग़ लगाओगे। मैं रब हूँ।

13एक दूसरे को न दबाना और न लूटना। किसी की मज़दूरी उसी दिन की शाम तक दे देना और उसे अगली सुब्ह तक रोके न रखना।

14बहरे को न कोसना, न अंधे के रास्ते में कोई चीज़ रखना जिस से वह ठोकर खाए। इस में भी अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना। मैं रब हूँ।

15अदालत में किसी की हक़तल्फ़ी न करना। फ़ैसला करते वक़्त किसी की भी जानिबदारी न करना, चाहे वह ग़रीब या

असर-ओ-रसूख़ वाला हो। इन्साफ़ से अपने पड़ोसी की अदालत कर।

16अपनी क़ौम में इधर उधर फिरते हुए किसी पर बुह्तान न लगाना। कोई भी ऐसा काम न करना जिस से किसी की जान ख़तरे में पड़ जाए। मैं रब हूँ।

17दिल में अपने भाई से नफ़रत न करना। अगर किसी की सरज़निश करनी है तो रू-ब-रू करना, वर्ना तू उस के सबब से क़ुसूरवार ठहरेगा।

18इन्तिक़ाम न लेना। अपनी क़ौम के किसी शख़्स पर देर तक तेरा ग़ुस्सा न रहे बल्कि अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप से रखता है। मैं रब हूँ।

19मेरी हिदायात पर अमल करो। दो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जानवरों को मिलाप न करने देना। अपने खेत में दो क़िस्म के बीज न बोना। ऐसा कपड़ा न पहनना जो दो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के धागों का बुना हुआ हो।

20अगर कोई आदमी किसी लौंडी से जिस की मंगनी किसी और से हो चुकी हो हमबिसतर हो जाए और लौंडी को अब तक न पैसों से न वैसे ही आज़ाद किया गया हो तो मुनासिब सज़ा दी जाए। लेकिन उन्हें सज़ा-ए-मौत न दी जाए, क्यूँकि उसे अब तक आज़ाद नहीं किया गया। 21क़ुसूरवार आदमी मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर एक मेंढा ले आए ताकि वह रब को क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर पेश किया जाए। 22इमाम इस क़ुर्बानी से रब के सामने उस के गुनाह का कफ़्फ़ारा दे। यूँ उस का गुनाह मुआफ़ किया जाएगा। 23जब मुल्क-ए-कनआन में दाख़िल होने के बाद तुम फलदार दरख़्त लगाओगे तो पहले तीन साल उन का फल न खाना बल्कि उसे मम्नू[a] समझना। 24चौथे साल उन का तमाम फल ख़ुशी के मुक़द्दस नज़राने के तौर पर रब के लिए मख़्सूस किया जाए। 25पाँचवें साल तुम उन का फल खा सकते हो। यूँ तुम्हारी फ़सल बढ़ाई जाएगी। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

26ऐसा गोश्त न खाना जिस में ख़ून हो। फ़ाल या शुगून न निकालना।

27अपने सर के बाल गोल शक्ल में न कटवाना, न अपनी दाढ़ी को तराशना। 28अपने आप को मुर्दों के सबब से काट कर ज़ख़्मी न करना, न अपनी जिल्द पर नुक़ूश गुदवाना। मैं रब हूँ।

29अपनी बेटी को कस्बी न बनाना, वर्ना उस की मुक़द्दस हालत जाती रहेगी और मुल्क ज़िनाकारी के बाइस हरामकारी से भर जाएगा।

30हफ़्ते के दिन आराम करना और मेरे मक़्दिस का एहतिराम करना। मैं रब हूँ।

31ऐसे लोगों के पास न जाना जो मुर्दों से राबिता करते हैं, न ग़ैबदानों की तरफ़ रुजू करना, वर्ना तुम उन से नापाक हो जाओगे। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

32बूढ़े लोगों के सामने उठ कर खड़ा हो जाना, बुज़ुर्गों की इज़्ज़त करना और अपने ख़ुदा का एहतिराम करना। मैं रब हूँ।

33जो परदेसी तुम्हारे मुल्क में तुम्हारे दरमियान रहता है उसे न दबाना। 34उस के साथ ऐसा सुलूक कर जैसा अपने हमवतनों के साथ करता है। जिस तरह तू अपने आप से मुहब्बत रखता है उसी तरह उस से भी मुहब्बत रखना। याद रहे कि तुम ख़ुद मिस्र में परदेसी थे। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

35नाइन्साफ़ी न करना। न अदालत में, न लम्बाई नापते वक़्त, न तोलते वक़्त और न किसी चीज़ की मिक़्दार नापते वक़्त। 36सहीह तराज़ू, सहीह बाट और सहीह पैमाना इस्तेमाल करना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिस्र से निकाल लाया हूँ।

37मेरी तमाम हिदायात और तमाम अह्काम मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ।”

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : नामख़्तून।

जराइम की सज़ाएँ

20 रब ने मूसा से कहा, 2"इस्राईलियों को बताना कि तुम में से जो भी अपने बच्चे को मलिक देवता को क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। इस में कोई फ़र्क़ नहीं कि वह इस्राईली है या परदेसी। जमाअत के लोग उसे संगसार करें। 3मैं ख़ुद ऐसे शख़्स के ख़िलाफ़ हो जाऊँगा और उसे उस की क़ौम में से मिटा डालूँगा। क्यूँकि अपने बच्चों को मलिक को पेश करने से उस ने मेरे मक़्दिस को नापाक किया और मेरे नाम को दाग़ लगाया है। 4अगर जमाअत के लोग अपनी आँखें बन्द करके ऐसे शख़्स की हरकतें नज़रअन्दाज़ करें और उसे सज़ा-ए-मौत न दें 5तो फिर मैं ख़ुद ऐसे शख़्स और उस के घराने के ख़िलाफ़ खड़ा हो जाऊँगा। मैं उसे और उन तमाम लोगों को क़ौम में से मिटा डालूँगा जिन्हों ने उस के पीछे लग कर मलिक देवता को सिज्दा करने से ज़िना किया है।

6जो शख़्स मुर्दों से राबिता करने और ग़ैबदानी करने वालों की तरफ़ रुजू करता है मैं उस के ख़िलाफ़ हो जाऊँगा। उन की पैरवी करने से वह ज़िना करता है। मैं उसे उस की क़ौम में से मिटा डालूँगा। 7अपने आप को मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रखो, क्यूँकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 8मेरी हिदायात मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ जो तुम्हें मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ।

9जिस ने भी अपने बाप या माँ पर लानत भेजी है उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। इस हरकत से वह अपनी मौत का ख़ुद ज़िम्मादार है।

10अगर किसी मर्द ने किसी की बीवी के साथ ज़िना किया है तो दोनों को सज़ा-ए-मौत देनी है।

11जो मर्द अपने बाप की बीवी से हमबिसतर हुआ है उस ने अपने बाप की बेहुरमती की है। दोनों को सज़ा-ए-मौत देनी है। वह अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मादार हैं।

12अगर कोई मर्द अपनी बहू से हमबिसतर हुआ है तो दोनों को सज़ा-ए-मौत देनी है। जो कुछ उन्हों ने किया है वह निहायत शर्मनाक है। वह अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मादार हैं।

13अगर कोई मर्द किसी दूसरे मर्द से जिन्सी ताल्लुक़ात रखे तो दोनों को इस घिनौनी हरकत के बाइस सज़ा-ए-मौत देनी है। वह अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मादार हैं।

14अगर कोई आदमी अपनी बीवी के इलावा उस की माँ से भी शादी करे तो यह एक निहायत शर्मनाक बात है। दोनों को जला देना है ताकि तुम्हारे दरमियान कोई ऐसी ख़बीस बात न रहे।

15जो मर्द किसी जानवर से जिन्सी ताल्लुक़ात रखे उसे सज़ा-ए-मौत देना है। उस जानवर को भी मार दिया जाए। 16जो औरत किसी जानवर से जिन्सी ताल्लुक़ात रखे उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। उस जानवर को भी मार दिया जाए। वह अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मादार हैं।

17जिस मर्द ने अपनी बहन से शादी की है उस ने शर्मनाक हरकत की है, चाहे वह बाप की बेटी हो या माँ की। उन्हें इस्राईली क़ौम की नज़रों से मिटाया जाए। ऐसे शख़्स ने अपनी बहन की बेहुरमती की है। इस लिए उसे ख़ुद अपने क़ुसूर के नतीजे बर्दाश्त करने पड़ेंगे।

18अगर कोई मर्द माहवारी के अय्याम में किसी औरत से हमबिसतर हुआ है तो दोनों को उन की क़ौम में से मिटाना है। क्यूँकि दोनों ने औरत के ख़ून के मम्बा से पर्दा उठाया है।

19अपनी ख़ाला या फूफी से हमबिसतर न होना। क्यूँकि जो ऐसा करता है वह अपनी क़रीबी रिश्तेदार की बेहुरमती करता है। दोनों को अपने क़ुसूर के नतीजे बर्दाश्त करने पड़ेंगे।

20जो अपनी चची या ताई से हमबिसतर हुआ है उस ने अपने चचा या ताया की बेहुरमती की है। दोनों को अपने क़ुसूर के नतीजे बर्दाश्त करने पड़ेंगे। वह बेऔलाद मरेंगे।

21जिस ने अपनी भाबी से शादी की है उस
ने एक नजिस हरकत की है। उस ने अपने भाई
की बेहुरमती की है। वह बेऔलाद रहेंगे।
22मेरी तमाम हिदायात और अह्काम को
मानो और उन पर अमल करो। वर्ना जिस
मुल्क में मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ वह तुम्हें
उगल देगा। 23उन क़ौमों के रस्म-ओ-रिवाज
के मुताबिक़ ज़िन्दगी न गुज़ारना जिन्हें मैं
तुम्हारे आगे से निकाल दूँगा। मुझे इस सबब
से उन से घिन आने लगी कि वह यह सब कुछ
करते थे। 24लेकिन तुम से मैं ने कहा, 'तुम ही
उन की ज़मीन पर क़ब्ज़ा करोगे। मैं ही उसे
तुम्हें दे दूँगा, ऐसा मुल्क जिस में कस्रत का दूध
और शहद है।' मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ, जिस ने
तुम को दीगर क़ौमों में से चुन कर अलग कर
दिया है। 25इस लिए लाज़िम है कि तुम ज़मीन
पर चलने वाले जानवरों और परिन्दों में पाक
और नापाक का इम्तियाज़ करो। अपने आप
को नापाक जानवर खाने से क़ाबिल-ए-घिन
न बनाना, चाहे वह ज़मीन पर चलते या रेंगते
हैं, चाहे हवा में उड़ते हैं। मैं ही ने उन्हें तुम्हारे
लिए नापाक क़रार दिया है। 26तुम्हें मेरे लिए
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होना है, क्यूँकि मैं क़ुद्दूस
हूँ, और मैं ने तुम्हें दीगर क़ौमों में से चुन कर
अपने लिए अलग कर लिया है।
27तुम में से जो मुर्दों से राबिता या ग़ैबदानी
करता है उसे सज़ा-ए-मौत देनी है, ख़्वाह
औरत हो या मर्द। उन्हें संगसार करना। वह
अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मादार हैं।"

इमामों के लिए हिदायात

21 रब ने मूसा से कहा, "हारून के
बेटों को जो इमाम हैं बता देना
कि इमाम अपने आप को किसी इस्राईली की
लाश के क़रीब जाने से नापाक न करे 2सिवाए
अपने क़रीबी रिश्तेदारों के यानी माँ, बाप,
बेटा, बेटी, भाई 3और जो ग़ैरशादीशुदा बहन
उस के घर में रहती है। 4वह अपनी क़ौम में
किसी और के बाइस अपने आप को नापाक न
करे, वर्ना उस की मुक़द्दस हालत जाती रहेगी।
5इमाम अपने सर को न मुंडवाएँ। वह न
अपनी दाढ़ी को तराशें और न काटने से अपने
आप को ज़ख़्मी करें।
6वह अपने ख़ुदा के लिए मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस रहें और अपने ख़ुदा के नाम को
दाग़ न लगाएँ। चूँकि वह रब को जलने वाली
क़ुर्बानियाँ यानी अपने ख़ुदा की रोटी पेश करते
हैं इस लिए लाज़िम है कि वह मुक़द्दस रहें।
7इमाम ज़िनाकार औरत, मन्दिर की कस्बी या
तलाक़याफ़्ता औरत से शादी न करें, क्यूँकि
वह अपने रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
हैं। 8इमाम को मुक़द्दस समझना, क्यूँकि वह
तेरे ख़ुदा की रोटी को क़ुर्बानगाह पर चढ़ाता
है। वह तेरे लिए मुक़द्दस ठहरे क्यूँकि मैं रब
क़ुद्दूस हूँ। मैं ही तुम्हें मुक़द्दस करता हूँ।
9किसी इमाम की जो बेटी ज़िनाकारी से
अपनी मुक़द्दस हालत को ख़त्म कर देती है
वह अपने बाप की मुक़द्दस हालत को भी
ख़त्म कर देती है। उसे जला दिया जाए।
10इमाम-ए-आज़म के सर पर मसह का तेल
उंडेला गया है और उसे इमाम-ए-आज़म के
मुक़द्दस कपड़े पहनने का इख़तियार दिया
गया है। इस लिए वह रंज के आलम में अपने
बालों को बिखरने न दे, न कभी अपने कपड़ों
को फाड़े। 11वह किसी लाश के क़रीब न जाए,
चाहे वह उस के बाप या माँ की लाश क्यूँ न हो,
वर्ना वह नापाक हो जाएगा। 12जब तक कोई
लाश उस के घर में पड़ी रहे वह मक़्दिस को
छोड़ कर अपने घर न जाए, वर्ना वह मक़्दिस
को नापाक करेगा। क्यूँकि उसे उस के ख़ुदा
के तेल से मख़्सूस किया गया है। मैं रब हूँ।
13इमाम-ए-आज़म को सिर्फ़ कुंवारी से शादी
की इजाज़त है। 14वह बेवा, तलाक़याफ़्ता
औरत, मन्दिर की कस्बी या ज़िनाकार औरत
से शादी न करे बल्कि सिर्फ़ अपने क़बीले की
कुंवारी से, 15वर्ना उस की औलाद मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस नहीं होगी। क्यूँकि मैं रब हूँ जो

उसे अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ।"

16रब ने मूसा से यह भी कहा, 17"हारून को बताना कि तेरी औलाद में से कोई भी जिस के जिस्म में नुक़्स हो मेरे हुज़ूर आ कर अपने ख़ुदा की रोटी न चढ़ाए। यह उसूल आने वाली नस्लों के लिए भी अटल है। 18क्यूँकि कोई भी माज़ूर मेरे हुज़ूर न आए, न अंधा, न लंगड़ा, न वह जिस की नाक चिरी हुई हो या जिस के किसी अज़ु में कमी बेशी हो, 19न वह जिस का पाँओ या हाथ टूटा हुआ हो, 20न कुबड़ा, न बौना, न वह जिस की आँख में नुक़्स हो या जिसे वबाई जिल्दी बीमारी हो या जिस के ख़ुस्ये कुचले हुए हों। 21हारून इमाम की कोई भी औलाद जिस के जिस्म में नुक़्स हो मेरे हुज़ूर आ कर रब को जलने वाली क़ुर्बानियाँ पेश न करे। चूँकि उस में नुक़्स है इस लिए वह मेरे हुज़ूर आ कर अपने ख़ुदा की रोटी न चढ़ाए। 22उसे अल्लाह की मुक़द्दस बल्कि मुक़द्दसतरीन क़ुर्बानियों में से भी इमामों का हिस्सा खाने की इजाज़त है। 23लेकिन चूँकि उस में नुक़्स है इस लिए वह मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के पर्दे के क़रीब न जाए, न क़ुर्बानगाह के पास आए। वर्ना वह मेरी मुक़द्दस चीज़ों को नापाक करेगा। क्यूँकि मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ।"

24मूसा ने यह हिदायात हारून, उस के बेटों और तमाम इस्राईलियों को दीं।

क़ुर्बानी का गोश्त खाने की हिदायात

22 रब ने मूसा से कहा, 2"हारून और उस के बेटों को बताना कि इस्राईलियों की उन क़ुर्बानियों का एहतिराम करो जो तुम ने मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस की हैं, वर्ना तुम मेरे नाम को दाग़ लगाओगे। मैं रब हूँ। 3जो इमाम नापाक होने के बावुजूद उन क़ुर्बानियों के पास आ जाए जो इस्राईलियों ने मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस की हैं उसे मेरे सामने से मिटाना है। यह उसूल आने वाली नस्लों के लिए भी अटल है। मैं रब हूँ।

4हारून की औलाद में से जो भी वबाई जिल्दी बीमारी या जरयान का मरीज़ हो उसे मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से अपना हिस्सा खाने की इजाज़त नहीं है। पहले वह पाक हो जाए। जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए जो लाश से नापाक हो गई हो या ऐसे आदमी को छुए जिस का नुत्फ़ा निकला हो वह नापाक हो जाता है। 5वह नापाक रेंगने वाले जानवर या नापाक शख़्स को छूने से भी नापाक हो जाता है, ख़्वाह वह किसी भी सबब से नापाक क्यूँ न हुआ हो। 6जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। इस के इलावा लाज़िम है कि वह मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से अपना हिस्सा खाने से पहले नहा ले। 7सूरज के ग़ुरूब होने पर वह पाक होगा और मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से अपना हिस्सा खा सकेगा। क्यूँकि वह उस की रोज़ी हैं। 8इमाम ऐसे जानवरों का गोश्त न खाए जो फ़ित्री तौर पर मर गए या जिन्हें जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो, वर्ना वह नापाक हो जाएगा। मैं रब हूँ।

9इमाम मेरी हिदायात के मुताबिक़ चलें, वर्ना वह क़ुसूरवार बन जाएंगे और मुक़द्दस चीज़ों की बेहुरमती करने के सबब से मर जाएंगे। मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ।

10सिर्फ़ इमाम के ख़ानदान के अफ़राद मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से खा सकते हैं। ग़ैरशहरी या मज़दूर को इजाज़त नहीं है। 11लेकिन इमाम का ग़ुलाम या लौंडी उस में से खा सकते हैं, चाहे उन्हें ख़रीदा गया हो या वह उस के घर में पैदा हुए हों। 12अगर इमाम की बेटी ने किसी ऐसे शख़्स से शादी की है जो इमाम नहीं है तो उसे मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से खाने की इजाज़त नहीं है। 13लेकिन हो सकता है कि वह बेवा या तलाक़याफ़्ता हो और उस के बच्चे न हों। जब वह अपने बाप

के घर लौट कर वहाँ ऐसे रहेगी जैसे अपनी जवानी में तो वह अपने बाप के उस खाने में से खा सकती है जो क़ुर्बानियों में से बाप का हिस्सा है। लेकिन जो इमाम के ख़ानदान का फ़र्द नहीं है उसे खाने की इजाज़त नहीं है।

14जिस शख़्स ने नादानिस्ता तौर पर मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से इमाम के हिस्से से कुछ खाया है वह इमाम को सब कुछ वापस करने के इलावा 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। 15इमाम रब को पेश की हुई क़ुर्बानियों की मुक़द्दस हालत यूँ ख़त्म न करें 16कि वह दूसरे इस्राईलियों को यह मुक़द्दस चीज़ें खाने दें। ऐसी हरकत से वह उन को बड़ा क़ुसूरवार बना देंगे। मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ।"

जानवरों की क़ुर्बानियों के बारे में हिदायात

17रब ने मूसा से कहा, 18"हारून, उस के बेटों और इस्राईलियों को बताना कि अगर तुम में से कोई इस्राईली या परदेसी रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानी पेश करना चाहे तो तरीक़-ए-कार में कोई फ़र्क़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मान कर या वैसे ही दिली ख़ुशी से कर रहा हो। 19इस के लिए लाज़िम है कि तुम एक बेऐब बैल, मेंढा या बकरा पेश करो। फिर ही उसे क़बूल किया जाएगा। 20क़ुर्बानी के लिए कभी भी ऐसा जानवर पेश न करना जिस में नुक़्स हो, वर्ना तुम उस के बाइस मन्ज़ूर नहीं होगे। 21अगर कोई रब को सलामती की क़ुर्बानी पेश करना चाहे तो तरीक़-ए-कार में कोई फ़र्क़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मान कर या वैसे ही दिली ख़ुशी से कर रहा हो। इस के लिए लाज़िम है कि वह गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से बेऐब जानवर चुने। फिर उसे क़बूल किया जाएगा। 22रब को ऐसे जानवर पेश न करना जो अंधे हों, जिन के आज़ा टूटे या कटे हुए हों, जिन को रसौली हो या जिन्हें वबाई जिल्दी बीमारी लग गई हो। रब को उन्हें जलने वाली क़ुर्बानी के तौर पर क़ुर्बानगाह पर पेश न करना। 23लेकिन जिस गाय-बैल या भेड़-बकरी के किसी अज़ु में कमी बेशी हो उसे पेश किया जा सकता है। शर्त यह है कि पेश करने वाला उसे वैसे ही दिली ख़ुशी से चढ़ाए। अगर वह उसे अपनी मन्नत मान कर पेश करे तो वह क़बूल नहीं किया जाएगा। 24रब को ऐसा जानवर पेश न करना जिस के ख़ुस्ये कुचले, तोड़े या कटे हुए हों। अपने मुल्क में जानवरों को इस तरह ख़सी न बनाना, 25न ऐसे जानवर किसी ग़ैरमुल्की से ख़रीद कर अपने ख़ुदा की रोटी के तौर पर पेश करना। तुम ऐसे जानवरों के बाइस मन्ज़ूर नहीं होगे, क्यूँकि उन में ख़राबी और नुक़्स है।"

26रब ने मूसा से यह भी कहा, 27"जब किसी गाय, भेड़ या बकरी का बच्चा पैदा होता है तो लाज़िम है कि वह पहले सात दिन अपनी माँ के पास रहे। आठवें दिन से पहले रब उसे जलने वाली क़ुर्बानी के तौर पर क़बूल नहीं करेगा। 28किसी गाय, भेड़ या बकरी के बच्चे को उस की माँ समेत एक ही दिन ज़बह न करना। 29जब तुम रब को सलामती की कोई क़ुर्बानी चढ़ाना चाहते हो तो उसे यूँ पेश करना कि तुम मन्ज़ूर हो जाओ। 30अगली सुब्ह तक कुछ बचा न रहे बल्कि उसे उसी दिन खाना है। मैं रब हूँ।

31मेरे अह्काम मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ। 32मेरे नाम को दाग़ न लगाना। लाज़िम है कि मुझे इस्राईलियों के दरमियान क़ुद्दूस माना जाए। मैं रब हूँ जो तुम्हें अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ। 33मैं तुम्हें मिस्र से निकाल लाया हूँ ताकि तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मैं रब हूँ।"

23 रब ने मूसा से कहा, 2"इस्राईलियों को बताना कि यह मेरी, रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें लोगों को मुक़द्दस इजतिमा के लिए जमा करना है।

सबत का दिन

3हफ़्ते में छः दिन काम करना, लेकिन
सातवाँ दिन हर तरह से आराम का दिन है।
उस दिन मुक़द्दस इजतिमा हो। जहाँ भी तुम
रहते हो वहाँ काम न करना। यह दिन रब के
लिए मख़्सूस सबत है।

फ़सह की ईद और बेख़मीरी रोटी की ईद

4यह रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें लोगों को
मुक़द्दस इजतिमा के लिए जमा करना है।
5फ़सह की ईद पहले महीने के चौधवें दिन
शुरू होती है। उस दिन सूरज के ग़ुरूब होने
पर रब की ख़ुशी मनाई जाए। 6अगले दिन रब
की याद में बेख़मीरी रोटी की ईद शुरू होती
है। सात दिन तक तुम्हारी रोटी में ख़मीर न हो।
7इन सात दिनों के पहले दिन मुक़द्दस इजतिमा
हो और लोग अपना हर काम छोड़ें। 8इन सात
दिनों में रोज़ाना रब को जलने वाली क़ुर्बानी
पेश करो। सातवें दिन भी मुक़द्दस इजतिमा हो
और लोग अपना हर काम छोड़ें।"

पहले पूले की ईद

9रब ने मूसा से कहा, 10"इस्राईलियों को
बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल
होगे जो मैं तुम्हें दूँगा और वहाँ अनाज की
फ़सल काटोगे तो तुम्हें इमाम को पहला पूला
देना है। 11इत्वार को इमाम यह पूला रब के
सामने हिलाए ताकि तुम मन्ज़ूर हो जाओ।
12उस दिन भेड़ का एक यकसाला बेऐब बच्चा
भी रब को पेश करना। उसे क़ुर्बानगाह पर
भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाना।
13साथ ही ग़ल्ला की नज़र के लिए तेल से
मिलाया गया 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी
पेश करना। जलने वाली यह क़ुर्बानी रब को
पसन्द है। इस के इलावा मै की नज़र के लिए
एक लिटर मै भी पेश करना। 14पहले यह सब
कुछ करो, फिर ही तुम्हें नई फ़सल के अनाज
से खाने की इजाज़त होगी, ख़्वाह वह भुना
हुआ हो, ख़्वाह कच्चा या रोटी की सूरत में
पकाया गया हो। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ
ऐसा ही करना है। यह उसूल अबद तक क़ाइम
रहे।

हफ़्तों की ईद यानी पन्तिकुस्त

15जिस दिन तुम ने अनाज का पूला पेश
किया उस दिन से पूरे सात हफ़्ते गिनो।
16पचासवें दिन यानी सातवें इत्वार को रब को
नए अनाज की क़ुर्बानी चढ़ाना। 17हर घराने
की तरफ़ से रब को हिलाने वाली क़ुर्बानी के
तौर पर दो रोटियाँ पेश की जाएँ। हर रोटी
के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा इस्तेमाल
किया जाए। उन में ख़मीर डाल कर पकाना है।
यह फ़सल की पहली पैदावार की क़ुर्बानी हैं।
18इन रोटियों के साथ एक जवान बैल, दो मेंढे
और भेड़ के सात बेऐब और यकसाला बच्चे
पेश करो। उन्हें रब के हुज़ूर भस्म होने वाली
क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाना। इस के इलावा
ग़ल्ला की नज़र और मै की नज़र भी पेश
करनी है। जलने वाली इस क़ुर्बानी की ख़ुश्बू
रब को पसन्द है। 19फिर गुनाह की क़ुर्बानी
के लिए एक बकरा और सलामती की क़ुर्बानी
के लिए दो यकसाला भेड़ के बच्चे चढ़ाओ।
20इमाम भेड़ के यह दो बच्चे मज़कूरा रोटियों
समेत हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब
के सामने हिलाए। यह रब के लिए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस हैं और क़ुर्बानियों में से इमाम
का हिस्सा हैं। 21उसी दिन लोगों को मुक़द्दस
इजतिमा के लिए जमा करो। कोई भी काम न
करना। यह उसूल अबद तक क़ाइम रहे, और
इसे हर जगह मानना है।

22कटाई के वक़्त अपनी फ़सल पूरे तौर पर
न काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ
छोड़ देना। इस तरह जो कुछ कटाई करते
वक़्त खेत में बच जाए उसे छोड़ना। बचा हुआ
अनाज ग़रीबों और परदेसियों के लिए छोड़
देना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।"

नए साल की ईद

23रब ने मूसा से कहा, 24"इस्राईलियों को
बताना कि सातवें महीने का पहला दिन
आराम का दिन है। उस दिन मुक़द्दस इजतिमा
हो जिस पर याद दिलाने के लिए नरसिंगा
फूँका जाए। 25कोई भी काम न करना। रब
को जलने वाली क़ुर्बानी पेश करना।"

कफ़्फ़ारा का दिन

26रब ने मूसा से कहा, 27"सातवें महीने का
दसवाँ दिन कफ़्फ़ारा का दिन है। उस दिन
मुक़द्दस इजतिमा हो। अपनी जान को दुख
देना और रब को जलने वाली क़ुर्बानी पेश
करना। 28उस दिन काम न करना, क्यूँकि यह
कफ़्फ़ारा का दिन है, जब रब तुम्हारे ख़ुदा के
सामने तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाता है। 29जो
उस दिन अपनी जान को दुख नहीं देता उसे
उस की क़ौम में से मिटाया जाए। 30जो उस
दिन काम करता है उसे मैं उस की क़ौम में
से निकाल कर हलाक करूँगा। 31कोई भी
काम न करना। यह उसूल अबद तक क़ाइम
रहे, और इसे हर जगह मानना है। 32यह दिन
आराम का ख़ास दिन है जिस में तुम्हें अपनी
जान को दुख देना है। इसे महीने के नवें दिन
की शाम से ले कर अगली शाम तक मनाना।"

झोंपड़ियों की ईद

33रब ने मूसा से कहा, 34"इस्राईलियों को
बताना कि सातवें महीने के पंद्रहवें दिन
झोंपड़ियों की ईद शुरू होती है। इस का
दौरानिया सात दिन है। 35पहले दिन मुक़द्दस
इजतिमा हो। इस दिन कोई काम न करना।
36इन सात दिनों के दौरान रब को जलने वाली
क़ुर्बानियाँ पेश करना। आठवें दिन मुक़द्दस
इजतिमा हो। रब को जलने वाली क़ुर्बानी पेश
करो। इस ख़ास इजतिमा के दिन भी काम नहीं
करना है।

37यह रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें मुक़द्दस
इजतिमा करना है ताकि रब को रोज़मर्रा
की मतलूबा जलने वाली क़ुर्बानियाँ और मै
की नज़रें पेश की जाएँ यानी भस्म होने
वाली क़ुर्बानियाँ, ग़ल्ला की नज़रें, ज़बह की
क़ुर्बानियाँ और मै की नज़रें। 38यह क़ुर्बानियाँ
उन क़ुर्बानियों के इलावा हैं जो सबत के दिन
चढ़ाई जाती हैं और जो तुम ने हदिए के तौर
पर या मन्नत मान कर या अपनी दिली ख़ुशी
से पेश की हैं।

39चुनाँचे सातवें महीने के पंद्रहवें दिन
फ़सल की कटाई के इख़तिताम पर रब की यह
ईद यानी झोंपड़ियों की ईद मनाओ। इसे सात
दिन मनाना। पहला और आख़िरी दिन आराम
के दिन हैं। 40पहले दिन अपने लिए दरख़्तों
के बेहतरीन फल, खजूर की डालियाँ और
घने दरख़्तों और सफ़ेदा की शाख़ें तोड़ना।
सात दिन तक रब अपने ख़ुदा के सामने ख़ुशी
मनाओ। 41हर साल सातवें महीने में रब की
ख़ुशी में यह ईद मनाना। यह उसूल अबद तक
क़ाइम रहे। 42ईद के हफ़्ते के दौरान झोंपड़ियों
में रहना। तमाम मुल्क में आबाद इस्राईली
ऐसा करें। 43फिर तुम्हारी औलाद जानेगी कि
इस्राईलियों को मिस्र से निकालते वक़्त मैं ने
उन्हें झोंपड़ियों में बसाया। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा
हूँ।"

44मूसा ने इस्राईलियों को रब की ईदों के बारे
में यह बातें बताईं।

रब के सामने शमादान और रोटियाँ

24 रब ने मूसा से कहा, 2"इस्राईलियों
को हुक्म दे कि वह तेरे पास कूटे
हुए ज़ैतूनों का ख़ालिस तेल ले आएँ ताकि
मुक़द्दस कमरे के शमादान के चराग़ मुतवातिर
जलते रहें। 3हारून उन्हें मुसलसल, शाम से ले
कर सुब्ह तक रब के हुज़ूर सँभाले यानी वहाँ
जहाँ वह मुक़द्दसतरीन कमरे के पर्दे के सामने
पड़े हैं, उस पर्दे के सामने जिस के पीछे अह्द
का सन्दूक़ है। यह उसूल अबद तक क़ाइम
रहे। 4वह ख़ालिस सोने के शमादान पर लगे

चराग़ों की देख-भाल यूँ करे कि यह हमेशा रब के सामने जलते रहें।

5बारह रोटियाँ पकाना। हर रोटी के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। 6उन्हें दो क़तारों में रब के सामने ख़ालिस सोने की मेज़ पर रखना। 7हर क़तार पर ख़ालिस लुबान डालना। यह लुबान रोटी के लिए यादगारी की क़ुर्बानी है जिसे बाद में रब के लिए जलाना है। 8हर हफ़्ते को रब के सामने ताज़ा रोटियाँ इसी तरतीब से मेज़ पर रखनी हैं। यह इस्राईलियों के लिए अबदी अह्द की लाज़िमी शर्त है। 9मेज़ की रोटियाँ हारून और उस के बेटों का हिस्सा हैं, और वह उन्हें मुक़द्दस जगह पर खाएँ, क्यूँकि वह जलने वाली क़ुर्बानियों का मुक़द्दसतरीन हिस्सा हैं। यह अबद तक उन का हक़ रहेगा।"

अल्लाह की तौहीन, ख़ूँरेज़ी और ज़ख़्मी करने की सज़ाएँ

10-11ख़ैमागाह में एक आदमी था जिस का बाप मिस्री और माँ इस्राईली थी। माँ का नाम सलूमीत था। वह दिब्री की बेटी और दान के क़बीले की थी। एक दिन यह आदमी ख़ैमागाह में किसी इस्राईली से झगड़ने लगा। लड़ते लड़ते उस ने रब के नाम पर कुफ़्र बक कर उस पर लानत भेजी। यह सुन कर लोग उसे मूसा के पास ले आए। 12वहाँ उन्हों ने उसे पहरे में बिठा कर रब की हिदायत का इन्तिज़ार किया।

13तब रब ने मूसा से कहा, 14"लानत करने वाले को ख़ैमागाह के बाहर ले जाओ। जिन्हों ने उस की यह बातें सुनी हैं वह सब अपने हाथ उस के सर पर रखें। फिर पूरी जमाअत उसे संगसार करे। 15इस्राईलियों से कहना कि जो भी अपने ख़ुदा पर लानत भेजे उसे अपने क़ुसूर के नतीजे बर्दाश्त करने पड़ेंगे। 16जो भी रब के नाम पर कुफ़्र बके उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। पूरी जमाअत उसे संगसार करे। जिस ने रब के नाम पर कुफ़्र बका हो उसे ज़रूर सज़ा-ए-मौत देनी है, ख़्वाह देसी हो या परदेसी।

17जिस ने किसी को मार डाला है उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। 18जिस ने किसी के जानवर को मार डाला है वह उस का मुआवज़ा दे। जान के बदले जान दी जाए। 19अगर किसी ने किसी को ज़ख़्मी कर दिया है तो वही कुछ उस के साथ किया जाए जो उस ने दूसरे के साथ किया है। 20अगर दूसरे की कोई हड्डी टूट जाए तो उस की वही हड्डी तोड़ी जाए। अगर दूसरे की आँख ज़ाए हो जाए तो उस की आँख ज़ाए कर दी जाए। अगर दूसरे का दाँत टूट जाए तो उस का वही दाँत तोड़ा जाए। जो भी ज़ख़्म उस ने दूसरे को पहुँचाया वही ज़ख़्म उसे पहुँचाया जाए। 21जिस ने किसी जानवर को मार डाला है वह उस का मुआवज़ा दे, लेकिन जिस ने किसी इन्सान को मार दिया है उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। 22देसी और परदेसी के लिए तुम्हारा एक ही क़ानून हो। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।"

23फिर मूसा ने इस्राईलियों से बात की, और उन्हों ने रब पर लानत भेजने वाले को ख़ैमागाह से बाहर ले जा कर उसे संगसार किया। उन्हों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

ज़मीन के लिए सबत का साल

25 रब ने सीना पहाड़ पर मूसा से कहा, 2"इस्राईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा तो लाज़िम है कि रब की ताज़ीम में ज़मीन एक साल आराम करे। 3छः साल के दौरान अपने खेतों में बीज बोना, अपने अंगूर के बाग़ों की काँट-छाँट करना और उन की फ़सलें जमा करना। 4लेकिन सातवाँ साल ज़मीन के लिए आराम का साल है, रब की ताज़ीम में सबत का साल। उस साल न अपने खेतों में बीज बोना, न अपने अंगूर के बाग़ों की काँट-छाँट करना। 5जो अनाज ख़ुद-ब-

ख़ुद उगता है उस की कटाई न करना और जो अंगूर उस साल लगते हैं उन को तोड़ कर जमा न करना, क्यूँकि ज़मीन को एक साल के लिए आराम करना है। 6अलबत्ता जो भी यह ज़मीन आराम के साल में पैदा करेगी उस से तुम अपनी रोज़ाना की ज़रूरियात पूरी कर सकते हो यानी तू, तेरे ग़ुलाम और लौंडियाँ, तेरे मज़दूर, तेरे ग़ैरशहरी, तेरे साथ रहने वाले परदेसी, 7तेरे मवेशी और तेरी ज़मीन पर रहने वाले जंगली जानवर। जो कुछ भी यह ज़मीन पैदा करती है वह खाया जा सकता है।

बहाली का साल

8सात सबत के साल यानी 49 साल के बाद एक और काम करना है। 9पचासवें साल के सातवें महीने के दसवें दिन यानी कफ़्फ़ारा के दिन अपने मुल्क की हर जगह नरसिंगा बजाना। 10पचासवाँ साल मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करो और पूरे मुल्क में एलान करो कि तमाम बाशिन्दों को आज़ाद कर दिया जाए। यह बहाली का साल हो जिस में हर शख़्स को उस की मिलकियत वापस की जाए और हर ग़ुलाम को आज़ाद किया जाए ताकि वह अपने रिश्तेदारों के पास वापस जा सके। 11यह पचासवाँ साल बहाली का साल हो, इस लिए न अपने खेतों में बीज बोना, न ख़ुद-ब-ख़ुद उगने वाले अनाज की कटाई करना, और न अंगूर तोड़ कर जमा करना। 12क्यूँकि यह बहाली का साल है जो तुम्हारे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है। रोज़ाना उतनी ही पैदावार लेना कि एक दिन की ज़रूरियात पूरी हो जाएँ। 13बहाली के साल में हर शख़्स को उस की मिलकियत वापस की जाए।

14चुनाँचे जब कभी तुम अपने किसी हमवतन भाई को ज़मीन बेचते या उस से ख़रीदते हो तो उस से नाजाइज़ फ़ाइदा न उठाना। 15ज़मीन की क़ीमत इस हिसाब से मुक़र्रर की जाए कि वह अगले बहाली के साल तक कितने साल फ़सलें पैदा करेगी। 16अगर बहुत साल रह गए हों तो उस की क़ीमत ज़्यादा होगी, और अगर कम साल रह गए हों तो उस की क़ीमत कम होगी। क्यूँकि उन फ़सलों की तादाद बिक रही है जो ज़मीन अगले बहाली के साल तक पैदा कर सकती है।

17अपने हमवतन से नाजाइज़ फ़ाइदा न उठाना बल्कि रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना, क्यूँकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

18मेरी हिदायात पर अमल करना और मेरे अह्काम को मान कर उन के मुताबिक़ चलना। तब तुम अपने मुल्क में महफ़ूज़ रहोगे। 19ज़मीन अपनी पूरी पैदावार देगी, तुम सेर हो जाओगे और महफ़ूज़ रहोगे। 20हो सकता है कोई पूछे, 'हम सातवें साल में क्या खाएँगे जबकि हम बीज नहीं बोएँगे और फ़सल नहीं काटेंगे?' 21जवाब यह है कि मैं छटे साल में ज़मीन को इतनी बरकत दूँगा कि उस साल की पैदावार तीन साल के लिए काफ़ी होगी। 22जब तुम आठवें साल बीज बोओगे तो तुम्हारे पास छटे साल की इतनी पैदावार बाक़ी होगी कि तुम फ़सल की कटाई तक गुज़ारा कर सकोगे।

मौरूसी ज़मीन के हुक़ूक़

23कोई ज़मीन भी हमेशा के लिए न बेची जाए, क्यूँकि मुल्क की तमाम ज़मीन मेरी ही है। तुम मेरे हुज़ूर सिर्फ़ परदेसी और ग़ैरशहरी हो। 24मुल्क में जहाँ भी ज़मीन बिक जाए वहाँ मौरूसी मालिक का यह हक़ माना जाए कि वह अपनी ज़मीन वापस ख़रीद सकता है।

25अगर तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब हो कर अपनी कुछ ज़मीन बेचने पर मज्बूर हो जाए तो लाज़िम है कि उस का सब से क़रीबी रिश्तेदार उसे वापस ख़रीद ले। 26हो सकता है कि ऐसे शख़्स का कोई क़रीबी रिश्तेदार न हो जो उस की ज़मीन वापस ख़रीद सके, लेकिन वह ख़ुद कुछ देर के बाद इतने पैसे जमा करता है कि वह अपनी ज़मीन वापस

ख़रीद सकता है। 27इस सूरत में वह हिसाब करे कि ख़रीदने वाले के लिए अगले बहाली के साल तक कितने साल रह गए हैं। जितना नुक़्सान ख़रीदने वाले को ज़मीन को बहाली के साल से पहले वापस देने से पहुँचेगा उतने ही पैसे उसे देने हैं। 28लेकिन अगर उस के पास इतने पैसे न हों तो ज़मीन अगले बहाली के साल तक ख़रीदने वाले के हाथ में रहेगी। फिर उसे मौरूसी मालिक को वापस दिया जाएगा।

29अगर किसी का घर फ़सीलदार शहर में है तो जब वह उसे बेचेगा तो अपना घर वापस ख़रीदने का हक़ सिर्फ़ एक साल तक रहेगा। 30अगर पहला मालिक उसे पहले साल के अन्दर अन्दर न ख़रीदे तो वह हमेशा के लिए ख़रीदने वाले की मौरूसी मिलकियत बन जाएगा। वह बहाली के साल में भी वापस नहीं किया जाएगा।

31लेकिन जो घर ऐसी आबादी में है जिस की फ़सील न हो वह देहात में शुमार किया जाता है। उस के मौरूसी मालिक को हक़ हासिल है कि हर वक़्त अपना घर वापस ख़रीद सके। बहाली के साल में इस घर को लाज़िमन वापस कर देना है।

32लेकिन लावियों को यह हक़ हासिल है कि वह अपने वह घर हर वक़्त ख़रीद सकते हैं जो उन के लिए मुक़र्रर किए हुए शहरों में हैं। 33अगर ऐसा घर किसी लावी के हाथ फ़रोख़्त किया जाए और वापस न ख़रीदा जाए तो उसे लाज़िमन बहाली के साल में वापस करना है। क्यूँकि लावी के जो घर उन के मुक़र्ररा शहरों में होते हैं वह इस्राईलियों में उन की मौरूसी मिलकियत हैं। 34लेकिन जो ज़मीनें शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने के लिए मुक़र्रर हैं उन्हें बेचने की इजाज़त नहीं है। वह उन की दाइमी मिलकियत हैं।

ग़रीबों के लिए क़र्ज़ा

35अगर तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब हो जाए और गुज़ारा न कर सके तो उस की मदद कर। उस तरह उस की मदद करना जिस तरह परदेसी या ग़ैरशहरी की मदद करनी होती है ताकि वह तेरे साथ रहते हुए ज़िन्दगी गुज़ार सके। 36उस से किसी तरह का सूद न लेना बल्कि अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना ताकि तेरा भाई तेरे साथ ज़िन्दगी गुज़ार सके। 37अगर वह तेरा क़र्ज़दार हो तो उस से सूद न लेना। इसी तरह ख़ुराक बेचते वक़्त उस से नफ़ा न लेना। 38मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मैं तुम्हें इस लिए मिस्र से निकाल लाया कि तुम्हें मुल्क-ए-कनआन दूँ और तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

इस्राईली ग़ुलामों के हुक़ूक़

39अगर तेरा कोई इस्राईली भाई ग़रीब हो कर अपने आप को तेरे हाथ बेच डाले तो उस से ग़ुलाम का सा काम न कराना। 40उस के साथ मज़दूर या ग़ैरशहरी का सा सुलूक करना। वह तेरे लिए बहाली के साल तक काम करे। 41फिर वह और उस के बाल-बच्चे आज़ाद हो कर अपने रिश्तेदारों और मौरूसी ज़मीन के पास वापस जाएँ। 42चूँकि इस्राईली मेरे ख़ादिम हैं जिन्हें मैं मिस्र से निकाल लाया इस लिए उन्हें ग़ुलामी में न बेचा जाए। 43ऐसे लोगों पर सख़्ती से हुक्मरानी न करना बल्कि अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना।

44तुम पड़ोसी ममालिक से अपने लिए ग़ुलाम और लौंडियाँ हासिल कर सकते हो। 45जो परदेसी ग़ैरशहरी के तौर पर तुम्हारे मुल्क में आबाद हैं उन्हें भी तुम ख़रीद सकते हो। उन में वह भी शामिल हैं जो तुम्हारे मुल्क में पैदा हुए हैं। वही तुम्हारी मिलकियत बन कर 46तुम्हारे बेटों की मीरास में आ जाएँ और वही हमेशा तुम्हारे ग़ुलाम रहें। लेकिन अपने हमवतन भाइयों पर सख़्त हुक्मरानी न करना।

47अगर तेरे मुल्क में रहने वाला कोई परदेसी या ग़ैरशहरी अमीर हो जाए जबकि तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब हो कर अपने आप को उस परदेसी या ग़ैरशहरी या उस के

ख़ानदान के किसी फ़र्द को बेच डाले 48तो बिक जाने के बाद उसे आज़ादी ख़रीदने का हक़ हासिल है। कोई भाई, 49चचा, ताया, चचा या ताया का बेटा या कोई और क़रीबी रिश्तेदार उसे वापस ख़रीद सकता है। वह ख़ुद भी अपनी आज़ादी ख़रीद सकता है अगर उस के पास पैसे काफ़ी हों। 50इस सूरत में वह अपने मालिक से मिल कर वह साल गिने जो उस के ख़रीदने से ले कर अगले बहाली के साल तक बाक़ी हैं। उस की आज़ादी के पैसे उस क़ीमत पर मब्नी हों जो मज़दूर को इतने सालों के लिए दिए जाते हैं। 51-52जितने साल बाक़ी रह गए हैं उन के मुताबिक़ उस की बिक जाने की क़ीमत में से पैसे वापस कर दिए जाएँ। 53उस के साथ साल-ब-साल मज़दूर का सा सुलूक किया जाए। उस का मालिक उस पर सख़्त हुक्मरानी न करे। 54अगर वह इस तरह के किसी तरीक़े से आज़ाद न हो जाए तो उसे और उस के बच्चों को हर हालत में अगले बहाली के साल में आज़ाद कर देना है, 55क्यूँकि इस्राईली मेरे ही ख़ादिम हैं। वह मेरे ही ख़ादिम हैं जिन्हें मैं मिस्र से निकाल लाया। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

फ़रमाँबरदारी का अज्र

26 अपने लिए बुत न बनाना। न अपने लिए देवता के मुजस्समे या पत्थर के मख़्सूस किए हुए सतून खड़े करना, न सिज्दा करने के लिए अपने मुल्क में ऐसे पत्थर रखना जिन में देवता की तस्वीर कन्दा की गई हो। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 2सबत का दिन मनाना और मेरे मक़्दिस की ताज़ीम करना। मैं रब हूँ।

3अगर तुम मेरी हिदायात पर चलो और मेरे अह्काम मान कर उन पर अमल करो 4तो मैं वक़्त पर बारिश भेजूँगा, ज़मीन अपनी पैदावार देगी और दरख़्त अपने अपने फल लाएँगे। 5कस्रत के बाइस अनाज की फ़सल की कटाई अंगूर तोड़ते वक़्त तक जारी रहेगी और अंगूर की फ़सल उस वक़्त तक तोड़ी जाएगी जब तक बीज बोने का मौसम आएगा। इतनी ख़ुराक मिलेगी कि तुम कभी भूके नहीं होगे। और तुम अपने मुल्क में मह्फ़ूज़ रहोगे।

6मैं मुल्क को अम्न-ओ-अमान बख़्शूँगा। तुम आराम से लेट जाओगे, क्यूँकि किसी ख़तरे से डरने की ज़रूरत नहीं होगी। मैं वहशी जानवर मुल्क से दूर कर दूँगा, और वह तलवार की क़त्ल-ओ-ग़ारत से बचा रहेगा। 7तुम अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आ कर उन का ताक़्क़ुब करोगे, और वह तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे। 8तुम्हारे पाँच आदमी सौ दुश्मनों का पीछा करेंगे, और तुम्हारे सौ आदमी उन के दस हज़ार आदमियों को भगा देंगे। तुम्हारे दुश्मन तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे।

9मेरी नज़र-ए-करम तुम पर होगी। मैं तुम्हारी औलाद की तादाद बढ़ाऊँगा और तुम्हारे साथ अपना अह्द क़ाइम रखूँगा। 10एक साल इतनी फ़सल होगी कि जब अगली फ़सल की कटाई होगी तो नए अनाज के लिए जगह बनाने की ख़ातिर पुराने अनाज को फैंक देना पड़ेगा। 11मैं तुम्हारे दरमियान अपना मस्कन क़ाइम करूँगा और तुम से घिन नहीं खाऊँगा। 12मैं तुम में फिरूँगा, और तुम मेरी क़ौम होगे।

13मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिस्र से निकाल लाया ताकि तुम्हारी ग़ुलामी की हालत ख़त्म हो जाए। मैं ने तुम्हारे जूए को तोड़ डाला, और अब तुम आज़ाद और सीधे हो कर चल सकते हो।

फ़रमाँबरदार न होने की सज़ा

14लेकिन अगर तुम मेरी नहीं सुनोगे और इन तमाम अह्काम पर नहीं चलोगे, 15अगर तुम मेरी हिदायात को रद्द करके मेरे अह्काम से घिन खाओगे और उन पर अमल न करके मेरा अह्द तोड़ोगे 16तो मैं जवाब में तुम पर अचानक दह्शत तारी कर दूँगा। जिस्म को

ख़त्म करने वाली बीमारियों और बुख़ार से तुम्हारी आँखें ज़ाए हो जाएँगी और तुम्हारी जान छिन जाएगी। जब तुम बीज बोओगे तो बेफ़ाइदा, क्यूँकि दुश्मन उस की फ़सल खा जाएगा। 17मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ हो जाऊँगा, इस लिए तुम अपने दुश्मनों के हाथ से शिकस्त खाओगे। तुम से नफ़रत रखने वाले तुम पर हुकूमत करेंगे। उस वक़्त भी जब कोई तुम्हारा ताक़्क़ुब नहीं करेगा तुम भाग जाओगे।

18अगर तुम इस के बाद भी मेरी न सुनो तो मैं तुम्हारे गुनाहों के सबब से तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 19मैं तुम्हारा सख़्त ग़ुरूर ख़ाक में मिला दूँगा। तुम्हारे ऊपर आसमान लोहे जैसा और तुम्हारे नीचे ज़मीन पीतल जैसी होगी। 20जितनी भी मेहनत करोगे वह बेफ़ाइदा होगी, क्यूँकि तुम्हारे खेतों में फ़सलें नहीं पकेंगी और तुम्हारे दरख़्त फल नहीं लाएँगे।

21अगर तुम फिर भी मेरी मुख़ालफ़त करोगे और मेरी नहीं सुनोगे तो मैं इन गुनाहों के जवाब में तुम्हें इस से भी सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 22मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ जंगली जानवर भेज दूँगा जो तुम्हारे बच्चों को फाड़ खाएँगे और तुम्हारे मवेशी बर्बाद कर देंगे। आख़िर में तुम्हारी तादाद इतनी कम हो जाएगी कि तुम्हारी सड़कें वीरान हो जाएँगी।

23अगर तुम फिर भी मेरी तर्बियत क़बूल न करो बल्कि मेरे मुख़ालिफ़ रहो 24तो मैं ख़ुद तुम्हारे ख़िलाफ़ हो जाऊँगा। इन गुनाहों के जवाब में मैं तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 25मैं तुम पर तलवार चला कर इस का बदला लूँगा कि तुम ने मेरे अह्द को तोड़ा है। जब तुम अपनी हिफ़ाज़त के लिए शहरों में भाग कर जमा होगे तो मैं तुम्हारे दरमियान वबाई बीमारियाँ फैलाऊँगा और तुम्हें दुश्मनों के हाथ में दे दूँगा। 26अनाज की इतनी कमी होगी कि दस औरतें तुम्हारी पूरी रोटी एक ही तनूर में पका सकेंगी, और वह उसे बड़ी एहतियात से तोल तोल कर तक़्सीम करेंगी। तुम खा कर भी भूके रहोगे।

27अगर तुम फिर भी मेरी नहीं सुनोगे बल्कि मेरे मुख़ालिफ़ रहोगे 28तो मेरा ग़ुस्सा भड़केगा और मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ हो कर तुम्हारे गुनाहों के जवाब में तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 29तुम मुसीबत के बाइस अपने बेटे-बेटियों का गोश्त खाओगे। 30मैं तुम्हारी ऊँची जगहों की क़ुर्बानगाहें और तुम्हारी बख़ूर की क़ुर्बानगाहें बर्बाद कर दूँगा। मैं तुम्हारी लाशों के ढेर तुम्हारे बेजान बुतों पर लगाऊँगा और तुम से घिन खाऊँगा। 31मैं तुम्हारे शहरों को खंडरात में बदल कर तुम्हारे मन्दिरों को बर्बाद करूँगा। तुम्हारी क़ुर्बानियों की ख़ुश्बू मुझे पसन्द नहीं आएगी। 32मैं तुम्हारे मुल्क का सत्यानास यूँ करूँगा कि जो दुश्मन उस में आबाद हो जाएंगे उन के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। 33मैं तुम्हें मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुन्तशिर कर दूँगा, लेकिन वहाँ भी अपनी तलवार को हाथ में लिए तुम्हारा पीछा करूँगा। तुम्हारी ज़मीन वीरान होगी और तुम्हारे शहर खंडरात बन जाएंगे। 34उस वक़्त जब तुम अपने दुश्मनों के मुल्क में रहोगे तुम्हारी ज़मीन वीरान हालत में आराम के वह साल मना सकेगी जिन से वह महरूम रही है। 35उन तमाम दिनों में जब वह बर्बाद रहेगी उसे वह आराम मिलेगा जो उसे न मिला जब तुम मुल्क में रहते थे।

36तुम में से जो बच कर अपने दुश्मनों के ममालिक में रहेंगे उन के दिलों पर मैं दह्शत तारी करूँगा। वह हवा के झोंकों से गिरने वाले पत्ते की आवाज़ से चौंक कर भाग जाएंगे। वह फ़रार होंगे गोया कोई हाथ में तलवार लिए उन का ताक़्क़ुब कर रहा हो। और वह गिर कर मर जाएंगे हालाँकि कोई उन का पीछा नहीं कर रहा होगा। 37वह एक दूसरे से टकरा कर लड़खड़ाएँगे गोया कोई तलवार ले कर उन के पीछे चल रहा हो हालाँकि कोई नहीं है। चुनाँचे तुम अपने दुश्मनों का सामना नहीं कर सकोगे। 38तुम दीगर क़ौमों में मुन्तशिर हो

कर हलाक हो जाओगे, और तुम्हारे दुश्मनों की ज़मीन तुम्हें हड़प कर लेगी।

39तुम में से बाक़ी लोग अपने और अपने बापदादा के क़ुसूर के बाइस अपने दुश्मनों के ममालिक में गल सड़ जाएंगे। 40लेकिन एक वक़्त आएगा कि वह अपने और अपने बापदादा का क़ुसूर मान लेंगे। वह मेरे साथ अपनी बेवफ़ाई और वह मुख़ालफ़त तस्लीम करेंगे 41जिस के सबब से मैं उन के ख़िलाफ़ हुआ और उन्हें उन के दुश्मनों के मुल्क में धकेल दिया था। पहले उन का ख़तना सिर्फ़ ज़ाहिरी तौर पर हुआ था, लेकिन अब उन का दिल आजिज़ हो जाएगा और वह अपने क़ुसूर की क़ीमत अदा करेंगे। 42फिर मैं इब्राहीम के साथ अपना अह्द, इस्हाक़ के साथ अपना अह्द और याक़ूब के साथ अपना अह्द याद करूँगा। मैं मुल्क-ए-कनआन भी याद करूँगा। 43लेकिन पहले वह ज़मीन को छोड़ेंगे ताकि वह उन की ग़ैरमौजूदगी में वीरान हो कर आराम के साल मनाए। यूँ इस्राईली अपने क़ुसूर के नतीजे भुगतेंगे, इस सबब से कि उन्हों ने मेरे अह्काम रद्द किए और मेरी हिदायात से घिन खाई। 44इस के बावुजूद भी मैं उन्हें दुश्मनों के मुल्क में छोड़ कर रद्द नहीं करूँगा, न यहाँ तक उन से घिन खाऊँगा कि वह बिलकुल तबाह हो जाएँ। क्यूँकि मैं उन के साथ अपना अह्द नहीं तोड़ने का। मैं रब उन का ख़ुदा हूँ। 45मैं उन की ख़ातिर उन के बापदादा के साथ बंधा हुआ अह्द याद करूँगा, उन लोगों के साथ अह्द जिन्हें मैं दूसरी क़ौमों के देखते देखते मिस्र से निकाल लाया ताकि उन का ख़ुदा हूँ। मैं रब हूँ।"

46रब ने मूसा को इस्राईलियों के लिए यह तमाम हिदायात और अह्काम सीना पहाड़ पर दिए।

मख़्सूस की हुई चीज़ों की वापसी

27 रब ने मूसा से कहा, 2"इस्राईलियों को बताना कि अगर किसी ने मन्नत मान कर किसी को रब के लिए मख़्सूस किया हो तो वह उसे ज़ैल की रक़म दे कर आज़ाद कर सकता है (मुस्तामल सिक्के मक़्दिस के सिक्कों के बराबर हों) : 3उस आदमी के लिए जिस की उम्र 20 और 60 साल के दरमियान है चाँदी के 50 सिक्के, 4इसी उम्र की औरत के लिए चाँदी के 30 सिक्के, 5उस लड़के के लिए जिस की उम्र 5 और 20 साल के दरमियान हो चाँदी के 20 सिक्के, इसी उम्र की लड़की के लिए चाँदी के 10 सिक्के, 6एक माह से ले कर 5 साल तक के लड़के के लिए चाँदी के 5 सिक्के, इसी उम्र की लड़की के लिए चाँदी के 3 सिक्के, 7साठ साल से बड़े आदमी के लिए चाँदी के 15 सिक्के और इसी उम्र की औरत के लिए चाँदी के 10 सिक्के।

8अगर मन्नत मानने वाला मुक़र्ररा रक़म अदा न कर सके तो वह मख़्सूस किए हुए शख़्स को इमाम के पास ले आए। फिर इमाम ऐसी रक़म मुक़र्रर करे जो मन्नत मानने वाला अदा कर सके।

9अगर किसी ने मन्नत मान कर ऐसा जानवर मख़्सूस किया जो रब की क़ुर्बानियों के लिए इस्तेमाल हो सकता है तो ऐसा जानवर मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाता है। 10वह उसे बदल नहीं सकता। न वह अच्छे जानवर की जगह नाक़िस, न नाक़िस जानवर की जगह अच्छा जानवर दे। अगर वह एक जानवर दूसरे की जगह दे तो दोनों मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाते हैं।

11अगर किसी ने मन्नत मान कर कोई नापाक जानवर मख़्सूस किया जो रब की क़ुर्बानियों के लिए इस्तेमाल नहीं हो सकता तो वह उस को इमाम के पास ले आए। 12इमाम उस की रक़म उस की अच्छी और बुरी सिफ़्तों का लिहाज़ करके मुक़र्रर करे। इस मुक़र्ररा क़ीमत में कमी बेशी नहीं हो सकती। 13अगर मन्नत मानने वाला उसे वापस ख़रीदना चाहे

तो वह मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद अदा करे।

14अगर कोई अपना घर रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करे तो इमाम उस की अच्छी और बुरी सिफ़तों का लिहाज़ करके उस की रक़म मुक़र्रर करे। इस मुक़र्ररा क़ीमत में कमी बेशी नहीं हो सकती। 15अगर घर को मख़्सूस करने वाला उसे वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्ररा रक़म जमा 20 फ़ीसद अदा करे।

16अगर कोई अपनी मौरूसी ज़मीन में से कुछ रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करे तो उस की क़ीमत उस बीज की मिक़्दार के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए जो उस में बोना होता है। जिस खेत में 135 किलोग्राम जौ का बीज बोया जाए उस की क़ीमत चाँदी के 50 सिक्के होगी। 17शर्त यह है कि वह अपनी ज़मीन बहाली के साल के ऐन बाद मख़्सूस करे। फिर उस की यही क़ीमत मुक़र्रर की जाए। 18अगर ज़मीन का मालिक उसे बहाली के साल के कुछ देर बाद मख़्सूस करे तो इमाम अगले बहाली के साल तक रहने वाले सालों के मुताबिक़ ज़मीन की क़ीमत मुक़र्रर करे। जितने कम साल बाक़ी हैं उतनी कम उस की क़ीमत होगी। 19अगर मख़्सूस करने वाला अपनी ज़मीन वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद अदा करे। 20अगर मख़्सूस करने वाला अपनी ज़मीन को रब से वापस ख़रीदे बग़ैर उसे किसी और को बेचे तो उसे वापस ख़रीदने का हक़ ख़त्म हो जाएगा। 21अगले बहाली के साल यह ज़मीन मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रहेगी और रब की दाइमी मिलकियत हो जाएगी। चुनाँचे वह इमाम की मिलकियत होगी।

22अगर कोई अपना मौरूसी खेत नहीं बल्कि अपना ख़रीदा हुआ खेत रब के लिए मख़्सूस करे 23तो इमाम अगले बहाली के साल तक रहने वाले सालों का लिहाज़ करके उस की क़ीमत मुक़र्रर करे। खेत का मालिक उसी दिन उस के पैसे अदा करे। यह पैसे रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होंगे। 24बहाली के साल में यह खेत उस शख़्स के पास वापस आएगा जिस ने उसे बेचा था।

25वापस ख़रीदने के लिए मुस्तामल सिक्के मक़्दिस के सिक्कों के बराबर हों। उस के चाँदी के सिक्कों का वज़न 11 ग्राम है।

26लेकिन कोई भी किसी मवेशी का पहलौठा रब के लिए मख़्सूस नहीं कर सकता। वह तो पहले से रब के लिए मख़्सूस है। इस में कोई फ़र्क़ नहीं कि वह गाय, बैल या भेड़ हो। 27अगर उस ने कोई नापाक जानवर मख़्सूस किया हो तो वह उसे मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद के लिए वापस ख़रीद सकता है। अगर वह उसे वापस न ख़रीदे तो वह मुक़र्ररा क़ीमत के लिए बेचा जाए।

28लेकिन अगर किसी ने अपनी मिलकियत में से कुछ ग़ैरमशरूत तौर पर रब के लिए मख़्सूस किया है तो उसे बेचा या वापस नहीं ख़रीदा जा सकता, ख़्वाह वह इन्सान, जानवर या ज़मीन हो। जो इस तरह मख़्सूस किया गया हो वह रब के लिए निहायत मुक़द्दस है। 29इसी तरह जिस शख़्स को तबाही के लिए मख़्सूस किया गया है उस का फ़िद्या नहीं दिया जा सकता। लाज़िम है कि उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।

30हर फ़सल का दसवाँ हिस्सा रब का है, चाहे वह अनाज हो या फल। वह रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है। 31अगर कोई अपनी फ़सल का दसवाँ हिस्सा छुड़ाना चाहता है तो वह इस के लिए उस की मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद दे। 32इसी तरह गाय-बैलों और भेड़-बकरियों का दसवाँ हिस्सा भी रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है, हर दसवाँ जानवर जो गल्लाबान के डंडे के नीचे से गुज़रेगा। 33यह जानवर चुनने से पहले उन का मुआइना न किया जाए कि कौन से जानवर अच्छे या कमज़ोर हैं। यह भी न करना कि दसवें हिस्से के किसी जानवर के बदले कोई

और जानवर दिया जाए। अगर फिर भी उसे बदला जाए तो दोनों जानवर रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होंगे। और उन्हें वापस ख़रीदा नहीं जा सकता।”

34 यह वह अह्काम हैं जो रब ने सीना पहाड़ पर मूसा को इस्राईलियों के लिए दिए।

गिनती

इस्राईलियों की पहली मर्दुमशुमारी

1 इस्राईलियों को मिस्र से निकले हुए एक
साल से ज़्यादा अर्सा गुज़र गया था।
अब तक वह दश्त-ए-सीना में थे। दूसरे साल
के दूसरे महीने के पहले दिन रब मुलाक़ात के
ख़ैमे में मूसा से हमकलाम हुआ। उस ने कहा,
2 "तू और हारून तमाम इस्राईलियों की
मर्दुमशुमारी कुंबों और आबाई घरानों के
मुताबिक़ करना। उन तमाम मर्दों की फ़हरिस्त
बनाना 3 जो कम अज़ कम बीस साल के और
जंग लड़ने के क़ाबिल हों। 4 इस में हर क़बीले
के एक ख़ानदान का सरपरस्त तुम्हारी मदद
करे। 5 यह उन के नाम हैं :
रूबिन के क़बीले से इलीसूर बिन शदियूर,
6 शमाऊन के क़बीले से सलूमीएल बिन
सूरीशद्दी,
7 यहूदाह के क़बीले से नह्सोन बिन
अम्मीनदाब,
8 इश्कार के क़बीले से नतनीएल बिन ज़ुग़र,
9 ज़बूलून के क़बीले से इलियाब बिन हेलोन,
10 यूसुफ़ के बेटे इफ़्राईम के क़बीले से
इलीसमा बिन अम्मीहूद,
यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले से
जमलीएल बिन फ़दाह्सूर,
11 बिनयमीन के क़बीले से अबिदान बिन
जिदाऊनी,
12 दान के क़बीले से अख़ीअज़र बिन
अम्मीशद्दी,
13 आशर के क़बीले से फ़जईएल बिन
अक्रान,
14 जद के क़बीले से इलियासफ़ बिन
दऊएल,
15 नफ़्ताली के क़बीले से अख़ीरा बिन
एनान।"
16 यही मर्द जमाअत से इस काम के लिए
बुलाए गए। वह अपने क़बीलों के राहनुमा
और कुंबों के सरपरस्त थे। 17 इन की मदद से
मूसा और हारून ने 18 उसी दिन पूरी जमाअत
को इकट्ठा किया। हर इस्राईली मर्द जो कम
अज़ कम 20 साल का था रजिस्टर में दर्ज
किया गया। रजिस्टर की तरतीब उन के कुंबों
और आबाई घरानों के मुताबिक़ थी।
19 सब कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब
ने हुक्म दिया था। मूसा ने सीना के रेगिस्तान
में लोगों की मर्दुमशुमारी की। नतीजा यह
निकला :
20-21 रूबिन के क़बीले के 46,500 मर्द,
22-23 शमाऊन के क़बीले के 59,300 मर्द,
24-25 जद के क़बीले के 45,650 मर्द,
26-27 यहूदाह के क़बीले के 74,600 मर्द,
28-29 इश्कार के क़बीले के 54,400 मर्द,
30-31 ज़बूलून के क़बीले के 57,400 मर्द,

32-33यूसुफ़ के बेटे इफ़्राईम के क़बीले के
40,500 मर्द,
34-35यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले के
32,200 मर्द,
36-37बिनयमीन के क़बीले के 35,400 मर्द,
38-39दान के क़बीले के 62,700 मर्द,
40-41आशर के क़बीले के 41,500 मर्द,
42-43नफ़्ताली के क़बीले के 53,400 मर्द।
44मूसा, हारून और क़बीलों के बारह
राहनुमाओं ने इन तमाम आदमियों को गिना।
45-46उन की पूरी तादाद 6,03,550 थी।
47लेकिन लावियों की मर्दुमशुमारी न
हुई, 48क्यूँकि रब ने मूसा से कहा था,
49"इस्राईलियों की मर्दुमशुमारी में लावियों
को शामिल न करना। 50इस के बजाए उन्हें
शरीअत की सुकूनतगाह और उस का सारा
सामान सँभालने की ज़िम्मादारी देना। वह
सफ़र करते वक़्त यह ख़ैमा और उस का सारा
सामान उठा कर ले जाएँ, उस की ख़िदमत के
लिए हाज़िर रहें और रुकते वक़्त उसे अपने
ख़ैमों से घेरे रखें। 51रवाना होते वक़्त वही ख़ैमे
को समेटें और रुकते वक़्त वही उसे लगाएँ।
अगर कोई और उस के क़रीब आए तो उसे
सज़ा-ए-मौत दी जाएगी। 52बाक़ी इस्राईली
ख़ैमागाह में अपने अपने दस्ते के मुताबिक़
और अपने अपने अलम के इर्दगिर्द अपने
ख़ैमे लगाएँ। 53लेकिन लावी अपने ख़ैमों से
शरीअत की सुकूनतगाह को घेर लें ताकि मेरा
ग़ज़ब किसी ग़लत शख़्स के नज़्दीक आने
से इस्राईलियों की जमाअत पर नाज़िल न हो
जाए। यूँ लावियों को शरीअत की सुकूनतगाह
को सँभालना है।"
54इस्राईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने
मूसा को हुक्म दिया था।

ख़ैमागाह में क़बीलों की तरतीब

2 रब ने मूसा और हारून से कहा 2कि
इस्राईली अपने ख़ैमे कुछ फ़ासिले पर
मुलाक़ात के ख़ैमे के इर्दगिर्द लगाएँ। हर एक
अपने अपने अलम और अपने अपने आबाई
घराने के निशान के साथ ख़ैमाज़न हो।
3इन हिदायात के मुताबिक़ मक़्दिस के
मशरिक़ में यहूदाह का अलम था जिस
के इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले,
यहूदाह का क़बीला जिस का कमाँडर नह्सोन
बिन अम्मीनदाब था, 4और जिस के लश्कर
के 74,600 फ़ौजी थे। 5दूसरे, इश्कार का
क़बीला जिस का कमाँडर नतनीएल बिन
ज़ुग़र था, 6और जिस के लश्कर के 54,400
फ़ौजी थे। 7तीसरे, ज़बूलून का क़बीला जिस
का कमाँडर इलियाब बिन हेलोन था 8और
जिस के लश्कर के 57,400 फ़ौजी थे।
9तीनों क़बीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद
1,86,400 थी। रवाना होते वक़्त यह आगे
चलते थे।
10मक़्दिस के जुनूब में रूबिन का अलम था
जिस के इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले,
रूबिन का क़बीला जिस का कमाँडर इलीसूर
बिन शदियूर था, 11और जिस के 46,500
फ़ौजी थे। 12दूसरे, शमाऊन का क़बीला जिस
का कमाँडर सलूमीएल बिन सूरीशद्दी था,
13और जिस के 59,300 फ़ौजी थे। 14तीसरे,
जद का क़बीला जिस का कमाँडर इलियासफ़
बिन दऊएल था, 15और जिस के 45,650
फ़ौजी थे। 16तीनों क़बीलों के फ़ौजियों की
कुल तादाद 1,51,450 थी। रवाना होते वक़्त
यह मशरिक़ी क़बीलों के पीछे चलते थे।
17इन जुनूबी क़बीलों के बाद लावी
मुलाक़ात का ख़ैमा उठा कर क़बीलों के ऐन
बीच में चलते थे। क़बीले उस तरतीब से रवाना
होते थे जिस तरतीब से वह अपने ख़ैमे लगाते
थे। हर क़बीला अपने अलम के पीछे चलता
था।
18मक़्दिस के मग़रिब में इफ़्राईम का अलम
था जिस के इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे।
पहले, इफ़्राईम का क़बीला जिस का कमाँडर
इलीसमा बिन अम्मीहूद था, 19और जिस
के 40,500 फ़ौजी थे। 20दूसरे, मनस्सी का

क़बीला जिस का कमाँडर जमलीएल बिन फ़दाह्सूर था, 21और जिस के 32,200 फ़ौजी थे। 22तीसरे, बिनयमीन का क़बीला जिस का कमाँडर अबिदान बिन जिदाऊनी था, 23और जिस के 35,400 फ़ौजी थे। 24तीनों क़बीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,08,100 थी। रवाना होते वक़्त यह जुनूबी क़बीलों के पीछे चलते थे।

25मक़्दिस के शिमाल में दान का अलम था जिस के इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले, दान का क़बीला जिस का कमाँडर अख़ीअज़र बिन अम्मीशद्दी था, 26और जिस के 62,700 फ़ौजी थे। 27दूसरे, आशर का क़बीला जिस का कमाँडर फ़जईएल बिन अक्रान था, 28और जिस के 41,500 फ़ौजी थे। 29तीसरे, नफ़्ताली का क़बीला जिस का कमाँडर अख़ीरा बिन एनान था, 30और जिस के 53,400 फ़ौजी थे। 31तीनों क़बीलों की कुल तादाद 1,57,600 थी। वह आख़िर में अपना अलम उठा कर रवाना होते थे।

32पूरी ख़ैमागाह के फ़ौजियों की कुल तादाद 6,03,550 थी। 33सिर्फ़ लावी इस तादाद में शामिल नहीं थे, क्यूँकि रब ने मूसा को हुक्म दिया था कि उन की भर्ती न की जाए।

34यूँ इस्राईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ किया जो रब ने मूसा को दी थीं। उन के मुताबिक़ ही वह अपने झंडों के इर्दगिर्द अपने ख़ैमे लगाते थे और उन के मुताबिक़ ही अपने कुंबों और आबाई घरानों के साथ रवाना होते थे।

हारून के बेटे

3 यह हारून और मूसा के ख़ानदान का बयान है। उस वक़्त का ज़िक्र है जब रब ने सीना पहाड़ पर मूसा से बात की। 2हारून के चार बेटे थे। बड़ा बेटा नदब था, फिर अबीहू, इलीअज़र और इतमर। 3यह इमाम थे जिन को मसह करके इस ख़िदमत का इख़तियार दिया गया था। 4लेकिन नदब और अबीहू उस वक़्त मर गए जब उन्हों ने दश्त-ए-सीना में रब के हुज़ूर नाजाइज़ आग पेश की। चूँकि वह बेऔलाद थे इस लिए हारून के जीते जी सिर्फ़ इलीअज़र और इतमर इमाम की ख़िदमत सरअन्जाम देते थे।

लावियों की मक़्दिस में ज़िम्मादारी

5रब ने मूसा से कहा, 6“लावी के क़बीले को ला कर हारून की ख़िदमत करने की ज़िम्मादारी दे। 7उन्हें उस के लिए और पूरी जमाअत के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे की ख़िदमात सँभालना है। 8वह मुलाक़ात के ख़ैमे का सामान सँभालें और तमाम इस्राईलियों के लिए मक़्दिस के फ़राइज़ अदा करें। 9तमाम इस्राईलियों में से सिर्फ़ लावियों को हारून और उस के बेटों की ख़िदमत के लिए मुक़र्रर कर। 10लेकिन सिर्फ़ हारून और उस के बेटों को इमाम की हैसियत हासिल है। जो भी बाक़ियों में से उन की ज़िम्मादारियाँ उठाने की कोशिश करेगा उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी।”

11रब ने मूसा से यह भी कहा, 12“मैं ने इस्राईलियों में से लावियों को चुन लिया है। वह तमाम इस्राईली पहलौठों के इवज़ मेरे लिए मख़्सूस हैं, 13क्यूँकि तमाम पहलौठे मेरे ही हैं। जिस दिन मैं ने मिस्र में तमाम पहलौठों को मार दिया उस दिन मैं ने इस्राईल के पहलौठों को अपने लिए मख़्सूस किया, ख़्वाह वह इन्सान के थे या हैवान के। वह मेरे ही हैं। मैं रब हूँ।”

लावियों की मर्दुमशुमारी

14रब ने सीना के रेगिस्तान में मूसा से कहा, 15“लावियों को गिन कर उन के आबाई घरानों और कुंबों के मुताबिक़ रजिस्टर में दर्ज करना। हर बेटे को गिनना है जो एक माह या इस से ज़ाइद का है।” 16मूसा ने ऐसा ही किया।

17लावी के तीन बेटे जैर्सोन, क़िहात और
मिरारी थे। 18जैर्सोन के दो कुंबे उस के बेटों
लिब्नी और सिमई के नाम रखते थे। 19क़िहात
के चार कुंबे उस के बेटों अम्राम, इज़्हार, हब्रून
और उज़्ज़ीएल के नाम रखते थे। 20मिरारी के
दो कुंबे उस के बेटों महली और मूशी के नाम
रखते थे। ग़रज़ लावी के क़बीले के कुंबे उस
के पोतों के नाम रखते थे।

21जैर्सोन के दो कुंबों बनाम लिब्नी और
सिमई 22के 7,500 मर्द थे जो एक माह या इस
से ज़ाइद के थे। 23उन्हें अपने ख़ैमे मग़रिब में
मक़्दिस के पीछे लगाने थे। 24उन का राहनुमा
इलियासफ़ बिन लाएल था, 25और वह ख़ैमे
को सँभालते थे यानी उस की पोशिशें, ख़ैमे के
दरवाज़े का पर्दा, 26ख़ैमे और क़ुर्बानगाह की
चारदीवारी के पर्दे, चारदीवारी के दरवाज़े का
पर्दा और तमाम रस्से। इन चीज़ों से मुताल्लिक़
सारी ख़िदमत उन की ज़िम्मादारी थी।

27क़िहात के चार कुंबों बनाम अम्राम,
इज़्हार, हब्रून और उज़्ज़ीएल 28के 8,600
मर्द थे जो एक माह या इस से ज़ाइद के थे
और जिन को मक़्दिस की ख़िदमत करनी
थी। 29उन्हें अपने डेरे मक़्दिस के जुनूब
में डालने थे। 30उन का राहनुमा इलीसफ़न
बिन उज़्ज़ीएल था, 31और वह यह चीज़ें
सँभालते थे : अह्द का सन्दूक़, मेज़,
शमादान, क़ुर्बानगाहें, वह बर्तन और साज़-
ओ-सामान जो मक़्दिस में इस्तेमाल होता
था और मुक़द्दसतरीन कमरे का पर्दा। इन
चीज़ों से मुताल्लिक़ सारी ख़िदमत उन की
ज़िम्मादारी थी। 32हारून इमाम का बेटा
इलीअज़र लावियों के तमाम राहनुमाओं पर
मुक़र्रर था। वह उन तमाम लोगों का इंचार्ज
था जो मक़्दिस की देख-भाल करते थे।

33मिरारी के दो कुंबों बनाम महली और
मूशी 34के 6,200 मर्द थे जो एक माह या इस
से ज़ाइद के थे। 35उन का राहनुमा सूरीएल
बिन अबीख़ैल था। उन्हें अपने डेरे मक़्दिस
के शिमाल में डालने थे, 36और वह यह चीज़ें
सँभालते थे : ख़ैमे के तख़्ते, उस के शहतीर,
खम्बे, पाए और इस तरह का सारा सामान।
इन चीज़ों से मुताल्लिक़ सारी ख़िदमत उन
की ज़िम्मादारी थी। 37वह चारदीवारी के खम्बे,
पाए, मेख़ें और रस्से भी सँभालते थे।

38मूसा, हारून और उन के बेटों को अपने
डेरे मशरिक़ में मक़्दिस के सामने डालने थे।
उन की ज़िम्मादारी मक़्दिस में बनी इस्राईल
के लिए ख़िदमत करना थी। उन के इलावा
जो भी मक़्दिस में दाख़िल होने की कोशिश
करता उसे सज़ा-ए-मौत देनी थी।

39उन लावी मर्दों की कुल तादाद जो एक
माह या इस से ज़ाइद के थे 22,000 थी। रब
के कहने पर मूसा और हारून ने उन्हें कुंबों के
मुताबिक़ गिन कर रजिस्टर में दर्ज किया।

लावी के क़बीले के मर्द पहलौठों के इवज़ी हैं

40रब ने मूसा से कहा, "तमाम इस्राईली
पहलौठों को गिनना जो एक माह या इस
से ज़ाइद के हैं और उन के नाम रजिस्टर में
दर्ज करना। 41उन तमाम पहलौठों की जगह
लावियों को मेरे लिए मख़्सूस करना। इसी
तरह इस्राईलियों के मवेशियों के पहलौठों की
जगह लावियों के मवेशी मेरे लिए मख़्सूस
करना। मैं रब हूँ।" 42मूसा ने ऐसा ही किया
जैसा रब ने उसे हुक्म दिया। उस ने तमाम
इस्राईली पहलौठे 43जो एक माह या इस से
ज़ाइद के थे गिन लिए। उन की कुल तादाद
22,273 थी।

44रब ने मूसा से कहा, 45"मुझे तमाम
इस्राईली पहलौठों की जगह लावियों को पेश
करना। इसी तरह मुझे इस्राईलियों के मवेशियों
की जगह लावियों के मवेशी पेश करना। लावी
मेरे ही हैं। मैं रब हूँ। 46लावियों की निस्बत
बाक़ी इस्राईलियों के 273 पहलौठे ज़्यादा हैं।
उन में से 47हर एक के इवज़ चाँदी के पाँच
सिक्के ले जो मक़्दिस के वज़न के मुताबिक़

हों (फ़ी सिक्का तक़रीबन 11 ग्राम)। 48यह
पैसे हारून और उस के बेटों को देना।”
49मूसा ने ऐसा ही किया। 50यूँ उस ने चाँदी
के 1,365 सिक्के (तक़रीबन 16 किलोग्राम)
जमा करके 51हारून और उस के बेटों को
दिए, जिस तरह रब ने उसे हुक्म दिया था।

क़िहातियों की ज़िम्मादारियाँ

4 रब ने मूसा और हारून से कहा,
2“लावी के क़बीले में से क़िहातियों की
मर्दुमशुमारी उन के कुंबों और आबाई घरानों
के मुताबिक़ करना। 3उन तमाम मर्दों को
रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से ले कर 50
साल के हैं और मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत
करने के लिए आ सकते हैं। 4क़िहातियों की
ख़िदमत मुक़द्दसतरीन कमरे की देख-भाल है।
5जब ख़ैमे को सफ़र के लिए समेटना है
तो हारून और उस के बेटे दाख़िल हो कर
मुक़द्दसतरीन कमरे का पर्दा उतारें और उसे
शरीअत के सन्दूक़ पर डाल दें। 6इस पर वह
तख़स की खालों का ग़िलाफ़ और आख़िर में
पूरी तरह नीले रंग का कपड़ा बिछाएँ। इस
के बाद वह सन्दूक़ को उठाने की लकड़ियाँ
लगाएँ।
7वह उस मेज़ पर भी नीले रंग का कपड़ा
बिछाएँ जिस पर रब को रोटी पेश की जाती है।
उस पर थाल, प्याले, मै की नज़रें पेश करने के
बर्तन और मर्तबान रखे जाएँ। जो रोटी हमेशा
मेज़ पर होती है वह भी उस पर रहे। 8हारून
और उस के बेटे इन तमाम चीज़ों पर क़िर्मिज़ी
रंग का कपड़ा बिछा कर आख़िर में उन के
ऊपर तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डालें।
इस के बाद वह मेज़ को उठाने की लकड़ियाँ
लगाएँ।
9वह शमादान और उस के सामान पर यानी
उस के चराग़, बत्ती कतरने की क़ैंचियों, जलते
कोएले के छोटे बर्तनों और तेल के बर्तनों पर
नीले रंग का कपड़ा रखें। 10यह सब कुछ वह
तख़स की खालों के ग़िलाफ़ में लपेटें और उसे
उठा कर ले जाने के लिए एक चौखटे पर रखें।
11वह बख़ूर जलाने की सोने की क़ुर्बानगाह
पर भी नीले रंग का कपड़ा बिछा कर उस पर
तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डालें और फिर
उसे उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ। 12वह सारा
सामान जो मुक़द्दस कमरे में इस्तेमाल होता है
ले कर नीले रंग के कपड़े में लपेटें, उस पर
तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डालें और उसे
उठा कर ले जाने के लिए एक चौखटे पर रखें।
13फिर वह जानवरों को जलाने की
क़ुर्बानगाह को राख से साफ़ करके उस पर
अर्ग़वानी रंग का कपड़ा बिछाएँ। 14उस पर
वह क़ुर्बानगाह की ख़िदमत के लिए सारा
ज़रूरी सामान रखें यानी छिड़काओ के कटोरे,
जलते हुए कोएले के बर्तन, बेलचे और काँटे।
इस सामान पर वह तख़स की खालों का
ग़िलाफ़ डाल कर क़ुर्बानगाह को उठाने की
लकड़ियाँ लगाएँ।
15सफ़र के लिए रवाना होते वक़्त यह
सब कुछ उठा कर ले जाना क़िहातियों की
ज़िम्मादारी है। लेकिन लाज़िम है कि पहले
हारून और उस के बेटे यह तमाम मुक़द्दस
चीज़ें ढाँपें। क़िहाती इन में से कोई भी चीज़ न
छुएँ वर्ना मर जाएंगे।
16हारून इमाम का बेटा इलीअज़र पूरे
मुक़द्दस ख़ैमे और उस के सामान का इंचार्ज
हो। इस में चराग़ों का तेल, बख़ूर, ग़ल्ला की
रोज़ाना नज़र और मसह का तेल भी शामिल
है।”
17रब ने मूसा और हारून से कहा,
18“ख़बरदार रहो कि क़िहात के कुंबे लावी के
क़बीले में से मिटने न पाएँ। 19चुनाँचे जब वह
मुक़द्दसतरीन चीज़ों के पास आएँ तो हारून
और उस के बेटे हर एक को उस सामान के
पास ले जाएँ जो उसे उठा कर ले जाना है
ताकि वह न मरें बल्कि जीते रहें। 20क़िहाती
एक लम्हे के लिए भी मुक़द्दस चीज़ें देखने के
लिए अन्दर न जाएँ, वर्ना वह मर जाएंगे।”

जैर्सोनियों की ज़िम्मादारियाँ

21फिर रब ने मूसा से कहा, 22“जैर्सोन की
औलाद की मर्दुमशुमारी भी उन के आबाई
घरानों और कुंबों के मुताबिक़ करना। 23उन
तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30
से ले कर 50 साल के हैं और मुलाक़ात के
ख़ैमे में ख़िदमत के लिए आ सकते हैं। 24वह
यह चीज़ें उठा कर ले जाने के ज़िम्मादार हैं :
25मुलाक़ात का ख़ैमा, उस की छत, छत पर
रखी हुई तख़स की खाल की पोशिश, ख़ैमे के
दरवाज़े का पर्दा, 26ख़ैमे और क़ुर्बानगाह की
चारदीवारी के पर्दे, चारदीवारी के दरवाज़े का
पर्दा, उस के रस्से और उसे लगाने का बाक़ी
सामान। वह उन तमाम कामों के ज़िम्मादार
हैं जो इन चीज़ों से मुन्सलिक हैं। 27जैर्सोनियों
की पूरी ख़िदमत हारून और उस के बेटों की
हिदायात के मुताबिक़ हो। ख़बरदार रहो कि
वह सब कुछ ऐन हिदायात के मुताबिक़ उठा
कर ले जाएँ। 28यह सब मुलाक़ात के ख़ैमे में
जैर्सोनियों की ज़िम्मादारियाँ हैं। इस काम में
हारून इमाम का बेटा इतमर उन पर मुक़र्रर
है।”

मिरारियों की ज़िम्मादारियाँ

29रब ने कहा, “मिरारी की औलाद की
मर्दुमशुमारी भी उन के आबाई घरानों और
कुंबों के मुताबिक़ करना। 30उन तमाम मर्दों
को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से ले कर 50
साल के हैं और मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत
के लिए आ सकते हैं। 31वह मुलाक़ात के
ख़ैमे की यह चीज़ें उठा कर ले जाने के
ज़िम्मादार हैं : दीवार के तख़्ते, शहतीर,
खम्बे और पाए, 32फिर ख़ैमे की चारदीवारी
के खम्बे, पाए, मेख़ें, रस्से और यह चीज़ें
लगाने का सामान। हर एक को तफ़्सील से
बताना कि वह क्या क्या उठा कर ले जाए।
33यह सब कुछ मिरारियों की मुलाक़ात के
ख़ैमे में ज़िम्मादारियों में शामिल है। इस काम
में हारून इमाम का बेटा इतमर उन पर मुक़र्रर
हो।”

लावियों की मर्दुमशुमारी

34मूसा, हारून और जमाअत के
राहनुमाओं ने क़िहातियों की मर्दुमशुमारी उन
के कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ की।
35-37उन्हों ने उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में
दर्ज किया जो 30 से ले कर 50 साल के
थे और जो मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत
कर सकते थे। उन की कुल तादाद 2,750
थी। मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही
किया जैसा रब ने मूसा की मारिफ़त फ़रमाया
था। 38-41फिर जैर्सोनियों की मर्दुमशुमारी उन
के कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़
हुई। ख़िदमत के लाइक़ मर्दों की कुल तादाद
2,630 थी। मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा
ही किया जैसा रब ने मूसा के ज़रीए फ़रमाया
था। 42-45फिर मिरारियों की मर्दुमशुमारी उन
के कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़
हुई। ख़िदमत के लाइक़ मर्दों की कुल तादाद
3,200 थी। मूसा और हारून ने सब कुछ
वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा के ज़रीए
फ़रमाया था। 46-48लावियों के उन मर्दों की
कुल तादाद 8,580 थी जिन्हें मुलाक़ात के
ख़ैमे में ख़िदमत करना और सफ़र करते वक़्त
उसे उठा कर ले जाना था।

49मूसा ने रब के हुक्म के मुताबिक़ हर एक
को उस की अपनी अपनी ज़िम्मादारी सौंपी
और उसे बताया कि उसे क्या क्या उठा कर
ले जाना है। यूँ उन की मर्दुमशुमारी रब के उस
हुक्म के ऐन मुताबिक़ की गई जो उस ने मूसा
की मारिफ़त दिया था।

नापाक लोग ख़ैमागाह में नहीं रह सकते

5 रब ने मूसा से कहा, 2“इस्राईलियों
को हुक्म दे कि हर उस शख़्स को
ख़ैमागाह से बाहर कर दो जिस को वबाई
जिल्दी बीमारी है, जिस के ज़ख़्मों से माए

निकलता रहता है या जो किसी लाश को छूने से नापाक है। 3ख़्वाह मर्द हो या औरत, सब को ख़ैमागाह के बाहर भेज देना ताकि वह ख़ैमागाह को नापाक न करें जहाँ मैं तुम्हारे दरमियान सुकूनत करता हूँ।" 4इस्राईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को कहा था। उन्हों ने रब के हुक्म के ऐन मुताबिक़ इस तरह के तमाम लोगों को ख़ैमागाह से बाहर कर दिया।

ग़लत काम का मुआवज़ा

5रब ने मूसा से कहा, 6"इस्राईलियों को हिदायत देना कि जो भी किसी से ग़लत सुलूक करे वह मेरे साथ बेवफ़ाई करता है और क़ुसूरवार है, ख़्वाह मर्द हो या औरत। 7लाज़िम है कि वह अपना गुनाह तस्लीम करे और उस का पूरा मुआवज़ा दे बल्कि मुतअस्सिरा शख़्स का नुक़्सान पूरा करने के इलावा 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। 8लेकिन अगर वह शख़्स जिस का क़ुसूर किया गया था मर चुका हो और उस का कोई वारिस न हो जो यह मुआवज़ा वसूल कर सके तो फिर उसे रब को देना है। इमाम को यह मुआवज़ा उस मेंढे के इलावा मिलेगा जो क़ुसूरवार अपने कफ़्फ़ारा के लिए देगा। 9-10नीज़ इमाम को इस्राईलियों की क़ुर्बानियों में से वह कुछ मिलना है जो उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर उसे दिया जाता है। यह हिस्सा सिर्फ़ इमामों को ही मिलना है।"

ज़िना के शक पर अल्लाह का फ़ैसला

11रब ने मूसा से कहा, 12"इस्राईलियों को बताना, हो सकता है कि कोई शादीशुदा औरत भटक कर अपने शौहर से बेवफ़ा हो जाए और 13किसी और से हमबिसतर हो कर नापाक हो जाए। उस के शौहर ने उसे नहीं देखा, क्यूँकि यह पोशीदगी में हुआ है और न किसी ने उसे पकड़ा, न इस का कोई गवाह है। 14अगर शौहर को अपनी बीवी की वफ़ादारी पर शक हो और वह ग़ैरत खाने लगे, लेकिन यक़ीन से नहीं कह सकता कि मेरी बीवी क़ुसूरवार है कि नहीं 15तो वह अपनी बीवी को इमाम के पास ले आए। साथ साथ वह अपनी बीवी के लिए क़ुर्बानी के तौर पर जौ का डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा ले आए। इस पर न तेल उंडेला जाए, न बख़ूर डाला जाए, क्यूँकि ग़ल्ला की यह नज़र ग़ैरत की नज़र है जिस का मक़्सद है कि पोशीदा क़ुसूर ज़ाहिर हो जाए। 16इमाम औरत को क़रीब आने दे और रब के सामने खड़ा करे। 17वह मिट्टी का बर्तन मुक़द्दस पानी से भर कर उस में मक़्दिस के फ़र्श की कुछ ख़ाक डाले। 18फिर वह औरत को रब को पेश करके उस के बाल खुलवाए और उस के हाथों पर मैदे की नज़र रखे। इमाम के अपने हाथ में कड़वे पानी का वह बर्तन हो जो लानत का बाइस है।

19फिर वह औरत को क़सम खिला कर कहे, 'अगर कोई और आदमी आप से हमबिसतर नहीं हुआ है और आप नापाक नहीं हुई हैं तो इस कड़वे पानी की लानत का आप पर कोई असर न हो। 20लेकिन अगर आप भटक कर अपने शौहर से बेवफ़ा हो गई हैं और किसी और से हमबिसतर हो कर नापाक हो गई हैं 21तो रब आप को आप की क़ौम के सामने लानती बनाए। आप बाँझ हो जाएँ और आप का पेट फूल जाए। 22जब लानत का यह पानी आप के पेट में उतरे तो आप बाँझ हो जाएँ और आप का पेट फूल जाए।' इस पर औरत कहे, 'आमीन, ऐसा ही हो।'

23फिर इमाम यह लानत लिख कर काग़ज़ को बर्तन के पानी में यूँ धो दे कि उस पर लिखी हुई बातें पानी में घुल जाएँ। 24बाद में वह औरत को यह पानी पिलाए ताकि वह उस के जिस्म में जा कर उसे लानत पहुँचाए। 25लेकिन पहले इमाम उस के हाथों में से ग़ैरत की क़ुर्बानी ले कर उसे ग़ल्ला की नज़र के तौर पर रब के सामने हिलाए और फिर क़ुर्बानगाह के पास ले आए। 26उस पर वह मुट्ठी भर

यादगारी की क़ुर्बानी के तौर पर जलाए। इस
के बाद वह औरत को पानी पिलाए। 27अगर
वह अपने शौहर से बेवफ़ा थी और नापाक हो
गई है तो वह बाँझ हो जाएगी, उस का पेट फूल
जाएगा और वह अपनी क़ौम के सामने लानती
ठहरेगी। 28लेकिन अगर वह पाक-साफ़ है तो
उसे सज़ा नहीं दी जाएगी और वह बच्चे जन्म
देने के क़ाबिल रहेगी।

29-30चुनाँचे ऐसा ही करना है जब शौहर
ग़ैरत खाए और उसे अपनी बीवी पर ज़िना का
शक हो। बीवी को क़ुर्बानगाह के सामने खड़ा
किया जाए और इमाम यह सब कुछ करे।
31इस सूरत में शौहर बेक़ुसूर ठहरेगा, लेकिन
अगर उस की बीवी ने वाक़ई ज़िना किया हो
तो उसे अपने गुनाह के नतीजे बर्दाश्त करने
पड़ेंगे।"

जो अपने आप को मख़्सूस करते हैं

6 रब ने मूसा से कहा, 2"इस्राईलियों को
हिदायत देना कि अगर कोई आदमी या
औरत मन्नत मान कर अपने आप को एक
मुक़र्ररा वक़्त के लिए रब के लिए मख़्सूस करे
3तो वह मै या कोई और नशाआवर चीज़ न
पिए। न वह अंगूर या किसी और चीज़ का
सिरका पिए, न अंगूर का रस। वह अंगूर या
किशमिश न खाए। 4जब तक वह मख़्सूस
है वह अंगूर की कोई भी पैदावार न खाए,
यहाँ तक कि अंगूर के बीज या छिलके भी न
खाए। 5जब तक वह अपनी मन्नत के मुताबिक़
मख़्सूस है वह अपने बाल न कटवाए। जितनी
देर के लिए उस ने अपने आप को रब के लिए
मख़्सूस किया है उतनी देर तक वह मुक़द्दस
है। इस लिए वह अपने बाल बढ़ने दे। 6जब
तक वह मख़्सूस है वह किसी लाश के क़रीब
न जाए, 7चाहे वह उस के बाप, माँ, भाई
या बहन की लाश क्यूँ न हो। क्यूँकि इस से
वह नापाक हो जाएगा जबकि अभी तक उस
की मख़्सूसियत लम्बे बालों की सूरत में नज़र
आती है। 8वह अपनी मख़्सूसियत के दौरान
रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है।

9अगर कोई अचानक मर जाए जब मख़्सूस
शख़्स उस के क़रीब हो तो उस के मख़्सूस
बाल नापाक हो जाएंगे। ऐसी सूरत में लाज़िम
है कि वह अपने आप को पाक-साफ़ करके
सातवें दिन अपने सर को मुंडवाए। 10आठवें
दिन वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर ले
कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आए
और इमाम को दे। 11इमाम इन में से एक को
गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाए और दूसरे
को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर। यूँ वह
उस के लिए कफ़्फ़ारा देगा जो लाश के क़रीब
होने से नापाक हो गया है। उसी दिन वह अपने
सर को दुबारा मख़्सूस करे 12और अपने आप
को मुक़र्ररा वक़्त के लिए दुबारा रब के लिए
मख़्सूस करे। वह क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर
एक साल का भेड़ का बच्चा पेश करे। जितने
दिन उस ने पहले मख़्सूसियत की हालत में
गुज़ारे हैं वह शुमार नहीं किए जा सकते क्यूँकि
वह मख़्सूसियत की हालत में नापाक हो गया
था। वह दुबारा पहले दिन से शुरू करे।

13शरीअत के मुताबिक़ जब मख़्सूस शख़्स
का मुक़र्ररा वक़्त गुज़र गया हो तो पहले उसे
मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर लाया जाए।
14वहाँ वह रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानी
के लिए भेड़ का एक बेऐब यकसाला नर
बच्चा, गुनाह की क़ुर्बानी के लिए एक बेऐब
यकसाला भेड़ और सलामती की क़ुर्बानी के
लिए एक बेऐब मेंढा पेश करे। 15इस के इलावा
वह एक टोकरी में बेख़मीरी रोटियाँ जिन में
बेहतरीन मैदा और तेल मिलाया गया हो और
बेख़मीरी रोटियाँ जिन पर तेल लगाया गया हो
मुताल्लिक़ा ग़ल्ला की नज़र और मै की नज़र
के साथ 16रब को पेश करे। पहले इमाम गुनाह
की क़ुर्बानी और भस्म होने वाली क़ुर्बानी रब
के हुज़ूर चढ़ाए। 17फिर वह मेंढे को बेख़मीरी
रोटियों के साथ सलामती की क़ुर्बानी के तौर
पर पेश करे। इमाम ग़ल्ला की नज़र और मै की

नज़र भी चढ़ाए। 18इस दौरान मख़्सूस शख़्स मुलाक़ात के ख़ैमे पर अपने मख़्सूस किए गए सर को मुंडवा कर तमाम बाल सलामती की क़ुर्बानी की आग में फैंके।

19फिर इमाम मेंढे का एक पका हुआ शाना और टोकरी में से दोनों क़िस्मों की एक एक रोटी ले कर मख़्सूस शख़्स के हाथों पर रखे। 20इस के बाद वह यह चीज़ें वापस ले कर उन्हें हिलाने की क़ुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। यह एक मुक़द्दस क़ुर्बानी है जो इमाम का हिस्सा है। सलामती की क़ुर्बानी का हिलाया हुआ सीना और उठाई हुई रान भी इमाम का हिस्सा हैं। क़ुर्बानी के इख़्तिताम पर मख़्सूस किए हुए शख़्स को मै पीने की इजाज़त है।

21जो अपने आप को रब के लिए मख़्सूस करता है वह ऐसा ही करे। लाज़िम है कि वह इन हिदायात के मुताबिक़ तमाम क़ुर्बानियाँ पेश करे। अगर गुन्जाइश हो तो वह और भी पेश कर सकता है। बहरहाल लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत और यह हिदायात पूरी करे।"

इमाम की बरकत

22रब ने मूसा से कहा, 23"हारून और उस के बेटों को बता देना कि वह इस्राईलियों को यूँ बरकत दें,

24'रब तुझे बरकत दे और तेरी हिफ़ाज़त करे।

25रब अपने चेहरे का मेहरबान नूर तुझ पर चमकाए और तुझ पर रहम करे।

26रब की नज़र-ए-करम तुझ पर हो, और वह तुझे सलामती बख़्शे।'

27यूँ वह मेरा नाम ले कर इस्राईलियों को बरकत दें। फिर मैं उन्हें बरकत दूँगा।"

मक़्दिस की मख़्सूसियत के हदिए

7 जिस दिन मक़्दिस मुकम्मल हुआ उसी दिन मूसा ने उसे मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया। इस के लिए उस ने ख़ैमे, उस के तमाम सामान, क़ुर्बानगाह और उस के तमाम सामान पर तेल छिड़का। 2-3फिर क़बीलों के बारह सरदार मक़्दिस के लिए हदिए ले कर आए। यह वही राहनुमा थे जिन्हों ने मर्दुमशुमारी के वक़्त मूसा की मदद की थी। उन्हों ने छत वाली छ: बैल गाड़ियाँ और बारह बैल ख़ैमे के सामने रब को पेश किए, दो दो सरदारों की तरफ़ से एक बैलगाड़ी और हर एक सरदार की तरफ़ से एक बैल।

4रब ने मूसा से कहा, 5"यह तोह्फ़े क़बूल करके मुलाक़ात के ख़ैमे के काम के लिए इस्तेमाल कर। उन्हें लावियों में उन की ख़िदमत की ज़रूरत के मुताबिक़ तक़्सीम करना।" 6चुनाँचे मूसा ने बैल गाड़ियाँ और बैल लावियों को दे दिए। 7उस ने दो बैल गाड़ियाँ चार बैलों समेत जैर्सोनियों को 8और चार बैल गाड़ियाँ आठ बैलों समेत मिरारियों को दीं। मिरारी हारून इमाम के बेटे इतमर के तहत ख़िदमत करते थे। 9लेकिन मूसा ने क़िहातियों को न बैल गाड़ियाँ और न बैल दिए। वजह यह थी कि जो मुक़द्दस चीज़ें उन के सपुर्द थीं वह उन को कंधों पर उठा कर ले जानी थीं।

10बारह सरदार क़ुर्बानगाह की मख़्सूसियत के मौक़े पर भी हदिए ले आए। उन्हों ने अपने हदिए क़ुर्बानगाह के सामने पेश किए। 11रब ने मूसा से कहा, "सरदार बारह दिन के दौरान बारी बारी अपने हदिए पेश करें।" 12पहले दिन यहूदाह के सरदार नह्सोन बिन अम्मीनदाब की बारी थी। उस के हदिए यह थे : 13चाँदी का थाल जिस का वज़न डेढ़ किलोग्राम था और छिड़काओ का चाँदी का कटोरा जिस का वज़न 800 ग्राम था। दोनों ग़ल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाए गए बेहतरीन मैदे से भरे हुए थे। 14इन के इलावा नह्सोन ने यह चीज़ें पेश कीं : सोने का प्याला जिस का वज़न 110 ग्राम था और जो बख़ूर से भरा हुआ था, 15एक जवान बैल, एक मेंढा, भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए भेड़ का

एक यकसाला बच्चा, 16गुनाह की क़ुर्बानी के
लिए एक बकरा 17और सलामती की क़ुर्बानी
के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे और
भेड़ के पाँच यकसाला बच्चे।
18-23अगले ग्यारह दिन बाक़ी सरदार भी
यही हदिए मक़्दिस के पास ले आए। दूसरे
दिन इश्कार के सरदार नतनीएल बिन ज़ुग़र
की बारी थी, 24-29तीसरे दिन ज़बूलून के
सरदार इलियाब बिन हेलोन की, 30-47चौथे
दिन रूबिन के सरदार इलीसूर बिन शदियूर
की, पाँचवें दिन शमाऊन के सरदार सलूमीएल
बिन सूरीशद्दी की, छटे दिन जद के सरदार
इलियासफ़ बिन दऊएल की, 48-53सातवें दिन
इफ़्राईम के सरदार इलीसमा बिन अम्मीहूद
की, 54-71आठवें दिन मनस्सी के सरदार
जमलीएल बिन फ़दाह्सूर की, नवें दिन
बिनयमीन के सरदार अबिदान बिन जिदाऊनी
की, दसवें दिन दान के सरदार अख़ीअज़र
बिन अम्मीशद्दी की, 72-83ग्यारहवें दिन आशर
के सरदार फ़जईएल बिन अक्रान की और
बारहवें दिन नफ़्ताली के सरदार अख़ीरा बिन
एनान की बारी थी।
84इस्राईल के इन सरदारों ने मिल कर
क़ुर्बानगाह की मस्ह्सूसियत के लिए चाँदी के
12 थाल, छिड़काओ के चाँदी के 12 कटोरे
और सोने के 12 प्याले पेश किए। 85हर थाल
का वज़न डेढ़ किलोग्राम और छिड़काओ के
हर कटोरे का वज़न 800 ग्राम था। इन चीज़ों
का कुल वज़न तक़रीबन 28 किलोग्राम था।
86बख़ूर से भरे हुए सोने के प्यालों का कुल
वज़न तक़रीबन डेढ़ किलोग्राम था (फ़ी प्याला
110 ग्राम)। 87सरदारों ने मिल कर भस्म होने
वाली क़ुर्बानी के लिए 12 जवान बैल, 12
मेंढे और भेड़ के 12 यकसाला बच्चे उन की
ग़ल्ला की नज़रों समेत पेश किए। गुनाह की
क़ुर्बानी के लिए उन्हों ने 12 बकरे पेश किए
88और सलामती की क़ुर्बानी के लिए 24 बैल,
60 मेंढे, 60 बकरे और भेड़ के 60 यकसाला
बच्चे। इन तमाम जानवरों को क़ुर्बानगाह की
मस्ह्सूसियत के मौक़े पर चढ़ाया गया।
89जब मूसा मुलाक़ात के ख़ैमे में रब के साथ
बात करने के लिए दाख़िल होता था तो वह
रब की आवाज़ अह्द के सन्दूक़ के ढकने पर
से यानी दो करूबी फ़रिश्तों के दरमियान से
सुनता था।

शमादान पर चराग़

8 रब ने मूसा से कहा, 2"हारून को
बताना, 'तुझे सात चराग़ों को शमादान
पर यूँ रखना है कि वह शमादान का सामने
वाला हिस्सा रौशन करें'।"
3हारून ने ऐसा ही किया। जिस तरह रब
ने मूसा को हुक्म दिया था उसी तरह उस ने
चराग़ों को रख दिया ताकि वह सामने वाला
हिस्सा रौशन करें। 4शमादान पाए से ले कर
ऊपर की कलियों तक सोने के एक घड़े हुए
टुकड़े का बना हुआ था। मूसा ने उसे उस
नमूने के ऐन मुताबिक़ बनवाया जो रब ने उसे
दिखाया था।

लावियों की मस्ह्सूसियत

5रब ने मूसा से कहा, 6"लावियों को
दीगर इस्राईलियों से अलग करके पाक-साफ़
करना। 7इस के लिए गुनाह से पाक करने
वाला पानी उन पर छिड़क कर उन्हें हुक्म
देना कि अपने जिस्म के पूरे बाल मुंडवाओ
और अपने कपड़े धोओ। यूँ वह पाक-साफ़
हो जाएंगे। 8फिर वह एक जवान बैल चुनें और
साथ की ग़ल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ
मिलाया गया बेहतरीन मैदा लें। तू ख़ुद भी एक
जवान बैल चुन। वह गुनाह की क़ुर्बानी के लिए
होगा।
9इस के बाद लावियों को मुलाक़ात के
ख़ैमे के सामने खड़ा करके इस्राईल की पूरी
जमाअत को वहाँ जमा करना। 10जब लावी
रब के सामने खड़े हों तो बाक़ी इस्राईली उन
के सरों पर अपने हाथ रखें। 11फिर हारून

लावियों को रब के सामने पेश करे। उन्हें इस्राईलियों की तरफ़ से हिलाई हुई क़ुर्बानी की हैसियत से पेश किया जाए ताकि वह रब की ख़िदमत कर सकें। 12फिर लावी अपने हाथ दोनों बैलों के सरों पर रखें। एक बैल को गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर और दूसरे को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाओ ताकि लावियों का कफ़्फ़ारा दिया जाए।

13लावियों को इस तरीक़े से हारून और उस के बेटों के सामने खड़ा करके रब को हिलाई हुई क़ुर्बानी के तौर पर पेश करना है। 14उन्हें बाक़ी इस्राईलियों से अलग करने से वह मेरा हिस्सा बनेंगे। 15इस के बाद ही वह मुलाक़ात के ख़ैमे में आ कर ख़िदमत करें, क्यूँकि अब वह ख़िदमत करने के लाइक़ हैं। उन्हें पाक-साफ़ करके हिलाई हुई क़ुर्बानी के तौर पर पेश करने का सबब यह है 16कि लावी इस्राईलियों में से वह हैं जो मुझे पूरे तौर पर दिए गए हैं। मैं ने उन्हें इस्राईलियों के तमाम पहलौठों की जगह ले लिया है। 17क्यूँकि इस्राईल में हर पहलौठा मेरा है, ख़्वाह वह इन्सान का हो या हैवान का। उस दिन जब मैं ने मिस्रियों के पहलौठों को मार दिया मैं ने इस्राईल के पहलौठों को अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया। 18इस सिलसिले में मैं ने लावियों को इस्राईलियों के तमाम पहलौठों की जगह ले कर 19उन्हें हारून और उस के बेटों को दिया है। वह मुलाक़ात के ख़ैमे में इस्राईलियों की ख़िदमत करें और उन के लिए कफ़्फ़ारा का इन्तिज़ाम क़ाइम रखें ताकि जब इस्राईली मक़्दिस के क़रीब आएँ तो उन को वबा से मारा न जाए।"

20मूसा, हारून और इस्राईलियों की पूरी जमाअत ने एहतियात से रब की लावियों के बारे में हिदायात पर अमल किया। 21लावियों ने अपने आप को गुनाहों से पाक-साफ़ करके अपने कपड़ों को धोया। फिर हारून ने उन्हें रब के सामने हिलाई हुई क़ुर्बानी के तौर पर पेश किया और उन का कफ़्फ़ारा दिया ताकि वह पाक हो जाएँ। 22इस के बाद लावी मुलाक़ात के ख़ैमे में आए ताकि हारून और उस के बेटों के तहत ख़िदमत करें। यूँ सब कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

23रब ने मूसा से यह भी कहा, 24"लावी 25 साल की उम्र में मुलाक़ात के ख़ैमे में अपनी ख़िदमत शुरू करें 25और 50 साल की उम्र में रिटायर हो जाएँ। 26इस के बाद वह मुलाक़ात के ख़ैमे में अपने भाइयों की मदद कर सकते हैं, लेकिन ख़ुद ख़िदमत नहीं कर सकते। तुझे लावियों को इन हिदायात के मुताबिक़ उन की अपनी अपनी ज़िम्मादारियाँ देनी हैं।"

रेगिस्तान में ईद-ए-फ़सह

9 इस्राईलियों को मिस्र से निकले एक साल हो गया था। दूसरे साल के पहले महीने में रब ने दश्त-ए-सीना में मूसा से बात की।

2"लाज़िम है कि इस्राईली ईद-ए-फ़सह को मुक़र्ररा वक़्त पर मनाएँ, 3यानी इस महीने के चौधवें दिन, सूरज के ग़ुरूब होने के ऐन बाद। उसे तमाम क़वाइद के मुताबिक़ मनाना।" 4चुनाँचे मूसा ने इस्राईलियों से कहा कि वह ईद-ए-फ़सह मनाएँ, 5और उन्हों ने ऐसा ही किया। उन्हों ने ईद-ए-फ़सह को पहले महीने के चौधवें दिन सूरज के ग़ुरूब होने के ऐन बाद मनाया। उन्हों ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

6लेकिन कुछ आदमी नापाक थे, क्यूँकि उन्हों ने लाश छू ली थी। इस वजह से वह उस दिन ईद-ए-फ़सह न मना सके। वह मूसा और हारून के पास आ कर 7कहने लगे, "हम ने लाश छू ली है, इस लिए नापाक हैं। लेकिन हमें इस सबब से ईद-ए-फ़सह को मनाने से क्यूँ रोका जाए? हम भी मुक़र्ररा वक़्त पर बाक़ी इस्राईलियों के साथ रब की क़ुर्बानी पेश करना चाहते हैं।" 8मूसा ने जवाब दिया, "यहाँ

मेरे इन्तिज़ार में खड़े रहो। मैं मालूम करता हूँ कि रब तुम्हारे बारे में क्या हुक्म देता है।"

9रब ने मूसा से कहा, 10"इस्राईलियों को बता देना कि अगर तुम या तुम्हारी औलाद में से कोई ईद-ए-फ़सह के दौरान लाश छूने से नापाक हो या किसी दूरदराज़ इलाक़े में सफ़र कर रहा हो, तो भी वह ईद मना सकता है। 11ऐसा शख़्स उसे ऐन एक माह के बाद मना कर लेले के साथ बेख़मीरी रोटी और कड़वा साग-पात खाए। 12खाने में से कुछ भी अगली सुब्ह तक बाक़ी न रहे। जानवर की कोई भी हड्डी न तोड़ना। मनाने वाला ईद-ए-फ़सह के पूरे फ़राइज़ अदा करे। 13लेकिन जो पाक होने और सफ़र न करने के बावुजूद भी ईद-ए-फ़सह को न मनाए उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए, क्यूँकि उस ने मुक़र्ररा वक़्त पर रब को क़ुर्बानी पेश नहीं की। उस शख़्स को अपने गुनाह का नतीजा भुगतना पड़ेगा। 14अगर कोई परदेसी तुम्हारे दरमियान रहते हुए रब के सामने ईद-ए-फ़सह मनाना चाहे तो उसे इजाज़त है। शर्त यह है कि वह पूरे फ़राइज़ अदा करे। परदेसी और देसी के लिए ईद-ए-फ़सह मनाने के फ़राइज़ एक जैसे हैं।"

मुलाक़ात के ख़ैमे पर बादल का सतून

15जिस दिन शरीअत के मुक़द्दस ख़ैमे को खड़ा किया गया उस दिन बादल आ कर उस पर छा गया। रात के वक़्त बादल आग की सूरत में नज़र आया। 16इस के बाद यही सूरत-ए-हाल रही कि बादल उस पर छाया रहता और रात के दौरान आग की सूरत में नज़र आता। 17जब भी बादल ख़ैमे पर से उठता इस्राईली रवाना हो जाते। जहाँ भी बादल उतर जाता वहाँ इस्राईली अपने डेरे डालते। 18इस्राईली रब के हुक्म पर रवाना होते और उस के हुक्म पर डेरे डालते। जब तक बादल मक़्दिस पर छाया रहता उस वक़्त तक वह वहीं ठहरते। 19कभी कभी बादल बड़ी देर तक ख़ैमे पर ठहरा रहता। तब इस्राईली रब का हुक्म मान कर रवाना न होते। 20कभी कभी बादल सिर्फ़ दो चार दिन के लिए ख़ैमे पर ठहरता। फिर वह रब के हुक्म के मुताबिक़ ही ठहरते और रवाना होते थे। 21कभी कभी बादल सिर्फ़ शाम से ले कर सुब्ह तक ख़ैमे पर ठहरता। जब वह सुब्ह के वक़्त उठता तो इस्राईली भी रवाना होते थे। जब भी बादल उठता वह भी रवाना हो जाते। 22जब तक बादल मुक़द्दस ख़ैमे पर छाया रहता उस वक़्त तक इस्राईली रवाना न होते, चाहे वह दो दिन, एक माह, एक साल या इस से ज़्यादा अर्सा मक़्दिस पर छाया रहता। लेकिन जब वह उठता तो इस्राईली भी रवाना हो जाते। 23वह रब के हुक्म पर ख़ैमे लगाते और उस के हुक्म पर रवाना होते थे। वह वैसा ही करते थे जैसा रब मूसा की मारिफ़त फ़रमाता था।

10 रब ने मूसा से कहा, 2"चाँदी के दो बिगुल घड़ कर बनवा ले। उन्हें जमाअत को जमा करने और क़बीलों को रवाना करने के लिए इस्तेमाल कर। 3जब दोनों को देर तक बजाया जाए तो पूरी जमाअत मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आ कर तेरे सामने जमा हो जाए। 4लेकिन अगर एक ही बजाया जाए तो सिर्फ़ कुंबों के बुज़ुर्ग तेरे सामने जमा हो जाएँ। 5अगर उन की आवाज़ सिर्फ़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मक़्दिस के मशरिक़ में मौजूद क़बीले रवाना हो जाएँ। 6फिर जब उन की आवाज़ दूसरी बार थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मक़्दिस के जुनूब में मौजूद क़बीले रवाना हो जाएँ। जब उन की आवाज़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो यह रवाना होने का एलान होगा। 7इस के मुक़ाबले में जब उन की आवाज़ देर तक सुनाई दे तो यह इस बात का एलान होगा कि जमाअत जमा हो जाए।

8बिगुल बजाने की ज़िम्मादारी हारून के बेटों यानी इमामों को दी जाए। यह तुम्हारे और आने वाली नस्लों के लिए दाइमी उसूल हो। 9उन की आवाज़ उस वक़्त भी थोड़ी

देर के लिए सुना दो जब तुम अपने मुल्क में किसी ज़ालिम दुश्मन से जंग लड़ने के लिए निकलोगे। तब रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद करके दुश्मन से बचाएगा।

10इसी तरह उन की आवाज़ मक़्दिस में ख़ुशी के मौक़ों पर सुनाई दे यानी मुक़र्ररा ईदों और नए चाँद की ईदों पर। इन मौक़ों पर वह भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाते वक़्त बजाए जाएँ। फिर तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद करेगा। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।"

सीना पहाड़ से रवानगी

11इस्राईलियों को मिस्र से निकले एक साल से ज़ाइद अर्सा हो चुका था। दूसरे साल के बीसवें दिन बादल मुलाक़ात के ख़ैमे पर से उठा। 12फिर इस्राईली मुक़र्ररा तरतीब के मुताबिक़ दश्त-ए-सीना से रवाना हुए। चलते चलते बादल फ़ारान के रेगिस्तान में उतर आया।

13उस वक़्त वह पहली दफ़ा उस तरतीब से रवाना हुए जो रब ने मूसा की मारिफ़त मुक़र्रर की थी। 14पहले यहूदाह के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल पड़े। तीनों का कमाँडर नह्सोन बिन अम्मीनदाब था। 15साथ चलने वाले क़बीले इश्कार का कमाँडर नतनीएल बिन ज़ुग़र था। 16ज़बूलून का क़बीला भी साथ चला जिस का कमाँडर इलियाब बिन हेलोन था। 17इस के बाद मुलाक़ात का ख़ैमा उतारा गया। जैर्सोनी और मिरारी उसे उठा कर चल दिए। 18इन लावियों के बाद रूबिन के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चलने लगे। तीनों का कमाँडर इलीसूर बिन शदियूर था। 19साथ चलने वाले क़बीले शमाऊन का कमाँडर सलूमीएल बिन सूरीशद्दी था। 20जद का क़बीला भी साथ चला जिस का कमाँडर इलियासफ़ बिन दऊएल था। 21फिर लावियों में से क़िहाती मक़्दिस का सामान उठा कर रवाना हुए। लाज़िम था कि उन के अगली मन्ज़िल पर पहुँचने तक मुलाक़ात का ख़ैमा लगा दिया गया हो। 22इस के बाद इफ़्राईम के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल दिए। उन का कमाँडर इलीसमा बिन अम्मीहूद था। 23इफ़्राईम के साथ चलने वाले क़बीले मनस्सी का कमाँडर जमलीएल बिन फ़दाह्सूर था। 24बिनयमीन का क़बीला भी साथ चला जिस का कमाँडर अबिदान बिन जिदाऊनी था। 25आख़िर में दान के तीन दस्ते अक़्बी मुहाफ़िज़ के तौर पर अपने अलम के तहत रवाना हुए। उन का कमाँडर अख़ीअज़र बिन अम्मीशद्दी था। 26दान के साथ चलने वाले क़बीले आशर का कमाँडर फ़जईएल बिन अक्रान था। 27नफ़्ताली का क़बीला भी साथ चला जिस का कमाँडर अख़ीरा बिन एनान था। 28इस्राईली इसी तरतीब से रवाना हुए।

मूसा होबाब को साथ चलने पर मज्बूर करता है

29मूसा ने अपने मिदियानी सुसर रऊएल यानी यित्रो के बेटे होबाब से कहा, "हम उस जगह के लिए रवाना हो रहे हैं जिस का वादा रब ने हम से किया है। हमारे साथ चलें! हम आप पर एह्सान करेंगे, क्यूँकि रब ने इस्राईल पर एह्सान करने का वादा किया है।" 30लेकिन होबाब ने जवाब दिया, "मैं साथ नहीं जाऊँगा बल्कि अपने मुल्क और रिश्तेदारों के पास वापस चला जाऊँगा।" 31मूसा ने कहा, "मेहरबानी करके हमें न छोड़ें। क्यूँकि आप ही जानते हैं कि हम रेगिस्तान में कहाँ कहाँ अपने डेरे डाल सकते हैं। आप रेगिस्तान में हमें रास्ता दिखा सकते हैं। 32अगर आप हमारे साथ जाएँ तो हम आप को उस एह्सान में शरीक करेंगे जो रब हम पर करेगा।"

अह्द के सन्दूक़ का सफ़र

33चुनाँचे उन्हों ने रब के पहाड़ से रवाना हो कर तीन दिन सफ़र किया। इस दौरान रब

का अह्द का सन्दूक़ उन के आगे आगे चला
ताकि उन के लिए आराम करने की जगह
मालूम करे। 34जब कभी वह रवाना होते तो
रब का बादल दिन के वक़्त उन के ऊपर
रहता। 35सन्दूक़ के रवाना होते वक़्त मूसा
कहता, “ऐ रब, उठ। तेरे दुश्मन तित्तर-बित्तर
हो जाएँ। तुझ से नफ़रत करने वाले तेरे सामने
से फ़रार हो जाएँ।” 36और जब भी वह रुक
जाता तो मूसा कहता, “ऐ रब, इस्राईल के
हज़ारों ख़ानदानों के पास वापस आ।”

तबएरा में रब की आग

11 एक दिन लोग ख़ूब शिकायत
करने लगे। जब यह शिकायतें रब
तक पहुँचीं तो उसे ग़ुस्सा आया और उस की
आग उन के दरमियान भड़क उठी। जलते
जलते उस ने ख़ैमागाह का एक किनारा भस्म
कर दिया। 2लोग मदद के लिए मूसा के पास
आ कर चिल्लाने लगे तो उस ने रब से दुआ
की, और आग बुझ गई। 3उस मक़ाम का नाम
तबएरा यानी जलना पड़ गया, क्यूँकि रब की
आग उन के दरमियान जल उठी थी।

मूसा 70 राहनुमा चुनता है

4इस्राईलियों के साथ जो अजनबी सफ़र
कर रहे थे वह गोश्त खाने की शदीद आर्ज़ू
करने लगे। तब इस्राईली भी रो पड़े और कहने
लगे, “कौन हमें गोश्त खिलाएगा? 5मिस्र में
हम मछली मुफ़्त खा सकते थे। हाय, वहाँ
के खीरे, तरबूज़, गन्दने, प्याज़ और लहसन
कितने अच्छे थे! 6लेकिन अब तो हमारी जान
सूख गई है। यहाँ बस मन ही मन नज़र आता
रहता है।”

7मन धनिए के दानों की मानिन्द था, और
उस का रंग गूगल के गूँद की मानिन्द था।
8-9रात के वक़्त वह ख़ैमागाह में ओस के साथ
ज़मीन पर गिरता था। सुब्ह के वक़्त लोग
इधर उधर घूमते फिरते हुए उसे जमा करते थे।
फिर वह उसे चक्की में पीस कर या उखली में
कूट कर उबालते या रोटी बनाते थे। उस का
ज़ाइक़ा ऐसी रोटी का सा था जिस में ज़ैतून
का तेल डाला गया हो।

10तमाम ख़ानदान अपने अपने ख़ैमे के
दरवाज़े पर रोने लगे तो रब को शदीद ग़ुस्सा
आया। उन का शोर मूसा को भी बहुत बुरा
लगा। 11उस ने रब से पूछा, “तू ने अपने
ख़ादिम के साथ इतना बुरा सुलूक क्यूँ किया?
मैं ने किस काम से तुझे इतना नाराज़ किया कि
तू ने इन तमाम लोगों का बोझ मुझ पर डाल
दिया? 12क्या मैं ने हामिला हो कर इस पूरी
क़ौम को जन्म दिया कि तू मुझ से कहता है,
‘इसे उस तरह उठा कर ले चलना जिस तरह
आया शीरख़्वार बच्चे को उठा कर हर जगह
साथ लिए फिरती है। इसी तरह इसे उस मुल्क
में ले जाना जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर
इन के बापदादा से किया है।’ 13ऐ अल्लाह,
मैं इन तमाम लोगों को कहाँ से गोश्त मुहय्या
करूँ? वह मेरे सामने रोते रहते हैं कि हमें
खाने के लिए गोश्त दो। 14मैं अकेला इन तमाम
लोगों की ज़िम्मादारी नहीं उठा सकता। यह
बोझ मेरे लिए हद से ज़्यादा भारी है। 15अगर
तू इस पर इसरार करे तो फिर बेहतर है कि
अभी मुझे मार दे ताकि मैं अपनी तबाही न
देखूँ।”

16जवाब में रब ने मूसा से कहा, “मेरे पास
इस्राईल के 70 बुज़ुर्ग जमा कर। सिर्फ़ ऐसे
लोग चुन जिन के बारे में तुझे मालूम है कि
वह लोगों के बुज़ुर्ग और निगहबान हैं। उन्हें
मुलाक़ात के ख़ैमे के पास ले आ। वहाँ वह
तेरे साथ खड़े हो जाएँ, 17तो मैं उतर कर तेरे
साथ हमकलाम हूँगा। उस वक़्त मैं उस रूह में
से कुछ लूँगा जो मैं ने तुझ पर नाज़िल किया
था और उसे उन पर नाज़िल करूँगा। तब
वह क़ौम का बोझ उठाने में तेरी मदद करेंगे
और तू इस में अकेला नहीं रहेगा। 18लोगों को
बताना, ‘अपने आप को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
करो, क्यूँकि कल तुम गोश्त खाओगे। रब ने
तुम्हारी सुनी जब तुम रो पड़े कि कौन हमें

गोश्त खिलाएगा, मिस्र में हमारी हालत बेहतर थी। अब रब तुम्हें गोश्त मुहय्या करेगा और तुम उसे खाओगे। 19तुम उसे न सिर्फ़ एक, दो या पाँच दिन खाओगे बल्कि 10 या 20 दिन से भी ज़्यादा अर्से तक। 20तुम एक पूरा महीना ख़ूब गोश्त खाओगे, यहाँ तक कि वह तुम्हारी नाक से निकलेगा और तुम्हें उस से घिन आएगी। और यह इस सबब से होगा कि तुम ने रब को जो तुम्हारे दरमियान है रद्द किया और रोते रोते उस के सामने कहा कि हम क्यूँ मिस्र से निकले'।"

21लेकिन मूसा ने एतिराज़ किया, "अगर क़ौम के पैदल चलने वाले गिने जाएँ तो छः लाख हैं। तू किस तरह हमें एक माह तक गोश्त मुहय्या करेगा? 22क्या गाय-बैलों या भेड़-बकरियों को इतनी मिक़्दार में ज़बह किया जा सकता है कि काफ़ी हो? अगर समुन्दर की तमाम मछलियाँ उन के लिए पकड़ी जाएँ तो क्या काफ़ी होंगी?"

23रब ने कहा, "क्या रब का इख़तियार कम है? अब तू ख़ुद देख लेगा कि मेरी बातें दुरुस्त हैं कि नहीं।"

24चुनाँचे मूसा ने वहाँ से निकल कर लोगों को रब की यह बातें बताईं। उस ने उन के बुज़ुर्गों में से 70 को चुन कर उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के इर्दगिर्द खड़ा कर दिया। 25तब रब बादल में उतर कर मूसा से हमकलाम हुआ। जो रूह उस ने मूसा पर नाज़िल किया था उस में से उस ने कुछ ले कर उन 70 बुज़ुर्गों पर नाज़िल किया। जब रूह उन पर आया तो वह नबुव्वत करने लगे। लेकिन ऐसा फिर कभी न हुआ।

26अब ऐसा हुआ कि इन सत्तर बुज़ुर्गों में से दो ख़ैमागाह में रह गए थे। उन के नाम इल्दाद और मेदाद थे। उन्हें चुना तो गया था लेकिन वह मुलाक़ात के ख़ैमे के पास नहीं आए थे। इस के बावुजूद रूह उन पर भी नाज़िल हुआ और वह ख़ैमागाह में नबुव्वत करने लगे। 27एक नौजवान भाग कर मूसा के पास आया और कहा, "इल्दाद और मेदाद ख़ैमागाह में ही नबुव्वत कर रहे हैं।"

28यशूअ बिन नून जो जवानी से मूसा का मददगार था बोल उठा, "मूसा मेरे आक़ा, उन्हें रोक दें!" 29लेकिन मूसा ने जवाब दिया, "क्या तू मेरी ख़ातिर ग़ैरत खा रहा है? काश रब के तमाम लोग नबी होते और वह उन सब पर अपना रूह नाज़िल करता!" 30फिर मूसा और इस्राईल के बुज़ुर्ग ख़ैमागाह में वापस आए।

31तब रब की तरफ़ से ज़ोरदार हवा चलने लगी जिस ने समुन्दर को पार करने वाले बटेरों के ग़ोल धकेल कर ख़ैमागाह के इर्दगिर्द ज़मीन पर फैंक दिए। उन के ग़ोल तीन फ़ुट ऊँचे और ख़ैमागाह के चारों तरफ़ 30 किलोमीटर तक पड़े रहे। 32उस पूरे दिन और रात और अगले पूरे दिन लोग निकल कर बटेरें जमा करते रहे। हर एक ने कम अज़ कम दस बड़ी टोकरियाँ भर लीं। फिर उन्हों ने उन का गोश्त ख़ैमे के इर्दगिर्द ज़मीन पर फैला दिया ताकि वह ख़ुश्क हो जाए।

33लेकिन गोश्त के पहले टुकड़े अभी मुँह में थे कि रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और उस ने उन में सख़्त वबा फैलने दी। 34चुनाँचे मक़ाम का नाम क़ब्रोत-हत्तावा यानी 'लालच की क़ब्रें' रखा गया, क्यूँकि वहाँ उन्हों ने उन लोगों को दफ़न किया जो गोश्त के लालच में आ गए थे।

35इस के बाद इस्राईली क़ब्रोत-हत्तावा से रवाना हो कर हसीरात पहुँच गए। वहाँ वह ख़ैमाज़न हुए।

मरियम और हारून की मुख़ालफ़त

12 एक दिन मरियम और हारून मूसा के ख़िलाफ़ बातें करने लगे। वजह यह थी कि उस ने कूश की एक औरत से शादी की थी। 2उन्हों ने पूछा, "क्या रब सिर्फ़ मूसा की मारिफ़त बात करता है? क्या उस ने हम

से भी बात नहीं की?" रब ने उन की यह बातें सुनीं।

3लेकिन मूसा निहायत हलीम था। दुनिया में उस जैसा हलीम कोई नहीं था। 4अचानक रब मूसा, हारून और मरियम से मुख़ातिब हुआ, "तुम तीनों बाहर निकल कर मुलाक़ात के ख़ैमे के पास आओ।"

तीनों वहाँ पहुँचे। 5तब रब बादल के सतून में उतर कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़ा हुआ। उस ने हारून और मरियम को बुलाया तो दोनों आए। 6उस ने कहा, "मेरी बात सुनो। जब तुम्हारे दरमियान नबी होता है तो मैं अपने आप को रोया में उस पर ज़ाहिर करता हूँ या ख़्वाब में उस से मुख़ातिब होता हूँ। 7लेकिन मेरे ख़ादिम मूसा की और बात है। उसे मैं ने अपने पूरे घराने पर मुक़र्रर किया है। 8उस से मैं रू-ब-रू हमकलाम होता हूँ। उस से मैं मुअम्मों के ज़रीए नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात करता हूँ। वह रब की सूरत देखता है। तो फिर तुम मेरे ख़ादिम के ख़िलाफ़ बातें करने से क्यूँ न डरे?"

9रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और वह चला गया। 10जब बादल का सतून ख़ैमे से दूर हुआ तो मरियम की जिल्द बर्फ़ की मानिन्द सफ़ेद थी। वह कोढ़ का शिकार हो गई थी। हारून उस की तरफ़ मुड़ा तो उस की हालत देखी 11और मूसा से कहा, "मेरे आक़ा, मेहरबानी करके हमें इस गुनाह की सज़ा न दें जो हमारी हमाक़त के बाइस सरज़द हुआ है। 12मरियम को इस हालत में न छोड़ें। वह तो ऐसे बच्चे की मानिन्द है जो मुर्दा पैदा हुआ हो, जिस के जिस्म का आधा हिस्सा गल चुका हो।"

13तब मूसा ने पुकार कर रब से कहा, "ऐ अल्लाह, मेहरबानी करके उसे शिफ़ा दे।" 14रब ने जवाब में मूसा से कहा, "अगर मरियम का बाप उस के मुँह पर थूकता तो क्या वह पूरे हफ़्ते तक शर्म महसूस न करती? उसे एक हफ़्ते के लिए ख़ैमागाह के बाहर बन्द रख। इस के बाद उसे वापस लाया जा सकता है।"

15चुनाँचे मरियम को एक हफ़्ते के लिए ख़ैमागाह के बाहर बन्द रखा गया। लोग उस वक़्त तक सफ़र के लिए रवाना न हुए जब तक उसे वापस न लाया गया। 16जब वह वापस आई तो इस्राईली हसीरात से रवाना हो कर फ़ारान के रेगिस्तान में ख़ैमाज़न हुए।

मुल्क-ए-कनआन में इस्राईली जासूस

13 फिर रब ने मूसा से कहा, 2"कुछ आदमी मुल्क-ए-कनआन का जाइज़ा लेने के लिए भेज दे, क्यूँकि मैं उसे इस्राईलियों को देने को हूँ। हर क़बीले में से एक राहनुमा को चुन कर भेज दे।"

3मूसा ने रब के कहने पर उन्हें दश्त-ए-फ़ारान से भेजा। सब इस्राईली राहनुमा थे। 4उन के नाम यह हैं :

रूबिन के क़बीले से सम्मूअ बिन ज़क्कूर,
5शमाऊन के क़बीले से साफ़त बिन होरी,
6यहूदाह के क़बीले से कालिब बिन यफ़ुन्ना,
7इश्कार के क़बीले से इजाल बिन यूसुफ़,
8इफ़्राईम के क़बीले से होसेअ बिन नून,
9बिनयमीन के क़बीले से फ़ल्ती बिन रफ़ू,
10ज़बूलून के क़बीले से जद्दीएल बिन सोदी,
11यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले से जिद्दी बिन सूसी,
12दान के क़बीले से अम्मीएल बिन जमल्ली,
13आशर के क़बीले से सतूर बिन मीकाएल,
14नफ़्ताली के क़बीले से नख़्बी बिन वुफ़्सी,
15जद के क़बीले से जियूएल बिन माकी।

16मूसा ने इन ही बारह आदमियों को मुल्क का जाइज़ा लेने के लिए भेजा। उस ने होसेअ का नाम यशूअ यानी 'रब नजात है' में बदल दिया।

17उन्हें रुख़सत करने से पहले उस ने कहा, "दश्त-ए-नजब से गुज़र कर पहाड़ी इलाक़े तक पहुँचो। 18मालूम करो कि यह किस तरह

का मुल्क है और उस के बाशिन्दे कैसे हैं। क्या वह ताक़तवर हैं या कमज़ोर, तादाद में कम हैं या ज़्यादा? 19जिस मुल्क में वह बसते हैं क्या वह अच्छा है कि नहीं? वह किस क़िस्म के शहरों में रहते हैं? क्या उन की चारदीवारियाँ हैं कि नहीं? 20मुल्क की ज़मीन ज़रख़ेज़ है या बंजर? उस में दरख़्त हैं कि नहीं? और जुरअत करके मुल्क का कुछ फल चुन कर ले आओ।" उस वक़्त पहले अंगूर पक गए थे।

21चुनाँचे इन आदमियों ने सफ़र करके दश्त-ए-सीन से रहोब तक मुल्क का जाइज़ा लिया। रहोब लबो-हमात के क़रीब है। 22वह दश्त-ए-नजब से गुज़र कर हब्रून पहुँचे जहाँ अनाक़ के बेटे अख़ीमान, सीसी और तल्मी रहते थे। (हब्रून को मिस्र के शहर ज़ुअन से सात साल पहले तामीर किया गया था)। 23जब वह वादी-ए-इस्काल तक पहुँचे तो उन्हों ने एक डाली काट ली जिस पर अंगूर का गुच्छा लगा हुआ था। दो आदमियों ने यह अंगूर, कुछ अनार और कुछ अन्जीर लाठी पर लटकाए और उसे उठा कर चल पड़े। 24उस जगह का नाम उस गुच्छे के सबब से जो इस्राईलियों ने वहाँ से काट लिया इस्काल यानी गुच्छा रखा गया।

25चालीस दिन तक मुल्क का खोज लगाते लगाते वह लौट आए। 26वह मूसा, हारून और इस्राईल की पूरी जमाअत के पास आए जो दश्त-ए-फ़ारान में क़ादिस की जगह पर इन्तिज़ार कर रहे थे। वहाँ उन्हों ने सब कुछ बताया जो उन्हों ने मालूम किया था और उन्हें वह फल दिखाए जो ले कर आए थे। 27उन्हों ने मूसा को रिपोर्ट दी, "हम उस मुल्क में गए जहाँ आप ने हमें भेजा था। वाक़ई उस मुल्क में दूध और शहद की कस्रत है। यहाँ हमारे पास उस के कुछ फल भी हैं। 28लेकिन उस के बाशिन्दे ताक़तवर हैं। उन के शहरों की फ़सीलें हैं, और वह निहायत बड़े हैं। हम ने वहाँ अनाक़ की औलाद भी देखी। 29अमालीक़ी दश्त-ए-नजब में रहते हैं जबकि हित्ती, यबूसी और अमोरी पहाड़ी इलाक़े में आबाद हैं। कनआनी साहिली इलाक़े और दरया-ए-यर्दन के किनारे किनारे बसते हैं।"

30कालिब ने मूसा के सामने जमाशुदा लोगों को इशारा किया कि वह ख़ामोश हो जाएँ। फिर उस ने कहा, "आएँ, हम मुल्क में दाख़िल हो जाएँ और उस पर क़ब्ज़ा कर लें, क्यूँकि हम यक़ीनन यह करने के क़ाबिल हैं।" 31लेकिन दूसरे आदमियों ने जो उस के साथ मुल्क को देखने गए थे कहा, "हम उन लोगों पर हम्ला नहीं कर सकते, क्यूँकि वह हम से ताक़तवर हैं।" 32उन्हों ने इस्राईलियों के दरमियान उस मुल्क के बारे में ग़लत अफ़्वाहें फैलाईं जिस की तफ़्तीश उन्हों ने की थी। उन्हों ने कहा, "जिस मुल्क में से हम गुज़रे ताकि उस का जाइज़ा लें वह अपने बाशिन्दों को हड़प कर लेता है। जो भी उस में रहता है निहायत दराज़क़द है। 33हम ने वहाँ देओक़ामत अफ़राद भी देखे। (अनाक़ के बेटे देओक़ामत के अफ़राद की औलाद थे)। उन के सामने हम अपने आप को टिड्डी जैसा महसूस कर रहे थे, और हम उन की नज़र में ऐसे थे भी।"

लोग कनआन में दाख़िल नहीं होना चाहते

14 उस रात तमाम लोग चीख़ें मार मार कर रोते रहे। 2सब मूसा और हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे। पूरी जमाअत ने उन से कहा, "काश हम मिस्र या इस रेगिस्तान में मर गए होते! 3रब हमें क्यूँ उस मुल्क में ले जा रहा है? क्या इस लिए कि दुश्मन हमें तलवार से क़त्ल करे और हमारे बाल-बच्चों को लूट ले? क्या बेहतर नहीं होगा कि हम मिस्र वापस जाएँ?" 4उन्हों ने एक दूसरे से कहा, "आओ, हम राहनुमा चुन कर मिस्र वापस चले जाएँ।"

5तब मूसा और हारून पूरी जमाअत के सामने मुँह के बल गिरे। 6लेकिन यशूअ बिन

नून और कालिब बिन यफ़ुन्ना बाक़ी दस
जासूसों से फ़र्क़ थे। परेशानी के आलम में
उन्हों ने अपने कपड़े फाड़ कर 7पूरी जमाअत
से कहा, "जिस मुल्क में से हम गुज़रे और
जिस की तफ़्तीश हम ने की वह निहायत ही
अच्छा है। 8अगर रब हम से ख़ुश है तो वह
ज़रूर हमें उस मुल्क में ले जाएगा जिस में
दूध और शहद की कस्रत है। वह हमें ज़रूर
यह मुल्क देगा। 9रब से बग़ावत मत करना।
उस मुल्क के रहने वालों से न डरें। हम उन्हें
हड़प कर जाएंगे। उन की पनाह उन से जाती
रही है जबकि रब हमारे साथ है। चुनाँचे उन
से मत डरें।"

10यह सुन कर पूरी जमाअत उन्हें संगसार
करने के लिए तय्यार हुई। लेकिन अचानक
रब का जलाल मुलाक़ात के ख़ैमे पर ज़ाहिर
हुआ, और तमाम इस्राईलियों ने उसे देखा।
11रब ने मूसा से कहा, "यह लोग मुझे कब
तक हक़ीर जानेंगे? वह कब तक मुझ पर
ईमान रखने से इन्कार करेंगे अगरचे मैं ने उन
के दरमियान इतने मोजिज़े किए हैं? 12मैं उन्हें
वबा से मार डालूँगा और उन्हें रू-ए-ज़मीन पर
से मिटा दूँगा। उन की जगह मैं तुझ से एक
क़ौम बनाऊँगा जो उन से बड़ी और ताक़तवर
होगी।"

13लेकिन मूसा ने रब से कहा, "फिर मिस्री
यह सुन लेंगे! क्यूँकि तू ने अपनी क़ुदरत से
इन लोगों को मिस्र से निकाल कर यहाँ तक
पहुँचाया है। 14मिस्री यह बात कनआन के
बाशिन्दों को बताएँगे। यह लोग पहले से सुन
चुके हैं कि रब इस क़ौम के साथ है, कि तुझे
रू-ब-रू देखा जाता है, कि तेरा बादल उन के
ऊपर ठहरा रहता है, और कि तू दिन के वक़्त
बादल के सतून में और रात को आग के सतून
में इन के आगे आगे चलता है। 15अगर तू एक
दम इस पूरी क़ौम को तबाह कर डाले तो बाक़ी
क़ौमें यह सुन कर कहेंगी, 16'रब इन लोगों को
उस मुल्क में ले जाने के क़ाबिल नहीं था जिस
का वादा उस ने उन से क़सम खा कर किया
था। इसी लिए उस ने उन्हें रेगिस्तान में हलाक
कर दिया।' 17ऐ रब, अब अपनी क़ुदरत यूँ
ज़ाहिर कर जिस तरह तू ने फ़रमाया है। क्यूँकि
तू ने कहा, 18'रब तहम्मुल और शफ़क़त से
भरपूर है। वह गुनाह और नाफ़रमानी मुआफ़
करता है, लेकिन हर एक को उस की मुनासिब
सज़ा भी देता है। जब वालिदैन गुनाह करें तो
उन की औलाद को भी तीसरी और चौथी पुश्त
तक सज़ा के नताइज भुगतने पड़ेंगे।' 19इन
लोगों का क़ुसूर अपनी अज़ीम शफ़क़त के
मुताबिक़ मुआफ़ कर। उन्हें उस तरह मुआफ़
कर जिस तरह तू उन्हें मिस्र से निकलते वक़्त
अब तक मुआफ़ करता रहा है।"

20रब ने जवाब दिया, "तेरे कहने पर मैं ने
उन्हें मुआफ़ कर दिया है। 21इस के बावुजूद
मेरी हयात की क़सम और मेरे जलाल की
क़सम जो पूरी दुनिया को मामूर करता है,
22इन लोगों में से कोई भी उस मुल्क में दाख़िल
नहीं होगा। उन्हों ने मेरा जलाल और मेरे
मोजिज़े देखे हैं जो मैं ने मिस्र और रेगिस्तान में
कर दिखाए हैं। तो भी उन्हों ने दस दफ़ा मुझे
आज़माया और मेरी न सुनी। 23उन में से एक
भी उस मुल्क को नहीं देखेगा जिस का वादा
मैं ने क़सम खा कर उन के बापदादा से किया
था। जिस ने भी मुझे हक़ीर जाना है वह कभी
उसे नहीं देखेगा। 24सिर्फ़ मेरा ख़ादिम कालिब
मुख़्तलिफ़ है। उस की रूह फ़र्क़ है। वह पूरे
दिल से मेरी पैरवी करता है, इस लिए मैं उसे
उस मुल्क में ले जाऊँगा जिस में उस ने सफ़र
किया है। उस की औलाद मुल्क मीरास में
पाएगी। 25लेकिन फ़िलहाल अमालीक़ी और
कनआनी उस की वादियों में आबाद रहेंगे।
चुनाँचे कल मुड़ कर वापस चलो। रेगिस्तान में
बहर-ए-क़ुल्ज़ुम की तरफ़ रवाना हो जाओ।"

26रब ने मूसा और हारून से कहा,
27"यह शरीर जमाअत कब तक मेरे ख़िलाफ़
बुड़बुड़ाती रहेगी? उन के गिले-शिकवे मुझ
तक पहुँच गए हैं। 28इस लिए उन्हें बताओ,
'रब फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, मैं

तुम्हारे साथ वही कुछ करूँगा जो तुम ने मेरे सामने कहा है। 29तुम इस रेगिस्तान में मर कर यहीं पड़े रहोगे, हर एक जो 20 साल या इस से ज़ाइद का है, जो मर्दुमशुमारी में गिना गया और जो मेरे ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाया। 30गो मैं ने हाथ उठा कर क़सम खाई थी कि मैं तुझे उस में बसाऊँगा तुम में से कोई भी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होगा। सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना और यशूअ बिन नून दाख़िल होंगे। 31तुम ने कहा था कि दुश्मन हमारे बच्चों को लूट लेंगे। लेकिन उन ही को मैं उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसे तुम ने रद्द किया है। 32लेकिन तुम ख़ुद दाख़िल नहीं होगे। तुम्हारी लाशें इस रेगिस्तान में पड़ी रहेंगी। 33तुम्हारे बच्चे 40 साल तक यहाँ रेगिस्तान में गल्लाबान होंगे। उन्हें तुम्हारी बेवफ़ाई के सबब से उस वक़्त तक तक्लीफ़ उठानी पड़ेगी जब तक तुम में से आख़िरी शख़्स मर न गया हो। 34तुम ने चालीस दिन के दौरान उस मुल्क का जाइज़ा लिया। अब तुम्हें चालीस साल तक अपने गुनाहों का नतीजा भुगतना पड़ेगा। तब तुम्हें पता चलेगा कि इस का क्या मतलब है कि मैं तुम्हारी मुख़ालफ़त करता हूँ। 35मैं, रब ने यह बात फ़रमाई है। मैं यक़ीनन यह सब कुछ उस सारी शरीर जमाअत के साथ करूँगा जिस ने मिल कर मेरी मुख़ालफ़त की है। इसी रेगिस्तान में वह ख़त्म हो जाएंगे, यहीं मर जाएंगे'।"

36-37जिन आदमियों को मूसा ने मुल्क का जाइज़ा लेने के लिए भेजा था, रब ने उन्हें फ़ौरन मोहलक वबा से मार डाला, क्यूँकि उन के ग़लत अफ़्वाहें फैलाने से पूरी जमाअत बुड़बुड़ाने लगी थी। 38सिर्फ़ यशूअ बिन नून और कालिब बिन यफ़ुन्ना ज़िन्दा रहे।

39जब मूसा ने रब की यह बातें इस्राईलियों को बताईं तो वह ख़ूब मातम करने लगे। 40अगली सुब्ह-सवेरे वह उठे और यह कहते हुए ऊँचे पहाड़ी इलाक़े के लिए रवाना हुए कि हम से ग़लती हुई है, लेकिन अब हम हाज़िर हैं और उस जगह की तरफ़ जा रहे हैं जिस का ज़िक्र रब ने किया है।

41लेकिन मूसा ने कहा, "तुम क्यूँ रब की ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे हो? तुम कामयाब नहीं होगे। 42वहाँ न जाओ, क्यूँकि रब तुम्हारे साथ नहीं है। तुम दुश्मनों के हाथों शिकस्त खाओगे, 43क्यूँकि वहाँ अमालीक़ी और कनआनी तुम्हारा सामना करेंगे। चूँकि तुम ने अपना मुँह रब से फेर लिया है इस लिए वह तुम्हारे साथ नहीं होगा, और दुश्मन तुम्हें तलवार से मार डालेगा।"

44तो भी वह अपने ग़ुरूर में जुरअत करके ऊँचे पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ बढ़े, हालाँकि न मूसा और न अह्द के सन्दूक़ ही ने ख़ैमागाह को छोड़ा। 45फिर उस पहाड़ी इलाक़े में रहने वाले अमालीक़ी और कनआनी उन पर आन पड़े और उन्हें मारते मारते हुर्मा तक तित्तर-बित्तर कर दिया।

कनआन में क़ुर्बानियाँ पेश करने का तरीक़ा

15 रब ने मूसा से कहा, 2"इस्राईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा 3-4तो जलने वाली क़ुर्बानियाँ यूँ पेश करना :

अगर तुम अपने गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से ऐसी क़ुर्बानी पेश करना चाहो जिस की ख़ुश्बू रब को पसन्द हो तो साथ साथ डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करो जो एक लिटर ज़ैतून के तेल के साथ मिलाया गया हो। इस में कोई फ़र्क़ नहीं कि यह भस्म होने वाली क़ुर्बानी, मन्नत की क़ुर्बानी, दिली ख़ुशी की क़ुर्बानी या किसी ईद की क़ुर्बानी हो।

5हर भेड़ को पेश करते वक़्त एक लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश करना। 6जब मेंढा क़ुर्बान किया जाए तो 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी साथ पेश करना जो सवा लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। 7सवा लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश की

जाए। ऐसी क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब को पसन्द आएगी।

8अगर तू रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानी, मन्नत की क़ुर्बानी या सलामती की क़ुर्बानी के तौर पर जवान बैल पेश करना चाहे 9तो उस के साथ साढ़े 4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करना जो दो लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। 10दो लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश की जाए। ऐसी क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब को पसन्द है। 11लाज़िम है कि जब भी किसी गाय, बैल, भेड़, मेंढे, बकरी या बकरे को चढ़ाया जाए तो ऐसा ही किया जाए।

12अगर एक से ज़ाइद जानवरों को क़ुर्बान करना है तो हर एक के लिए मुक़र्ररा ग़ल्ला और मै की नज़रें भी साथ ही पेश की जाएँ।

13लाज़िम है कि हर देसी इस्राईली जलने वाली क़ुर्बानियाँ पेश करते वक़्त ऐसा ही करे। फिर उन की ख़ुश्बू रब को पसन्द आएगी। 14यह भी लाज़िम है कि इस्राईल में आरिज़ी या मुस्तक़िल तौर पर रहने वाले परदेसी इन उसूलों के मुताबिक़ अपनी क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँ। फिर उन की ख़ुश्बू रब को पसन्द आएगी। 15मुल्क-ए-कनआन में रहने वाले तमाम लोगों के लिए पाबन्दियाँ एक जैसी हैं, ख़्वाह वह देसी हों या परदेसी, क्यूँकि रब की नज़र में परदेसी तुम्हारे बराबर है। यह तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के लिए दाइमी उसूल है। 16तुम्हारे और तुम्हारे साथ रहने वाले परदेसी के लिए एक ही शरीअत है।"

फ़सल के लिए शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानी

17रब ने मूसा से कहा, 18"इस्राईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जिस में मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ 19और वहाँ की पैदावार खाओगे तो पहले उस का एक हिस्सा उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब को पेश करना। 20फ़सल के पहले ख़ालिस आटे में से मेरे लिए एक रोटी बना कर उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करो। वह गाहने की जगह की तरफ़ से रब के लिए उठाने वाली क़ुर्बानी होगी। 21अपनी फ़सल के पहले ख़ालिस आटे में से यह क़ुर्बानी पेश किया करो। यह उसूल हमेशा तक लागू रहे।

नादानिस्ता गुनाहों के लिए क़ुर्बानियाँ

22हो सकता है कि ग़ैरइरादी तौर पर तुम से ग़लती हुई है और तुम ने उन अह्काम पर पूरे तौर पर अमल नहीं किया जो रब मूसा को दे चुका है 23या जो वह आने वाली नस्लों को देगा। 24अगर जमाअत इस बात से नावाक़िफ़ थी और ग़ैरइरादी तौर पर उस से ग़लती हुई तो फिर पूरी जमाअत एक जवान बैल भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। साथ ही वह मुक़र्ररा ग़ल्ला और मै की नज़रें भी पेश करे। इस की ख़ुश्बू रब को पसन्द होगी। इस के इलावा जमाअत गुनाह की क़ुर्बानी के लिए एक बकरा पेश करे। 25इमाम इस्राईल की पूरी जमाअत का कफ़्फ़ारा दे तो उन्हें मुआफ़ी मिलेगी, क्यूँकि उन का गुनाह ग़ैरइरादी था और उन्हों ने रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानी और गुनाह की क़ुर्बानी पेश की है। 26इस्राईलियों की पूरी जमाअत को परदेसियों समेत मुआफ़ी मिलेगी, क्यूँकि गुनाह ग़ैरइरादी था।

27अगर सिर्फ़ एक शख़्स से ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह हुआ हो तो गुनाह की क़ुर्बानी के लिए वह एक यकसाला बकरी पेश करे। 28इमाम रब के सामने उस शख़्स का कफ़्फ़ारा दे। जब कफ़्फ़ारा दे दिया गया तो उसे मुआफ़ी हासिल होगी। 29यही उसूल परदेसी पर भी लागू है। अगर उस से ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह हुआ हो तो वह मुआफ़ी हासिल करने के लिए वही कुछ करे जो इस्राईली को करना होता है।

दानिस्ता गुनाहों के लिए सज़ा-ए-मौत

30लेकिन अगर कोई देसी या परदेसी जान-बूझ कर गुनाह करता है तो ऐसा शख़्स रब की इहानत करता है, इस लिए लाज़िम है कि उसे

उस की क़ौम में से मिटाया जाए। 31उस ने रब
का कलाम हक़ीर जान कर उस के अह्काम
तोड़ डाले हैं, इस लिए उसे ज़रूर क़ौम में से
मिटाया जाए। वह अपने गुनाह का ज़िम्मादार
है।"
32जब इस्राईली रेगिस्तान में से गुज़र रहे
थे तो एक आदमी को पकड़ा गया जो हफ़्ते
के दिन लकड़ियाँ जमा कर रहा था। 33जिन्हों
ने उसे पकड़ा था वह उसे मूसा, हारून और
पूरी जमाअत के पास ले आए। 34चूँकि साफ़
मालूम नहीं था कि उस के साथ क्या किया
जाए इस लिए उन्हों ने उसे गिरिफ़्तार कर
लिया।
35फिर रब ने मूसा से कहा, "इस आदमी को
ज़रूर सज़ा-ए-मौत दी जाए। पूरी जमाअत
उसे ख़ैमागाह के बाहर ले जा कर संगसार
करे।" 36चुनाँचे जमाअत ने उसे ख़ैमागाह के
बाहर ले जा कर संगसार किया, जिस तरह रब
ने मूसा को हुक्म दिया था।

अह्काम की याद दिलाने वाले फुन्दने

37रब ने मूसा से कहा, 38"इस्राईलियों को
बताना कि तुम और तुम्हारे बाद की नस्लें
अपने लिबास के किनारों पर फुन्दने लगाएँ।
हर फुन्दना एक क़िर्मिज़ी डोरी से लिबास के
साथ लगा हो। 39इन फुन्दनों को देख कर तुम्हें
रब के तमाम अह्काम याद रहेंगे और तुम उन
पर अमल करोगे। फिर तुम अपने दिलों और
आँखों की ग़लत ख़्वाहिशों के पीछे नहीं पड़ोगे
बल्कि ज़िनाकारी से दूर रहोगे। 40फिर तुम
मेरे अह्काम को याद करके उन पर अमल
करोगे और अपने ख़ुदा के सामने मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस रहोगे। 41मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ
जो तुम्हें मिस्र से निकाल लाया ताकि तुम्हारा
ख़ुदा हूँ। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।"

क़ोरह, दातन और अबीराम की सरकशी

16 1-2एक दिन क़ोरह बिन इज़्हार
मूसा के ख़िलाफ़ उठा। वह लावी
के क़बीले का क़िहाती था। उस के साथ
रूबिन के क़बीले के तीन आदमी थे, इलियाब
के बेटे दातन और अबीराम और ओन बिन
पलत। उन के साथ 250 और आदमी भी थे
जो जमाअत के सरदार और असर-ओ-रसूख़
वाले थे, और जो कौंसल के लिए चुने गए थे।
3वह मिल कर मूसा और हारून के पास आ
कर कहने लगे, "आप हम से ज़ियादती कर
रहे हैं। पूरी जमाअत मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है,
और रब उस के दरमियान है। तो फिर आप
अपने आप को क्यूँ रब की जमाअत से बढ़
कर समझते हैं?"
4यह सुन कर मूसा मुँह के बल गिरा। 5फिर
उस ने क़ोरह और उस के तमाम साथियों
से कहा, "कल सुब्ह रब ज़ाहिर करेगा कि
कौन उस का बन्दा और कौन मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस है। उसी को वह अपने पास आने
देगा। 6ऐ क़ोरह, कल अपने तमाम साथियों
के साथ बख़ूरदान ले कर 7रब के सामने उन में
अंगारे और बख़ूर डालो। जिस आदमी को रब
चुनेगा वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होगा। अब
तुम लावी ख़ुद ज़ियादती कर रहे हो।"
8मूसा ने क़ोरह से बात जारी रखी, "ऐ लावी
की औलाद, सुनो! 9क्या तुम्हारी नज़र में
यह कोई छोटी बात है कि रब तुम्हें इस्राईली
जमाअत के बाक़ी लोगों से अलग करके अपने
क़रीब ले आया ताकि तुम रब के मक़्दिस में
और जमाअत के सामने खड़े हो कर उन की
ख़िदमत करो? 10वह तुझे और तेरे साथी
लावियों को अपने क़रीब लाया है। लेकिन
अब तुम इमाम का उह्दा भी अपनाना चाहते
हो। 11अपने साथियों से मिल कर तू ने हारून
की नहीं बल्कि रब की मुख़ालफ़त की है।
क्यूँकि हारून कौन है कि तुम उस के ख़िलाफ़
बुड़बुड़ाओ?"
12फिर मूसा ने इलियाब के बेटों दातन और
अबीराम को बुलाया। लेकिन उन्हों ने कहा,
"हम नहीं आएँगे। 13आप हमें एक ऐसे मुल्क
से निकाल लाए हैं जहाँ दूध और शहद की

कस्रत है ताकि हम रेगिस्तान में हलाक हो जाएँ। क्या यह काफ़ी नहीं है? क्या अब आप हम पर हुकूमत भी करना चाहते हैं? 14न आप ने हमें ऐसे मुल्क में पहुँचाया जिस में दूध और शहद की कस्रत है, न हमें खेतों और अंगूर के बाग़ों के वारिस बनाया है। क्या आप इन आदमियों की आँखें निकाल डालेंगे? नहीं, हम हरगिज़ नहीं आएँगे।"

15तब मूसा निहायत ग़ुस्से हुआ। उस ने रब से कहा, "उन की क़ुर्बानी को क़बूल न कर। मैं ने एक गधा तक उन से नहीं लिया, न मैं ने उन में से किसी से बुरा सुलूक किया है।"

16क़ोरह से उस ने कहा, "कल तुम और तुम्हारे साथी रब के सामने हाज़िर हो जाओ। हारून भी आएगा। 17हर एक अपना बख़ूरदान ले कर उसे रब को पेश करे।" 18चुनाँचे हर आदमी ने अपना बख़ूरदान ले कर उस में अंगारे और बख़ूर डाल दिया। फिर सब मूसा और हारून के साथ मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े हुए। 19क़ोरह ने पूरी जमाअत को दरवाज़े पर मूसा और हारून के मुक़ाबले में जमा किया था।

अचानक पूरी जमाअत पर रब का जलाल ज़ाहिर हुआ। 20रब ने मूसा और हारून से कहा, 21"इस जमाअत से अलग हो जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन हलाक कर दूँ।" 22मूसा और हारून मुँह के बल गिरे और बोल उठे, "ऐ अल्लाह, तू तमाम जानों का ख़ुदा है। क्या तेरा ग़ज़ब एक ही आदमी के गुनाह के सबब से पूरी जमाअत पर आन पड़ेगा?"

23तब रब ने मूसा से कहा, 24"जमाअत को बता दे कि क़ोरह, दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो जाओ।" 25मूसा उठ कर दातन और अबीराम के पास गया, और इस्राईल के बुज़ुर्ग उस के पीछे चले। 26उस ने जमाअत को आगाह किया, "इन शरीरों के ख़ैमों से दूर हो जाओ! जो कुछ भी उन के पास है उसे न छुओ, वर्ना तुम भी उन के साथ तबाह हो जाओगे जब वह अपने गुनाहों के बाइस हलाक होंगे।" 27तब बाक़ी लोग क़ोरह, दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो गए।

दातन और अबीराम अपने बाल-बच्चों समेत अपने ख़ैमों से निकल कर बाहर खड़े थे। 28मूसा ने कहा, "अब तुम्हें पता चलेगा कि रब ने मुझे यह सब कुछ करने के लिए भेजा है। मैं अपनी नहीं बल्कि उस की मर्ज़ी पूरी कर रहा हूँ। 29अगर यह लोग दूसरों की तरह तबई मौत मरें तो फिर रब ने मुझे नहीं भेजा। 30लेकिन अगर रब ऐसा काम करे जो पहले कभी नहीं हुआ और ज़मीन अपना मुँह खोल कर उन्हें और उन का पूरा माल हड़प कर ले और उन्हें जीते जी दफ़ना दे तो इस का मतलब होगा कि इन आदमियों ने रब को हक़ीर जाना है।"

31यह बात कहते ही उन के नीचे की ज़मीन फट गई। 32उस ने अपना मुँह खोल कर उन्हें, उन के ख़ानदानों को, क़ोरह के तमाम लोगों को और उन का सारा सामान हड़प कर लिया। 33वह अपनी पूरी मिलकियत समेत जीते जी दफ़न हो गए। ज़मीन उन के ऊपर वापस आ गई। यूँ उन्हें जमाअत से निकाला गया और वह हलाक हो गए। 34उन की चीख़ें सुन कर उन के इर्दगिर्द खड़े तमाम इस्राईली भाग उठे, क्यूँकि उन्हों ने सोचा, "ऐसा न हो कि ज़मीन हमें भी निगल ले।"

35उसी लम्हे रब की तरफ़ से आग उतर आई और उन 250 आदमियों को भस्म कर दिया जो बख़ूर पेश कर रहे थे। 36रब ने मूसा से कहा, 37"हारून इमाम के बेटे इलीअज़र को इत्तिला दे कि वह बख़ूरदानों को राख में से निकाल कर रखे। उन के अंगारे वह दूर फैंके। बख़ूरदानों को रखने का सबब यह है कि अब वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं। 38लोग उन आदमियों के यह बख़ूरदान ले लें जो अपने गुनाह के बाइस जाँ-ब-हक़ हो गए। वह उन्हें कूट कर उन से चादरें बनाएँ और उन्हें जलने वाली क़ुर्बानियों की क़ुर्बानगाह पर चढ़ाएँ। क्यूँकि वह रब को पेश किए गए हैं,

इस लिए वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं। यूँ वह इस्राईलियों के लिए एक निशान रहेंगे।”

39चुनाँचे इलीअज़र इमाम ने पीतल के
यह बख़ूरदान जमा किए जो भस्म किए हुए
आदमियों ने रब को पेश किए थे। फिर लोगों
ने उन्हें कूट कर उन से चादरें बनाईं और
उन्हें क़ुर्बानगाह पर चढ़ा दिया। 40हारून ने
सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा
की मारिफ़त बताया था। मक़्सद यह था कि
बख़ूरदान इस्राईलियों को याद दिलाते रहें कि
सिर्फ़ हारून की औलाद ही को रब के सामने
आ कर बख़ूर जलाने की इजाज़त है। अगर
कोई और ऐसा करे तो उस का हाल क़ोरह
और उस के साथियों का सा होगा।

41अगले दिन इस्राईल की पूरी जमाअत
मूसा और हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगी।
उन्हों ने कहा, “आप ने रब की क़ौम को मार
डाला है।” 42लेकिन जब वह मूसा और हारून
के मुक़ाबले में जमा हुए और मुलाक़ात के ख़ैमे
का रुख़ किया तो अचानक उस पर बादल
छा गया और रब का जलाल ज़ाहिर हुआ।
43फिर मूसा और हारून मुलाक़ात के ख़ैमे
के सामने आए, 44और रब ने मूसा से कहा,
45“इस जमाअत से निकल जाओ ताकि मैं इसे
फ़ौरन हलाक कर दूँ।” यह सुन कर दोनों मुँह
के बल गिरे। 46मूसा ने हारून से कहा, “अपना
बख़ूरदान ले कर उस में क़ुर्बानगाह के अंगारे
और बख़ूर डालें। फिर भाग कर जमाअत के
पास चले जाएँ ताकि उन का कफ़्फ़ारा दें।
जल्दी करें, क्यूँकि रब का ग़ज़ब उन पर टूट
पड़ा है। वबा फैलने लगी है।”

47हारून ने ऐसा ही किया। वह दौड़ कर
जमाअत के बीच में गया। लोगों में वबा शुरू
हो चुकी थी, लेकिन हारून ने रब को बख़ूर
पेश करके उन का कफ़्फ़ारा दिया। 48वह
ज़िन्दों और मुर्दों के बीच में खड़ा हुआ तो वबा
रुक गई। 49तो भी 14,700 अफ़राद वबा से
मर गए। इस में वह शामिल नहीं हैं जो क़ोरह
के सबब से मर गए थे।

50जब वबा रुक गई तो हारून मूसा के पास
वापस आया जो अब तक मुलाक़ात के ख़ैमे
के दरवाज़े पर खड़ा था।

हारून की लाठी से कोंपलें निकलती हैं

17 रब ने मूसा से कहा, 2“इस्राईलियों
से बात करके उन से 12 लाठियाँ
मंगवा ले, हर क़बीले के सरदार से एक लाठी।
हर लाठी पर उस के मालिक का नाम लिखना।
3लावी की लाठी पर हारून का नाम लिखना,
क्यूँकि हर क़बीले के सरदार के लिए एक
लाठी होगी। 4फिर उन को मुलाक़ात के ख़ैमे
में अह्द के सन्दूक़ के सामने रख जहाँ मेरी
तुम से मुलाक़ात होती है। 5जिस आदमी को
मैं ने चुन लिया है उस की लाठी से कोंपलें
फूट निकलेंगी। इस तरह मैं तुम्हारे ख़िलाफ़
इस्राईलियों की बुड़बुड़ाहट ख़त्म कर दूँगा।”

6चुनाँचे मूसा ने इस्राईलियों से बात की,
और क़बीलों के हर सरदार ने उसे अपनी लाठी
दी। इन 12 लाठियों में हारून की लाठी भी
शामिल थी। 7मूसा ने उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे
में अह्द के सन्दूक़ के सामने रखा। 8अगले
दिन जब वह मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल
हुआ तो उस ने देखा कि लावी के क़बीले के
सरदार हारून की लाठी से न सिर्फ़ कोंपलें
फूट निकली हैं बल्कि फूल और पके हुए
बादाम भी लगे हैं।

9मूसा तमाम लाठियाँ रब के सामने से बाहर
ला कर इस्राईलियों के पास ले आया, और
उन्हों ने उन का मुआइना किया। फिर हर एक
ने अपनी अपनी लाठी वापस ले ली। 10रब
ने मूसा से कहा, “हारून की लाठी अह्द के
सन्दूक़ के सामने रख दे। यह बाग़ी इस्राईलियों
को याद दिलाएगी कि वह अपना बुड़बुड़ाना
बन्द करें, वर्ना हलाक हो जाएंगे।”

11मूसा ने ऐसा ही किया। 12लेकिन
इस्राईलियों ने मूसा से कहा, “हाय, हम मर
जाएंगे। हाय, हम हलाक हो जाएंगे, हम सब
हलाक हो जाएंगे। 13जो भी रब के मक़्दिस के

क़रीब आए वह मर जाएगा। क्या हम सब ही हलाक हो जाएंगे?”

इमामों और लावियों की ज़िम्मादारियाँ

18 रब ने हारून से कहा, “मक़्दिस तेरी, तेरे बेटों और लावी के क़बीले की ज़िम्मादारी है। अगर इस में कोई ग़लती हो जाए तो तुम क़ुसूरवार ठहरोगे। इसी तरह इमामों की ख़िदमत सिर्फ़ तेरी और तेरे बेटों की ज़िम्मादारी है। अगर इस में कोई ग़लती हो जाए तो तू और तेरे बेटे क़ुसूरवार ठहरेंगे। 2अपने क़बीले लावी के बाक़ी आदमियों को भी मेरे क़रीब आने दे। वह तेरे साथ मिल कर यूँ हिस्सा लें कि वह तेरी और तेरे बेटों की ख़िदमत करें जब तुम ख़ैमे के सामने अपनी ज़िम्मादारियाँ निभाओगे। 3तेरी ख़िदमत और ख़ैमे में ख़िदमत उन की ज़िम्मादारी है। लेकिन वह ख़ैमे के मक़्दूस-ओ-मुक़द्दस सामान और क़ुर्बानगाह के क़रीब न जाएँ, वर्ना न सिर्फ़ वह बल्कि तू भी हलाक हो जाएगा। 4यूँ वह तेरे साथ मिल कर मुलाक़ात के ख़ैमे के पूरे काम में हिस्सा लें। लेकिन किसी और को ऐसा करने की इजाज़त नहीं है। 5सिर्फ़ तू और तेरे बेटे मक़्दिस और क़ुर्बानगाह की देख-भाल करें ताकि मेरा ग़ज़ब दुबारा इस्राईलियों पर न भड़के। 6मैं ही ने इस्राईलियों में से तेरे भाइयों यानी लावियों को चुन कर तुझे तोह्फ़े के तौर पर दिया है। वह रब के लिए मक़्दूस हैं ताकि ख़ैमे में ख़िदमत करें। 7लेकिन सिर्फ़ तू और तेरे बेटे इमाम की ख़िदमत सरअन्जाम दें। मैं तुम्हें इमाम का उह्दा तोह्फ़े के तौर पर देता हूँ। कोई और क़ुर्बानगाह और मुक़द्दस चीज़ों के नज़्दीक न आए, वर्ना उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।”

इमामों का हिस्सा

8रब ने हारून से कहा, “मैं ने ख़ुद मुक़र्रर किया है कि तमाम उठाने वाली क़ुर्बानियाँ तेरा हिस्सा हों। यह हमेशा तक क़ुर्बानियों में से तेरा और तेरी औलाद का हिस्सा हैं। 9तुम्हें मुक़द्दसतरीन क़ुर्बानियों का वह हिस्सा मिलना है जो जलाया नहीं जाता। हाँ, तुझे और तेरे बेटों को वही हिस्सा मिलना है, ख़्वाह वह मुझे ग़ल्ला की नज़रें, गुनाह की क़ुर्बानियाँ या क़ुसूर की क़ुर्बानियाँ पेश करें। 10उसे मुक़द्दस जगह पर खाना। हर मर्द उसे खा सकता है। ख़याल रख कि वह मक़्दूस-ओ-मुक़द्दस है।

11मैं ने मुक़र्रर किया है कि तमाम हिलाने वाली क़ुर्बानियों का उठाया हुआ हिस्सा तेरा है। यह हमेशा के लिए तेरे और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा है। तेरे घराने का हर फ़र्द उसे खा सकता है। शर्त यह है कि वह पाक हो। 12जब लोग रब को अपनी फ़सलों का पहला फल पेश करेंगे तो वह तेरा ही हिस्सा होगा। मैं तुझे ज़ैतून के तेल, नई मै और अनाज का बेहतरीन हिस्सा देता हूँ। 13फ़सलों का जो भी पहला फल वह रब को पेश करेंगे वह तेरा ही होगा। तेरे घराने का हर पाक फ़र्द उसे खा सकता है। 14इस्राईल में जो भी चीज़ रब के लिए मक़्दूस-ओ-मुक़द्दस की गई है वह तेरी होगी। 15हर इन्सान और हर हैवान का जो पहलौठा रब को पेश किया जाता है वह तेरा ही है। लेकिन लाज़िम है कि तू हर इन्सान और हर नापाक जानवर के पहलौठे का फ़िद्या दे कर उसे छुड़ाए।

16जब वह एक माह के हैं तो उन के इवज़ चाँदी के पाँच सिक्के देना। (हर सिक्के का वज़न मक़्दिस के बाटों के मुताबिक़ 11 ग्राम हो)। 17लेकिन गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहले बच्चों का फ़िद्या यानी मुआवज़ा न देना। वह मक़्दूस-ओ-मुक़द्दस हैं। उन का ख़ून क़ुर्बानगाह पर छिड़क देना और उन की चर्बी जला देना। ऐसी क़ुर्बानी रब को पसन्द होगी। 18उन का गोश्त वैसे ही तुम्हारे लिए हो, जैसे हिलाने वाली क़ुर्बानी का सीना और दहनी रान भी तुम्हारे लिए हैं।

19मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से तमाम उठाने वाली क़ुर्बानियाँ तेरा और तेरे बेटे-बेटियों का

हिस्सा हैं। मैं ने उसे हमेशा के लिए तुझे दिया है। यह नमक का दाइमी अह्द है जो मैं ने तेरे और तेरी औलाद के साथ क़ाइम किया है।”

लावियों का हिस्सा

20रब ने हारून से कहा, “तू मीरास में ज़मीन नहीं पाएगा। इस्राईल में तुझे कोई हिस्सा नहीं दिया जाएगा, क्यूँकि इस्राईलियों के दरमियान मैं ही तेरा हिस्सा और तेरी मीरास हूँ। 21अपनी पैदावार का जो दसवाँ हिस्सा इस्राईली मुझे देते हैं वह मैं लावियों को देता हूँ। यह उन की विरासत है, जो उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करने के बदले में मिलती है। 22अब से इस्राईली मुलाक़ात के ख़ैमे के क़रीब न आएँ, वर्ना उन्हें अपनी ख़ता का नतीजा बर्दाश्त करना पड़ेगा और वह हलाक हो जाएंगे। 23सिर्फ़ लावी मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करें। अगर इस में कोई ग़लती हो जाए तो वही क़ुसूरवार ठहरेंगे। यह एक दाइमी उसूल है। उन्हें इस्राईल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी। 24क्यूँकि मैं ने उन्हें वही दसवाँ हिस्सा मीरास के तौर पर दिया है जो इस्राईली मुझे उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करते हैं। इस वजह से मैं ने उन के बारे में कहा कि उन्हें बाक़ी इस्राईलियों के साथ मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।”

लावियों का दसवाँ हिस्सा

25रब ने मूसा से कहा, 26“लावियों को बताना कि तुम्हें इस्राईलियों की पैदावार का दसवाँ हिस्सा मिलेगा। यह रब की तरफ़ से तुम्हारी विरासत होगी। लाज़िम है कि तुम इस का दसवाँ हिस्सा रब को उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करो। 27तुम्हारी यह क़ुर्बानी नए अनाज या नए अंगूर के रस की क़ुर्बानी के बराबर क़रार दी जाएगी। 28इस तरह तुम भी रब को इस्राईलियों की पैदावार के दसवें हिस्से में से उठाने वाली क़ुर्बानी पेश करोगे। रब के लिए यह क़ुर्बानी हारून इमाम को देना। 29जो भी तुम्हें मिला है उस में से सब से अच्छा और मुक़द्दस हिस्सा रब को देना। 30जब तुम इस का सब से अच्छा हिस्सा पेश करोगे तो उसे नए अनाज या नए अंगूर के रस की क़ुर्बानी के बराबर क़रार दिया जाएगा। 31तुम अपने घरानों समेत इस का बाक़ी हिस्सा कहीं भी खा सकते हो, क्यूँकि यह मुलाक़ात के ख़ैमे में तुम्हारी ख़िदमत का अज्र है। 32अगर तुम ने पहले इस का बेहतरीन हिस्सा पेश किया हो तो फिर इसे खाने में तुम्हारा कोई क़ुसूर नहीं होगा। फिर इस्राईलियों की मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस क़ुर्बानियाँ तुम से नापाक नहीं हो जाएँगी और तुम नहीं मरोगे।”

सुर्ख़ गाय की राख

19 रब ने मूसा और हारून से कहा, 2“इस्राईलियों को बताना कि वह तुम्हारे पास सुर्ख़ रंग की जवान गाय ले कर आएँ। उस में नुक़्स न हो और उस पर कभी जूआ न रखा गया हो। 3तुम उसे इलीअज़र इमाम को देना जो उसे ख़ैमे के बाहर ले जाए। वहाँ उसे उस की मौजूदगी में ज़बह किया जाए। 4फिर इलीअज़र इमाम अपनी उंगली से उस के ख़ून से कुछ ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने वाले हिस्से की तरफ़ छिड़के। 5उस की मौजूदगी में पूरी की पूरी गाय को जलाया जाए। उस की खाल, गोश्त, ख़ून और अंतड़ियों का गोबर भी जलाया जाए। 6फिर वह देवदार की लकड़ी, ज़ूफ़ा और क़िर्मिज़ी रंग का धागा ले कर उसे जलती हुई गाय पर फैंके। 7इस के बाद वह अपने कपड़ों को धो कर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह में आ सकता है लेकिन शाम तक नापाक रहेगा।

8जिस आदमी ने गाय को जलाया वह भी अपने कपड़ों को धो कर नहा ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा।

9एक दूसरा आदमी जो पाक है गाय की राख इकट्ठी करके ख़ैमागाह के बाहर किसी पाक जगह पर डाल दे। वहाँ इस्राईल की

जमाअत उसे नापाकी दूर करने का पानी तय्यार करने के लिए मह्फ़ूज़ रखे। यह गुनाह से पाक करने के लिए इस्तेमाल होगा। 10जिस आदमी ने राख इकट्ठी की है वह भी अपने कपड़ों को धो ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा। यह इस्राईलियों और उन के दरमियान रहने वाले परदेसियों के लिए दाइमी उसूल हो।

लाश छूने से पाक हो जाने का तरीक़ा

11जो भी लाश छुए वह सात दिन तक नापाक रहेगा। 12तीसरे और सातवें दिन वह अपने आप पर नापाकी दूर करने का पानी छिड़क कर पाक-साफ़ हो जाए। इस के बाद ही वह पाक होगा। लेकिन अगर वह इन दोनों दिनों में अपने आप को यूँ पाक न करे तो नापाक रहेगा। 13जो भी लाश छू कर अपने आप को यूँ पाक नहीं करता वह रब के मक़्दिस को नापाक करता है। लाज़िम है कि उसे इस्राईल में से मिटाया जाए। चूँकि नापाकी दूर करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया इस लिए वह नापाक रहेगा।

14अगर कोई डेरे में मर जाए तो जो भी उस वक़्त उस में मौजूद हो या दाख़िल हो जाए वह सात दिन तक नापाक रहेगा। 15हर खुला बर्तन जो ढकने से बन्द न किया गया हो वह भी नापाक होगा। 16इसी तरह जो खुले मैदान में लाश छुए वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा, ख़्वाह वह तलवार से या तबई मौत मरा हो। जो इन्सान की कोई हड्डी या क़ब्र छुए वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा।

17नापाकी दूर करने के लिए उस सुर्ख़ रंग की गाय की राख में से कुछ लेना जो गुनाह दूर करने के लिए जलाई गई थी। उसे बर्तन में डाल कर ताज़ा पानी में मिलाना। 18फिर कोई पाक आदमी कुछ ज़ूफ़ा ले और उसे उस पानी में डुबो कर मरे हुए शख़्स के ख़ैमे, उस के सामान और उन लोगों पर छिड़के जो उस के मरते वक़्त वहाँ थे। इसी तरह वह पानी उस शख़्स पर भी छिड़के जिस ने तबई या ग़ैरतबई मौत मरे हुए शख़्स को, किसी इन्सान की हड्डी को या कोई क़ब्र छूई हो। 19पाक आदमी यह पानी तीसरे और सातवें दिन नापाक शख़्स पर छिड़के। सातवें दिन वह उसे पाक करे। जिसे पाक किया जा रहा है वह अपने कपड़े धो कर नहा ले तो वह उसी शाम पाक होगा।

20लेकिन जो नापाक शख़्स अपने आप को पाक नहीं करता उसे जमाअत में से मिटाना है, क्यूँकि उस ने रब का मक़्दिस नापाक कर दिया है। नापाकी दूर करने का पानी उस पर नहीं छिड़का गया, इस लिए वह नापाक रहा है। 21यह उन के लिए दाइमी उसूल है। जिस आदमी ने नापाकी दूर करने का पानी छिड़का है वह भी अपने कपड़े धोए। बल्कि जिस ने भी यह पानी छुआ है शाम तक नापाक रहेगा। 22और नापाक शख़्स जो भी चीज़ छुए वह नापाक हो जाती है। न सिर्फ़ यह बल्कि जो बाद में यह नापाक चीज़ छुए वह भी शाम तक नापाक रहेगा।”

चटान से पानी

20 पहले महीने में इस्राईल की पूरी जमाअत दश्त-ए-सीन में पहुँच कर क़ादिस में रहने लगी। वहाँ मरियम ने वफ़ात पाई और वहीं उसे दफ़नाया गया।

2क़ादिस में पानी दस्तयाब नहीं था, इस लिए लोग मूसा और हारून के मुक़ाबले में जमा हुए। 3वह मूसा से यह कह कर झगड़ने लगे, “काश हम अपने भाइयों के साथ रब के सामने मर गए होते! 4आप रब की जमाअत को क्यूँ इस रेगिस्तान में ले आए? क्या इस लिए कि हम यहाँ अपने मवेशियों समेत मर जाएँ? 5आप हमें मिस्र से निकाल कर उस नाख़ुशगवार जगह पर क्यूँ ले आए हैं? यहाँ न तो अनाज, न अन्जीर, अंगूर या अनार दस्तयाब हैं। पानी भी नहीं है!”

6मूसा और हारून लोगों को छोड़ कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर गए और मुँह के बल गिरे। तब रब का जलाल उन पर

ज़ाहिर हुआ। 7रब ने मूसा से कहा, 8"अह्द
के सन्दूक़ के सामने पड़ी लाठी पकड़ कर
हारून के साथ जमाअत को इकट्ठा कर। उन
के सामने चटान से बात करो तो वह अपना
पानी देगी। यूँ तू चटान में से जमाअत के लिए
पानी निकाल कर उन्हें उन के मवेशियों समेत
पानी पिलाएगा।"

9मूसा ने ऐसा ही किया। उस ने अह्द के
सन्दूक़ के सामने पड़ी लाठी उठाई 10और
हारून के साथ जमाअत को चटान के सामने
इकट्ठा किया। मूसा ने उन से कहा, "ऐ बग़ावत
करने वालो, सुनो! क्या हम इस चटान में से
तुम्हारे लिए पानी निकालें?" 11उस ने लाठी
को उठा कर चटान को दो मर्तबा मारा तो बहुत
सा पानी फूट निकला। जमाअत और उन के
मवेशियों ने ख़ूब पानी पिया।

12लेकिन रब ने मूसा और हारून से कहा,
"तुम्हारा मुझ पर इतना ईमान नहीं था कि मेरी
क़ुद्दूसियत को इस्राईलियों के सामने क़ाइम
रखते। इस लिए तुम उस जमाअत को उस
मुल्क में नहीं ले जाओगे जो मैं उन्हें दूँगा।"

13यह वाक़िआ मरीबा यानी 'झगड़ना' के
पानी पर हुआ। वहाँ इस्राईलियों ने रब से
झगड़ा किया, और वहाँ उस ने उन पर ज़ाहिर
किया कि वह क़ुद्दूस है।

अदोम इस्राईल को गुज़रने नहीं देता

14क़ादिस से मूसा ने अदोम के बादशाह
को इत्तिला भेजी, "आप के भाई इस्राईल
की तरफ़ से एक गुज़ारिश है। आप को उन
तमाम मुसीबतों के बारे में इल्म है जो हम पर
आन पड़ी हैं। 15हमारे बापदादा मिस्र गए थे
और वहाँ हम बहुत अर्से तक रहे। मिस्रियों ने
हमारे बापदादा और हम से बुरा सुलूक किया।
16लेकिन जब हम ने चिल्ला कर रब से मिन्नत
की तो उस ने हमारी सुनी और फ़रिश्ता भेज
कर हमें मिस्र से निकाल लाया। अब हम यहाँ
क़ादिस शहर में हैं जो आप की सरहद पर
है। 17मेहरबानी करके हमें अपने मुल्क में से
गुज़रने दें। हम किसी खेत या अंगूर के बाग़
में नहीं जाएंगे, न किसी कुएँ का पानी पिएँगे।
हम शाहराह पर ही रहेंगे। आप के मुल्क में
से गुज़रते हुए हम उस से न दाईं और न बाईं
तरफ़ हटेंगे।"

18लेकिन अदोमियों ने जवाब दिया, "यहाँ
से न गुज़रना, वर्ना हम निकल कर आप से
लड़ेंगे।" 19इस्राईल ने दुबारा ख़बर भेजी, "हम
शाहराह पर रहते हुए गुज़रेंगे। अगर हमें या
हमारे जानवरों को पानी की ज़रूरत हुई तो
पैसे दे कर ख़रीद लेंगे। हम पैदल ही गुज़रना
चाहते हैं, और कुछ नहीं चाहते।"

20लेकिन अदोमियों ने दुबारा इन्कार किया।
साथ ही उन्हों ने उन के साथ लड़ने के लिए
एक बड़ी और ताक़तवर फ़ौज भेजी।

21चूँकि अदोम ने उन्हें गुज़रने की इजाज़त
न दी इस लिए इस्राईली मुड़ कर दूसरे रास्ते
से चले गए।

हारून की वफ़ात

22इस्राईल की पूरी जमाअत क़ादिस से
रवाना हो कर होर पहाड़ के पास पहुँची।
23यह पहाड़ अदोम की सरहद पर वाक़े
था। वहाँ रब ने मूसा और हारून से कहा,
24"हारून अब कूच करके अपने बापदादा
से जा मिलेगा। वह उस मुल्क में दाख़िल
नहीं होगा जो मैं इस्राईलियों को दूँगा, क्यूँकि
तुम दोनों ने मरीबा के पानी पर मेरे हुक्म
की ख़िलाफ़वरज़ी की। 25हारून और उस के
बेटे इलीअज़र को ले कर होर पहाड़ पर चढ़
जा। 26हारून के कपड़े उतार कर उस के बेटे
इलीअज़र को पहना देना। फिर हारून कूच
करके अपने बापदादा से जा मिलेगा।"

27मूसा ने ऐसा ही किया जैसा रब ने कहा।
तीनों पूरी जमाअत के देखते देखते होर पहाड़
पर चढ़ गए। 28मूसा ने हारून के कपड़े उतरवा
कर उस के बेटे इलीअज़र को पहना दिए।
फिर हारून वहाँ पहाड़ की चोटी पर फ़ौत
हुआ, और मूसा और इलीअज़र नीचे उतर

गए। 29जब पूरी जमाअत को मालूम हुआ कि हारून इन्तिक़ाल कर गया है तो सब ने 30 दिन तक उस के लिए मातम किया।

कनआनी मुल्क-ए-अराद पर फ़त्ह

21 दश्त-ए-नजब के कनआनी मुल्क अराद के बादशाह को ख़बर मिली कि इस्राईली अथारिम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। उस ने उन पर हम्ला किया और कई एक को पकड़ कर क़ैद कर लिया। 2तब इस्राईलियों ने रब के सामने मन्नत मान कर कहा, “अगर तू हमें उन पर फ़त्ह देगा तो हम उन्हें उन के शहरों समेत तबाह कर देंगे।” 3रब ने उन की सुनी और कनआनियों पर फ़त्ह बख़्शी। इस्राईलियों ने उन्हें उन के शहरों समेत पूरी तरह तबाह कर दिया। इस लिए उस जगह का नाम हुर्मा यानी तबाही पड़ गया।

पीतल का साँप

4होर पहाड़ से रवाना हो कर वह बहर-ए-क़ुल्ज़ुम की तरफ़ चल दिए ताकि अदोम के मुल्क में से गुज़रना न पड़े। लेकिन चलते चलते लोग बेसबर हो गए। 5वह रब और मूसा के ख़िलाफ़ बातें करने लगे, “आप हमें मिस्र से निकाल कर रेगिस्तान में मरने के लिए क्यूँ ले आए हैं? यहाँ न रोटी दस्तयाब है न पानी। हमें इस घटिया क़िस्म की ख़ुराक से घिन आती है।”

6तब रब ने उन के दरमियान ज़हरीले साँप भेज दिए जिन के काटने से बहुत से लोग मर गए। 7फिर लोग मूसा के पास आए। उन्हों ने कहा, “हम ने रब और आप के ख़िलाफ़ बातें करते हुए गुनाह किया। हमारी सिफ़ारिश करें कि रब हम से साँप दूर कर दे।”

मूसा ने उन के लिए दुआ की 8तो रब ने मूसा से कहा, “एक साँप बना कर उसे खम्बे से लटका दे। जो भी डसा गया हो वह उसे देख कर बच जाएगा।” 9चुनाँचे मूसा ने पीतल का एक साँप बनाया और खम्बा खड़ा करके साँप को उस से लटका दिया। और ऐसा हुआ कि जिसे भी डसा गया था वह पीतल के साँप पर नज़र करके बच गया।

मोआब की तरफ़ सफ़र

10इस्राईली रवाना हुए और ओबोत में अपने ख़ैमे लगाए। 11फिर वहाँ से कूच करके अय्ये-अबारीम में डेरे डाले, उस रेगिस्तान में जो मशरिक़ की तरफ़ मोआब के सामने है। 12वहाँ से रवाना हो कर वह वादी-ए-ज़िरद में ख़ैमाज़न हुए। 13जब वादी-ए-ज़िरद से रवाना हुए तो दरया-ए-अर्नोन के परले यानी जुनूबी किनारे पर ख़ैमाज़न हुए। यह दरया रेगिस्तान में है और अमोरियों के इलाक़े से निकलता है। यह अमोरियों और मोआबियों के दरमियान की सरहद है। 14इस का ज़िक्र किताब ‘रब की जंगें’ में भी है,

“वाहेब जो सूफ़ा में है, दरया-ए-अर्नोन की
वादियाँ 15और वादियों का वह ढलान जो आर
शहर तक जाता है और मोआब की सरहद पर
वाक़े है।”

16वहाँ से वह बैर यानी ‘कुआँ’ पहुँचे। यह वही बैर है जहाँ रब ने मूसा से कहा, “लोगों को इकट्ठा कर तो मैं उन्हें पानी दूँगा।” 17उस वक़्त इस्राईलियों ने यह गीत गाया,

“ऐ कुएँ, फूट निकल! उस के बारे में गीत
गाओ,
18उस कुएँ के बारे में जिसे सरदारों ने खोदा,
जिसे क़ौम के राहनुमाओं ने असा-ए-शाही
और अपनी लाठियों से खोदा।”

फिर वह रेगिस्तान से मत्तना को गए, 19मत्तना से नहलीएल को और नहलीएल से बामात को। 20बामात से वह मोआबियों के इलाक़े की उस वादी में पहुँचे जो पिसगा पहाड़ के दामन में है। इस पहाड़ की चोटी से वादी-ए-यर्दन का जुनूबी हिस्सा यशीमोन ख़ूब नज़र आता है।

सीहोन और ओज की शिकस्त

21इस्राईल ने अमोरियों के बादशाह सीहोन
को इत्तिला भेजी, 22"हमें अपने मुल्क में से
गुज़रने दें। हम सीधे सीधे गुज़र जाएंगे। न हम
कोई खेत या अंगूर का बाग़ छेड़ेंगे, न किसी
कुएँ का पानी पिएँगे। हम आप के मुल्क में
से सीधे गुज़रते हुए शाहराह पर ही रहेंगे।"
23लेकिन सीहोन ने उन्हें गुज़रने न दिया बल्कि
अपनी फ़ौज जमा करके इस्राईल से लड़ने
के लिए रेगिस्तान में चल पड़ा। यहज़ पहुँच
कर उस ने इस्राईलियों से जंग की। 24लेकिन
इस्राईलियों ने उसे क़त्ल किया और दरया-ए-
अर्नोन से ले कर दरया-ए-यब्बोक़ तक यानी
अम्मोनियों की सरहद तक उस के मुल्क पर
क़ब्ज़ा कर लिया। वह इस से आगे न जा
सके क्यूँकि अम्मोनियों ने अपनी सरहद की
हिसारबन्दी कर रखी थी। 25इस्राईली तमाम
अमोरी शहरों पर क़ब्ज़ा करके उन में रहने
लगे। उन में हस्बोन और उस के इर्दगिर्द की
आबादियाँ शामिल थीं।

26हस्बोन अमोरी बादशाह सीहोन का दार-
उल-हुकूमत था। उस ने मोआब के पिछले
बादशाह से लड़ कर उस से यह इलाक़ा दरया-
ए-अर्नोन तक छीन लिया था। 27उस वाकिए
का ज़िक्र शाइरी में यूँ किया गया है,

"हस्बोन के पास आ कर उसे अज़ सर-ए-
नौ तामीर करो, सीहोन के शहर को अज़ सर-
ए-नौ क़ाइम करो।

28हस्बोन से आग निकली, सीहोन के शहर
से शोला भड़का। उस ने मोआब के शहर
आर को जला दिया, अर्नोन की बुलन्दियों के
मालिकों को भस्म किया।

29ऐ मोआब, तुझ पर अफ़्सोस! ऐ कमोस
देवता की क़ौम, तू हलाक हुई है। कमोस ने
अपने बेटों को मफ़रूर और अपनी बेटियों को
अमोरी बादशाह सीहोन की क़ैदी बना दिया
है।

30लेकिन जब हम ने अमोरियों पर तीर
चलाए तो हस्बोन का इलाक़ा दीबोन तक
बर्बाद हुआ। हम ने नुफ़ह तक सब कुछ तबाह
किया, वह नुफ़ह जिस का इलाक़ा मीदबा तक
है।"

31यूँ इस्राईल अमोरियों के मुल्क में आबाद
हुआ। 32वहाँ से मूसा ने अपने जासूस
याज़ेर शहर भेजे। वहाँ भी अमोरी रहते थे।
इस्राईलियों ने याज़ेर और उस के इर्दगिर्द
के शहरों पर भी क़ब्ज़ा किया और वहाँ के
अमोरियों को निकाल दिया।

33इस के बाद वह मुड़ कर बसन की तरफ़
बढ़े। तब बसन का बादशाह ओज अपनी
तमाम फ़ौज ले कर उन से लड़ने के लिए
शहर इद्रई आया। 34उस वक़्त रब ने मूसा
से कहा, "ओज से न डरना। मैं उसे, उस
की तमाम फ़ौज और उस का मुल्क तेरे
हवाले कर चुका हूँ। उस के साथ वही सुलूक
कर जो तू ने अमोरियों के बादशाह सीहोन
के साथ किया, जिस का दार-उल-हुकूमत
हस्बोन था।" 35इस्राईलियों ने ओज, उस के
बेटों और तमाम फ़ौज को हलाक कर दिया।
कोई भी न बचा। फिर उन्हों ने बसन के मुल्क
पर क़ब्ज़ा कर लिया।

बलक़ बलआम को इस्राईल पर लानत भेजने के लिए बुलाता है

22 इस के बाद इस्राईली मोआब के
मैदानों में पहुँच कर दरया-ए-यर्दन
के मशरिक़ी किनारे पर यरीहू के आमने-
सामने ख़ैमाज़न हुए।

2मोआब के बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर
को मालूम हुआ कि इस्राईलियों ने अमोरियों
के साथ क्या कुछ किया है। 3मोआबियों ने
यह भी देखा कि इस्राईली बहुत ज़्यादा हैं,
इस लिए उन पर दह्शत छा गई। 4उन्हों ने
मिदियानियों के बुज़ुर्गों से बात की, "अब यह
हुजूम उस तरह हमारे इर्दगिर्द का इलाक़ा चट
कर जाएगा जिस तरह बैल मैदान की घास
चट कर जाता है।"

5तब बलक़ ने अपने क़ासिद फ़तोर शहर
को भेजे जो दरया-ए-फ़ुरात पर वाक़े था और
जहाँ बलआम बिन बओर अपने वतन में रहता
था। क़ासिद उसे बुलाने के लिए उस के पास
पहुँचे और उसे बलक़ का पैग़ाम सुनाया, "एक
क़ौम मिस्र से निकल आई है जो रू-ए-ज़मीन
पर छा कर मेरे क़रीब ही आबाद हुई है। 6इस
लिए आएँ और इन लोगों पर लानत भेजें,
क्यूँकि वह मुझ से ज़्यादा ताक़तवर हैं। फिर
शायद मैं उन्हें शिकस्त दे कर मुल्क से भगा
सकूँ। क्यूँकि मैं जानता हूँ कि जिन्हें आप
बरकत देते हैं उन्हें बरकत मिलती है और जिन
पर आप लानत भेजते हैं उन पर लानत आती
है।"

7यह पैग़ाम ले कर मोआब और मिदियान
के बुज़ुर्ग रवाना हुए। उन के पास इनआम के
पैसे थे। बलआम के पास पहुँच कर उन्हों ने
उसे बलक़ का पैग़ाम सुनाया। 8बलआम ने
कहा, "रात यहाँ गुज़ारें। कल मैं आप को बता
दूँगा कि रब इस के बारे में क्या फ़रमाता है।"
चुनाँचे मोआबी सरदार उस के पास ठहर गए।

9रात के वक़्त अल्लाह बलआम पर ज़ाहिर
हुआ। उस ने पूछा, "यह आदमी कौन हैं जो
तेरे पास आए हैं?" 10बलआम ने जवाब
दिया, "मोआब के बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर
ने मुझे पैग़ाम भेजा है, 11'जो क़ौम मिस्र से
निकल आई है वह रू-ए-ज़मीन पर छा गई
है। इस लिए आएँ और मेरे लिए उन पर लानत
भेजें। फिर शायद मैं उन से लड़ कर उन्हें भगा
देने में कामयाब हो जाऊँ'।" 12रब ने बलआम
से कहा, "उन के साथ न जाना। तुझे उन पर
लानत भेजने की इजाज़त नहीं है, क्यूँकि उन
पर मेरी बरकत है।"

13अगली सुब्ह बलआम जाग उठा तो उस
ने बलक़ के सरदारों से कहा, "अपने वतन
वापस चले जाएँ, क्यूँकि रब ने मुझे आप के
साथ जाने की इजाज़त नहीं दी।" 14चुनाँचे
मोआबी सरदार ख़ाली हाथ बलक़ के पास
वापस आए। उन्हों ने कहा, "बलआम हमारे
साथ आने से इन्कार करता है।" 15तब बलक़
ने और सरदार भेजे जो पहले वालों की निस्बत
तादाद और उह्दे के लिहाज़ से ज़्यादा थे।
16वह बलआम के पास जा कर कहने लगे,
"बलक़ बिन सफ़ोर कहते हैं कि कोई भी बात
आप को मेरे पास आने से न रोके, 17क्यूँकि
मैं आप को बड़ा इनआम दूँगा। आप जो भी
कहेंगे मैं करने के लिए तय्यार हूँ। आएँ तो सही
और मेरे लिए उन लोगों पर लानत भेजें।"

18लेकिन बलआम ने जवाब दिया, "अगर
बलक़ अपने महल को चाँदी और सोने से भर
कर भी मुझे दे तो भी मैं रब अपने ख़ुदा के
फ़रमान की ख़िलाफ़वरज़ी नहीं कर सकता,
ख़्वाह बात छोटी हो या बड़ी। 19आप दूसरे
सरदारों की तरह रात यहाँ गुज़ारें। इतने में मैं
मालूम करूँगा कि रब मुझे मज़ीद क्या कुछ
बताता है।"

20उस रात अल्लाह बलआम पर ज़ाहिर
हुआ और कहा, "चूँकि यह आदमी तुझे
बुलाने आए हैं इस लिए उन के साथ चला
जा। लेकिन सिर्फ़ वही कुछ करना जो मैं तुझे
बताऊँगा।"

बलआम की गधी

21सुब्ह को बलआम ने उठ कर अपनी गधी
पर ज़ीन कसा और मोआबी सरदारों के साथ
चल पड़ा। 22लेकिन अल्लाह निहायत ग़ुस्से
हुआ कि वह जा रहा है, इस लिए उस का
फ़रिश्ता उस का मुक़ाबला करने के लिए रास्ते
में खड़ा हो गया। बलआम अपनी गधी पर
सवार था और उस के दो नौकर उस के साथ
चल रहे थे। 23जब गधी ने देखा कि रब का
फ़रिश्ता अपने हाथ में तलवार थामे हुए रास्ते
में खड़ा है तो वह रास्ते से हट कर खेत में
चलने लगी। बलआम उसे मारते मारते रास्ते
पर वापस ले आया।

24फिर वह अंगूर के दो बाग़ों के दरमियान से
गुज़रने लगे। रास्ता तंग था, क्यूँकि वह दोनों
तरफ़ बाग़ों की चारदीवारी से बन्द था। अब

रब का फ़रिश्ता वहाँ खड़ा हुआ। 25गधी यह
देख कर चारदीवारी के साथ साथ चलने लगी,
और बलआम का पाँओ कुचला गया। उस ने
उसे दुबारा मारा।
26रब का फ़रिश्ता आगे निकला और तीसरी
मर्तबा रास्ते में खड़ा हो गया। अब रास्ते से
हट जाने की कोई गुन्जाइश नहीं थी, न दाईं
तरफ़ और न बाईं तरफ़। 27जब गधी ने रब
का फ़रिश्ता देखा तो वह लेट गई। बलआम
को ग़ुस्सा आ गया, और उस ने उसे अपनी
लाठी से ख़ूब मारा।
28तब रब ने गधी को बोलने दिया, और उस
ने बलआम से कहा, "मैं ने आप से क्या ग़लत
सुलूक किया है कि आप मुझे अब तीसरी दफ़ा
पीट रहे हैं?" 29बलआम ने जवाब दिया, "तू
ने मुझे बेवुक़ूफ़ बनाया है! काश मेरे हाथ
में तलवार होती तो मैं अभी तुझे ज़बह कर
देता!" 30गधी ने बलआम से कहा, "क्या मैं
आप की गधी नहीं हूँ जिस पर आप आज तक
सवार होते रहे हैं? क्या मुझे कभी ऐसा करने
की आदत थी?" उस ने कहा, "नहीं।"
31फिर रब ने बलआम की आँखें खोलीं और
उस ने रब के फ़रिश्ते को देखा जो अब तक
हाथ में तलवार थामे हुए रास्ते में खड़ा था।
बलआम ने मुँह के बल गिर कर सिज्दा किया।
32रब के फ़रिश्ते ने पूछा, "तू ने तीन बार
अपनी गधी को क्यूँ पीटा? मैं तेरे मुक़ाबले
में आया हूँ, क्यूँकि जिस तरफ़ तू बढ़ रहा है
उस का अन्जाम बुरा है। 33गधी तीन मर्तबा
मुझे देख कर मेरी तरफ़ से हट गई। अगर वह
न हटती तो तू उस वक़्त हलाक हो गया होता
अगरचे मैं गधी को छोड़ देता।"
34बलआम ने रब के फ़रिश्ते से कहा, "मैं
ने गुनाह किया है। मुझे मालूम नहीं था कि
तू मेरे मुक़ाबले में रास्ते में खड़ा है। लेकिन
अगर मेरा सफ़र तुझे बुरा लगे तो मैं अब
वापस चला जाऊँगा।" 35रब के फ़रिश्ते ने
कहा, "इन आदमियों के साथ अपना सफ़र
जारी रख। लेकिन सिर्फ़ वही कुछ कहना जो
मैं तुझे बताऊँगा।" चुनाँचे बलआम ने बलक़
के सरदारों के साथ अपना सफ़र जारी रखा।
36जब बलक़ को ख़बर मिली कि बलआम
आ रहा है तो वह उस से मिलने के लिए
मोआब के उस शहर तक गया जो मोआब की
सरहद दरया-ए-अर्नोन पर वाक़े है। 37उस ने
बलआम से कहा, "क्या मैं ने आप को इत्तिला
नहीं भेजी थी कि आप ज़रूर आएँ? आप
क्यूँ नहीं आए? क्या आप ने सोचा कि मैं
आप को मुनासिब इनआम नहीं दे पाऊँगा?"
38बलआम ने जवाब दिया, "बहरहाल अब मैं
पहुँच गया हूँ। लेकिन मैं सिर्फ़ वही कुछ कह
सकता हूँ जो अल्लाह ने पहले ही मेरे मुँह में
डाल दिया है।"
39फिर बलआम बलक़ के साथ क़िर्यत-
हुसात गया। 40वहाँ बलक़ ने गाय-बैल और
भेड़-बकरियाँ क़ुर्बान करके उन के गोश्त में से
बलआम और उस के साथ वाले सरदारों को
दे दिया। 41अगली सुब्ह बलक़ बलआम को
साथ ले कर एक ऊँची जगह पर चढ़ गया जिस
का नाम बामोत-बाल था। वहाँ से इस्राईली
ख़ैमागाह का किनारा नज़र आता था।

बलआम की पहली बरकत

23 बलआम ने कहा, "यहाँ मेरे लिए
सात क़ुर्बानगाहें बनाएँ। साथ साथ
मेरे लिए सात बैल और सात मेंढे तय्यार कर
रखें।" 2बलक़ ने ऐसा ही किया, और दोनों
ने मिल कर हर क़ुर्बानगाह पर एक बैल और
एक मेंढा चढ़ाया। 3फिर बलआम ने बलक़ से
कहा, "यहाँ अपनी क़ुर्बानी के पास खड़े रहें।
मैं कुछ फ़ासिले पर जाता हूँ, शायद रब मुझ
से मिलने आए। जो कुछ वह मुझ पर ज़ाहिर
करे मैं आप को बता दूँगा।"
यह कह कर वह एक ऊँचे मक़ाम पर चला
गया जो हरियाली से बिलकुल महरूम था।
4वहाँ अल्लाह बलआम से मिला। बलआम ने
कहा, "मैं ने सात क़ुर्बानगाहें तय्यार करके हर
क़ुर्बानगाह पर एक बैल और एक मेंढा क़ुर्बान

किया है।" 5तब रब ने उसे बलक़ के लिए पैग़ाम दिया और कहा, "बलक़ के पास वापस जा और उसे यह पैग़ाम सुना।" 6बलआम बलक़ के पास वापस आया जो अब तक मोआबी सरदारों के साथ अपनी क़ुर्बानी के पास खड़ा था। 7बलआम बोल उठा,

"बलक़ मुझे अराम से यहाँ लाया है,
मोआबी बादशाह ने मुझे मशरिक़ी पहाड़ों से
बुला कर कहा, 'आओ, याक़ूब पर मेरे लिए
लानत भेजो। आओ, इस्राईल को बददुआ
दो।'
8मैं किस तरह उन पर लानत भेजूँ जिन पर
अल्लाह ने लानत नहीं भेजी? मैं किस तरह
उन्हें बददुआ दूँ जिन्हें रब ने बददुआ नहीं दी?
9मैं उन्हें चटानों की चोटी से देखता हूँ,
पहाड़ियों से उन का मुशाहदा करता हूँ। वाक़ई
यह एक ऐसी क़ौम है जो दूसरों से अलग रहती
है। यह अपने आप को दूसरी क़ौमों से मुम्ताज़
समझती है।
10कौन याक़ूब की औलाद को गिन सकता
है जो गर्द की मानिन्द बेशुमार है। कौन
इस्राईलियों का चौथा हिस्सा भी गिन सकता
है? रब करे कि मैं रास्तबाज़ों की मौत मरूँ,
कि मेरा अन्जाम उन के अन्जाम जैसा अच्छा
हो।"

11बलक़ ने बलआम से कहा, "आप ने मेरे साथ क्या किया है? मैं आप को अपने दुश्मनों पर लानत भेजने के लिए लाया और आप ने उन्हें अच्छी-ख़ासी बरकत दी है।" 12बलआम ने जवाब दिया, "क्या लाज़िम नहीं कि मैं वही कुछ बोलूँ जो रब ने बताने को कहा है?"

बलआम की दूसरी बरकत

13फिर बलक़ ने उस से कहा, "आएँ, हम एक और जगह जाएँ जहाँ से आप इस्राईली क़ौम को देख सकेंगे, गो उन की ख़ैमागाह का सिर्फ़ किनारा ही नज़र आएगा। आप सब को नहीं देख सकेंगे। वहीं से उन पर मेरे लिए लानत भेजें।" 14यह कह कर वह उस के साथ पिसगा की चोटी पर चढ़ कर पहरेदारों के मैदान तक पहुँच गया। वहाँ भी उस ने सात क़ुर्बानगाहें बना कर हर एक पर एक बैल और एक मेंढा क़ुर्बान किया। 15बलआम ने बलक़ से कहा, "यहाँ अपनी क़ुर्बानगाह के पास खड़े रहें। मैं कुछ फ़ासिले पर जा कर रब से मिलूँगा।"

16रब बलआम से मिला। उस ने उसे बलक़ के लिए पैग़ाम दिया और कहा, "बलक़ के पास वापस जा और उसे यह पैग़ाम सुना दे।" 17वह वापस चला गया। बलक़ अब तक अपने सरदारों के साथ अपनी क़ुर्बानी के पास खड़ा था। उस ने उस से पूछा, "रब ने क्या कहा?" 18बलआम ने कहा, "ऐ बलक़, उठो और सुनो। ऐ सफ़ोर के बेटे, मेरी बात पर ग़ौर करो।

19अल्लाह आदमी नहीं जो झूट बोलता है। वह इन्सान नहीं जो कोई फ़ैसला करके बाद में पछताए। क्या वह कभी अपनी बात पर अमल नहीं करता? क्या वह कभी अपनी बात पूरी नहीं करता?

20मुझे बरकत देने को कहा गया है। उस ने बरकत दी है और मैं यह बरकत रोक नहीं सकता।

21याक़ूब के घराने में ख़राबी नज़र नहीं आती, इस्राईल में दुख दिखाई नहीं देता। रब उस का ख़ुदा उस के साथ है, और क़ौम बादशाह की ख़ुशी में नारे लगाती है।

22अल्लाह उन्हें मिस्र से निकाल लाया, और उन्हें जंगली बैल की ताक़त हासिल है।

23याक़ूब के घराने के ख़िलाफ़ जादूगरी नाकाम है, इस्राईल के ख़िलाफ़ ग़ैबदानी बेफ़ाइदा है। अब याक़ूब के घराने से कहा जाएगा, 'अल्लाह ने कैसा काम किया है!'

24इस्राईली क़ौम शेरनी की तरह उठती और शेरबबर की तरह खड़ी हो जाती है। जब तक वह अपना शिकार न खा ले वह आराम नहीं करता, जब तक वह मारे हुए लोगों का ख़ून न पी ले वह नहीं लेटता।"

25यह सुन कर बलक़ ने कहा, “अगर आप
उन पर लानत भेजने से इन्कार करें, कम
अज़ कम उन्हें बरकत तो न दें।” 26बलआम
ने जवाब दिया, “क्या मैं ने आप को नहीं
बताया था कि जो कुछ भी रब कहेगा मैं वही
करूँगा?”

बलआम की तीसरी बरकत

27तब बलक़ ने बलआम से कहा, “आएँ,
मैं आप को एक और जगह ले जाऊँ। शायद
अल्लाह राज़ी हो जाए कि आप मेरे लिए वहाँ
से उन पर लानत भेजें।” 28वह उस के साथ
फ़ग़ूर पहाड़ पर चढ़ गया। उस की चोटी से
यर्दन की वादी का जुनूबी हिस्सा यशीमोन
दिखाई दिया। 29बलआम ने उस से कहा, “मेरे
लिए यहाँ सात क़ुर्बानगाहें बना कर सात बैल
और सात मेंढे तय्यार कर रखें।” 30बलक़ ने
ऐसा ही किया। उस ने हर एक क़ुर्बानगाह पर
एक बैल और एक मेंढा क़ुर्बान किया।

24 अब बलआम को उस बात का पूरा
यक़ीन हो गया कि रब को पसन्द
है कि मैं इस्राईलियों को बरकत दूँ। इस लिए
उस ने इस मर्तबा पहले की तरह जादूगरी
का तरीक़ा इस्तेमाल न किया बल्कि सीधा
रेगिस्तान की तरफ़ रुख़ किया 2जहाँ इस्राईल
अपने अपने क़बीलों की तरतीब से ख़ैमाज़न
था। यह देख कर अल्लाह का रूह उस पर
नाज़िल हुआ, 3और वह बोल उठा,

“बलआम बिन बओर का पैग़ाम सुनो, उस
के पैग़ाम पर ग़ौर करो जो साफ़ साफ़ देखता
है,

4उस का पैग़ाम जो अल्लाह की बातें सुन
लेता है, क़ादिर-ए-मुतलक़ की रोया को देख
लेता है और ज़मीन पर गिर कर पोशीदा बातें
देखता है।

5ऐ याक़ूब, तेरे ख़ैमे कितने शानदार हैं! ऐ
इस्राईल, तेरे घर कितने अच्छे हैं!

6वह दूर तक फैली हुई वादियों की मानिन्द,
नहर के किनारे लगे बाग़ों की मानिन्द, रब के
लगाए हुए ऊद के दरख़्तों की मानिन्द, पानी
के किनारे लगे देवदार के दरख़्तों की मानिन्द
हैं।

7उन की बाल्टियों से पानी छलकता रहेगा,
उन के बीज को कस्रत का पानी मिलेगा।
उन का बादशाह अजाज से ज़्यादा ताक़तवर
होगा, और उन की सल्तनत सरफ़राज़ होगी।

8अल्लाह उन्हें मिस्र से निकाल लाया, और
उन्हें जंगली बैल की सी ताक़त हासिल है।
वह मुख़ालिफ़ क़ौमों को हड़प करके उन की
हड्डियाँ चूर चूर कर देते हैं, वह अपने तीर चला
कर उन्हें मार डालते हैं।

9इस्राईल शेरबबर या शेरनी की मानिन्द है।
जब वह दबक कर बैठ जाए तो कोई भी उसे
छेड़ने की जुरअत नहीं करता। जो तुझे बरकत
दे उसे बरकत मिले, और जो तुझ पर लानत
भेजे उस पर लानत आए।”

10यह सुन कर बलक़ आपे से बाहर हुआ।
उस ने ताली बजा कर अपनी हिक़ारत का
इज़हार किया और कहा, “मैं ने तुझे इस लिए
बुलाया था कि तू मेरे दुश्मनों पर लानत भेजे।
अब तू ने उन्हें तीनों बार बरकत ही दी है।
11अब दफ़ा हो जा! अपने घर वापस भाग
जा! मैं ने कहा था कि बड़ा इनआम दूँगा।
लेकिन रब ने तुझे इनआम पाने से रोक दिया
है।”

12बलआम ने जवाब दिया, “क्या मैं ने उन
लोगों को जिन्हें आप ने मुझे बुलाने के लिए
भेजा था नहीं बताया था 13कि अगर बलक़
अपने महल को चाँदी और सोने से भर कर
भी मुझे दे दे तो भी मैं रब की किसी बात की
ख़िलाफ़वरज़ी नहीं कर सकता, ख़्वाह मेरी
नीयत अच्छी हो या बुरी। मैं सिर्फ़ वह कुछ
कर सकता हूँ जो अल्लाह फ़रमाता है। 14अब
मैं अपने वतन वापस चला जाता हूँ। लेकिन
पहले मैं आप को बता देता हूँ कि आख़िरकार
यह क़ौम आप की क़ौम के साथ क्या कुछ
करेगी।”

बलआम की चौथी बरकत

15वह बोल उठा,

“बलआम बिन बओर का पैग़ाम सुनो, उस
का पैग़ाम जो साफ़ साफ़ देखता है,
16उस का पैग़ाम जो अल्लाह की बातें
सुन लेता और अल्लाह तआला की मर्ज़ी को
जानता है, जो क़ादिर-ए-मुतलक़ की रोया को
देख लेता और ज़मीन पर गिर कर पोशीदा
बातें देखता है।
17जिसे मैं देख रहा हूँ वह इस वक़्त नहीं
है। जो मुझे नज़र आ रहा है वह क़रीब नहीं
है। याक़ूब के घराने से सितारा निकलेगा,
और इस्राईल से असा-ए-शाही उठेगा जो
मोआब के माथों और सेत के तमाम बेटों की
खोपड़ियों को पाश पाश करेगा।
18अदोम उस के क़ब्ज़े में आएगा, उस का
दुश्मन सईर उस की मिलकियत बनेगा जबकि
इस्राईल की ताक़त बढ़ती जाएगी।
19याक़ूब के घराने से एक हुक्मरान
निकलेगा जो शहर के बचे हुओं को हलाक
कर देगा।”

बलआम के आख़िरी पैग़ाम

20फिर बलआम ने अमालीक़ को देखा और
कहा,

“अमालीक़ क़ौमों में अव्वल था, लेकिन
आख़िरकार वह ख़त्म हो जाएगा।”
21फिर उस ने क़ीनियों को देखा और कहा,

“तेरी सुकूनतगाह मुस्तह्कम है, तेरा चटान
में बना घोंसला मज़बूत है।
22लेकिन तू तबाह हो जाएगा जब असूर
तुझे गिरिफ़्तार करेगा।”
23एक और दफ़ा उस ने बात की,

“हाय, कौन ज़िन्दा रह सकता है जब
अल्लाह यूँ करेगा?
24कित्तीम के साहिल से बहरी जहाज़
आएँगे जो असूर और इबर को ज़लील करेंगे,
लेकिन वह ख़ुद भी हलाक हो जाएंगे।”
25फिर बलआम उठ कर अपने घर वापस
चला गया। बलक़ भी वहाँ से चला गया।

मोआब इस्राईलियों की आज़माइश करता है

25 जब इस्राईली शित्तीम में रह रहे थे
तो इस्राईली मर्द मोआबी औरतों
से ज़िनाकारी करने लगे। 2यह ऐसा हुआ कि
मोआबी औरतें अपने देवताओं को क़ुर्बानियाँ
पेश करते वक़्त इस्राईलियों को शरीक होने
की दावत देने लगीं। इस्राईली दावत क़बूल
करके क़ुर्बानियों से खाने और देवताओं को
सिज्दा करने लगे। 3इस तरीक़े से इस्राईली
मोआबी देवता बनाम बाल-फ़ग़ूर की पूजा
करने लगे, और रब का ग़ज़ब उन पर आन
पड़ा। 4उस ने मूसा से कहा, “इस क़ौम के
तमाम राहनुमाओं को सज़ा-ए-मौत दे कर
सूरज की रौशनी में रब के सामने लटका, वर्ना
रब का इस्राईलियों पर से ग़ज़ब नहीं टलेगा।”
5चुनाँचे मूसा ने इस्राईल के क़ाज़ियों से कहा,
“लाज़िम है कि तुम में से हर एक अपने उन
आदमियों को जान से मार दे जो बाल-फ़ग़ूर
देवता की पूजा में शरीक हुए हैं।”

6मूसा और इस्राईल की पूरी जमाअत
मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर जमा हो कर
रोने लगे। इत्तिफ़ाक़ से उसी वक़्त एक आदमी
वहाँ से गुज़रा जो एक मिदियानी औरत को
अपने घर ले जा रहा था। 7यह देख कर हारून
का पोता फ़ीन्हास बिन इलीअज़र जमाअत से
निकला और नेज़ा पकड़ कर 8उस इस्राईली
के पीछे चल पड़ा। वह औरत समेत अपने
ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो फ़ीन्हास ने उन के
पीछे पीछे जा कर नेज़ा इतने ज़ोर से मारा
कि वह दोनों में से गुज़र गया। उस वक़्त वबा
फैलने लगी थी, लेकिन फ़ीन्हास के इस अमल
से वह रुक गई। 9तो भी 24,000 अफ़राद मर
चुके थे।

10रब ने मूसा से कहा, 11“हारून के पोते
फ़ीन्हास बिन इलीअज़र ने इस्राईलियों पर मेरा

ग़ुस्सा ठंडा कर दिया है। मेरी ग़ैरत अपना
कर वह इस्राईल में दीगर माबूदों की पूजा को
बर्दाश्त न कर सका। इस लिए मेरी ग़ैरत ने
इस्राईलियों को नेस्त-ओ-नाबूद नहीं किया।
12लिहाज़ा उसे बता देना कि मैं उस के साथ
सलामती का अह्द क़ाइम करता हूँ। 13इस
अह्द के तहत उसे और उस की औलाद को
अबद तक इमाम का उह्दा हासिल रहेगा,
क्यूँकि अपने ख़ुदा की ख़ातिर ग़ैरत खा कर
उस ने इस्राईलियों का कफ़्फ़ारा दिया।"

14जिस आदमी को मिदियानी औरत के
साथ मार दिया गया उस का नाम ज़िम्री बिन
सलू था, और वह शमाऊन के क़बीले के एक
आबाई घराने का सरपरस्त था। 15मिदियानी
औरत का नाम कज़्बी था, और वह सूर की
बेटी थी जो मिदियानियों के एक आबाई घराने
का सरपरस्त था।

16रब ने मूसा से कहा, 17"मिदियानियों
को दुश्मन क़रार दे कर उन्हें मार डालना।
18क्यूँकि उन्हों ने अपनी चालाकियों से तुम्हारे
साथ दुश्मन का सा सुलूक किया, उन्हों ने तुम्हें
बाल-फ़ग़ूर की पूजा करने पर उकसाया और
तुम्हें अपनी बहन मिदियानी सरदार की बेटी
कज़्बी के ज़रीए जिसे वबा फैलते वक़्त मार
दिया गया बहकाया।"

दूसरी मर्दुमशुमारी

26 वबा के बाद रब ने मूसा और
हारून के बेटे इलीअज़र से कहा,
2"पूरी इस्राईली जमाअत की मर्दुमशुमारी
उन के आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। उन
तमाम मर्दों को गिनना जो 20 साल या इस
से ज़ाइद के हैं और जो जंग लड़ने के क़ाबिल
हैं।"

3-4मूसा और इलीअज़र ने इस्राईलियों को
बताया कि रब ने उन्हें क्या हुक्म दिया है।
चुनाँचे उन्हों ने मोआब के मैदानी इलाक़े में
यरीहू के सामने, लेकिन दरया-ए-यर्दन के
मशरिक़ी किनारे पर मर्दुमशुमारी की। यह वह
इस्राईली आदमी थे जो मिस्र से निकले थे।

5-7इस्राईल के पहलौठे रूबिन के क़बीले के
43,730 मर्द थे। क़बीले के चार कुंबे हनूकी,
फ़ल्लुवी, हस्रोनी और कर्मी रूबिन के बेटों
हनूक, फ़ल्लू, हस्रोन और कर्मी से निकले हुए
थे। 8रूबिन का बेटा फ़ल्लू इलियाब का बाप
था 9जिस के बेटे नमूएल, दातन और अबीराम
थे।

दातन और अबीराम वही लोग थे जिन्हें
जमाअत ने चुना था और जिन्हों ने क़ोरह के
गुरोह समेत मूसा और हारून से झगड़ते हुए
ख़ुद रब से झगड़ा किया। 10उस वक़्त ज़मीन
ने अपना मुँह खोल कर उन्हें क़ोरह समेत हड़प
कर लिया था। उस के 250 साथी भी मर गए
थे जब आग ने उन्हें भस्म कर दिया। यूँ वह
सब इस्राईल के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल बन
गए थे। 11लेकिन क़ोरह की पूरी नस्ल मिटाई
नहीं गई थी।

12-14शमाऊन के क़बीले के 22,200 मर्द
थे। क़बीले के पाँच कुंबे नमूएली, यमीनी,
यक़ीनी, ज़ारही और साऊली शमाऊन के बेटों
नमूएल, यमीन, यकीन, ज़ारह और साऊल से
निकले हुए थे।

15-18जद के क़बीले के 40,500 मर्द थे।
क़बीले के सात कुंबे सफ़ोनी, हज्जी, सूनी,
उज़नी, एरी, अरूदी और अरेली जद के बेटों
सफ़ोन, हज्जी, सूनी, उज़नी, एरी, अरूद और
अरेली से निकले हुए थे।

19-22यहूदाह के क़बीले के 76,500 मर्द थे।
यहूदाह के दो बेटे एर और ओनान मिस्र आने
से पहले कनआन में मर गए थे। क़बीले के
तीन कुंबे सेलानी, फ़ारसी और ज़ारही यहूदाह
के बेटों सेला, फ़ारस और ज़ारह से निकले हुए
थे।

फ़ारस के दो बेटों हस्रोन और हमूल से
दो कुंबे हस्रोनी और हमूली निकले हुए थे।
23-25इश्कार के क़बीले के 64,300 मर्द थे।
क़बीले के चार कुंबे तोलई, फ़ुव्वी, यसूबी और

सिम्रोनी इश्कार के बेटों तोला, फ़ुव्वा, यसूब और सिम्रोन से निकले हुए थे।

26-27ज़बूलून के क़बीले के 60,500 मर्द थे। क़बीले के तीन कुंबे सरदी, ऐलोनी और यहलीएली ज़बूलून के बेटों सरद, ऐलोन और यहलीएल से निकले हुए थे।

28यूसुफ़ के दो बेटों मनस्सी और इफ़्राईम के अलग अलग क़बीले बने।

29-34मनस्सी के क़बीले के 52,700 मर्द थे। क़बीले के आठ कुंबे मकीरी, जिलिआदी, ईअज़री, ख़लक़ी, अस्रीएली, सिकमी, समीदाई और हिफ़री थे। मकीरी मनस्सी के बेटे मकीर से जबकि जिलिआदी मकीर के बेटे जिलिआद से निकले हुए थे। बाक़ी कुंबे जिलिआद के छः बेटों ईअज़र, ख़लक़, अस्रीएल, सिकम, समीदा और हिफ़र से निकले हुए थे।

हिफ़र सिलाफ़िहाद का बाप था। सिलाफ़िहाद का कोई बेटा नहीं बल्कि पाँच बेटियाँ महलाह, नूआह, हुज्लाह, मिल्काह और तिर्ज़ा थीं।

35-37इफ़्राईम के क़बीले के 32,500 मर्द थे। क़बीले के चार कुंबे सूतलही, बकरी, तहनी और ईरानी थे। पहले तीन कुंबे इफ़्राईम के बेटों सूतलह, बकर और तहन से जबकि ईरानी सूतलह के बेटे ईरान से निकले हुए थे।

38-41बिनयमीन के क़बीले के 45,600 मर्द थे। क़बीले के सात कुंबे बालाई, अश्बेली, अख़ीरामी, सूफ़ामी, हूफ़ामी, अर्दी और नामानी थे। पहले पाँच कुंबे बिनयमीन के बेटों बाला, अश्बेल, अख़ीराम, सूफ़ाम और हूफ़ाम से जबकि अर्दी और नामानी बाला के बेटों से निकले हुए थे।

42-43दान के क़बीले के 64,400 मर्द थे। सब दान के बेटे सूहाम से निकले हुए थे, इस लिए सूहामी कहलाते थे।

44-47आशर के क़बीले के 53,400 मर्द थे। क़बीले के पाँच कुंबे यिमनी, इस्वी, बरीई, हिबरी और मल्कीएली थे। पहले तीन कुंबे आशर के बेटों यिम्ना, इस्वी और बरीआ से जबकि बाक़ी बरीआ के बेटों हिबर और मल्कीएल से निकले हुए थे। आशर की एक बेटी बनाम सिरह भी थी।

48-50नफ़्ताली के क़बीले के 45,400 मर्द थे। क़बीले के चार कुंबे यहसीएली, जूनी, यिसरी और सिल्लीमी नफ़्ताली के बेटों यहसीएल, जूनी, यिसर और सिल्लीम से निकले हुए थे।

51इस्राईली मर्दों की कुल तादाद 6,01,730 थी।

52रब ने मूसा से कहा, 53"जब मुल्क-ए-कनआन को तक़्सीम किया जाएगा तो ज़मीन इन की तादाद के मुताबिक़ देना है। 54बड़े क़बीलों को छोटे की निस्बत ज़्यादा ज़मीन दी जाए। हर क़बीले का इलाक़ा उस की तादाद से मुताबिक़त रखे। 55-56क़ुरआ डालने से फ़ैसला किया जाए कि हर क़बीले को कहाँ ज़मीन मिलेगी। लेकिन हर क़बीले के इलाक़े का रक़बा इस पर मब्नी हो कि क़बीले के कितने अफ़राद हैं।"

57लावी के क़बीले के तीन कुंबे जैर्सोनी, क़िहाती और मिरारी लावी के बेटों जैर्सोन, क़िहात और मिरारी से निकले हुए थे। 58इस के इलावा लिब्नी, हिब्रूनी, महली, मूशी और कोरही भी लावी के कुंबे थे। क़िहात अम्राम का बाप था। 59अम्राम ने लावी औरत यूकबिद से शादी की जो मिस्र में पैदा हुई थी। उन के दो बेटे हारून और मूसा और एक बेटी मरियम पैदा हुए। 60हारून के बेटे नदब, अबीहू, इलीअज़र और इतमर थे। 61लेकिन नदब और अबीहू रब को बख़ूर की नाजाइज़ क़ुर्बानी पेश करने के बाइस मर गए। 62लावियों के मर्दों की कुल तादाद 23,000 थी। इन में वह सब शामिल थे जो एक माह या इस से ज़ाइद के थे। उन्हें दूसरे इस्राईलियों से अलग गिना गया, क्यूँकि उन्हें इस्राईल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलनी थी।

63यूँ मूसा और इलीअज़र ने मोआब
के मैदानी इलाक़े में यरीहू के सामने
लेकिन दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर
इस्राईलियों की मर्दुमशुमारी की। 64लोगों को
गिनते गिनते उन्हें मालूम हुआ कि जो लोग
दश्त-ए-सीन में मूसा और हारून की पहली
मर्दुमशुमारी में गिने गए थे वह सब मर चुके
हैं। 65रब ने कहा था कि वह सब के सब
रेगिस्तान में मर जाएंगे, और ऐसा ही हुआ था।
सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना और यशूअ बिन नून
ज़िन्दा रहे।

सिलाफ़िहाद की बेटियाँ

27 सिलाफ़िहाद की पाँच बेटियाँ
महलाह, नूआह, हुज्लाह,
मिल्काह और तिर्ज़ा थीं। सिलाफ़िहाद यूसुफ़
के बेटे मनस्सी के कुंबे का था। उस का पूरा
नाम सिलाफ़िहाद बिन हिफ़र बिन जिलिआद
बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ़ था।
2सिलाफ़िहाद की बेटियाँ मुलाक़ात के ख़ैमे
के दरवाज़े पर आ कर मूसा, इलीअज़र इमाम
और पूरी जमाअत के सामने खड़ी हुईं। उन्हों
ने कहा, 3“हमारा बाप रेगिस्तान में फ़ौत
हुआ। लेकिन वह क़ोरह के उन साथियों में से
नहीं था जो रब के ख़िलाफ़ मुत्तहिद हुए थे।
वह इस सबब से न मरा बल्कि अपने ज़ाती
गुनाह के बाइस। जब वह मर गया तो उस
का कोई बेटा नहीं था। 4क्या यह ठीक है कि
हमारे ख़ानदान में बेटा न होने के बाइस हमें
ज़मीन न मिले और हमारे बाप का नाम-ओ-
निशान मिट जाए? हमें भी हमारे बाप के
दीगर रिश्तेदारों के साथ ज़मीन दें।”

5मूसा ने उन का मुआमला रब के सामने
पेश किया 6तो रब ने उस से कहा, 7“जो बात
सिलाफ़िहाद की बेटियाँ कर रही हैं वह दुरुस्त
है। उन्हें ज़रूर उन के बाप के रिश्तेदारों के
साथ ज़मीन मिलनी चाहिए। उन्हें बाप का
विरसा मिल जाए। 8इस्राईलियों को भी बताना
कि जब भी कोई आदमी मर जाए जिस का
बेटा न हो तो उस की बेटी को उस की मीरास
मिल जाए। 9अगर उस की बेटी भी न हो तो
उस के भाइयों को उस की मीरास मिल जाए।
10अगर उस के भाई भी न हों तो उस के बाप
के भाइयों को उस की मीरास मिल जाए।
11अगर यह भी न हों तो उस के सब से क़रीबी
रिश्तेदार को उस की मीरास मिल जाए। वह
उस की ज़ाती मिलकियत होगी। यह उसूल
इस्राईलियों के लिए क़ानूनी हैसियत रखता है।
वह इसे वैसा मानें जैसा रब ने मूसा को हुक्म
दिया है।”

यशूअ को मूसा का जानशीन मुक़र्रर किया जाता है

12फिर रब ने मूसा से कहा, “अबारीम के
पहाड़ी सिलसिले के इस पहाड़ पर चढ़ कर
उस मुल्क पर निगाह डाल जो मैं इस्राईलियों
को दूँगा। 13उसे देखने के बाद तू भी अपने
भाई हारून की तरह कूच करके अपने
बापदादा से जा मिलेगा, 14क्यूँकि तुम दोनों ने
दश्त-ए-सीन में मेरे हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी
की। उस वक़्त जब पूरी जमाअत ने मरीबा
में मेरे ख़िलाफ़ गिला-शिकवा किया तो तू ने
चटान से पानी निकालते वक़्त लोगों के सामने
मेरी क़ुद्दूसियत क़ाइम न रखी।” (मरीबा दश्त-
ए-सीन के क़ादिस में चश्मा है।)

15मूसा ने रब से कहा, 16“ऐ रब, तमाम
जानों के ख़ुदा, जमाअत पर किसी आदमी
को मुक़र्रर कर 17जो उन के आगे आगे जंग
के लिए निकले और उन के आगे आगे वापस
आ जाए, जो उन्हें बाहर ले जाए और वापस
ले आए। वर्ना रब की जमाअत उन भेड़ों की
मानिन्द होगी जिन का कोई चरवाहा न हो।”

18जवाब में रब ने मूसा से कहा, “यशूअ
बिन नून को चुन ले जिस में मेरा रूह है, और
अपना हाथ उस पर रख। 19उसे इलीअज़र
इमाम और पूरी जमाअत के सामने खड़ा
करके उन के रू-ब-रू ही उसे राहनुमाई की
ज़िम्मादारी दे। 20अपने इख़तियार में से कुछ

उसे दे ताकि इस्राईल की पूरी जमाअत उस
की इताअत करे। 21रब की मर्ज़ी जानने के
लिए वह इलीअज़र इमाम के सामने खड़ा
होगा तो इलीअज़र रब के सामने ऊरीम
और तुम्मीम इस्तेमाल करके उस की मर्ज़ी
दरयाफ़्त करेगा। उसी के हुक्म पर यशूअ
और इस्राईल की पूरी जमाअत ख़ैमागाह से
निकलेंगे और वापस आएँगे।"

22मूसा ने ऐसा ही किया। उस ने यशूअ
को चुन कर इलीअज़र और पूरी जमाअत
के सामने खड़ा किया। 23फिर उस ने उस
पर अपने हाथ रख कर उसे राहनुमाई की
ज़िम्मादारी सौंपी जिस तरह रब ने उसे बताया
था।

रोज़मर्रा की क़ुर्बानियाँ

28 रब ने मूसा से कहा, 2"इस्राईलियों
को बताना, ख़याल रखो कि
तुम मुक़र्ररा औक़ात पर मुझे जलने वाली
क़ुर्बानियाँ पेश करो। यह मेरी रोटी हैं और इन
की ख़ुश्बू मुझे पसन्द है। 3रब को जलने वाली
यह क़ुर्बानी पेश करना :

रोज़ाना भेड़ के दो यकसाला बच्चे जो बेऐब
हों पूरे तौर पर जला देना। 4एक को सुब्ह के
वक़्त पेश करना और दूसरे को सूरज के डूबने
के ऐन बाद। 5भेड़ के बच्चे के साथ ग़ल्ला की
नज़र भी पेश की जाए यानी डेढ़ किलोग्राम
बेहतरीन मैदा जो एक लिटर ज़ैतून के कूट कर
निकाले हुए तेल के साथ मिलाया गया हो।
6यह रोज़मर्रा की क़ुर्बानी है जो पूरे तौर पर
जलाई जाती है और पहली दफ़ा सीना पहाड़
पर चढ़ाई गई। इस जलने वाली क़ुर्बानी की
ख़ुश्बू रब को पसन्द है। 7-8साथ ही एक लिटर
शराब भी नज़र के तौर पर क़ुर्बानगाह पर
डाली जाए। सुब्ह और शाम की यह क़ुर्बानियाँ
दोनों ही इस तरीक़े से पेश की जाएँ।

सबत यानी हफ़्ते की क़ुर्बानी

9सबत के दिन भेड़ के दो और बच्चे
चढ़ाना। वह भी बेऐब और एक साल के हों।
साथ ही मै और ग़ल्ला की नज़रें भी पेश की
जाएँ। ग़ल्ला की नज़र के लिए 3 किलोग्राम
बेहतरीन मैदा तेल के साथ मिलाया जाए।
10भस्म होने वाली यह क़ुर्बानी हर हफ़्ते के
दिन पेश करनी है। यह रोज़मर्रा की क़ुर्बानियों
के इलावा है।

हर माह के पहले दिन की क़ुर्बानी

11हर माह के शुरू में रब को भस्म होने
वाली क़ुर्बानी के तौर पर दो जवान बैल,
एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे
पेश करना। सब बग़ैर नुक़्स के हों। 12हर
जानवर के साथ ग़ल्ला की नज़र पेश करना
जिस के लिए तेल में मिलाया गया बेहतरीन
मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ
साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3
किलोग्राम 13और भेड़ के हर बच्चे के साथ
डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना। भस्म होने
वाली यह क़ुर्बानियाँ रब को पसन्द हैं। 14इन
क़ुर्बानियों के साथ मै की नज़र भी क़ुर्बानगाह
पर डालना यानी हर बैल के साथ दो लिटर, हर
मेंढे के साथ सवा लिटर और भेड़ के हर बच्चे
के साथ एक लिटर मै पेश करना। यह क़ुर्बानी
साल में हर महीने के पहले दिन के मौक़े पर
पेश करनी है। 15इस क़ुर्बानी और रोज़मर्रा की
क़ुर्बानियों के इलावा रब को एक बकरा गुनाह
की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करना।

फ़सह की क़ुर्बानियाँ

16पहले महीने के चौधवें दिन फ़सह की ईद
मनाई जाए। 17अगले दिन पूरे हफ़्ते की वह
ईद शुरू होती है जिस के दौरान तुम्हें सिर्फ़
बेख़मीरी रोटी खानी है। 18पहले दिन काम न
करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे
होना। 19रब के हुज़ूर भस्म होने वाली क़ुर्बानी
के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़

के सात यकसाला बच्चे पेश करना। सब बग़ैर
नुक़्स के हों। 20हर जानवर के साथ ग़ल्ला की
नज़र भी पेश करना जिस के लिए तेल के साथ
मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया
जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर
मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 21और भेड़ के हर
बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना।
22गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर एक बकरा
भी पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया
जाए। 23-24इन तमाम क़ुर्बानियों को ईद के
दौरान हर रोज़ पेश करना। यह रोज़मर्रा की
भस्म होने वाली क़ुर्बानियों के इलावा हैं। इस
ख़ुराक की ख़ुश्बू रब को पसन्द है। 25सातवें
दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा
के लिए इकट्ठे होना।

फ़सल की कटाई की ईद की क़ुर्बानियाँ

26फ़सल की कटाई के पहले दिन की ईद
पर जब तुम रब को अपनी फ़सल की पहली
पैदावार पेश करते हो तो काम न करना
बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना।
27-29उस दिन दो जवान बैल, एक मेंढा और
भेड़ के सात यकसाला बच्चे क़ुर्बानगाह पर
पूरे तौर पर जला देना। इस के साथ ग़ल्ला और
मै की वही नज़रें पेश करना जो फ़सह की ईद
पर भी पेश की जाती हैं। 30इस के इलावा रब
को एक बकरा गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर
चढ़ाना।

31यह तमाम क़ुर्बानियाँ रोज़मर्रा की भस्म
होने वाली क़ुर्बानियों और उन के साथ वाली
ग़ल्ला और मै की नज़रों के इलावा हैं। वह
बेऐब हों।

नए साल की ईद की क़ुर्बानियाँ

29 सातवें माह के पंद्रहवें दिन भी
काम न करना बल्कि मुक़द्दस
इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। उस दिन
नरसिंगे फूँके जाएँ। 2रब को भस्म होने वाली
क़ुर्बानी पेश की जाए जिस की ख़ुश्बू उसे
पसन्द हो यानी एक जवान बैल, एक मेंढा
और भेड़ के सात यकसाला बच्चे। सब नुक़्स
के बग़ैर हों। 3हर जानवर के साथ ग़ल्ला की
नज़र भी पेश करना जिस के लिए तेल के साथ
मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया
जाए। बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, मेंढे के
साथ 3 किलोग्राम 4और भेड़ के हर बच्चे के
साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना। 5एक
बकरा भी गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश
करना ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाए।
6यह क़ुर्बानियाँ रोज़ाना और हर माह के पहले
दिन की क़ुर्बानियों और उन के साथ की ग़ल्ला
और मै की नज़रों के इलावा हैं। इन की ख़ुश्बू
रब को पसन्द है।

कफ़्फ़ारा के दिन की क़ुर्बानियाँ

7सातवें महीने के दसवें दिन मुक़द्दस
इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। उस दिन काम न
करना और अपनी जान को दुख देना। 8-11रब
को वही क़ुर्बानियाँ पेश करना जो इसी महीने
के पहले दिन पेश की जाती हैं। सिर्फ़ एक फ़र्क़
है, उस दिन एक नहीं बल्कि दो बकरे गुनाह
की क़ुर्बानी के तौर पर पेश किए जाएँ ताकि
तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाए। ऐसी क़ुर्बानियाँ
रब को पसन्द हैं।

झोंपड़ियों की ईद की क़ुर्बानियाँ

12सातवें महीने के पंद्रहवें दिन भी काम
न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए
इकट्ठे होना। सात दिन तक रब की ताज़ीम
में ईद मनाना। 13ईद के पहले दिन रब को 13
जवान बैल, 2 मेंढे और 14 भेड़ के यकसाला
बच्चे भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश
करना। इन की ख़ुश्बू उसे पसन्द है। सब नुक़्स
के बग़ैर हों। 14हर जानवर के साथ ग़ल्ला की
नज़र भी पेश करना जिस के लिए तेल से
मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया
जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर
मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 15और भेड़ के हर

बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना।
16इस के इलावा एक बकरा भी गुनाह की
क़ुर्बानी के तौर पर पेश करना। यह क़ुर्बानियाँ
रोज़ाना की भस्म होने वाली क़ुर्बानियों और
उन के साथ वाली ग़ल्ला और मै की नज़रों
के इलावा हैं। 17-34ईद के बाक़ी छः दिन यही
क़ुर्बानियाँ पेश करनी हैं। लेकिन हर दिन एक
बैल कम हो यानी दूसरे दिन 12, तीसरे दिन
11, चौथे दिन 10, पाँचवें दिन 9, छटे दिन
8 और सातवें दिन 7 बैल। हर दिन गुनाह की
क़ुर्बानी के लिए बकरा और मामूल की रोज़ाना
की क़ुर्बानियाँ भी पेश करना। 35ईद के आठवें
दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा
के लिए इकट्ठे होना। 36रब को एक जवान
बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला
बच्चे भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश
करना। इन की ख़ुश्बू रब को पसन्द है। सब
नुक़्स के बग़ैर हों। 37-38साथ ही वह तमाम
क़ुर्बानियाँ भी पेश करना जो पहले दिन पेश
की जाती हैं। 39यह सब वही क़ुर्बानियाँ हैं जो
तुम्हें रब को अपनी ईदों पर पेश करनी हैं।
यह उन तमाम क़ुर्बानियों के इलावा हैं जो तुम
दिली ख़ुशी से या मन्नत मान कर देते हो, चाहे
वह भस्म होने वाली, ग़ल्ला की, मै की या
सलामती की क़ुर्बानियाँ क्यूँ न हों।”

40मूसा ने रब की यह तमाम हिदायात
इस्राईलियों को बता दीं।

मन्नत मानने के क़वाइद

30 फिर मूसा ने क़बीलों के सरदारों से
कहा, “रब फ़रमाता है,

2अगर कोई आदमी रब को कुछ देने की
मन्नत माने या किसी चीज़ से पर्हेज़ करने की
क़सम खाए तो वह अपनी बात पर क़ाइम रह
कर उसे पूरा करे।

3अगर कोई जवान औरत जो अब तक
अपने बाप के घर में रहती है रब को कुछ देने
की मन्नत माने या किसी चीज़ से पर्हेज़ करने
की क़सम खाए 4तो लाज़िम है कि वह अपनी
मन्नत या क़सम की हर बात पूरी करे। शर्त
यह है कि उस का बाप उस के बारे में सुन
कर एतिराज़ न करे। 5लेकिन अगर उस का
बाप यह सुन कर उसे ऐसा करने से मना करे
तो उस की मन्नत या क़सम मन्सूख़ है, और
वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़
करेगा, क्यूँकि उस के बाप ने उसे मना किया
है।

6हो सकता है कि किसी ग़ैरशादीशुदा औरत
ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से पर्हेज़ करने
की क़सम खाई, चाहे उस ने दानिस्ता तौर पर
या बेसोचे-समझे ऐसा किया। इस के बाद उस
औरत ने शादी कर ली। 7शादीशुदा हालत में
भी लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत या क़सम
की हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उस का
शौहर इस के बारे में सुन कर एतिराज़ न करे।
8लेकिन अगर उस का शौहर यह सुन कर उसे
ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या
क़सम मन्सूख़ है, और वह उसे पूरा करने से
बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा। 9अगर किसी
बेवा या तलाक़शुदा औरत ने मन्नत मानी या
किसी चीज़ से पर्हेज़ करने की क़सम खाई तो
लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी करे।

10अगर किसी शादीशुदा औरत ने मन्नत
मानी या किसी चीज़ से पर्हेज़ करने की क़सम
खाई 11तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात
पूरी करे। शर्त यह है कि उस का शौहर उस
के बारे में सुन कर एतिराज़ न करे। 12लेकिन
अगर उस का शौहर उसे ऐसा करने से मना
करे तो उस की मन्नत या क़सम मन्सूख़ है।
वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़
करेगा, क्यूँकि उस के शौहर ने उसे मना किया
है। 13चाहे बीवी ने कुछ देने की मन्नत मानी हो
या किसी चीज़ से पर्हेज़ करने की क़सम खाई
हो, उस के शौहर को उस की तस्दीक़ या उसे
मन्सूख़ करने का इख़तियार है। 14अगर उस
ने अपनी बीवी की मन्नत या क़सम के बारे में
सुन लिया और अगले दिन तक एतिराज़ न
किया तो लाज़िम है कि उस की बीवी अपनी

हर बात पूरी करे। शौहर ने अगले दिन तक एतिराज़ न करने से अपनी बीवी की बात की तस्दीक़ की है। 15अगर वह इस के बाद यह मन्नत या क़सम मन्सूख़ करे तो उसे इस क़ुसूर के नताइज भुगतने पड़ेंगे।"

16रब ने मूसा को यह हिदायात दीं। यह ऐसी औरतों की मन्नतों या क़समों के उसूल हैं जो ग़ैरशादीशुदा हालत में अपने बाप के घर में रहती हैं या जो शादीशुदा हैं।

मिदियानियों से जंग

31 रब ने मूसा से कहा, 2"मिदियानियों से इस्राईलियों का बदला ले। इस के बाद तू कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा।"

3चुनाँचे मूसा ने इस्राईलियों से कहा, "हथियारों से अपने कुछ आदमियों को लेस करो ताकि वह मिदियान से जंग करके रब का बदला लें। 4हर क़बीले के 1,000 मर्द जंग लड़ने के लिए भेजो।"

5चुनाँचे हर क़बीले के 1,000 मुसल्लह मर्द यानी कुल 12,000 आदमी चुने गए। 6तब मूसा ने उन्हें जंग लड़ने के लिए भेज दिया। उस ने इलीअज़र इमाम के बेटे फ़ीन्हास को भी उन के साथ भेजा जिस के पास मक़्दिस की कुछ चीज़ें और एलान करने के बिगुल थे। 7उन्हों ने रब के हुक्म के मुताबिक़ मिदियानियों से जंग की और तमाम आदमियों को मौत के घाट उतार दिया। 8इन में मिदियानियों के पाँच बादशाह इवी, रक़म, सूर, हूर और रबा थे। बलआम बिन बओर को भी जान से मार दिया गया।

9इस्राईलियों ने मिदियानी औरतों और बच्चों को गिरिफ़्तार करके उन के तमाम गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ और माल लूट लिया। 10उन्हों ने उन की तमाम आबादियों को ख़ैमागाहों समेत जला कर राख कर दिया। 11-12फिर वह तमाम लूटा हुआ माल क़ैदियों और जानवरों समेत मूसा, इलीअज़र इमाम और इस्राईल की पूरी जमाअत के पास ले आए जो ख़ैमागाह में इन्तिज़ार कर रहे थे। अभी तक वह मोआब के मैदानी इलाक़े में दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर यरीहू के सामने ठहरे हुए थे। 13मूसा, इलीअज़र और जमाअत के तमाम सरदार उन का इस्तिक़्बाल करने के लिए ख़ैमागाह से निकले।

14उन्हें देख कर मूसा को हज़ार हज़ार और सौ सौ अफ़राद पर मुक़र्रर अफ़्सरान पर ग़ुस्सा आया। 15उस ने कहा, "आप ने तमाम औरतों को क्यूँ बचाए रखा? 16उन ही ने बलआम के मश्वरे पर फ़ग़ूर में इस्राईलियों को रब से दूर कर दिया था। उन ही के सबब से रब की वबा उस के लोगों में फैल गई। 17चुनाँचे अब तमाम लड़कों को जान से मार दो। उन तमाम औरतों को भी मौत के घाट उतारना जो कुंवारियाँ नहीं हैं। 18लेकिन तमाम कुंवारियों को बचाए रखना। 19जिस ने भी किसी को मार दिया या किसी लाश को छुआ है वह सात दिन तक ख़ैमागाह के बाहर रहे। तीसरे और सातवें दिन अपने आप को अपने क़ैदियों समेत गुनाह से पाक-साफ़ करना। 20हर लिबास और हर चीज़ को पाक-साफ़ करना जो चमड़े, बकरियों के बालों या लकड़ी की हो।"

21फिर इलीअज़र इमाम ने जंग से वापस आने वाले मर्दों से कहा, "जो शरीअत रब ने मूसा को दी उस के मुताबिक़ 22-23जो भी चीज़ जल नहीं जाती उसे आग में से गुज़ार देना ताकि पाक-साफ़ हो जाए। उस में सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, टीन और सीसा शामिल है। फिर उस पर नापाकी दूर करने का पानी छिड़कना। बाक़ी तमाम चीज़ें पानी में से गुज़ार देना ताकि वह पाक-साफ़ हो जाएँ। 24सातवें दिन अपने लिबास को धोना तो तुम पाक-साफ़ हो कर ख़ैमागाह में दाख़िल हो सकते हो।"

लूटे हुए माल की तक़्सीम

25रब ने मूसा से कहा, 26"तमाम क़ैदियों
और लूटे हुए जानवरों को गिन। इस में
इलीअज़र इमाम और क़बाइली कुंबों के
सरपरस्त तेरी मदद करें। 27सारा माल दो
बराबर के हिस्सों में तक़्सीम करना, एक
हिस्सा फ़ौजियों के लिए और दूसरा बाक़ी
जमाअत के लिए हो। 28फ़ौजियों के हिस्से के
पाँच पाँच सौ क़ैदियों में से एक एक निकाल
कर रब को देना। इसी तरह पाँच पाँच सौ
बैलों, गधों, भेड़ों और बकरियों में से एक एक
निकाल कर रब को देना। 29उन्हें इलीअज़र
इमाम को देना ताकि वह उन्हें रब को उठाने
वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। 30बाक़ी
जमाअत के हिस्से के पचास पचास क़ैदियों
में से एक एक निकाल कर रब को देना, इसी
तरह पचास पचास बैलों, गधों, भेड़ों और
बकरियों या दूसरे जानवरों में से भी एक एक
निकाल कर रब को देना। उन्हें उन लावियों को
देना जो रब के मक़्दिस को सँभालते हैं।"

31मूसा और इलीअज़र ने ऐसा ही किया।
32-34उन्हों ने 6,75,000 भेड़-बकरियाँ,
72,000 गाय-बैल और 61,000 गधे गिने।
35इन के इलावा 32,000 क़ैदी कुंवारियाँ भी
थीं। 36-40फ़ौजियों को तमाम चीज़ों का आधा
हिस्सा मिल गया यानी 3,37,500 भेड़-
बकरियाँ, 36,000 गाय-बैल, 30,500 गधे
और 16,000 क़ैदी कुंवारियाँ। इन में से उन्हों
ने 675 भेड़-बकरियाँ, 72 गाय-बैल, 61 गधे
और 32 लड़कियाँ रब को दीं। 41मूसा ने रब
का यह हिस्सा इलीअज़र इमाम को उठाने
वाली क़ुर्बानी के तौर पर दे दिया, जिस तरह
रब ने हुक्म दिया था। 42-47बाक़ी जमाअत को
भी लूटे हुए माल का आधा हिस्सा मिल गया।
मूसा ने पचास पचास क़ैदियों और जानवरों
में से एक एक निकाल कर उन लावियों को दे
दिया जो रब का मक़्दिस सँभालते थे। उस ने
वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया था।

48फिर वह अफ़्सर मूसा के पास आए जो
लश्कर के हज़ार हज़ार और सौ सौ आदमियों
पर मुक़र्रर थे। 49उन्हों ने उस से कहा, "आप
के ख़ादिमों ने उन फ़ौजियों को गिन लिया है
जिन पर वह मुक़र्रर हैं, और हमें पता चल गया
कि एक भी कम नहीं हुआ। 50इस लिए हम रब
को सोने का तमाम ज़ेवर क़ुर्बान करना चाहते
हैं जो हमें फ़त्ह पाने पर मिला था मसलन
सोने के बाज़ूबन्द, कंगन, मुहर लगाने की
अंगूठियाँ, बालियाँ और हार। यह सब कुछ
हम रब को पेश करना चाहते हैं ताकि रब के
सामने हमारा कफ़्फ़ारा हो जाए।"

51मूसा और इलीअज़र इमाम ने सोने की
तमाम चीज़ें उन से ले लीं। 52जो चीज़ें उन्हों ने
अफ़्सरान के लूटे हुए माल में से रब को उठाने
वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश कीं उन का पूरा
वज़न तक़रीबन 190 किलोग्राम था। 53सिर्फ़
अफ़्सरान ने ऐसा किया। बाक़ी फ़ौजियों ने
अपना लूट का माल अपने लिए रख लिया।
54मूसा और इलीअज़र अफ़्सरान का यह
सोना मुलाक़ात के ख़ैमे में ले आए ताकि वह
रब को उस की क़ौम की याद दिलाता रहे।

दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर आबाद क़बीले

32 रूबिन और जद के क़बीलों के
पास बहुत से मवेशी थे। जब उन्हों
ने देखा कि याज़ेर और जिलिआद का इलाक़ा
मवेशी पालने के लिए अच्छा है 2तो उन्हों
ने मूसा, इलीअज़र इमाम और जमाअत के
राहनुमाओं के पास आ कर कहा, 3-4"जिस
इलाक़े को रब ने इस्राईल की जमाअत के
आगे आगे शिकस्त दी है वह मवेशी पालने
के लिए अच्छा है। अतारात, दीबोन, याज़ेर,
निम्रा, हस्बोन, इलीआली, सबाम, नबू और
बऊन जो इस में शामिल हैं हमारे काम आएँगे,
क्यूँकि आप के ख़ादिमों के पास मवेशी हैं।
5अगर आप की नज़र-ए-करम हम पर हो
तो हमें यह इलाक़ा दिया जाए। यह हमारी

मिलकियत बन जाए और हमें दरया-ए-यर्दन
को पार करने पर मज्बूर न किया जाए।"
6मूसा ने जद और रूबिन के अफ़राद से
कहा, "क्या तुम यहाँ पीछे रह कर अपने
भाइयों को छोड़ना चाहते हो जब वह जंग
लड़ने के लिए आगे निकलेंगे? 7इस वक़्त जब
इस्राईली दरया-ए-यर्दन को पार करके उस
मुल्क में दाख़िल होने वाले हैं जो रब ने उन्हें
दिया है तो तुम क्यूँ उन की हौसलाशिकनी कर
रहे हो? 8तुम्हारे बापदादा ने भी यही कुछ
किया जब मैं ने उन्हें क़ादिस-बर्नीअ से मुल्क
के बारे में मालूमात हासिल करने के लिए
भेजा। 9इस्काल की वादी में पहुँच कर मुल्क
की तफ़्तीश करने के बाद उन्हों ने इस्राईलियों
की हौसलाशिकनी की ताकि वह उस मुल्क
में दाख़िल न हों जो रब ने उन्हें दिया था।
10उस दिन रब ने ग़ुस्से में आ कर क़सम खाई,
11'उन आदमियों में से जो मिस्र से निकल
आए हैं कोई उस मुल्क को नहीं देखेगा जिस
का वादा मैं ने क़सम खा कर इब्राहीम, इस्हाक़
और याक़ूब से किया था। क्यूँकि उन्हों ने
पूरी वफ़ादारी से मेरी पैरवी न की। सिर्फ़ वह
जिन की उम्र उस वक़्त 20 साल से कम है
दाख़िल होंगे। 12बुज़ुर्गों में से सिर्फ़ कालिब
बिन यफ़ुन्ना क़निज़्ज़ी और यशूअ बिन नून
मुल्क में दाख़िल होंगे, इस लिए कि उन्हों ने
पूरी वफ़ादारी से मेरी पैरवी की।' 13उस वक़्त
रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और उन्हें
40 साल तक रेगिस्तान में मारे मारे फिरना
पड़ा, जब तक कि वह तमाम नस्ल ख़त्म न
हो गई जिस ने उस के नज़्दीक ग़लत काम
किया था। 14अब तुम गुनाहगारों की औलाद
अपने बापदादा की जगह खड़े हो कर रब का
इस्राईल पर ग़ुस्सा मज़ीद बढ़ा रहे हो। 15अगर
तुम उस की पैरवी से हटोगे तो वह दुबारा इन
लोगों को रेगिस्तान में रहने देगा, और तुम इन
की हलाकत का बाइस बनोगे।"
16इस के बाद रूबिन और जद के अफ़राद
दुबारा मूसा के पास आए और कहा, "हम
यहाँ फ़िलहाल अपने मवेशी के लिए बाड़े
और अपने बाल-बच्चों के लिए शहर बनाना
चाहते हैं। 17इस के बाद हम मुसल्लह हो कर
इस्राईलियों के आगे आगे चलेंगे और हर एक
को उस की अपनी जगह तक पहुँचाएँगे। इतने
में हमारे बाल-बच्चे हमारे शहरों की फ़सीलों
के अन्दर मुल्क के मुख़ालिफ़ बाशिन्दों से
महफ़ूज़ रहेंगे। 18हम उस वक़्त तक अपने घरों
को नहीं लौटेंगे जब तक हर इस्राईली को उस
की मौरूसी ज़मीन न मिल जाए। 19दूसरे, हम
ख़ुद उन के साथ दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में
मीरास में कुछ नहीं पाएँगे, क्यूँकि हमें अपनी
मौरूसी ज़मीन दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी
किनारे पर मिल चुकी है।"
20यह सुन कर मूसा ने कहा, "अगर तुम
ऐसा ही करोगे तो ठीक है। फिर रब के सामने
जंग के लिए तय्यार हो जाओ 21और सब
हथियार बांध कर रब के सामने दरया-ए-यर्दन
को पार करो। उस वक़्त तक न लौटो जब तक
रब ने अपने तमाम दुश्मनों को अपने आगे से
निकाल न दिया हो। 22फिर जब मुल्क पर रब
का क़ब्ज़ा हो गया होगा तो तुम लौट सकोगे।
तब तुम ने रब और अपने हमवतन भाइयों के
लिए अपने फ़राइज़ अदा कर दिए होंगे, और
यह इलाक़ा रब के सामने तुम्हारा मौरूसी हक़
होगा। 23लेकिन अगर तुम ऐसा न करो तो फिर
तुम रब ही का गुनाह करोगे। यक़ीन जानो तुम्हें
अपने गुनाह की सज़ा मिलेगी। 24अब अपने
बाल-बच्चों के लिए शहर और अपने मवेशियों
के लिए बाड़े बना लो। लेकिन अपने वादे को
ज़रूर पूरा करना।"
25जद और रूबिन के अफ़राद ने मूसा से
कहा, "हम आप के ख़ादिम हैं, हम अपने
आक़ा के हुक्म के मुताबिक़ ही करेंगे। 26हमारे
बाल-बच्चे और मवेशी यहीं जिलिआद के
शहरों में रहेंगे। 27लेकिन आप के ख़ादिम
मुसल्लह हो कर दरया को पार करेंगे और रब
के सामने जंग करेंगे। हम सब कुछ वैसा ही

करेंगे जैसा हमारे आक़ा ने हमें हुक्म दिया है।"

28तब मूसा ने इलीअज़र इमाम, यशूअ बिन नून और क़बाइली कुंबों के सरपरस्तों को हिदायत दी, 29"लाज़िम है कि जद और रूबिन के मर्द मुसल्लह हो कर तुम्हारे साथ ही रब के सामने दरया-ए-यर्दन को पार करें और मुल्क पर क़ब्ज़ा करें। अगर वह ऐसा करें तो उन्हें मीरास में जिलिआद का इलाक़ा दो। 30लेकिन अगर वह ऐसा न करें तो फिर उन्हें मुल्क-ए-कनआन ही में तुम्हारे साथ मौरूसी ज़मीन मिले।"

31जद और रूबिन के अफ़राद ने इसरार किया, "आप के ख़ादिम सब कुछ करेंगे जो रब ने कहा है। 32हम मुसल्लह हो कर रब के सामने दरया-ए-यर्दन को पार करेंगे और कनआन के मुल्क में दाख़िल होंगे, अगरचे हमारी मौरूसी ज़मीन यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर होगी।"

33तब मूसा ने जद, रूबिन और मनस्सी के आधे क़बीले को यह इलाक़ा दिया। उस में वह पूरा मुल्क शामिल था जिस पर पहले अमोरियों का बादशाह सीहोन और बसन का बादशाह ओज हुकूमत करते थे। इन शिकस्तख़ुर्दा ममालिक के देहातों समेत तमाम शहर उन के हवाले किए गए।

34जद के क़बीले ने दीबोन, अतारात, अरोईर, 35अतरात-शोफ़ान, याज़ेर, युगबहा, 36बैत-निम्रा और बैत-हारान के शहरों को दुबारा तामीर किया। उन्हों ने उन की फ़सीलें बनाईं और अपने मवेशियों के लिए बाड़े भी। 37रूबिन के क़बीले ने हस्बोन, इलीआली, क़िर्यताइम, 38नबू, बाल-मऊन और सिब्माह दुबारा तामीर किए। नबू और बाल-मऊन के नाम बदल गए, क्यूँकि उन्हों ने उन शहरों को नए नाम दिए जो उन्हों ने दुबारा तामीर किए।

39मनस्सी के बेटे मकीर की औलाद ने जिलिआद जा कर उस पर क़ब्ज़ा कर लिया और उस के तमाम अमोरी बाशिन्दों को निकाल दिया। 40चुनाँचे मूसा ने मकीरियों को जिलिआद की सरज़मीन दे दी, और वह वहाँ आबाद हुए। 41मनस्सी के एक आदमी बनाम याईर ने उस इलाक़े में कुछ बस्तियों पर क़ब्ज़ा करके उन्हें हव्वोत-याईर यानी 'याईर की बस्तियाँ' का नाम दिया। 42इसी तरह उस क़बीले के एक और आदमी बनाम नूबह ने जा कर क़नात और उस के देहातों पर क़ब्ज़ा कर लिया। उस ने शहर का नाम नूबह रखा।

इस्राईल के सफ़र के मरहले

33 ज़ैल में उन जगहों के नाम हैं जहाँ जहाँ इस्राईली क़बीले अपने दस्तों के मुताबिक़ मूसा और हारून की राहनुमाई में मिस्र से निकल कर ख़ैमाज़न हुए थे। 2रब के हुक्म पर मूसा ने हर जगह का नाम क़लमबन्द किया जहाँ उन्हों ने अपने ख़ैमे लगाए थे। उन जगहों के नाम यह हैं :

3पहले महीने के पंद्रहवें दिन इस्राईली रामसीस से रवाना हुए। यानी फ़सह के दिन के बाद के दिन वह बड़े इख़तियार के साथ तमाम मिस्रियों के देखते देखते चले गए। 4मिस्री उस वक़्त अपने पहलौठों को दफ़न कर रहे थे, क्यूँकि रब ने पहलौठों को मार कर उन के देवताओं की अदालत की थी।

5रामसीस से इस्राईली सुक्कात पहुँच गए जहाँ उन्हों ने पहली मर्तबा अपने डेरे लगाए। 6वहाँ से वह एताम पहुँचे जो रेगिस्तान के किनारे पर वाक़े है। 7एताम से वह वापस मुड़ कर फ़ी-हख़ीरोत की तरफ़ बढ़े जो बाल-सफ़ोन के मशरिक़ में है। वह मिज्दाल के क़रीब ख़ैमाज़न हुए। 8फिर वह फ़ी-हख़ीरोत से कूच करके समुन्दर में से गुज़र गए। इस के बाद वह तीन दिन एताम के रेगिस्तान में सफ़र करते करते मारा पहुँच गए और वहाँ अपने ख़ैमे लगाए। 9मारा से वह एलीम चले गए जहाँ 12 चश्मे और खजूर के 70 दरख़्त थे। वहाँ ठहरने के बाद 10वह बहर-ए-क़ुल्ज़ुम

के साहिल पर ख़ैमाज़न हुए, 11फिर दश्त-ए-सीन में पहुँच गए।

12उन के अगले मरहले यह थे : दुफ़्क़ा, 13-37अलूस, रफ़ीदीम जहाँ पीने का पानी दस्तयाब न था, दश्त-ए-सीना, क़ब्रोत-हत्तावा, हसीरात, रित्मा, रिम्मोन-फ़ारस, लिब्ना, रिस्सा, क़हीलाता, साफ़र पहाड़, हरादा, मक़हीलोत, तहत, तारह, मितक़ा, हश्मूना, मौसीरोत, बनी-याक़ान, होर-हज्जिदजाद, युत्बाता, अब्रूना, अस्यून-जाबर, दश्त-ए-सीन में वाक़े क़ादिस और होर पहाड़ जो अदोम की सरहद पर वाक़े है।

38वहाँ रब ने हारून इमाम को हुक्म दिया कि वह होर पहाड़ पर चढ़ जाए। वहीं वह पाँचवें माह के पहले दिन फ़ौत हुआ। इस्राईलियों को मिस्र से निकले 40 साल गुज़र चुके थे। 39उस वक़्त हारून 123 साल का था।

40उन दिनों में अराद के कनआनी बादशाह ने सुना कि इस्राईली मेरे मुल्क की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वह कनआन के जुनूब में हुकूमत करता था।

41-47होर पहाड़ से रवाना हो कर इस्राईली ज़ैल की जगहों पर ठहरे : ज़ल्मूना, फ़ूनोन, ओबोत, अय्ये-अबारीम जो मोआब के इलाक़े में था, दीबोन-जद, अल्मून-दिब्लाताइम और नबू के क़रीब वाक़े अबारीम का पहाड़ी इलाक़ा। 48वहाँ से उन्हों ने यर्दन की वादी में उतर कर मोआब के मैदानी इलाक़े में अपने डेरे लगाए। अब वह दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर यरीहू शहर के सामने थे। 49उन के ख़ैमे बैत-यसीमोत से ले कर अबील-शित्तीम तक लगे थे।

तमाम कनआनी बाशिन्दों को निकालने का हुक्म

50वहाँ रब ने मूसा से कहा, 51"इस्राईलियों को बताना कि जब तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके मुल्क-ए-कनआन में दाख़िल होगे 52तो लाज़िम है कि तुम तमाम बाशिन्दों को निकाल दो। उन के तराशे और ढाले हुए बुतों को तोड़ डालो और उन की ऊँची जगहों के मन्दिरों को तबाह करो। 53मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उस में आबाद हो जाओ, क्यूँकि मैं ने यह मुल्क तुम्हें दे दिया है। यह मेरी तरफ़ से तुम्हारी मौरूसी मिलकियत है। 54मुल्क को मुख़्तलिफ़ क़बीलों और ख़ानदानों में क़ुरआ डाल कर तक़्सीम करना। हर ख़ानदान के अफ़राद की तादाद का लिहाज़ रखना। बड़े ख़ानदान को निस्बतन ज़्यादा ज़मीन देना और छोटे ख़ानदान को निस्बतन कम ज़मीन। 55लेकिन अगर तुम मुल्क के बाशिन्दों को नहीं निकालोगे तो बचे हुए तुम्हारी आँखों में ख़ार और तुम्हारे पहलूओं में काँटे बन कर तुम्हें उस मुल्क में तंग करेंगे जिस में तुम आबाद होगे। 56फिर मैं तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो उन के साथ करना चाहता हूँ।"

मुल्क-ए-कनआन की सरहदें

34 रब ने मूसा से कहा, 2"इस्राईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें मीरास में दूँगा तो उस की सरहदें यह होंगी :

3उस की जुनूबी सरहद दश्त-ए-सीन में अदोम की सरहद के साथ साथ चलेगी। मशरिक़ में वह बहीरा-ए-मुर्दार के जुनूबी साहिल से शुरू होगी, फिर इन जगहों से हो कर मग़रिब की तरफ़ गुज़रेगी : 4दर्रा-ए-अक़्रब्बीम के जुनूब में से, दश्त-ए-सीन में से, क़ादिस-बर्नीअ के जुनूब में से हसर-अद्दार और अज़्मून में से। 5वहाँ से वह मुड़ कर मिस्र की सरहद पर वाक़े वादी-ए-मिस्र के साथ साथ बहीरा-ए-रूम तक पहुँचेगी। 6उस की मग़रिबी सरहद बहीरा-ए-रूम का साहिल होगा। 7उस की शिमाली सरहद बहीरा-ए-रूम से ले कर इन जगहों से हो कर मशरिक़ की तरफ़ गुज़रेगी : होर पहाड़, 8लबो-हमात, सिदाद, 9ज़िफ़्रून और हसर-एनान। हसर-

एनान शिमाली सरहद का सब से मशरिक़ी
मक़ाम होगा। 10उस की मशरिक़ी सरहद
शिमाल में हसर-एनान से शुरू होगी। फिर वह
इन जगहों से हो कर जुनूब की तरफ़ गुज़रेगी :
सिफ़ाम, 11रिब्ला जो ऐन के मशरिक़ में है और
किन्नरत यानी गलील की झील के मशरिक़ में
वाक़े पहाड़ी इलाक़ा। 12इस के बाद वह दरया-
ए-यर्दन के किनारे किनारे गुज़रती हुई बहीरा-
ए-मुर्दार तक पहुँचेगी। यह तुम्हारे मुल्क की
सरहदें होंगी।"

13मूसा ने इस्राईलियों से कहा, "यह वही
मुल्क है जिसे तुम्हें क़ुरआ डाल कर तक़्सीम
करना है। रब ने हुक्म दिया है कि उसे बाक़ी
साढ़े नौ क़बीलों को देना है। 14क्यूँकि अढ़ाई
क़बीलों के ख़ानदानों को उन की मीरास मिल
चुकी है यानी रूबिन और जद के पूरे क़बीले
और मनस्सी के आधे क़बीले को। 15उन्हें यहाँ,
दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में यरीहू के सामने
ज़मीन मिल चुकी है।"

मुल्क तक़्सीम करने के ज़िम्मादार आदमी

16रब ने मूसा से कहा, 17"इलीअज़र इमाम
और यशूअ बिन नून लोगों के लिए मुल्क
तक़्सीम करें। 18हर क़बीले के एक एक
राहनुमा को भी चुनना ताकि वह तक़्सीम
करने में मदद करे। जिन को तुम्हें चुनना है
उन के नाम यह हैं :

19यहूदाह के क़बीले का कालिब बिन
यफ़ुन्ना,

20शमाऊन के क़बीले का समूएल बिन
अम्मीहूद,

21बिनयमीन के क़बीले का इलीदाद बिन
किस्लोन,

22दान के क़बीले का बुक़्क़ी बिन युगली,

23मनस्सी के क़बीले का हन्नीएल बिन
अफ़ूद,

24इफ़्राईम के क़बीले का क़मूएल बिन
सिफ़्तान,

25ज़बूलून के क़बीले का इलीसफ़न बिन
फ़र्नाक,

26इश्कार के क़बीले का फ़ल्तीएल बिन
अज़्ज़ान,

27आशर के क़बीले का अख़ीहूद बिन
शलूमी,

28नफ़्ताली के क़बीले का फ़िदाहेल बिन
अम्मीहूद।"

29रब ने इन ही आदमियों को मुल्क को
इस्राईलियों में तक़्सीम करने की ज़िम्मादारी
दी।

लावियों के लिए शहर

35 इस्राईली अब तक मोआब के
मैदानी इलाक़े में दरया-ए-यर्दन के
मशरिक़ी किनारे पर यरीहू के सामने थे। वहाँ
रब ने मूसा से कहा,

2"इस्राईलियों को बता दे कि वह लावियों
को अपनी मिली हुई ज़मीनों में से रहने के लिए
शहर दें। उन्हें शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने
की ज़मीन भी मिले। 3फिर लावियों के पास
रहने के लिए शहर और अपने जानवर चराने
के लिए ज़मीन होगी। 4चराने के लिए ज़मीन
शहर के इर्दगिर्द होगी, और चारों तरफ़ का
फ़ासिला फ़सीलों से 1,500 फ़ुट हो। 5चराने
की यह ज़मीन मुरब्बा शक्ल की होगी जिस के
हर पहलू का फ़ासिला 3,000 फ़ुट हो। शहर
इस मुरब्बा शक्ल के बीच में हो। यह रक़बा
शहर के बाशिन्दों के लिए हो ताकि वह अपने
मवेशी चरा सकें।

ग़ैरइरादी ख़ूँरेज़ी के लिए पनाह के शहर

6-7लावियों को कुल 48 शहर देना। इन
में से छः पनाह के शहर मुक़र्रर करना। उन
में ऐसे लोग पनाह ले सकेंगे जिन के हाथों
ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो। 8हर
क़बीला लावियों को अपने इलाक़े के रक़बे के
मुताबिक़ शहर दे। जिस क़बीले का इलाक़ा
बड़ा है उसे लावियों को ज़्यादा शहर देने हैं

जबकि जिस क़बीले का इलाक़ा छोटा है वह लावियों को कम शहर दे।"

9फिर रब ने मूसा से कहा, 10"इस्राईलियों को बताना कि दरया-ए-यर्दन को पार करने के बाद 11कुछ पनाह के शहर मुक़र्रर करना। उन में वह शख़्स पनाह ले सकेगा जिस के हाथों ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो। 12वहाँ वह इन्तिक़ाम लेने वाले से पनाह ले सकेगा और जमाअत की अदालत के सामने खड़े होने से पहले मारा नहीं जा सकेगा। 13इस के लिए छः शहर चुन लो। 14तीन दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में और तीन मुल्क-ए-कनआन में हों। 15यह छः शहर हर किसी को पनाह देंगे, चाहे वह इस्राईली, परदेसी या उन के दरमियान रहने वाला ग़ैरशहरी हो। जिस से भी ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो वह वहाँ पनाह ले सकता है।

16-18अगर किसी ने किसी को जान-बूझ कर लोहे, पत्थर या लकड़ी की किसी चीज़ से मार डाला हो वह क़ातिल है और उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। 19मक़्तूल का सब से क़रीबी रिश्तेदार उसे तलाश करके मार दे। 20-21क्यूँकि जो नफ़रत या दुश्मनी के बाइस जान-बूझ कर किसी को यूँ धक्का दे, उस पर कोई चीज़ फैंक दे या उसे मुक्का मारे कि वह मर जाए वह क़ातिल है और उसे सज़ा-ए-मौत देनी है।

22लेकिन वह क़ातिल नहीं है जिस से दुश्मनी के बाइस नहीं बल्कि इत्तिफ़ाक़ से और ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो, चाहे उस ने उसे धक्का दिया, कोई चीज़ उस पर फैंक दी 23या कोई पत्थर उस पर गिरने दिया। 24अगर ऐसा हुआ तो लाज़िम है कि जमाअत इन हिदायात के मुताबिक़ उस के और इन्तिक़ाम लेने वाले के दरमियान फ़ैसला करे। 25अगर मुल्ज़िम बेक़ुसूर है तो जमाअत उस की हिफ़ाज़त करके उसे पनाह के उस शहर में वापस ले जाए जिस में उस ने पनाह ली है। वहाँ वह मुक़द्दस तेल से मसह किए गए इमाम-ए-आज़म की मौत तक रहे। 26लेकिन अगर यह शख़्स इस से पहले पनाह के शहर से निकले तो वह महफ़ूज़ नहीं होगा। 27अगर उस का इन्तिक़ाम लेने वाले से सामना हो जाए तो इन्तिक़ाम लेने वाले को उसे मार डालने की इजाज़त होगी। अगर वह ऐसा करे तो बेक़ुसूर रहेगा। 28पनाह लेने वाला इमाम-ए-आज़म की वफ़ात तक पनाह के शहर में रहे। इस के बाद ही वह अपने घर वापस जा सकता है। 29यह उसूल दाइमी हैं। जहाँ भी तुम रहते हो तुम्हें हमेशा इन पर अमल करना है।

30जिस पर क़त्ल का इल्ज़ाम लगाया गया हो उसे सिर्फ़ इस सूरत में सज़ा-ए-मौत दी जा सकती है कि कम अज़ कम दो गवाह हों। एक गवाह काफ़ी नहीं है।

31क़ातिल को ज़रूर सज़ा-ए-मौत देना। ख़्वाह वह इस से बचने के लिए कोई भी मुआवज़ा दे उसे आज़ाद न छोड़ना बल्कि सज़ा-ए-मौत देना। 32उस शख़्स से भी पैसे क़बूल न करना जिस से ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो और जो इस सबब से पनाह के शहर में रह रहा है। उसे इजाज़त नहीं कि वह पैसे दे कर पनाह का शहर छोड़े और अपने घर वापस चला जाए। लाज़िम है कि वह इस के लिए इमाम-ए-आज़म की वफ़ात का इन्तिज़ार करे।

33जिस मुल्क में तुम रहते हो उस की मुक़द्दस हालत को नापाक न करना। जब किसी को उस में क़त्ल किया जाए तो वह नापाक हो जाता है। जब इस तरह ख़ून बहता है तो मुल्क की मुक़द्दस हालत सिर्फ़ उस शख़्स के ख़ून बहने से बहाल हो जाती है जिस ने यह ख़ून बहाया है। यानी मुल्क का सिर्फ़ क़ातिल की मौत से ही कफ़्फ़ारा दिया जा सकता है। 34उस मुल्क को नापाक न करना जिस में तुम आबाद हो और जिस में मैं सुकूनत करता हूँ। क्यूँकि मैं रब हूँ जो इस्राईलियों के दरमियान सुकूनत करता हूँ।"

एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन शादी से दूसरे क़बीले में मुन्तक़िल नहीं हो सकती

36 एक दिन जिलिआद बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ़ के कुंबे से निकले हुए आबाई घरानों के सरपरस्त मूसा और उन सरदारों के पास आए जो दीगर आबाई घरानों के सरपरस्त थे। 2उन्हों ने कहा, “रब ने आप को हुक्म दिया था कि आप क़ुरआ डाल कर मुल्क को इस्राईलियों में तक़्सीम करें। उस वक़्त उस ने यह भी कहा था कि हमारे भाई सिलाफ़िहाद की बेटियों को उस की मौरूसी ज़मीन मिलनी है। 3अगर वह इस्राईल के किसी और क़बीले के मर्दों से शादी करें तो फिर यह ज़मीन जो हमारे क़बीले का मौरूसी हिस्सा है उस क़बीले का मौरूसी हिस्सा बनेगी और हम उस से महरूम हो जाएंगे। फिर हमारा क़बाइली इलाक़ा छोटा हो जाएगा। 4और अगर हम यह ज़मीन वापस भी ख़रीदें तो भी वह अगले बहाली के साल में दूसरे क़बीले को वापस चली जाएगी जिस में इन औरतों ने शादी की है। इस तरह वह हमेशा के लिए हमारे हाथ से निकल जाएगी।”

5मूसा ने रब के हुक्म पर इस्राईलियों को बताया, “जिलिआद के मर्द हक़-ब-जानिब हैं। 6इस लिए रब की हिदायत यह है कि सिलाफ़िहाद की बेटियों को हर आदमी से शादी करने की इजाज़त है, लेकिन सिर्फ़ इस सूरत में कि वह उन के अपने क़बीले का हो। 7इस तरह एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन किसी दूसरे क़बीले में मुन्तक़िल नहीं होगी। लाज़िम है कि हर क़बीले का पूरा इलाक़ा उसी के पास रहे।

8जो भी बेटी मीरास में ज़मीन पाती है उस के लिए लाज़िम है कि वह अपने ही क़बीले के किसी मर्द से शादी करे ताकि उस की ज़मीन क़बीले के पास ही रहे। 9एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन किसी दूसरे क़बीले को मुन्तक़िल करने की इजाज़त नहीं है। लाज़िम है कि हर क़बीले का पूरा मौरूसी इलाक़ा उसी के पास रहे।”

10-11सिलाफ़िहाद की बेटियों महलाह, तिर्ज़ा, हुज्लाह, मिल्काह और नूआह ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को बताया था। उन्हों ने अपने चचाज़ाद भाइयों से शादी की। 12चूँकि वह भी मनस्सी के क़बीले के थे इस लिए यह मौरूसी ज़मीन सिलाफ़िहाद के क़बीले के पास रही।

13रब ने यह अह्काम और हिदायात इस्राईलियों को मूसा की मारिफ़त दीं जब वह मोआब के मैदानी इलाक़े में दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर यरीहू के सामने ख़ैमाज़न थे।

इस्तिस्ना

मूसा इस्राईलियों से मुख़ातिब होता है

1 इस किताब में वह बातें दर्ज हैं जो
मूसा ने तमाम इस्राईलियों से कहीं जब
वह दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर
बयाबान में थे। वह यर्दन की वादी में सूफ़ के
क़रीब थे। एक तरफ़ फ़ारान शहर था और
दूसरी तरफ़ तोफ़ल, लाबन, हसीरात और
दीज़हब के शहर थे। 2अगर अदोम के पहाड़ी
इलाक़े से हो कर जाएँ तो होरिब यानी सीना
पहाड़ से क़ादिस-बर्नीअ तक का सफ़र 11
दिन में तै किया जा सकता है।

3इस्राईलियों को मिस्र से निकले 40 साल
हो गए थे। इस साल के ग्यारहवें माह के पहले
दिन मूसा ने उन्हें सब कुछ बताया जो रब ने
उसे उन्हें बताने को कहा था। 4उस वक़्त वह
अमोरियों के बादशाह सीहोन को शिकस्त दे
चुका था जिस का दार-उल-हुकूमत हस्बोन
था। बसन के बादशाह ओज पर भी फ़त्ह
हासिल हो चुकी थी जिस की हुकूमत के
मर्कज़ अस्तारात और इद्रई थे।

5वहाँ, दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे
पर जो मोआब के इलाक़े में था मूसा अल्लाह
की शरीअत की तश्रीह करने लगा। उस ने
कहा,

6जब तुम होरिब यानी सीना पहाड़ के पास
थे तो रब हमारे ख़ुदा ने हम से कहा, “तुम
काफ़ी देर से यहाँ ठहरे हुए हो। 7अब इस
जगह को छोड़ कर आगे मुल्क-ए-कनआन
की तरफ़ बढ़ो। अमोरियों के पहाड़ी इलाक़े
और उन के पड़ोस की क़ौमों के पास जाओ
जो यर्दन के मैदानी इलाक़े में आबाद हैं।
पहाड़ी इलाक़े में, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी
इलाक़े में, जुनूब के दश्त-ए-नजब में, साहिली
इलाक़े में, मुल्क-ए-कनआन में और लुबनान
में दरया-ए-फ़ुरात तक चले जाओ। 8मैं ने तुम्हें
यह मुल्क दे दिया है। अब जा कर उस पर
क़ब्ज़ा कर लो। क्यूँकि रब ने क़सम खा कर
तुम्हारे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब
से वादा किया था कि मैं यह मुल्क तुम्हें और
तुम्हारी औलाद को दूँगा।”

राहनुमा मुक़र्रर किए गए

9उस वक़्त मैं ने तुम से कहा, “मैं अकेला
तुम्हारी राहनुमाई करने की ज़िम्मादारी नहीं
उठा सकता। 10रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हारी
तादाद इतनी बढ़ा दी है कि आज तुम
आसमान के सितारों की मानिन्द बेशुमार हो।
11और रब तुम्हारे बापदादा का ख़ुदा करे
कि तुम्हारी तादाद मज़ीद हज़ार गुना बढ़
जाए। वह तुम्हें वह बरकत दे जिस का वादा
उस ने किया है। 12लेकिन मैं अकेला ही
तुम्हारा बोझ उठाने और झगड़ों को निपटाने

की ज़िम्मादारी नहीं उठा सकता। 13इस लिए अपने हर क़बीले में से कुछ ऐसे दानिशमन्द और समझदार आदमी चुन लो जिन की लियाक़त को लोग मानते हैं। फिर मैं उन्हें तुम पर मुक़र्रर करूँगा।"

14यह बात तुम्हें पसन्द आई। 15तुम ने अपने में से ऐसे राहनुमा चुन लिए जो दानिशमन्द थे और जिन की लियाक़त को लोग मानते थे। फिर मैं ने उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ और पचास पचास मर्दों पर मुक़र्रर किया। यूँ वह क़बीलों के निगहबान बन गए। 16उस वक़्त मैं ने उन क़ाज़ियों से कहा, "अदालत करते वक़्त हर एक की बात ग़ौर से सुन कर ग़ैरजानिबदार फ़ैसले करना, चाहे दो इस्राईली फ़रीक़ एक दूसरे से झगड़ा कर रहे हों या मुआमला किसी इस्राईली और परदेसी के दरमियान हो। 17अदालत करते वक़्त जानिबदारी न करना। छोटे और बड़े की बात सुन कर दोनों के साथ एक जैसा सुलूक करना। किसी से मत डरना, क्यूँकि अल्लाह ही ने तुम्हें अदालत करने की ज़िम्मादारी दी है। अगर किसी मुआमले में फ़ैसला करना तुम्हारे लिए मुश्किल हो तो उसे मुझे पेश करो। फिर मैं ही उस का फ़ैसला करूँगा।" 18उस वक़्त मैं ने तुम्हें सब कुछ बताया जो तुम्हें करना था।

मुल्क-ए-कनआन में जासूस

19हम ने वैसा ही किया जैसा रब ने हमें कहा था। हम होरिब से रवाना हो कर अमोरियों के पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ बढ़े। सफ़र करते करते हम उस वसी और हौलनाक रेगिस्तान में से गुज़र गए जिसे तुम ने देख लिया है। आख़िरकार हम क़ादिस-बर्नीअ पहुँच गए। 20वहाँ मैं ने तुम से कहा, "तुम अमोरियों के पहाड़ी इलाक़े तक पहुँच गए हो जो रब हमारा ख़ुदा हमें देने वाला है। 21देख, रब तेरे ख़ुदा ने तुझे यह मुल्क दे दिया है। अब जा कर उस पर क़ब्ज़ा कर ले जिस तरह रब तेरे बापदादा के ख़ुदा ने तुझे बताया है। मत डरना और बेदिल न हो जाना!"

22लेकिन तुम सब मेरे पास आए और कहा, "क्यूँ न हम जाने से पहले कुछ आदमी भेजें जो मुल्क के हालात दरयाफ़्त करें और वापस आ कर हमें उस रास्ते के बारे में बताएँ जिस पर हमें जाना है और उन शहरों के बारे में इत्तिला दें जिन के पास हम पहुँचेंगे।" 23यह बात मुझे पसन्द आई। मैं ने इस काम के लिए हर क़बीले के एक आदमी को चुन कर भेज दिया। 24जब यह बारह आदमी पहाड़ी इलाक़े में जा कर वादी-ए-इस्काल में पहुँचे तो उस की तफ़्तीश की। 25फिर वह मुल्क का कुछ फल ले कर लौट आए और हमें मुल्क के बारे में इत्तिला दे कर कहा, "जो मुल्क रब हमारा ख़ुदा हमें देने वाला है वह अच्छा है।"

26लेकिन तुम जाना नहीं चाहते थे बल्कि सरकशी करके रब अपने ख़ुदा का हुक्म न माना। 27तुम ने अपने ख़ैमों में बुड़बुड़ाते हुए कहा, "रब हम से नफ़रत रखता है। वह हमें मिस्र से निकाल लाया है ताकि हमें अमोरियों के हाथों हलाक करवाए। 28हम कहाँ जाएँ? हमारे भाइयों ने हमें बेदिल कर दिया है। वह कहते हैं, 'वहाँ के लोग हम से ताक़तवर और दराज़क़द हैं। उन के बड़े बड़े शहरों की फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं। वहाँ हम ने अनाक़ की औलाद भी देखी जो देओक़ामत हैं'।"

29मैं ने कहा, "न घबराओ और न उन से ख़ौफ़ खाओ। 30रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे आगे आगे चलता हुआ तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम ख़ुद देख चुके हो कि वह किस तरह मिस्र 31और रेगिस्तान में तुम्हारे लिए लड़ा। यहाँ भी वह ऐसा ही करेगा। तू ख़ुद गवाह है कि बयाबान में पूरे सफ़र के दौरान रब तुझे यूँ उठाए फिरा जिस तरह बाप अपने बेटे को उठाए फिरता है। इस तरह चलते चलते तुम यहाँ तक पहुँच गए।" 32इस के बावुजूद तुम ने रब अपने ख़ुदा पर भरोसा न रखा। 33तुम ने यह बात नज़रअन्दाज़ की कि वह सफ़र के

दौरान रात के वक़्त आग और दिन के वक़्त बादल की सूरत में तुम्हारे आगे आगे चलता रहा ताकि तुम्हारे लिए ख़ैमे लगाने की जगहें मालूम करे और तुम्हें रास्ता दिखाए।

34जब रब ने तुम्हारी यह बातें सुनीं तो उसे ग़ुस्सा आया और उस ने क़सम खा कर कहा, 35"इस शरीर नस्ल का एक मर्द भी उस अच्छे मुल्क को नहीं देखेगा अगरचे मैं ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा से वादा किया था कि मैं उसे उन्हें दूँगा। 36सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना उसे देखेगा। मैं उसे और उस की औलाद को वह मुल्क दूँगा जिस में उस ने सफ़र किया है, क्यूँकि उस ने पूरे तौर पर रब की पैरवी की।"

37तुम्हारी वजह से रब मुझ से भी नाराज़ हुआ और कहा, "तू भी उस में दाख़िल नहीं होगा। 38लेकिन तेरा मददगार यशूअ बिन नून दाख़िल होगा। उस की हौसलाअफ़ज़ाई कर, क्यूँकि वह मुल्क पर क़ब्ज़ा करने में इस्राईल की राहनुमाई करेगा।" 39तुम से रब ने कहा, "तुम्हारे बच्चे जो अभी अच्छे और बुरे में इम्तियाज़ नहीं कर सकते, वही मुल्क में दाख़िल होंगे, वही बच्चे जिन के बारे में तुम ने कहा कि दुश्मन उन्हें मुल्क-ए-कनआन में छीन लेंगे। उन्हें मैं मुल्क दूँगा, और वह उस पर क़ब्ज़ा करेंगे। 40लेकिन तुम ख़ुद आगे न बढ़ो। पीछे मुड़ कर दुबारा रेगिस्तान में बहर-ए-क़ुल्ज़ुम की तरफ़ सफ़र करो।"

41तब तुम ने कहा, "हम ने रब का गुनाह किया है। अब हम मुल्क में जा कर लड़ेंगे, जिस तरह रब हमारे ख़ुदा ने हमें हुक्म दिया है।" चुनाँचे यह सोचते हुए कि उस पहाड़ी इलाक़े पर हम्ला करना आसान होगा, हर एक मुसल्लह हुआ। 42लेकिन रब ने मुझ से कहा, "उन्हें बताना कि वहाँ जंग करने के लिए न जाओ, क्यूँकि मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँगा। तुम अपने दुश्मनों के हाथों शिकस्त खाओगे।"

43मैं ने तुम्हें यह बताया, लेकिन तुम ने मेरी न सुनी। तुम ने सरकशी करके रब का हुक्म न माना बल्कि मग़रूर हो कर पहाड़ी इलाक़े में दाख़िल हुए। 44वहाँ के अमोरी बाशिन्दे तुम्हारा सामना करने निकले। वह शहद की मक्खियों के ग़ोल की तरह तुम पर टूट पड़े और तुम्हारा ताक़्क़ुब करके तुम्हें सईर से हुर्मा तक मारते गए।

45तब तुम वापस आ कर रब के सामने ज़ार-ओ-क़तार रोने लगे। लेकिन उस ने तवज्जुह न दी बल्कि तुम्हें नज़रअन्दाज़ किया। 46इस के बाद तुम बहुत दिनों तक क़ादिस-बर्नीअ में रहे।

रेगिस्तान में दुबारा सफ़र

2 फिर जिस तरह रब ने मुझे हुक्म दिया था हम पीछे मुड़ कर रेगिस्तान में बहर-ए-क़ुल्ज़ुम की तरफ़ सफ़र करने लगे। काफ़ी देर तक हम सईर यानी अदोम के पहाड़ी इलाक़े के किनारे किनारे फिरते रहे।

2एक दिन रब ने मुझ से कहा, 3"तुम बहुत देर से इस पहाड़ी इलाक़े के किनारे किनारे फिर रहे हो। अब शिमाल की तरफ़ सफ़र करो। 4क़ौम को बताना, अगले दिनों में तुम सईर के मुल्क में से गुज़रोगे जहाँ तुम्हारे भाई एसौ की औलाद आबाद है। वह तुम से डरेंगे। तो भी बड़ी एहतियात से गुज़रना। 5उन के साथ जंग न छेड़ना, क्यूँकि मैं तुम्हें उन के मुल्क का एक मुरब्बा फ़ुट भी नहीं दूँगा। मैं ने सईर का पहाड़ी इलाक़ा एसौ और उस की औलाद को दिया है। 6लाज़िम है कि तुम खाने और पीने की तमाम ज़रूरियात पैसे दे कर ख़रीदो।"

7जो भी काम तू ने किया है रब ने उस पर बरकत दी है। इस वसी रेगिस्तान में पूरे सफ़र के दौरान उस ने तेरी निगहबानी की। इन 40 सालों के दौरान रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ था, और तेरी तमाम ज़रूरियात पूरी होती रहीं।

8चुनाँचे हम सईर को छोड़ कर जहाँ हमारे भाई एसौ की औलाद आबाद थी दूसरे रास्ते से आगे निकले। हम ने वह रास्ता छोड़ दिया जो ऐलात और अस्यून-जाबर के शहरों से

बहीरा-ए-मुर्दार तक पहुँचाता है और मोआब के बयाबान की तरफ़ बढ़ने लगे। 9वहाँ रब ने मुझ से कहा, "मोआब के बाशिन्दों की मुख़ालफ़त न करना और न उन के साथ जंग छेड़ना, क्यूँकि मैं उन के मुल्क का कोई भी हिस्सा तुझे नहीं दूँगा। मैं ने आर शहर को लूत की औलाद को दिया है।"

10पहले ऐमी वहाँ रहते थे जो अनाक़ की औलाद की तरह ताक़तवर, दराज़क़द और तादाद में ज़्यादा थे। 11अनाक़ की औलाद की तरह वह रफ़ाइयों में शुमार किए जाते थे, लेकिन मोआबी उन्हें ऐमी कहते थे।

12इसी तरह क़दीम ज़माने में होरी सईर में आबाद थे, लेकिन एसौ की औलाद ने उन्हें वहाँ से निकाल दिया था। जिस तरह इस्राईलियों ने बाद में उस मुल्क में किया जो रब ने उन्हें दिया था उसी तरह एसौ की औलाद बढ़ते बढ़ते होरियों को तबाह करके उन की जगह आबाद हुए थे।

13रब ने कहा, "अब जा कर वादी-ए-ज़िरद को उबूर करो।" हम ने ऐसा ही किया। 14हमें क़ादिस-बर्नीअ से रवाना हुए 38 साल हो गए थे। अब वह तमाम आदमी मर चुके थे जो उस वक़्त जंग करने के क़ाबिल थे। वैसा ही हुआ था जैसा रब ने क़सम खा कर कहा था। 15रब की मुख़ालफ़त के बाइस आख़िरकार ख़ैमागाह में उस नस्ल का एक मर्द भी न रहा। 16जब वह सब मर गए थे 17तब रब ने मुझ से कहा, 18"आज तुम्हें आर शहर से हो कर मोआब के इलाक़े में से गुज़रना है। 19फिर तुम अम्मोनियों के इलाक़े तक पहुँचोगे। उन की भी मुख़ालफ़त न करना, और न उन के साथ जंग छेड़ना, क्यूँकि मैं उन के मुल्क का कोई भी हिस्सा तुम्हें नहीं दूँगा। मैं ने यह मुल्क लूत की औलाद को दिया है।"

20हक़ीक़त में अम्मोनियों का मुल्क भी रफ़ाइयों का मुल्क समझा जाता था जो क़दीम ज़माने में वहाँ आबाद थे। अम्मोनी उन्हें ज़मज़ुमी कहते थे, 21और वह देओक़ामत थे, ताक़तवर और तादाद में ज़्यादा। वह अनाक़ की औलाद जैसे दराज़क़द थे। जब अम्मोनी मुल्क में आए तो रब ने रफ़ाइयों को उन के आगे आगे तबाह कर दिया। चुनाँचे अम्मोनी बढ़ते बढ़ते उन्हें निकालते गए और उन की जगह आबाद हुए, 22बिलकुल उसी तरह जिस तरह रब ने एसौ की औलाद के आगे आगे होरियों को तबाह कर दिया था जब वह सईर के मुल्क में आए थे। वहाँ भी वह बढ़ते बढ़ते होरियों को निकालते गए और उन की जगह आबाद हुए। 23इसी तरह एक और क़दीम क़ौम बनाम अव्वी को भी उस के मुल्क से निकाला गया। अव्वी ग़ज़्ज़ा तक आबाद थे, लेकिन जब कफ़्तूरी कफ़्तूर यानी क्रेते से आए तो उन्हों ने उन्हें तबाह कर दिया और उन की जगह आबाद हो गए।

सीहोन बादशाह से जंग

24रब ने मूसा से कहा, "अब जा कर वादी-ए-अर्नोन को उबूर करो। यूँ समझो कि मैं हस्बोन के अमोरी बादशाह सीहोन को उस के मुल्क समेत तुम्हारे हवाले कर चुका हूँ। उस पर क़ब्ज़ा करना शुरू करो और उस के साथ जंग करने का मौक़ा ढूँडो। 25इसी दिन से मैं तमाम क़ौमों में तुम्हारे बारे में दह्शत और ख़ौफ़ पैदा करूँगा। वह तुम्हारी ख़बर सुन कर ख़ौफ़ के मारे थरथराएँगी और काँपेंगी।"

26मैं ने दश्त-ए-क़दीमात से हस्बोन के बादशाह सीहोन के पास क़ासिद भेजे। मेरा पैग़ाम नफ़रत और मुख़ालफ़त से ख़ाली था। वह यह था, 27"हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें। हम शाहराह पर ही रहेंगे और उस से न बाईं, न दाईं तरफ़ हटेंगे। 28हम खाने और पीने की तमाम ज़रूरियात के लिए मुनासिब पैसे देंगे। हमें पैदल अपने मुल्क में से गुज़रने दें, 29जिस तरह सईर के बाशिन्दों एसौ की औलाद और आर के रहने वाले मोआबियों ने हमें गुज़रने दिया। क्यूँकि हमारी मन्ज़िल

दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में है, वह मुल्क जो रब हमारा ख़ुदा हमें देने वाला है।"

30लेकिन हस्बोन के बादशाह सीहोन ने हमें गुज़रने न दिया, क्यूँकि रब तुम्हारे ख़ुदा ने उसे बेलचक और हमारी बात से इन्कार करने पर आमादा कर दिया था ताकि सीहोन हमारे क़ाबू में आ जाए। और बाद में ऐसा ही हुआ। 31रब ने मुझ से कहा, "यूँ समझ ले कि मैं सीहोन और उस के मुल्क को तेरे हवाले करने लगा हूँ। अब निकल कर उस पर क़ब्ज़ा करना शुरू करो।"

32जब सीहोन अपनी सारी फ़ौज ले कर हमारा मुक़ाबला करने के लिए यहज़ आया 33तो रब हमारे ख़ुदा ने हमें पूरी फ़त्ह बख़्शी। हम ने सीहोन, उस के बेटों और पूरी क़ौम को शिकस्त दी। 34उस वक़्त हम ने उस के तमाम शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया और उन के तमाम मर्दों, औरतों और बच्चों को मार डाला। कोई भी न बचा। 35हम ने सिर्फ़ मवेशी और शहरों का लूटा हुआ माल अपने लिए बचाए रखा।

36वादी-ए-अर्नोन के किनारे पर वाक़े अरोईर से ले कर जिलिआद तक हर शहर को शिकस्त माननी पड़ी। इस में वह शहर भी शामिल था जो वादी-ए-अर्नोन में था। रब हमारे ख़ुदा ने उन सब को हमारे हवाले कर दिया। 37लेकिन तुम ने अम्मोनियों का मुल्क छोड़ दिया और न दरया-ए-यब्बोक़ के इर्दगिर्द के इलाक़े, न उस के पहाड़ी इलाक़े के शहरों को छेड़ा, क्यूँकि रब हमारे ख़ुदा ने ऐसा करने से तुम्हें मना किया था।

बसन के बादशाह ओज की शिकस्त

3 इस के बाद हम शिमाल में बसन की तरफ़ बढ़ गए। बसन का बादशाह ओज अपनी तमाम फ़ौज के साथ निकल कर हमारा मुक़ाबला करने के लिए इद्रई आया। 2रब ने मुझ से कहा, "उस से मत डर। मैं उसे, उस की पूरी फ़ौज और उस का मुल्क तेरे हवाले कर चुका हूँ। उस के साथ वह कुछ कर जो तू ने अमोरी बादशाह सीहोन के साथ किया जो हस्बोन में हुकूमत करता था।"

3ऐसा ही हुआ। रब हमारे ख़ुदा की मदद से हम ने बसन के बादशाह ओज और उस की तमाम क़ौम को शिकस्त दी। हम ने सब को हलाक कर दिया। कोई भी न बचा। 4उसी वक़्त हम ने उस के तमाम शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया। हम ने कुल 60 शहरों पर यानी अर्जूब के सारे इलाक़े पर क़ब्ज़ा किया जिस पर ओज की हुकूमत थी। 5इन तमाम शहरों की हिफ़ाज़त ऊँची ऊँची फ़सीलों और कुंडे वाले दरवाज़ों से की गई थी। देहात में बहुत सी ऐसी आबादियाँ भी मिल गईं जिन की फ़सीलें नहीं थीं। 6हम ने उन के साथ वह कुछ किया जो हम ने हस्बोन के बादशाह सीहोन के इलाक़े के साथ किया था। हम ने सब कुछ रब के हवाले करके हर शहर को और तमाम मर्दों, औरतों और बच्चों को हलाक कर डाला। 7हम ने सिर्फ़ तमाम मवेशी और शहरों का लूटा हुआ माल अपने लिए बचाए रखा।

8यूँ हम ने उस वक़्त अमोरियों के इन दो बादशाहों से दरया-ए-यर्दन का मशरिक़ी इलाक़ा वादी-ए-अर्नोन से ले कर हर्मून पहाड़ तक छीन लिया। 9(सैदा के बाशिन्दे हर्मून को सिर्यून कहते हैं जबकि अमोरियों ने उस का नाम सनीर रखा)। 10हम ने ओज बादशाह के पूरे इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस में मैदान-ए-मुर्तफ़ा के तमाम शहर शामिल थे, नीज़ सल्का और इद्रई तक जिलिआद और बसन के पूरे इलाक़े।

11बादशाह ओज देओक़ामत क़बीले रफ़ाई का आख़िरी मर्द था। उस का लोहे का ताबूत 13 से ज़ाइद फ़ुट लम्बा और छः फ़ुट चौड़ा था और आज तक अम्मोनियों के शहर रब्बा में देखा जा सकता है।

यर्दन के मशरिक़ में मुल्क की तक़्सीम

12जब हम ने दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी इलाक़े पर क़ब्ज़ा किया तो मैं ने रूबिन और

जद के क़बीलों को उस का जुनूबी हिस्सा शहरों समेत दिया। इस इलाक़े की जुनूबी सरहद दरया-ए-अर्नोन पर वाक़े शहर अरोईर है जबकि शिमाल में इस में जिलिआद के पहाड़ी इलाक़े का आधा हिस्सा भी शामिल है। 13जिलिआद का शिमाली हिस्सा और बसन का मुल्क मैं ने मनस्सी के आधे क़बीले को दिया।

(बसन में अर्जूब का इलाक़ा है जहाँ पहले ओज बादशाह की हुकूमत थी और जो रफ़ाइयों यानी देओक़ामत अफ़राद का मुल्क कहलाता था। 14मनस्सी के क़बीले के एक आदमी बनाम याईर ने अर्जूब पर जसूरियों और माकातियों की सरहद तक क़ब्ज़ा कर लिया था। उस ने इस इलाक़े की बस्तियों को अपना नाम दिया। आज तक यही नाम हव्वोत-याईर यानी याईर की बस्तियाँ चलता है।)

15मैं ने जिलिआद का शिमाली हिस्सा मनस्सी के कुंबे मकीर को दिया 16लेकिन जिलिआद का जुनूबी हिस्सा रूबिन और जद के क़बीलों को दिया। इस हिस्से की एक सरहद जुनूब में वादी-ए-अर्नोन के बीच में से गुज़रती है जबकि दूसरी सरहद दरया-ए-यब्बोक़ है जिस के पार अम्मोनियों की हुकूमत है। 17उस की मग़रिबी सरहद दरया-ए-यर्दन है यानी किन्नरत (गलील) की झील से ले कर बहीरा-ए-मुर्दार तक जो पिसगा के पहाड़ी सिलसिले के दामन में है।

18उस वक़्त मैं ने रूबिन, जद और मनस्सी के क़बीलों से कहा, "रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हें मीरास में यह मुल्क दे दिया है। लेकिन शर्त यह है कि तुम्हारे तमाम जंग करने के क़ाबिल मर्द मुसल्लह हो कर तुम्हारे इस्राईली भाइयों के आगे आगे दरया-ए-यर्दन को पार करें। 19सिर्फ़ तुम्हारी औरतें और बच्चे पीछे रह कर उन शहरों में इन्तिज़ार कर सकते हैं जो मैं ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किए हैं। तुम अपने मवेशियों को भी पीछे छोड़ सकते हो, क्यूँकि मुझे पता है कि तुम्हारे बहुत ज़्यादा जानवर हैं। 20अपने भाइयों के साथ चलते हुए उन की मदद करते रहो। जब रब तुम्हारा ख़ुदा उन्हें दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में वाक़े मुल्क देगा और वह तुम्हारी तरह आराम और सुकून से वहाँ आबाद हो जाएंगे तब तुम अपने मुल्क में वापस जा सकते हो।"

मूसा को यर्दन पार करने की इजाज़त नहीं मिलती

21साथ साथ मैं ने यशूअ से कहा, "तू ने अपनी आँखों से सब कुछ देख लिया है जो रब तुम्हारे ख़ुदा ने इन दोनों बादशाहों सीहोन और ओज से किया। वह यही कुछ हर उस बादशाह के साथ करेगा जिस के मुल्क पर तू दरया को पार करके हम्ला करेगा। 22उन से न डरो। तुम्हारा ख़ुदा ख़ुद तुम्हारे लिए जंग करेगा।"

23उस वक़्त मैं ने रब से इल्तिजा करके कहा, 24"ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, तू अपने ख़ादिम को अपनी अज़मत और क़ुदरत दिखाने लगा है। क्या आसमान या ज़मीन पर कोई और ख़ुदा है जो तेरी तरह के अज़ीम काम कर सकता है? हरगिज़ नहीं! 25मेहरबानी करके मुझे भी दरया-ए-यर्दन को पार करके उस अच्छे मुल्क यानी उस बेहतरीन पहाड़ी इलाक़े को लुबनान तक देखने की इजाज़त दे।"

26लेकिन तुम्हारे सबब से रब मुझ से नाराज़ था। उस ने मेरी न सुनी बल्कि कहा, "बस कर! आइन्दा मेरे साथ इस का ज़िक्र न करना। 27पिसगा की चोटी पर चढ़ कर चारों तरफ़ नज़र दौड़ा। वहाँ से ग़ौर से देख, क्यूँकि तू ख़ुद दरया-ए-यर्दन को उबूर नहीं करेगा। 28अपनी जगह यशूअ को मुक़र्रर कर। उस की हौसलाअफ़ज़ाई कर और उसे मज़बूत कर, क्यूँकि वही इस क़ौम को दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में ले जाएगा और क़बीलों में उस मुल्क को तक़्सीम करेगा जिसे तू पहाड़ से देखेगा।"

29चुनाँचे हम बैत-फ़ग़ूर के क़रीब वादी में
ठहरे।

फ़रमाँबरदारी की अशद्द ज़रूरत

4 ऐ इस्राईल, अब वह तमाम अह्काम
ध्यान से सुन ले जो मैं तुम्हें सिखाता
हूँ। उन पर अमल करो ताकि तुम ज़िन्दा रहो
और जा कर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करो जो
रब तुम्हारे बापदादा का ख़ुदा तुम्हें देने वाला
है। 2जो अह्काम मैं तुम्हें सिखाता हूँ उन में
न किसी बात का इज़ाफ़ा करो और न उन से
कोई बात निकालो। रब अपने ख़ुदा के तमाम
अह्काम पर अमल करो जो मैं ने तुम्हें दिए
हैं। 3तुम ने ख़ुद देखा है कि रब ने बाल-फ़ग़ूर
से क्या कुछ किया। वहाँ रब तेरे ख़ुदा ने हर
एक को हलाक कर डाला जिस ने फ़ग़ूर के
बाल देवता की पूजा की। 4लेकिन तुम में से
जितने रब अपने ख़ुदा के साथ लिपटे रहे वह
सब आज तक ज़िन्दा हैं।

5मैं ने तुम्हें तमाम अह्काम यूँ सिखा दिए
हैं जिस तरह रब मेरे ख़ुदा ने मुझे बताया।
क्यूँकि लाज़िम है कि तुम उस मुल्क में इन
के ताबे रहो जिस पर तुम क़ब्ज़ा करने वाले
हो। 6इन्हें मानो और इन पर अमल करो तो
दूसरी क़ौमों को तुम्हारी दानिशमन्दी और
समझ नज़र आएगी। फिर वह इन तमाम
अह्काम के बारे में सुन कर कहेंगी, “वाह, यह
अज़ीम क़ौम कैसी दानिशमन्द और समझदार
है!” 7कौन सी अज़ीम क़ौम के माबूद इतने
क़रीब हैं जितना हमारा ख़ुदा हमारे क़रीब है?
जब भी हम मदद के लिए पुकारते हैं तो रब
हमारा ख़ुदा मौजूद होता है। 8कौन सी अज़ीम
क़ौम के पास ऐसे मुन्सिफ़ाना अह्काम और
हिदायात हैं जैसे मैं आज तुम्हें पूरी शरीअत
सुना कर पेश कर रहा हूँ?

9लेकिन ख़बरदार, एहतियात करना और
वह तमाम बातें न भूलना जो तेरी आँखों ने
देखी हैं। वह उम्र भर तेरे दिल में से मिट न जाएँ
बल्कि उन्हें अपने बच्चों और पोते-पोतियों को
भी बताते रहना। 10वह दिन याद कर जब तू
होरिब यानी सीना पहाड़ पर रब अपने ख़ुदा
के सामने हाज़िर था और उस ने मुझे बताया,
“क़ौम को यहाँ मेरे पास जमा कर ताकि मैं
उन से बात करूँ और वह उम्र भर मेरा ख़ौफ़
मानें और अपने बच्चों को मेरी बातें सिखाते
रहें।”

11उस वक़्त तुम क़रीब आ कर पहाड़ के
दामन में खड़े हुए। वह जल रहा था, और
उस की आग आसमान तक भड़क रही थी
जबकि काले बादलों और गहरे अंधेरे ने उसे
नज़रों से छुपा दिया। 12फिर रब आग में से तुम
से हमकलाम हुआ। तुम ने उस की बातें सुनीं
लेकिन उस की कोई शक्ल न देखी। सिर्फ़ उस
की आवाज़ सुनाई दी। 13उस ने तुम्हारे लिए
अपने अह्द यानी उन 10 अह्काम का एलान
किया और हुक्म दिया कि इन पर अमल करो।
फिर उस ने उन्हें पत्थर की दो तख़्तियों पर
लिख दिया। 14रब ने मुझे हिदायत की, “उन्हें
वह तमाम अह्काम सिखा जिन के मुताबिक़
उन्हें चलना होगा जब वह दरया-ए-यर्दन को
पार करके कनआन पर क़ब्ज़ा करेंगे।”

बुतपरस्ती के बारे में आगाही

15जब रब होरिब यानी सीना पहाड़ पर तुम
से हमकलाम हुआ तो तुम ने उस की कोई
शक्ल न देखी। चुनाँचे ख़बरदार रहो 16कि तुम
ग़लत काम करके अपने लिए किसी भी शक्ल
का बुत न बनाओ। न मर्द, औरत, 17ज़मीन
पर चलने वाले जानवर, परिन्दे, 18रेंगने वाले
जानवर या मछली का बुत बनाओ। 19जब तू
आसमान की तरफ़ नज़र उठा कर आसमान
का पूरा लश्कर देखे तो सूरज, चाँद और
सितारों की परस्तिश और ख़िदमत करने की
आज़माइश में न पड़ना। रब तेरे ख़ुदा ने इन
चीज़ों को बाक़ी तमाम क़ौमों को अता किया
है, 20लेकिन तुम्हें उस ने मिस्र के भड़कते भट्टे
से निकाला है ताकि तुम उस की अपनी क़ौम

और उस की मीरास बन जाओ। और आज ऐसा ही हुआ है।

21तुम्हारे सबब से रब ने मुझ से नाराज़ हो कर क़सम खाई कि तू दरया-ए-यर्दन को पार करके उस अच्छे मुल्क में दाख़िल नहीं होगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में देने वाला है। 22मैं यहीं इसी मुल्क में मर जाऊँगा और दरया-ए-यर्दन को पार नहीं करूँगा। लेकिन तुम दरया को पार करके उस बेहतरीन मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे। 23हर सूरत में वह अह्द याद रखना जो रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हारे साथ बांधा है। अपने लिए किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना। यह रब का हुक्म है, 24क्यूँकि रब तेरा ख़ुदा भस्म कर देने वाली आग है, वह ग़यूर ख़ुदा है।

25तुम मुल्क में जा कर वहाँ रहोगे। तुम्हारे बच्चे और पोते-नवासे उस में पैदा हो जाएंगे। जब इस तरह बहुत वक़्त गुज़र जाएगा तो ख़तरा है कि तुम ग़लत काम करके किसी चीज़ की मूरत बनाओ। ऐसा कभी न करना। यह रब तुम्हारे ख़ुदा की नज़र में बुरा है और उसे ग़ुस्सा दिलाएगा। 26आज आसमान और ज़मीन मेरे गवाह हैं कि अगर तुम ऐसा करो तो जल्दी से उस मुल्क में से मिट जाओगे जिस पर तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके क़ब्ज़ा करोगे। तुम देर तक वहाँ जीते नहीं रहोगे बल्कि पूरे तौर पर हलाक हो जाओगे। 27रब तुम्हें मुल्क से निकाल कर मुख़्तलिफ़ क़ौमों में मुन्तशिर कर देगा, और वहाँ सिर्फ़ थोड़े ही अफ़राद बचे रहेंगे। 28वहाँ तुम इन्सान के हाथों से बने हुए लकड़ी और पत्थर के बुतों की ख़िदमत करोगे, जो न देख सकते, न सुन सकते, न खा सकते और न सूँघ सकते हैं।

29वहीं तू रब अपने ख़ुदा को तलाश करेगा, और अगर उसे पूरे दिल-ओ-जान से ढूँडे तो वह तुझे मिल भी जाएगा। 30जब तू इस तक्लीफ़ में मुब्तला होगा और यह सारा कुछ तुझ पर से गुज़रेगा फिर आख़िरकार रब अपने ख़ुदा की तरफ़ रुजू करके उस की सुनेगा। 31क्यूँकि रब तेरा ख़ुदा रहीम ख़ुदा है। वह तुझे न तर्क करेगा और न बर्बाद करेगा। वह उस अह्द को नहीं भूलेगा जो उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा से बांधा था।

रब ही हमारा ख़ुदा है

32दुनिया में इन्सान की तख़्लीक़ से ले कर आज तक माज़ी की तफ़्तीश कर। आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक खोज लगा। क्या इस से पहले कभी इस तरह का मोजिज़ाना काम हुआ है? क्या किसी ने इस से पहले इस क़िस्म के अज़ीम काम की ख़बर सुनी है? 33तू ने आग में से बोलती हुई अल्लाह की आवाज़ सुनी तो भी जीता बचा! क्या किसी और क़ौम के साथ ऐसा हुआ है? 34क्या किसी और माबूद ने कभी जुरअत की है कि रब की तरह पूरी क़ौम को एक मुल्क से निकाल कर अपनी मिलकियत बनाया हो? उस ने ऐसा ही तुम्हारे साथ किया। उस ने तुम्हारे देखते देखते मिस्रियों को आज़माया, उन्हें बड़े मोजिज़े दिखाए, उन के साथ जंग की, अपनी बड़ी क़ुदरत और इख़तियार का इज़हार किया और हौलनाक कामों से उन पर ग़ालिब आ गया।

35तुझे यह सब कुछ दिखाया गया ताकि तू जान ले कि रब ख़ुदा है। उस के सिवा कोई और नहीं है। 36उस ने तुझे नसीहत देने के लिए आसमान से अपनी आवाज़ सुनाई। ज़मीन पर उस ने तुझे अपनी अज़ीम आग दिखाई जिस में से तू ने उस की बातें सुनीं। 37उसे तेरे बापदादा से प्यार था, और उस ने तुझे जो उन की औलाद हैं चुन लिया। इस लिए वह ख़ुद हाज़िर हो कर अपनी अज़ीम क़ुदरत से तुझे मिस्र से निकाल लाया। 38उस ने तेरे आगे से तुझ से ज़्यादा बड़ी और ताक़तवर क़ौमें निकाल दीं ताकि तुझे उन का मुल्क मीरास में मिल जाए। आज ऐसा ही हो रहा है।

39चुनाँचे आज जान ले और ज़हन में रख कि रब आसमान और ज़मीन का ख़ुदा है।

कोई और माबूद नहीं है। 40उस के अह्काम पर अमल कर जो मैं तुझे आज सुना रहा हूँ। फिर तू और तेरी औलाद कामयाब होंगे, और तू देर तक उस मुल्क में जीता रहेगा जो रब तुझे हमेशा के लिए दे रहा है।

यर्दन के मशरिक़ में पनाह के शहर

41यह कह कर मूसा ने दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में पनाह के तीन शहर चुन लिए। 42उन में वह शख़्स पनाह ले सकता था जिस ने दुश्मनी की बिना पर नहीं बल्कि ग़ैरइरादी तौर पर किसी को जान से मार दिया था। ऐसे शहर में पनाह लेने के सबब से उसे बदले में क़त्ल नहीं किया जा सकता था। 43इस के लिए रूबिन के क़बीले के लिए मैदान-ए-मुर्तफ़ा का शहर बसर, जद के क़बीले के लिए जिलिआद का शहर रामात और मनस्सी के क़बीले के लिए बसन का शहर जौलान चुना गया।

शरीअत का पेशलफ़्ज़

44दर्ज-ए-ज़ैल वह शरीअत है जो मूसा ने इस्राईलियों को पेश की। 45मूसा ने यह अह्काम और हिदायात उस वक़्त पेश कीं जब वह मिस्र से निकल कर 46दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर थे। बैत-फ़ग़ूर उन के मुक़ाबिल था, और वह अमोरी बादशाह सीहोन के मुल्क में ख़ैमाज़न थे। सीहोन की रिहाइश हस्बोन में थी और उसे इस्राईलियों से शिकस्त हुई थी जब वह मूसा की राहनुमाई में मिस्र से निकल आए थे। 47उस के मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उन्हों ने बसन के मुल्क पर भी फ़त्ह पाई थी जिस का बादशाह ओज था। इन दोनों अमोरी बादशाहों का यह पूरा इलाक़ा उन के हाथ में आ गया था। यह इलाक़ा दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में था। 48उस की जुनूबी सरहद दरया-ए-अर्नोन के किनारे पर वाक़े शहर अरोईर थी जबकि उस की शिमाली सरहद सिर्यून यानी हर्मून पहाड़ थी। 49दरया-ए-यर्दन का पूरा मशरिक़ी किनारा पिसगा के पहाड़ी सिलसिले के दामन में वाक़े बहीरा-ए-मुर्दार तक उस में शामिल था।

दस अह्काम

5 मूसा ने तमाम इस्राईलियों को जमा करके कहा,

ऐ इस्राईल, ध्यान से वह हिदायात और अह्काम सुन जो मैं तुम्हें आज पेश कर रहा हूँ। उन्हें सीखो और बड़ी एहतियात से उन पर अमल करो। 2रब हमारे ख़ुदा ने होरिब यानी सीना पहाड़ पर हमारे साथ अह्द बांधा। 3उस ने यह अह्द हमारे बापदादा के साथ नहीं बल्कि हमारे ही साथ बांधा है, जो आज इस जगह पर ज़िन्दा हैं। 4रब पहाड़ पर आग में से रू-ब-रू हो कर तुम से हमकलाम हुआ। 5उस वक़्त मैं तुम्हारे और रब के दरमियान खड़ा हुआ ताकि तुम्हें रब की बातें सुनाऊँ। क्यूँकि तुम आग से डरते थे और इस लिए पहाड़ पर न चढ़े। उस वक़्त रब ने कहा,

6“मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्क-ए-मिस्र की ग़ुलामी से निकाल लाया। 7मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना।

8अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुन्दर में हो। 9न बुतों की परस्तिश, न उन की ख़िदमत करना, क्यूँकि मैं तेरा रब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझ से नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा। 10लेकिन जो मुझ से मुहब्बत रखते और मेरे अह्काम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।

11रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़्सद या ग़लत मक़्सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

12सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो, उसी तरह जिस तरह रब तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है। 13हफ़्ते के पहले छः दिन अपना

काम-काज कर, 14लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे
ख़ुदा का आराम का दिन है। उस दिन किसी
तरह का काम न करना। न तू, न तेरा बेटा,
न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी,
न तेरा बैल, न तेरा गधा, न तेरा कोई और
मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह
भी काम न करे। तेरे नौकर और तेरी नौकरानी
को तेरी तरह आराम का मौक़ा मिलना है।
15याद रखना कि तू मिस्र में ग़ुलाम था और
कि रब तेरा ख़ुदा ही तुझे बड़ी क़ुदरत और
इख़तियार से वहाँ से निकाल लाया। इस लिए
उस ने तुझे हुक्म दिया है कि सबत का दिन
मनाना।

16अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त
करना जिस तरह रब तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म
दिया है। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा ख़ुदा
तुझे देने वाला है ख़ुशहाल होगा और देर तक
जीता रहेगा।

17क़त्ल न करना।

18ज़िना न करना।

19चोरी न करना।

20अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न
देना।

21अपने पड़ोसी की बीवी का लालच न
करना। न उस के घर का, न उस की ज़मीन
का, न उस के नौकर का, न उस की नौकरानी
का, न उस के बैल और न उस के गधे का
बल्कि उस की किसी भी चीज़ का लालच न
करना।"

22रब ने तुम सब को यह अह्काम दिए जब
तुम सीना पहाड़ के दामन में जमा थे। वहाँ
तुम ने आग, बादल और गहरे अंधेरे में से उस
की ज़ोरदार आवाज़ सुनी। यही कुछ उस ने
कहा और बस। फिर उस ने उन्हें पत्थर की दो
तख़्तियों पर लिख कर मुझे दे दिया।

लोग रब से डरते हैं

23जब तुम ने तारीकी से यह आवाज़ सुनी
और पहाड़ की जलती हुई हालत देखी तो
तुम्हारे क़बीलों के राहनुमा और बुज़ुर्ग मेरे पास
आए। 24उन्हों ने कहा, "रब हमारे ख़ुदा ने हम
पर अपना जलाल और अज़मत ज़ाहिर की
है। आज हम ने आग में से उस की आवाज़
सुनी है। हम ने देख लिया है कि जब अल्लाह
इन्सान से हमकलाम होता है तो ज़रूरी नहीं
कि वह मर जाए। 25लेकिन अब हम क्यूँ
अपनी जान ख़तरे में डालें? अगर हम मज़ीद
रब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनें तो यह बड़ी
आग हमें भस्म कर देगी और हम अपनी जान
से हाथ धो बैठेंगे। 26क्यूँकि फ़ानी इन्सानों में
से कौन हमारी तरह ज़िन्दा ख़ुदा को आग में
से बातें करते हुए सुन कर ज़िन्दा रहा है? कोई
भी नहीं! 27आप ही क़रीब जा कर उन तमाम
बातों को सुनें जो रब हमारा ख़ुदा हमें बताना
चाहता है। फिर लौट कर हमें वह बातें सुनाएँ।
हम उन्हें सुनेंगे और उन पर अमल करेंगे।"

28जब रब ने यह सुना तो उस ने मुझ से
कहा, "मैं ने इन लोगों की यह बातें सुन ली
हैं। वह ठीक कहते हैं। 29काश उन की सोच
हमेशा ऐसी ही हो! काश वह हमेशा इसी
तरह मेरा ख़ौफ़ मानें और मेरे अह्काम पर
अमल करें! अगर वह ऐसा करेंगे तो वह और
उन की औलाद हमेशा कामयाब रहेंगे। 30जा,
उन्हें बता दे कि अपने ख़ैमों में लौट जाओ।
31लेकिन तू यहाँ मेरे पास रह ताकि मैं तुझे
तमाम क़वानीन और अह्काम दे दूँ। उन को
लोगों को सिखाना ताकि वह उस मुल्क में उन
के मुताबिक़ चलें जो मैं उन्हें दूँगा।"

32चुनाँचे एहतियात से उन अह्काम पर
अमल करो जो रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हें दिए हैं।
उन से न दाईं तरफ़ हटो न बाईं तरफ़। 33हमेशा
उस राह पर चलते रहो जो रब तुम्हारे ख़ुदा ने
तुम्हें बताई है। फिर तुम कामयाब होगे और
उस मुल्क में देर तक जीते रहोगे जिस पर तुम
क़ब्ज़ा करोगे।

सब से बड़ा हुक्म

6 यह वह तमाम अह्काम हैं जो रब
तुम्हारे ख़ुदा ने मुझे तुम्हें सिखाने के
लिए कहा। उस मुल्क में इन पर अमल करना
जिस में तुम जाने वाले हो ताकि उस पर क़ब्ज़ा
करो। 2उम्र भर तू, तेरे बच्चे और पोते-नवासे
रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें और उस के उन
तमाम अह्काम पर चलें जो मैं तुझे दे रहा हूँ।
तब तू देर तक जीता रहेगा। 3ऐ इस्राईल, यह
मेरी बातें सुन और बड़ी एहतियात से इन पर
अमल कर! फिर रब तेरे ख़ुदा का वादा पूरा हो
जाएगा कि तू कामयाब रहेगा और तेरी तादाद
उस मुल्क में ख़ूब बढ़ती जाएगी जिस में दूध
और शहद की कस्रत है।

4सुन ऐ इस्राईल! रब हमारा ख़ुदा एक ही
रब है। 5रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल,
अपनी पूरी जान और अपनी पूरी ताक़त से
प्यार करना। 6जो अह्काम मैं तुझे आज बता
रहा हूँ उन्हें अपने दिल पर नक़्श कर। 7उन्हें
अपने बच्चों के ज़हननशीन करा। यही बातें
हर वक़्त और हर जगह तेरे लबों पर हों ख़्वाह
तू घर में बैठा या रास्ते पर चलता हो, लेटा हो
या खड़ा हो। 8उन्हें निशान के तौर पर और
याददिहानी के लिए अपने बाज़ूओं और माथे
पर लगा। 9उन्हें अपने घरों की चौखटों और
अपने शहरों के दरवाज़ों पर लिख।

10रब तेरे ख़ुदा का वादा पूरा होगा जो उस ने
क़सम खा कर तेरे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़
और याक़ूब के साथ किया कि मैं तुझे कनआन
में ले जाऊँगा। जो बड़े और शानदार शहर उस
में हैं वह तू ने ख़ुद नहीं बनाए। 11जो मकान
उस में हैं वह ऐसी अच्छी चीज़ों से भरे हुए
हैं जो तू ने उन में नहीं रखीं। जो कुएँ उस
में हैं उन को तू ने नहीं खोदा। जो अंगूर और
ज़ैतून के बाग़ उस में हैं उन्हें तू ने नहीं लगाया।
यह हक़ीक़त याद रख। जब तू उस मुल्क में
कस्रत का खाना खा कर सेर हो जाएगा 12तो
ख़बरदार! रब को न भूलना जो तुझे मिस्र की
ग़ुलामी से निकाल लाया।

13रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना। सिर्फ़
उसी की इबादत करना और उसी का नाम ले
कर क़सम खाना। 14दीगर माबूदों की पैरवी
न करना। इस में तमाम पड़ोसी अक़्वाम के
देवता भी शामिल हैं। 15वर्ना रब तेरे ख़ुदा का
ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल हो कर तुझे मुल्क में से
मिटा डालेगा। क्यूँकि वह ग़यूर ख़ुदा है और
तेरे दरमियान ही रहता है।

16रब अपने ख़ुदा को उस तरह न आज़-
माना जिस तरह तुम ने मस्सा में किया था।
17ध्यान से रब अपने ख़ुदा के अह्काम के
मुताबिक़ चलो, उन तमाम हिदायात और
क़वानीन पर जो उस ने तुझे दिए हैं। 18जो
कुछ रब की नज़र में दुरुस्त और अच्छा है वह
कर। फिर तू कामयाब रहेगा, तू जा कर उस
अच्छे मुल्क पर क़ब्ज़ा करेगा जिस का वादा
रब ने तेरे बापदादा से क़सम खा कर किया
था। 19तब रब की बात पूरी हो जाएगी कि तू
अपने दुश्मनों को अपने आगे आगे निकाल
देगा।

20आने वाले दिनों में तेरे बच्चे पूछेंगे, "रब
हमारे ख़ुदा ने आप को इन तमाम अह्काम
पर अमल करने को क्यूँ कहा?" 21फिर उन्हें
जवाब देना, "हम मिस्र के बादशाह फ़िरऔन
के ग़ुलाम थे, लेकिन रब हमें बड़ी क़ुदरत
का इज़हार करके मिस्र से निकाल लाया।
22हमारे देखते देखते उस ने बड़े बड़े निशान
और मोजिज़े किए और मिस्र, फ़िरऔन और
उस के पूरे घराने पर हौलनाक मुसीबतें भेजीं।
23उस वक़्त वह हमें वहाँ से निकाल लाया
ताकि हमें ले कर वह मुल्क दे जिस का वादा
उस ने क़सम खा कर हमारे बापदादा के साथ
किया था। 24रब हमारे ख़ुदा ही ने हमें कहा कि
इन तमाम अह्काम के मुताबिक़ चलो और रब
अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानो। क्यूँकि अगर हम
ऐसा करें तो फिर हम हमेशा कामयाब और
ज़िन्दा रहेंगे। और आज तक ऐसा ही रहा है।
25अगर हम रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर रह कर
एहतियात से उन तमाम बातों पर अमल करेंगे

जो उस ने हमें करने को कही हैं तो वह हमें
रास्तबाज़ क़रार देगा।"

दूसरी कनआनी क़ौमों को निकालना है

7 रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में ले
जाएगा जिस पर तू जा कर क़ब्ज़ा
करेगा। वह तेरे सामने से बहुत सी क़ौमें भगा
देगा। गो यह सात क़ौमें यानी हित्ती, जिर्जासी,
अमोरी, कनआनी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और
यबूसी तादाद और ताक़त के लिहाज़ से तुझ
से बड़ी होंगी 2तो भी रब तेरा ख़ुदा उन्हें तेरे
हवाले करेगा। जब तू उन्हें शिकस्त देगा तो
उन सब को उस के लिए मख़्सूस करके हलाक
कर देना है। न उन के साथ अह्द बांधना और
न उन पर रहम करना। 3उन में से किसी से
शादी न करना। न अपनी बेटियों का रिश्ता
उन के बेटों को देना, न अपने बेटों का रिश्ता
उन की बेटियों से करना। 4वर्ना वह तुम्हारे
बच्चों को मेरी पैरवी से दूर करेंगे और वह
मेरी नहीं बल्कि उन के देवताओं की ख़िदमत
करेंगे। तब रब का ग़ज़ब तुम पर नाज़िल हो
कर जल्दी से तुम्हें हलाक कर देगा। 5इस लिए
उन की क़ुर्बानगाहें ढा देना। जिन पत्थरों की
वह पूजा करते हैं उन्हें चकनाचूर कर देना, उन
के यसीरत देवी के खम्बे काट डालना और उन
के बुत जला देना।

6क्यूँकि तू रब अपने ख़ुदा के लिए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस है। उस ने दुनिया की तमाम क़ौमों
में से तुझे चुन कर अपनी क़ौम और ख़ास
मिलकियत बनाया। 7रब ने क्यूँ तुम्हारे साथ
ताल्लुक़ क़ाइम किया और तुम्हें चुन लिया?
क्या इस वजह से कि तुम तादाद में दीगर
क़ौमों की निस्बत ज़्यादा थे? हरगिज़ नहीं!
तुम तो बहुत कम थे। 8बल्कि वजह यह थी
कि रब ने तुम्हें प्यार किया और वह वादा
पूरा किया जो उस ने क़सम खा कर तुम्हारे
बापदादा के साथ किया था। इसी लिए वह
फ़िद्या दे कर तुम्हें बड़ी क़ुदरत से मिस्र की
ग़ुलामी और उस मुल्क के बादशाह के हाथ से
बचा लाया। 9चुनाँचे जान ले कि सिर्फ़ रब तेरा
ख़ुदा ही ख़ुदा है। वह वफ़ादार ख़ुदा है। जो
उस से मुहब्बत रखते और उस के अह्काम पर
अमल करते हैं उन के साथ वह अपना अह्द
क़ाइम रखेगा और उन पर हज़ार पुश्तों तक
मेहरबानी करेगा। 10लेकिन उस से नफ़रत
करने वालों को वह उन के रू-ब-रू मुनासिब
सज़ा दे कर बर्बाद करेगा। हाँ, जो उस से
नफ़रत करते हैं, उन के रू-ब-रू वह मुनासिब
सज़ा देगा और झिजकेगा नहीं।

11चुनाँचे ध्यान से उन तमाम अह्काम पर
अमल कर जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ ताकि
तू उन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे। 12अगर
तू उन पर तवज्जुह दे और एहतियात से उन
पर चले तो फिर रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ अपना
अह्द क़ाइम रखेगा और तुझ पर मेहरबानी
करेगा, बिलकुल उस वादे के मुताबिक़ जो उस
ने क़सम खा कर तेरे बापदादा से किया था।
13वह तुझे प्यार करेगा और तुझे उस मुल्क
में बरकत देगा जो तुझे देने का वादा उस ने
क़सम खा कर तेरे बापदादा से किया था।
तुझे बहुत औलाद बख़्शने के इलावा वह तेरे
खेतों को बरकत देगा, और तुझे कस्रत का
अनाज, अंगूर और ज़ैतून हासिल होगा। वह
तेरे रेवड़ों को भी बरकत देगा, और तेरे गाय-
बैलों और भेड़-बकरियों की तादाद बढ़ती
जाएगी। 14तुझे दीगर तमाम क़ौमों की निस्बत
कहीं ज़्यादा बरकत मिलेगी। न तुझ में और न
तेरे मवेशियों में बाँझपन पाया जाएगा। 15रब
हर बीमारी को तुझ से दूर रखेगा। वह तुझ
में वह ख़तरनाक वबाएँ फैलने नहीं देगा जिन
से तू मिस्र में वाक़िफ़ हुआ बल्कि उन्हें उन में
फैलाएगा जो तुझ से नफ़रत रखते हैं।

16जो भी क़ौमें रब तेरा ख़ुदा तेरे हाथ में
कर देगा उन्हें तबाह करना लाज़िम है। उन
पर रहम की निगाह से न देखना, न उन के
देवताओं की ख़िदमत करना, वर्ना तू फंस
जाएगा।

17गो तेरा दिल कहे, “यह क़ौमें हम से
ताक़तवर हैं। हम किस तरह इन्हें निकाल
सकते हैं?” 18तो भी उन से न डर। वही कुछ
ज़हन में रख जो रब तेरे ख़ुदा ने फ़िरऔन
और पूरे मिस्र के साथ किया। 19क्यूँकि तू
ने अपनी आँखों से रब अपने ख़ुदा की वह
बड़ी आज़माने वाली मुसीबतें और मोजिज़े,
उस का वह अज़ीम इख़तियार और क़ुदरत
देखी जिस से वह तुझे वहाँ से निकाल लाया।
वही कुछ रब तेरा ख़ुदा उन क़ौमों के साथ भी
करेगा जिन से तू इस वक़्त डरता है। 20न सिर्फ़
यह बल्कि रब तेरा ख़ुदा उन के दरमियान
ज़म्बूर भी भेजेगा ताकि वह भी तबाह हो जाएँ
जो पहले हम्लों से बच कर छुप गए हैं। 21उन
से दह्शत न खा, क्यूँकि रब तेरा ख़ुदा तेरे
दरमियान है। वह अज़ीम ख़ुदा है जिस से सब
ख़ौफ़ खाते हैं। 22वह रफ़्ता रफ़्ता उन क़ौमों
को तेरे आगे से भगा देगा। तू उन्हें एक दम
ख़त्म नहीं कर सकेगा, वर्ना जंगली जानवर
तेज़ी से बढ़ कर तुझे नुक़्सान पहुचाएँगे।

23रब तेरा ख़ुदा उन्हें तेरे हवाले कर देगा।
वह उन में इतनी सख़्त अफ़रा-तफ़री पैदा
करेगा कि वह बर्बाद हो जाएंगे। 24वह उन के
बादशाहों को भी तेरे क़ाबू में कर देगा, और तू
उन का नाम-ओ-निशान मिटा देगा। कोई भी
तेरा सामना नहीं कर सकेगा बल्कि तू उन सब
को बर्बाद कर देगा।

25उन के देवताओं के मुजस्समे जला देना।
जो चाँदी और सोना उन पर चढ़ाया हुआ है
उस का लालच न करना। उसे न लेना वर्ना तू
फंस जाएगा। क्यूँकि इन चीज़ों से रब तेरे ख़ुदा
को घिन आती है। 26इस तरह की मकरूह
चीज़ अपने घर में न लाना, वर्ना तुझे भी उस
के साथ अलग करके बर्बाद किया जाएगा।
तेरे दिल में उस से शदीद नफ़रत और घिन हो,
क्यूँकि उसे पूरे तौर पर बर्बाद करने के लिए
मख़्सूस किया गया है।

रब को न भूलना

8 एहतियात से उन तमाम अह्काम पर
अमल करो जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ।
क्यूँकि ऐसा करने से तुम जीते रहोगे, तादाद
में बढ़ोगे और जा कर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा
करोगे जिस का वादा रब ने तुम्हारे बापदादा
से क़सम खा कर किया था।

2वह पूरा वक़्त याद रख जब रब तेरा
ख़ुदा रेगिस्तान में 40 साल तक तेरी
राहनुमाई करता रहा ताकि तुझे आजिज़
करके आज़माए और मालूम करे कि क्या तू
उस के अह्काम पर चलेगा कि नहीं। 3उस
ने तुझे आजिज़ करके भूके होने दिया, फिर
तुझे मन खिलाया जिस से न तू और न तेरे
बापदादा वाक़िफ़ थे। क्यूँकि वह तुझे सिखाना
चाहता था कि इन्सान की ज़िन्दगी सिर्फ़ रोटी
पर मुन्हसिर नहीं होती बल्कि हर उस बात पर
जो रब के मुँह से निकलती है।

4इन 40 सालों के दौरान तेरे कपड़े न घिसे
न फटे, न तेरे पाँओ सूजे। 5चुनाँचे दिल में जान
ले कि जिस तरह बाप अपने बेटे की तर्बियत
करता है उसी तरह रब हमारा ख़ुदा हमारी
तर्बियत करता है।

6रब अपने ख़ुदा के अह्काम पर अमल
करके उस की राहों पर चल और उस का ख़ौफ़
मान। 7क्यूँकि वह तुझे एक बेहतरीन मुल्क में
ले जा रहा है जिस में नहरें और ऐसे चश्मे हैं
जो पहाड़ियों और वादियों की ज़मीन से फूट
निकलते हैं। 8उस की पैदावार अनाज, जौ,
अंगूर, अन्जीर, अनार, ज़ैतून और शहद है।
9उस में रोटी की कमी नहीं होगी, और तू किसी
चीज़ से महरूम नहीं रहेगा। उस के पत्थरों में
लोहा पाया जाता है, और खुदाई से तू उस की
पहाड़ियों से ताँबा हासिल कर सकेगा।

10जब तू कस्रत का खाना खा कर सेर हो
जाएगा तो फिर रब अपने ख़ुदा की तम्जीद
करना जिस ने तुझे यह शानदार मुल्क दिया है।
11ख़बरदार, रब अपने ख़ुदा को न भूल और
उस के उन अह्काम पर अमल करने से गुरेज़

न कर जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। 12क्यूँकि जब
तू कस्रत का खाना खा कर सेर हो जाएगा, तू
शानदार घर बना कर उन में रहेगा 13और तेरे
रेवड़, सोने-चाँदी और बाक़ी तमाम माल में
इज़ाफ़ा होगा 14तो कहीं तू मग़रूर हो कर रब
अपने ख़ुदा को भूल न जाए जो तुझे मिस्र की
ग़ुलामी से निकाल लाया। 15जब तू उस वसी
और हौलनाक रेगिस्तान में सफ़र कर रहा था
जिस में ज़हरीले साँप और बिच्छू थे तो वही
तेरी राहनुमाई करता रहा। पानी से महरूम
उस इलाक़े में वही सख़्त पत्थर में से पानी
निकाल लाया। 16रेगिस्तान में वही तुझे मन
खिलाता रहा, जिस से तेरे बापदादा वाक़िफ़ न
थे। इन मुश्किलात से वह तुझे आजिज़ करके
आज़माता रहा ताकि आख़िरकार तू कामयाब
हो जाए।

17जब तुझे कामयाबी हासिल होगी तो यह
न कहना कि मैं ने अपनी ही क़ुव्वत और
ताक़त से यह सब कुछ हासिल किया है।
18बल्कि रब अपने ख़ुदा को याद करना जिस
ने तुझे दौलत हासिल करने की क़ाबिलियत दी
है। क्यूँकि वह आज भी उसी अह्द पर क़ाइम
है जो उस ने तेरे बापदादा से किया था।

19रब अपने ख़ुदा को न भूलना, और न
दीगर माबूदों के पीछे पड़ कर उन्हें सिज्दा और
उन की ख़िदमत करना। वर्ना मैं ख़ुद गवाह हूँ
कि तुम यक़ीनन हलाक हो जाओगे। 20अगर
तुम रब अपने ख़ुदा की इताअत नहीं करोगे तो
फिर वह तुम्हें उन क़ौमों की तरह तबाह कर
देगा जो तुम से पहले इस मुल्क में रहती थीं।

मुल्क मिलने का सबब इस्राईल की रास्ती नहीं है

9 सुन ऐ इस्राईल! आज तू दरया-ए-यर्दन
को पार करने वाला है। दूसरी तरफ़ तू
ऐसी क़ौमों को भगा देगा जो तुझ से बड़ी
और ताक़तवर हैं और जिन के शानदार शहरों
की फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं। 2वहाँ
अनाक़ी बसते हैं जो ताक़तवर और दराज़क़द
हैं। तू ख़ुद जानता है कि उन के बारे में कहा
जाता है, "कौन अनाक़ियों का सामना कर
सकता है?" 3लेकिन आज जान ले कि रब
तेरा ख़ुदा तेरे आगे आगे चलते हुए उन्हें भस्म
कर देने वाली आग की तरह हलाक करेगा।
वह तेरे आगे आगे उन पर क़ाबू पाएगा, और
तू उन्हें निकाल कर जल्दी मिटा देगा, जिस
तरह रब ने वादा किया है।

4जब रब तेरा ख़ुदा उन्हें तेरे सामने से
निकाल देगा तो तू यह न कहना, "मैं रास्तबाज़
हूँ, इसी लिए रब मुझे लाइक़ समझ कर यहाँ
लाया और यह मुल्क मीरास में दे दिया है।"
यह बात हरगिज़ दुरुस्त नहीं है। रब उन क़ौमों
को उन की ग़लत हरकतों की वजह से तेरे
सामने से निकाल देगा। 5तू अपनी रास्तबाज़ी
और दियानतदारी की बिना पर उस मुल्क पर
क़ब्ज़ा नहीं करेगा बल्कि रब उन्हें उन की
शरीर हरकतों के बाइस तेरे सामने से निकाल
देगा। दूसरे, जो वादा उस ने तेरे बापदादा
इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब के साथ क़सम
खा कर किया था उसे पूरा होना है।

6चुनाँचे जान ले कि रब तेरा ख़ुदा तुझे तेरी
रास्ती के बाइस यह अच्छा मुल्क नहीं दे रहा।
हक़ीक़त तो यह है कि तू हटधर्म क़ौम है।

सोने का बछड़ा

7याद रख और कभी न भूल कि तू ने
रेगिस्तान में रब अपने ख़ुदा को किस तरह
नाराज़ किया। मिस्र से निकलते वक़्त से ले
कर यहाँ पहुँचने तक तुम रब से सरकश रहे
हो। 8ख़ासकर होरिब यानी सीना के दामन में
तुम ने रब को इतना ग़ुस्सा दिलाया कि वह
तुम्हें हलाक करने को था। 9उस वक़्त मैं पहाड़
पर चढ़ गया था ताकि पत्थर की तख़्तियाँ
यानी उस अह्द की तख़्तियाँ मिल जाएँ जो
रब ने तुम्हारे साथ बांधा था। कुछ खाए पिए
बग़ैर मैं 40 दिन और रात वहाँ रहा।

10-11जो कुछ रब ने आग में से कहा था जब
तुम पहाड़ के दामन में जमा थे वही कुछ उस ने

अपनी उंगली से दोनों तख़्तियों पर लिख कर मुझे दिया। 12उस ने मुझ से कहा, "फ़ौरन यहाँ से उतर जा। तेरी क़ौम जिसे तू मिस्र से निकाल लाया बिगड़ गई है। वह कितनी जल्दी से मेरे अह्काम से हट गए हैं। उन्हों ने अपने लिए बुत ढाल लिया है। 13मैं ने जान लिया है कि यह क़ौम कितनी ज़िद्दी है। 14अब मुझे छोड़ दे ताकि मैं उन्हें तबाह करके उन का नाम-ओ-निशान दुनिया में से मिटा डालूँ। उन की जगह मैं तुझ से एक क़ौम बना लूँगा जो उन से बड़ी और ताक़तवर होगी।"

15मैं मुड़ कर पहाड़ से उतरा जो अब तक भड़क रहा था। मेरे हाथों में अह्द की दोनों तख़्तियाँ थीं। 16तुम्हें देखते ही मुझे मालूम हुआ कि तुम ने रब अपने ख़ुदा का गुनाह किया है। तुम ने अपने लिए बछड़े का बुत ढाल लिया था। तुम कितनी जल्दी से रब की मुक़र्ररा राह से हट गए थे।

17तब मैं ने तुम्हारे देखते देखते दोनों तख़्तियों को ज़मीन पर पटख़ कर टुकड़े टुकड़े कर दिया। 18एक और बार मैं रब के सामने मुँह के बल गिरा। मैं ने न कुछ खाया, न कुछ पिया। 40 दिन और रात मैं तुम्हारे तमाम गुनाहों के बाइस इसी हालत में रहा। क्यूँकि जो कुछ तुम ने किया था वह रब को निहायत बुरा लगा, इस लिए वह ग़ज़बनाक हो गया था। 19वह तुम से इतना नाराज़ था कि मैं बहुत डर गया। यूँ लग रहा था कि वह तुम्हें हलाक कर देगा। लेकिन इस बार भी उस ने मेरी सुन ली। 20मैं ने हारून के लिए भी दुआ की, क्यूँकि रब उस से भी निहायत नाराज़ था और उसे हलाक कर देना चाहता था।

21जो बछड़ा तुम ने गुनाह करके बनाया था उसे मैं ने जला दिया, फिर जो कुछ बाक़ी रह गया उसे कुचल दिया और पीस पीस कर पाउडर बना दिया। यह पाउडर मैं ने उस चश्मे में फैंक दिया जो पहाड़ पर से बह रहा था।

22तुम ने रब को तबएरा, मस्सा और क़ब्रोत-हत्तावा में भी ग़ुस्सा दिलाया। 23क़ादिस-बर्नीअ में भी ऐसा ही हुआ। वहाँ से रब ने तुम्हें भेज कर कहा था, "जाओ, उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करो जो मैं ने तुम्हें दे दिया है।" लेकिन तुम ने सरकश हो कर रब अपने ख़ुदा के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की। तुम ने उस पर एतिमाद न किया, न उस की सुनी। 24जब से मैं तुम्हें जानता हूँ तुम्हारा रब के साथ रवय्या बाग़ियाना ही रहा है।

25मैं 40 दिन और रात रब के सामने ज़मीन पर मुँह के बल रहा, क्यूँकि रब ने कहा था कि वह तुम्हें हलाक कर देगा। 26मैं ने उस से मिन्नत करके कहा, "ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, अपनी क़ौम को तबाह न कर। वह तो तेरी ही मिलकियत है जिसे तू ने फ़िद्या दे कर अपनी अज़ीम क़ुदरत से बचाया और बड़े इख़तियार के साथ मिस्र से निकाल लाया। 27अपने ख़ादिमों इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब को याद कर, और इस क़ौम की ज़िद, शरीर हरकतों और गुनाह पर तवज्जुह न दे। 28वर्ना मिस्री कहेंगे, 'रब उन्हें उस मुल्क में लाने के क़ाबिल नहीं था जिस का वादा उस ने किया था, बल्कि वह उन से नफ़रत करता था। हाँ, वह उन्हें हलाक करने के लिए रेगिस्तान में ले आया।' 29वह तो तेरी क़ौम हैं, तेरी मिलकियत जिसे तू अपनी अज़ीम क़ुदरत और इख़तियार से मिस्र से निकाल लाया।"

मूसा को नई तख़्तियाँ मिलती हैं

10 उस वक़्त रब ने मुझ से कहा, "पत्थर की दो और तख़्तियाँ तराशना जो पहली तख़्तियों की मानिन्द हों। उन्हें ले कर मेरे पास पहाड़ पर चढ़ आ। लकड़ी का सन्दूक़ भी बनाना। 2फिर मैं इन तख़्तियों पर दुबारा वही बातें लिखूँगा जो मैं उन तख़्तियों पर लिख चुका था जो तू ने तोड़ डालीं। तुम्हें उन्हें सन्दूक़ में महफ़ूज़ रखना है।"

3मैं ने कीकर की लकड़ी का सन्दूक़ बनवाया और दो तख़्तियाँ तराशीं जो पहली

तख़्तियों की मानिन्द थीं। फिर मैं दोनों तख़्तियाँ ले कर पहाड़ पर चढ़ गया। 4रब ने उन तख़्तियों पर दुबारा वह दस अह्काम लिख दिए जो वह पहली तख़्तियों पर लिख चुका था। (उन ही अह्काम का एलान उस ने पहाड़ पर आग में से किया था जब तुम उस के दामन में जमा थे।) फिर उस ने यह तख़्तियाँ मेरे सपुर्द कीं। 5मैं लौट कर उतरा और तख़्तियों को उस सन्दूक़ में रखा जो मैं ने बनाया था। वहाँ वह अब तक हैं। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा रब ने हुक्म दिया था।

इमामों और लावियों की ख़िदमत

6(इस के बाद इस्राईली बनी-याक़ान के कुओं से रवाना हो कर मौसीरा पहुँचे। वहाँ हारून फ़ौत हुआ। उसे दफ़न करने के बाद उस का बेटा इलीअज़र उस की जगह इमाम बना। 7फिर वह आगे सफ़र करते करते जुदजूदा, फिर युत्बाता पहुँचे जहाँ नहरें हैं।

8उन दिनों में रब ने लावी के क़बीले को अलग करके उसे रब के अह्द के सन्दूक़ को उठा कर ले जाने, रब के हुज़ूर ख़िदमत करने और उस के नाम से बरकत देने की ज़िम्मादारी दी। आज तक यह उन की ज़िम्मादारी रही है। 9इस वजह से लावियों को दीगर क़बीलों की तरह न हिस्सा न मीरास मिली। रब तेरा ख़ुदा ख़ुद उन की मीरास है। उस ने ख़ुद उन्हें यह फ़रमाया है।)

10जब मैं ने दूसरी मर्तबा 40 दिन और रात पहाड़ पर गुज़ारे तो रब ने इस दफ़ा भी मेरी सुनी और तुझे हलाक न करने पर आमादा हुआ। 11उस ने कहा, "जा, क़ौम की राहनुमाई कर ताकि वह जा कर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करें जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर उन के बापदादा से किया था।"

रब का ख़ौफ़

12ऐ इस्राईल, अब मेरी बात सुन! रब तेरा ख़ुदा तुझ से क्या तक़ाज़ा करता है? सिर्फ़ यह कि तू उस का ख़ौफ़ माने, उस की तमाम राहों पर चले, उसे प्यार करे, अपने पूरे दिल-ओ-जान से उस की ख़िदमत करे 13और उस के तमाम अह्काम पर अमल करे। आज मैं उन्हें तुझे तेरी बेहतरी के लिए दे रहा हूँ।

14पूरा आसमान, ज़मीन और जो कुछ उस पर है, सब का मालिक रब तेरा ख़ुदा है। 15तो भी उस ने तेरे बापदादा पर ही अपनी ख़ास शफ़क़त का इज़हार करके उन से मुहब्बत की। और उस ने तुम्हें चुन कर दूसरी तमाम क़ौमों पर तर्जीह दी जैसा कि आज ज़ाहिर है। 16ख़तना उस की क़ौम का निशान है, लेकिन ध्यान रखो कि वह न सिर्फ़ ज़ाहिरी बल्कि बातिनी भी हो। आइन्दा अड़ न जाओ।

17क्यूँकि रब तुम्हारा ख़ुदा ख़ुदाओं का ख़ुदा और रब्बों का रब है। वह अज़ीम और ज़ोर-आवर ख़ुदा है जिस से सब ख़ौफ़ खाते हैं। वह जानिबदारी नहीं करता और रिश्वत नहीं लेता। 18वह यतीमों और बेवाओं का इन्साफ़ करता है। वह परदेसी से प्यार करता और उसे ख़ुराक और पोशाक मुहय्या करता है। 19तुम भी उन के साथ मुहब्बत से पेश आओ, क्यूँकि तुम भी मिस्र में परदेसी थे।

20रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मान और उस की ख़िदमत कर। उस से लिपटा रह और उसी के नाम की क़सम खा। 21वही तेरा फ़ख़र है। वह तेरा ख़ुदा है जिस ने वह तमाम अज़ीम और डराउने काम किए जो तू ने ख़ुद देखे। 22जब तेरे बापदादा मिस्र गए थे तो 70 अफ़राद थे। और अब रब तेरे ख़ुदा ने तुझे सितारों की मानिन्द बेशुमार बना दिया है।

रब से मुहब्बत रख और उस की सुन

11 रब अपने ख़ुदा से प्यार कर और हमेशा उस के अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार। 2आज जान लो कि तुम्हारे बच्चों ने नहीं बल्कि तुम ही ने रब अपने ख़ुदा से तर्बियत पाई। तुम ने उस की अज़मत, बड़े इख़तियार और क़ुदरत को देखा, 3और

तुम उन मोजिज़ों के गवाह हो जो उस ने मिस्र के बादशाह फ़िरऔन और उस के पूरे मुल्क के सामने किए। 4तुम ने देखा कि रब ने किस तरह मिस्री फ़ौज को उस के घोड़ों और रथों समेत बहर-ए-क़ुल्ज़ुम में ग़र्क़ कर दिया जब वह तुम्हारा ताक़्क़ुब कर रहे थे। उस ने उन्हें यूँ तबाह किया कि वह आज तक बहाल नहीं हुए।

5तुम्हारे बच्चे नहीं बल्कि तुम ही गवाह हो कि यहाँ पहुँचने से पहले रब ने रेगिस्तान में तुम्हारी किस तरह देख-भाल की। 6तुम ने उस का इलियाब के बेटों दातन और अबीराम के साथ सुलूक देखा जो रूबिन के क़बीले के थे। उस दिन ज़मीन ने ख़ैमागाह के अन्दर मुँह खोल कर उन्हें उन के घरानों, डेरों और तमाम जानदारों समेत हड़प कर लिया।

7तुम ने अपनी ही आँखों से रब के यह तमाम अज़ीम काम देखे हैं। 8चुनाँचे उन तमाम अह्काम पर अमल करते रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ ताकि तुम्हें वह ताक़त हासिल हो जो दरकार होगी जब तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे। 9अगर तुम फ़रमाँबरदार रहो तो देर तक उस मुल्क में जीते रहोगे जिस का वादा रब ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा से किया था और जिस में दूध और शहद की कस्रत है।

10क्यूँकि यह मुल्क मिस्र की मानिन्द नहीं है जहाँ से तुम निकल आए हो। वहाँ के खेतों में तुझे बीज बो कर बड़ी मेहनत से उस की आबपाशी करनी पड़ती थी 11जबकि जिस मुल्क पर तुम क़ब्ज़ा करोगे उस में पहाड़ और वादियाँ हैं जिन्हें सिर्फ़ बारिश का पानी सेराब करता है। 12रब तेरा ख़ुदा ख़ुद उस मुल्क का ख़याल रखता है। रब तेरे ख़ुदा की आँखें साल के पहले दिन से ले कर आख़िर तक मुतवातिर उस पर लगी रहती हैं।

13चुनाँचे उन अह्काम के ताबे रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ। रब अपने ख़ुदा से प्यार करो और अपने पूरे दिल-ओ-जान से उस की ख़िदमत करो। 14फिर वह ख़रीफ़ और बहार की सालाना बारिश वक़्त पर भेजेगा। अनाज, अंगूर और ज़ैतून की फ़सलें पकेंगी, और तू उन्हें जमा कर लेगा। 15नीज़, अल्लाह तेरी चरागाहों में तेरे रेवड़ों के लिए घास मुहय्या करेगा, और तू खा कर सेर हो जाएगा।

16लेकिन ख़बरदार, कहीं तुम्हें वरग़ालाया न जाए। ऐसा न हो कि तुम रब की राह से हट जाओ और दीगर माबूदों को सिज्दा करके उन की ख़िदमत करो। 17वर्ना रब का ग़ज़ब तुम पर आन पड़ेगा, और वह मुल्क में बारिश होने नहीं देगा। तुम्हारी फ़सलें नहीं पकेंगी, और तुम्हें जल्द ही उस अच्छे मुल्क में से मिटा दिया जाएगा जो रब तुम्हें दे रहा है।

18चुनाँचे मेरी यह बातें अपने दिलों पर नक़्श कर लो। उन्हें निशान के तौर पर और याददिहानी के लिए अपने हाथों और माथों पर लगाओ। 19उन्हें अपने बच्चों को सिखाओ। हर जगह और हमेशा उन के बारे में बात करो, ख़्वाह तू घर में बैठा या रास्ते पर चलता हो, लेटा हो या खड़ा हो। 20उन्हें अपने घरों की चौखटों और अपने शहरों के दरवाज़ों पर लिख 21ताकि जब तक ज़मीन पर आसमान क़ाइम है तुम और तुम्हारी औलाद उस मुल्क में जीते रहें जिस का वादा रब ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा से किया था।

22एहतियात से उन अह्काम की पैरवी करो जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ। रब अपने ख़ुदा से प्यार करो, उस के तमाम अह्काम पर अमल करो और उस के साथ लिपटे रहो। 23फिर वह तुम्हारे आगे आगे यह तमाम क़ौमें निकाल देगा और तुम ऐसी क़ौमों की ज़मीनों पर क़ब्ज़ा करोगे जो तुम से बड़ी और ताक़तवर हैं। 24तुम जहाँ भी क़दम रखोगे वह तुम्हारा ही होगा, जुनूबी रेगिस्तान से ले कर लुबनान तक, दरया-ए-फ़ुरात से बहीरा-ए-रूम तक। 25कोई भी तुम्हारा सामना नहीं कर सकेगा। तुम उस मुल्क में जहाँ भी जाओगे वहाँ रब तुम्हारा ख़ुदा अपने वादे के मुताबिक़ तुम्हारी

दह्शत और ख़ौफ़ पैदा कर देगा। 26आज तुम
ख़ुद फ़ैसला करो। क्या तुम रब की बरकत या
उस की लानत पाना चाहते हो? 27अगर तुम
रब अपने ख़ुदा के उन अह्काम पर अमल करो
जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ तो वह तुम्हें बरकत
देगा। 28लेकिन अगर तुम उन के ताबे न रहो
बल्कि मेरी पेशकरदा राह से हट कर दीगर
माबूदों की पैरवी करो तो वह तुम पर लानत
भेजेगा।

29जब रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में ले
जाएगा जिस पर तू क़ब्ज़ा करेगा तो लाज़िम
है कि गरिज़ीम पहाड़ पर चढ़ कर बरकत
का एलान करे और ऐबाल पहाड़ पर लानत
का। 30यह दो पहाड़ दरया-ए-यर्दन के मग़रिब
में उन कनआनियों के इलाक़े में वाक़े हैं जो
वादी-ए-यर्दन में आबाद हैं। वह मग़रिब की
तरफ़ जिल्जाल शहर के सामने मोरिह के
बलूत के दरख़्तों के नज़्दीक हैं। 31अब तुम
दरया-ए-यर्दन को पार करके उस मुल्क पर
क़ब्ज़ा करने वाले हो जो रब तुम्हारा ख़ुदा
तुम्हें दे रहा है। जब तुम उसे अपना कर उस
में आबाद हो जाओगे 32तो एहतियात से उन
तमाम अह्काम पर अमल करते रहो जो मैं
आज तुम्हें दे रहा हूँ।

मुल्क में रब के अह्काम

12 ज़ैल में वह अह्काम और क़वा-
नीन हैं जिन पर तुम्हें ध्यान से
अमल करना होगा जब तुम उस मुल्क में
आबाद होगे जो रब तेरे बापदादा का ख़ुदा तुझे
दे रहा है ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे। मुल्क
में रहते हुए उम्र भर उन के ताबे रहो।

मुल्क में एक ही जगह पर मक़्दिस हो

2उन तमाम जगहों को बर्बाद करो जहाँ वह
क़ौमें जिन्हें तुम्हें निकालना है अपने देवताओं
की पूजा करती हैं, ख़्वाह वह ऊँचे पहाड़ों,
पहाड़ियों या घने दरख़्तों के साय में क्यूँ न
हों। 3उन की क़ुर्बानगाहों को ढा देना। जिन
पत्थरों की पूजा वह करते हैं उन्हें चकनाचूर
कर देना। यसीरत देवी के खम्बे जला देना।
उन के देवताओं के मुजस्समे काट डालना।
ग़रज़ इन जगहों से उन का नाम-ओ-निशान
मिट जाए।

4रब अपने ख़ुदा की परस्तिश करने के
लिए उन के तरीक़े न अपनाना। 5रब तुम्हारा
ख़ुदा क़बीलों में से अपने नाम की सुकूनत
के लिए एक जगह चुन लेगा। इबादत के
लिए वहाँ जाया करो, 6और वहाँ अपनी
तमाम क़ुर्बानियाँ ला कर पेश करो, ख़्वाह
वह भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ, ज़बह की
क़ुर्बानियाँ, पैदावार का दसवाँ हिस्सा, उठाने
वाली क़ुर्बानियाँ, मन्नत के हदिए, ख़ुशी से पेश
की गई क़ुर्बानियाँ या मवेशियों के पहलौठे क्यूँ
न हों। 7वहाँ रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर अपने
घरानों समेत खाना खा कर उन कामयाबियों
की ख़ुशी मनाओ जो तुझे रब तेरे ख़ुदा की
बरकत के बाइस हासिल हुई हैं।

8उस वक़्त तुम्हें वह नहीं करना जो हम
करते आए हैं। आज तक हर कोई अपनी
मर्ज़ी के मुताबिक़ इबादत करता है, 9क्यूँकि
अब तक तुम आराम की उस जगह नहीं पहुँचे
जो तुझे रब तेरे ख़ुदा से मीरास में मिलनी
है। 10लेकिन जल्द ही तुम दरया-ए-यर्दन को
पार करके उस मुल्क में आबाद हो जाओगे
जो रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें मीरास में दे रहा
है। उस वक़्त वह तुम्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों से
बचाए रखेगा, और तुम आराम और सुकून
से ज़िन्दगी गुज़ार सकोगे। 11तब रब तुम्हारा
ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए एक
जगह चुन लेगा, और तुम्हें सब कुछ जो मैं
बताऊँगा वहाँ ला कर पेश करना है, ख़्वाह
वह भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ, ज़बह की
क़ुर्बानियाँ, पैदावार का दसवाँ हिस्सा, उठाने
वाली क़ुर्बानियाँ या मन्नत के ख़ास हदिए क्यूँ
न हों। 12वहाँ रब के सामने तुम, तुम्हारे बेटे-
बेटियाँ, तुम्हारे ग़ुलाम और लौंडियाँ ख़ुशी
मनाएँ। अपने शहरों में आबाद लावियों को

भी अपनी ख़ुशी में शरीक करो, क्यूँकि उन के पास मौरूसी ज़मीन नहीं होगी।

13ख़बरदार, अपनी भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ हर जगह पर पेश न करना 14बल्कि सिर्फ़ उस जगह पर जो रब क़बीलों में से चुनेगा। वहीं सब कुछ यूँ मना जिस तरह मैं तुझे बताता हूँ।

15लेकिन वह जानवर इस में शामिल नहीं हैं जो तू क़ुर्बानी के तौर पर पेश नहीं करना चाहता बल्कि सिर्फ़ खाना चाहता है। ऐसे जानवर तू आज़ादी से अपने तमाम शहरों में ज़बह करके उस बरकत के मुताबिक़ खा सकता है जो रब तेरे ख़ुदा ने तुझे दी है। ऐसा गोश्त हिरन और ग़ज़ाल के गोश्त की मानिन्द है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। 16लेकिन ख़ून न खाना। उसे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेल कर ज़ाए कर देना।

17जो भी चीज़ें रब के लिए मख़्सूस की गई हैं उन्हें अपने शहरों में न खाना मसलन अनाज, अंगूर के रस और ज़ैतून के तेल का दसवाँ हिस्सा, मवेशियों के पहलौठे, मन्नत के हदिए, ख़ुशी से पेश की गई क़ुर्बानियाँ और उठाने वाली क़ुर्बानियाँ। 18यह चीज़ें सिर्फ़ रब के हुज़ूर खाना यानी उस जगह पर जिसे वह मक़्दिस के लिए चुनेगा। वहीं तू अपने बेटे-बेटियों, ग़ुलामों, लौंडियों और अपने क़बाइली इलाक़े के लावियों के साथ जमा हो कर ख़ुशी मना कि रब ने हमारी मेहनत को बरकत दी है। 19अपने मुल्क में लावियों की ज़रूरियात उम्र भर पूरी करने की फ़िक्र रख।

20जब रब तेरा ख़ुदा अपने वादे के मुताबिक़ तेरी सरहद्दें बढ़ा देगा और तू गोश्त खाने की ख़्वाहिश रखेगा तो जिस तरह जी चाहे गोश्त खा सकेगा। 21अगर तेरा घर उस मक़्दिस से दूर हो जिसे रब तेरा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा तो तू जिस तरह जी चाहे अपने शहरों में रब से मिले हुए मवेशियों को ज़बह करके खा सकता है। लेकिन ऐसा ही करना जैसा मैं ने हुक्म दिया है। 22ऐसा गोश्त हिरन और ग़ज़ाल के गोश्त की मानिन्द है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। 23अलबत्ता गोश्त के साथ ख़ून न खाना, क्यूँकि ख़ून जानदार की जान है। उस की जान गोश्त के साथ न खाना। 24ख़ून न खाना बल्कि उसे ज़मीन पर उंडेल कर ज़ाए कर देना। 25उसे न खाना ताकि तुझे और तेरी औलाद को कामयाबी हासिल हो, क्यूँकि ऐसा करने से तू रब की नज़र में सहीह काम करेगा।

26लेकिन जो चीज़ें रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं या जो तू ने मन्नत मान कर उस के लिए मख़्सूस की हैं लाज़िम है कि तू उन्हें उस जगह ले जाए जिसे रब मक़्दिस के लिए चुनेगा। 27वहीं, रब अपने ख़ुदा की क़ुर्बानगाह पर अपनी भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ गोश्त और ख़ून समेत चढ़ा। ज़बह की क़ुर्बानियों का ख़ून क़ुर्बानगाह पर उंडेल देना, लेकिन उन का गोश्त तू खा सकता है।

28जो भी हिदायात मैं तुझे दे रहा हूँ उन्हें एहतियात से पूरा कर। फिर तू और तेरी औलाद ख़ुशहाल रहेंगे, क्यूँकि तू वह कुछ करेगा जो रब तेरे ख़ुदा की नज़र में अच्छा और दुरुस्त है।

29रब तेरा ख़ुदा उन क़ौमों को मिटा देगा जिन की तरफ़ तू बढ़ रहा है। तू उन्हें उन के मुल्क से निकालता जाएगा और ख़ुद उस में आबाद हो जाएगा। 30लेकिन ख़बरदार, उन के ख़त्म होने के बाद भी उन के देवताओं के बारे में मालूमात हासिल न कर, वर्ना तू फंस जाएगा। मत कहना कि यह क़ौमें किस तरीक़े से अपने देवताओं की पूजा करती हैं? हम भी ऐसा ही करें। 31ऐसा मत कर! यह क़ौमें ऐसे घिनौने तरीक़े से पूजा करती हैं जिन से रब नफ़रत करता है। वह अपने बच्चों को भी जला कर अपने देवताओं को पेश करते हैं।

32कलाम की जो भी बात मैं तुम्हें पेश करता हूँ उस के ताबे रह कर उस पर अमल करो। न किसी बात का इज़ाफ़ा करना, न कोई बात निकालना।

देवताओं की तरफ़ ले जाने वालों से सुलूक

13 तेरे दरमियान ऐसे लोग उठ खड़े होंगे जो अपने आप को नबी या ख़्वाब देखने वाले कहेंगे। हो सकता है कि वह किसी इलाही निशान या मोजिज़े का एलान करें 2जो वाक़ई वुजूद में आए। साथ साथ वह कहें, "आ, हम दीगर माबूदों की पूजा करें, हम उन की ख़िदमत करें जिन से तू अब तक वाक़िफ़ नहीं है।" 3ऐसे लोगों की न सुन। इस से रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें आज़मा कर मालूम कर रहा है कि क्या तुम वाक़ई अपने पूरे दिल-ओ-जान से उस से प्यार करते हो। 4तुम्हें रब अपने ख़ुदा की पैरवी करना और उसी का ख़ौफ़ मानना है। उस के अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारो, उस की सुनो, उस की ख़िदमत करो, उस के साथ लिपटे रहो। 5ऐसे नबियों या ख़्वाब देखने वालों को सज़ा-ए-मौत देना, क्यूँकि वह तुझे रब तुम्हारे ख़ुदा से बग़ावत करने पर उकसाना चाहते हैं, उसी से जिस ने फ़िद्या दे कर तुम्हें मिस्र की ग़ुलामी से बचाया और वहाँ से निकाल लाया। चूँकि वह तुझे उस राह से हटाना चाहते हैं जिसे रब तेरे ख़ुदा ने तेरे लिए मुक़र्रर किया है इस लिए लाज़िम है कि उन्हें सज़ा-ए-मौत दी जाए। ऐसी बुराई अपने दरमियान से मिटा देना।

6हो सकता है कि तेरा सगा भाई, तेरा बेटा या बेटी, तेरी बीवी या तेरा क़रीबी दोस्त तुझे चुपके से वरग़लाने की कोशिश करे कि आ, हम जा कर दीगर माबूदों की पूजा करें, ऐसे देवताओं की जिन से न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे। 7ख़्वाह इर्दगिर्द की या दूरदराज़ की क़ौमों के देवता हों, ख़्वाह दुनिया के एक सिरे के या दूसरे सिरे के माबूद हों, 8किसी सूरत में अपनी रज़ामन्दी का इज़हार न कर, न उस की सुन। उस पर रहम न कर। न उसे बचाए रख, न उसे पनाह दे 9बल्कि उसे सज़ा-ए-मौत दे। और उसे संगसार करते वक़्त पहले तेरा हाथ उस पर पत्थर फैंके, फिर ही बाक़ी तमाम लोग हिस्सा लें। 10उसे ज़रूर पत्थरों से सज़ा-ए-मौत देना, क्यूँकि उस ने तुझे रब तेरे ख़ुदा से दूर करने की कोशिश की, उसी से जो तुझे मिस्र की ग़ुलामी से निकाल लाया। 11फिर तमाम इस्राईल यह सुन कर डर जाएगा और आइन्दा तेरे दरमियान ऐसी शरीर हरकत करने की जुरअत नहीं करेगा।

12जब तू उन शहरों में रहने लगेगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे दे रहा है तो शायद तुझे ख़बर मिल जाए 13कि शरीर लोग तेरे दरमियान से उभर आए हैं जो अपने शहर के बाशिन्दों को यह कह कर ग़लत राह पर लाए हैं कि आओ, हम दीगर माबूदों की पूजा करें, ऐसे माबूदों की जिन से तुम वाक़िफ़ नहीं हो। 14लाज़िम है कि तू दरयाफ़्त करके इस की तफ़्तीश करे और ख़ूब मालूम करे कि क्या हुआ है। अगर साबित हो जाए कि यह घिनौनी बात वाक़ई हुई है 15तो फिर लाज़िम है कि तू शहर के तमाम बाशिन्दों को हलाक करे। उसे रब के सपुर्द करके सरासर तबाह करना, न सिर्फ़ उस के लोग बल्कि उस के मवेशी भी। 16शहर का पूरा माल-ए-ग़नीमत चौक में इकट्ठा कर। फिर पूरे शहर को उस के माल समेत रब के लिए मख़्सूस करके जला देना। उसे दुबारा कभी न तामीर किया जाए बल्कि उस के खंडरात हमेशा तक रहें।

17पूरा शहर रब के लिए मख़्सूस किया गया है, इस लिए उस की कोई भी चीज़ तेरे पास न पाई जाए। सिर्फ़ इस सूरत में रब का ग़ज़ब ठंडा हो जाएगा, और वह तुझ पर रहम करके अपनी मेहरबानी का इज़हार करेगा और तेरी तादाद बढ़ाएगा, जिस तरह उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा से वादा किया है। 18लेकिन यह सब कुछ इस पर मब्नी है कि तू रब अपने ख़ुदा की सुने और उस के उन तमाम अह्काम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। वही कुछ कर जो उस की नज़र में दुरुस्त है।

पाक और नापाक जानवर

14 तुम रब अपने ख़ुदा के फ़र्ज़न्द हो।
अपने आप को मुर्दों के सबब से
न ज़ख़्मी करो, न अपने सर के सामने वाले
बाल मुंडवाओ। 2क्यूँकि तू रब अपने ख़ुदा के
लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस क़ौम है। दुनिया की
तमाम क़ौमों में से रब ने तुझे ही चुन कर अपनी
मिलकियत बना लिया है।

3कोई भी मकरूह चीज़ न खाना।

4तुम बैल, भेड़-बकरी, 5हिरन, ग़ज़ाल,
मृग,[a] पहाड़ी बकरी, महात,[b] ग़ज़ाल-ए-
अफ़्रीक़ा[c] और पहाड़ी बकरी खा सकते हो।
6जिन के खुर या पाँओ बिलकुल चिरे हुए
हैं और जो जुगाली करते हैं उन्हें खाने की
इजाज़त है। 7ऊँट, बिज्जू या ख़रगोश खाना
मना है। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं, क्यूँकि
वह जुगाली तो करते हैं लेकिन उन के खुर या
पाँओ चिरे हुए नहीं हैं। 8सूअर न खाना। वह
तुम्हारे लिए नापाक है, क्यूँकि उस के खुर तो
चिरे हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता।
न उन का गोश्त खाना, न उन की लाशों को
छूना।

9पानी में रहने वाले जानवर खाने के लिए
जाइज़ हैं अगर उन के पर और छिलके हों।
10लेकिन जिन के पर या छिलके नहीं हैं वह
तुम्हारे लिए नापाक हैं।

11तुम हर पाक परिन्दा खा सकते हो।
12लेकिन ज़ैल के परिन्दे खाना मना है :
उक़ाब, दढ़ियल गिद्ध, काला गिद्ध, 13लाल
चील, काली चील, हर क़िस्म का गिद्ध, 14हर
क़िस्म का कव्वा, 15उक़ाबी उल्लू, छोटे कान
वाला उल्लू, बड़े कान वाला उल्लू, हर क़िस्म
का बाज़, 16छोटा उल्लू, चिंघाड़ने वाला उल्लू,
सफ़ेद उल्लू, 17दश्ती उल्लू, मिस्री गिद्ध, क़ूक़,
18लक़्लक़, हर क़िस्म का बूतीमार, हुदहुद
और चमगादड़।[d]

19तमाम पर रखने वाले कीड़े तुम्हारे लिए
नापाक हैं। उन्हें खाना मना है। 20लेकिन तुम
हर पाक परिन्दा खा सकते हो।

21जो जानवर ख़ुद-ब-ख़ुद मर जाए उसे न
खाना। तू उसे अपनी आबादी में रहने वाले
किसी परदेसी को दे या किसी अजनबी को
बेच सकता है और वह उसे खा सकता है।
लेकिन तू उसे मत खाना, क्यूँकि तू रब अपने
ख़ुदा के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस क़ौम है।

बकरी के बच्चे को उस की माँ के दूध में
पकाना मना है।

अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा मख़्सूस करना

22लाज़िम है कि तू हर साल अपने खेतों की
पैदावार का दसवाँ हिस्सा रब के लिए अलग
करे। 23इस के लिए अपना अनाज, अंगूर का
रस, ज़ैतून का तेल और मवेशी के पहलौठे रब
अपने ख़ुदा के हुज़ूर ले आना यानी उस जगह
जो वह अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा।
वहाँ यह चीज़ें क़ुर्बान करके खा ताकि तू उम्र
भर रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना सीखे।

24लेकिन हो सकता है कि जो जगह रब
तेरा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए
चुनेगा वह तेरे घर से हद से ज़्यादा दूर हो और
रब तेरे ख़ुदा की बरकत के बाइस मज़कूरा

[a]यह हिरन के मुशाबेह होता है लेकिन फ़ितरतन मुख़्तलिफ़ होता है। इस के सींग खोखले, बेशाख और अनझड़ होते हैं। antelope। याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन जानवरों के अक्सर नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख़्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

[b]महात। दराज़क़द हिरनों की एक नौ जिस के सींग चक्करदार होते हैं। addax।

[c]ग़ज़ाल-ए-अफ़्रीक़ा। चिकारों की तीन इक़साम में से कोई जो अपने लम्बे और हल्क़ादार सींगों की वजह से मुम्ताज़ है। oryx।

[d]याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन परिन्दों के अक्सर नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख़्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

दसवाँ हिस्सा इतना ज़्यादा हो कि तू उसे मक़्दिस तक नहीं पहुँचा सकता। 25इस सूरत में उसे बेच कर उस के पैसे उस जगह ले जा जो रब तेरा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। 26वहाँ पहुँच कर उन पैसों से जो जी चाहे ख़रीदना, ख़्वाह गाय-बैल, भेड़-बकरी, मै या मै जैसी कोई और चीज़ क्यूँ न हो। फिर अपने घराने के साथ मिल कर रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर यह चीज़ें खाना और ख़ुशी मनाना। 27ऐसे मौक़ों पर उन लावियों का ख़याल रखना जो तेरे क़बाइली इलाक़े में रहते हैं, क्यूँकि उन्हें मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।

28हर तीसरे साल अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा अपने शहरों में जमा करना। 29उसे लावियों को देना जिन के पास मौरूसी ज़मीन नहीं है, नीज़ अपने शहरों में आबाद परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को देना। वह आएँ और खाना खा कर सेर हो जाएँ ताकि रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत दे।

क़र्ज़दारों की बहाली का साल

15 हर सात साल के बाद एक दूसरे के कर्ज़े मुआफ़ कर देना। 2उस वक़्त जिस ने भी किसी इस्राईली भाई को क़र्ज़ दिया है वह उसे मन्सूख़ करे। वह अपने पड़ोसी या भाई को पैसे वापस करने पर मज्बूर न करे, क्यूँकि रब की ताज़ीम में क़र्ज़ मुआफ़ करने के साल का एलान किया गया है। 3इस साल में तू सिर्फ़ ग़ैरमुल्की क़र्ज़दारों को पैसे वापस करने पर मज्बूर कर सकता है। अपने इस्राईली भाई के तमाम क़र्ज़ मुआफ़ कर देना।

4तेरे दरमियान कोई भी ग़रीब नहीं होना चाहिए, क्यूँकि जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में देने वाला है तो वह तुझे बहुत बरकत देगा। 5लेकिन शर्त यह है कि तू पूरे तौर पर उस की सुने और एहतियात से उस के उन तमाम अह्काम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 6फिर रब तुम्हारा ख़ुदा तुझे अपने वादे के मुताबिक़ बरकत देगा। तू किसी भी क़ौम से उधार नहीं लेगा बल्कि बहुत सी क़ौमों को उधार देगा। कोई भी क़ौम तुझ पर हुकूमत नहीं करेगी बल्कि तू बहुत सी क़ौमों पर हुकूमत करेगा।

7जब तू उस मुल्क में आबाद होगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देने वाला है तो अपने दरमियान रहने वाले ग़रीब भाई से सख़्त सुलूक न करना, न कंजूस होना। 8खुले दिल से उस की मदद कर। जितनी उसे ज़रूरत है उसे उधार के तौर पर दे। 9ख़बरदार, ऐसा मत सोच कि क़र्ज़ मुआफ़ करने का साल क़रीब है, इस लिए मैं उसे कुछ नहीं दूँगा। अगर तू ऐसी शरीर बात अपने दिल में सोचते हुए ज़रूरतमन्द भाई को क़र्ज़ देने से इन्कार करे और वह रब के सामने तेरी शिकायत करे तो तू क़ुसूरवार ठहरेगा। 10उसे ज़रूर कुछ दे बल्कि ख़ुशी से दे। फिर रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत देगा। 11मुल्क में हमेशा ग़रीब और ज़रूरतमन्द लोग पाए जाएंगे, इस लिए मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि खुले दिल से अपने ग़रीब और ज़रूरतमन्द भाइयों की मदद कर।

ग़ुलामों को आज़ाद करने का फ़र्ज़

12अगर कोई इस्राईली भाई या बहन अपने आप को बेच कर तेरा ग़ुलाम बन जाए तो वह छः साल तेरी ख़िदमत करे। लेकिन लाज़िम है कि सातवें साल उसे आज़ाद कर दिया जाए। 13आज़ाद करते वक़्त उसे ख़ाली हाथ फ़ारिग़ न करना 14बल्कि अपनी भेड़-बकरियों, अनाज, तेल और मै से उसे फ़य्याज़ी से कुछ दे, यानी उन चीज़ों में से जिन से रब तेरे ख़ुदा ने तुझे बरकत दी है। 15याद रख कि तू भी मिस्र में ग़ुलाम था और कि रब तेरे ख़ुदा ने फ़िद्या दे कर तुझे छुड़ाया। इसी लिए मैं आज तुझे यह हुक्म देता हूँ।

16लेकिन मुमकिन है कि तेरा ग़ुलाम तुझे छोड़ना न चाहे, क्यूँकि वह तुझ से और तेरे ख़ानदान से मुहब्बत रखता है, और वह तेरे

पास रह कर ख़ुशहाल है। 17इस सूरत में उसे दरवाज़े के पास ले जा और उस के कान की लौ चौखट के साथ लगा कर उसे सुताली यानी तेज़ औज़ार से छेद दे। तब वह ज़िन्दगी भर तेरा ग़ुलाम बना रहेगा। अपनी लौंडी के साथ भी ऐसा ही करना।

18अगर ग़ुलाम तुझे छः साल के बाद छोड़ना चाहे तो बुरा न मानना। आख़िर अगर उस की जगह कोई और वही काम तनख़्वाह के लिए करता तो तेरे अख़राजात दुगने होते। उसे आज़ाद करना तो रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत देगा।

जानवरों के पहलौठे मख़्सूस हैं

19अपनी गायों और भेड़-बकरियों के नर पहलौठे रब अपने ख़ुदा के लिए मख़्सूस करना। न गाय के पहलौठे को काम के लिए इस्तेमाल करना, न भेड़ के पहलौठे के बाल कतरना। 20हर साल ऐसे बच्चे उस जगह ले जा जो रब अपने मक़्दिस के लिए चुनेगा। वहाँ उन्हें रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर अपने पूरे ख़ानदान समेत खाना।

21अगर ऐसे जानवर में कोई ख़राबी हो, वह अंधा या लंगड़ा हो या उस में कोई और नुक़्स हो तो उसे रब अपने ख़ुदा के लिए क़ुर्बान न करना। 22ऐसे जानवर तू घर में ज़बह करके खा सकता है। वह हिरन और ग़ज़ाल की मानिन्द हैं जिन्हें तू खा तो सकता है लेकिन क़ुर्बानी के तौर पर पेश नहीं कर सकता। पाक और नापाक शख़्स दोनों उसे खा सकते हैं। 23लेकिन ख़ून न खाना। उसे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेल कर ज़ाए कर देना।

फ़सह की ईद

16 अबीब के महीने[a] में रब अपने ख़ुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाना, क्यूँकि इस महीने में वह तुझे रात के वक़्त मिस्र से निकाल लाया। 2उस जगह जमा हो जा जो रब अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। उसे क़ुर्बानी के लिए भेड़-बकरियाँ या गाय-बैल पेश करना। 3गोश्त के साथ बेख़मीरी रोटी खाना। सात दिन तक यही रोटी खा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह तू ने किया जब जल्दी जल्दी मिस्र से निकला। मुसीबत की यह रोटी इस लिए खा ताकि वह दिन तेरे जीते जी याद रहे जब तू मिस्र से रवाना हुआ। 4लाज़िम है कि ईद के हफ़्ते के दौरान तेरे पूरे मुल्क में ख़मीर न पाया जाए।

जो क़ुर्बानी तू ईद के पहले दिन की शाम को पेश करे उस का गोश्त उसी वक़्त खा ले। अगली सुब्ह तक कुछ बाक़ी न रह जाए। 5फ़सह की क़ुर्बानी किसी भी शहर में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा न चढ़ाना 6बल्कि सिर्फ़ उस जगह जो वह अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। मिस्र से निकलते वक़्त की तरह क़ुर्बानी के जानवर को सूरज डूबते वक़्त ज़बह कर। 7फिर उसे भून कर उस जगह खाना जो रब तेरा ख़ुदा चुनेगा। अगली सुब्ह अपने घर वापस चला जा। 8ईद के पहले छः दिन बेख़मीरी रोटी खाता रह। सातवें दिन काम न करना बल्कि रब अपने ख़ुदा की इबादत के लिए जमा हो जाना।

फ़सल की कटाई की ईद

9जब अनाज की फ़सल की कटाई शुरू होगी तो पहले दिन के सात हफ़्ते बाद 10फ़सल की कटाई की ईद मनाना। रब अपने ख़ुदा को उतना पेश कर जितना जी चाहे। वह उस बरकत के मुताबिक़ हो जो उस ने तुझे दी है। 11इस के लिए भी उस जगह जमा हो जा जो रब अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। वहाँ उस के हुज़ूर ख़ुशी मना। तेरे बाल-बच्चे, तेरे ग़ुलाम और लौंडियाँ और तेरे शहरों में रहने वाले लावी, परदेसी, यतीम और बेवाएँ सब तेरी ख़ुशी में शरीक हों। 12इन अह्काम पर

[a]मार्च ता अप्रैल।

ज़रूर अमल करना और मत भूलना कि तू मिस्र में ग़ुलाम था।

झोंपड़ियों की ईद

13अनाज गाहने और अंगूर का रस निकालने के बाद झोंपड़ियों की ईद मनाना जिस का दौरानिया सात दिन हो। 14ईद के मौक़े पर ख़ुशी मनाना। तेरे बाल-बच्चे, तेरे ग़ुलाम और लौंडियाँ और तेरे शहरों में बसने वाले लावी, परदेसी, यतीम और बेवाएँ सब तेरी ख़ुशी में शरीक हों। 15जो जगह रब तेरा ख़ुदा मक़्दिस के लिए चुनेगा वहाँ उस की ताज़ीम में सात दिन तक यह ईद मनाना। क्यूँकि रब तेरा ख़ुदा तेरी तमाम फ़सलों और मेहनत को बरकत देगा, इस लिए ख़ूब ख़ुशी मनाना।

16इस्राईल के तमाम मर्द साल में तीन मर्तबा उस मक़्दिस पर हाज़िर हो जाएँ जो रब तेरा ख़ुदा चुनेगा यानी बेख़मीरी रोटी की ईद, फ़सल की कटाई की ईद और झोंपड़ियों की ईद पर। कोई भी रब के हुज़ूर ख़ाली हाथ न आए। 17हर कोई उस बरकत के मुताबिक़ दे जो रब तेरे ख़ुदा ने उसे दी है।

क़ाज़ी मुक़र्रर करना

18अपने अपने क़बाइली इलाक़े में क़ाज़ी और निगहबान मुक़र्रर कर। वह हर उस शहर में हों जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा। वह इन्साफ़ से लोगों की अदालत करें। 19न किसी के हुक़ूक़ मारना, न जानिबदारी दिखाना। रिश्वत क़बूल न करना, क्यूँकि रिश्वत दानिशमन्दों को अंधा कर देती और रास्तबाज़ की बातें पलट देती है। 20सिर्फ़ और सिर्फ़ इन्साफ़ के मुताबिक़ चल ताकि तू जीता रहे और उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करे जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा।

बुतपरस्ती की सज़ा

21जहाँ तू रब अपने ख़ुदा के लिए क़ुर्बान-गाह बनाएगा वहाँ न यसीरत देवी की पूजा के लिए लकड़ी का खम्बा 22और न कोई ऐसा पत्थर खड़ा करना जिस की पूजा लोग करते हैं। रब तेरा ख़ुदा इन चीज़ों से नफ़रत रखता है।

17 रब अपने ख़ुदा को नाक़िस गाय-बैल या भेड़-बकरी पेश न करना, क्यूँकि वह ऐसी क़ुर्बानी से नफ़रत रखता है।

2जब तू उन शहरों में आबाद हो जाएगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा तो हो सकता है कि तेरे दरमियान कोई मर्द या औरत रब तेरे ख़ुदा का अह्द तोड़ कर वह कुछ करे जो उसे बुरा लगे। 3मसलन वह दीगर माबूदों को या सूरज, चाँद या सितारों के पूरे लश्कर को सिज्दा करे, हालाँकि मैं ने यह मना किया है। 4जब भी तुझे इस क़िस्म की ख़बर मिले तो इस का पूरा खोज लगा। अगर बात दुरुस्त निकले और ऐसी घिनौनी हरकत वाक़ई इस्राईल में की गई हो 5तो क़ुसूरवार को शहर के बाहर ले जा कर संगसार कर देना। 6लेकिन लाज़िम है कि पहले कम अज़ कम दो या तीन लोग गवाही दें कि उस ने ऐसा ही किया है। उसे सज़ा-ए-मौत देने के लिए एक गवाह काफ़ी नहीं। 7पहले गवाह उस पर पत्थर फैंकें, इस के बाद बाक़ी तमाम लोग उसे संगसार करें। यूँ तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

मक़्दिस में आलातरीन अदालत

8अगर तेरे शहर के क़ाज़ियों के लिए किसी मुक़द्दमे का फ़ैसला करना मुश्किल हो तो उस मक़्दिस में आ कर अपना मुआमला पेश कर जो रब तेरा ख़ुदा चुनेगा, ख़्वाह किसी को क़त्ल किया गया हो, उसे ज़ख़्मी कर दिया गया हो या कोई और मसला हो। 9लावी के क़बीले के इमामों और मक़्दिस में ख़िदमत करने वाले क़ाज़ी को अपना मुक़द्दमा पेश कर, और वह फ़ैसला करें। 10जो फ़ैसला

वह उस मक़्दिस में करेंगे जो रब चुनेगा उसे मानना पड़ेगा। जो भी हिदायत वह दें उस पर एहतियात से अमल कर। 11शरीअत की जो भी बात वह तुझे सिखाएँ और जो भी फ़ैसला वह दें उस पर अमल कर। जो कुछ भी वह तुझे बताएँ उस से न दाईं और न बाईं तरफ़ मुड़ना।

12जो मक़्दिस में रब तेरे ख़ुदा की ख़िदमत करने वाले क़ाज़ी या इमाम को हक़ीर जान कर उन की नहीं सुनता उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। यूँ तू इस्राईल से बुराई मिटा देगा। 13फिर तमाम लोग यह सुन कर डर जाएंगे और आइन्दा ऐसी गुस्ताख़ी करने की जुरअत नहीं करेंगे।

बादशाह के बारे में उसूल

14तू जल्द ही उस मुल्क में दाख़िल होगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देने वाला है। जब तू उस पर क़ब्ज़ा करके उस में आबाद हो जाएगा तो हो सकता है कि तू एक दिन कहे, "आओ हम इर्दगिर्द की तमाम क़ौमों की तरह बादशाह मुक़र्रर करें जो हम पर हुकूमत करे।" 15अगर तू ऐसा करे तो सिर्फ़ वह शख़्स मुक़र्रर कर जिसे रब तेरा ख़ुदा चुनेगा। वह परदेसी न हो बल्कि तेरा अपना इस्राईली भाई हो। 16बादशाह बहुत ज़्यादा घोड़े न रखे, न अपने लोगों को उन्हें ख़रीदने के लिए मिस्र भेजे। क्यूँकि रब ने तुझ से कहा है कि कभी वहाँ वापस न जाना। 17तेरा बादशाह ज़्यादा बीवियाँ भी न रखे, वर्ना उस का दिल रब से दूर हो जाएगा। और वह हद से ज़्यादा सोना-चाँदी जमा न करे।

18तख़्तनशीन होते वक़्त वह लावी के क़बीले के इमामों के पास पड़ी इस शरीअत की नक़ल लिखवाए। 19यह किताब उस के पास महफ़ूज़ रहे, और वह उम्र भर रोज़ाना इसे पढ़ता रहे ताकि रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना सीखे। तब वह शरीअत की तमाम बातों की पैरवी करेगा, 20अपने आप को अपने इस्राईली भाइयों से ज़्यादा अहम नहीं समझेगा और किसी तरह भी शरीअत से हट कर काम नहीं करेगा। नतीजे में वह और उस की औलाद बहुत अर्से तक इस्राईल पर हुकूमत करेंगे।

इमामों और लावियों का हिस्सा

18 इस्राईल के हर क़बीले को मीरास में उस का अपना इलाक़ा मिलेगा सिवाए लावी के क़बीले के जिस में इमाम भी शामिल हैं। वह जलने वाली और दीगर क़ुर्बानियों में से अपना हिस्सा ले कर गुज़ारा करें। 2उन के पास दूसरों की तरह मौरूसी ज़मीन नहीं होगी बल्कि रब ख़ुद उन का मौरूसी हिस्सा होगा। यह उस ने वादा करके कहा है।

3जब भी किसी बैल या भेड़ को क़ुर्बान किया जाए तो इमामों को उस का शाना, जबड़े और ओझड़ी मिलने का हक़ है। 4अपनी फ़सलों का पहला फल भी उन्हें देना यानी अनाज, मै, ज़ैतून का तेल और भेड़ों की पहली कतरी हुई ऊन। 5क्यूँकि रब ने तेरे तमाम क़बीलों में से लावी के क़बीले को ही मक़्दिस में रब के नाम में ख़िदमत करने के लिए चुना है। यह हमेशा के लिए उन की और उन की औलाद की ज़िम्मादारी रहेगी।

6कुछ लावी मक़्दिस के पास नहीं बल्कि इस्राईल के मुख़्तलिफ़ शहरों में रहेंगे। अगर उन में से कोई उस जगह आना चाहे जो रब मक़्दिस के लिए चुनेगा 7तो वह वहाँ के ख़िदमत करने वाले लावियों की तरह मक़्दिस में रब अपने ख़ुदा के नाम में ख़िदमत कर सकता है। 8उसे क़ुर्बानियों में से दूसरों के बराबर लावियों का हिस्सा मिलना है, ख़्वाह उसे ख़ानदानी मिलकियत बेचने से पैसे मिल गए हों या नहीं।

जादूगरी मना है

9जब तू उस मुल्क में दाख़िल होगा जो रब
तेरा ख़ुदा तुझे दे रहा है तो वहाँ की रहने
वाली क़ौमों के घिनौने दस्तूर न अपनाना।
10तेरे दरमियान कोई भी अपने बेटे या बेटी को
क़ुर्बानी के तौर पर न जलाए। न कोई ग़ैबदानी
करे, न फ़ाल या शुगून निकाले या जादूगरी
करे। 11इसी तरह मंत्र पढ़ना, हाज़िरात करना,
क़िस्मत का हाल बताना या मुर्दों की रूहों से
राबिता करना सख़्त मना है। 12जो भी ऐसा
करे वह रब की नज़र में क़ाबिल-ए-घिन है।
इन ही मकरूह दस्तूरों की वजह से रब तेरा
ख़ुदा तेरे आगे से उन क़ौमों को निकाल देगा।
13इस लिए लाज़िम है कि तू रब अपने ख़ुदा
के सामने बेक़ुसूर रहे।

नबी का वादा

14जिन क़ौमों को तू निकालने वाला है वह
उन की सुनती हैं जो फ़ाल निकालते और
ग़ैबदानी करते हैं। लेकिन रब तेरे ख़ुदा ने तुझे
ऐसा करने की इजाज़त नहीं दी।
15रब तेरा ख़ुदा तेरे वास्ते तेरे भाइयों में
से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। उस की
सुनना। 16क्यूँकि होरिब यानी सीना पहाड़ पर
जमा होते वक़्त तू ने ख़ुद रब अपने ख़ुदा से
दरख़्वास्त की, “न मैं मज़ीद रब अपने ख़ुदा
की आवाज़ सुनना चाहता, न यह भड़कती
हुई आग देखना चाहता हूँ, वर्ना मर जाऊँगा।”
17तब रब ने मुझ से कहा, “जो कुछ वह कहते
हैं वह ठीक है। 18आइन्दा मैं उन में से तुझ
जैसा नबी खड़ा करूँगा। मैं अपने अल्फ़ाज़
उस के मुँह में डाल दूँगा, और वह मेरी हर बात
उन तक पहुँचाएगा। 19जब वह नबी मेरे नाम
में कुछ कहे तो लाज़िम है कि तू उस की सुन।
जो नहीं सुनेगा उस से मैं ख़ुद जवाब तलब
करूँगा। 20लेकिन अगर कोई नबी गुस्ताख़ हो
कर मेरे नाम में कोई बात कहे जो मैं ने उसे
बताने को नहीं कहा था तो उसे सज़ा-ए-मौत
देनी है। इसी तरह उस नबी को भी हलाक कर
देना है जो दीगर माबूदों के नाम में बात करे।”
21शायद तेरे ज़हन में सवाल उभर आए कि
हम किस तरह मालूम कर सकते हैं कि कोई
कलाम वाक़ई रब की तरफ़ से है या नहीं।
22जवाब यह है कि अगर नबी रब के नाम में
कुछ कहे और वह पूरा न हो जाए तो मतलब
है कि नबी की बात रब की तरफ़ से नहीं है
बल्कि उस ने गुस्ताख़ी करके बात की है। इस
सूरत में उस से मत डरना।

पनाह के शहर

19 रब तेरा ख़ुदा उस मुल्क में आबाद
क़ौमों को तबाह करेगा जो वह
तुझे दे रहा है। जब तू उन्हें भगा कर उन के
शहरों और घरों में आबाद हो जाएगा 2-3तो
पूरे मुल्क को तीन हिस्सों में तक़्सीम कर। हर
हिस्से में एक मर्कज़ी शहर मुक़र्रर कर। उन
तक पहुँचाने वाले रास्ते साफ़-सुथरे रखना।
इन शहरों में हर वह शख़्स पनाह ले सकता है
जिस के हाथ से कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक
हुआ है। 4वह ऐसे शहर में जा कर इन्तिक़ाम
लेने वालों से महफ़ूज़ रहेगा। शर्त यह है कि
उस ने न क़सदन और न दुश्मनी के बाइस
किसी को मार दिया हो।
5मसलन दो आदमी जंगल में दरख़्त काट
रहे हैं। कुल्हाड़ी चलाते वक़्त एक की कुल्हाड़ी
दस्ते से निकल कर उस के साथी को लग जाए
और वह मर जाए। ऐसा शख़्स फ़रार हो कर
ऐसे शहर में पनाह ले सकता है ताकि बचा
रहे। 6इस लिए ज़रूरी है कि ऐसे शहरों का
फ़ासिला ज़्यादा न हो। क्यूँकि जब इन्तिक़ाम
लेने वाला उस का ताक़्क़ुब करेगा तो ख़तरा
है कि वह तैश में उसे पकड़ कर मार डाले,
अगरचे भागने वाला बेक़ुसूर है। जो कुछ उस
ने किया वह दुश्मनी के सबब से नहीं बल्कि
ग़ैरइरादी तौर पर हुआ। 7इस लिए लाज़िम है
कि तू पनाह के तीन शहर अलग कर ले।

8बाद में रब तेरा ख़ुदा तेरी सरहद्दें मज़ीद
बढ़ा देगा, क्यूँकि यही वादा उस ने क़सम खा
कर तेरे बापदादा से किया है। अपने वादे के
मुताबिक़ वह तुझे पूरा मुल्क देगा, 9अलबत्ता
शर्त यह है कि तू एहतियात से उन तमाम
अह्काम की पैरवी करे जो मैं तुझे आज दे
रहा हूँ। दूसरे अल्फ़ाज़ में शर्त यह है कि तू
रब अपने ख़ुदा को प्यार करे और हमेशा उस
की राहों में चलता रहे। अगर तू ऐसा ही करे
और नतीजतन रब का वादा पूरा हो जाए तो
लाज़िम है कि तू पनाह के तीन और शहर
अलग कर ले। 10वर्ना तेरे मुल्क में जो रब तेरा
ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है बेक़ुसूर लोगों को
जान से मारा जाएगा और तू ख़ुद ज़िम्मादार
ठहरेगा।

11लेकिन हो सकता है कोई दुश्मनी के
बाइस किसी की ताक में बैठ जाए और उस
पर हम्ला करके उसे मार डाले। अगर क़ातिल
पनाह के किसी शहर में भाग कर पनाह ले
12तो उस के शहर के बुज़ुर्ग इत्तिला दें कि उसे
वापस लाया जाए। उसे इन्तिक़ाम लेने वाले
के हवाले किया जाए ताकि उसे सज़ा-ए-मौत
मिले। 13उस पर रहम मत करना। लाज़िम है
कि तू इस्राईल में से बेक़ुसूर की मौत का दाग़
मिटाए ताकि तू ख़ुशहाल रहे।

ज़मीनों की हद्दें

14जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब तेरा
ख़ुदा तुझे मीरास में देगा ताकि तू उस पर
क़ब्ज़ा करे तो ज़मीन की वह हद्दें आगे पीछे
न करना जो तेरे बापदादा ने मुक़र्रर कीं।

अदालत में गवाह

15तू किसी को एक ही गवाह के कहने
पर क़ुसूरवार नहीं ठहरा सकता। जो भी जुर्म
सरज़द हुआ है, कम अज़ कम दो या तीन
गवाहों की ज़रूरत है। वर्ना तू उसे क़ुसूरवार
नहीं ठहरा सकता।

16अगर जिस पर इल्ज़ाम लगाया गया है
इन्कार करके दावा करे कि गवाह झूट बोल
रहा है 17तो दोनों मक़्दिस में रब के हुज़ूर आ
कर ख़िदमत करने वाले इमामों और क़ाज़ियों
को अपना मुआमला पेश करें। 18क़ाज़ी इस
का ख़ूब खोज लगाएँ। अगर बात दुरुस्त
निकले कि गवाह ने झूट बोल कर अपने भाई
पर ग़लत इल्ज़ाम लगाया है 19तो उस के साथ
वह कुछ किया जाए जो वह अपने भाई के
लिए चाह रहा था। यूँ तू अपने दरमियान से
बुराई मिटा देगा। 20फिर तमाम बाक़ी लोग यह
सुन कर डर जाएंगे और आइन्दा तेरे दरमियान
ऐसी ग़लत हरकत करने की जुरअत नहीं
करेंगे। 21क़ुसूरवार पर रहम न करना। उसूल
यह हो कि जान के बदले जान, आँख के बदले
आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ,
पाँओ के बदले पाँओ।

जंग के उसूल

20 जब तू जंग के लिए निकल कर
देखता है कि दुश्मन तादाद में
ज़्यादा हैं और उन के पास घोड़े और रथ भी
हैं तो मत डरना। रब तेरा ख़ुदा जो तुझे मिस्र
से निकाल लाया अब भी तेरे साथ है। 2जंग
के लिए निकलने से पहले इमाम सामने आए
और फ़ौज से मुख़ातिब हो कर 3कहे, "सुन
ऐ इस्राईल! आज तुम अपने दुश्मन से लड़ने
जा रहे हो। उन के सबब से परेशान न हो। उन
से न ख़ौफ़ खाओ, न घबराओ, 4क्यूँकि रब
तुम्हारा ख़ुदा ख़ुद तुम्हारे साथ जा कर दुश्मन
से लड़ेगा। वही तुम्हें फ़त्ह बख़्शेगा।"

5फिर निगहबान फ़ौज से मुख़ातिब हों,
"क्या यहाँ कोई है जिस ने हाल में अपना नया
घर मुकम्मल किया लेकिन उसे मख़्सूस करने
का मौक़ा न मिला? वह अपने घर वापस चला
जाए। ऐसा न हो कि वह जंग के दौरान मारा
जाए और कोई और घर को मख़्सूस करके
उस में बसने लगे। 6क्या कोई है जिस ने अंगूर
का बाग़ लगा कर इस वक़्त उस की पहली

फ़सल के इन्तिज़ार में है? वह अपने घर
वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग
में मारा जाए और कोई और बाग़ का फ़ाइदा
उठाए। 7क्या कोई है जिस की मंगनी हुई है
और जो इस वक़्त शादी के इन्तिज़ार में है?
वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो
कि वह जंग में मारा जाए और कोई और उस
की मंगेतर से शादी करे।"
8निगहबान कहें, "क्या कोई ख़ौफ़ज़दा या
परेशान है? वह अपने घर वापस चला जाए
ताकि अपने साथियों को परेशान न करे।"
9इस के बाद फ़ौजियों पर अफ़्सर मुक़र्रर किए
जाएँ।
10किसी शहर पर हम्ला करने से पहले
उस के बाशिन्दों को हथियार डाल देने का
मौक़ा देना। 11अगर वह मान जाएँ और अपने
दरवाज़े खोल दें तो वह तेरे लिए बेगार में काम
करके तेरी ख़िदमत करें। 12लेकिन अगर वह
हथियार डालने से इन्कार करें और जंग छिड़
जाए तो शहर का मुहासरा कर। 13जब रब तेरा
ख़ुदा तुझे शहर पर फ़त्ह देगा तो उस के तमाम
मर्दों को हलाक कर देना। 14तू तमाम माल-ए-
ग़नीमत औरतों, बच्चों और मवेशियों समेत
रख सकता है। दुश्मन की जो चीज़ें रब ने तेरे
हवाले कर दी हैं उन सब को तू इस्तेमाल कर
सकता है। 15यूँ उन शहरों से निपटना जो तेरे
अपने मुल्क से बाहर हैं।
16लेकिन जो शहर उस मुल्क में वाक़े हैं
जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा
है, उन के तमाम जानदारों को हलाक कर
देना। 17उन्हें रब के सपुर्द करके मुकम्मल
तौर पर हलाक करना, जिस तरह रब तेरे
ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है। इस में हित्ती,
अमोरी, कनआनी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और
यबूसी शामिल हैं। 18अगर तू ऐसा न करे तो
वह तुम्हें रब तुम्हारे ख़ुदा का गुनाह करने
पर उकसाएँगे। जो घिनौनी हरकतें वह अपने
देवताओं की पूजा करते वक़्त करते हैं उन्हें
वह तुम्हें भी सिखाएँगे।
19शहर का मुहासरा करते वक़्त इर्दगिर्द के
फलदार दरख़्तों को काट कर तबाह न कर
देना ख़्वाह बड़ी देर भी हो जाए, वर्ना तू उन
का फल नहीं खा सकेगा। उन्हें न काटना। क्या
दरख़्त तेरे दुश्मन हैं जिन का मुहासरा करना
है? हरगिज़ नहीं! 20उन दरख़्तों की और बात
है जो फल नहीं लाते। उन्हें तू काट कर मुहासरे
के लिए इस्तेमाल कर सकता है जब तक शहर
शिकस्त न खाए।

नामालूम क़त्ल का कफ़्फ़ारा

21 जब तू उस मुल्क में आबाद होगा
जो रब तुझे मीरास में दे रहा है
ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे तो हो सकता है
कि कोई लाश खुले मैदान में कहीं पड़ी पाई
जाए। अगर मालूम न हो कि किस ने उसे क़त्ल
किया है 2तो पहले इर्दगिर्द के शहरों के बुज़ुर्ग
और क़ाज़ी आ कर पता करें कि कौन सा शहर
लाश के ज़्यादा क़रीब है। 3फिर उस शहर के
बुज़ुर्ग एक जवान गाय चुन लें जो कभी काम
के लिए इस्तेमाल नहीं हुई। 4वह उसे एक ऐसी
वादी में ले जाएँ जिस में न कभी हल चलाया
गया, न पौदे लगाए गए हों। वादी में ऐसी नहर
हो जो पूरा साल बहती रहे। वहीं बुज़ुर्ग जवान
गाय की गर्दन तोड़ डालें।
5फिर लावी के क़बीले के इमाम क़रीब
आएँ। क्यूँकि रब तुम्हारे ख़ुदा ने उन्हें चुन लिया
है ताकि वह ख़िदमत करें, रब के नाम से
बरकत दें और तमाम झगड़ों और हम्लों का
फ़ैसला करें। 6उन के देखते देखते शहर के
बुज़ुर्ग अपने हाथ गाय की लाश के ऊपर धो
लें। 7साथ साथ वह कहें, "हम ने इस शख़्स
को क़त्ल नहीं किया, न हम ने देखा कि किस
ने यह किया। 8ऐ रब, अपनी क़ौम इस्राईल का
यह कफ़्फ़ारा क़बूल फ़रमा जिसे तू ने फ़िद्या दे
कर छुड़ाया है। अपनी क़ौम इस्राईल को इस
बेक़ुसूर के क़त्ल का क़ुसूरवार न ठहरा।" तब
मक़्तूल का कफ़्फ़ारा दिया जाएगा।

9यूँ तू ऐसे बेक़ुसूर शख़्स के क़त्ल का दाग़
अपने दरमियान से मिटा देगा। क्यूँकि तू ने
वही कुछ किया होगा जो रब की नज़र में
दुरुस्त है।

जंगी क़ैदी औरत से शादी

10हो सकता है कि तू अपने दुश्मन से जंग
करे और रब तुम्हारा ख़ुदा तुझे फ़त्ह बख़्शे।
जंगी क़ैदियों को जमा करते वक़्त 11तुझे उन
में से एक ख़ूबसूरत औरत नज़र आती है जिस
के साथ तेरा दिल लग जाता है। तू उस से
शादी कर सकता है। 12उसे अपने घर में ले
आ। वहाँ वह अपने सर के बालों को मुंडवाए,
अपने नाख़ुन तराशे 13और अपने वह कपड़े
उतारे जो वह पहने हुए थी जब उसे क़ैद किया
गया। वह पूरे एक महीने तक अपने वालिदैन
के लिए मातम करे। फिर तू उस के पास जा
कर उस के साथ शादी कर सकता है।
14अगर वह तुझे किसी वक़्त पसन्द न आए
तो उसे जाने दे। वह वहाँ जाए जहाँ उस का
जी चाहे। तुझे उसे बेचने या उस से लौंडी का
सा सुलूक करने की इजाज़त नहीं है, क्यूँकि
तू ने उसे मज्बूर करके उस से शादी की है।

पहलौठे के हुक़ूक़

15हो सकता है किसी मर्द की दो बीवियाँ
हों। एक को वह प्यार करता है, दूसरी को
नहीं। दोनों बीवियों के बेटे पैदा हुए हैं, लेकिन
जिस बीवी से शौहर मुहब्बत नहीं करता उस
का बेटा सब से पहले पैदा हुआ। 16जब बाप
अपनी मिलकियत वसियत में तक़्सीम करता
है तो लाज़िम है कि वह अपने सब से बड़े
बेटे का मौरूसी हक़ पूरा करे। उसे पहलौठे
का यह हक़ उस बीवी के बेटे को मुन्तक़िल
करने की इजाज़त नहीं जिसे वह प्यार करता
है। 17उसे तस्लीम करना है कि उस बीवी का
बेटा सब से बड़ा है, जिस से वह मुहब्बत नहीं
करता। नतीजतन उसे उस बेटे को दूसरे बेटों
की निस्बत दुगना हिस्सा देना पड़ेगा, क्यूँकि
वह अपने बाप की ताक़त का पहला इज़हार
है। उसे पहलौठे का हक़ हासिल है।

सरकश बेटा

18हो सकता है कि किसी का बेटा हटधर्म
और सरकश हो। वह अपने वालिदैन की
इताअत नहीं करता और उन के तम्बीह करने
और सज़ा देने पर भी उन की नहीं सुनता।
19इस सूरत में वालिदैन उसे पकड़ कर शहर के
दरवाज़े पर ले जाएँ जहाँ बुज़ुर्ग जमा होते हैं।
20वह बुज़ुर्गों से कहें, "हमारा बेटा हटधर्म और
सरकश है। वह हमारी इताअत नहीं करता
बल्कि अय्याश और शराबी है।" 21यह सुन
कर शहर के तमाम मर्द उसे संगसार करें। यूँ
तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। तमाम
इस्राईल यह सुन कर डर जाएगा।

सज़ा-ए-मौत पाने वाले को उसी दिन दफ़नाना है

22जब तू किसी को सज़ा-ए-मौत दे कर उस
की लाश किसी लकड़ी या दरख़्त से लटकाता
है 23तो उसे अगली सुब्ह तक वहाँ न छोड़ना।
हर सूरत में उसे उसी दिन दफ़ना देना, क्यूँकि
जिसे भी दरख़्त से लटकाया गया है उस पर
अल्लाह की लानत है। अगर उसे उसी दिन
दफ़नाया न जाए तो तू उस मुल्क को नापाक
कर देगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे
रहा है।

मदद करने के लिए तय्यार रहना

22 अगर तुझे किसी हमवतन भाई
का बैल या भेड़-बकरी भटकी हुई
नज़र आए तो उसे नज़रअन्दाज़ न करना
बल्कि मालिक के पास वापस ले जाना।
2अगर मालिक का घर क़रीब न हो या तुझे
मालूम न हो कि मालिक कौन है तो जानवर
को अपने घर ला कर उस वक़्त तक सँभाले
रखना जब तक कि मालिक उसे ढूँडने न
आए। फिर जानवर को उसे वापस कर देना।

3यही कुछ कर अगर तेरे हमवतन भाई का
गधा भटका हुआ नज़र आए या उस का
गुमशुदा कोट या कोई और चीज़ कहीं नज़र
आए। उसे नज़रअन्दाज़ न करना।
4अगर तू देखे कि किसी हमवतन का
गधा या बैल रास्ते में गिर गया है तो उसे
नज़रअन्दाज़ न करना। जानवर को खड़ा
करने में अपने भाई की मदद कर।

क़ुदरती इन्तिज़ाम के तहत रहना

5औरत के लिए मर्दों के कपड़े पहनना मना
है। इसी तरह मर्द के लिए औरतों के कपड़े
पहनना भी मना है। जो ऐसा करता है उस से
रब तेरे ख़ुदा को घिन आती है।
6अगर तुझे कहीं रास्ते में, किसी दरख़्त में
या ज़मीन पर घोंसला नज़र आए और परिन्दा
अपने बच्चों या अंडों पर बैठा हुआ हो तो माँ
को बच्चों समेत न पकड़ना। 7तुझे बच्चे ले
जाने की इजाज़त है लेकिन माँ को छोड़ देना
ताकि तू ख़ुशहाल और देर तक जीता रहे।
8नया मकान तामीर करते वक़्त छत पर
चारों तरफ़ दीवार बनाना। वर्ना तू उस शख़्स
की मौत का ज़िम्मादार ठहरेगा जो तेरी छत
पर से गिर जाए।
9अपने अंगूर के बाग़ में दो क़िस्म के
बीज न बोना। वर्ना सब कुछ मक़्दिस के
लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होगा, न सिर्फ़ वह
फ़सल जो तुम ने अंगूर के इलावा लगाई बल्कि
अंगूर भी।
10बैल और गधे को जोड़ कर हल न
चलाना।
11ऐसे कपड़े न पहनना जिन में बनते वक़्त
ऊन और कतान मिलाए गए हैं।
12अपनी चादर के चारों कोनों पर फुन्दने
लगाना।

इफ़्दिवाजी ज़िन्दगी की हिफ़ाज़त

13अगर कोई आदमी शादी करने के थोड़ी
देर बाद अपनी बीवी को पसन्द न करे 14और
फिर उस की बदनामी करके कहे, “इस औरत
से शादी करने के बाद मुझे पता चला कि
वह कुंवारी नहीं है” 15तो जवाब में बीवी के
वालिदैन शहर के दरवाज़े पर जमा होने वाले
बुज़ुर्गों के पास सबूत[a] ले आएँ कि बेटी शादी
से पहले कुंवारी थी। 16बीवी का बाप बुज़ुर्गों से
कहे, “मैं ने अपनी बेटी की शादी इस आदमी
से की है, लेकिन यह उस से नफ़रत करता
है। 17अब इस ने उस की बदनामी करके कहा
है, ‘मुझे पता चला कि तुम्हारी बेटी कुंवारी
नहीं है।’ लेकिन यहाँ सबूत है कि मेरी बेटी
कुंवारी थी।” फिर वालिदैन शहर के बुज़ुर्गों
को मज़कूरा कपड़ा दिखाएँ।
18तब बुज़ुर्ग उस आदमी को पकड़ कर
सज़ा दें, 19क्यूँकि उस ने एक इस्राईली कुंवारी
की बदनामी की है। इस के इलावा उसे जुर्माने
के तौर पर बीवी के बाप को चाँदी के 100
सिक्के देने पड़ेंगे। लाज़िम है कि वह शौहर
के फ़राइज़ अदा करता रहे। वह उम्र भर उसे
तलाक़ नहीं दे सकेगा।
20लेकिन अगर आदमी की बात दुरुस्त
निकले और साबित न हो सके कि बीवी शादी
से पहले कुंवारी थी 21तो उसे बाप के घर
लाया जाए। वहाँ शहर के आदमी उसे संगसार
कर दें। क्यूँकि अपने बाप के घर में रहते
हुए बदकारी करने से उस ने इस्राईल में एक
अहमक़ाना और बेदीन हरकत की है। यूँ तू
अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। 22अगर
कोई आदमी किसी की बीवी के साथ ज़िना
करे और वह पकड़े जाएँ तो दोनों को सज़ा-
ए-मौत देनी है। यूँ तू इस्राईल से बुराई मिटा
देगा।
23अगर आबादी में किसी मर्द की मुलाक़ात
किसी ऐसी कुंवारी से हो जिस की किसी और

[a] यानी वह कपड़ा जिस पर नया जोड़ा सोया हुआ था।

के साथ मंगनी हुई है और वह उस के साथ हमबिसतर हो जाए 24तो लाज़िम है कि तुम दोनों को शहर के दरवाज़े के पास ला कर संगसार करो। वजह यह है कि लड़की ने मदद के लिए न पुकारा अगरचे उस जगह लोग आबाद थे। मर्द का जुर्म यह था कि उस ने किसी और की मंगेतर की इस्मतदरी की है। यूँ तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

25लेकिन अगर मर्द ग़ैरआबाद जगह में किसी और की मंगेतर की इस्मतदरी करे तो सिर्फ़ उसी को सज़ा-ए-मौत दी जाए। 26लड़की को कोई सज़ा न देना, क्यूँकि उस ने कुछ नहीं किया जो मौत के लाइक़ हो। ज़ियादती करने वाले की हरकत उस शख़्स के बराबर है जिस ने किसी पर हम्ला करके उसे क़त्ल कर दिया है। 27चूँकि उस ने लड़की को वहाँ पाया जहाँ लोग नहीं रहते, इस लिए अगरचे लड़की ने मदद के लिए पुकारा तो भी उसे कोई न बचा सका।

28हो सकता है कोई आदमी किसी लड़की की इस्मतदरी करे जिस की मंगनी नहीं हुई है। अगर उन्हें पकड़ा जाए 29तो वह लड़की के बाप को चाँदी के 50 सिक्के दे। लाज़िम है कि वह उसी लड़की से शादी करे, क्यूँकि उस ने उस की इस्मतदरी की है। न सिर्फ़ यह बल्कि वह उम्र भर उसे तलाक़ नहीं दे सकता।

30अपने बाप की बीवी से शादी करना मना है। जो कोई यह करे वह अपने बाप की बेहुरमती करता है।

मुक़द्दस इजतिमा में शरीक होने की शराइत

23 जब इस्राईली रब के मक़्दिस के पास जमा होते हैं तो उसे हाज़िर होने की इजाज़त नहीं जो काटने या कुचलने से ख़ोजा बन गया है। 2इसी तरह वह भी मुक़द्दस इजतिमा से दूर रहे जो नाजाइज़ ताल्लुक़ात के नतीजे में पैदा हुआ है। उस की औलाद भी दसवीं पुश्त तक उस में नहीं आ सकती।

3कोई भी अम्मोनी या मोआबी मुक़द्दस इजतिमा में शरीक नहीं हो सकता। इन क़ौमों की औलाद दसवीं पुश्त तक भी इस जमाअत में हाज़िर नहीं हो सकती, 4क्यूँकि जब तुम मिस्र से निकल आए तो वह रोटी और पानी ले कर तुम से मिलने न आए। न सिर्फ़ यह बल्कि उन्हों ने मसोपुतामिया के शहर फ़तोर में जा कर बलआम बिन बओर को पैसे दिए ताकि वह तुझ पर लानत भेजे। 5लेकिन रब तेरे ख़ुदा ने बलआम की न सुनी बल्कि उस की लानत बरकत में बदल दी। क्यूँकि रब तेरा ख़ुदा तुझ से प्यार करता है। 6उम्र भर कुछ न करना जिस से इन क़ौमों की सलामती और ख़ुशहाली बढ़ जाए।

7लेकिन अदोमियों को मकरूह न समझना, क्यूँकि वह तुम्हारे भाई हैं। इसी तरह मिस्रियों को भी मकरूह न समझना, क्यूँकि तू उन के मुल्क में परदेसी मेहमान था। 8उन की तीसरी नस्ल के लोग रब के मुक़द्दस इजतिमा में शरीक हो सकते हैं।

ख़ैमागाह में नापाकी

9अपने दुश्मनों से जंग करते वक़्त अपनी लश्करगाह में हर नापाक चीज़ से दूर रहना। 10मसलन अगर कोई आदमी रात के वक़्त एहतिलाम के बाइस नापाक हो जाए तो वह लश्करगाह के बाहर जा कर शाम तक वहाँ ठहरे। 11दिन ढलते वक़्त वह नहा ले तो सूरज डूबने पर लश्करगाह में वापस आ सकता है।

12अपनी हाजत रफ़ा करने के लिए लश्करगाह से बाहर कोई जगह मुक़र्रर कर। 13जब किसी को हाजत के लिए बैठना हो तो वह इस के लिए गढ़ा खोदे और बाद में उसे मिट्टी से भर दे। इस लिए अपने सामान में खुदाई का कोई आला रखना ज़रूरी है।

14रब तेरा ख़ुदा तेरी लश्करगाह-में तेरे दरमियान ही घूमता फिरता है ताकि तू मह्फ़ूज़

रहे और दुश्मन तेरे सामने शिकस्त खाए। इस लिए लाज़िम है कि तेरी लश्करगाह उस के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो। ऐसा न हो कि अल्लाह वहाँ कोई शर्मनाक बात देख कर तुझ से दूर हो जाए।

फ़रार हुए ग़ुलामों की मदद करना

15अगर कोई ग़ुलाम तेरे पास पनाह ले तो उसे मालिक को वापस न करना। 16वह तेरे साथ और तेरे दरमियान ही रहे, वहाँ जहाँ वह बसना चाहे, उस शहर में जो उसे पसन्द आए। उसे न दबाना।

मन्दिर में इस्मतफ़रोशी मना है

17किसी देवता की ख़िदमत में इस्मत-फ़रोशी करना हर इस्राईली औरत और मर्द के लिए मना है। 18मन्नत मानते वक़्त न कस्बी का अज्र, न कुत्ते के पैसे[a] रब के मक़्दिस में लाना, क्यूँकि रब तेरे ख़ुदा को दोनों चीज़ों से घिन है।

अपने हमवतनों से सूद न लेना

19अगर कोई इस्राईली भाई तुझ से क़र्ज़ ले तो उस से सूद न लेना, ख़्वाह तू ने उसे पैसे, खाना या कोई और चीज़ दी हो। 20अपने इस्राईली भाई से सूद न ले बल्कि सिर्फ़ परदेसी से। फिर जब तू मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उस में रहेगा तो रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत देगा।

अपनी मन्नत पूरी करना

21जब तू रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर मन्नत माने तो उसे पूरा करने में देर न करना। रब तेरा ख़ुदा यक़ीनन तुझ से इस का मुतालबा करेगा। अगर तू उसे पूरा न करे तो क़ुसूरवार ठहरेगा। 22अगर तू मन्नत मानने से बाज़ रहे तो क़ुसूरवार नहीं ठहरेगा, 23लेकिन अगर तू अपनी दिली ख़ुशी से रब के हुज़ूर मन्नत माने तो हर सूरत में उसे पूरा कर।

दूसरे के बाग़ में से गुज़रने का रवय्या

24किसी हमवतन के अंगूर के बाग़ में से गुज़रते वक़्त तुझे जितना जी चाहे उस के अंगूर खाने की इजाज़त है। लेकिन अपने किसी बर्तन में फल जमा न करना। 25इसी तरह किसी हमवतन के अनाज के खेत में से गुज़रते वक़्त तुझे अपने हाथों से अनाज की बालियाँ तोड़ने की इजाज़त है। लेकिन दरान्ती इस्तेमाल न करना।

तलाक़ और दुबारा शादी

24 हो सकता है कोई आदमी किसी औरत से शादी करे लेकिन बाद में उसे पसन्द न करे, क्यूँकि उसे बीवी के बारे में किसी शर्मनाक बात का पता चल गया है। वह तलाक़नामा लिख कर उसे औरत को देता और फिर उसे घर से वापस भेज देता है। 2इस के बाद उस औरत की शादी किसी और मर्द से हो जाती है, 3और वह भी बाद में उसे पसन्द नहीं करता। वह भी तलाक़नामा लिख कर उसे औरत को देता और फिर उसे घर से वापस भेज देता है। ख़्वाह दूसरा शौहर उसे वापस भेज दे या शौहर मर जाए, 4औरत के पहले शौहर को उस से दुबारा शादी करने की इजाज़त नहीं है, क्यूँकि वह औरत उस के लिए नापाक है। ऐसी हरकत रब की नज़र में क़ाबिल-ए-घिन है। उस मुल्क को यूँ गुनाहआलूदा न करना जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है।

[a] यक़ीन से नहीं कहा जा सकता कि 'कुत्ते के पैसे' से क्या मुराद है। ग़ालिबन इस के पीछे बुतपरस्ती का कोई दस्तूर है।

मज़ीद हिदायात

5अगर किसी आदमी ने अभी अभी शादी
की हो तो तू उसे भर्ती करके जंग करने के
लिए नहीं भेज सकता। तू उसे कोई भी ऐसी
ज़िम्मादारी नहीं दे सकता, जिस से वह घर से
दूर रहने पर मज्बूर हो जाए। एक साल तक
वह ऐसी ज़िम्मादारियों से बरी रहे ताकि घर में
रह कर अपनी बीवी को ख़ुश कर सके।
6अगर कोई तुझ से उधार ले तो ज़मानत
के तौर पर उस से न उस की छोटी चक्की,
न उस की बड़ी चक्की का पाट लेना, क्यूँकि
ऐसा करने से तू उस की जान लेगा यानी तू
वह चीज़ लेगा जिस से उस का गुज़ारा होता
है।
7अगर किसी आदमी को पकड़ा जाए जिस
ने अपने हमवतन को अग़वा करके ग़ुलाम बना
लिया या बेच दिया है तो उसे सज़ा-ए-मौत
देना है। यूँ तू अपने दरमियान से बुराई मिटा
देगा।
8अगर कोई वबाई जिल्दी बीमारी तुझे लग
जाए तो बड़ी एहतियात से लावी के क़बीले के
इमामों की तमाम हिदायात पर अमल करना।
जो भी हुक्म मैं ने उन्हें दिया उसे पूरा करना।
9याद कर कि रब तेरे ख़ुदा ने मरियम के साथ
क्या किया जब तुम मिस्र से निकल कर सफ़र
कर रहे थे।

ग़रीबों के हुक़ूक़

10अपने हमवतन को उधार देते वक़्त उस
के घर में न जाना ताकि ज़मानत की कोई चीज़
मिले 11बल्कि बाहर ठहर कर इन्तिज़ार कर
कि वह ख़ुद घर से ज़मानत की चीज़ निकाल
कर तुझे दे। 12अगर वह इतना ज़रूरतमन्द हो
कि सिर्फ़ अपनी चादर दे सके तो रात के वक़्त
ज़मानत तेरे पास न रहे। 13उसे सूरज डूबने
तक वापस करना ताकि क़र्ज़दार उस में लिपट
कर सो सके। फिर वह तुझे बरकत देगा और
रब तेरा ख़ुदा तेरा यह क़दम रास्त क़रार देगा।
14ज़रूरतमन्द मज़दूर से ग़लत फ़ाइदा न
उठाना, चाहे वह इस्राईली हो या परदेसी।
15उसे रोज़ाना सूरज डूबने से पहले पहले उस
की मज़दूरी दे देना, क्यूँकि इस से उस का
गुज़ारा होता है। कहीं वह रब के हुज़ूर तेरी
शिकायत न करे और तू क़ुसूरवार ठहरे।
16वालिदैन को उन के बच्चों के जराइम के
सबब से सज़ा-ए-मौत न दी जाए, न बच्चों को
उन के वालिदैन के जराइम के सबब से। अगर
किसी को सज़ा-ए-मौत देनी हो तो उस गुनाह
के सबब से जो उस ने ख़ुद किया है।
17परदेसियों और यतीमों के हुक़ूक़ क़ाइम
रखना। उधार देते वक़्त ज़मानत के तौर पर
बेवा की चादर न लेना। 18याद रख कि तू भी
मिस्र में ग़ुलाम था और कि रब तेरे ख़ुदा ने
फ़िद्या दे कर तुझे वहाँ से छुड़ाया। इसी वजह
से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।
19अगर तू फ़सल की कटाई के वक़्त एक
पूला भूल कर खेत में छोड़ आए तो उसे
लाने के लिए वापस न जाना। उसे परदेसियों,
यतीमों और बेवाओं के लिए वहीं छोड़ देना
ताकि रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत दे।
20जब ज़ैतून की फ़सल पक गई हो तो दरख़्तों
को मार मार कर एक ही बार उन में से फल
उतार। इस के बाद उन्हें न छेड़ना। बचा हुआ
फल परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए
छोड़ देना। 21इसी तरह अपने अंगूर तोड़ने के
लिए एक ही बार बाग़ में से गुज़रना। इस के
बाद उसे न छेड़ना। बचा हुआ फल परदेसियों,
यतीमों और बेवाओं के लिए छोड़ देना। 22याद
रख कि तू ख़ुद मिस्र में ग़ुलाम था। इसी वजह
से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।

कोड़े लगाने की मुनासिब सज़ा

25 अगर लोग अपना एक दूसरे के
साथ झगड़ा ख़ुद निपटा न सकें
तो वह अपना मुआमला अदालत में पेश करें।
क़ाज़ी फ़ैसला करे कि कौन बेक़ुसूर है और
कौन मुजरिम। 2अगर मुजरिम को कोड़े लगाने

की सज़ा देनी है तो उसे क़ाज़ी के सामने ही मुँह के बल ज़मीन पर लिटाना। फिर उसे इतने कोड़े लगाए जाएँ जितनों के वह लाइक़ है। 3लेकिन उस को ज़्यादा से ज़्यादा 40 कोड़े लगाने हैं, वर्ना तेरे इस्राईली भाई की सर-ए-आम बेइज़्ज़ती हो जाएगी।

बैल का मुँह न बांधना

4जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है तो उस का मुँह बांध कर न रखना।

मरहूम भाई की बीवी से शादी करने का हुक्म

5अगर कोई शादीशुदा मर्द बेऔलाद मर जाए और उस का सगा भाई साथ रहे तो उस का फ़र्ज़ है कि बेवा से शादी करे। बेवा शौहर के ख़ानदान से हट कर किसी और से शादी न करे बल्कि सिर्फ़ अपने देवर से। 6पहला बेटा जो इस रिश्ते से पैदा होगा पहले शौहर के बेटे की हैसियत रखेगा। यूँ उस का नाम क़ाइम रहेगा।

7लेकिन अगर देवर भाबी से शादी करना न चाहे तो भाबी शहर के दरवाज़े पर जमा होने वाले बुज़ुर्गों के पास जाए और उन से कहे, “मेरा देवर मुझ से शादी करने से इन्कार करता है। वह अपना फ़र्ज़ अदा करने को तय्यार नहीं कि अपने भाई का नाम क़ाइम रखे।” 8फिर शहर के बुज़ुर्ग देवर को बुला कर उसे समझाएँ। अगर वह इस के बावुजूद भी उस से शादी करने से इन्कार करे 9तो उस की भाबी बुज़ुर्गों की मौजूदगी में उस के पास जा कर उस की एक चप्पल उतार ले। फिर वह उस के मुँह पर थूक कर कहे, “उस आदमी से ऐसा सुलूक किया जाता है जो अपने भाई की नस्ल क़ाइम रखने को तय्यार नहीं।” 10आइन्दा इस्राईल में देवर की नस्ल “नंगे पाँओ वाले की नस्ल” कहलाएगी।

झगड़े में नाज़ेबा हरकतें

11अगर दो आदमी लड़ रहे हों और एक की बीवी अपने शौहर को बचाने की ख़ातिर मुख़ालिफ़ के अज़ु-ए-तनासुल को पकड़ ले 12तो लाज़िम है कि तू औरत का हाथ काट डाले। उस पर रहम न करना।

धोका न देना

13तोलते वक़्त अपने थैले में सहीह वज़न के बाट रख, और धोका देने के लिए हल्के बाट साथ न रखना। 14इसी तरह अपने घर में अनाज की पैमाइश करने का सहीह बर्तन रख, और धोका देने के लिए छोटा बर्तन साथ न रखना। 15सहीह वज़न के बाट और पैमाइश करने के सहीह बर्तन इस्तेमाल करना ताकि तू देर तक उस मुल्क में जीता रहे जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा। 16क्यूँकि उसे हर धोकेबाज़ से घिन है।

अमालीक़ियों को सज़ा देना

17याद रहे कि अमालीक़ियों ने तुझ से क्या कुछ किया जब तुम मिस्र से निकल कर सफ़र कर रहे थे। 18जब तू थकाहारा था तो वह तुझ पर हम्ला करके पीछे पीछे चलने वाले तमाम कमज़ोरों को जान से मारते रहे। वह अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं मानते थे। 19चुनाँचे जब रब तेरा ख़ुदा तुझे इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से सुकून देगा और तू उस मुल्क में आबाद होगा जो वह तुझे मीरास में दे रहा है ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे तो अमालीक़ियों को यूँ हलाक कर कि दुनिया में उन का नाम-ओ-निशान न रहे। यह बात मत भूलना।

ज़मीन की पहली पैदावार रब को पेश करना

26 जब तू उस मुल्क में दाख़िल होगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है और तू उस पर क़ब्ज़ा करके उस में आबाद हो जाएगा 2तो जो भी फ़सल तू

काटेगा उस के पहले फल में से कुछ टोकरे में रख कर उस जगह ले जा जो रब तेरा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। 3वहाँ ख़िदमत करने वाले इमाम से कह, "आज मैं रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर एलान करता हूँ कि उस मुल्क में पहुँच गया हूँ जिस का हमें देने का वादा रब ने क़सम खा कर हमारे बापदादा से किया था।"

4तब इमाम तेरा टोकरा ले कर उसे रब तेरे ख़ुदा की क़ुर्बानगाह के सामने रख दे। 5फिर रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर कह, "मेरा बाप आवारा फिरने वाला अरामी था जो अपने लोगों को ले कर मिस्र में आबाद हुआ। वहाँ पहुँचते वक़्त उन की तादाद कम थी, लेकिन होते होते वह बड़ी और ताक़तवर क़ौम बन गए। 6लेकिन मिस्रियों ने हमारे साथ बुरा सुलूक किया और हमें दबा कर सख़्त ग़ुलामी में फंसा दिया। 7फिर हम ने चिल्ला कर रब अपने बापदादा के ख़ुदा से फ़र्याद की, और रब ने हमारी सुनी। उस ने हमारा दुख, हमारी मुसीबत और दबी हुई हालत देखी 8और बड़े इख़तियार और क़ुदरत का इज़हार करके हमें मिस्र से निकाल लाया। उस वक़्त उस ने मिस्रियों में दह्शत फैला कर बड़े मोजिज़े दिखाए। 9वह हमें यहाँ ले आया और यह मुल्क दिया जिस में दूध और शहद की कस्रत है। 10ऐ रब, अब मैं तुझे उस ज़मीन का पहला फल पेश करता हूँ जो तू ने हमें बख़्शी है।"

अपनी पैदावार का टोकरा रब अपने ख़ुदा के सामने रख कर उसे सिज्दा करना। 11ख़ुशी मनाना कि रब मेरे ख़ुदा ने मुझे और मेरे घराने को इतनी अच्छी चीज़ों से नवाज़ा है। इस ख़ुशी में अपने दरमियान रहने वाले लावियों और परदेसियों को भी शामिल करना।

फ़सल का ज़रूरतमन्दों के लिए हिस्सा

12हर तीसरे साल अपनी तमाम फ़सलों का दसवाँ हिस्सा लावियों, परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को देना ताकि वह तेरे शहरों में खाना खा कर सेर हो जाएँ। 13फिर रब अपने ख़ुदा से कह, "मैं ने वैसा ही किया है जैसा तू ने मुझे हुक्म दिया। मैं ने अपने घर से तेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हिस्सा निकाल कर उसे लावियों, परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को दिया है। मैं ने सब कुछ तेरी हिदायात के ऐन मुताबिक़ किया है और कुछ नहीं भूला। 14मातम करते वक़्त मैं ने इस मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हिस्से से कुछ नहीं खाया। मैं इसे उठा कर घर से बाहर लाते वक़्त नापाक नहीं था। मैं ने इस में से मुर्दों को भी कुछ पेश नहीं किया। मैं ने रब अपने ख़ुदा की इताअत करके वह सब कुछ किया है जो तू ने मुझे करने को फ़रमाया था। 15चुनाँचे आसमान पर अपने मक़्दिस से निगाह करके अपनी क़ौम इस्राईल को बरकत दे। उस मुल्क को भी बरकत दे जिस का वादा तू ने क़सम खा कर हमारे बापदादा से किया और जो तू ने हमें बख़्श भी दिया है, उस मुल्क को जिस में दूध और शहद की कस्रत है।"

तुम रब की क़ौम हो

16आज रब तेरा ख़ुदा फ़रमाता है कि इन अह्काम और हिदायात की पैरवी कर। पूरे दिल-ओ-जान से और बड़ी एहतियात से इन पर अमल कर।

17आज तू ने एलान किया है, "रब मेरा ख़ुदा है। मैं उस की राहों पर चलता रहूँगा, उस के अह्काम के ताबे रहूँगा और उस की सुनूँगा।" 18और आज रब ने एलान किया है, "तू मेरी क़ौम और मेरी अपनी मिलकियत है जिस तरह मैं ने तुझ से वादा किया है। अब मेरे तमाम अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार। 19जितनी भी क़ौमें मैं ने ख़ल्क़ की हैं उन सब पर मैं तुझे सरफ़राज़ करूँगा और तुझे तारीफ़, शोहरत और इज़्ज़त अता करूँगा। तू रब अपने ख़ुदा के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस क़ौम होगा जिस तरह मैं ने वादा किया है।"

ऐबाल पहाड़ पर क़ुर्बानगाह बनाना है

27 फिर मूसा ने बुज़ुर्गों से मिल कर क़ौम से कहा, "तमाम हिदायात के ताबे रहो जो मैं तुम्हें आज दे रहा हूँ। 2जब तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके उस मुल्क में दाख़िल होगे जो रब तेरा ख़ुदा तुझे दे रहा है तो वहाँ बड़े पत्थर खड़े करके उन पर सफेदी कर। 3उन पर लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ पूरी शरीअत लिख। दरया को पार करने के बाद यही कुछ कर ताकि तू उस मुल्क में दाख़िल हो जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा और जिस में दूध और शहद की कस्रत है। क्यूँकि रब तेरे बापदादा के ख़ुदा ने यह देने का तुझ से वादा किया है। 4चुनाँचे यर्दन को पार करके पत्थरों को ऐबाल पहाड़ पर खड़ा करो और उन पर सफेदी कर।

5वहाँ रब अपने ख़ुदा के लिए क़ुर्बानगाह बनाना। जो पत्थर तू उस के लिए इस्तेमाल करे उन्हें लोहे के किसी औज़ार से न तराशना। 6सिर्फ़ सालिम पत्थर इस्तेमाल कर। क़ुर्बानगाह पर रब अपने ख़ुदा को भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश कर। 7सलामती की क़ुर्बानियाँ भी उस पर चढ़ा। उन्हें वहाँ रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर खा कर ख़ुशी मना। 8वहाँ खड़े किए गए पत्थरों पर शरीअत के तमाम अल्फ़ाज़ साफ़ साफ़ लिखे जाएँ।"

ऐबाल पहाड़ पर से लानत

9फिर मूसा ने लावी के क़बीले के इमामों से मिल कर तमाम इस्राईलियों से कहा, "ऐ इस्राईल, ख़ामोशी से सुन। अब तू रब अपने ख़ुदा की क़ौम बन गया है, 10इस लिए उस का फ़रमाँबरदार रह और उस के उन अह्काम पर अमल कर जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ।"

11उसी दिन मूसा ने इस्राईलियों को हुक्म दे कर कहा, 12"दरया-ए-यर्दन को पार करने के बाद शमाऊन, लावी, यहूदाह, इश्कार, यूसुफ़ और बिनयमीन के क़बीले गरिज़ीम पहाड़ पर खड़े हो जाएँ। वहाँ वह बरकत के अल्फ़ाज़ बोलें। 13बाक़ी क़बीले यानी रूबिन, जद, आशर, ज़बूलून, दान और नफ़्ताली ऐबाल पहाड़ पर खड़े हो कर लानत के अल्फ़ाज़ बोलें।

14फिर लावी तमाम लोगों से मुख़ातिब हो कर ऊँची आवाज़ से कहें,

15'उस पर लानत जो बुत तराश कर या ढाल कर चुपके से खड़ा करे। रब को कारीगर के हाथों से बनी हुई ऐसी चीज़ से घिन है।'

जवाब में सब लोग कहें, 'आमीन!'

16फिर लावी कहें, 'उस पर लानत जो अपने बाप या माँ की तह्क़ीर करे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

17'उस पर लानत जो अपने पड़ोसी की ज़मीन की हुदूद आगे पीछे करे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

18'उस पर लानत जो किसी अंधे की राहनुमाई करके उसे ग़लत रास्ते पर ले जाए।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

19'उस पर लानत जो परदेसियों, यतीमों या बेवाओं के हुक़ूक़ क़ाइम न रखे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

20'उस पर लानत जो अपने बाप की बीवी से हमबिसतर हो जाए, क्यूँकि वह अपने बाप की बेहुरमती करता है।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

21'उस पर लानत जो जानवर से जिन्सी ताल्लुक़ रखे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

22'उस पर लानत जो अपनी सगी बहन, अपने बाप की बेटी या अपनी माँ की बेटी से हमबिसतर हो जाए।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

23'उस पर लानत जो अपनी सास से हमबिसतर हो जाए।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

24'उस पर लानत जो चुपके से अपने हमवतन को क़त्ल कर दे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

25 ‘उस पर लानत जो पैसे ले कर किसी
बेक़ुसूर शख़्स को क़त्ल करे।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’
26 ‘उस पर लानत जो इस शरीअत की बातें
क़ाइम न रखे, न इन पर अमल करे।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’

फ़रमाँबरदारी की बरकतें

28 रब तेरा ख़ुदा तुझे दुनिया की
तमाम क़ौमों पर सरफ़राज़ करेगा।
शर्त यह है कि तू उस की सुने और एहतियात
से उस के उन तमाम अह्काम पर अमल करे
जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 2रब अपने ख़ुदा का
फ़रमाँबरदार रह तो तुझे हर तरह की बरकत
हासिल होगी। 3रब तुझे शहर और देहात में
बरकत देगा। 4तेरी औलाद फले फूलेगी, तेरी
अच्छी-ख़ासी फ़सलें पकेंगी, तेरे गाय-बैलों
और भेड़-बकरियों के बच्चे तरक़्क़ी करेंगे।
5तेरा टोकरा फल से भरा रहेगा, और आटा
गूँधने का तेरा बर्तन आटे से ख़ाली नहीं होगा।
6रब तुझे घर में आते और वहाँ से निकलते
वक़्त बरकत देगा।
7जब तेरे दुश्मन तुझ पर हम्ला करेंगे तो वह
रब की मदद से शिकस्त खाएँगे। गो वह मिल
कर तुझ पर हम्ला करें तो भी तू उन्हें चारों
तरफ़ मुन्तशिर कर देगा।
8अल्लाह तेरे हर काम में बरकत देगा।
अनाज की कस्रत के सबब से तेरे गोदाम
भरे रहेंगे। रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क
में बरकत देगा जो वह तुझे देने वाला है।
9रब अपनी क़सम के मुताबिक़ तुझे अपनी
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस क़ौम बनाएगा अगर तू
उस के अह्काम पर अमल करे और उस की
राहों पर चले। 10फिर दुनिया की तमाम क़ौमें
तुझ से ख़ौफ़ खाएँगी, क्यूँकि वह देखेंगी कि तू
रब की क़ौम है और उस के नाम से कहलाता
है।
11रब तुझे बहुत औलाद देगा, तेरे रेवड़
बढ़ाएगा और तुझे कस्रत की फ़सलें देगा।
यूँ वह तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जिस
का वादा उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा
से किया। 12रब आसमान के ख़ज़ानों को
खोल कर वक़्त पर तेरी ज़मीन पर बारिश
बरसाएगा। वह तेरे हर काम में बरकत देगा।
तू बहुत सी क़ौमों को उधार देगा लेकिन किसी
का भी क़र्ज़दार नहीं होगा। 13रब तुझे क़ौमों
की दुम नहीं बल्कि उन का सर बनाएगा।
तू तरक़्क़ी करता जाएगा और ज़वाल का
शिकार नहीं होगा। लेकिन शर्त यह है कि तू
रब अपने ख़ुदा के वह अह्काम मान कर उन
पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 14जो
कुछ भी मैं ने तुझे करने को कहा है उस से
किसी तरह भी हट कर ज़िन्दगी न गुज़ारना।
न दीगर माबूदों की पैरवी करना, न उन की
ख़िदमत करना।

नाफ़रमानी की लानतें

15 लेकिन अगर तू रब अपने ख़ुदा की न सुने
और उस के उन तमाम अह्काम पर अमल न
करे जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ तो हर तरह की
लानत तुझ पर आएगी। 16शहर और देहात में
तुझ पर लानत होगी। 17तेरे टोकरे और आटा
गूँधने के तेरे बर्तन पर लानत होगी। 18तेरी
औलाद पर, तेरे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों
के बच्चों पर और तेरे खेतों पर लानत होगी।
19घर में आते और वहाँ से निकलते वक़्त तुझ
पर लानत होगी। 20अगर तू ग़लत काम करके
रब को छोड़े तो जो कुछ भी तू करे वह तुझ पर
लानतें, परेशानियाँ और मुसीबतें आने देगा।
तब तेरा जल्दी से सत्यानास होगा, और तू
हलाक हो जाएगा।
21रब तुझ में वबाई बीमारियाँ फैलाएगा
जिन के सबब से तुझ में से कोई उस मुल्क
में ज़िन्दा नहीं रहेगा जिस पर तू अभी क़ब्ज़ा
करने वाला है। 22रब तुझे मोहलक बीमारियों,
बुख़ार और सूजन से मारेगा। झुलसाने वाली
गर्मी, काल, पतरोग और फफूँदी तेरी फ़सलें
ख़त्म करेगी। ऐसी मुसीबतों के बाइस तू तबाह

हो जाएगा। 23तेरे ऊपर आसमान पीतल जैसा सख़्त होगा जबकि तेरे नीचे ज़मीन लोहे की मानिन्द होगी। 24बारिश की जगह रब तेरे मुल्क पर गर्द और रेत बरसाएगा जो आसमान से तेरे मुल्क पर छा कर तुझे बर्बाद कर देगी।

25जब तू अपने दुश्मनों का सामना करे तो रब तुझे शिकस्त दिलाएगा। गो तू मिल कर उन की तरफ़ बढ़ेगा तो भी उन से भाग कर चारों तरफ़ मुन्तशिर हो जाएगा। दुनिया के तमाम ममालिक में लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे जब वह तेरी मुसीबतें देखेंगे। 26परिन्दे और जंगली जानवर तेरी लाशों को खा जाएंगे, और उन्हें भगाने वाला कोई नहीं होगा। 27रब तुझे उन ही फोड़ों से मारेगा जो मिस्रियों को निकले थे। ऐसे जिल्दी अमराज़ फैलेंगे जिन का इलाज नहीं है। 28तू पागलपन का शिकार हो जाएगा, रब तुझे अंधेपन और ज़हनी अब्तरी में मुब्तला कर देगा। 29दोपहर के वक़्त भी तू अंधे की तरह टटोल टटोल कर फिरेगा। जो कुछ भी तू करे उस में नाकाम रहेगा। रोज़-ब-रोज़ लोग तुझे दबाते और लूटते रहेंगे, और तुझे बचाने वाला कोई नहीं होगा।

30तेरी मंगनी किसी औरत से होगी तो कोई और आ कर उस की इस्मतदरी करेगा। तू अपने लिए घर बनाएगा लेकिन उस में नहीं रहेगा। तू अपने लिए अंगूर का बाग़ लगाएगा लेकिन उस का फल नहीं खाएगा। 31तेरे देखते देखते तेरा बैल ज़बह किया जाएगा, लेकिन तू उस का गोश्त नहीं खाएगा। तेरा गधा तुझ से छीन लिया जाएगा और वापस नहीं किया जाएगा। तेरी भेड़-बकरियाँ दुश्मन को दी जाएँगी, और उन्हें छुड़ाने वाला कोई नहीं होगा। 32तेरे बेटे-बेटियों को किसी दूसरी क़ौम को दिया जाएगा, और तू कुछ नहीं कर सकेगा। रोज़-ब-रोज़ तू अपने बच्चों के इन्तिज़ार में उफ़क़ को तकता रहेगा, लेकिन देखते देखते तेरी आँखें धुन्दला जाएँगी।

33एक अजनबी क़ौम तेरी ज़मीन की पैदावार और तेरी मेहनत-ओ-मशक़्क़त की कमाई ले जाएगी। तुझे उम्र भर ज़ुल्म और दबाओ बर्दाश्त करना पड़ेगा।

34जो हौलनाक बातें तेरी आँखें देखेंगी उन से तू पागल हो जाएगा। 35रब तुझे तक्लीफ़दिह और लाइलाज फोड़ों से मारेगा जो तल्वे से ले कर चाँदी तक पूरे जिस्म पर फैल कर तेरे घुटनों और टाँगों को मुतअस्सिर करेंगे।

36रब तुझे और तेरे मुक़र्रर किए हुए बादशाह को एक ऐसे मुल्क में ले जाएगा जिस से न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे। वहाँ तू दीगर माबूदों यानी लकड़ी और पत्थर के बुतों की ख़िदमत करेगा। 37जिस जिस क़ौम में रब तुझे हाँक देगा वहाँ तुझे देख कर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे और वह तेरा मज़ाक़ उड़ाएँगे। तू उन के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल होगा।

38तू अपने खेतों में बहुत बीज बोने के बावुजूद कम ही फ़सल काटेगा, क्यूँकि टिड्डे उसे खा जाएंगे। 39तू अंगूर के बाग़ लगा कर उन पर ख़ूब मेहनत करेगा लेकिन न उन के अंगूर तोड़ेगा, न उन की मै पिएगा, क्यूँकि कीड़े उन्हें खा जाएंगे। 40गो तेरे पूरे मुल्क में ज़ैतून के दरख़्त होंगे तो भी तू उन का तेल इस्तेमाल नहीं कर सकेगा, क्यूँकि ज़ैतून ख़राब हो कर ज़मीन पर गिर जाएंगे।

41तेरे बेटे-बेटियाँ तो होंगे, लेकिन तू उन से महरूम हो जाएगा। क्यूँकि उन्हें गिरिफ़्तार करके किसी अजनबी मुल्क में ले जाया जाएगा। 42टिड्डियों के ग़ोल तेरे मुल्क के तमाम दरख़्तों और फ़सलों पर क़ब्ज़ा कर लेंगे। 43तेरे दरमियान रहने वाला परदेसी तुझ से बढ़ कर तरक़्क़ी करता जाएगा जबकि तुझ पर ज़वाल आ जाएगा। 44उस के पास तुझे उधार देने के लिए पैसे होंगे जबकि तेरे पास उसे उधार देने को कुछ नहीं होगा। आख़िर में वह सर और तू दुम होगा।

45यह तमाम लानतें तुझ पर आन पड़ेंगी। जब तक तू तबाह न हो जाए वह तेरा ताक़्क़ुब

करती रहेंगी, क्यूँकि तू ने रब अपने ख़ुदा की न
सुनी और उस के अह्काम पर अमल न किया।
46यूँ यह हमेशा तक तेरे और तेरी औलाद के
लिए एक मोजिज़ाना और इब्रतअंगेज़ इलाही
निशान रहेंगी।
47चूँकि तू ने दिली ख़ुशी से उस वक़्त रब
अपने ख़ुदा की ख़िदमत न की जब तेरे पास
सब कुछ था 48इस लिए तू उन दुश्मनों की
ख़िदमत करेगा जिन्हें रब तेरे ख़िलाफ़ भेजेगा।
तू भूका, प्यासा, नंगा और हर चीज़ का
हाजतमन्द होगा, और रब तेरी गर्दन पर लोहे
का जूआ रख कर तुझे मुकम्मल तबाही तक
ले जाएगा।
49रब तेरे ख़िलाफ़ एक क़ौम खड़ी करेगा
जो दूर से बल्कि दुनिया की इन्तिहा से आ कर
उक़ाब की तरह तुझ पर झपट्टा मारेगी। वह
ऐसी ज़बान बोलेगी जिस से तू वाक़िफ़ नहीं
होगा। 50वह सख़्त क़ौम होगी जो न बुज़ुर्गों का
लिहाज़ करेगी और न बच्चों पर रहम करेगी।
51वह तेरे मवेशी और फ़सलें खा जाएगी और
तू भूके मर जाएगा। तू हलाक हो जाएगा,
क्यूँकि तेरे लिए कुछ नहीं बचेगा, न अनाज, न
मै, न तेल, न गाय-बैलों या भेड़-बकरियों के
बच्चे। 52दुश्मन तेरे मुल्क के तमाम शहरों का
मुहासरा करेगा। आख़िरकार जिन ऊँची और
मज़बूत फ़सीलों पर तू एतिमाद करेगा वह भी
सब गिर पड़ेंगी। दुश्मन उस मुल्क का कोई भी
शहर नहीं छोड़ेगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देने
वाला है।
53जब दुश्मन तेरे शहरों का मुहासरा करेगा
तो तू उन में इतना शदीद भूका हो जाएगा कि
अपने बच्चों को खा लेगा जो रब तेरे ख़ुदा ने
तुझे दिए हैं। 54-55मुहासरे के दौरान तुम में से
सब से शरीफ़ और शाइस्ता आदमी भी अपने
बच्चे को ज़बह करके खाएगा, क्यूँकि उस के
पास कोई और ख़ुराक नहीं होगी। उस की
हालत इतनी बुरी होगी कि वह उसे अपने सगे
भाई, बीवी या बाक़ी बच्चों के साथ तक़्सीम
करने के लिए तय्यार नहीं होगा। 56-57तुम में से
सब से शरीफ़ और शाइस्ता औरत भी ऐसा ही
करेगी, अगरचे पहले वह इतनी नाज़ुक थी कि
फ़र्श को अपने तल्वे से छूने की जुरअत नहीं
करती थी। मुहासरे के दौरान उसे इतनी शदीद
भूक होगी कि जब उस के बच्चा पैदा होगा
तो वह छुप छुप कर उसे खाएगी। न सिर्फ़
यह बल्कि वह पैदाइश के वक़्त बच्चे के साथ
ख़ारिज हुई आलाइश भी खाएगी और उसे
अपने शौहर या अपने बाक़ी बच्चों में बाँटने
के लिए तय्यार नहीं होगी। इतनी मुसीबत तुझ
पर मुहासरे के दौरान आएगी।
58ग़रज़ एहतियात से शरीअत की उन
तमाम बातों की पैरवी कर जो इस किताब
में दर्ज हैं, और रब अपने ख़ुदा के पुरजलाल
और बारोब नाम का ख़ौफ़ मानना। 59वर्ना
वह तुझ और तेरी औलाद में सख़्त और
लाइलाज अमराज़ और ऐसी दह्शतनाक
वबाएँ फैलाएगा जो रोकी नहीं जा सकेंगी।
60जिन तमाम वबाओं से तू मिस्र में दह्शत
खाता था वह अब तेरे दरमियान फैल कर तेरे
साथ चिमटी रहेंगी। 61न सिर्फ़ शरीअत की
इस किताब में बयान की हुई बीमारियाँ और
मुसीबतें तुझ पर आएँगी बल्कि रब और भी
तुझ पर भेजेगा, जब तक कि तू हलाक न हो
जाए।
62अगर तू रब अपने ख़ुदा की न सुने तो
आख़िरकार तुम में से बहुत कम बचे रहेंगे,
गो तुम पहले सितारों जैसे बेशुमार थे। 63जिस
तरह पहले रब ख़ुशी से तुम्हें कामयाबी देता
और तुम्हारी तादाद बढ़ाता था उसी तरह अब
वह तुम्हें बर्बाद और तबाह करने में ख़ुशी
मह्सूस करेगा। तुम्हें ज़बरदस्ती उस मुल्क से
निकाला जाएगा जिस पर तू इस वक़्त दाख़िल
हो कर क़ब्ज़ा करने वाला है। 64तब रब तुझे
दुनिया के एक सिरे से ले कर दूसरे सिरे तक
तमाम क़ौमों में मुन्तशिर कर देगा। वहाँ तू
दीगर माबूदों की पूजा करेगा, ऐसे देवताओं
की जिन से न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़
थे।

65उन ममालिक में भी न तू आराम-ओ-
सुकून पाएगा, न तेरे पाँओ जम जाएंगे। रब
होने देगा कि तेरा दिल थरथराता रहेगा, तेरी
आँखें परेशानी के बाइस धुन्दला जाएँगी और
तेरी जान से उम्मीद की हर किरन जाती रहेगी।
66तेरी जान हर वक़्त ख़तरे में होगी और तू
दिन रात दह्शत खाते हुए मरने की तवक़्क़ो
करेगा। 67सुब्ह उठ कर तू कहेगा, "काश शाम
हो!" और शाम के वक़्त, "काश सुब्ह हो!"
क्यूँकि जो कुछ तू देखेगा उस से तेरे दिल को
दह्शत घेर लेगी।

68रब तुझे जहाज़ों में बिठा कर मिस्र वापस
ले जाएगा अगरचे मैं ने कहा था कि तू उसे
दुबारा कभी नहीं देखेगा। वहाँ पहुँच कर तुम
अपने दुश्मनों से बात करके अपने आप को
ग़ुलाम के तौर पर बेचने की कोशिश करोगे,
लेकिन कोई भी तुम्हें ख़रीदना नहीं चाहेगा।"

मोआब में रब के साथ नया अह्द

29 जब इस्राईली मोआब में थे तो
रब ने मूसा को हुक्म दिया कि
इस्राईलियों के साथ एक और अह्द बांधे।
यह उस अह्द के इलावा था जो रब होरिब
यानी सीना पर उन के साथ बांध चुका था।
2इस सिलसिले में मूसा ने तमाम इस्राईलियों
को बुला कर कहा, "तुम ने ख़ुद देखा कि
रब ने मिस्र के बादशाह फ़िरऔन, उस के
मुलाज़िमों और पूरे मुल्क के साथ क्या कुछ
किया। 3तुम ने अपनी आँखों से वह बड़ी
आज़माइशें, इलाही निशान और मोजिज़े देखे
जिन के ज़रीए रब ने अपनी क़ुदरत का इज़हार
किया।

4मगर अफ़्सोस, आज तक रब ने तुम्हें न
समझदार दिल अता किया, न आँखें जो देख
सकें या कान जो सुन सकें। 5रेगिस्तान में मैं
ने 40 साल तक तुम्हारी राहनुमाई की। इस
दौरान न तुम्हारे कपड़े फटे और न तुम्हारे जूते
घिसे। 6न तुम्हारे पास रोटी थी, न मै या मै
जैसी कोई और चीज़। तो भी रब ने तुम्हारी
ज़रूरियात पूरी कीं ताकि तुम सीख लो कि
वही रब तुम्हारा ख़ुदा है।

7फिर हम यहाँ आए तो हस्बोन का बादशाह
सीहोन और बसन का बादशाह ओज निकल
कर हम से लड़ने आए। लेकिन हम ने उन्हें
शिकस्त दी। 8उन के मुल्क पर क़ब्ज़ा करके
हम ने उसे रूबिन, जद और मनस्सी के आधे
क़बीले को मीरास में दिया। 9अब एहतियात
से इस अह्द की तमाम शराइत पूरी करो ताकि
तुम हर बात में कामयाब हो।

10इस वक़्त तुम सब रब अपने ख़ुदा के
हुज़ूर खड़े हो, तुम्हारे क़बीलों के सरदार,
तुम्हारे बुज़ुर्ग, निगहबान, मर्द, 11औरतें और
बच्चे। तेरे दरमियान रहने वाले परदेसी भी
लक्कड़हारों से ले कर पानी भरने वालों तक
तेरे साथ यहाँ हाज़िर हैं। 12तू इस लिए यहाँ
जमा हुआ है कि रब अपने ख़ुदा का वह अह्द
तस्लीम करे जो वह आज क़सम खा कर तेरे
साथ बांध रहा है। 13इस से वह आज इस की
तस्दीक़ कर रहा है कि तू उस की क़ौम और
वह तेरा ख़ुदा है यानी वही बात जिस का वादा
उस ने तुझ से और तेरे बापदादा इब्राहीम,
इस्हाक़ और याक़ूब से किया था। 14-15लेकिन
मैं यह अह्द क़सम खा कर न सिर्फ़ तुम्हारे
साथ जो हाज़िर हो बांध रहा हूँ बल्कि तुम्हारी
आने वाली नस्लों के साथ भी।

बुतपरस्ती की सज़ा

16तुम ख़ुद जानते हो कि हम मिस्र में किस
तरह ज़िन्दगी गुज़ारते थे। यह भी तुम्हें याद
है कि हम किस तरह मुख़्तलिफ़ ममालिक में
से गुज़रते हुए यहाँ तक पहुँचे। 17तुम ने उन
के नफ़रतअंगेज़ बुत देखे जो लकड़ी, पत्थर,
चाँदी और सोने के थे। 18ध्यान दो कि यहाँ
मौजूद कोई भी मर्द, औरत, कुम्बा या क़बीला
रब अपने ख़ुदा से हट कर दूसरी क़ौमों के
देवताओं की पूजा न करे। ऐसा न हो कि
तुम्हारे दरमियान कोई जड़ फूट कर ज़हरीला
और कड़वा फल लाए।

19तुम सब ने वह लानतें सुनी हैं जो रब
नाफ़रमानों पर भेजेगा। तो भी हो सकता है
कि कोई अपने आप को रब की बरकत का
वारिस समझ कर कहे, "बेशक मैं अपनी
ग़लत राहों से हटने के लिए तय्यार नहीं हूँ,
लेकिन कोई बात नहीं। मैं मह्फ़ूज़ रहूँगा।"
ख़बरदार, ऐसी हरकत से वह न सिर्फ़ अपने
ऊपर बल्कि पूरे मुल्क पर तबाही लाएगा।[a]
20रब कभी भी उसे मुआफ़ करने पर आमादा
नहीं होगा बल्कि वह उसे अपने ग़ज़ब और
ग़ैरत का निशाना बनाएगा। इस किताब में
दर्ज तमाम लानतें उस पर आएँगी, और रब
दुनिया से उस का नाम-ओ-निशान मिटा देगा।
21वह उसे पूरी जमाअत से अलग करके उस
पर अह्द की वह तमाम लानतें लाएगा जो
शरीअत की इस किताब में लिखी हुई हैं।

22मुस्तक़बिल में तुम्हारी औलाद और
दूरदराज़ ममालिक से आने वाले मुसाफ़िर
उन मुसीबतों और अमराज़ का असर देखेंगे
जिन से रब ने मुल्क को तबाह किया होगा।
23चारों तरफ़ ज़मीन झुलसी हुई और गंधक
और नमक से ढकी हुई नज़र आएगी। बीज
उस में बोया नहीं जाएगा, क्यूँकि ख़ुदरौ पौदों
तक कुछ नहीं उगेगा। तुम्हारा मुल्क सदूम,
अमूरा, अदमा और ज़बोईम की मानिन्द होगा
जिन को रब ने अपने ग़ज़ब में तबाह किया।
24तमाम क़ौमें पूछेंगी, 'रब ने इस मुल्क के
साथ ऐसा क्यूँ किया? उस के सख़्त ग़ज़ब
की क्या वजह थी?' 25उन्हें जवाब मिलेगा,
'वजह यह है कि इस मुल्क के बाशिन्दों ने रब
अपने बापदादा के ख़ुदा का अह्द तोड़ दिया
जो उस ने उन्हें मिस्र से निकालते वक़्त उन
से बांधा था। 26उन्हों ने जा कर दीगर माबूदों
की ख़िदमत की और उन्हें सिज्दा किया जिन
से वह पहले वाक़िफ़ नहीं थे और जो रब ने
उन्हें नहीं दिए थे। 27इसी लिए उस का ग़ज़ब
इस मुल्क पर नाज़िल हुआ और वह उस पर
वह तमाम लानतें लाया जिन का ज़िक्र इस
किताब में है। 28वह इतना ग़ुस्से हुआ कि उस
ने उन्हें जड़ से उखाड़ कर एक अजनबी मुल्क
में फैंक दिया जहाँ वह आज तक आबाद हैं।'

29बहुत कुछ पोशीदा है, और सिर्फ़ रब
हमारा ख़ुदा उस का इल्म रखता है। लेकिन
उस ने हम पर अपनी शरीअत का इन्किशाफ़
कर दिया है। लाज़िम है कि हम और हमारी
औलाद उस के फ़रमाँबरदार रहें।

तौबा के मुसबत नतीजे

30 मैं ने तुझे बताया है कि तेरे लिए
क्या कुछ बरकत का और क्या
कुछ लानत का बाइस है। जब रब तेरा ख़ुदा
तुझे तेरी ग़लत हरकतों के सबब से मुख़्तलिफ़
क़ौमों में मुन्तशिर कर देगा तो तू मेरी बातें मान
जाएगा। 2तब तू और तेरी औलाद रब अपने
ख़ुदा के पास वापस आएँगे और पूरे दिल-ओ-
जान से उस की सुन कर उन तमाम अह्काम
पर अमल करेंगे जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ।
3फिर रब तेरा ख़ुदा तुझे बहाल करेगा और
तुझ पर रहम करके तुझे उन तमाम क़ौमों से
निकाल कर जमा करेगा जिन में उस ने तुझे
मुन्तशिर कर दिया था। 4हाँ, रब तेरा ख़ुदा तुझे
हर जगह से जमा करके वापस लाएगा, चाहे
तू सब से दूर मुल्क में क्यूँ न पड़ा हो। 5वह तुझे
तेरे बापदादा के मुल्क में लाएगा, और तू उस
पर क़ब्ज़ा करेगा। फिर वह तुझे तेरे बापदादा
से ज़्यादा कामयाबी बख़्शेगा, और तेरी तादाद
ज़्यादा बढ़ाएगा।

6ख़तना रब की क़ौम का ज़ाहिरी निशान
है। लेकिन उस वक़्त रब तेरा ख़ुदा तेरे और
तेरी औलाद का बातिनी ख़तना करेगा ताकि
तू उसे पूरे दिल-ओ-जान से प्यार करे और
जीता रहे। 7जो लानतें रब तेरा ख़ुदा तुझ पर
लाया था उन्हें वह अब तेरे दुश्मनों पर आने
देगा, उन पर जो तुझ से नफ़रत रखते और

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : सेराब ज़मीन ख़ुश्क ज़मीन के साथ
तबाह हो जाएगी।

तुझे ईज़ा पहुँचाते हैं। 8क्यूँकि तू दुबारा रब की
सुनेगा और उस के तमाम अह्काम की पैरवी
करेगा जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 9जो कुछ
भी तू करेगा उस में रब तुझे बड़ी कामयाबी
बख़्शेगा, और तुझे कस्रत की औलाद, मवेशी
और फ़सलें हासिल होंगी। क्यूँकि जिस तरह
वह तेरे बापदादा को कामयाबी देने में ख़ुशी
मह्सूस करता था उसी तरह वह तुझे भी
कामयाबी देने में ख़ुशी मह्सूस करेगा।
10शर्त सिर्फ़ यह है कि तू रब अपने ख़ुदा
की सुने, शरीअत में दर्ज उस के अह्काम पर
अमल करे और पूरे दिल-ओ-जान से उस की
तरफ़ रुजू लाए।
11जो अह्काम मैं आज तुझे दे रहा हूँ न
वह हद से ज़्यादा मुश्किल हैं, न तेरी पहुँच से
बाहर। 12वह आसमान पर नहीं हैं कि तू कहे,
'कौन आसमान पर चढ़ कर हमारे लिए यह
अह्काम नीचे ले आए ताकि हम उन्हें सुन सकें
और उन पर अमल कर सकें?' 13वह समुन्दर
के पार भी नहीं हैं कि तू कहे, 'कौन समुन्दर
को पार करके हमारे लिए यह अह्काम लाएगा
ताकि हम उन्हें सुन सकें और उन पर अमल
कर सकें?' 14क्यूँकि यह कलाम तेरे निहायत
क़रीब बल्कि तेरे मुँह और दिल में मौजूद
है। चुनाँचे उस पर अमल करने में कोई भी
रुकावट नहीं है।

ज़िन्दगी या मौत का चुनाओ

15देख, आज मैं तुझे दो रास्ते पेश करता
हूँ। एक ज़िन्दगी और ख़ुशहाली की तरफ़ ले
जाता है जबकि दूसरा मौत और हलाकत की
तरफ़। 16आज मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि रब
अपने ख़ुदा को प्यार कर, उस की राहों पर
चल और उस के अह्काम के ताबे रह। फिर
तू ज़िन्दा रह कर तरक़्क़ी करेगा, और रब तेरा
ख़ुदा तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जिस में तू
दाख़िल होने वाला है।
17लेकिन अगर तेरा दिल इस रास्ते से हट
कर नाफ़रमानी करे तो बरकत की तवक़्क़ो
न कर। अगर तू आज़माइश में पड़ कर दीगर
माबूदों को सिज्दा और उन की ख़िदमत करे
18तो तुम ज़रूर तबाह हो जाओगे। आज मैं
एलान करता हूँ कि इस सूरत में तुम ज़्यादा देर
तक उस मुल्क में आबाद नहीं रहोगे जिस में
तू दरया-ए-यर्दन को पार करके दाख़िल होगा
ताकि उस पर क़ब्ज़ा करे।
19आज आसमान और ज़मीन तुम्हारे
ख़िलाफ़ मेरे गवाह हैं कि मैं ने तुम्हें ज़िन्दगी
और बरकतों का रास्ता और मौत और लानतों
का रास्ता पेश किया है। अब ज़िन्दगी का
रास्ता इख़तियार कर ताकि तू और तेरी
औलाद ज़िन्दा रहे। 20रब अपने ख़ुदा को प्यार
कर, उस की सुन और उस से लिपटा रह।
क्यूँकि वही तेरी ज़िन्दगी है और वही करेगा
कि तू देर तक उस मुल्क में जीता रहेगा जिस
का वादा उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा
इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया था।"

यशूअ को मूसा की जगह मुक़र्रर किया जाता है

31 मूसा ने जा कर तमाम इस्राईलियों
से मज़ीद कहा,
2"अब मैं 120 साल का हो चुका हूँ। मेरा
चलना फिरना मुश्किल हो गया है। और वैसे
भी रब ने मुझे बताया है, 'तू दरया-ए-यर्दन को
पार नहीं करेगा।' 3रब तेरा ख़ुदा ख़ुद तेरे आगे
आगे जा कर यर्दन को पार करेगा। वही तेरे
आगे आगे इन क़ौमों को तबाह करेगा ताकि
तू उन के मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सके। दरया
को पार करते वक़्त यशूअ तेरे आगे चलेगा
जिस तरह रब ने फ़रमाया है। 4रब वहाँ के
लोगों को बिलकुल उसी तरह तबाह करेगा
जिस तरह वह अमोरियों को उन के बादशाहों
सीहोन और ओज समेत तबाह कर चुका है।
5रब तुम्हें उन पर ग़ालिब आने देगा। उस वक़्त
तुम्हें उन के साथ वैसा सुलूक करना है जैसा मैं
ने तुम्हें बताया है। 6मज़बूत और दिलेर हो। उन
से ख़ौफ़ न खाओ, क्यूँकि रब तेरा ख़ुदा तेरे

साथ चलता है। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी तर्क नहीं करेगा।"

7इस के बाद मूसा ने तमाम इस्राईलियों के सामने यशूअ को बुलाया और उस से कहा, "मज़बूत और दिलेर हो, क्यूँकि तू इस क़ौम को उस मुल्क में ले जाएगा जिस का वादा रब ने क़सम खा कर उन के बापदादा से किया था। लाज़िम है कि तू ही उसे तक़्सीम करके हर क़बीले को उस का मौरूसी इलाक़ा दे। 8रब ख़ुद तेरे आगे आगे चलते हुए तेरे साथ होगा। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी नहीं तर्क करेगा। ख़ौफ़ न खाना, न घबराना।"

हर सात साल के बाद शरीअत की तिलावत

9मूसा ने यह पूरी शरीअत लिख कर इस्राईल के तमाम बुज़ुर्गों और लावी के क़बीले के उन इमामों के सपुर्द की जो सफ़र करते वक़्त अह्द का सन्दूक़ उठा कर ले चलते थे। उस ने उन से कहा, 10-11"हर सात साल के बाद इस शरीअत की तिलावत करना, यानी बहाली के साल में जब तमाम क़र्ज़ मन्सूख़ किए जाते हैं। तिलावत उस वक़्त करना है जब इस्राईली झोंपड़ियों की ईद के लिए रब अपने ख़ुदा के सामने उस जगह हाज़िर होंगे जो वह मक़्दिस के लिए चुनेगा। 12तमाम लोगों को मर्दों, औरतों, बच्चों और परदेसियों समेत वहाँ जमा करना ताकि वह सुन कर सीखें, रब तुम्हारे ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें और एहतियात से इस शरीअत की बातों पर अमल करें। 13लाज़िम है कि उन की औलाद जो इस शरीअत से नावाक़िफ़ है इसे सुने और सीखे ताकि उम्र भर उस मुल्क में रब तुम्हारे ख़ुदा का ख़ौफ़ माने जिस पर तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके क़ब्ज़ा करोगे।"

रब मूसा को आख़िरी हिदायात देता है

14रब ने मूसा से कहा, "अब तेरी मौत क़रीब है। यशूअ को बुला कर उस के साथ मुलाक़ात के ख़ैमे में हाज़िर हो जा। वहाँ मैं उसे उस की ज़िम्मादारियाँ सौंपूँगा।"

मूसा और यशूअ आ कर ख़ैमे में हाज़िर हुए 15तो रब ख़ैमे के दरवाज़े पर बादल के सतून में ज़ाहिर हुआ। 16उस ने मूसा से कहा, "तू जल्द ही मर कर अपने बापदादा से जा मिलेगा। लेकिन यह क़ौम मुल्क में दाख़िल होने पर ज़िना करके उस के अजनबी देवताओं की पैरवी करने लग जाएगी। वह मुझे तर्क करके वह अह्द तोड़ देगी जो मैं ने उन के साथ बांधा है। 17फिर मेरा ग़ज़ब उन पर भड़केगा। मैं उन्हें छोड़ कर अपना चेहरा उन से छुपा लूँगा। तब उन्हें कच्चा चबा लिया जाएगा और बहुत सारी हैबतनाक मुसीबतें उन पर आएँगी। उस वक़्त वह कहेंगे, 'क्या यह मुसीबतें इस वजह से हम पर नहीं आईं कि रब हमारे साथ नहीं है?' 18और ऐसा ही होगा। मैं ज़रूर अपना चेहरा उन से छुपाए रखूँगा, क्यूँकि दीगर माबूदों के पीछे चलने से उन्हों ने एक निहायत शरीर क़दम उठाया होगा।

19अब ज़ैल का गीत लिख कर इस्राईलियों को यूँ सिखाओ कि वह ज़बानी याद रहे और मेरे लिए उन के ख़िलाफ़ गवाही दिया करे। 20क्यूँकि मैं उन्हें उस मुल्क में ले जा रहा हूँ जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर उन के बापदादा से किया था, उस मुल्क में जिस में दूध और शहद की कस्रत है। वहाँ इतनी ख़ुराक होगी कि उन की भूक जाती रहेगी और वह मोटे हो जाएंगे। लेकिन फिर वह दीगर माबूदों के पीछे लग जाएंगे और उन की ख़िदमत करेंगे। वह मुझे रद्द करेंगे और मेरा अह्द तोड़ेंगे। 21नतीजे में उन पर बहुत सारी हैबतनाक मुसीबतें आएँगी। फिर यह गीत जो उन की औलाद को याद रहेगा उन के ख़िलाफ़ गवाही देगा। क्यूँकि गो मैं उन्हें उस मुल्क में ले जा रहा हूँ जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर उन से किया था तो भी मैं जानता हूँ कि वह अब तक किस तरह की सोच रखते हैं।"

22मूसा ने उसी दिन यह गीत लिख कर
इस्राईलियों को सिखाया।
23फिर रब ने यशूअ बिन नून से कहा,
"मज़बूत और दिलेर हो, क्यूँकि तू इस्राईलियों
को उस मुल्क में ले जाएगा जिस का वादा मैं
ने क़सम खा कर उन से किया था। मैं ख़ुद तेरे
साथ हूँगा।"
24जब मूसा ने पूरी शरीअत को किताब में
लिख लिया 25तो वह उन लावियों से मुख़ातिब
हुआ जो सफ़र करते वक़्त अह्द का सन्दूक़
उठा कर ले जाते थे। 26"शरीअत की यह
किताब ले कर रब अपने ख़ुदा के अह्द के
सन्दूक़ के पास रखना। वहाँ वह पड़ी रहे और
तेरे ख़िलाफ़ गवाही देती रहे। 27क्यूँकि मैं ख़ूब
जानता हूँ कि तू कितना सरकश और हटधर्म
है। मेरी मौजूदगी में भी तुम ने कितनी दफ़ा रब
से सरकशी की। तो फिर मेरे मरने के बाद तुम
क्या कुछ नहीं करोगे! 28अब मेरे सामने अपने
क़बीलों के तमाम बुज़ुर्गों और निगहबानों को
जमा करो ताकि वह ख़ुद मेरी यह बातें सुनें
और आसमान और ज़मीन उन के ख़िलाफ़
गवाह हों। 29क्यूँकि मुझे मालूम है कि मेरी
मौत के बाद तुम ज़रूर बिगड़ जाओगे और
उस रास्ते से हट जाओगे जिस पर चलने की
मैं ने तुम्हें ताकीद की है। आख़िरकार तुम पर
मुसीबत आएगी, क्यूँकि तुम वह कुछ करोगे
जो रब को बुरा लगता है, तुम अपने हाथों के
काम से उसे ग़ुस्सा दिलाओगे।"
30फिर मूसा ने इस्राईल की तमाम जमाअत
के सामने यह गीत शुरू से ले कर आख़िर तक
पेश किया,

मूसा का गीत

32 ऐ आसमान, मेरी बात पर ग़ौर
कर! ऐ ज़मीन, मेरा गीत सुन!
2मेरी तालीम बूँदा-बाँदी जैसी हो, मेरी
बात शबनम की तरह ज़मीन पर पड़ जाए।
वह बारिश की मानिन्द हो जो हरियाली पर
बरसती है।
3मैं रब का नाम पुकारूँगा। हमारे ख़ुदा की
अज़मत की तम्जीद करो!
4वह चटान है, और उस का काम कामिल
है। उस की तमाम राहें रास्त हैं। वह वफ़ादार
ख़ुदा है जिस में फ़रेब नहीं है बल्कि जो
आदिल और दियानतदार है।

5एक टेढ़ी और कजरौ नस्ल ने उस का
गुनाह किया। वह उस के फ़र्ज़न्द नहीं बल्कि
दाग़ साबित हुए हैं।
6ऐ मेरी अहमक़ और बेसमझ क़ौम, क्या
तुम्हारा रब से ऐसा रवय्या ठीक है? वह तो
तुम्हारा बाप और ख़ालिक़ है, जिस ने तुम्हें
बनाया और क़ाइम किया।

7क़दीम ज़माने को याद करना, माज़ी की
नस्लों पर तवज्जुह देना। अपने बाप से पूछना
तो वह तुझे बता देगा, अपने बुज़ुर्गों से पता
करना तो वह तुझे इत्तिला देंगे।
8जब अल्लाह तआला ने हर क़ौम को
उस का अपना अपना मौरूसी इलाक़ा दे
कर तमाम इन्सानों को मुख़्तलिफ़ गुरोहों में
अलग कर दिया तो उस ने क़ौमों की सरहदें
इस्राईलियों की तादाद के मुताबिक़ मुक़र्रर
कीं।
9क्यूँकि रब का हिस्सा उस की क़ौम है,
याक़ूब को उस ने मीरास में पाया है।
10यह क़ौम उसे रेगिस्तान में मिल गई,
वीरान-ओ-सुन्सान बयाबान में जहाँ चारों
तरफ़ हौलनाक आवाज़ें गूँजती थीं। उस ने उसे
घेर कर उस की देख-भाल की, उसे अपनी
आँख की पुतली की तरह बचाए रखा।
11जब उक़ाब अपने बच्चों को उड़ना
सिखाता है तो वह उन्हें घोंसले से निकाल कर
उन के साथ उड़ता है। अगर वह गिर भी जाएँ
तो वह हाज़िर है और उन के नीचे अपने परों
को फैला कर उन्हें ज़मीन से टकरा जाने से
बचाता है। रब का इस्राईल के साथ यही सुलूक
था।

12रब ने अकेले ही उस की राहनुमाई की।
किसी अजनबी माबूद ने शिर्कत न की।

13उस ने उसे रथ पर सवार करके मुल्क की
बुलन्दियों पर से गुज़रने दिया और उसे खेत
का फल खिला कर उसे चटान से शहद और
सख़्त पत्थर से ज़ैतून का तेल मुहय्या किया।[a]
14उस ने उसे गाय की लस्सी और भेड़-
बकरी का दूध चीदा भेड़ के बच्चों समेत
खिलाया और उसे बसन के मोटे-ताज़े मेंढे,
बकरे और बेहतरीन अनाज अता किया।
उस वक़्त तू आला अंगूर की उम्दा मै से
लुत्फ़अन्दोज़ हुआ।

15लेकिन जब यसूरून[b] मोटा हो गया तो
वह दोलत्तियाँ झाड़ने लगा। जब वह हलक़
तक भर कर तनोमन्द और फ़र्बा हुआ तो उस
ने अपने ख़ुदा और ख़ालिक़ को रद्द किया, उस
ने अपनी नजात की चटान को हक़ीर जाना।
16अपने अजनबी माबूदों से उन्हों ने उस की
ग़ैरत को जोश दिलाया, अपने घिनौने बुतों से
उसे ग़ुस्सा दिलाया।
17उन्हों ने बदरूहों को क़ुर्बानियाँ पेश कीं
जो ख़ुदा नहीं हैं, ऐसे माबूदों को जिन से न
वह और न उन के बापदादा वाक़िफ़ थे, क्यूँकि
वह थोड़ी देर पहले वुजूद में आए थे।

18तू वह चटान भूल गया जिस ने तुझे पैदा
किया, वही ख़ुदा जिस ने तुझे जन्म दिया।
19रब ने यह देख कर उन्हें रद्द किया, क्यूँकि
वह अपने बेटे-बेटियों से नाराज़ था।
20उस ने कहा, "मैं अपना चेहरा उन से
छुपा लूँगा। फिर पता लगेगा कि मेरे बग़ैर उन
का क्या अन्जाम होता है। क्यूँकि वह सरासर
बिगड़ गए हैं, उन में वफ़ादारी पाई नहीं जाती।
21उन्हों ने उस की परस्तिश से जो ख़ुदा
नहीं है मेरी ग़ैरत को जोश दिलाया, अपने
बेकार बुतों से मुझे ग़ुस्सा दिलाया है। चुनाँचे
मैं ख़ुद ही उन्हें ग़ैरत दिलाऊँगा, एक ऐसी
क़ौम के ज़रीए जो हक़ीक़त में क़ौम नहीं
है। एक नादान क़ौम के ज़रीए मैं उन्हें ग़ुस्सा
दिलाऊँगा।
22क्यूँकि मेरे ग़ुस्से से आग भड़क उठी है
जो पाताल की तह तक पहुँचेगी और ज़मीन
और उस की पैदावार हड़प करके पहाड़ों की
बुन्यादों को जला देगी।

23मैं उन पर मुसीबत पर मुसीबत आने दूँगा
और अपने तमाम तीर उन पर चलाऊँगा।
24भूक के मारे उन की ताक़त जाती रहेगी,
और वह बुख़ार और वबाई अमराज़ का लुक़्मा
बनेंगे। मैं उन के ख़िलाफ़ फाड़ने वाले जानवर
और ज़हरीले साँप भेज दूँगा।
25बाहर तलवार उन्हें बेऔलाद कर देगी,
और घर में दह्शत फैल जाएगी। शीरख़्वार
बच्चे, नौजवान लड़के-लड़कियाँ और बुज़ुर्ग
सब उस की गिरिफ़्त में आ जाएंगे।

26मुझे कहना चाहिए था कि मैं उन्हें
चकनाचूर करके इन्सानों में से उन का नाम-
ओ-निशान मिटा दूँगा।
27लेकिन अन्देशा था कि दुश्मन ग़लत
मतलब निकाल कर कहे, 'हम ख़ुद उन पर
ग़ालिब आए, इस में रब का हाथ नहीं है'।"
28क्यूँकि यह क़ौम बेसमझ और हिक्मत से
ख़ाली है।
29काश वह दानिशमन्द हो कर यह बात
समझें! काश वह जान लें कि उन का क्या
अन्जाम है।
30क्यूँकि दुश्मन का एक आदमी किस तरह
हज़ार इस्राईलियों का ताक़्क़ुब कर सकता
है? उस के दो मर्द किस तरह दस हज़ार
इस्राईलियों को भगा सकते हैं? वजह सिर्फ़
यह है कि उन की चटान ने उन्हें दुश्मन के हाथ
बेच दिया। रब ने ख़ुद उन्हें दुश्मन के क़ब्ज़े में
कर दिया।

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : चूसने दिया।

[b]यानी इस्राईल।

31हमारे दुश्मन ख़ुद मानते हैं कि इस्राईल
की चटान हमारी चटान जैसी नहीं है।
32उन की बेल तो सदूम की बेल और अमूरा
के बाग़ से है, उन के अंगूर ज़हरीले और उन
के गुच्छे कड़वे हैं।
33उन की मै साँपों का मोहलक ज़हर है।

34रब फ़रमाता है, "क्या मैं ने इन बातों पर
मुहर लगा कर उन्हें अपने ख़ज़ाने में महफ़ूज़
नहीं रखा?
35इन्तिक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही
बदला लूँगा। एक वक़्त आएगा कि उन का
पाँओ फिसलेगा। क्यूँकि उन की तबाही का
दिन क़रीब है, उन का अन्जाम जल्द ही आने
वाला है।"

36यक़ीनन रब अपनी क़ौम का इन्साफ़
करेगा। वह अपने ख़ादिमों पर तरस खाएगा
जब देखेगा कि उन की ताक़त जाती रही है
और कोई नहीं बचा।
37उस वक़्त वह पूछेगा, "अब उन के देवता
कहाँ हैं, वह चटान जिस की पनाह उन्हों ने
ली?
38वह देवता कहाँ हैं जिन्हों ने उन के
बेहतरीन जानवर खाए और उन की मै की
नज़रें पी लीं। वह तुम्हारी मदद के लिए उठें
और तुम्हें पनाह दें।
39अब जान लो कि मैं और सिर्फ़ मैं ख़ुदा
हूँ। मेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। मैं ही
हलाक करता और मैं ही ज़िन्दा कर देता हूँ।
मैं ही ज़ख़्मी करता और मैं ही शिफ़ा देता हूँ।
कोई मेरे हाथ से नहीं बचा सकता।

40मैं अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठा
कर एलान करता हूँ कि मेरी अबदी हयात की
क़सम,
41जब मैं अपनी चमकती हुई तलवार को
तेज़ करके अदालत के लिए पकड़ लूँगा तो
अपने मुख़ालिफ़ों से इन्तिक़ाम और अपने
नफ़रत करने वालों से बदला लूँगा।
42मेरे तीर ख़ून पी पी कर नशे में धुत हो
जाएंगे, मेरी तलवार मक़्तूलों और क़ैदियों के
ख़ून और दुश्मन के सरदारों के सरों से सेर हो
जाएगी।"

43ऐ दीगर क़ौमो, उस की उम्मत के साथ
ख़ुशी मनाओ! क्यूँकि वह अपने ख़ादिमों
के ख़ून का इन्तिक़ाम लेगा। वह अपने
मुख़ालिफ़ों से बदला ले कर अपने मुल्क और
क़ौम का कफ़्फ़ारा देगा।

44मूसा और यशूअ बिन नून ने आ
कर इस्राईलियों को यह पूरा गीत सुनाया।
45-46फिर मूसा ने उन से कहा, "आज मैं ने
तुम्हें इन तमाम बातों से आगाह किया है।
लाज़िम है कि वह तुम्हारे दिलों में बैठ जाएँ।
अपनी औलाद को भी हुक्म दो कि एहतियात
से इस शरीअत की तमाम बातों पर अमल
करे। 47यह ख़ाली बातें नहीं बल्कि तुम्हारी
ज़िन्दगी का सरचश्मा हैं। इन के मुताबिक़
चलने के बाइस तुम देर तक उस मुल्क में
जीते रहोगे जिस पर तुम दरया-ए-यर्दन को
पार करके क़ब्ज़ा करने वाले हो।"

मूसा का नबू पहाड़ पर इन्तिक़ाल

48उसी दिन रब ने मूसा से कहा, 49"पहाड़ी
सिलसिले अबारीम के पहाड़ नबू पर चढ़ जा
जो यरीहू के सामने लेकिन यर्दन के मशरिक़ी
किनारे पर यानी मोआब के मुल्क में है। वहाँ
से कनआन पर नज़र डाल, उस मुल्क पर
जो मैं इस्राईलियों को दे रहा हूँ। 50इस के
बाद तू वहाँ मर कर अपने बापदादा से जा
मिलेगा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह तेरा
भाई हारून होर पहाड़ पर मर कर अपने
बापदादा से जा मिला है। 51क्यूँकि तुम दोनों
इस्राईलियों के रू-ब-रू बेवफ़ा हुए। जब तुम
दश्त-ए-सीन में क़ादिस के क़रीब थे और

मरीबा के चश्मे पर इस्राईलियों के सामने खड़े थे तो तुम ने मेरी क़ुद्दूसियत क़ाइम न रखी। 52इस सबब से तू वह मुल्क सिर्फ़ दूर से देखेगा जो मैं इस्राईलियों को दे रहा हूँ। तू ख़ुद उस में दाख़िल नहीं होगा।”

मूसा क़बीलों को बरकत देता है

33 मरने से पेशतर मर्द-ए-ख़ुदा मूसा ने इस्राईलियों को बरकत दे कर 2कहा,

“रब सीना से आया, सईर[a] से उस का नूर उन पर तुलू हुआ। वह कोह-ए-फ़ारान से रौशनी फैला कर रिबबोत-क़ादिस से आया, वह अपने जुनूबी इलाक़े से रवाना हो कर उन की ख़ातिर पहाड़ी ढलानों के पास आया।

3यक़ीनन वह क़ौमों से मुहब्बत करता है, तमाम मुक़द्दसीन तेरे हाथ में हैं। वह तेरे पाँओ के सामने झुक कर तुझ से हिदायत पाते हैं।

4मूसा ने हमें शरीअत दी यानी वह चीज़ जो याक़ूब की जमाअत की मौरूसी मिलकियत है।

5इस्राईल के राहनुमा अपने क़बीलों समेत जमा हुए तो रब यसूरून[b] का बादशाह बन गया।

6रूबिन की बरकत :

रूबिन मर न जाए बल्कि जीता रहे। वह तादाद में बढ़ जाए।

7यहूदाह की बरकत :

ऐ रब, यहूदाह की पुकार सुन कर उसे दुबारा उस की क़ौम में शामिल कर। उस के हाथ उस के लिए लड़ें। मुख़ालिफ़ों का सामना करते वक़्त उस की मदद कर।

8लावी की बरकत :

तेरी मर्ज़ी मालूम करने के क़ुरए बनाम ऊरीम और तुम्मीम तेरे वफ़ादार ख़ादिम लावी के पास होते हैं। तू ने उसे मस्सा में आज़माया और मरीबा में उस से लड़ा। 9उस ने तेरा कलाम सँभाल कर तेरा अह्द क़ाइम रखा, यहाँ तक कि उस ने न अपने माँ-बाप का, न अपने सगे भाइयों या बच्चों का लिहाज़ किया।

10वह याक़ूब को तेरी हिदायात और इस्राईल को तेरी शरीअत सिखा कर तेरे सामने बख़ूर और तेरी क़ुर्बानगाह पर भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ चढ़ाता है।

11ऐ रब, उस की ताक़त को बढ़ा कर उस के हाथों का काम पसन्द कर। उस के मुख़ालिफ़ों की कमर तोड़ और उस से नफ़रत रखने वालों को ऐसा मार कि आइन्दा कभी न उठें।

12बिनयमीन की बरकत :

बिनयमीन रब को प्यारा है। वह सलामती से उस के पास रहता है, क्यूँकि रब दिन रात उसे पनाह देता है। बिनयमीन उस की पहाड़ी ढलानों के दरमियान महफ़ूज़ रहता है।

13यूसुफ़ की बरकत :

रब उस की ज़मीन को बरकत दे। आसमान से क़ीमती ओस टपके और ज़मीन के नीचे से चश्मे फूट निकलें।

14यूसुफ़ को सूरज की बेहतरीन पैदावार और हर महीने का लज़ीज़तरीन फल हासिल हो।

15उसे क़दीम पहाड़ों और अबदी वादियों की बेहतरीन चीज़ों से नवाज़ा जाए।

16ज़मीन के तमाम ज़ख़ीरे उस के लिए खुल जाएँ। वह उस को पसन्द हो जो जलती हुई झाड़ी में सुकूनत करता था। यह तमाम बरकतें यूसुफ़ के सर पर ठहरें, उस के सर पर जो अपने भाइयों में शहज़ादा है।

17यूसुफ़ साँड के पहलौठे जैसा अज़ीम है, और उस के सींग जंगली बैल के सींग हैं जिन से वह दुनिया की इन्तिहा तक सब क़ौमों को

[a] अदोम।

[b] इस्राईल।

मारेगा। इफ़्राईम के बेशुमार अफ़राद ऐसे ही हैं, मनस्सी के हज़ारों अफ़राद ऐसे ही हैं।

18ज़बूलून और इश्कार की बरकत :

ऐ ज़बूलून, घर से निकलते वक़्त ख़ुशी मना। ऐ इश्कार, अपने ख़ैमों में रहते हुए ख़ुश हो।

19वह दीगर क़ौमों को अपने पहाड़ पर आने की दावत देंगे और वहाँ रास्ती की क़ुर्बानियाँ पेश करेंगे। वह समुन्दर की कस्रत और समुन्दर की रेत में छुपे हुए ख़ज़ानों को जज़ब कर लेंगे।

20जद की बरकत :

मुबारक है वह जो जद का इलाक़ा वसी कर दे। जद शेरबबर की तरह दबक कर किसी का बाज़ू या सर फाड़ डालने के लिए तय्यार रहता है।

21उस ने अपने लिए सब से अच्छी ज़मीन चुन ली, राहनुमा का हिस्सा उसी के लिए मह्फ़ूज़ रखा गया। जब क़ौम के राहनुमा जमा हुए तो उस ने रब की रास्त मर्ज़ी पूरी की और इस्राईल के बारे में उस के फ़ैसले अमल में लाया।

22दान की बरकत :

दान शेरबबर का बच्चा है जो बसन से निकल कर छलाँग लगाता है।

23नफ़्ताली की बरकत :

नफ़्ताली रब की मन्ज़ूरी से सेर है, उसे उस की पूरी बरकत हासिल है। वह गलील की झील और उस के जुनूब का इलाक़ा मीरास में पाएगा।

24आशर की बरकत :

आशर बेटों में सब से मुबारक है। वह अपने भाइयों को पसन्द हो। उस के पास ज़ैतून का इतना तेल हो कि वह अपने पाँओ उस में डुबो सके।

25तेरे शहरों के दरवाज़ों के कुंडे लोहे और पीतल के हों, तेरी ताक़त उम्र भर क़ाइम रहे।

26यसूरून[a] के ख़ुदा की मानिन्द कोई नहीं है, जो आसमान पर सवार हो कर, हाँ अपने जलाल में बादलों पर बैठ कर तेरी मदद करने के लिए आता है।

27अज़ली ख़ुदा तेरी पनाहगाह है, वह अपने अज़ली बाज़ू तेरे नीचे फैलाए रखता है। वह दुश्मन को तेरे सामने से भगा कर उसे हलाक करने को कहता है।

28चुनाँचे इस्राईल सलामती से ज़िन्दगी गुज़ारेगा, याक़ूब का चश्मा अलग और मह्फ़ूज़ रहेगा। उस की ज़मीन अनाज और अंगूर की कस्रत पैदा करेगी, और उस के ऊपर आसमान ज़मीन पर ओस पड़ने देगा।

29ऐ इस्राईल, तू कितना मुबारक है। कौन तेरी मानिन्द है, जिसे रब ने बचाया है। वह तेरी मदद की ढाल और तेरी शान की तलवार है। तेरे दुश्मन शिकस्त खा कर तेरी ख़ुशामद करेंगे, और तू उन की कमरें पाँओ तले कुचलेगा।”

मूसा की वफ़ात

34 यह बरकत दे कर मूसा मोआब का मैदानी इलाक़ा छोड़ कर यरीहू के मुक़ाबिल नबू पहाड़ पर चढ़ गया। नबू पिसगा के पहाड़ी सिलसिले की एक चोटी था। वहाँ से रब ने उसे वह पूरा मुल्क दिखाया जो वह इस्राईल को देने वाला था यानी जिलिआद के इलाक़े से ले कर दान के इलाक़े तक, 2नफ़्ताली का पूरा इलाक़ा, इफ़्राईम और मनस्सी का इलाक़ा, यहूदाह का इलाक़ा बहीरा-ए-रूम तक, 3जुनूब में दश्त-ए-नजब और खजूर के शहर यरीहू की वादी से ले कर ज़ुग़र तक। 4रब ने उस से कहा, “यह वह

[a] इस्राईल।

मुल्क है जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर
इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया। मैं ने
उन से कहा था कि उन की औलाद को यह
मुल्क मिलेगा। तू उस में दाख़िल नहीं होगा,
लेकिन मैं तुझे यहाँ ले आया हूँ ताकि तू उसे
अपनी आँखों से देख सके।”
5इस के बाद रब का ख़ादिम मूसा वहीं
मोआब के मुल्क में फ़ौत हुआ, बिलकुल उसी
तरह जिस तरह रब ने कहा था। 6रब ने उसे
बैत-फ़ग़ूर की किसी वादी में दफ़न किया,
लेकिन आज तक किसी को भी मालूम नहीं
कि उस की क़ब्र कहाँ है।
7अपनी वफ़ात के वक़्त मूसा 120 साल का
था। आख़िर तक न उस की आँखें धुन्दलाईं,
न उस की ताक़त कम हुई। 8इस्राईलियों ने
मोआब के मैदानी इलाक़े में 30 दिन तक उस
का मातम किया।
9फिर यशूअ बिन नून मूसा की जगह खड़ा
हुआ। वह हिक्मत की रूह से मामूर था,
क्यूँकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रख दिए
थे। इस्राईलियों ने उस की सुनी और वह कुछ
किया जो रब ने उन्हें मूसा की मारिफ़त बताया
था।
10इस के बाद इस्राईल में मूसा जैसा नबी
कभी न उठा जिस से रब रू-ब-रू बात करता
था। 11किसी और नबी ने ऐसे इलाही निशान
और मोजिज़े नहीं किए जैसे मूसा ने फ़िरऔन
बादशाह, उस के मुलाज़िमों और पूरे मुल्क
के सामने किए जब रब ने उसे मिस्र भेजा।
12किसी और नबी ने इस क़िस्म का बड़ा
इख़तियार न दिखाया, न ऐसे अज़ीम और
हैबतनाक काम किए जैसे मूसा ने इस्राईलियों
के सामने किए।